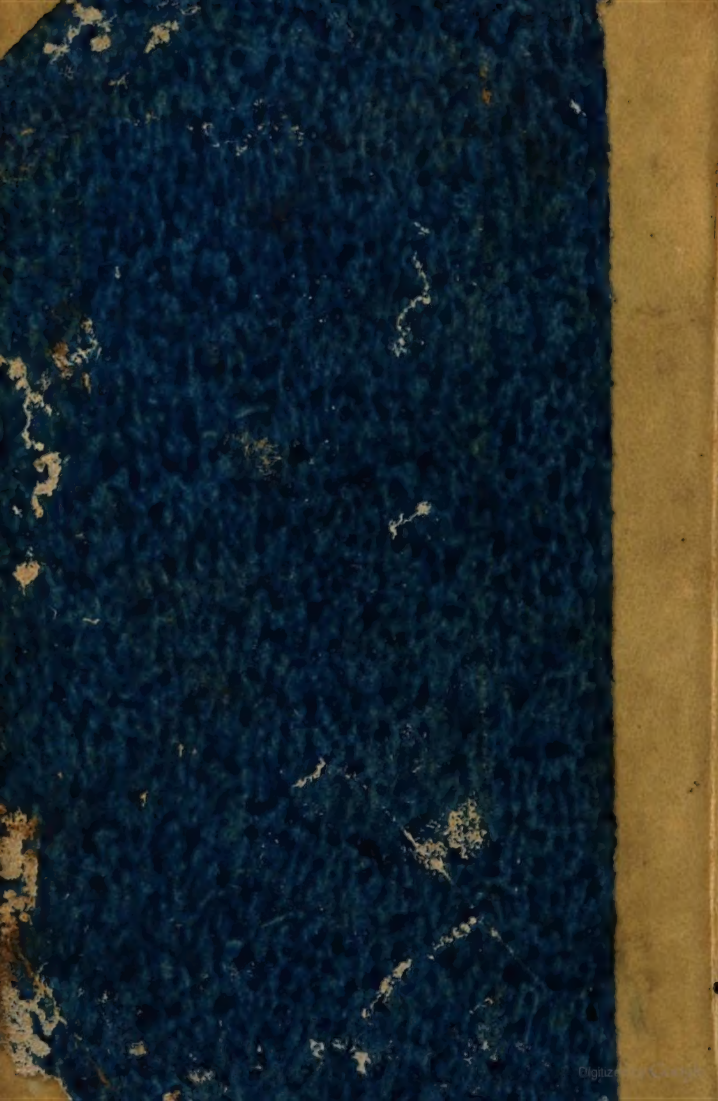
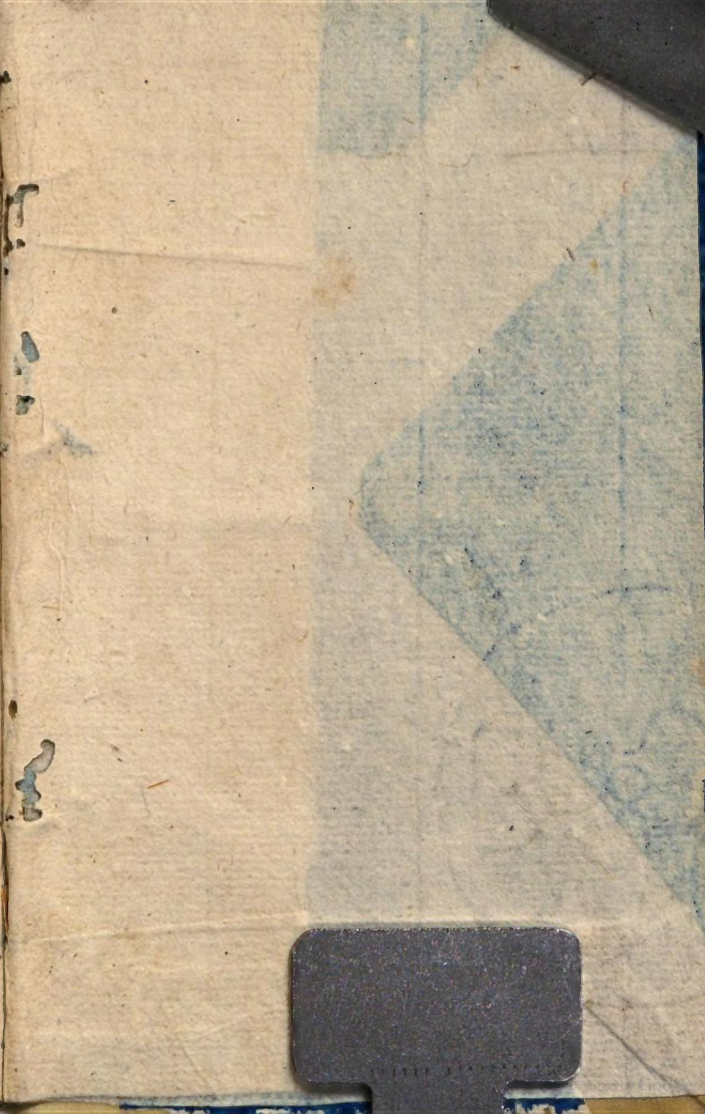
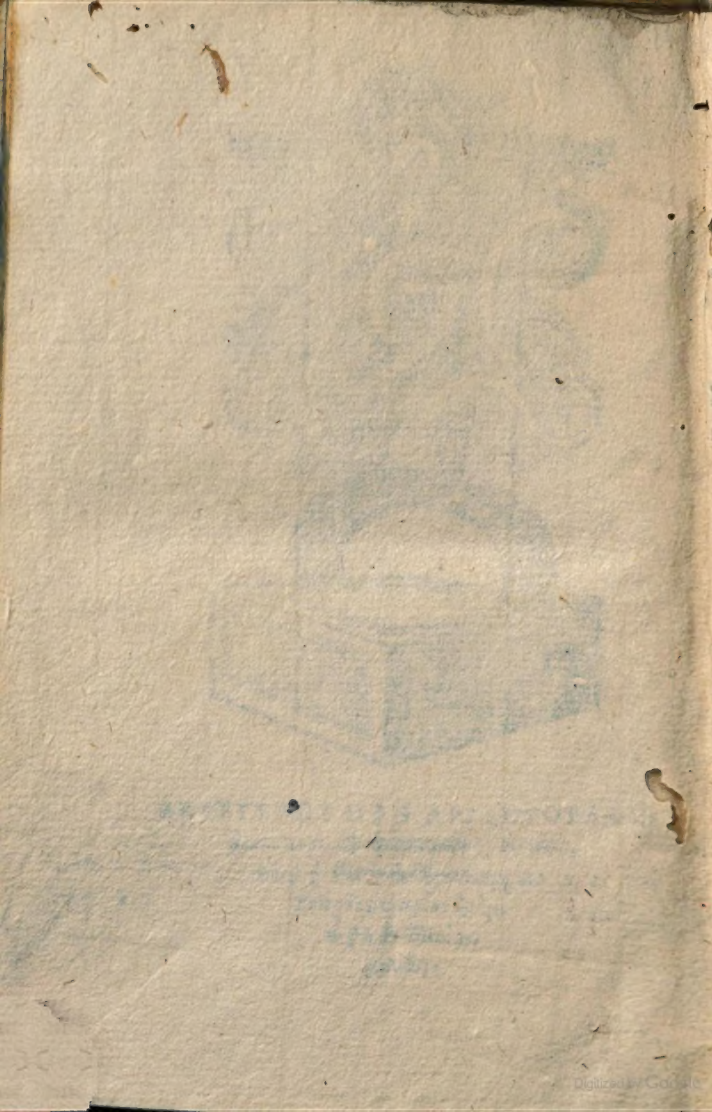
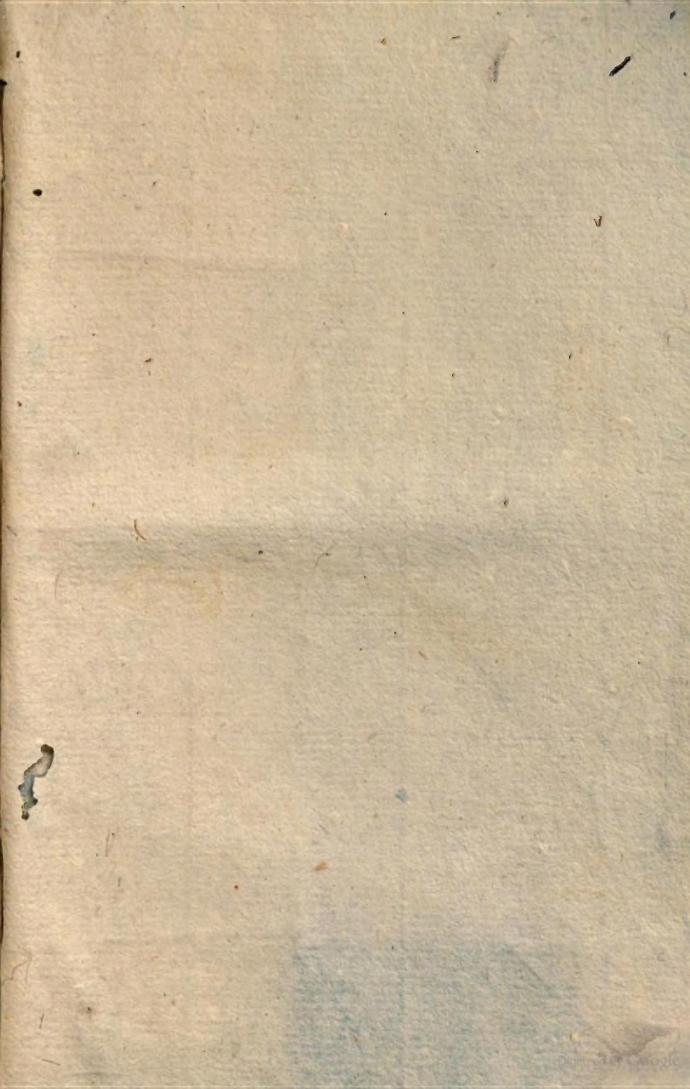












BIBLIOTHECA NAZ.  
ROMA  
VITTORIO EMANUELE



ΕΚΤΕΤΥΓΩΤΑΙ ΕΝ ΑΡΓΕΝΤΟΡΑΤΩ

Βολφιδ. τσ  
Κεφαλαις

ἀναλώμασι μὴ διαφύλαται οὐραίου.

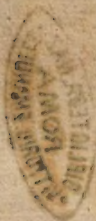
πὸν δ' Εὐφροσύνην Βασιλεῖον. πετρὰ

ἔσθ' τῆς σωτηρίας ἡμῶν.

ἑφλδ. Μωϊσε

μηλιῶνι.

βρου/βαρχίς



κ. φλ. πῶας καὶ πῶϊας. ἄλ. πῶας καὶ πῶϊας. σή. β. σοί. γ. φλ. τούτου.  
ἄλ. τούτου. φύ. σμα. σή. α. σοί. ις. φλ. ἀλλήλοισι. ἄ. ἀλλήλοισιν. φύ.  
σμη. σή. β. σοί. δ. φλ. ἱ. ἄλ. εἶα. φύ. σμγ. σή. β. σοί. κ. φλ. λάθω  
μα. ἄλ. λαθοίμην. φύ. σμδ. σή. β. σοί. θ. φλ. ἔφης. ἄλ. ἔφηθα.  
φύ. σμη. σή. α. τὸν κς. σοῖ χει οὕτως ἀναγινώσκει. φλωρ. ᾧ φίλοι  
ρωες δὲ ἀναγοί. θράκοντες ἄρηθ. ἄλ. δὲ οὕτως. ᾧ φίλοι ἀργυ  
ρων ἡγῆσθαι ἡδὲ μὲδοντες. φύ. σμζ. σή. α. σοί. α. φλ. ἡσσαν. ἄλ.  
ἔσαν. τῆς αὐτῆς σοί. γ. θυμὸν. ἄλ. θυμὸς. φύ. σμη. σή. α. σοί. ι. φλ.  
τῆς ἀρπώμεθα. ἄλ. τῆς ἀρπώμεθα. σή. β. σοί. ις. ἱξον. ἄλ. ἱξον. φύ.  
σνα. σή. α. σοί. ιγ. φλ. κε. ἄλ. μὴ τῆς αὐτῆς σοί. κε. φλ. ἐλθῶν. ἄλ.  
ἐλθὲ μὴ. φύ. σμγ. σή. β. σοί. ιδ. φλ. αὐτῆς. ἄλ. αὐτῆς. τῆς αὐτῆς  
σοί. ις. ἱγ. χειφθῶ. ἄλ. ἱγ. χειφθῶ. φύ. σνη. σή. β. σοί. κ. φλω.  
τῆς πρῶτα. ἄλ. τῆς πρῶτα. φύ. σνη. σή. α. σοί. κβ. φλ. ῥίξοι. ἄλ. δ.  
ῥίξοι. φύ. σξ. σή. α. σοί. κα. φλ. ὅπιθεν. ἄλ. ὅπιθεν. φύ. σξα. σή. β.  
σοί. ι. φλω. ἐλόντες. ἄλ. ἐλόντες. φύ. σξδ. σή. α. σοί. ε. φλ. ἀφροτῆ  
τάτι. ἄλ. ἀφροτῆτάτι. φύ. σξε. σή. α. σοί. ις. φλ. ἀλλὰ καὶ. ἄλ. δ.  
ἀλλὰ μὴ. φύ. σξζ. σή. α. σοί. ια. φλ. οἶον. ἄλ. οἶος. τῆς αὐτῆς σοί. ια.  
φλ. ὅσκι. ἰθύνει. ἄλ. ὅσκει. ἰθύνει. φύ. σξη. σή. α. σοί. ις. φλ. ἔλθεις  
ἄλ. ἦλθε. φύ. σξθ. σή. β. σοί. θ. φλ. δὲ. ἄλ. ὑπέρ. φύ. σοζ. σή. β. σοί.  
β. αὐτῆς ἐπεί. ἐν τῇ φλ. ἀπεί.



φόνδε ιδ'ων. φύ. ρπα. πρὸ 7 β. σοί. τέλυν. φλ. κάρ, ἐστίθι. φύ.  
 ρπα. σή. α. σοί. γ. φλ. αὐσαντε. ἄλ. αὐσαντες φύ. ρπα. σή. β. σοί. α.  
 φλ. ἰδ' α. ἄλ. ἰρα. ρπε. σή. α. σοί. η. φλ. αὐήκιν. ἄλ. ἐνήκιν. σή. β. σοί.  
 ιγ. ἐς πόνον. ἄλ. ἀμπονον. φύ. ρπα. σή. α. σοί. ιδ'. φλ. αὐστ. ἄλ.  
 εἰτ. φύ. ρπα. σή. α. σοί. γ. φλ. ὀπιθιν. ἄλ. ὀπιθιν. φύ. ρπα. σή. β.  
 σοί. ι, φλ. τ' δ' ἰξ. ἄλ. τὸ. ἰξ. ἐκ' ἐχρ. φύ. ρπα. σή. α. σοί. ια. φλ. ἐν  
 πιπίσειν. ἄλ. ἐπιπίσει. φύ. ρπα. σή. α. σοί. ε. φλ. εἰς τις ἄλλος  
 ἄλ. εἰς τ' ἰάσω. σή. β. σοί. κβ. φλ. ἔλπτο. ἄλ. ἔλπτο. φύ. ρπα. σή. α.  
 σοί. ιβ. φλ. αὐήσας. ἄλ. αὐήσας. φύ. ρπα. σή. α. σοί. ε. φλ. χούεσιν  
 ἄλ. χούεσιν. τ' αὐτ' σοί. η. φλ. ἐργόμεν. ἄλ. ἐργόμεν. φύ. σ. σή.  
 β. σοί. κα. φλ. δειάα. ἄλ. δειάα. φύ. σ. σή. α. σοί. ι. φλ. α.  
 γίνε. ἄλ. γίνε. σή. β. σοί. α. φλ. ἀμφίσαν. ἄλ. ἀμφίσαν. φύ.  
 σθ. σή. α. σοί. ε. φλ. τόνδε λίανον. ἄλ. τόνδε ἰλίανον. φύ. σ. κ.  
 σή. β. σοί. ι. φλ. ἐν γκίμ. ἄλ. ἐν γκίμ. τ' αὐτ' σοί. κη. φλ. φέρ.  
 ταρ. ἄλ. φέρ. φύ. σ. σή. β. σοί. β. φλ. χερσί. ἄλ. χερσί. φύ. λ.  
 σκ. σή. α. σοί. ιβ. φλ. ἀρήγ. ἄλ. ἀρήγ. τ' αὐτ' σοί. κβ. φλ. κίκα  
 κα. ἄλ. κίκα. σή. β. σοί. γ. φλ. ἰώ. ἄλ. ἰώ. φύ. σ. σή. α. σοί.  
 ιε. φλ. τὰς. ἄλ. τὰς. φύ. σ. κβ. σή. β. σοί. α. φλ. ἀμφοτέρων. ἄλ. ἀμφο  
 τέρων. φύ. σ. κ. σή. α. σοί. ιη. φλ. ἐκνον. ἄλ. ἐκνον. φύ. σ. κ. σή.  
 α. σοί. κδ. φλ. ἀκίοντα. ἄλ. ἀκίοντα. φύ. σ. κβ. σή. α. σοί. ια. φλ. δαί.  
 ζέμ. ἄλ. κατακτάμ. φύ. σ. λ. σή. α. σοί. ιη. φλ. αἰσημον. ἄλ.  
 μόρσιμόν. τ' αὐτ' σοί. κ. η. πάντων. ἄλ. συμπάντων. σή. β. σοί.  
 ιδ'. ὑπαλύξ. ἄλ. ὑπαλύξ. φύ. σ. λ. σή. β. σοί. ιγ. φλ. ἐκ γαῶ. π.  
 ἄλ. ἐκ γαῶ. τ. φύ. σ. λ. β. σή. α. σοί. ιδ'. φλ. ἰ' ρι. ἄλ. ἰ' ρι. φύ. σ.  
 λ. γ. σή. β. σοί. ιγ. φλ. τὸ ὄν. ἄλ. τέ. φύ. σ. λ. σή. α. σοί. κθ. φλ. ὅ ὄν.  
 ἄλ. ὅσον. σή. β. σοί. κ. πολέμοιο. ἄλ. πολέμοιο. φύ. σ. λ. σή. α.  
 σοί. κ. φλ. πολέμιξ. ἄλ. πολέμιξ. τ' αὐτ' σοί. κδ. παύμιθα  
 ἄλ. παυσώμιθα. σή. β. σοί. δ. φλ. πολέμιξ. ἄλ. πολέμιξ. τ' αὐτ' ρ. γ.  
 σοί. ρ. νείκων. ἰο. χίαι. ἐκ' ἐχρ. φλ. φύ. σ. λ. σή.  
 α. σοί. θ. φλ. πολέμιξ. ἄλ. πολέμιξ. τ' αὐτ' σοί. ια. ἰνσ. τ' ὄν.  
 ἄλ. ἐν αὐτῇ. σή. β. σοί. ι. φλ. ρέ. ἄλ. ρέ. φύ. σ. μ. σή. α. σοί.



φωτίζετε. φύλ. γ. α. σή. β. σοί. γ. φλω. α. κ. αλ. ε. κ. τ. αὐτ. σοί. κ. ς.  
σίλα. αλ. σίλας. φύ. ρ. γ. σή. β. σοί. γ. εν τη φλω. καὶ προτέρη τη  
ἀλλοτρίη, ε. α. μα. ὑ. π. σ. ς. σή. β. σοί. α. φλω. σ. π. ν. αλ. σ. φ. ι. σ. τ. τ.  
αὐτ. σοί. κ. β. ἐν. αλ. ἐν. φύ. ρ. η. σή. α. σοί. α. φλω. τ. η. σ. αλ. τ. η. φύ. ρ. ι.  
ε. α. σοί. κ. ς. φλ. μ. μ. η. λ. ω. σ. αλ. μ. ε. μ. η. κ. ω. σ. φύ. ρ. ι. β. σή. β. σοί. η. φλ.  
α. ἡ. θ. ε. σ. κ. α. ν. αλ. α. ἡ. θ. ε. σ. α. ν. φύ. ρ. ι. δ. ἐν τη τ. τ. λ. ὑ. πο. θ. ε. σ. φ. φλ. οὐ. σ. ε.  
π. α. ν. ι. ο. ν. τ. α. σ. αλ. ὅ. ν. ἐ. π. α. ν. ι. ο. ν. τ. α. σ. ἡ. β. σοί. κ. γ. α. ν. α. π. λ. ε. ι. ω. α. αλ. α. ν. α.  
π. λ. ε. ὑ. σ. ι. ω. ι. φύ. ρ. η. η. σή. α. σοί. κ. σ. φλω. π. ρ. κ. ω. τ. η. αλ. π. ρ. κ. ω. π. η. φύ. ρ. κ.  
ε. α. σοί. κ. θ. φλω. κ. α. λ. ὅ. ν. αλ. κ. α. λ. ὅ. ν. φύ. ρ. κ. α. σή. β. σοί. ι. ς. φλ. α. ν. τ.  
αλ. δ. ἄ. τ. φύ. ρ. κ. β. σή. α. σοί. κ. γ. φλ. ι. κ. ε. σ. φ. α. ν. η. αλ. ι. κ. ε. τ. αὐ. τ. η.  
φύ. ρ. κ. δ. σή. α. σοί. α. φλ. μ. ε. γ. α. σ. αλ. μ. ε. θ. ν. τ. αὐ. τ. σοί. ε. φλ. π. ρ. ο.  
ε. ς. γ. α. αλ. π. ρ. ο. ε. ς. θ. ε. φύ. ρ. λ. σή. α. σοί. ε. φλ. ὑ. ὑ. σ. ο. ν. αλ. ὑ. ὑ. ρ. ο. λ. ο. ν.  
τ. αὐ. τ. σοί. ι. α. π. ι. ε. ι. δ. αλ. π. α. ν. δ. τ. η. σ. αὐ. τ. σοί. ι. ς. καὶ φύ. λ. ω. ρ. μ.  
ε. ἡ. β. σοί. κ. ε. φλ. ν. α. ν. ὁ. μ. η. σ. αλ. ν. α. ν. ὁ. μ. η. σ. φύ. ρ. λ. σή. α. σοί. λ. φλω.  
αλ. ἀ. π. ὁ. π. ἀ. ν. ὁ. σ. αλ. αλ. ἀ. π. ὁ. θ. ἀ. ν. ὁ. σ. φύ. ρ. λ. α. σή. α. σοί. ς. φλ.  
α. ρ. μ. α. τ. α. αλ. α. ρ. μ. α. φύ. ρ. λ. β. σή. α. σοί. α. φλ. π. ᾗ. θ. ε. αλ. π. ᾗ. θ. ε. ν. τ.  
αὐ. τ. σοί. ς. θ. υ. μ. ῥ. αλ. θ. υ. μ. ὅ. ν. φύ. ρ. λ. δ. σή. α. σοί. β. φλ. δ. ι. η. ν. κ. ε. ε. α. ν.  
αλ. δ. ι. η. ν. κ. ε. σ. ι. σή. β. σοί. κ. γ. καὶ φύ. λ. ω. ρ. λ. ε. σή. α. σοί. σ. φλ. ἐ. π. ε.  
ω. αλ. ἐ. α. π. ε. ω. α. φύ. ρ. λ. ε. σή. α. σοί. κ. δ. φλ. χ. ρ. ι. γ. α. τη. ἐ. τ. ε. ρ. η. φ. ε.  
ρ. ο. ι. αλ. χ. ε. ρ. σ. ι. ν. ἐ. π. ἀ. μ. ρ. ο. τ. ρ. η. σ. ἐ. χ. ο. ι. φύ. ρ. λ. θ. σή. β. σοί. λ. φλ. π. ἡ. δ. ι. α.  
θ. ν. αλ. π. ἡ. δ. ι. α. ν. φύ. ρ. μ. σή. α. σοί. η. φλ. ὁ. ρ. ε. ξ. α. θ. αλ. α. κ. ὁ. ν. π. σ. ε.  
φύ. ρ. μ. β. σή. β. σοί. ι. ς. φλ. ὁ. λ. ε. ω. α. αλ. ὁ. λ. ε. α. ν. α. φύ. ρ. μ. ς. σή. β. σοί.  
κ. β. φλ. ὁ. σ. ρ. α. αλ. ὁ. ρ. α. φύ. ρ. ν. η. σή. β. σοί. ι. θ. φλ. ἐ. λ. ε. ξ. α. αλ. ἐ. θ. ε. λ. ε. ξ. α.  
φύ. ρ. ε. ξ. σή. α. ἐν τη, τ. η. σ. ο. ὑ. πο. θ. ε. σ. φ. φλ. α. ν. α. ῥ. ὁ. σ. η. αλ. α. ν. α. ῥ. ὁ. σ. η.  
φύ. ρ. ε. ξ. γ. σή. β. σοί. ι. δ. φλ. ρ. ε. α. αλ. ρ. ἡ. η. φ. ἡ. ρ. ε. δ. ι. σή. α. σοί. σ. φλω.  
ἰ. σ. ὁ. μ. ο. ι. ρ. ο. ν. αλ. ἰ. σ. ὁ. μ. ο. ρ. ο. ν. φύ. ρ. ο. α. σή. β. σοί. ς. φλ. τ. ι. κ. ε. ι. ω. ν. αλ. τ. ο.  
κ. ε. ι. ω. ν. τ. αὐ. τ. σοί. κ. σ. δ. σ. δ. αλ. δ. σ. δ. φύ. ρ. ο. ς. σή. α. σοί. η. φλ. π. υ.  
κ. ν. ο. ι. αλ. π. υ. κ. η. ο. ι. φύ. ρ. ο. θ. σή. α. σοί. κ. φλ. κ. ι. χ. ε. ι. σ. αλ. χ. ι. κ. ε. ι. σ. σή.  
β. ε. κ. ι. ἐ. π. ο. σ. α. μ. β. ρ. ο. ρ. ι. ἐν τη φλω. ἀ. π. ε. σ. α. φύ. ρ. π. σή. β. σοί. δ. φλ.  
π. α. λ. ὁ. μ. η. θ. ν. αλ. π. α. λ. ὁ. μ. η. λ. ο. ν. τ. αὐ. τ. σοί. ι. ς. ἀ. λ. λ. ἡ. λ. ο. ι. σ. ι. ν. ὁ. ρ. ο. ρ. α. ν.  
αλ. ἐ. π. ἀ. λ. λ. ἡ. λ. ο. ι. σ. ι. ν. ὁ. ρ. ο. ρ. α. ν. ἐ. ξ. ἡ. σ. α. ν. ι. η. φλ. ρ. ὁ. σ. ε. ι. δ. ὅ. ν. αλ.

# Η ΤΗΣ ΙΔΙΑΔΟΣ ΠΟΛΥΓΛΟΚΟΣ

ἀναγνώσις ἐκ τῆς φλωρεντίνης, καὶ τῆς ἐκτέρας Δο  
δίνης, ἐκδόσεων συλλεχθεῖσαι.

Φύλλω. γ. σήλη. β. σοίχω. κη. φλωρεντίνη ἐκδοσις. ἱφίσις. ἀλδί  
νη. ἀφίσις. ἀναγνώσκει. φύλλω. ζ. σή. α. σοί. ιζ. φλ. ἐκδοσις, δύω.  
ἀλ. δύω. φύλλω. ιβ. σήλη. β. σοίχω. α. φλωρεντίνη ἢ ἐκδοσις.  
ἰλασώμεθα, ἀλδίνη δέ, ἰλασώμεθ. φύλλ. ια. σήλη α. σοίχω.  
ιγ. φλωρ. ψαμάθω. ἀλδ. ψαμάθοις. φυλ. ιδ. σή. β. σοι. ιθ. περὶ ζ.  
ἀλδ. πρὶ δ' αὖ. ἐν τῇ αὐτῇ σήλη. σοίχω καθ. φλωρ. βυλὴν ζ. ἀλ.  
βυλὴν γάρ. φύλ. ιη. σή. β. σοί. καθ. φλωρ. σὺν νη. ἀλ. παρὰ νη. τῇ  
αὐτῇ σήλης σοίχω. λ. φλωρ. χείμενοι. ἀλ. χείμενοι. φύλ. ιθ.  
σή. β. σοί. κη. φλωρ. αὐτοῖς. ἀλδ. αὐτ. φύλ. κα. σή. α. σοί. ιζ. φλ.  
ἱΐσις. ἀλ. ἱΐσις. φύλ. κδ. σή. β. σοί. δ. φλ. πώλεμι ζην. ἀλ. πώλε  
μοιο. τῆς αὐτῆς σήλης σοίχω. ζ. σφίσι. ἀλ. σφι. φύλ. κη. σή. α.  
σοί. α. φλ. αὐτωλῶν δ' ἤρχε. ἀλ. αὐτωλῶν δ' ἤγχο. φυ. λη. σή.  
α. σοί. ι. φλ. ἀγρομένοισι. ἀλ. ἀγρομένοισι. σήλη. β. σοί. ιη. τὰ  
μωμω. ἀλ. τὰ μωμω. φυ. μβ. σή. β. σοί. ιζ. φλ. διορφέων. ἀλ. ἀ  
ρηθῶν. φυ. μγ. σή. α. σοι. ιδ. φλ. οὐτω. ἀλ. οὐτω. μη. σή. β. σοί.  
κι. φλ. μώρ. ἀλ. βώρ. καὶ θώρ. φυ. μδ. σή. β. σοί. ιγ. φλ. πρὸ  
αὐ. ἀλ. πρὸ. ἱθ. τῆς αὐτῆς σοί. κς. καπαυηιάδ, ἀναγνώσειον.  
φυ. να. σή. β. σοί. γ. ἱφίσις, ἀναγνώσειον. φυ. νβ. σή. ι. σοί. ιδ. φλ.  
αὐείας δ' ἡδὲ μωμ ἀμύμον. ἀλ. αὐείας δ' ἡδὲ μεγαλήτορος.  
σή. β. σοι. λ. φλ. ἐξελεύθη. ἀλ. ἐξεχύθη. φύ. νδ. σή. β. σοί. κδ. φλ.  
μάχεται. ἀλ. μάχοιτο. φυ. νε. σή. β. σοί. κ. φλ. κέλευσεν. ἀλ. κέ  
λυεν. φυ. νζ. σή. β. σοί. καθ. φλ. κάρτεροι. ἀλ. κάρτεροι. φύ. ξ. σή.  
β. σοί. ιδ. φλ. κάρτεροι. ἀλ. κάρτεροι. φύ. ξα. σή. α. σοι. κη. φλ. αὐδ  
αἰων. ἀλ. αὐδ. ἰαων. φ. ξβ. σή. β. σοί. ιη. φλ. ὅν δ' ἡ κάρτισον. ἀλ.  
ὅν δ' ἡ ἐγὼ κάρτισον. τ' αὐτ' σοί. κβ. μαχέει. ἀλ. μαχέσκει. φ.  
ξη. σή. β. μετὰ τὸν β. σοίχον. μή μ' ἀπογέωσας. ἱποντα τὰ, δ. ἱπο  
ντα ἱχί ἢ φλω. ἐκδοσις. φύ. οε. σή. β. σοί. δ. φλ. ἀδείης. ἀλ.  
δὲ ἀδείης γ' ἱα. φύ. πη. σή. β. σοί. κς. φλ. προφορὰς. ἀλ. προ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

λαοῖσιν ὃ γέρον πρίαμος μετὰ μῦθον ἔειπεν·  
 ἄγετι νῦν βῶε ξύλα ἄσπε μὴ δέ τι θυμῷ  
 δέσσητ' ἀρχέων πυκινῷ λόχῳ, ἢ γὰρ ἀχιλλεύς  
 πέμπων μ' ὦ δ' ἐπέλλει μελαινάων ἀπὸ νηδῶ  
 μὴ πρὶν πημῶν ἔσθ' πρὶν δ' ὠδύκῃ μολῇ ἡῶς.  
 ὣς ἔφαθ', οἳ δ' ὕφ' ἀμάξῃσι βόας ἡμίονους τε  
 ἰώγυσσαν, αἶψα δ' ἔπειτα πρὸ ἄστεος ἤγαρέθοντο·  
 ἐνὶ ἡμαρ μὲν τοί γε ἀγένοιντο ἄσπερον ὕλῳ,  
 ἀλλ' ὅτε δὴ δικάτη ἐφάνη φαισίμβροτ' ὧς  
 καὶ τότε ἄρ' ἐξίφερον θρασύν ἔκτορα δάκρυ χέοντες·  
 ἐν δ' πυρρῇ ὑπᾶτη νεκρὸν θέσσαν ἐν δ' ἔβαλον πῦρ,  
 ἦμος δ' ἠειρήνηα φάτη ῥοδὸδᾶκτυλος ἡῶς,  
 τῆμος ἄρ' ἀμφὶ πυρρῷ κλυτὴ ἔκτορ' ἔρξο λαός·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δ' ὄγχεθ' ἐν δμηγέρεσσι γέγονοντο·  
 πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊῷ σβέσσαν αἰθοπι οἶνον  
 πᾶσαν ὁπόσσον ἐπιέχε πυρὸς μένος, αὐτὰρ ἔπειτα  
 δέσσεια λωκά λείοντες ἐσσίγηστοι, ἱταροὶ τε  
 μυρόμυροι, θαλίῃ δ' ἐκείβοντο δάκρυ παρηδόν·  
 καὶ τὰ γε χρυσέῃσι λάρνακα θῆκαν ἑλόντες,  
 πορφύρεοις πέπλοισι καλύψαντες μαλακῶσιν  
 αἶψα δ' ἄρ' ἐκείλῳ κάππον θέσαν, αὐτὰρ ὑπερβίη  
 πυκνοῖσιν λάεσσι κατεσφρίσαντο μεγάλοισιν.  
 ῥίμψα δ' σῆμ' ἔχουσιν, περὶ δ' σκαποὶ ἦσαν πάντῃ·  
 μὴ πρὶν ἐφορμηθῆναι ὑκνύμιδ' ἀχαιοί.  
 χυδωνέος δ' τὸ σῆμα πάλιν κίον, αὐτὰρ ἔπειτα  
 εὐσωναγόμῃσι δαίνωντ' εἰκνύειν δαΐτα,  
 δώμασιν ἐν πρίαμοιο διοτρεφίῃ βασιλῇ·  
 ὡς οἳ γ' ἀμφὶ πόρον τάρον ἔκτορ' ἔπιδάμοιο.

ΤΕΛΟΣ ΤΗΣ ΙΛΙΑΔΟΣ.



Τῇσιν δ' αὖθ' ἐκάβη ἀδινῶ ἐξήρχε γόοιο.

ἔκρ' ἐμῷ θυμῷ πάντων πολὺ φίλτατε παίδων,  
 ἦ μὲν μοι ῥωὸς περὶ ὧν φίλος ἦν ὅσι.  
 οἷ δ' ἄρα σὺ κήδοντο, καὶ ἐν θαλάτῳ περ αἴσῃ.  
 ἄλλες μὲν γὰρ παύσας ἐμὸς πόσις ὠκὺς ἀχλιδύς,  
 πέριαχ' ὅρ' τιν' ἔλεσκε πέλω ἄλως ἄβρυγιοι,  
 ἐς σάμον, ἔστ' ἱμβροῖς καὶ λῆμνορ ἀμιχθαλόεσσιν.  
 σὺ δ' ἐπὶ ἐξέλθο φυχὺν ταναηκὲν χαλκῷ,  
 πολλὰ ῥυσσάσκεν ἔν περὶ σῆμ' ἐτάροιο  
 παρόκλη. τὸν ἔπεφνε, ἀνέστη δ' ἐμιν οὐδ' ἔει-  
 νῦν δ' ἐμοι ἱερσέας καὶ πρόσφατ' ἐν μεγάροισιν  
 κείσθαι βροῖ ἱκίλως, ὅντ' ἀργυρόρεος ἀπόλων,  
 οἷς ἀγανοῖς βιλέεσθιν ἀποιχόμεν' ἔκτεπέφνη.

Ως ἔφατο κλαίοντα γόορ δ' ἄλίσσων ὄεινε.

τῇσι δ' ἔπειθ' ἑλένη, ῥιτάτη ἐξήρχε γόοιο.  
 ἔκρ' ἐμῷ θυμῷ δαίρων πολὺ φίλτατε πάντων.  
 ἦ μὲν μοι πόσις ἐστὶν ἀλέξανδρος θεοεσθ' ὤς,  
 ὅς μ' ἄγαγε ροίῳ δ' ὧς πρὶν ὥφελ' ἀπολέσθαι  
 ἦ δ' ἡ γὰρ νῦν μοι πόσις ἐκείν' ἐπὶ ἐστὶν  
 ἐξ οὗ κείθεν ἔβην καὶ ἐμῆς ἀπελθὺνθα πάρος.  
 ἀλλ' οὐπὼ ῥέω ἄκυστα κακὸν ἔπος οὐδ' ἀσύνφηλον.  
 ἀλλ' ὅπως μὲν καὶ ἄλλος ἐνὶ μεγάροισιν ἐνίσσοι  
 δαίρων, ἢ γαλόων, ἢ ἐνατέρων ἢ ὑπὲρ πλυν.  
 ἢ ἔκυρ' ἔκυρὸς δ' ἐπατήρ ὧς ἢ πῖος αἰεὶ,  
 ἀλλὰ σὺ τὸν γ' ἐπέεσι παραιφάμεν' ἔκτερυκες.  
 σῆ τ' ἀγανοφροσύνη καὶ σοῖς ἀγανοῖς ἐπέεσιν.  
 βροῖ σέθ' ἅμα κλαίω καὶ ἐμ' ἀμμορορ ἀχνυμένη κῆρ  
 οὐ γάρ τις μοι ἔτ' ἄλλος ἐνὶ ροίῃ δὴρέει  
 ἢ πῖος οὐδ' ἐφίλος. πάντες δ' ἐμὲ πεφρίεσσιν.

Ως ἔφαθ' κλαίοντα πρὶ δ' ἔειπε δῆμος ἀπείρων

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

**Ως** ἔφαθ' ὁ δὲ δίδεσθ' ἄν καὶ εἶξον ἀπὸ νῆ·  
 οἷδ' ἐπὶ εἰσάγαγον κλυτὰ δώματα, τὸν μὲν ἔπειτα  
 φητοῖς ἐν λειχέσσι θέσσω παρὰ δ' εἶσων ἀοιδόν·  
 θρῦνών ἐξάρχουσ', οἳ τε σονόεσσαν ἀοιδόν.  
 οἱ μὲν ἄρ' ἐθρῦνέον, ἐπὶ δὲ σινάχοντο γυναικες.  
**Τῆσιν** δ' ἀνδρομάχη λυκάων· ἦρχε γόοιο·  
 ἔκτορ· ἀνδρόφονιο κάρη μετὰ χερσὶν ἔχουσα,  
 ἄνερ· ἀπ' αἰῶνος νέος ὦλεο, καὶ δὲ με χήρην  
 λείπεις ἐν μιγάροισι, πάϊς δ' ἐτι νήπιος αὐτῶς.  
 ὅρ τέ κ' ἔμελλ' οὐτ' ἐγὼ τι δυσάμμοροι, οὐδ' ἐμὴν οἶσιν  
 ἔβω ἴξιναι πρὶν γάρ πόλις ἔδει κατ' αἰφνης  
 πέρισσετα, ἥ γάρ ὀλωλας ἐπίσκηπος, ὅς τέ μιν αὐτῶ  
 φύσκει, ἔχει δ' ἀλόχους κεδνάς καὶ νήπια τέκνα.  
 αἱ δ' ἄν τοι τάχα νηυσὶν ὀχέουσιντα γλαφυρῆσι,  
 καὶ δ' ἐγὼ μετὰ τῆσι, σὺ δ' αὖ τέκεις ἡ ἐμοὶ αὐτῇ  
 ἔφαι, ἐνθά κ' ἐργα ἀσκήα ἐργάζοιο  
 αἰθλιῶν πρὸ ἀνακτ' ἀμειλίχης, ἢ τίς ἀχαιῶν  
 φίλῃ χειρὸς ἑλθὼν ἀπὸ πύργου λυγρὸν ὀλισθόν  
 χαρόμεντο· ὧ πνι δ' ἔπ' ἀδελφίον· ἔκταν' ἔκταν  
 ἢ πατέρ' ἢ καὶ ἑλόν, ἐπὶ μάλα πολλοὶ ἀχαιῶν  
 ἔκτορ· ἐν παλάμῃσιν ὁ δ' ἄρ' ἔλεον ἀσπασον ἔδιδε·  
 οὐ γάρ μελίχρος ἔσκε πατήρ τε δὲ ἐν δαί' λυγρῇ.  
 τοῦ καί μιν λαοὶ ὀδύρονται κατὰ ἄστυ.  
 ἀρητὸν ὃ τὸ κεῦσι γόον καὶ πένθος ἔθηκες  
 ἔκτορ, ἐμοὶ δ' ἐμάλιστε λελείπεται ἀλγέα λυγρὰ.  
 οὐ γάρ μοι θνήσκων λειχέων ἐκ χεῖρας ὄρεξας.  
 οὐδέ τι μοι εἶπες πυκινὸν ἔπος οὐ τέ κ' ἐν αἰὶ  
 μεμνήμεν νύκτας τε καὶ ἡμέκτα δοκρυχέουσα.  
**Ως** ἔφαθ' κλαίονσ' ἐπὶ δὲ σινάχοντο γυναικες.

Ω: ἔφατ', ἰδὲ θάσσιν δ' ὁ γέρον, κήρυκε δ' αὐτῷ·  
 τοῖσι δ' ἱρμείας ἱστῆ ἵππους ἡμιόνους τε·  
 φίμωπα δ' ἄρ' αὐτὸς ἔλαυνε κατὰ σφατὸρ οὐδέ τις ἐγνή·  
 ἀλλ' ὅτι δ' ἡ πόρρον ἱζὼν ἱέρρεϊτο ποταμοῖο  
 ξάνθου δινύεντο· ὅρ' ἀθάνατο τέκετο βόε·  
 ἱρμείας μὲν ἔπειτ' ἀπέβη πρὸς μακρὸν ὄλυμπον·  
 ἥδ' ἐκροκόπεπλος ἐκίδνατο παῖσ' αὖτ' ἄλλω·  
 οἷδ' ἐς ἄστυ ἔλθων οἰμωγῇ τε σοναχῇ τε  
 ἵππους, ἡμίονοι δ' ἐνέκω φέρον, οὐδέ τις ἄλλος  
 ἐγνώ πρὸδ' ἀνδρῶν καλλιζώνωντι γυαυαῶν,  
 ἀλλ' ἄρα κατασάνθη ἱκίλη χυρσὴ ἀφροδίτῃ,  
 πέργαμον θύσσωα βῶσαι φίλον πατέρ' ἐσινύοντι·  
 ἰσαότ' ἐν δίφρῳ κήρυκά τε ἄστυ βούτῳ·  
 τὸν δ' ἄρ' ἐφ' ἡμιόνων ἴδε κείμηνον ἐν λιχέσσι·  
 κώκυσ' ἐν τ' ἄρ' ἔπειτα γέγωνε τε πᾶρ κατὰ ἄστυ·  
 ὅττι δὲ βῶε καὶ βωϊάδε' ἐκτορ' ἰόντο·  
 εἴποτε καὶ ζῶοντι μάχης ἐκισθήσασιν·  
 χαίρειτ', ἐπεὶ μέγα χάρμα πόλε' ἦν παντί τι δόμοφ·  
 Ω: ἔφατ', οὐδέ τις αὖ τῷ θι ἐνὶ πόλει λίπειτ' ἀνὴρ·  
 οὐδέ τις γυνή, πάντας γὰρ ἀάχουσι ἱέκο πένθεσσι  
 ἀγχι δὲ ξυμβλήτω πυλάων νεκρὸν ἄγοντι·  
 πρῶτα τὸν γ' ἀλάχ' ὅς τις φίλη καὶ πότνια μήτηρ  
 τιλλέειω ἐπ' ἄμαξον εὐβοχον αἵξασα  
 ἀπ' ὀμῶμα κεφαλῆς, κλαίων δ' ἀμφίσταθ' ὄμιλος·  
 καὶ νύκ' ἐνὶ πρόπῳ ἡμαρ ἐς ἡλίου καταδύντα,  
 ἐκτορα δακρυχέοντο δ' ἐδύροντο πρὸ πυλάων·  
 εἰ μὴ ἄρ' ἐκ δίφροιο γέρον λαοῖσι μετνήδαι·  
 εἴξατέ μοι οὐρεῦσι διελθέμεν, αὐτὰρ ἔπειτα  
 ἔσσι δὲ κλαυθμοῖσιν ἐπὶ ἄγχοιμι δόμονδε·



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἦ μιν δὴ μὴ ἐθέλωνς τιλίσσαι πάφορ' ἐκτορ' ἀφ' ὧ  
 ὅ δ' ἐκί μοι ῥίξαι ἀχιλλεύ' κε χαρυσμένα δέησι.  
 ὅβρις γὰρ ὡς κατὰ ἄστυ ἐλμυθα τηλόθι δ' ὕλη  
 ἄξιμω ἐξ ὄριος μάλα ὅ τῶνδε Διόσιν.  
 ἔννῃμαρ μὲν κ' αὐτὸν ἐνὶ μεγάροις γοάοιμην.  
 τῇ δ' ἐκάτῃ ὅ καὶ θάπτοιμην δαίνυτό τε λαὸς.  
 ἐν δ' ἐκάτῃ δ' ἐκί τύμβον ἐπ' αὐτῷ ποιήσοιμην.  
 τῇ ὅ δ' ἐν δ' ἐκάτῃ πηλεμείξοιμην ἱπὲρ ἀνάγκη.  
 Τόνοδ' ἔντε προσέειπε ποδάρκης δῖος ἀχιλλεύς.  
 ἔσαι τοι καὶ ταῦτα γέρον' ἡγίαμ' ὡς σὺ κελεύεις.  
 οὐδ' ὧ γὰρ τόσον πόλεμον χρόνον ὅσον ἀναγας.  
 ὦς ἄρα φωνήσας ἐπὶ καρπῷ χεῖρα γέροντος  
 ἔλαβε Διξιτόρῳ, μή πως δέεισ' ἐνὶ θυμῷ.  
 οἱ μὲν ἄρ' ἐν προσόμφ' ὅ μιν αὐτόθι κρημύσσοντο  
 κῆρυξ καὶ ἡγίαμος, πυκινὰ φρεσὶ μήδ' ἐχόντες  
 εὐπὰρ ἀχιλλεύς· ἔνδ' ἐμυχῶ κλισίῃς ἐπ' ἔκτο.  
 τῷ δ' ἐβεισὼς παρελίσσατο καλλιπάρῃ.  
 ἄλλοι μὲν ῥα θεοὶ τε καὶ ἀνέρες ἱπποκρυσταὶ  
 αὐτοῖσιν πάννυχτοι μαλακῶ δαδμημένοι ὕπνῳ.  
 ἀλλ' οὐχ' ἱρμείῳ ἱερύνιον ὕπνος ἔμαρπεν  
 ὄρμαίνοντ' ἀνὰ θυμόν, ὅπως ἡγίαμος βασιλῆα  
 νηῶν ἐκπέμψει λαθῶν ἱερὸν πυλαορέν.  
 εἴ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς καί μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν.  
 ὦ γέρον, οὐ νύ τι σοὶ γὰρ μέλει πακὸν οἶον' ἐδ' ἐυδῆσθαι  
 ἀνδράσις ἐν δ' ἡίοισιν, ἐπεὶ δ' εἴασιν ἀχιλλεύς.  
 καὶ νῦν, μὲν φίλον ἔδον ἐλύσεις πολλὰ δ' ἔδωκεν  
 σέϊο δ' ἐκέρω, καὶ εἰς τόσας δότ' ἐρ' ἀποίνα,  
 πᾶσις τοι μετόπισθε ληθευμένοι, αἳ κ' ἐγαμύμενοι  
 φρεσὶν ἀφ' ἑσθ' ἐγνώσθη ὅ πάντες ἀχαιοί.

αὐτὰρ δ' ἄρδ' ἐνὶ δ' ἰώ πρῖα μορ θαύμαζ' ἄχιλλοῦς,  
 εἰσοροῶν ὅτι τ' ἀγαθὸν καὶ μύθορ, ἄκρυν.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ τάρπησ' αὖ ἐς ἀλλήλους ὄροντες,  
 τὸν πρότερος προσέειπε γέρον πρῖαμος θιοειδής.  
 λέξον νῦν με τάχιστα διοφείες, ὅφρα καὶ ἡδὴ  
 ὕπνῳ ὑπὸ γλυκιρᾷ ταρπόμεθα κοιμηθέντες.  
 οὐ γάρ πα μύσσω ὅσσ' ὑπὸ βλεφάροισιν ἱμοῖσιν  
 ἔξ' οὐ σῆς ὑπὸ χερσὶν ἱμὸς πᾶσι ὤλεσε θυμόν.  
 ἀλλ' αἰεὶ σιναχὼ καὶ κῆδεα μυρία πῖσσε,  
 αὐλῆς ἐν χόρτοισι κυλινδόμεν' ὅσ' αὖτ' ἐκόπρον.  
 νῦν δ' ἡ καὶ σίτω πασάμην καὶ αἰδοπα οἶνον  
 λαῶναι νῆς παθέμεν, πάρος γε μὲν οὐ τι πιπιάσμεν.  
 εἴ ῥ' ἄχιλλοῦς δ' ἐπ' αἰετοῖσιν ἰδ' ἐδ' ἠμῶσιν κέλευσε.  
 εἰ μὲν ὑπ' αὐτοῦ σὴ θέμεσθαι καὶ ῥήγ' ἀκαλὰ  
 πόρφυρ' ἐμβαλίσθαι σφρίσσαι ἑφύπερθε τάπητας,  
 χλαῖνας τ' ἐνθέμεσθαι οὐλὰς καθύπερθε ἱεῖσθαι.  
 αἰδ' ἰσοῶν ἐκ μεγάροιο δῖος μετὰ χερσὶν ἔχουσιν.  
 αὐτὰρ δ' ἄρ' ἐσόμεσθαι δίοιω λίχ' ἐγκένευσσαι.  
 τὸν δ' ἐπικερτομέων προσέφη πόδας ὠκὺς ἄχιλλοῦς.  
 ἐκτὸς μὲν δ' ἡ λέξον γέρον φίλε μή τις ἀχαιῶν  
 ἐνθάδ' ἐπέλθῃσι βυληφόρος οἵ τί μοι αἰεὶ  
 βυλὰς βυλόμενοι παρήμηναι ἢ θέμις ἐσὶ.  
 τῶν ἐγὼ σὲ ἰδὼτο θούλῳ σφ' ἐνύκτα μέλαιναν,  
 αὐτίκ' ἄρ' ἐξείποι ἀγαμέμνονι ποιμένι λαῶν.  
 καὶ κεν ἀνέβλησιν λύσι' ὅς τε κροτο γένηται.  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ καὶ ἀρεκίως κατέλεξον.  
 ποσὴ ἡμᾶρ μέμονας κτορὶ ἱξέμεν, ἔκρη δ' ἴοι.  
 ὅφρα τίς αὖτὸς τε μένω καὶ λαὸν ἐρύκα.  
 Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα γέρον πρῖαμος θιοειδής.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

καὶ γάρ τ' ἤνυσμός νιοῖσιν ἐμνήσθη σίτο·  
 τῇ περ δώδεκα παῖδες ἐνὶ μεγάροισιν ὄλβιοι  
 ἐξ μὲν θυγατέρες, ἐξ δ' υἱες ἑβώνοντες·  
 τὸς μὲν ἀπόλλων πέφνεν ἀπ' ἀργυρείοιο βιοῖο·  
 χυώ μιν Θ' νιοῖσιν, τὰς δ' ἀρτίμις ἰοχέουρα·  
 οὐνεκ ἄρα λητοῖ ἰσάσκετο καλλιπαρῆς·  
 πρὴ δ' οἰῶ τινέων· ἡ δ' αὖτ' ἡ γένητο πολλούς·  
 τῶν δ' ἄρα καὶ δ' οἰῶ περ ἰόντ' ἀπὸ πάντας ὀλισσάμενοι  
 εἰ μὲν ἄρ' ἐνὶ νῆμαρ κίετ' ἐν φόνῳ οὐδ' ἐπὶ σῆιν  
 κατθάψαι· λαοὺς δ' ἐλίβους ποίησε χρονίων·  
 τοὺς δ' ἄρα τῇ δικάτῃ θάψαν θεοὶ οὐρανῶντες·  
 οὐδ' ἄρα σίτο μνήσθη ἐπὶ κάμει δακρυχέεσσιν·  
 οὐρ δ' ἐπερ πέρησιν ἐν οὐρίσιν οἰοπόλοισιν  
 ἐν σπύλῳ ὅθι φασὶ θεάων ἐμμεναι δύναντες  
 νυμφάων, αἶψ' ἄμφ' ἀχελώϊον ἱρξώσωντο  
 ἐνθα λίθος περ ἔσσει θεῶν ἐκ κήδεα πέσσει  
 αἰὲν ἄγχι δὴ καὶ νῶϊ μεδόμεθα δῖε γεραιέ  
 σίτο· ἐπετάκην αὖτε φίλον ποῦδ' ἐκλαίοισα·  
 ἦ λλον ἐβλάττων· πολυδάκρυτος δ' ἐτι ἔσσει  
 ἦ· καὶ ἀναΐξας ὅτ' ἄρ' ὑποφρονέω· κὺς ἀχιλλεύς·  
 σφάξ' ἵταροι δ' ἑλιδόρ τε καὶ ἄμφιποθ' ἐπὶ κατὰ κόσμον  
 μέισλλον τ' ἄρ' ἐπιστάνων, πεῖσαντ' ὀβελισσάντων  
 ὥπλησάν τε περὶ φραδ' ἑως, ἐρύσσαντο τε πάντα·  
 οὐ το μίσην δ' ἄρα σῖτον ἰλῶν ἐπὶ νῆμαρ φάπ' ἴη  
 καλῶς ἐν κένεοισιν ἀπὲρ χρεῖαν ἱμῶν ἀχιλλεύς·  
 οἷός τ' ἐπ' ὀνείαθ' ἐπὶ μακροκέρει χιτῶνας ἱαλλοῖ·  
 οὐ τὰρ ἐπὶ πόσιος, καὶ ἰδυτὺς ἐξ ἔρον ἔντο,  
 ἔτοι δαφνιδίης πρίσμεθ' θαύμας' ἀχιλλεύς  
 ἔσσει ἔνθ', οἷος τε θεοῖσι γὰρ ἄντα ἰώκει·

οὐκ οἶος, ἅμα δὲ γέ δ' οὐ θεράποντος ἵκοντο.  
 ἔρωι αὐτομίδωρ τε καὶ ἄλκιμος, οὗς ῥά μάλιστα  
 τί' ἀχιλλεύς ἱτάρων μετὰ πάροκλον γε θαυόντα  
 εἴ τοδ' ὑπὸ βυλόφιν γυῖον ἵππυς ὁμιόνες τε.  
 ἐς δ' ἀγαγὼν κήρυκα καλὺτορα, τοιο γέροντα  
 καδ' ἐπὶ δῖφρ' ἴσαν ἐϋξίσω δ' ἀπ' ἀπύνη  
 ἔριον ἱκτορέης κεφαλῆς ἀπὲρ σὶ ἀποινα.  
 καδ' ἐλῖπον δ' οὐ φάρ' ἐϋνήτοιντε χιτῶνα,  
 ὄφρα νέκω πυκάδας δ' ὥη οἶκον δὲ φέρεσθαι.  
 δμῶας δ' ἱκκαλίεας λῆσαι κίλετ' ἀμφὶτ' ἀλκίφαι.  
 νόσφιν ἀεράδας ὥς μὴ πρίαμος ἴδοι ἦόν.  
 μὴ δ' ἔμω ἀχνυμένη κραδίη χόλον, οὐκ ἐφύσασθαι  
 παῖδα ἰδῶν, ἀχιλλῆϊ δ' ὀδυνήειν φίλον ἦτορ.  
 καὶ ἱ κατακτείνεσθαι, δῖος δ' ἀλίστηται ἱφειτμάς.  
 τὸν δ' ἐπὶ ἔρ δμῶαί λῆσαν καὶ χρίσαν ἱλαίφαι.  
 ἀμφὶ δ' ἑμὶ φάρος καλὸν βάλον ἠδὲ χιτῶνα.  
 αὐτὸς τὸν γ' ἀχιλλεύς λεχέων ἐπέθηκεν αἰέρας.  
 σὺν δ' ἱτάροι ἦσαν ἐϋξίσω ἐπ' ἀπύνη  
 ὁμοξεντ' ἄρ' ἐπὶ φάει φίλον δ' ὀνόμωεν ἱταῖρον.  
 μή μοι πάροκλι σκυδ' μαινέμεν αἴ κε πύθῃσιν  
 ὦν αἰδὸς περ ἰῶν, ὅπ' ἱκτορα δῖον ἔλυσαν  
 παρὶ φίλῳ, ἐπὶ οὗ μοι ἀσκήα δ' ὤκεν ἀποίνα.  
 σοὶ δ' ἄν' ἐγὼ καὶ τῶν δ' ἀποδῶσομαι ὅαν' ἐπίσκη  
 ἢ ῥά, καὶ ἐς κλισίῳ πάλιν ἥτε δῖος ἀχιλλεύς.  
 ἔξω δ' ἐν κλισίῳ πολλὰ δαυδάλλω ἐνθεν ἀνίστη  
 τοίχῃ τῷ ἑτέρῳ, ὅττι ὃ πρίαμος φάτο μῦθον.  
 ἦ δὲ μὲν δ' ἡ τοι λέλυται γέρον ὥς ἐκέλευε  
 κῆρυκα δ' ἐν λεχέας ἅμα δ' ἠοῖ φανομένη φαι  
 ἔφαι αὐτὸς ἄγων, νῦν δ' ἐμὴ σὺ μῦθα δόρυς.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅσων λίθος ὄνω μάκαρος ἰδὼς ἰνὸς ἱέρους  
 καὶ φρυγὴν καθύπερθε καὶ ἠλλέσποντον ἀπείραχ.  
 τῶν σὶ γέρον πλεῦν τε καὶ ἡάσι φασὶ κεκάδιαι.  
 αὐτὰρ ἐπεί τοι πῆμα τόδ' ἔταρον οὐρανίαις,  
 αἰετοὶ περὶ ὄσῳ μάχαι τ' αὐθροκτασίαι τι  
 ἀναχέσθαι δ' ὀλίγοισι δούριο σὸν κατὰ θυμόν.  
 οὐ γάρ τι πρὶ ξέσσι ἀκαχήμεν' ἦος ἤος,  
 εὐδὲ μιν ἀνέσθεις πρὶν καὶ κακὸν ἄλλο πάθειναι.

Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα γέρον πρῖος θεοδόης,  
 μή μιν πῶς ἐσόνον ἴδῃ διοτρεῖς ὄφρα κεν ἵκηται  
 καῖται ἐν κλισίῃσιν ἀκηδής, ἀλλὰ τάχιστα  
 λῦσον, ἵ' ἐφθαλμοῖσιν ἴδῃ, σὺ δ' ἴδῃς ἀποιναι  
 πολλὰ τὰ τοι φέρων, σὺ δ' ἔωρ δ' ἀπόνομο καὶ ἔλθοις  
 σὺν ἱεσὶ παρίδαι γούναϊ πέμι πρῶτον ἱάσσε  
 αὐτόν τε ζῶν, καὶ δρᾶν φάος ἡελίοιο.

Τὸν δ' ἄρ' ὑπόφρα ἰδὼν προσέφη πίδαξ ὠκὺς Ἀχιλλεύς.  
 ἔμκεπ νῦν μ' ἐρίθιζέ γέρον νοῖω δ' καὶ αὐτὸς  
 ἵκτορά τοι λῦσαι, δίδου δέ μοι ἄγγελος ἥλθεις.  
 μήτηρ, ἦ μ' ἔτικιν, θυγάτηρ Ἀλίοιο γέροντ' ὦ.  
 καὶ δ' οἱ γινώσκω πρῖος φρεσὶν, οὐδ' ἐμὲ λήθεαι.  
 ὅττι θιῶν περ ἤγε θεὰς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν.  
 οὐ γάρ κεν τλάμῃ βροτὸς ἐλθίμην, οὐδ' ἐμὰλ' ἔβων  
 εἰς στρατὸν οὐδ' ἐγὼ ἄρ' φυλάκεις λάβοι, οὐδ' ἐκ' ὀχλῆας  
 φρεσὶ μετοχλίσσει θυράων ἡμιτοράων.  
 ἔω νῦν μὲ μοι μάλλον ἐν ὄλγῃσι θυμὸν ὀρίνῃς.  
 μή σιν γέρον οὐδ' αὐτὸν ἐν κλισίῃσιν ἱάσω,  
 καὶ ἰκίετω περ ἱόντα, δίδος δ' ἀλίσταμα ἱφινμάς.  
 ὣς ἔφατ', ἰδὲ θοοὶ δ' ὁ γέρον, καὶ ἐπέθετο μύθεον.  
 πηλείδης δ' οἴχετο λίον ὥς ἄλτο θυράϊο

αὐτὶκ' ἀπὸ θρόνου ὤρτο, γέροντα δ' ἐχθρὸς ἀνίστη,  
 οἰκτείρων πολὺν τε κάρη πολὺν τε γένεον.  
 Καί μιν φωνήσας ἔπεα πτερόντα προσηύδα·  
 ἄδελ' ἦ, ἢ δὴ πολλὰ πακ' ἄνθρωποι σὸν πατέρ' ἐθυμόν,  
 πῶς ἔτλης ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν ἰλὸς μὲν οἶος,  
 αὐτὸς ἐς ὀφθαλμούς, ὅς τοι πολλὰς τε καὶ ἰσχυράς  
 ἦϊας ἐξενάειξας, σιδήρεον νύ τοι ἦτορ.  
 ἄλλ' ἄγε δὴ κατ' ἄρ' εἴς γε ἐπὶ θρόνον. ἄλλα δ' ἐμπεθεῖ  
 ἐν θυμῷ κατακλιθεὶς ἰάτριν ἀχνύμῃσιν οἱ περ·  
 οὐ γάρ τις πρῆξις πέλειται κρυεροῖο γόοιο.  
 ὥς γὰρ ἐπακλώσσαν ὄφιοι διελθῶσι βροτοῖσιν,  
 ἴωθι ἀχνυμένους, αὐτοὶ δ' ἐτ' ἀκηδέεις ἐσὶ.  
 οἳ οἱ γὰρ τε πίθοι κατακείσται ἐν δίοις οὐδ' ἔτι  
 δώρων, οἷα δὴ δώσι πακῶν, ἱερὸς δ' ἐξείων.  
 ὦ μῆν καμμίξας δῶν ἴδὺς τορπικέρας ὄφιν,  
 ἄλλοτε μὲν τε πακῶ ὄγχε κύριος, ἄλλοτε δ' ἐνὶ λῆϊ.  
 ὦ δ' ἐκε τῶν λυγρῶν δῶν λωβητόν ἐθηκε.  
 καὶ ἔκαστ' ἐβούβρωσας ἐπὶ χθόνα διῶν ἱλαύνει.  
 φοιτᾷ δ' οὔτε θεοῖσι τεπέμιν' οὔτε βροτοῖσιν.  
 ὥς μῆν καὶ πηληϊάδεω Ἰδομενεὶ ἀγλαὰ δῶρα  
 ἐκ γενετῆς, πάντας γὰρ ἐπ' αὐθρόπυς ἐκέλευε,  
 ὅλβω τε πλούτῳ τε, ἀνάσσει δ' ἐμυρμηδόνεσσι  
 καὶ οἱ θνητῶ ἐόντι θιάρην πόλιν ἄσπετον.  
 ἀλλ' ἐπὶ καὶ ἔσθ' ἔθηκε θεὸς πακὸν, ὅτ' ἰδοὶ οὐ πῶ  
 πατρίδων ἐν μεγάροισι γονὴ γένεο κρηόντων,  
 ἀλλ' ἔκαστα πάσθαι τέκερ ποικιλέον. οὐδ' ἐνὶ τῷ γόῳ  
 γήρ' ὅσ' αὖτε καμίζω, ἐπεὶ μάλα τηλόθι πάρος  
 ἦμα ἐνὶ βροτῶ σέ τε κῆδων ἠδ' ἐσθ' ἐκνεα.  
 καὶ σέ γ' ἴρον ποτρὶν μῆν ἀχύνον μιν ὄλβιον εἶναι,

# ΙΛΙΑΔΟΣ

μνηστῶν πατρὸς σείτο θεοῖς ἐπιέκειλ' Ἀχιλλεύῃ,  
 τηλίκῃ, ὥς πρ' ἐγὼν ὄλω' ὧς γήραος ἔδω·  
 καὶ μὲν πῦρ κείνον πειναιέται ἀμφὶς ἰόντο·  
 τέρεσ', ἔδ' ἐπὶ σὺν ἄρ' αὖ κ' λαιγὸν ἄμυναι,  
 ἀλλ' ἥτοι κείνος γὰρ σέθεν βύοντο ἀκύνων·  
 χαίρει τ' ἐν θυμῷ ἐπὶ τ' ἐλπεται ἡμάτα πάντα·  
 ὄφειδ' αὖ φίλον ἦν ἀπὸ τροίθου ἰόντα·  
 αὐτὰρ ἐγὼ πάναποτμος ἐπεὶ τέκεν ὕϊας ἀρίστους,  
 τροίην ἐν δὴρεϊή, τῶν δ' οὐτίνα φημί λελιπθῆαι·  
 πευτήκεντό μοι ἦσαν ὅτ' ἤλυθον ὕϊες ἀχαιῶν,  
 ἑνὴν αἰσίδα μὲν μοι ἦς ἐκ νηδύος ἦσαν,  
 ζυὸς δ' ἄλλης μοι ἐτίκην ἐγὶ μεγάροισι γυαῖκοι,  
 τῶν μὲν πολλῶν θυῖρος ἄρης ὑπὸ γούνατ' ἔλυσιν,  
 ὅς δ' ἐμοὶ οἶος ἔλω εἴρυτο δ' ἄσιν καὶ αὐκῆς,  
 τὸν σὺ πρόω κτείνας ἀμυνόμενον περὶ πάτρης  
 ἔκτορα· τὸ νῦν εἶνεχ' ἱκάνω νῆας ἀχαιῶν,  
 λυσόμενοι παρὰ σείτο, φέρω δ' ἀπερείσι' ἄποινα·  
 ἀλλ' αἰδέομαι θεοὺς Ἀχιλλεύῳ αὐτόν τ' ἐλήθην,  
 μνησάμενοι σου πατρὸς· ἐγὼ δ' ἐλεεντερός πορ·  
 ἔτλω δ' οἷ οὐπω πῖς ἐπιχθόνιος βροτὴς ἄλλοι·  
 ἀνδρὸς παιδοφόνου, ποτὶ σόμα χεῖρ' ὀρέγεσθαι·  
 ὣς φάτο, τῷ δ' ἄρα πατρὸς ὕφ' ἱμέρον ὤρσι γόοιο,  
 ἀφάμενοι δ' ἄρα χερὸς ἀπώσασθ' ἦεν γέροντα·  
 τῷ δ' ὀμνησάμενῳ, μὲν ἔκτορος ἀνδρὸς παιδοφόνου,  
 κλαῖ' ἀδινὰ προπαύροισι ποσῶν Ἀχιλλῆος ἑλυσθείς·  
 αὐτὰρ Ἀχιλλεύς κλαῖον ἰὸν πατέρ' ἄλλοι τε δ' αὐτε  
 πάροκλον, τῶν δ' ἐσοναχὴ κατὰ δῶματ' ὄρωρε,  
 αὐτὰρ ἐπὶ ῥα γόοιο τετάρπτο δῖος Ἀχιλλεύς,  
 καὶ οἱ ἀπὸ πρᾶπιδ' ὧν ἦλθ' ἱμέρῳ ἦδ' ἀπὸ γούναρ,  
 αὐτίκ' ἀπὸ

δὴ ῥα τόδ' ἱρμείας ἐιούνης ὥϊξ' ἱέρωντ'.

ἔς δ' ἄρα γὰρ κλυτὰ δῶρα ποδῶκε πηλείωνι,

ἔξ' ἵππων δ' ἀπέβαινον ὧς χθονὶ φώνησέν τε.

Ω γέρον ἦρι ἐγὼ θεὸς ἀμβροτος ἐλήλυθα.

ἱρμείας, θὶ γάρ με πατήρ ἅμα πομπὸν ὅπασεν,

ἀλλ' ἦρι μὲν ἐγὼ πάλιν εἴθε μοι ἔδ' ἀχιλλῆος

ὀφθαλμούς εἴσειμι, νεμεσσητὴν δ' ἐκεῖ κεν εἴη

ἄθάνατον θεὸν ὧς ἐροτοῦς ἀγαπαί μιν ἄντη,

τῦνη δ' εἰσελθὼν λάβε γούνατ' αἰετῶν,

καί μιν ὑπὲρ πατρὸς, καὶ μητέρος ἠὲ κόμοιο

λίαις καὶ τέκνους ἵνα οἱ σὺν θυμὸν ὀρίνης.

Ως ἄρα φωνήσας ἀπέβη πρὸς μακρὸν ὄλυμπον

ἱρμείας, πρίαμος δ' ἐξ' ἵππων ἄλτο χαμᾶζε.

ἰδοῖον δ' ἐκαστὸν ἄνθι λίπευ δ' ἐκεῖ μίμνου ἱρύκων,

ἵππους ἡμιόνας τε γέρον δ' ἰθὺς κίον οἶκον.

τῇ ῥ' ἀχιλλεύς ἴσκι δ' ἠὲ φίλος, ἐν δ' ἐκεῖ μιν αὖτις

εὖρ' ἔταροι δ' ἀπαλινυθε καθέατο τῶν δ' ἐδ' οἶον

ἦρας αὐτομείδων τε καὶ ἄλκιμος ὄϊος ἄρην.

ποίπνυον παριόντες νέον δ' ἀπέληγον ἐδῶ δ' ἦς

ἔδων καὶ πίνων, ἐν καὶ παρέκθε βράπιζαν,

τοὺς δ' ἔλαθ' εἰσελθὼν πρίαμος μέγας, ἀρχὴ δ' ἄρα εἰς,

χειρὶν ἀχιλλῆος λαβε γούνατ' αἰετῶν καὶ κύσει χεῖρας

δεινὰς ἀνδροφόνους, αἱ δ' οἱ πολέας κτάνον ὕας.

ὧς δ' ὅταν ἄνδρ' ἄτη πυκινὴ λάβῃ ὅστ' ἐνὶ πάρῃ

φῶτα κατὰ κτείνας, ἄλλον ἐξίκετο δ' ἦμον

ἀνδρὸς ἐς ἀφροῦ, θάμβος δ' ἔχεν εἰσθρόωντας.

ὧς ἀχιλλεύς θωμῆσεν ἰδὼν πρίαμον θεοφδέαν

θωμῆσσαν δ' ἐκεῖ καὶ ἄλλοι, ἐς ἀλλήλους δ' ἰδόντες,

ἐν καὶ λισσόμενος πρίαμος πρὸς μῦθον ἔειπεν.



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὣς δὲ πειμνύσαντο καὶ ἐν θανάτιό πρ' αἴσῃ  
 ἀλλ' ἄγε δὴ τό δὲ δέξαι ἐμεῦ πάρα καλὸν ἄλφαρον  
 αὐτόν τι ῥῦσαι, πέμψον δέ με σὺν γε θοοῖσιν  
 ὄρφακων ἐς κλισίῳ πληθιάδω ἀφίκαμαι.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπε δῖος Ἰάκτορ ἄρρηφόντης,  
 περὰ ἐμεῖο γεραιὴ κατέρη θ' δέ με πείσεις,  
 ὅς με κίλη σίο δῶρα παρὶξ ἀχιλλῆος ἔχεισσι.  
 τὸν μὲν ἐγὼ δέειδον καὶ αἰδέομαι περὶ κῆε  
 συλίσθην, μή μοι κακὸν μετοπίδω γένηται.  
 ὅτ' ἂν ἐγὼ πομπὸς καί κε κλυτὸν ἄργος ἰκθίμῳ  
 ἱερδυκίῳ ἐν νηὶ θεῶν, ἢ πρὸς ὀμαρτέωρ.  
 οἷ ἄντις θεὶ πομπὸν ὀνοσάμην ὅτ' μαχίσαιτο,  
 εἴ, καὶ ἐπαΐξας ἱεούνιος ἄρμα καὶ ἵππους,  
 καρπαλίμως μάστιγα καὶ νηῖα λάϊξο χερσὶν  
 ἐν δ' ἔπνευσ' ἵπποισι καὶ ἡμίονοις μένος ἦν.  
 ἀλλ' ὅτι δὴ πύργους τε νεῶν καὶ τάφρον ἵκοντο  
 οἱ δ' ἐνέον περὶ δόρυπα φυλακτῆροβ' πονέοντο,  
 ὅτ' οἱ δ' ἐφ' ὕπνον ἔχουσιν δῖος Ἰάκτορ ἄρρηφόντης  
 πᾶσιν, ἄφαρ δ' ὥϊξε πύλας καὶ ἀπῶσαν ὀχῆας  
 ἔς δ' ἄρα γὰρ πρῖα μόν τι καὶ ἀγλαὰ δῶρ' ἐπ' ἀπῆνης,  
 ἀλλ' ὅτι δὲ κλισίῳ πληθιάδω ἀφίκοντο  
 ὕμνηλιν, τῷ μυρμιδόνος ποίησαν ἄνακτι  
 οδυρ' ἱλάτης κέραντος, ἀτὰρ καθύπερθευ' ἔριψαν.  
 λαχόντων ὄροφον λεμωνόθεν ἀμύσαντος.  
 ἀμφὶ δ' οἱ μεγαλλῶ αὐλῶν ποίησαν ἄνακτι,  
 σάυροισιν πυκινοῖσι, θύρῃ δ' ἔχει μὲν ὅτ' ἐπιβλήσῃ  
 εἰλάων ὅτ', τὸν φεῖς μὲν ἐπιρρῆσι σκεν ἄχαιοι  
 φεῖς δ' ἀναοίγσκον μεγαλλῶ κληῖδα θυρωρῶν  
 τῶν ἄλλων, ἀχιλλεύς δ' ἄρ' ἐπιρρῆσι σκε καὶ οἱ ὅτ'.

ἔξ δ' ἐοῖκες ἱάσιν ἐγὼ δ' ἐν βιβλίονός εἰμι  
 τῶν μετὰ παλλόμεν' κλήρω λελυχὸν ἐνθάδ' ἐπελῖα,  
 νῦν δ' ἤλθον πεδίον δ' ἀπὸ νηῶν, ἠῶθον γὰρ  
 θήθονται περὶ ἄστυ μάχῃ· ἑλίκω περ ἄχαιοι,  
 ἀσχαλωσσι γὰρ οἱ γὰρ καθήμενοι ἐπὶ δὲ δύνανται  
 ἴσχεσθαι ἐστυμένους πολέμῳ βασιλῆος ἄχαιῶν.

Τὸν δ' ἠμέβετ' ἐπεὶ τα γέρον πρῶτος θεοῦ δῖης,  
 εἰ μὲν δὴ θερσίωνων πιληάδῃσιν ἀχιλλῆϊ  
 εἶς ἄγε δὴ μοι πᾶσιν ἀληθείῃσιν καταλεξοῖ  
 ἢ ἐπὶ πάρ νήεσσιν ἱμὸς πᾶσι, ἢ ἐμιν ἥ δὴ  
 ἦσι κυσὶν μελίσσι τάμῳν προὔθηκεν ἀχιλλεύς.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπε δῖος κροῖστος ἄργεφόντης,  
 ὦ γέρον οὐκ ἔγωγόν δὲ κύνος φάγον, ἐπὶ οἶονδ'  
 ἀλλ' ἐπὶ κύνος κεῖται ἀχιλλῆος παρὰ νηὶ  
 αὐτὸς ἐν κλισίῃσιν, δῖος δὲ κλυτὰ δὲ οἱ ἠῶς  
 κημένῳ, ἐπὶ δὲ καὶ οἱ χυλὸς σήπεται ἐπὶ δὲ μιν δόλῃ  
 ἔδισσ'· ἀλλ' ἴδω τέ φῶτας ἀρηιφύλακτας κατ' ἐδυσσιν.  
 ἢ μὲν μιν περὶ σῆμα ἐοῦν ἐτάρωιο φίλῳ  
 ἔλκεσσι κηδέσας ἠῶς ὅτε δῖα φανείη,  
 ἐπὶ δὲ μιν αἰχμὴν, θεοῦ δὲ κεν ὄμῃς ἐπελθῶν,  
 οἶον ἐρσείης κεῖται περὶ δὲ αἶμα νέπιπαι,  
 ἐπὶ δὲ παρὰ μίαν δὲ σὺν δὲ ἔλκεα πᾶντα μέμυκεν,  
 ὅσῃ ἐτύπη, παλῆος γὰρ ἐν αὐτῷ χαλκὸν ἔλασαν,  
 εἰς τοὶ κηδόνται μολακρόν θεοὶ οἶος ἔμῃ,  
 καὶ νέκυός περ ἐόντος ἐπὶ σφί φίλῳ περὶ κῆρ.

Ὡς φάτο, γήθησεν δ' ὁ γέρον, καὶ ἀμέιβον μύθη.  
 ὦ τέκνους ἢ ῥ' ἀγαθὸν καὶ ἐναίσιμα δῖωρα δῖος οὐρανὸς  
 ἀθανάτοισιν ἐπεὶ οὐκ ἔστιν ἱμὸς πᾶσι· ἴδωτ' ἐν γὰρ  
 λήθει· ἐνὶ μετάρωσι θῖναι οἱ ὄλυμπον ἔχουσι.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἀλλ' ἐγὼ θύειν σε ῥίξω κακὸν καὶ δέκου ἄλλοι  
 σὺ ἀπαλεξήσασαι, φίλῳ δέ σε πατρὶ ἴσχω.  
**Τόν δ' ἠμείβειτ' ἐπείτα γέρον** πρίαμος θεοφθής.  
 οὐτ' ἂν πῃ τάδε γ' ἐσὶ φίλον τέκος ὡς ἀγορεύεις,  
 ἀλλ' ἐπὶ τις καὶ ἡμεῖο θιῶν ὑπέρραχτε χιῶνα.  
 ὅς μοι βῆτον δ' ἔκον ἐσθιπύροισι ἀντιβολῆσαι  
 αἶσιον, οἷος δ' ἡ σὺ δέ μας καὶ εἶδος ἀγνὸς  
 πέπυσσάι τε νόον μακάρων δ' ἔξεισι θεκήων.  
**Τόν δ' αὖτε προσέειπε** διάκτορ Θ' ἀργεφόντης,  
 καὶ δ' ἡ ταῦτά γε πάντα γέρον κατὰ μοῖραν ἔειπας.  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδ' εἰπὶ, καὶ ἀρκέως καταλίξον,  
 ἥϊπνη ἐκ πέμπτης κεμήλια πολλὰ καὶ ἰδλά  
 ἀνδρας ἐς ἄλλοδαπούς· ἵνα πρὶ τῶνδε τοι σόα μίμνη,  
 ἢ ὅδ' ἡ πῶντο δὲ καταλείπειτ' Ἴλιον ἱρὸν  
 διεδιδότ' ἐς, βῆτος γὰρ ἀνὴρ ὅς εἰσος ὅλῳ λην  
 σὸς παῖς, ὅμ' γὰρ π' μάχης ἐπιδυνέτ' ἀχαιῶν.  
**Τόν δ' ἠμείβειτ' ἐπείτα γέρον** πρίαμος θεοφθής.  
 τίς δέ σε σὺ ἔστι φέεισι, τέων δ' ἔξεισι θεκήων,  
 ὅς μοι καλὰ πρὶν οἶτον ἀπὸ τ' μὲν παιδὸς ἐνισπῶς,  
**Τόν δ' αὖτε προσέειπε** διάκτορ Θ' ἀργεφόντης,  
 περὰ ἡμεῖο γεραιὴ καὶ εἴρεαι ἐκτορα δῖον.  
 πρὶν μὲν ἐγὼ μῶλα πολλὰ μῶλ' ἔνι κυδανείρῃ,  
 ὀφθαλμοῖσιν ὅπαπα καὶ εἴτ' ὡς νηυσὶν ἐλάσας,  
 ἀργεῖν κτείνεσκε δαΐφρον' ὀξεί' χαλκῷ,  
 ἡμῖν δ' ἐσπότης θαυμάζομεν ὅς γὰρ ἀχιλλεύς  
 ἵνα μάρνασθαι κεχολωμένος ἀτρέωνι,  
 βῆτο γὰρ ἐγὼν θιράπων μίαν δ' ἤγαγε νῆος δούρης,  
 μυρμιδόνων δ' ἔξ' ἐμὶ πατὴρ δέ μοι ἐσὶ πολυκτῶρ.  
 ἀφνὸς μὲν ὅδ' ἐσὶ γέρον δέ μοι ὡς σὺ πρὶ ὧδε.

ἀμβρόσια, χρύσεια, τὰ μιν φέρον ἡμῶν ἐφ' ὕψους,  
ἡ δ' ἐπ' ἀπείρονα γαῖαν ἅμα πνοιῆς ἀνέμοιο.

ἦλθον δ' ἐξ ἄβυσσον τῇ τ' ἀνδρῶν ὄμματα θέλγει  
ὣν ἐθέλει, βύς δ' αὐτὴ καὶ ὑπνώοντας ἐγείρει.

τὼν μετὰ χρυσὸν ἔχων πέτσο κρατὺς ἀργεφόντης,  
αἵψα δ' ἄρα ποίω τε καὶ ἑλλήσπονν ἱάνει.

βῆ δ' ἵεναι κούρω αἰσυντῆρι εἰοικώς,  
πρωτόν ὑπννήτη βυπὶ χαλεσῶτη ἦβη,  
οἷδ' ἐπὶ οὖν μέγα σῆμα πάριξ Ἴλαιο ἔλασαν,

σῆ ἄν' ἄρ' ἡμιόνους τε καὶ ἵππους ὄφρα ποίειν.

ἐν ποταμῷ δ' ἡ γὰρ καὶ ἵππὸς κνέφας ἤλυθε γαῖαν.

τόνδ' ἐξ ἀγχιμόλοιο ἰδὼν ἐφράσασα κῆρυξ  
ἱρμείαν, ποτὶ δ' ἐπρίαμον φάσ φώνησέν τε.

Φράξοο δαρδανίδα φραδέος νόσ' ἔργα τέτυκται,  
ἄνδρ' ὁρώω τολχὰ δ' ἅμμι διαῖξάϊσέσθαι οἶω.  
ἄλλ' ἄγε δ' ἡ φεύγωμεν ἐφ' ἵππων ἡμῖν ἐπείτα  
γούνων ἀφωμύμοι λιτανύθωμ' αἶκ' ἱλεήσῃ.

ὣς φάτο σὺν δ' ἐγέροντι νόος χυρ, δειδιδεὶ δ' αἰνῶς.  
ὄρθαι δ' ἐπὶ χεῖρας ἐσσαν ἐνι νηαμῆοισι μέλαισιν,  
σῆ δ' ἐταφῶν, αὐτὰρ δ' ἐριούνιος ἐγγυθὺν ἐλθὼν.

χεῖρα γέροντος ἐλὼν ἐξείρσο καὶ προσέειπεν.

πῆ πάτ' ὦ δ' ἵππους τε καὶ ἡμιόνους ἰθύνης  
νύκτα δ' ἄμβροσίην, ὅθι θ' ἐυδυσσι βροτὶ ἄλλοι,  
ὅδ' ἐσὺ γ' ἐδιδεῖξας μένιν πνείοντας ἀχαιοὺς.

οἱ τοι δυσμυῖός τε καὶ ἀνἄρσιοι ἐγγὺς ἔασιν,

τῶν εἴ τις σε ἰσθιτο θοῶν σὺν νύκτα μέλαιναν.

τόσσα δ' ὀνείατ' ἄγοντα, τίς ἂν δ' ἥρι νόος εἴη.

οὗτ' αὐτὰρ νέος ἐσὶ, γέρον δ' ἐρι οὗτος ὕπνῃδ'.

ἄνδρ' ἀπαμύνασθαι ὅτε τις πρῶτος χαλιπύη.



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

Λέξιον, ὅρρα μιν αὐτὸς ἐν ὀφθαλμοῖσιν ὀύσας,  
 τοῖ πῖσω· ὧ νῆας ἰω δαναῶν ταχυπόλων.  
 Ως ἔφατ' Ὀδυσσεύς, τὸ δ' ἔκλυε μητίετα νῆος,  
 αὐτίκα δ' αἰὲν ἔκε τελευτότατον πεπηνυῖν  
 μορφονὸν θηρητῆρ' ὃν καὶ πρηνὸν καλέεσθιν.  
 ἔσθη δ' ὑπορόφοιο θύρη θαλάμοιο τίτυκται  
 ἀνέρ· ἄφνειοιο ἐὺκλήϊς ἀραρυῖα,  
 τόσ' ἄρα τῷ ἐκάτρεθον ἔσαν πηρὰ, εἴωρ δ' ἔσθιν.  
 Λέξιός τις ἔπειρ' ἄσπετος οἱ δ' ἐδόντο δόρυ,  
 γέθησαν καὶ παῖσιν ἐνὶ φρεσὶ θυμὸς ἰάνθη,  
 παρ' Ὀδυσσεύς δ' ὁ γέρον, ξυστὴν ἐπέβησά τε δῖφρον,  
 ἐκ δ' ἔλασε προθύροιο καὶ αἰθούσης ἱερῶν τε,  
 προῶδε μὲν ἡμίονοι ἔλυν τετράκυκλον ἀπὴνλω,  
 τὰς ἰδαιῖος ἔλαυνε δαίφρων αὐτὰρ ὀπίωδιν  
 ἵπποι, τοὺς δ' ὁ γέρον ἐφίπων μάστιγι κίλειε.  
 καρπαλίμως κατὰ ἄστυ φίλοι δ' ἅμα πάντες ἔποντο·  
 πόλλ' ὀλοφυρόμενοι ὥστε θανάτῳ γακκίοντα,  
 οἷδ' ὧ οὖν πόλιος κατέβω πεδίονδ' ἀφίχοντο,  
 οἱ μὲν ἄρ' ἀπορροῖσι ποτὶ Ἴλιον ἀπονέοντο,  
 παῖδες δ' καὶ γαμβροὶ, τῶ δ' ἔβλαθον εὐρύοπα ἦν,  
 ἐς πεδίον προφάνεντι ἰδὼν δ' ἐλήϊσε γέροντα,  
 αἰψὰ δ' ἄρ' ἱρμείῳ ἕον φίλῳ ἀντίον ἔσθιν  
 ἱρμεία, τοῖ γάρ τε μωλίσου γα φίλτατόν ἐστιν  
 αὐτῷ ἱταμείῳ, καί τ' ἐκλυόβω κ' ἐθέλησεν,  
 ἑσέκ' ἴθι καὶ πρίαμον κείλας ὧ νῆας ἀχαιῶν.  
 ὥς ἄρα· ὥς μὲν τ' ἄρ' ἦτορ ἴδ' ἡ μήτ' ἄρ' ἐτι νόυσσεν  
 τῶν ἄλλων δαναῶν πρὶν πηλείωνά δ' ἰκέσθαι.  
 Ως ἔφατ' ἔσθ' ἀπίθουσι δολικροῖσιν ἀργεφόντης.  
 αὐτίκ' ἐπὶ θ' ὑπὸ πτολὸν ἐδύσατο καλὰ πείδιλα,

ἀρχίμολον δ' ἐσφ' ἤλθ' ἐκάβη τεπινόπι θυμῷ .  
 οἶνον ἔχουσ' ἐν χάρϊ μελίφρονα δεξιτερῇφι ,  
 χρυσέω ἐν δ' ἐπαϊῶφρ' ἀλέτ' αὐτὴ κιοίτῳ ,  
 σῆδ' ἵππων προπάροιθον ἔπος τ' ἔφατ' ἔκτ' ὀνόμαζι .  
 τῇ σσιῖθον δ' ἵππαρ' κτὲν εὐχέο οἶκιδ' ἰκέσθαι  
 ἄτ' ἐκ δυσμενέων ἀνδρῶν ἐπεὶ ἄρ' σέ γε θυμὸς  
 ὀβρύνει νῆας ἐμεῖο μ' ἔκ' ἐθελεύσσης ,  
 ἀλλ' εὐχε σύγ' ἐπειτα κελαυεφείῃ χρονίῳ  
 ἰδαίῳ , ὅς τε βοίῳ κατὰ πᾶσιν ὀράται ,  
 αἴττει δ' οἶωνόν τε χύν' ἄγγελον , ὅς τε οἱ αὐτῷ  
 φίλτατος οἶωνῶν καί ἐν κράτ' ἐστὶ μέγιστον  
 δεξιὸν ὄφρα μιν αὖτις ἐν' ὀφθαλμοῖσι νοήσας ,  
 ἔειπ' οἶωνος νῆας Ἰησ δαναῶν ταχυπώλων ,  
 εἰδ' ἐπεὶ ὁ δ' ὄσφ' ἔδον ἄγγελον ὀβρύνεσθαι ζεύς ,  
 ἔκ' ἂν ἐγώ γ' ἐσ' ἐπειτα ἐποβρύνεσθαι κελεύμῳ ,  
 νῆας ἐπ' ἀργείων ἵνα μάλα πρ' μεμαῶτα .

Τὴν δ' ἀπαμειβόμεν' προσέφη πρίαμος θεοδότης  
 ὦ γύναι ἔμιν τοι τόδ' ἐφιέμενη ἀπιθήσῃ .

ἰδὼν γάρ δ' ἵππας ἀναχέμεναι αἶκ' ἐλήσῃ ,  
 ἦ ῥά κ' ἀμφίπολον ταμίῳ ὥρῳ ὁ γεραιὸς ,  
 χερσὶν ὕδαρ' ἐπιχέουσι ἀκήρατον , ἠδ' ἐπαρέσῃ  
 χερνίβον ἀμφίπολος πρόχρον θ' ἅμα χερσὶν ἐχέσσει .  
 νιφάμεν' δ' ἐκὺπελλον ἰδέξασθ' ἔσ' ἀλόχοιο ,  
 εὐχετ' ἐπειτα σὰς μέσῳ ἔρκει λείβε' οἶνον  
 ἕρπιδ' ἐβανιδῶν κ' φωνήσας ἔπος ἔνυδα .

Ζεὺ πάτορ' ἰδὼν μείδων κύδισε μέγιστε  
 δὸς μ' ἐς ἀχιλλῆος φίλον ἔλθεῖν ἦδ' ἐλθινόρ ,  
 πέμψον δ' οἶωνόν τε χύν' ἄγγελον , ὅς τε οἱ αὐτῷ  
 φίλτατος οἶωνῶν καί ἐν κράτ' ἐστὶ μέγιστον

# ΙΛΙΑΔΟΣ

Ἴκτορος ὠφέλειτ' αὐτὶ θεῆς ὧς νηυσὶ πεφάδαια.  
 ὧμοι ἐγὼ πανάποτμος, ἐπεὶ τέκνον ὕιας ἀρίστου  
 τροίην ἐν δὺρειν, τῶν δ' οὐ πῖνα φημί λιλείφθαι  
 μύσσοι τ' αὐτίθιοι καὶ βώϊλον ἱπποχάρμῳ.  
 Ἴκτορά θ' ὅς θεὸς ἔσκει μετ' ἀνδράσιν, ὅθι ἐώκει  
 ἀνδρὸς γε θνητῶ παλὶς ἐμυῖμα, ἀλλὰ θεοῖο,  
 ὧς μὲν ἀπώλισ' ἄρης, τάδ' ἐλέγχα πάντα λείβεσθαι,  
 ψεύσαι τ' ὀρχησαί τε χοροῖτυπῆσιν ἄεσοι,  
 ἀρνῶν ἢ δ' ἐρίφων ἐπιδήμιοι ἀρπακτῆροσ.  
 ἔκ ἂν δ' ἦμοι ἁμαξῶν ἐφοπλίσαιτε τάχιστα,  
 ταῦτά τε πάντ' ἐπιθῆτε ἵνα πρὶ ὤσω μὲν ὁδοῖο.  
 Ὡς ἔφαθ', οἷδ' ἄρα πατρὸς ὕποδ' εἴσαντο δόμοκλήν,  
 ἔκ μὲν ἁμαξῶν ἄφραυ ἐύροχον ἡμιονίῳ,  
 καλὴν πρωτοπαγῇ πείρουθα δ' εἰ δ' ἦσαν ἐπ' αὐτῆς,  
 καὶ δ' ἀπὸ πασαλοφίν (υγὸν ἔρεον ἡμιόισιοι,  
 πύξινον ὀμφαλόιντ' εὖ οἴεσθαι ἀρηρὸς,  
 ἔκ δ' ἐφίρον (υγὸν δ' ἰσμον ἅμα (υγὸν ἐννιάπηχυν,  
 καὶ τ' μὲν εὖ κατέθηναν ἐϋξέσθ' ὧς ῥυμῶ,  
 πέϊλ, ὧς πρῶτῃ ὧς δ' ἐκρίναν ἔσοι βῶλλον,  
 τῖς δ' ἐκώθερθεν ἐδ' ἦσαν ἐπ' ὀμφαλόν, αὐτὰρ ἐπείτα  
 ἐξείης κατέδ' ἦσαν ὑπὸ γλῶχινα δ' ἐγναμψαν,  
 ἔκ θαλάμῃ ὃ φέροντες ἐϋξέσθ' ἐπ' ἀπῆνης,  
 νῆιον ἐκτρέφης κεφαλῆς ἀπερείσι' ἀπριναι.  
 ζευξάν δ' ἡμιόνους κρατερῶνυχας ἔντισι οὐργας  
 ὧς ῥά ποτε πριάμῳ μεθ' ἰδῶσαν ἀγλαὰ δῶρα.  
 ἵππους ὃ πριάμῳ ὑπαζον (υγὸν οὐς ὃ γεραιὸς  
 οὐκ ἔχων ἀτίταλλον ἐϋξέσθ' ἐπὶ φάτνῃ,  
 τῷ μὲν ζευγνύδῳ ἐν δώμασιν ὑψιπλοῖσι  
 κῆρυξ καὶ πριάμος πυκινὰ φρεσὶ μὲν δ' ἐχοντοσ,

τινὲς μὲν παρὰ νηυσὶν ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνας  
 βούλομαι, αὐτίκα γάρ με κατακτείνῃσιν ἀχιλῆες·  
 ἀγκὰς ἰλόντ' ἱμὸν ἰόν, ἐπὴν γόος ἔξ' ἔρον εἶην,  
 ἦ καὶ φωεαμῶν ἐπιθήματα κοιλ' ἀνέωγεν,  
 ἐνθεν δῶδεκα μὲν πειραλλίας ἐξέλε πέπλος·  
 δῶδεκα δ' ἀπλοῖάδας χλαίνας, τόσους δὲ τάπητας·  
 τόσους δὲ φάρια καλὰ, τόσους δ' ὧς τοῖσι χιτῶνας,  
 χρυσοῦ δὲ σῆμας ἐφίρεν δέκα πάντα ταλάντα,  
 ἐκ δὲ δού' αἰθῶνας τρίποδας, πίσυρας δὲ λίβητας,  
 ἐκ δ' ἐπὶ δέπας πειραλλίης ὅδ' ἰσθμίου πόρον ἀνδρῶς  
 ἐξισίλω δ' ἐλθόντι μεγακτίρας, ὅδ' ἐνυ τοῦ πρ  
 φείατ' ἐνὶ μεγάροισι δ' ἑρῶν, περὶ δ' ἦθελε θυμῷ,  
 λύσσεσθαι φίλον ἦν, ὅδ' ἐβῶας μὲν ἄπαντας  
 αἰθούσης ἀπείρων ἐπὶ αὖ' αἰαχροῖσιν ἐνίστατο·  
 ἔρρετε λαβητῆρες ἐλγέμεσθ' οὐ νυ καὶ ὑμῖν  
 οἴχοι ἐνιστ' ἑοὺς ὅτι μὲν ἦλθε κηδ' ἡσυχνός,  
 ἦ οὐκ ἔστι δ' ὅτι μοι κρονίδης βέως ἄλγ' ἐδῶκε  
 παῖδ' ὀλέσσαι τὸν ἄριστον, ἀτὰρ γνῶσεσθε καὶ ὑμεῖς·  
 φημίτεροι γὰρ μάλλον ἀχαιοῖσιν δ' ἢ ἴσασθε,  
 κείνους τε θνητῶτος ἐναυρέμεν, αὐτὰρ ἐγὼ γε,  
 πρὶν ἀλαπαζομένῳ τι πόλιν κεραΐζομένῳ τι  
 ὀφθαλμοῖσιν ἰδέειν, βαίλω δ' ὅμον αἰδοῦς ἴσω·  
 ἦ καὶ σκηπανίῳ δέπ' ἀνέρας, οἳ δ' ἴαν' ἔξω,  
 σπρῆχόμενοι γέροντος, ὅδ' ἡσάν οἶσιν ὁμόκληα  
 νεκείων ἐλινόν τι πᾶσι τ' ἀγῶνι τ' ἀντίφονον,  
 πᾶμμονά τ' ἀντίφονον τι βοὴν ἀγαθόν τι πολίτῳ,  
 δειφρόν τι καὶ ἰππόθοον καὶ δῖον ἀγαυόν,  
 ἐννέα τοῖς δ' ἡγεραῶς ὁμοκλήσας ἐκέλευε·  
 σπύσαστέ μοι κακὰ τέκνα κατηφόνος· αἰὲς ἅμα πολυτῇ



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὦρα δ' Ἀχιλλῆϊ φρέσιν τὰ κεν θυμὸν ἵνῃ  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ, τί τοι φρεσὶν ἰδέεται <sup>291</sup>  
 αἰνῶς γάρ μ' αὐτόν γε μένος κ' θυμὸς ἀνώγει,  
 κείσ' ἵεναι, ὃ νῆας ἔσω σραπὸν δῖρυν Ἀχαιῶν  
 ὧς φάτο κῶκυσον δ' ἔγωγε καὶ ἀμείβετο μῦθος,  
 ὦ μοι, πῇ δ' ἤ τι φρένοισι οἴχονθ' ἦς εἰ πάρος περ  
 ἔκλειπ' ἀνθρώπων ξείνης ἡδ' οἷσιν ἀνείσας·  
 πῶς ἐθέλεις ὃ νῆας Ἀχαιῶν ἐλθέμεν οἴῳ,  
 ἀνδρὸς ἐς ὀφθαλμούς; ὅς περ πολέας τε καὶ ἐδολύς  
 ἦϊας ἐξινώεξι, σιδήρεον νύχι ἦτορ,  
 εἰ γάρ σ' αἰρήσει καὶ ἐσόφετε ὀφθαλμοῖσιν,  
 ὦ μνηστῆς καὶ ἄπιστος ἀνὴρ, ὅ γε οὔ σ' ἐλεήσει,  
 εἴδ' εἰ πρὸ αἰδέσσεται, νῦν δ' ἐκλαίωμαι ἀνυθεὶν  
 ὄμμοι ἐν μιγάρῳ, τοῖ δ' ὥς ποθι μοῖρα κραταῖη  
 γηνομένη ἐπένησε λίνῳ ὅτι μιν τέκον αὐτῇ,  
 ἀργυροδάκτυλ' ἄσασα ἰὼν ἀπαλυνθεὶς Ἰοκῆων,  
 ἀνδρὶ παρὰ κρατερῷ, τῷ ἐγὼ μέθην ἥπαρ ἔχοιμι  
 ἐδέμεναι προσφῦσαι, τότ' ἀντιπαῖρα γένοιτο  
 παιδὸς ἐμῆς, ἐπεὶ οὔ ἐκ κίχον ὄμμοιόν γε κατέκτα,  
 ἀλλὰ πρὸ βῶων καὶ βωτιάδων βαθυκόλπῳ  
 ἔσταότ', οὔτε φοβέομαι μνησμένον οὔτ' ἀλειωρῆς.  
 Τὺν δ' αὖτε προσέειπε γέρον Πριάμος θεοθάδης·  
 μή μ' ἐθέλῃσι ἵεναι κατὰ νύκτι, μή δ' εἰ μοι αὐτῇ  
 ὄρνις ἐνὶ μιγάρῳσι κακὸς πέλω, εἴδ' εἰ μὲ πείσεις,  
 εἰ μὲν γάρ τις μ' ἄλλος ἐπιχθονίων ἐκίλευεν  
 ἢ οἱ μάγ' ἐστὶ θυοσκοοὶ ἢ ἱερῆες,  
 ἤ τι δῶς κεν φαίμεν καὶ νοσφισοίμεθα μάλλον,  
 νῦν δ' αὐτὸς γαῖ' ἄκυστα θεοῦ κ' ἐσέδρακον ἀντίῳ,  
 εἴ μιν καὶ εἴ χ' ἄλιον ἔπος ἔσσεται, εἴδ' εἰ μοι αἴσα

τῶν μιμνησκόμμεναι, οἳ δὴ πολέεσσι τε καὶ ἰδωσὶ  
 χερσὶν ὑπ' ἀργείων κίεον ψυχὰς δάκνυντοσσι.  
 σὴ δ' ἐπ' ἀπὸ πρίαμον δῖος ἄγγελος ἦδ' ἐπ' ἀπὸ  
 τυτθὸν φθιγγαμένην, τόνδε βρόμῳ ἔλαβεν ὤϊα.  
 ὦ δαίμων δαδανίδη πρίαμ' ἐφ' ἑσὶ μηδ' ἐπὶ τάρβῃ.  
 ἢ μὲν γάρ περ ἐγὼ κακὸν ὀδομένην τόδ' ἴκωντο,  
 ἀλλ' ἀγαθὰ φρονέουσιν, δῖος δ' ἐπὶ ἄγγιλος ἔμει.  
 ὅς σε ὤννευθεν ἰδὼν μέγα κήδετα ἦδ' ἰλαίρει.  
 λύσασθαι σ' ἐκέλευσεν Ὀλύμπιος ἑκτόρα δῖον.  
 δῶρα δ' ἀχιλλῆϊ φερέμεν τά κε θυμὸν ἰήνη  
 οἶον, μὴ δ' ἐπὶ πῃ ἄλλος ἅμα βῶων ἴτω ἀνὴρ.  
 κῆρυξ τίς περ ἴσσοιτο γλαίφυρος ὅς κε κενόθυιοι  
 ἡμίονος καὶ ἁμαξῶν ἐύροχον, ἦ δ' ἐπὶ αὐτοῖς  
 νεκρὸν ἄγοι προτὶ ἄστυ πνέκταν δῖος ἀχιλλεύς.  
 μηδ' ἐπὶ θιθάναρς μελίστω φρεσὶ, μηδ' ἐπὶ τάρβῃ,  
 βῆθ' ἄρ' ἐπὶ πομπὸς ἅμ' ἐφ' ἔται ἀργεφόντης,  
 ὅς σ' ἄξει εἰς κεν ἄγων ἀχιλλῆϊ πειλοσθῆ,  
 αὐτὰρ ἐπεὶν ἀγάγησιν ἔσω κλισίῳ ἀχιλλῆϊ.  
 οὐτ' αὐτὰς κτενέει, ἀπὸτ' ἄλλος πάντας ἐρύξει.  
 οὐτ' ἐγὼ γὰρ ἔσ' ἀφρων, οὐτ' ἀσκητὴς οὐτ' ἀλιτῆμων.  
 ἀλλὰ μάλ' ἐνδύκεις ἰκέτω πεφιδήσεται ἀνδρὸς.  
 ἢ μὲν ἄρ' ὥς ἐπ' αὐτῷσ' ἀπέβη πόδας ὠκείῃς,  
 αὐτὰρ ὅγ' ὅς τις ἁμαξῶν ἐύροχον ἡμιονίῳ  
 ἐπλίσσαι ἠνώγα πείεινθα δὲ δῆσαι ἐπ' αὐτῆς,  
 αὐτὸς δ' ἐς θάλαμον κατεβήσσο κηόωντα,  
 κέδρινον ὑφόροφον, ὅς γλῆνα πολλὰ κεχάνθει,  
 ἱς δ' ἄλσων ἐκάβη ἐκαλέσασα φωνήσεν τε.  
 θαμονίη, δῖόθεν μοι Ὀλύμπιος ἄγγελος ἦλθε  
 λύσασθαι φίλον υἱὸν ἰόντ' ὦν ἡνῆας ἀχαιῶν,

Τὴν δ' ἀπαμβρόμιον προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς,  
τῇ δ' εἴη ὅς ἄπονα φέροι καὶ νεκρὸν ἄροισ',  
εἰ δ' ὑπ' ὀφροῖ θυμῷ Ὀλύμπιος αὖτις ἀνῶγαι·  
ὥς οἱ γ' ἐν νηῶν ἀγούρῃ μῆτηρ τε καὶ ἡδὲ  
πολλὰ πρὸς ἀλλήλους ἔπει πηρόντ' ἀγέρωνοι  
Ἴων δ' ὥρῳτε κρονίδης εἰς Ἴλιον ἱήρην.

Βάσκι' ἴθι ἴει ταχιῖα λιπυῖσ' ἔσδ' ἐλνύμῳσι  
ἄγγελλον πριάμῳ μεγαλήτρει Ἴλιον εἴσω  
λύσασθαι φίλον ἡγνίοντ' ὣς νῆας Ἀχαιῶν,  
δῶρα δ' Ἀχιλλεῖ φερέμεν, τάκων θυμὸν ἰήνῃ  
οἶον, μὴ δ' εἰς ἄλλος ἅμα τῶων ἴτω ἀνὴρ.  
κῆρυξ τις οἱ ἔπειτα γραιῖτερος ὅς κ' ἰθύνη  
ἡμιόνους καὶ ἅμαξαν εὐρέχον, ἡδ' ἐκαὶ ἀντὶς  
νεκρὸν ἄροι προτὶ ἄστυ ἐν ἔκτανι δῖος Ἀχιλλεύς,  
μὴ δ' εἰς πειθιάναιος μελέτω φρεσὶ, μὴ δ' εἰς πτωρεῖ.  
ὅϊον γάρ οἱ πομπὸν ὀπάσομεν ἀργυφόντιω.  
ὅς ὄξ' εἴως κεν ἄγων Ἀχιλλεῖ πηλᾶσθαι,  
αὐτὰρ ἐπεὶ ἄγαν ἄγαν σὶν εἴσω κλισίῳ Ἀχιλλεῖ,  
οὗτ' αὖτις κτενέει ἀπὸτ' ἄλλους πάλιντας ἐρύξει,  
οὕτ' ἔτι εἰς ἄφρων. οὗτ' ἄσχετος οὗτ' ἀλιτῆμαρ.  
ἀλλὰ μάλ' ἐνδονκίως ἰκίετω πεφιδύσινται ἀνδρόες.

Ὡς ἔφατ', ὥρτο δ' εἰς ἀλλόπῳς ἀγχιλίεσσα·  
ἴξεν δ' εἰς πριάμοιο, κίχεν δ' ἀνοπὴν τε γόνοντι,  
παῖδες μὲν πατέρ' ἅμφι καθήμενοι ἐνδοθον αὐλῆς,  
δάκρυσιν εἴματ' ἔφυρον, ὅδ' ἐν μέσσοισι γραιῖτος  
ἔντυπας ἐν χλαίνῃ κεκαλυμμένος, ἅμφ' ἰδὲ πολλὰ  
κόπρος ἔλω κιφαλήν τε καὶ αὐχένι θίτο γέροντ',  
τῶν γὰρ κυλινδόμενον κατιμήατο χρυσὸν ἐῆσι,  
θυγατέρες δ' ἀνὰ δῶματ' ἡδ' ἐννοὶ ὠδύροντο.

κλέψαι δ' ὄρνυσκεν ἐϋσχεπον ἀργυρόντων,  
 αὐτὰρ ἐγὼ τόδε κῦδος Ἀχιλλῆϊ προπαίπῳ.  
 αἰδῶ καὶ φιλότῃ τελευτῇ μετόπισθε φυλάσσων.  
 αἶψα μάλ' ἐς στρατὸν ἰλθεῖ καὶ ἡγεῖσθ' ἐπίπλεον  
 σκύδαί· οἱ εἰπὲ θεοῖς, ἑμὶ δ' ἔξοχα πᾶντων  
 ἀθανάτων κεχλῶσθαι ὅτι φρεσὶ μαυνομένησιν  
 ἔκτορ' ἔχῃ παρὰ νηυσὶ κερωνίσιν, ὅδ' ἀπέλυσεν  
 αἶκεν πως ἐμὲ τε δῖσ' ἑκτόρα λῦσιν.  
 αὐτὰρ ἐγὼ πρὶο μῶ μεγαλήρην ἶεν ἐφύσω  
 λῦσασθαι φίλον ἦδ' ἰόντ' ὧ νῆας Ἀχαιῶν.  
 δῶρα δ' Ἀχιλλῆϊ φερέμεν, τὰ κε θυμὸν ἰήνῃ.  
 Ως ἔφατ' ὅδ' ἀπίθησε θεὰ θέτις ἀργυρόπεζα.  
 βῆ δ' ἑκτ' ἑλνυμένοιο κερήνων αἰξάσασα.  
 ἔξεν δ' ἐς κλισίῳ οὗ ἡέως ἐν δ' ἄρα τόν γε  
 εὖρ' Ἀδινὰ σενάχοντα, φίλοι δ' ἄμφ' αὐτὸν ἱταῖροι,  
 ἔστυμένως ἐπένοντο καὶ ἐντύνοντο ἄειον.  
 ὅττι δ' οἷς λάσιος μέγας ἐν κλισίῃ ἱέρευντο.  
 ἡ δ' ἐμάλ' ἀρχ' αὐπτο καθ' ἔξο πότνια μήτηρ.  
 Χρὺς γὰρ τὲ μιν κατέρεξε ἔπος τ' ἔφατ' ἔκτ' ὀνόμαζ'·  
 Τῆκεν ἑμὸν, τέο μέγρις ὀδυρόμεν ὅδ' Ἀχαιῶν.  
 σὺν ἔδειαι κραδίῳ μεμνημένῳ ὅδ' ἐπὶ σίτῃ,  
 οὗτ' ὀλνῆς ἀγαθὸν δ' ἐγωνακί πρὶν φιλότῃ  
 μίσγῃ δ' ὅ γάρ μοι δῆρὸν βέη, ἄλλὰ τοι ὅδ' ἄρ'  
 ἀρχὶ παρίσκει θάνατος, καὶ μοῖρα κραταῆ,  
 ἄλλ' ἐμὲθεν ξύνόβ' ὦκα, δῖος δ' ἐρι' ἀγγελὸς ἔμει,  
 σκύδαί· οἱ φησὶ θεοῖς, ἑὶ δ' ἔξοχα πᾶντων  
 ἀθανάτων κεχλῶσθαι, ὅτι φρεσὶ μαυνομένησιν,  
 ἔκτορ' ἔχῃ παρὰ νηυσὶ κερωνίσιν, ὅδ' ἀπέλυσεν.  
 ἄλλ' ἄγε δὴ λῦθον, νεκροῖο δ' ἐδέξαι ἄσπονδα.



ἡ δὲ μολυβδαίνῃ ἰκέλη ἰς θυρόν ὄρεσεν,  
 ὅτε κατ' ἀργαυλῶιο βόας κίρας ἐμβεβαῖα.  
 ἔρχεται ὠμῆσιν ἐπ' ἰχθύσι κῆρα φέρουσα,  
 ὥρτ' ἐνὶ σπηῖ γλαφυρῷ θέπιν, ἀμφὶ δ' ἐτ' ἄλλα  
 ἴαθ' ὀμνυρέουσ' ἄλῃαι θαῖ, ὅδ' ἐνὶ μίσσας  
 κλαῖτε μόνον εὖ παιδὸς ἀμύμονος, ὅς οἱ ἐμελλεν  
 φθίσσειν ἐν τροίῃ λειβώλακι τηλοθὶ πάρης,  
 ἀρχοῦνδ' ἰσταμένη προσέφη πόδας ὠκία ἴεις,  
 ὄρσο θέπι, καλῆς γυνὸς ἀφθίτα μήδῃα ἐδόως.

Τὴν δ' ἠμέβειτ' ἐπετα θιά θέπις ἀργυρόπτερος  
 τίπῃ με κινῶ. ἄνωγε μέγας θεὸς αἰδέομαι δὲ  
 μίσσηνδ' ἀθανάτοισιν, ἔχω δ' ἀχὶ ἀκείτα θυμῷ.  
 εἰμι μὲν, ὅδ' ἄλιον ἵππος ἵκνται ὅτ' ἵκεν εἴπω.

ὣς ἄρα φωνήσασα κάλυμ' ἵλεθ' ἰαθιάων  
 κυλινον, τοῦδ' οὐπ' μελάντερον ἔπλετο ἰδὼ,  
 βῆ δ' ἵεναι, πρόωδον δὲ ποδῶν ἡμ' ὠκία ἴεις  
 ἤγειτ', ἀμφὶ δ' ἄρα σφι λιάζω κύμα θαλάσσης,  
 ἀκτῶν δ' ἐσσαναβάσσαι ἰς θυρόν ἀϊχμήτω,  
 εὖρον δ' ἐβρύοπα κρονίδω, περὶ δ' ἄλλοι ἅπαντες  
 ἴαθ' ὀμνυρέουσ' ἀκαρόν θεοὶ αἰὲν ἰόντες.  
 ὅδ' ἄρα παρ' οἱ πατρὶ καθέζοντο ἔξω δ' ἀθήνη.  
 ἔρη δὲ χρύσειον καλὸν δέπας ἐν χειρὶ θῆκε.  
 καί ῥ' ὑφ' ἑρῆν' ἐπέεσσι, θέπις δ' ὥρεξε πιούσας.  
 τοῖσι δὲ μύθων ἤρχε πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε.  
 ὕλυνθε οὐλυμπόνδε θιά θέπι κηδομένη πρ.  
 πένθος ἄλασον ἔχουσα μετὰ φρεσὶν οἶδα καὶ ἀνδρῶν,  
 ἀλλὰ καὶ ὥς ἐρέω τοῦ σ' ἵππου δειρὸ κάλισσας,  
 ἐννῆμαρ δ' ἡ νείκεος ἐν ἀθαλάτοισιν ὄρωρεν.  
 ἔκτορος ἀμφὶν ἐκὺ καὶ ἀχιλῆϊ πολλοῖσιν ὄρωρεν.

ἵππων ἑξάπλων περὶ σῆμα ἑτάροιο φίλοιον  
 ἔλκε, ὃ μὲν οἱ τό γε κάλλιον ἔδειτ' ἀμεινον,  
 μὴ ἀραθῶ πρὶ ἰόντι νεμεσσηθῶμιν οἱ ἡμεῖς,  
 κοφὴν γὰρ δὴ γαῖαν, ἀεκίψῃ μῦθεαίνων.

Τὸν δ' ἐχολωσαμένη προσέφη λευκώλεων ὄφρη,  
 εἴηκεν καὶ βῦρ τεὸν ἔπος ἀργυρόρρε·  
 εἰ δ' ἡ δ' ὅ μὲν ἀχιλλῆϊ, καὶ ἔκρεθ' ἰσέτετι πμήνη,  
 ἔκτορ μὲν θνητός τε γυναικῆ τε θήσατο μαῖον·  
 αὐτὰρ ἀχιλλεύς ἐστι θεῶς γόνος, ἦν ἐγὼ αὐτῇ  
 θύεφα τε καὶ ἀτίτηλα, καὶ ὅνδρ' ἰέρον παρὰ κροτήρῃ  
 πηλεῖ, ὅς περὶ κῆρι φίλος γένετ' ἀθανάτοισι,  
 πάντοθ' δ' ἀντιάδει θεοὶ γάμος, ἐν δ' ἐσὺ βῆσι  
 δαίνυ', ἔχων φόρμιγγα κακῶν ἑταρ' αἰὲν ἄπειρε.

Τὴν δ' ἀπαμειβόμεν προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·  
 ἦρην μὴ δὴ πάμπαν ἀποσκύδμανε θεοῖσιν·  
 ὃ μὲν γὰρ ἡμῆγε μί' ἔσσεται, ἀλλὰ μὲν ἔκτορ  
 φίλτατος ἔσκε θεοῖσι βροτῶν οἳ ἐν ἰλίῳ ἔσθιν,  
 ὥς γὰρ ἔμοι γ' ἐπεὶ οὔ τι φίλων ἡμάρτανε δῶρων·  
 ὃ γὰρ μοι ποτὶ βωμὸς ἐδύξο δαιτὸς ἑίσσης,  
 λαιβὴς τε κνίσσης τε, ὃ γὰρ λάχον μὲν γέρας ἡμεῖς,  
 ἀλλ' ἦρι κλέψαι μὲν ἰάθον μὲν ὃ δ' ἐπὶ πηϊσί  
 λαύβρην ἀχιλλῆϊ θρασύν' ἔκτορα, ἥ γὰρ οἱ αἰεὶ  
 μήτηρ παρμύμβλωκεν ὁμῶς νύκτας τε καὶ ἡμέρας,  
 ἀλλ' εἴπῃ καλίσφει θεῶν θέπν' ἄσπονδε μῖτος,  
 ὄφρα τί δι' εἴπω πυκινὸν ἔπος ὥς κε ἀχιλλεύς  
 δῶρων ἐκ πριάμοιο λάχῃ, ἀπόθ' ἔκτορα λύσῃ·

ὣς ἔφατ', ὥρτο δ' ἐῖς ἀελλόσποσ ἀγγελέεσσι  
 μεσσηγὺς δ' ἐσάμν τε καὶ ἱμέρην παυπαλῆσιν  
 ἔνθορε μέλας πόντος, ἐπιεονάχῃσ' ἐπὶ λίμνῃ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

οὐδ' ἔμμεν ἱκτορα δῖον ἀείκιστον μνηαίων,  
 πόρδ' ἱλικαίρεσιν μάκαρις θεοὶ ἐσορόωντο,  
 κλέψαι δ' ὄρνυσσιν ἐὺσχετον ἀρραφόντων,  
 ἐνθ' ἄλλοις μὲν πᾶσιν ἐγνόναν, οὐδ' ὅπως ἦν.  
 εὐδ' ὅπως σφιδαν' οὐδ' ἐλκωκώπιδι κούρη,  
 ἀλλ' ἔχον δὲ σφιν προῖτον ἀπύχθεο ἱλίου ἱρή,  
 καὶ πρίαμος καὶ λαὸς ἀλιξάνδρην ἐνέκ' ἄτης,  
 δὲ νείκεα θεὰς ὅτε δι' μέσσωσιν ἴκοντο,  
 πῶς δ' ἦντο· ἢ δι' πόρε μαχλοσύνην ἀλγανήν,  
 ἀλλ' ὅτι δ' ὅρ' ἐκ τοῦτο δουδεκάτη γένει ἥως  
 καὶ τῷτ' ἄρ' ἀθανάτοισι μετῆδαι φοῖβος ἀπόλλων.  
**Σ**χέτλιοι ἐπεὶ θεοὶ δηλήμονες, οὐνύποθ' ὕμιν  
 ἱκτωρ μηρί' ἔκκε βοῶν ἀγῶν τε τελείων.  
 τοῦ νῦν οὐκ ἔτλητε νέκω περ ἰόντα σάωσαι,  
 ἢ τ' ὀλόχῳ ἰδῆσθαι καὶ μητίει καὶ τέκῃ ὦ-  
 καὶ πατίει πρίαμῳ, λαοῖσί τε, τοὶ κέ μιν ὦκα  
 ἐν πυρὶ κήαν καὶ ἱπικτέραι κτερίσασθαι.  
 ἀλλ' ὀλοῦ ἀχιλῆϊ θεοὶ βούλιδ' ἐπαρήγαν,  
 ὅ οὐτ' ἄρ' φρένες ἐσὶν ἐναΐσιμοι, οὐτε νόημα  
 γναμπῶν ἐνὶ στήθεσσι, λῆον δ' ὥς ὄργια οἶδ' ἔν,  
 ὅς τ' ἐπὶ ἄρ' ἐμγάλη τε βίη καὶ ἀγένοει θυμῷ  
 εἴξας εἶς ἐπὶ μῆλα βροτῶν ἵνα δ' αὐτὰ λάβῃσιν,  
 ὥς ἀχιλῆὺς ἔλκον μὲν ἀπώλσει, οὐδ' ἐπὶ αἰδῶ  
 γίνονται ἢ τ' ἄνδρας μέγα σίνετα ἢ δ' ὀνίνησι,  
 μέλα γάρ περ τις καὶ φίλτορον ἄλλον ὀλέσσει,  
 ἢ κασίγνητον ὁμογάστρον, ἢ καὶ ἱόν,  
 ἀλλ' ἦτοι κλαύθους καὶ δ' οὐρόν μιν μεθέηκε.  
 τλητὸν γὰρ μοῖραι θυμὸν θέσσαι ἀνθρώποισιν,  
 οὐκ ἐπὶ ὅρ' ἱκτορα δῖον ἐπὶ φῖκον ἔτορ ἀπὸ νῦν





ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Ω. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΔΣ.

Εὐς κηδόμενος Ἴκτορος θέτιν πρὸς Ἀχιλλέα  
πέμπει ὅπως ἀποδῷ τῷ ἥρωος τὸ σῶμα, ἵεν  
δὲ πρὸς πρίαμον, ὅπως λύσει κοιμίδας Ἀχιλλεΐ, τὸν  
παρὸν τῷ πασδὸς ἀπολάβαι, ὃ δὲ προσεμφθεῖς ὑπὸ ἱ-  
μῶ, καὶ κοιμίδας τὺς ἑλληνικὰς φύλακας, παρα-  
γίνεται πρὸς Ἀχιλλέα, καὶ ἰκετεύει αὐ-  
τὸν ἀπολαμβάνει τὸν ἥϊον, καὶ αὐτὰ  
κοιμίδας εἰς τὴν πόλιν,  
θάπῃ, καὶ ἐπὶ αὐ-  
τῷ, διῆπνον  
ἄγει.

κάππεσσι, λαοί δ' αὖ θινὺν τὸ τε θάμβησάν τε.  
 ἀνδ' ἄρα μαιόνης πελίκας δίκα πάντας ἄερε.  
 τδῦρος δ' ἤμιπέλεκκα φέρειν κείλας ἐπὶ νῆας.  
 αὐτὰρ πηλείδης κατὰ μὲν δολιχόσκιον ἔγχεσσι,  
 καδδ' ἐλίσσῃ ἀπυρον βοὸς ἄξιον ἀνθιμούσσει,  
 θῆκ' ἐς ἀγῶνα φέρων· καί ῥ' ἤμονις ἀνδρὺς ἀνίστασθαι,  
 ἂν μὲν ἄρ' ἀρείδης ἰθρυκρείων ἀγαμέμνων.  
 ἀνδ' ἄρα μαιόνης θοδράπων ἐὺς ἰδομένηθ'.  
 τοῖσι δ' καὶ μετίεπε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·

Ἀρείδῃ, ἰδομένη γὰρ ὅσων προβέβηκας ἀπαλντων,  
 ἦ δ' ὅσων δωάμεσσι καὶ ἡμασίην ἐπλυν ἀεισοῶ  
 ἀλλὰ σὺ μὲν τό δ' ἀνθλῶν ἔχων, κείλας ἐπὶ νῆας  
 ἔρχιν, ἀτὰρ δόρυ μαιόνῃ ἥρωϊ πόρωδμ,  
 εἰ σὺ γε σῶ θυμῷ ἐθέλῃς, κίλωμαι γὰρ ἔγωγε.

Ὡς ἔφατ' οὐδ' ἀπίθουσιν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 δῶκε δ' μαιόνῃ δόρυ χάλκειον, αὐτὰρ ὄγ' ἥρωα  
 τελευθίῳ κήρυκι δίδου περὶ αἰλῆς ἀνθλῶν.

παυσαμένους ἐκίλευθον αἰθλιαῖσ' ἀνελιδνα.  
 αὐτὰρ τυδείδῃ δῶκε μέγα φάσγανον ἦρως  
 σὺν χειρὶ τε φέρων, καὶ εὐδμήτω τελαμῶνι,  
 αὐτὰρ πηλείδῃς θῆκεν σόλην αὐτοχόωνον,  
 ἐν πρὶν μὲν ῥίπῃασκε μέγα δένος ἡτίωντο,  
 ἀλλ' ἤτοι τὸν ἔπεφε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 τὸν δ' ἄγε τ' ἐν νύκτι σὺν ἄλλοισι κτεάτεσσιν.  
 σὴ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν.  
 ὄρνυσθ' οἱ καὶ τοῦτο αἶθλα περὶ σέθεν,  
 εἴ οἱ καὶ μάλα πολλὸν ἀπόπροθι πίονες ἄργοι  
 ἔξω μιν καὶ πέντε πειπλωμένους ἐνιαυτὸς  
 χρεώμευτο, οὐ μὲν γάρ οἱ ἀτιμῶμόσους γε σίδηρον,  
 ποιμήν, οὐδ' ἀροτῆρ' ἔσ' ἐς πόλιν ἀλλὰ παρίξαι.  
 Ως ἔφατ', ὦρτο δ' ἔπειτα μῆνεπ' ὀλίμος πολυποίτης  
 ἄρ' ὃ λεοντήος κρατορὸν μένος ἀντιθέοιο,  
 αὐδ' αἶας τελαμώνιάδῃς καὶ δῖος ἱππῆος,  
 ἑξείης δ' ἴσαντο σόλην δ' εἰλε δῖος ἱππῆος,  
 ἦκε δ' ἐδινύχας, γέλασσαν δ' ἐπὶ πάντοδ' Ἀχαιοί.  
 δούτορος αὐτ' ἀφίηκε λεοντεύς ὄϊος ἄρητο,  
 τὸ φίτον αὐτ' ἔρριψε μέγας τελαμώνιος αἶας,  
 χερὸς ἀπὸ σβαρῆς, καὶ ὑπέρβαλε σήματα πάντα  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ σόλην εἴλε μῆνεπ' ὀλίμος πολυποίτης,  
 ὅσων τίς τ' ἔρριψε χαλαύροπα βυκόλης ἀνὴρ.  
 ἢ δ' ἐπ' ἐλισσομένη πέτεται στήθε βῶς Ἀγλαίας.  
 τόσων ποσὺν ἀγῶνος ὑπέρβαλε, τοί δ' ἐβόησαν,  
 ἀσάντοδ' ἔταροι πολυποίταο κρατοροῖο,  
 νῆας ἐπὶ γλαφυρὰς ἔφερον βασιλῆος αἶθλων.  
 αὐτὰρ ὁ τοξευτῆσι τίθει ἰόντα σίδηρον,  
 καδ' ἐτίθει, δέχεα μὲν πυλίκης δέκα δ' ἑμπύλικας

τὸν δ' ἀχιλῆος μύθοισιν ἀμειβόμεν προσέειπεν,  
 αὐτίλαχ', οὐ μὲν τοι μέλεος ἐρήσεται ἄνους,  
 ἀλλὰ τοι ἡμιτάλαντον ἐγὼ χρυσῷ ἐπιθήσω.  
 ὥς ἐπὼν, ἐν χερσὶ τίθει, ὃ δ' ἰδέξατο χαίρων.  
 αὐτὰρ πηλείδης κατὰ μὲν δολιχόσκιον ἔγχος  
 θῆκε' ἐς ἀγῶνα φέρων κατ' ἀσπίδα, καὶ βυφάλῃσιν,  
 τεύχια ἀρπήδοντες, ἅμιν πάροκλος ἀπηύρα.  
 εἴ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν,  
 ἄνδρες δῖα περὶ τῶν Δι' ἐκλυόμεν, ὅσπερ ἀρίστω  
 τόδ' ἔχια ἰσάμεν, ταμισίχρον χαλκὸν ἱλόντι  
 ἀλλήλων προπάροιθιν ὁμίλῳ περὶ θῆται,  
 ὁπποτέρῳ κὶ φθῆσιν ὀριξάμεν, ὅς τ' ἔχον.  
 φεύσῃ δ' ἐν δίνῳ διὰ τ' ἔντια καὶ μέλαινα  
 ἰσάμεν ἐγὼ δώσω τό δ' ἐφάσθ' ἄνωρ ἀργυρόηλον  
 καλὸν, θρηϊκίον, τὸ μὲν ἀετοπόσσιν ἀπῆυρον.  
 τόδ' ἔχια δ' ἀμφοτέρωι ξωμία ταῦτα φερέειδων  
 καὶ σπριν δ' αἶτ' ἀγαθὴν παραθύσομεν ἐν κλισίῃσιν.  
 ὣς ἔφατ', ὥρτο δ' ἔπειτα μέγας τιλαμώνιος αἴας  
 αὐτὸν δ' ἄρα, τυδείδης ὥρτο κρατὶς διομήδης,  
 οἱ δ' ἔπειθ' ὦν ἐκάτρεθιν ὁμίλῳ θαρρήχθησαν,  
 ἐς μέσον ἀμφοτέρωρ στυγίῳ μεμαῶτι μάχεσθαι.  
 θεινὸν διερχόμεν, θάμβος δ' ἔχε πάντας ἀχαιούς.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ χεῖρ' ὀρῆσσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,  
 βίς μὲν ἐπίϊξον βίς δ' ἐχεῖρ' ὠρμήθησαν,  
 ἐνθ' αἴας μὲν ἔπειτα κατ' ἀσπίδα πάντοσ' ἐΐσω  
 νύξ', οὐδ' ἐχέον ἴκων, ἔρυτο γὰρ ἐνδοθι θώρηξ.  
 τυδείδης δ' ἄρ' ἔπειτα ὑπὲρ σάκεος μεγάροιο,  
 αἶψιν ἐπ' αὐχέϊ κυρε φαινή δ' ὕρως ἀκακῆ.  
 καὶ τό τε δ' ἦρ' αἰῶνι περὶ δ' ἔσσαντο δὲ ἀχαιοί.

παδ' ἄρα οἱ κεφαλῆς χ' αὐτμένα δ' ἴος δ' οὐαυδύς.  
 αὐτὶ ρίμφα θείων ἴαχον δ' ἐπὶ πάντοσ' ἀχαιοί.  
 νίκης ἱμίνω, μάλα δ' αὐδύδοντι κέλιωον,  
 ἀλλ' ὅτε δὴ πύμακτον τέλειον θρόνον, αὐτὶ δ' οὐαυδύς  
 εὐχρὶ ἀθωαίη γλαυκώπιδι, ὅν κατὰ θυμὸν,  
 κλυθὶ θεῶν, ἀγαθὴ μοι ἐπὶ ῥέροθος ἐλθε ποδοῖν.

Ως ἔφατ' εὐχόμενός, τὸ δ' ἐκλυε παλλὰς ἀθήνη.  
 γυῖα δ' ἔθηκεν ἱλαφρὰ, πόδας, καὶ χεῖρας ὑπερθεῖν.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὰ χ' ἐμύλλον ἐπαίξει δαυ ἀέθλων,  
 ἐνθ' αἴας μὲν ὀλιδε θείων, βλάψεν γὰρ ἀθήνη.  
 τῇ ῥα βοῶν κέχυτ' ὄνθος ἀποκταμένων ἱεμύκων,  
 οὗς ἐπὶ παρόκλῳ πέφνεν πόδας ὡκὺς ἀχιλλεύς.  
 ἐνθ' ὄνθε βοῆς πλήτο, σόματι ρίνας τε  
 κρητὴρ αὐτ' ἀνάειρε πολύτλας δῖος δ' οὐαυδύς.  
 ὡς ἦλθε φθάμενός, ὃ δ' βούρ' ἔλε φαίδιμος αἴας.  
 σῆ δ' κέρας μετὰ χερσὶν ἔχων βοὸς ἀργαύλοιο.  
 ὄνθοι ἀποπύων, μετὰ δ' ἀργείοισιν ἔειπεν.  
 ὦ ποιοίημ' ἐβλάψθαι πόδας, ἢ ἔ πάρος περ  
 μήτηρ ὡς δ' οὐαυδύς παρίσταται, ἢ δ' ἐπαρήγη.

Ως ἔφαθ' οἱ δ' ἄρα πάντοσ' ἐπ' αὐτῷ ἡδὺ γέλασσαν.  
 ἀντίλοχος δ' ἄρα δὴ λαιδύριον ἐκφερ' ἀέθλων  
 μεδιδόων, καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν,  
 εἰδόσιν ὕμῃ ἐρίῳ πᾶσιν φίλοι ὡς ἐπὶ καὶ νῦν  
 ἀθάνατοι τίμῳσι παλαιότερος ἀνθρώπων,  
 αἴας μὲ γὰρ ἐμεῖ' ὀλίγον προγενέστερός ἐστιν,  
 οὗτος δ' ὃ προτέρης γενεῆς πρότερον τ' ἀνθρώπων.  
 ὦ μοι ῥέροντα δέ μιν φάσ' ἐμυθῶναι ἀργαλίων δ'  
 ποσσὶν ἐειληέσθαι ἀχαιοῖς. ἐμὴ ἀχιλιδί.

Ως φάτο, κύνειον δ' αὖ ποδῶκεα πηλείωνος.



ῥηνὴς, οἱ καὶ τοῦτο ἀέθλα πειρήσασθον.

Ως ἔφατ', ὦρτο δ' ἔπειτα μέγας τελαμώνιος αἴας,  
 αὖθι' ὀδυσσεὺς πολύμητις ἀνίστατο κέρδι' αἰεὶ  
 ἰωχάμεν' αὖθι' ἄρα τῶν βατῶν ἐς μέσσην ἄρ' ὤνα  
 ἀγκὺς δ' ἀλλήλων λαβέειν χερσὶ σβαρῆσιν,  
 ὥς δ' ὅτ' ἀμείνονος τοὺς γὰρ κλυτὸς ἦραρε τέκτων.  
 δῶματ' ὕψηλ' οὐ βίας ἀνέμων ἀλείνων,  
 τεβίχθ' δ' ἄρα νῦν τα θρασυφάων ἀπὸ χερῶν  
 ἰλκομένοισι σφειδῶς, κατὰ δ' ὃ νόπος ῥέειν ἰδὼς,  
 πυκναὶ δ' ἐσμὶ δ' ἰγχεῖς ἀνὰ πλευράς τε καὶ ὤμους  
 αἵματι φοινικέσσαι ἀνέσθραμον, οἱ δ' ἐμάλ' αἰεὶ  
 νίκης ἰέσσω φίποδος πέρι ποιητοῖο,  
 οὗτ' ὀδυσσεὺς δύναιτο σφῆλαι οὐδέ τις πελάσσει.  
 οὗτ' αἴας δύναιτο κρατορὴ δ' ἔχειν ἴσ' ὀδυσσῆος.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠ' ῥ' ἀνιάζον ὑκνήμιδας ἄχαιούς,  
 δ' ἢ τότε μιν προσέειπε μέγας τελαμώνι' αἴας.  
 διοχλῆνις λαερτιάδῃ πολυμήχαν' ὀδυσσεὺς,  
 ὅ μ' ἀνάσσει, ἢ ἐγώ σε, τὰ δ' αὖθι' ἴ' πάντα μελήσθ'.

Ὡς ἐπὶ ὧν ὁ ἀναγινώσκων, ὁ δὲ ὁ  
 κούτ' ὅτι πῶς κώληται τὸ πᾶν, ὅτι  
 καὶ ὁ δὲ ἐξ ὁποῦν, ἐπὶ δὲ ἐξ ὁποῦν  
 καὶ πᾶσι, λαοὶ δὲ ἅνθρωποι τὸ  
 πᾶν, ὅτι ὁ ἀνθρώπος, ὁ δὲ ὁ  
 κίνησις δὲ ἄρα τὸ πᾶν ὅτι  
 ἐν τῷ πᾶν, ἐπὶ τῷ πᾶν, καὶ  
 πᾶσι, ὅτι ὁ ἀνθρώπος, ὁ δὲ ὁ  
 καὶ τὸ πᾶν, ὅτι ὁ ἀνθρώπος, ὁ δὲ ὁ  
 ἐν τῷ πᾶν, ὅτι ὁ ἀνθρώπος, ὁ δὲ ὁ  
 καὶ τὸ πᾶν, ὅτι ὁ ἀνθρώπος, ὁ δὲ ὁ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

μηκισίως υἱὸς ταλαονίδαο ἄνακτος  
 ὅς ποτε θύβας δ' ἤλθε διδύχότος οἰδὶ πόδες  
 ἔς τάφον, ἐνθα ὃ πάντας ἰνίῃα καδμείωνας,  
 τὸν μὲν τυδείδης δ' υἱὸν κλυτὸς ἀμφιπονήει  
 θαρσύνων ἐπισιν, μέγα δ' αὐτῷ βούλῃσιν κίλῃ,  
 ἥμα δ' ἐοὶ πρότερον παρακάμβαιεν, αὐτὰρ ἔπειτα  
 δῶκεν ἱμάntας ἐὺδμήτους βοὸς ἀγραύλοιο.  
 τῷ δ' ἐωθέμεναι βύτῳ ἔς μίσην ἀγῶνα,  
 ἄντα δ' ἀναχομένῳ χερσὶ σιβαρῆσιν, ἅμ' ἀμφω  
 σύρ' ὃ ἐπισσον, σύρ' δ' ἐσφι βαριῖται χεῖρες ἐμιχθεῖν  
 θεῖνός ὃ χρομάδος γυνὼν γένετ' ἔρρεδ' ἰδρῶς  
 πάντοθεν ἐκ μελίων, ἐπιδ' ὄρνυθ' θεῖος ἱππὸς,  
 κόψ' ἐπὶ παπλήνωντα παρῆιον οὐδ' ἄρ' ἐπὶ δῶ  
 εἰσείκεν αὐτῷ γὰρ ὑπὲρ πεφαιδῖμα γυναικὸς  
 ὣς δ' ὅθ' ὑπὸ φεικὸς βορίῳ ἀναπάλλεται ἰχθὺς  
 θῖν' ἐν φυκίσεντι, μέλαινα δ' ἐκ κύμα κάλυψεν,  
 ὥς πληγῇς ἀνέπαλτ', αὐτὰρ μετὰ θυμὸς ἐπεὶ δὲ  
 χερσὶ λαβὼν ὤρθωσιν, φίλῳ δ' ἀμφέσσω ἑταῖροι,  
 οἱ μιν ἄγον δ' ἄγῶνος ἐφιλοκίμενοισι πόδεσσιν,  
 κῆμα παχὺ πύοντα κάρη βάλλονθ' ἐτέρωσι,  
 καδ' ἄλλοφρονέοντα μετὰ σφίσιν ἔισαν ἄγοντες,  
 αὐτοὶ δ' οἱ χόμῃσι κόμισσιν δ' ἐπ' ἀμφικύπελλον.  
 πηλείδης δ' αὖτ' ἄλλα καταβίτα θῆκεν ἀέθλα  
 θεῖον μὲν ὅς δ' ἀναοῖσι παλαίμοσιν ἄλεγεινός,  
 ἔσθ' μὲν νικήσαι π' ἐγὼν τρίποδ' ἐμπυρρήτω,  
 τὸν δ' ἐδωδ' ἐκάβοιον ἐνὶ σφίσιν τῶν ἀχαιοί,  
 ἄνδρ' ὃ νικηθὲν γυναικὶ ἔς μίσην ἔθηκεν.  
 πολλὰ δ' ἐπίσχετο ἔργα, τῶν δ' ἐκ τεσσάρων,  
 εἴ δ' ὄρθος, καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν,

τιμῆς, ἧς τί μ' εἰσὶ κετιμῆσθαι μετ' ἀχαιοῦς,  
 οἱ τοὶ ὅ θεοὶ τῶν δ' ἀντὶ χάριν μισοεικία δοῖν.  
 Ως φάτο, Πηλεΐδης ὃ πολὺν καὶ ὁμιλῶν ἀχαιῶν  
 ὥχετ' ἐπὶ πάντ' αἶνον ἐπέκλυε νηλεΐδῃο.  
 αὐτὰρ ὁ, πυγμαχίης ἀλιγηνῆς θῆκεν ἄεθλον,  
 ἡμίονον ταλαεργὸν ἄγων κατέδ' ἡσ' ἐν ἄγωνι  
 ἔξετ' ἀδμήτην ἦτ' ἀλγίστη δαμάσασθαι,  
 τοῖ δ' ἄρα νικηθέντι, τίθει δ' ἐπας ἀμφικύπελλον.  
 σὴ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν.  
 Ἀρεΐδαιτε, καὶ ἄλλοι ἐϋκνήμιδες ἀχαιοί.

ἀνδρῶν δ' ὡς περὶ τῶν δὲ κλεινόμενῳ δ' περ ἀρίστω  
 πύξ μάλ' ἀναχομένῳ πεπληγέμεν, ὥς δ' ἐκ' ἀπόλλω  
 δῶκε καμμονίῳ, γνῶσι ὃ πάντ' ἐκ' ἀχαιοί.  
 ἡμίονον ταλαεργὸν ἄγων, κλισίῳ ὃ νέεσθω.  
 αὐτὰρ ὁ νικηθεὶς δ' ἐπας οἷσ' ὅσ' ἀμφικύπελλον.  
 Ως ἔφατ', ὦρνετο δ' αὐτίκ' ἀνὴρ ἦς τε μέγας τις  
 εἰδὼς πυγμαχίης ἢ δὲ πᾶσι πᾶσι ἐπειός.  
 ἔφατο δ' ἡμίονον ταλαεργὸν φώνησέν τε.  
 ἄσπον ἴτω, ὅς τις δ' ἐπας οἷσ' ὅσ' ἀμφικύπελλον,  
 ἡμίονον δ' οὐ φημί πιν' ἄξιον ἄλλον ἀχαιῶν,  
 πυγμαχίῃ νικήσαντ' ἐπὶ εὐχόμεναι εἶναι ἀειστος,  
 ἢ οὐχ' ἄλλος ὅττι μάχης ἐπιδύομαι οὐδ' ἄρα πᾶσι  
 ἐν πάντας ἐργοῖσι δαήμενα φῶτα γνέσθαι.  
 οὐδὲ γὰρ ἔξερίω εἴ ὃ καὶ τετελεσμένον ἔσται  
 ἀντιπρὸν χροάτι ῥήξω, σὺντ' ὅς ἐ' ἀράξω.  
 κηδεμόνις δ' ἐ' οἱ ἐνθάδ' ἀολλέες ἄνθι μῆνόντων.  
 οἱ κ' ἐμὴν ἔξοισαν σὺν ἐμῇ ὑπὸ χερσὶ δαμέντα.  
 Ως ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα πάντ' ἐκ' ἀκλῶν ἐγένοντο σιωπῇ,  
 εὐρύαλτος δ' ἐ' οἱ οἷος ἀνίστατο ἰσόθεος φῶς.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅτ' ἐν ἀργείοισι δίδωμι δέ τοι πόδ' ἀέθλων  
 αὐτῶς· οὐ γὰρ πύξ γε μάχυσσαι οὐδ' ἡ παλαίσθε,  
 οὐδ' ἐτ' ἀκοντισὼν ἐνδύσκει, οὐδ' ἐπὶ πόδεσσι  
 θόβουσαι, ἤδη γὰρ χαλεπὸν κατὰ γῆρας ἰκάνει.  
 Ὡς ἔπῳρ' ἐν χερσὶ τίθει, ὃδ' ἐδέξατο χαίρων,  
 καὶ μιν φωνέας ἔπειτ' ἠδρόντα προσήδα,  
 ναὶ δὴ ταῦτά γε πάντα τέκεις κατὰ μοῖραν ἔπειτα  
 οὐ γὰρ ἔτ' ἐμπέδα γυῖα φίλος πόδες οὐδ' ἐτι χιῶν  
 ὦμων ἀμφοτέρωθεν ἀπαΐσσονται ἱλαφραί,  
 εἴθ' ὥς ἡβώοιμι, βίη γέ μοι ἐμπιδος εἴη,  
 ὥς ὅποτε κρέοντ' ἀμαρυγκία θάπῃ ἱπποὶ  
 βυπρασίῳ, παῖδες δ' ἐθέσω βασιλῆος ἀέθλων,  
 ἐνθ' οὐ πρὸς μοι ὁμοῖος ἀνὴρ γίγνεται οὐτ' ἀρ' ἐπειῶν.  
 οὐτ' αὐτῶν πυλίων, οὐτ' αὐτῶν μεγαθύμων,  
 πύξ μ' ἐνίκητο κλυτομέδεια ἥνοπος ἡόν.  
 ἀρχαῖον δ' ἐπὶ πάλῃ πλινυρώνιον ὅς μοι ἀνέσῃ,  
 Ἴφικλον δ' ἐπὶ πόδεσσι παρέδραμον ἐδλὸν ἰόντα.  
 δαυρί δ' ἐπερίβαλον φυλῆά τε καὶ πολυδῶρον,  
 οἷοισιν μ' ἵπποισι παρήλασαν ἀκτορίωνι,  
 πλῆθος πρόδ' ἐβαλόντο ἀγαυάμμοι περὶ νίκης,  
 οὐνεκα δὴ τὰ μέγιστα παρ' αὐτόφιν λείπεται ἀέθλων.  
 οἱ δ' ἀρ' ἔσαν δίδυμοι, ὃ μ' ἐμπέδον ἥνιόχιεν,  
 ἐμπέδον ἥνιόχιον, ὃδ' ἀρα μάστιγι κέλευεν,  
 ὥς ποτ' ἔον, νῦν αὖτε νιώτοροι ἀντιοώντων  
 ἔργων τοιούτων, ἐμὲ δ' ἤχῃ γῆραι λυγρῇ  
 πέθεισά, τότε δ' αὖτε μετέπρεπον ἡρώεσσιν,  
 ἀλλ' ἴθι καὶ σὸν ἱππῶρον ἀέθλοισι κτόρεϊσι,  
 τοῦτο δ' ἐγὼ πρόσφρον δέχομαι, χαίρει δ' ἐμοὶ ἥτορ.  
 Ὡς μιν αἰὲ μίμνησσαι ἐνὶ ἥτορος οὐδ' ἐσσι λήθω.

ἴδ' τοι ἱππυλῦτα κραδίη, ἱππορ δέ τοι αὐτὸς  
 δῶσω πλὴν ἀρόμῳ, εἰ καὶ νῦν κεν οἴκῃσιν ἄλλο  
 μῦθον ἀπαυτήσῃς ἀφάρ κί τοι αὐτίκα δ' ὄνα  
 βυθίσμῳ ἢ σοί γε διοτρίφεις ὕματα πάντα,  
 ἔκ θυμῷ πεσίειν καὶ δαίμοσιρ εἶν' ἀλῖφός.  
 ἦ ῥά καὶ ἱππορ ἄγων μεγαθύμῳ νέστορος υἱὸς  
 ἔν χείρῳ τιθεῖ μετ' ἑλάν, τοιοῦθ' ὅ θυμὸς  
 ἰάνθη, ὥσ' εἴτε περὶ σελήῳσιρ ἔειρε  
 λήϊα ἀλδ' ἡσέοντο ὅτε φρίσσιν ἄρ' ἔρραι  
 ὥς ἄρα σοι μελέλκε μετὰ φρεσὶ θυμὸς ἰάνθη.  
 καί μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·  
 ἀντίλαχε, νῦν μὲν τοι ἐγὼν ὑποέξομαι αὐτὸς  
 χαρόμηντο ἱπτεὶ οὐπὶ παρήορος οὐδ' αἰσίφρων  
 ἦδα πάρος, νῦν αὖτε νόον νίκησε νεοίη.  
 βέλτορον αὖτ' ἀλίσσασθαι ἀμείνονας ἡπεροπόθεν,  
 οὐ γὰρ κέν με τάχ' ἄλλος ἀνὴρ παρέπαισιν ἀχαιῶν  
 ἀλλὰ σὺ γὰρ δὴ πόλλ' ἔπαθες καὶ πόλλ' ἐμόγησας  
 55 σὸς τε πατήρ ἀγαθὸς καὶ ἀδελφεὸς ἐνὶ κ' ἐμῷ.  
 ἴδ' τοι ληυομένῳ ἐπιπέθεμαι, ἦ δ' εἰ καὶ ἱππον  
 δῶσω ἐμὸν περ ἐῷσσαι, ἵνα γινώσῃ καὶ οἶδε,  
 60 ὥς ἐμὸς οὐποτε θυμὸς ὑπερφιάλδης καὶ ἀπληγός,  
 ἦ ῥά καὶ ἀνυλόχοιο νοήμονι δῶκεν ἱταίρω.  
 ἱππορ ἄγειν, ὅδ' ἔπειτα λῖβηθ' ἔλε παμφανόωντας  
 μενεόνης δ' ἀνὰ δρε δ' ὅο χρυθῖο τάλασσαν  
 τέτρατο, ὥς ἔλασεν πέμπτου δ' ὑπελείπειτ' ἀέθλων  
 ἐμφίθετο φιάλῃ πλὴν νέστορι δῶκεν ἀχιλλεύς,  
 ἀργεῖον αὖτ' ἀγῶνα φέρων, καὶ ἔπειτα παραστάς,  
 65 τῇ νῦν καὶ σοὶ τῷτο γέρον κεμήλιον ἔσω,  
 παφρόχλοιο τάφῳ μενέμ' ἐμμεναι, οὐ γὰρ ἔτ' αὐτόν



ἀμφιδιδύνηται, πολίος δ' ἐοὶς ἄξιός ἐστι.  
 ἢ ῥά, καὶ αὐτομέδοντι φίλῳ ἐκείλῳ σὺν ἱταίρῳ,  
 οἷσ' ἐμῶν κλισίῃθεν, ὃ δ' ὦχ' οὐ καὶ οἱ ἐνείκην.  
 οὐ μὲν ἄρ' ἐν χορσὶ τίθει, ὃ δ' ἐδέξατο χαίρων,  
 τοῖσ' ἰὺ καὶ μὲν ἑλκος ἀνίστατο θυμὸν ἄχλυν,  
 ἀντίλοχ' ἄμοτον κυχλωμένος, ἐν δ' ἄρα κῆρυξ  
 χερσὶ σκῆπτρον ἔθηκε, σιωπῆσαι τ' ἐκείλῳ σὺν  
 ἀργείῳ, ὃ δ' ἔπειτα μετ' ἡνὸς ἰσότητος φῶς,  
 ἀντίλοχε, πρόδιεν πεπνυμένε ποτὶον ἔριδας;  
 ἦ χυῶας μὲν ἐμὴν ἀριτύν βλάψας δ' ἐμοὶ ἵππας,  
 τὸς σὺς πρόδιε βαλὼν οἱ τοι πολὺ χείρονες ἦσαν.  
 ἀλλ' ἄγετ' ἀργείῳ κῆρυγι τοῖσ' ἡδ' ἐμείδοντες,  
 ἐς μέσον ἀμφοτέρωσι δικάσεται μὴ δ' ἐπ' ἀργῷ.  
 μὴ ποτὶ τις εἴπῃσιν ἀχαιῶν χαλκὸν χιτῶνων.  
 ἀντίλοχ' ἑνὶ δ' αἰσὶ βηισάμην ὅ μιν ἑλκεῖ,  
 οἷχεται ἵππον ἄγων, ὅτι οἱ πολὺ χείρονος ἦσαν  
 ἵπποι, αὐτὸς ὃ κρείσσον ἀριτῆτι βίητι.  
 εἰδ' ἄρ' ἐγὼν αὐτὸς δικάσω, καὶ μὲ οὐτὶνα φημί  
 ἄλλον ἐπιπλήξην δ' ὀναῶν, ἰθὺς γάρ ἐστι  
 ἀντίλοχ' ἐδ' ἄγε δειῦρο διοξίφης ἢ θέμιστες,  
 εἰς ἵππον προπάροικε καὶ ἄρματι, αὐτὰρ ἱμάδιον  
 χορσὶν ἐχεῖ ῥαδινὴν, ἥ περ τὸ πρόδιον ἑλαυνε.  
 ἵππον ἀτάμην, γαίῳ χερσὶν ἐνοσίγαιον  
 ὀμυυθι, μὴ μὲν ἐκὼν τὸ ἐμὸν δόλω ἄρμα πεδῆσαι.  
 τοῖσ' ἄντ' ἀντίλοχος πεπνυμέν' ἀντίον ἦν ἑστα.  
 ἀνέχεο νῦν πολλὸν γὰρ ἐγὼ γε νεώτερός εἰμι  
 σιὸ ἀνάξ μιν ἑλκεῖ, σὺ δ' ἐπρότερος καὶ ἀρείων,  
 οἷδ' οἷα νέεσθ' ἀνδρὸς ὑπερβασίᾳ τελέεσσι.  
 κραιπνότερ' ὅ μιν γάρ τι νόος, λιπὴν δ' ἐπεὶ μῆτην.

Ἰλκῶν ἄρματα καλὰ ἱλαύνων προῖσθ' ἐν ἵπποις,  
 τὸν δ' εἰδὼν ὥκτερε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·  
 εἰς δ' ἐν ἄργείοισιν ἔπια πηροίντ' ἄλγρευι.  
 γαῖῃ δ' οὐκ ἔστιν ὥςτος ἱλάνει μώνυχας ἵππους,  
 ἀλλ' ἄγε δὴ οἱ δῶμῳ ἀέθλιον ὥς ἐπιεκέε  
 Διὶ τῖρ, ἅπτερ τὰ πρῶτα φερίῃα τυδείος ἡῶς.

Ως ἔφαθ', εἰδ' ἄρα πάντοτε ἐπ' ἡνέορον ὥς ἐκίλευε.  
 καὶ νύ κεν οἱ πόρεν ἵππον, ἐπ' ἠήσσω γὰρ Ἀχαιοί.  
 εἰ μὴ ἄρ' ἀντίλοχος μεγαθύμος νέστορος ἦς,  
 πηλείδῳ Ἀχιλλεῖα δίκη ἡμείφατ' ὀναστές.

Ως Ἀχιλλεὺς μάλα τοι κεχολῶσμαι αἴ κε τελείωσιν  
 τῷτο ἔπος, μέλλεις γὰρ ἀφαιρήσιναι ἄιθλον.  
 τὰ φρονέων ὅτι οἱ βλάβειν ἄρματα καὶ τά χ' ἵππῳ.  
 αὐτὸς τ' ἐδιδόσειν, ἀλλ' ὥφελιν ἀθανάτοισιν  
 εὐχεσθαι, τὸ κεν οὐ π' παύσεται ἥλθε διδώκων,  
 εἰδὲ μιν οἰκτείρεις καὶ τοι φίλον ἔπλυνθ' ὀδυμῶ,  
 ἔστωι κλισίῃ χρυσὸς πολλὸς ἔστω χάλκος  
 καὶ πρόβατ' εἰς δέ τοι δμῶαί, καὶ μεῖζον ἄιθλον,  
 τῶν οἱ ἔπειτ' ἀνελῶν δόμῳ καὶ μεῖζον ἄιθλον,  
 ἢ ἐκὼν αὐτίκα νῦν, ἵνα σ' αὐτὸς ὤσωσιν Ἀχαιοί.  
 τύρ δ' ἐγὼ οὐ δάσω, περὶ δ' αὐτῆς περηθῆτω  
 ἀνδρῶν ὅς κε θέλησιν ἐμοὶ χεῖρεσι μάχεσθαι.

Ως φάτο, μέειπεν δ' ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 χαίρων ἀνυλόχῳ ὅτι οἱ φίλος ἦεν ἱταῖρος,  
 καὶ μιν ἀμεθομῶν ἔπια πηροίντα προσηύδα·  
 ἀντίλοχ' εἰ μὲν δὴ με κελεύεις οἴκωσιν ὀλβῶ  
 δὴ μὲν ἐπιδέσθαι, ἐγὼ δ' ἔτι καὶ τελέσω,  
 δάσω δὲ θῶρηκα τὸν Ἀεροπῶον Ἀπυρόν  
 χαλκῶν, ὃ πειχέστατον φαεινὸν ἀσπίτεριον

# Ι Α Ι Α Δ Ο Σ

ἄρματα δ' ἐ χρυσῷ πεπλεκασμένα, κασιπέρει  
 ἵπποις ὠκυπόδεσιν ἐπέβηχον, ὅδ' ἐ τι πολλὰ  
 γίνετ' ἐπιστῶρων ἄρματα χιὴ κατόπιδι  
 ἐν λεπτῇ κενίῃ, τῷ δ' ἐ σωυόδοντι πετέδιω.  
 εἴ δ' ἐ μέσῳ ἐν ἄγῳ πολλὸς δ' ὀνυκίσκων ἰσθμῷ  
 ἵππων ἐκ τι λόφων καὶ ἀπὸ σέρνοιο χαμαῖ.  
 αὐτοὺς δ' ἐκ δ' ἴφροιο χαμαὶ θόρε παμφανόωντ'  
 κλινε δ' ἄρα μάστιγα ποτὶ ζυγὸν ὃ δ' ἐ μάτθον  
 ἴφθιμος δίνελες, ἀλλ' ἐσυνμένως λάβ' ἀέθλων  
 δῶκε δ' ἄγαν ἐτάροισιν ὑπέρθυμοισι γυναιξί.  
 καὶ τρίποδ' ὠτόοντα φέρον, ὅδ' ἐλυσεν ὑφ' ἵππων  
 τοῦ δ' ἄρ' ἐπ' ὠντίλσχος νηλήϊος ἔλασον ἵππους,  
 κέρδισιν οὐτ' τάχει γὰρ παραφθάμεν μῆλαον  
 ἀλλὰ καὶ ὡς μῆλαος ἐχ' ἐγγύθεν ὠκείας ἵππους.  
 ὅσων δ' ἐ βοχούῃσιν ἀφίσταται, ὅς β' ἀνακτα  
 ἔλκυσιν πεδίοιο πταινόμεν σὺν ὄχρσφι.  
 τῷ μὲν τε φαύεσσιν ἐπιστῶρε τρίχου ἄρσεν  
 ἑραιά, ὃ δ' ἐτ' ἄγχι μάλ' αὖτε χ' ὅδ' ἐ τι πολλὰ  
 χώρῃ μισσηγῆς πολέος πεδίοιο θέοντ',  
 τόσων δ' ἡ μῆλαος ἀμύμοκος ὠνιλόχοιο  
 λείπειτ', ὅτ' ἀρ' ταπρῶτα καὶ ἐς δ' ἴσκηρα λείπειτ',  
 ἀλλὰ μιν αἰψὰ κίχανον, ὅφ' ἐλλετο γὰρ μέν' ἢ  
 ἵππος τῆς ἀγαμέμνονέης καλλίβιχος αἰθης,  
 ὅδ' ἐκ' ἐπὶ προτέρῳ γένετο δόμ' ἀμφοτέροισι.  
 τοῦ δ' ἐν μιν παρέλασ' ὅδ' ἀμφήετον ἔθηκεν  
 αὐτὰρ μηεόης θειράπων ἐν ἰδομηνῇ.  
 λείπειτ' ἀγακλῆος μῆλαος δ' ἐρὸς ἐρωήρ.  
 βάρδισοι τῶν γὰρ οἱ ἴσων καλλίβιχος ἵπποι  
 ὄκιστος δ' ἦν αὐτὸς ἔλαυνέμεν ἄρμ' ἐν ἄγῳ,  
 ἦν δ' ἂν ἀδ' ἀμύτοιο πηνύετο ὕλνοισι ἄλλων.  
 ἔλεον

τόν δ' αἰχρῶς ἐνέλισσεν οἴληος ταχὺς αἴας  
 ἰδομηνῷ, τί πάρος λαβρεύεαι, αἰδέετ' ἀνευθεῖ  
 ἵπποι ἀβρσίποδες πολίος πεδίοιο δῖονταί.  
 οὔτε νιώτατος ἐσὶ μετ' ἀργείοισι βροῦτον.  
 οὔτε βροῦταρον κεφαλῆς ἐκδέρκεται ὄναρ.  
 ἀλλ' αἰεὶ μύθοις λαβρεύεαι, ἔθ' ἐπὶ σέ χ' ἡ  
 λαβραγόρην ἔμουσαι, πάρα γὰρ καὶ ἀμείνονός ἄλλοι  
 ἵπποι δ' αὐτὴ ἔασι παροίτεραι αἰὲς τὸ πάρος ποδῶ  
 δὺμῆλ' ἐν δ' αὖξ' ἔχων ἐπ' ἡρα βέβηκε.

Τόνδε χολῶσ' ἀμύμος κρητὼν ἀγὼς ἀντίον ἕυδα.  
 αἶψαν νέκει αἶεσι, κακῶφραδ' ἐς, ἄλλα τι πλυντα  
 δύναι ἀργείων ὅτι βροῦτος ἐστὶν ἀπλῆς.  
 δῦρο νῦν ἢ βροῦτος πειρώμεθον, ἢ ἐλέβητο.  
 ἴσορα δ' ἀφείδω ἀγαμέμνονα θέιομην ἄμφο.  
 ὅπποτεροι κροῶν ἵπποι, ἵνα γνοίης ἀποτίνων.

Ὡς ἔφατ', ὠρνυτό δ' αὐτίκ' οἴληος ταχὺς αἴας.  
 χαλῶμνος χαλεποῖσιν ἀμείψασθαι ἱκέσασιν.  
 καὶ νῦν κ' ἐπὶ προτέρῳ ἔτ' εἰς γένετ' ἀμφοτέροισιν.  
 εἰμὴ ἀχιλλεύς αὐτὸς ἀνίστατο, καὶ φάτο μῦθον.

Μηκίπ' νῦν χαλεποῖσιν ἀμείψασθαι ἱκέσασιν  
 αἶψαν ἰδομηνῷ τε κακῶϊς, ἱππὶ ἔθ' ἐΐοικε.  
 καὶ δ' ἄλλω νεμεσῶτον, ὅς τις βροῦτα γὰρ ῥέζοι.  
 ἀλλ' ὅμοις ἐν ἀγῶνι καθ' ἡμῶι, ἐθράκαδε  
 ἵππων, οἱ δ' ἐπὶ αὐτῷ ἐπαγόμενοι περὶ νίκης  
 ἐνθάδ' ἐλευθύνονται, τό τε δὲ γνώσεσθαι ἔσας  
 ἵππων ἀργείων. οἱ δὲ δεύτεροι, οἱ τὰ πάροιθεν.

Ὡς φάτο τυδείδης δ' ἐμάλ' αἰχρῶν ἦλθε διώκων,  
 μολσχι δ' αἶψ' ἔλαυνε κατωμαδὸν οἱ ὅς οἱ ἵπποι  
 ὑπόσ' ἀφείδω ῥίμφα πρήσσοντε κέλευθον.  
 αἰὲς δ' ἐνίοχον κενὴν ῥαθ' ἀμειγγὺς ἐβαλλαν.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

μή μοι ἐρύκει δὸν μὴ δ' ἴσῃσιν, ἀχύνειν δὲ κῆρ,  
φθείονται βύτοισι πόδες καὶ γούνα καμόντα,  
ἢ ὑμῖν ἄμφορ γὰρ ἀτίμονται νεότητι.

Ως ἔφαθ' οἱ ὃ' ἀνακτὸς ὑπὸ δεισάντο δὲ ὁμοκλήρ.  
μᾶλλον ἐπιθραμέειω, τάχα δ' ἐσφισιν ἀρχιγέροντι.  
ἀργεῖοι δ' ἐν ἀγῶνι καθήμενοι ἐθρόων  
ἵππων, τοῖ ὃ' πένητ' ἐκρίνοντο πεδίοιο.  
πρῶτος δ' ἰφθιμεινὸς κρητῶν ἀγὼς ἐφράσατο ἵππων,  
ἦτο γὰρ ἐκτὸς ἀγῶνος ὑπέρτατος ἐν περὶ πῃ,  
τοῖο δ' ἀνευθεν ὄντος ὁμοκλητῆρος ἀκούσας  
ἔγνω, φράσατο δ' ἵππον ἀειπρεπέα προὔχοντα  
ὅς το μὲν ἄλλο τόθ' ἐφοῖν ἱξῆν, ἐν δ' ἐμὴν ὥπῳ  
λευκὸν σῆμ' ἐτίτυκτο περίτροχον ἥϊτε μῆνη,  
σῆ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν.

Ω φίλοι ἀργείων ἡγήετο, ἠδ' ἐμείδοντο.  
οἷος ἐγὼν ἵππων αὐγάβομαι ἢ ἐ καὶ ὑμεῖς  
ἄλλοι μοι δοκέετε παροίτεροι ἐμῶν ἵπποι.  
ἄλλος δ' ἠνίοχος ἰνδάλετα, αἱ δ' ἐπὶ αὐτῷ  
ἔβλαβον ἐν πεδίῳ, αἱ κεῖσ' ἐγὼ φέρτεροι ἦσιν,  
ἦτοι γὰρ τὰ πρῶτα ἴδον περὶ τέρμα βαλόντας,  
νῦν δ' οὐπω δύναμαι ἰδέειν, πάντη δ' ἐμοὶ ὅσπερ  
βωϊκὸν ἀμπειδίον πατήϊνθον ἐθρόωνι,  
ἦ ἐπεὶ ἠνίοχον φύγον ἠνία, ὃ δ' ἐδωαλέην  
εὐχέμεν περὶ τέρμα καὶ ἔκ' ἐτύχσεν ἐλίξας,  
ἐνθα μιν ἐκπέσειν οἷῳ σὺν ὅσ' ἄρματα ἔξαι.  
αἶδ' ἐξηρώσαν, ἐπεὶ μίνος ἔλλαβε θυμόν.  
ἀλλὰ ἰδέει καὶ ὑμῶν ἀναστὰς δὸν, ὃ γὰρ ἐγὼ γὰρ  
εὐδ' ἀναγνώσκω, δοκέει δ' ἐμοὶ ἐμῶν ἀνὴρ.  
αἰτωλὸς γένεην, μετὰ δ' ἀργείοισιν ἀνάσσει.  
τυδείης ἵπποδάμης υἱὸς κρατερὸς διομήδεος.



αἶψ' ἀποκηδ' ἦεν τε φερώμεθα χεῖρον ἄεθλον·  
 ἀλλ' ἐφομαρτυῖν, καὶ πυνδύκην ὅτ' ἰτάχιστα  
 ταῦτα δ' ἐγὼν αὐτὸς τιχνύθωμαι, ἥδ' ἐνοῦσω,  
 σενωπῶ ἐν ὁδῷ παραδύμεναι, ὅδ' ἐμὲ λύσει.

Ως ἔφαθ' οἱ ὃ ἄνακτες ὑποδείσαντες ὁμοκλήν·  
 μᾶλλον ἐπιθραμέτω ὀλίγον χρόνον, αἶψα δ' ἔπαυε.  
 σῆνος ὁδοῦ καίλης ἶδεν ἀντίλοχος μνηχάρμης,  
 ῥωχμὸς ἔλω γαίης ἢ χαμίειον ἄλιν ὕδαρ,  
 ἐξίρρηξεν ὁδοῖο, βωθωνὶ δὲ χώρον ἅπαντα,  
 τῇ ῥ' εἶχεν μενίλαος ἀμαφοχίας ἀλιείων.  
 ἀντίλοχον δ' παραβίτας ἔχε μώνυχας ἵππους,  
 ἐκ' εἰς ὁδοῦ, ὀλίγον δὲ παρακλίνας ἰδίωκην·  
 ἀφείδης δ' ἐδίδασκε, καὶ ἀντιπλόχῳ ἐγχεῖν  
 ἀντίλοχ', ἀφραδίῳσι πᾶσαι· ἀλλ' ἀνιχ' ἵππους,  
 σφινωπὸς τὰ ὁδοῦ, τάχα δ' οὐρυτέρη παφίλασθε,  
 μή πως ἀμφοτέρους δηλίσσαι, ἄρματι κύρσας.

Ως ἔφατ', ἀντίλοχος δ' ἔτι καὶ πολὺ μᾶλλον ἔλαυνε,  
 κέντρῳ ἐπιπείρχων, ὥς ἔκ' αἰὼντι τοικῶς,  
 ὅσα δ' ἐδίδσκεν ὄυρα κατ' ὠμαδίοιο πέλοντα  
 ὄντ' αἰῆδος ἀφῆκεν ἀνὴρ φερώμενος ὕβης·  
 τόσσον ἐπιθραμέτω· αἶδ' ἠρώηεν ὀπίσσω  
 ἀφείδω αὐτὸς γὰρ ἐκὼν μεθέηκεν ἐλοῦντήν,  
 μήπως συγχείρσεναι ὁδῷ ἐνὶ μώνυχος ἵπποι,  
 δίφρους ἀνερρίψαν ὑπὸ κλέεσσιν, κατὰ δ' αὐτοῖς  
 ἐν κενήσιν πέθειν· ἐπ' ἄρ' ὁμοιοι περὶ νίκης  
 ἦν καὶ νηκείων προσέφη ξανθὸς μενίλαος,  
 ἀντίλοχ' οὐπὲς σείῳ βροτῶν ὀλωότερος ἄλλος,  
 ἔρρ' ἐπεὶ οὐδ' ἐτυμὸν γε φάμεν πιπνύδαι ἀχαιῶν,  
 ἀλλ' ὅ μ' ἂν ὅδ' εἰς ἄτρ' ὅρκεν οἶσ' ἄεθλον.

Ως ἐπὶ ἔν, ἵπποισιν ἐκίχλ' ὅ φωνήσιν τε.

# ΙΛΙΑΔΟΥ

ὃ μὴ τυδίδης υἱὶ κατέσπετο φοῖβος ἀπόλλων  
 εἰς ῥα εἰς χερσὶν ἔβαλεν μάστιγα φαεινὴν,  
 ἧτο δ' ἀπ' ὀφθαλμῶν χύτο δάκρυα χρομίνους,  
 ὥσπερ τὰς μὲν ὅρα ἔτι καὶ πολλὸν μάλλον ἰούσας,  
 εἰ δέ οἱ ἐβλάβησαν ἄνιν κέντροιο θέοντος,  
 ἧδ' ἄρ' ἀθλααίῳ ἐλιφερὰ μῆμος λάθ' ἀπείλων  
 τυδείδῃ, μάλα δ' ὤκα μετίσσυρ' ὑπὸ μίνα λαῶν.  
 ἦ δὲ δὴ δὴ μάστιγα μένος δ' ἵπποισιν ἱνῆκεν,  
 ἦ δὲ μετ' ἀδμήτῳ ἦδ' ὀν κατέκταν' ἐβιβήκει.  
 ἵππεσσιν δὲ διῆξι θεὰ ἵνδον, αἱ δὲ οἱ ἵπποι  
 ἀμφὶς ὀδῶν σφαμέτω, ῥυμός δ' ὦ γαῖαν ἐλύθη.  
 αὐτός δ' ἐκ δίφροιο παρὰ ῥεχὸν ἐξεκυλίθη.  
 ἀγκῶνάς τε περὶ φρύσθην, σόματα ῥίνας τε.  
 κυλίχθη δὲ μέτωπον ἐπ' ὀφρύσι, τῷ δὲ οἱ ὄσσε  
 διαφυόφιν πληῖον, θαλαρῇ δὲ οἱ ἔα φωνή.  
 τυδείδης δὲ παραρέψας ἔχει μώνυχας ἵππους,  
 πολλὸν τῶν ἄλλων ἐξάλμμος, ἐν γὰρ ἀθήνῃ  
 ἵπποις ἔκει μένος, καὶ ἐπ' αὐτῷ κύσθης ἔθηκεν,  
 τῷ δ' ἄρ' ἐπ' ἀρείδῃς ἔχει ξανθὸς μῦνιλαο.  
 αὐτίλαχος δ' ἵπποισιν ἐκέκλετο παρὸς οἶον  
 ἔμβηκεν, καὶ σφῶϊν ταίνετον ὅττι τάχιστα.  
 ὅτι μὲν κέννοισιν ἐείπεμεν αὐτὶ κελεύω  
 τυδείδῃ ἵπποισι διαίφροντο, οἷσιν ἀθήνη  
 οὖν ὤρεξε γάχος καὶ ἐπ' αὐτῷ κύσθης ἔθηκεν,  
 ἵππους δ' ἀρείδῃσι κιχάοντε μὴ δὲ λίπῃσιν  
 καρπαλίμως, μὴ σφῶιν ἐλιγχείῳ καταχύνῃ.  
 αἶψα θήλυς ἰούσα, τίη λίπεδαι φέρισσι,  
 ὥτε γὰρ ἐξίριω καὶ μὴν τιτελεσμένοι ἔσαι.  
 ὃ σφῶιν καμίδῃ παρὰ νύκτι ὑπὸ μίνα λαῶν  
 ἔσπεται, αὐτίκα δ' ὅμμε κατακτενέῃ ὄξυ χαλκῷ.

πολλὰ ἄχιλεις, ἐκ δὲ κληῖρ θόρον ἐσπρίδαο  
 ἀντιλόχῳ, μετὰ τὸν δ' ἔλαχε κρείων εὐμήλῳ.  
 Τῷ δ' ἄρ' ἐπ' ἀρείδῃς δυνεαυτὸς μέγιστα.  
 Τῷ δ' ὅς μιν κείνης λάχ' ἑλαυνέμεν, ὅς τοι οὗτος  
 τυδείδῃς ὅχ' αἰεὶς ἰὼν λάχ' ἑλαυνέμεν ἵππῃς.  
 εἰς δὲ μετασχιῖ, σήμηνε δὲ τέρματ' ἄχιλλεὺς.  
 Τηλοθῶν ἐν λείῳ πεδίῳ, παρὰ δὲ σκαπὸν εἴσειν  
 ὠτίθειον φοῖνικα ὀπωλὸν παρὸς ἰοῖο.  
 ὡς μενέωτο δρόμον καὶ ἀληθείῳ ἀποδείποι,  
 οἶδ' ἅμα πάντοθεν ἐφ' ἵπποισιν μάστιγας ἄφαρ,  
 πέπληρόνθ' ἱμάσιν, δμόκλησάν τ' ἐπὶ ἑσπέρῃ  
 ἑσπερίῳ, οἶδ' ὡς δὲ πρὶν πεδίῳ.  
 νόσφι νεῶν ταχέως, ὅπο δὲ σέρνοισι κενίῃ  
 ἵστατ' ἀσρομένη δὲ τε νέφος ἢ ἐθύελλας.  
 χαῖται δ' ἐρρώοντο μετὰ προῖῃς ἀνέμοιο,  
 ἄρματα δ' ἄλλοτε μὲν χροὶ πύλατο πυλῶτο τέρῃ.  
 ἄλλοτε δ' αἰξάσκε μετήρα, οἶδ' ἑλατῆρος  
 ἑστῶσαν ἐν δίφροισι, πᾶτασε δὲ θυμὸς ἐκείῃ  
 γίγνης ἱεμένων, κέκλοντο δὲ οἷσιν ἑκαστῷ  
 ἵπποις, οἶδ' ἐπέτοντο κενιόντο πεδίῳ.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ πύματον τέλειον δρόμον ὠκέος ἵπποι  
 ἄφ' ἐφ' ἁλὸς ποταμῆς, τότε δὴ ἀρετήν γε ἐκείῃ  
 φαίνεται, ἄφαρ δ' ἵπποισι τάθῃ δρόμος, ὡς δ' ἐπὶ τῇ  
 αἰ φηρηπιάδαο ποδῶκεος ἐκφειρον ἵπποι,  
 τὰς δὲ μετεξέφειρον διομήδεος ἄρσενος ἵπποι  
 τῶσι θείῃ πᾶσι πολλὸν ἀνέμῳ ἔσαν, ἀλλὰ μάλ' ἐγγύς.  
 αἰὲ γὰρ δίφρῃ ἐπιβηθῆνοισιν ἱκτῶ,  
 προῖῃ δὲ διομήδεος μετὰ φρενον δὲ ρέειτ' ὥμῳ  
 θέρμετ' ἐπ' ὧν γὰρ κεφαλὰς κατὰ θέντε πετέωλω.  
 καὶ νύ κε καὶ παρὲλθας ἢ ἀμφὶ βίον ἐθίκεν,

Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

καὶ τέρμ' ὁρώων σπέρφ' ἐγγυθὺν ὅδ' ἐλθέει,  
ὅπως τὸ πρῶτον τανύσῃ βόεοισιν ἱμάσιν,  
ἀλλ' ἔχει ἀσφαλίδος καὶ πν προὔχοντα δοκεύει,  
σῆμα δ' ἐπεὶ ἐξέω μάλ' ἀειφραδίης ὅδ' ἐσελθέει,  
ἔσκει ξύλῳ ἄνδρ' ὄσαντ' ὀργυῖ' ὑπὲρ αἰῆς.  
ἢ δρυὸς ἢ πνύκης, ἔμην ὅ κατὰ πνύεται ὄμβρῳ,  
λαῖ δ' ἐπ' ἐκάτ' ἔθου ἐφ' ἡρῶντα δ' ὄνο λυκῶ,  
ἐν ξυνοχῆσιν ὁδοῦ, λεῖος δ' ἵπποδρόμου ἀμφίς,  
ὅττω σῆμα βροπῶ πάλαι κατὰ τεθνηῶν.  
ἢ τότ' ἐν νύσῃ τέτυκτο ὅ πρὸ τέρων ἀνθρώπων,  
καὶ νῦν τέρματ' ἔθηκεν ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς.  
ὅδ' ἐπ' ὅ μάλ' ἐγχεῖται ἐλάσσω χυθὸν ἄρμα καὶ ἵππος  
αὐτὸς δ' ἐκλινθῆναι ἐπ' ἡλίκτω ἐν δίφρῳ,  
ὅκ' ἐπ' ἀεισερὰ θῖν, ἀτὰρ πν διεξὶ ἵππον  
κένσαι ὁμοκλήτας, ἐξέει τε δι' ἐνία χρίσιν,  
ἐν νύσῃ δ' ἐπ' ἵππος ἀεισερὸς ἐγχευμθῆτω,  
ὅς ἄντοι πλήμνη γ' ἐοῶσται ὄκρον ἐκείνῳ  
κύκλῳ ποικιλοῦ λίθῳ δ' ἐκείνῳ ἐπ' αὐρεῖν,  
μήπως ἵππος τε τρώσῃ κατὰ ἄρματα ἄξις,  
χάρμα δ' ἐπ' ἄλλοις, ἐλγχεῖ δ' ἐπ' αὐτῷ  
ἔσεται. ἀλλὰ φίλῳ φρονέων πεφυλαγμένῳ εἶν.  
ἐπ' ὅτ' ἐν νύσῃ γ' ἐκλεῖσται δ' ἐπ' ὄκρον,  
ἐκ' ἐπ' ὅς κ' ἐπ' ἔλθῃ μετὰ λμῶν, ὅδ' ἐπ' ἀνέλθοι.  
ὅδ' ἐπ' ἔκον μετ' ὀπίθων ἄρῶνα δ' ἵππον ἐλαύνει  
ἀνδρῶν ταχύν ἵππον ὅς ἐκ θεῶν γένος ἦεν,  
ἢ ἐπ' ἐκ λαιόμενοντος, οἳ ἐπ' ἀνέλθῃ τέρων ἐκείνῳ.  
ὅς ἐπ' ὅτ' ἐν νύσῃ γ' ἐκλεῖσται δ' ἐπ' ὄκρον,  
ἐκ' ἐπ' ὅς κ' ἐπ' ἔλθῃ μετὰ λμῶν, ὅδ' ἐπ' ἀνέλθοι.  
ὅδ' ἐπ' ἔκον μετ' ὀπίθων ἄρῶνα δ' ἵππον ἐλαύνει  
ἀνδρῶν ταχύν ἵππον ὅς ἐκ θεῶν γένος ἦεν,  
ἢ ἐπ' ἐκ λαιόμενοντος, οἳ ἐπ' ἀνέλθῃ τέρων ἐκείνῳ.

11 2



# ΙΛΙΔΟΣ

Οἷκε γυναικὶ ἀγλαῖα ἀμύμονα ἔργ' ἐδ' οὐρανῷ  
 καὶ φίλῳ δ' ὠτώωντα δύω καὶ ἐκασσίμηνον  
 Τῷ πρώτῳ, ἅτ' ἀρ' ἔνι Τῷ Διυτέρῳ ἵππον ἔθηκεν  
 ἔξτε ἀδμήτω βρέφος ἑμίονον κύνεσσιν.  
 οὐ τὰρ Τῷ φητάτῳ ἄπυρον κατέθηκε λείβετα  
 πολλὸν τέσσαρα μέτρα κίχων δότα λευκὸν ἔτ' αὐτῷ.  
 Τῷ δ' ἐτετάρτῳ θῆκε δύο χρυσοῖο τεύχεα,  
 σίμῳ δ' ἀμφίθρον φειλὴν ἀπύρωτον ἔθηκεν  
 καὶ ὄρθος, καὶ μῦθον ἐν ἀργείοισιν ἔειπεν,  
 ἀφείδῃτε, καὶ ἄλλοι ἐϋκνήμιδες ἄχαιοι,  
 ἵππῃας τάδ' ἀέθλα διδελγμένα κεῖτ' ἐν ἀγῶνι.  
 εἰ μὲν νῦν ἴδ' ἄλλῳ ἀεθλεύοιμι ἄχαιοι.  
 εἴτ' ἂν ἔγωγε τὰ πρῶτα λαβὼν κλισίῳ διφροίμῳ.  
 ἴσι γὰρ ὅσων ἐμοὶ ἀρετῇ πειβωλλέων ἵπποι,  
 ἀθάνατί τι γὰρ εἰσι, ποσειδάων δ' ἔπος αὐρῆς  
 παρὶ ἐμῷ πηλῇ, ὅδ' ἄντ' ἐμοὶ ἐγγυάλιστον.  
 ἀλλ' ἦτοι μὲν ἔγωγε μέγας, καὶ μώνυχες ἵπποι.  
 οἷον γὰρ δένος ἐδλὸν ἀπώλεσαν ἐνιόχοιο  
 ἡπίν, ὃς σφῶϊν μάλα πολλάκις ὕψρον ἔλαορ  
 χατάων κατέχυνε λείσας ὕδατι λευκῷ.  
 ἐν τῷ γ' ἐσκότοιο πενθείεσσιν, οὐδ' ἴδ' ἐσφιν  
 χαῖται ἐρμείδαται, τῷ δ' ἐσάτον ἀχνυμένω κῆρ.  
 ἄλλοι δ' ἐέλλιθε κατὰ θράξιν ὃς τις ἀχαιῶν  
 ἵπποισιν τι πέποιθε καὶ ἄρμασι κολλητοῖσιν.  
 Οὐ φάρ' ἀπὸ πηλείδης τέχεος δ' ἵππῃος ἔγρθη.  
 ὦρτο πολὺ πρῶτος μὲν ἀναξάνδρῳ ἐϋμῃσι.  
 ἀδμήτῳ φίλῳ υἱὸς ὃς ἵπποσύνῃ ἐκείνατο.  
 Τῷ δ' ἴδ' ἀπὸ πηλείδης ὦρ' κρατερὸς διομήδης,  
 ἵππους ὃ βροῦς ὕπαρχε ξυγόν οὐς ποτ' ἀπηνύρα  
 κινήσῃ, ἅτ' ἀρ' αὐτὸν ὑπέξισάσθην ἀπόλλωρ.

οἷον ἀμφ' ἀρείονα ἀολλέες ἠγέρεθον·  
τῶν μιν ἐπὶ χρομένων ὁμαδος καὶ δοῦπος ἐγερει  
ἔξω δ' ὀρθωθεὶς κισίφρας πρὸς μῦθον ἐφην·

Ἀρείδητι καὶ ἄλλοι ἀεισῆες παναχαιῶν,  
πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊὴν σβέσαιτ' αἴθοπι οἶνον  
παῖδον, ὁπόσον ἐπέχε πυρὸς μένος, αὐτὰρ ἐπεὶ τα  
ῖς ἐκ παρόκλοιο μῦμοι πωδῶ ἀλέγμεν,  
εὖ διαγινώσκοντο, ἀειφραδία δ' ἐτέτυκται,  
ἐν μέσῃ γὰρ ἔκειτο πυρῇ, οἷον δ' ἄλλοι ἀνυθεῖν  
ἔχρατῃ κείοντ' ἐπιμῖξιν ποιεῖν καὶ ἀνδρῶν  
καὶ τὰ μὲν ἐν χρυσέῃ φιάλῃ καὶ δίπλακι δημόῳ  
θείομν, εἰσόκεν αὐτὸς ἐγὼ αἶδι κεύθαμαι,  
τύμβον δ' ὅ μάλ' ἀπολλὸν ἐγὼ πονέεσθαι ἀνῶγα,  
ἀλλ' ἐπιθήκ' αἶθρον ἐπέτα δ' ἐκ τὸν ἀχαιοὶ  
δύρυντ' ὑψηλόν τε κτήμηναι, οἶκεν ἐμεῖο  
δύτιροι ἐν νήεσσι πολυκλήσι λίπηδι·

ὣς ἐφασθ', οἷον ἐπίθοντο ποδῶ κ' ἐπληείωνι·  
πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊὴν σβέσαιν αἴθοπι οἶνον  
ῶσον ἐπιφλὸς ἦλθε, βαθείᾳ δ' ἐκάλπισε τέφρην·  
κλαίοντο δ' ἐτάροιο ἐννέος δέσ' ἀλευκὰ,  
ἄλλεγον ἐς χρυσέῳ φιάλῃ, καὶ δίπλακι δημόῳ,  
ἐν κλισίῃσι δ' ἐθέντο ἐκὼν λιγὴ κάλυψαν,  
θρῶσαντο δ' ἐσῆμα θεμέλιό τε προβάλοντο  
ἀμφὶ πυρὴν· εἴθε δ' ἐχρὴν γαῖαν ἐχέουσαν,  
χεύαντο δ' ἐσῆμα πωλιν κίον, αὐτὰρ ἀχιμεύς,  
αὐτὸ λαὸν ἔρυκε καὶ ἴσανον δύρυν ἀγῶνα·  
νήων δ' ἐφ' αἰθλα λείβητάς τε ῥίπιδά τε·  
ἵππας θ' ἡμίονους τε βοῶν τ' ἴφθιμα κούρωα,  
ἦ δ' ἐγὼ αἶψα ἐϋώνους, πωλιν τε σίδηρον,  
ἵππωνσι μὲν πρῶτα ποδῶ κ' ἐπληείωνι ἔκτα

# ΙΛΙΑΔΟΣ

πάντοδ' ἀνὴξοῦν κάλειον τέ μιν εἰς ἐκαστῷ,  
 ὅδ' αὐτ' ἔλπειται μὲν ἀνὴναρ, εἶπε δὲ μῦθον.  
 ἔχ' ἔδος, ἵμι γὰρ ἀνθρῶπις ἐπ' ὤκεανοιο ρέεθρα  
 αἰθίοπων ἐς γαῖαν, ὅθι ῥέυσ' ἐκαστόμβας  
 ἀθανάτωις, ἵνα δὴ καὶ ἐγὼ μεταδιδάωμαι ἱρῶν.  
 ἀλλ' Ἀχιλλεύς βορέω ἦ λῆ βίφυρον κελαδ' αἰθρῶν  
 ἔλθειν ἀφ' αἶται, καὶ ὑπὶ χεῖρας ἱβ' ἀκαλὰ,  
 ὄφρα πυρὴν ὄρσῃται καὶ ἡμῶν, ἢ ἐνὶ κυῖται  
 πάροκλως, πρὶν πάντοδ' ἀνασινάχουσιν Ἀχαιοί.  
 ἢ μὲν ἄρ' ὥς ἐπαυῶσαι, ἀπὲρ βήσας βίβ' ὀρέοντο,  
 ἦ χ' ἦ θρασυσύνην φεα κλένουντε πάροθεν.  
 αἶψα δὲ πόντον ἵκανον ἀήμῃμαι. ἔρπο δὲ κύμα  
 θηοῖν ὑπὸ λιγυρῇ, φοῖν δ' ἐρίβωλον ἱκέδω,  
 ἐν δὲ πυρὶ πείσεται, μέγα δ' ἰαχὴ θρασυδαιέσων.  
 πταννύχιοι δ' ἄρα βίβ' πυρὸς ἀμυδρῆς φλόγ' ἐλάλον,  
 φουσῶντοδ' λιγέως, ὅθι ἐπ' ἀννυχὸς ὥκ' Ἀχιλλεύς  
 χυσεῖν ἐκ κρητῆρος ἔχων δὲ πᾶς ἀμφικυπέλλον.  
 οἶνον ἀφυστόμῃος χαμάδις χεῖρ, δεινὴ δ' αἶψα  
 ψυχὴν κικλήσκων πάροκλῃος δ' αἰθρῶ.  
 ὥς δὲ πατήρ οὐ παῖδ' ὅς οἱ δούρεται δέσπ' αἰῶν  
 νυμφίον, ὅς τε θανὼν δ' αἰθρῶς ἀκάχσας βουκίας.  
 ὥς Ἀχιλλεύς ἐτάρχοιο δ' αἰῶντος δέσπ' αἰῶν  
 ἱρπύων παρὰ πυρκαϊῇ, ἀδινὰ σεναχίλων.  
 ἥμος δ' ἐωσφόρος ἴσ' ἰφθίμους ἐρέων ἢ γαῖαν,  
 ἐν τε μετακροκόπελτος ὑπεῖρ ἄλλα κίδ' ἵσταται ἡῶς.  
 τῆμος πυρκαϊῇ ἐμαραίνω, πᾶν ἄνδρ' ὃ φλόξ.  
 οἱ δ' ἄν' ἡμῶν πάλιν αὐτὸς ἔβαν οἷον δὲ νέεσθαι,  
 θρηίκιον κατὰ πόντον, ὅθ' ἐξενον οἷον δὲ θύων.  
 πηλείδης δ' ἀπὸ πυρκαϊῆς ἐτέρωσ' ἰαδύς,  
 γλῆνθ' ἐκ κρητῆρος, ὅθ' ἐξενον οἷον δὲ θύων.

Ἰννία τοῦ γ' ἀνακτὶ βασιλεὺς κύνος ἦσαν·  
 καὶ μὴ τῶν ἐνέβαλε πυρὴ δ' οὐκ ἔφροσμήσας,  
 δῶδε καὶ δὲ βῶων μεγαθύμων ἡέας ἐδολούς,  
 χαλκῷ δ' ἠϊόνων, κακὰ δ' ὅφρ' ἐσὶ μῆδε' ἔργα,  
 ἐν δὲ πυρὸς μὲν ὅτ' ἔκει σιδήρειον ὄφρα νέμοιτο,  
 ὅμως ἐν τ' ἄρ' ἔπειτα φίλον δ' ὀνόμηνεν ἱταῖρον·  
 χαῖρέ μοι ὦ παύρικλε καὶ ἐν αἰδέο δόμοισι,  
 πάντα γάρ ἦδ' ἦτοί τι λίσσεται παύροισιν ὑπέσσω,  
 δῶδε καὶ μὴ βῶων μεγαθύμων ἡέας ἐδολούς·  
 τοὺς ἅμα θιπάλωνται· πῦρ ἐδίει, ἔκπρε δ' οὐκ  
 δῶσ' ὡς πρὶαμίδω πυρὶ δαπνέμεν, ἀλλὰ κύνεσσιν·  
 οὐ φάτ' ἀπελήσας, τόνδ' ὅτ' κύνος ἀμφεπέροντο,  
 ἀλλὰ κύνες μὴ ἀλαλκε δίδος θυγάτηρ ἀφροδίτη,  
 ὕματα καὶ νύκτας, ῥοδόεντι δ' ἡρίων ἱλαίῳ  
 ἀμφοσίδω, ἵνα μὴ μιν ἀποδύποι ἑλκυσάσθων,  
 τοῦ δ' ἐπικυάνιον νέφος ἦγαγε φοῖβος ἀπόλων·  
 θράνεσθαι πεδίονδε, κάλυψεν δ' ἡρώον ἀπαντα·  
 ὅσων ἐπὶ χερσὶν ἐκὺς μὴ πρὶν μένος ἡελίοιο  
 σκῆλη ἀμφιπέεσσι χροάϊνισιν ἠδ' ἐμέλεισιν,  
 εἰ δὲ πυρὶ παρόκλιν καί τοι τινέσθ' ὅτ',  
 ἐνθ' αὐτ' ἄλλ' ἐνόησε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 εἰς ἀπὸν νυθε πυρὴς οὐδ' οἷος ἦρατ' ὀνέμοισι  
 βορέη καὶ βιφύρω καὶ ὑπέαχ' ὅτ' ἱερὰ καλὰ·  
 πολλὰ δ' ὅτ' καὶ σπένδων χρυσέῳ δὲ παῖτι λιτάνυσσιν  
 ἐλθέμεν ὄφρα τάχιστα πυρὶ φλεγέβοιτο νεικέρη,  
 ἥλ' ἱερὰν αὖ καὶ καὶ μῦθαι, ὥκεια δ' ἴετο  
 ἀράων αἰὲς μετὰ γαίης ἥλ' ὀνέμοισιν·  
 οἱ μὴ ἄρα βιφύροιο δουρατὸς ἀθροοὶ ἐνδον  
 ἑλαπίνῳ δαίνυστο, θύεσθαι δὲ ἴετο ἐπίσῃ·  
 ἐκὺς δ' ἐλθέτω, τοῖδ' ὥς ἴδον ὀρθαλμοῖσι·

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὀχλὺς δ' ἄρα ἱππῶν ἰδὼν ὃ οἶνοπα πόντοιο  
 Σπρίχ' ἄλλως θίγ' πατὴρ ἠρήσατο πηλὸν,  
 κλισίῃσι νοστήσαντα φίλῳ ἱεραΐδῃ γαῖᾳ,  
 θίγ' ἐκὼν κίεον, ῥέξεν δ' ἰρὴν ἱκατόμβῃ,  
 πευθήσαντα δ' ἔνορχα παρ' αὐτόθι μῆλ' ἰρὺν σφῆρ  
 ἱεραῖς, ὅθι τοιτέμον' ὄβωμός τε θυήεις.  
 ὡς ἠρᾷ ὁ γέρον, σὺ δ' εἰς οἶνον ἔκ' ἐτίλειπας.  
 νῦν δ' ἐπεὶ ὕπνιομαί γε φίλῳ ἱεραΐδῃ γαῖᾳ.  
 πατρὶ κλῶ ἤρωι κόμῳ ὁπλοῖσσι φέριδαι.  
 Ὡς ἔπῳεν ἐν χερσὶ κόμῳ ἱτάρειο φίλοιο  
 θῆκεν, ὅττισι δ' ἐπᾶσιν ὕφ' ἱμῖρον ὤρετο γόοιο,  
 καὶ νύκ' ὀδυρομένοισιν ἰδὺ φάος ἠελίοιο,  
 ὅ μιν ἀχιλλεύς αἶψ' ἀγαμέμνονι ἔπεε παρασάει.  
 Αἶψ' ἔειπεν, θίγ' ὅλῳ τε μολισά γε λαὸς ἀχαιῶν  
 πέθοντα μῦθοισι, γόοιο μὲν ἱεραῖς καὶ ἄσπασιν  
 νῦν δ' ἀπὸ πυρρῆς σκίδας, καὶ λιπνὸν ὄνυχον  
 ὀπλίσαι, τάδ' ἐτ' ἀμφιπυρρῆσσι οἷσι μολισαῖ  
 κέδῳ ἱεραῖς, παρὰ δ' οἷτ' ἀγροῖ ἀμμι μόνον τωρ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ τόγ' ἄκουσαν ἀναξάνδρῳ ἀγαμέμνονι.  
 αὐτίκα, λαὸν μὲν σκίδας σκατὰ νῆας ἔειπας,  
 κηδαιμόνοισι δ' ἐπαρ' ἄνθι μόνον καὶ νῆον ὕλῃ.  
 ποίησιν δ' ἐπυρρὴν ἱκατόμπεδον, ἐνθα καὶ ἐνθα.  
 ἐν δ' ἐπυρρῇ ὑπάτῃ, νικητὸν θέσαν ἀχρῦμανοι κῆρ.  
 πολλὰ δ' ἱφία μῆλα καὶ ἱλίοπδας ἱλίκας βοῦς  
 σπρόδι πυρρῆς, ἰδὲ ρόν τε καὶ ἀμφεπον. ἐκ δ' ἄρα πάντῳ  
 σὺ μὲν ἔλῳ, ἐκὼν τε νίκῃ μετὰ θυμὸς ἀχιλλεύς  
 ἱεραῖς ἐκ κεφαλῆς, περὶ δ' ἐβρατὰ σώματα νῆας  
 ἐν δ' ἐτίθ' ἐμλίπας, καὶ ἀλείφατος ἀμφιφορῆας,  
 πρὸς λείχῃ κλίνων, πίσυρας δ' ἐλαύνοντας ἱπποῖ  
 ἱεραῖς ἐν βάλῃ πυρρῇ μετὰ λαὸν ἀναχίλων.



μειόνης θεράπων ἀγαπήνορ ἰδομένη·  
 οἶδ' ἴδεν ὕλητόμους πελίκους ἐν χερσὶν ἔχοντο,  
 σείρας τ' εὐπλέκτους, πρὸ δ' ἄρ' ὕρῃς κίον αὐτῶν.  
 πολλὰ δ' ἄνακτα κάταντα πάραντά τε δόχμιάτ' ἦλθ'  
 ἀλλ' ὅτε δὴ κνημοὺς προσέβαν πολλοπίδακτος ἰδὼς,  
 αὐτίκ' ἄρα δρῦς ὑφικόμους ταναϊκῇ χαλκῇ  
 τάλμνον ἐπεγρόμυοι, ταὶ δ' μεγαλα κτυπέεσσαι,  
 πίπῃον, τὰς μὲν ἔπητα διαπλήθοντο ἀχαιοί,  
 ἔκδον ὕμιόνων, ταὶ δ' ἡρόνα ποσσὶ δακτυλῶντο,  
 ἑλδόμενα πεδίῳιο σὺν ῥωπήϊα πυκνά.  
 πάντοδ' δ' ὕλοτόμοι φίλους φέρον ὥς γὰρ ἀνῶρ  
 μειόνης θεράπων ἀγαπήνορος ἰδομένη·  
 καδ' ἄρ' ἐπ' ἀκτῆς βάλλον ἐπιχερῶ ἔνθ' ἄρ' ἀχιλλεύς  
 φράσσας παρόκλῳ μέγα ἥριον, ἡδ' ἐοὶ αὐτῷ  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πάντῃ παρακάμειλον ἄσπερον ὕλῳ.  
 ἔιατ' ἄρ' ἀνθι μένοντις ἀολλέες, αὐτὰρ ἀχιλλεύς  
 αὐτίκα μυρμιδόνεσσι φιλοπῆοι μοισι κέλευσε  
 χαλκὸν ἰώνουσαι, ἱϋῆαι δ' ὑπ' ὄχεσφιν ἕκαστον  
 ἵππας, οἶδ' ὥρνωτο καὶ ἐν τεύχεσιν ἔδωκεν,  
 αὐδ' ἔβαν ἐν δίφροισι παραιβάται, ἠνίοχοί τε,  
 σπρόδε μὲν ἱππῆες μετὰ δὲ νέφος ἕλπετο περὶ  
 μῦνοι, ἐν δὲ μέθισι φέρον παρὸκλον ἱταῖροι,  
 θριξὶ δ' ὅσοντα νέκω κατακύνον ἄς ἐπέδαλλον  
 κερόμυοι, ὅππῃ δ' ἡ κέρη ἔχε δῖος ἀχιλλεύς,  
 ἀχνηύμος, ἔταρον γὰρ ἀμύμονα πέμπ' αἰδός δέ·  
 οἶδ' ὅτε χῶρον ἵκανοι· ὅθι σφίσι πέφραδ' ἀχιλλεύς,  
 κάτθιεν, αἶψα δὲ διμυοφκία νήκον ὕλῳ  
 ἐνθ' αὐτ' ἀλλ' ἐνόησε ποδάρκης δῖος ἀχιλλεύς,  
 εἰς ἀπάνευθε πυρῆς ξωσθὴν ἀπικέειρατο χαίτῳ  
 τήν ῥα παρὰ χεῖρ' ὡταμῶν πέφει τηλεθόωσαν·

# ΙΛΙΑΔΟΣ

μη' ἐμὰ σῶν ἀπάνευθε βύθιοι δαίμονες Ἀχιλλεύ,  
 ἀλλ' ὁμοῦ ὡς ἱφολύχημα ἐν ὑμετέροισι δόμοισιν  
 εἴ τί με τυτθὸν ἰόντα μηοίππος ἐξ ὀπώρας,  
 ἤ γαυρ ὑμετέρον δ' ὠφροκτασίης ὑπὸ λυγρῆς,  
 ἔματι βῆ' ὅτε παῖδες κατέκτανον ἀμφιδάμωντες  
 νῆπιος ἔκ' ἐβέλων, ἀμφ' ἀσφαλάσι χολωθῆς,  
 ἐνθα με δινξώμευ' ἐν δώμασιν ἱππύτα πηλὺς.  
 ἐριφίτ' ἐνδυκέως, καὶ σὸν θιγούπωντ' οἰομένην.  
 ὥς δ' ἐκὰς δαίμων ὅμῃ θρὸς ἀμφικλυτοί.

Χρυσέος ἀφοριῦνς, τὸν ριπὸρ πόντιν ἀμήτηρ.  
 Τὸν δ' ἀπαμβόμην' προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς,  
 τί πῃ μοι ἠθέη κεφαλὴ δῦρ' ἐβλύσθας,  
 καί μοι ταῦτα ἔκαστ' ἐπιτέλλαι αὐτὰρ ἐγὼ  
 πάντα μάλ' ἐκτελέω καὶ πείθεμαι ὡς σὺ κελεύεις.  
 ἀλλὰ μοι ἄσπερον ἦθι μίνωθ' ἢ ἀμφιβαλόντε  
 ἀλλήλους, ὅλοιο τε τὰρ πώμιδα γόοιο.

Ὡς ἄρα φωνήσας ὤρεξεν χρυσὴ φίλησιν  
 ἔδ' ἔλαβε, ψυχὴ δ' ἐκατὰ χθονὸς ἠΰτε καπνὸς  
 ὤχρεο τεβριχῆα, ταφῶν δ' ἀνόρεσεν Ἀχιλλεύς,  
 χρυσίτε συμπλατάρησεν ἔπος δ' ὀλοφυστὸν ἐφίπην,  
 ὡ πόποι ἦ ῥα τίς ἐστι καὶ ἐν αἰδέο δόμοισι  
 ψυχὴ καὶ εἰδωλόν, ἀτὰρ φρένοβ' ἐκ' ἐνὶ πάμπαν.  
 παννυχί γάρ μοι παροκλήος δ' ἔλθοι,  
 ψυχὴ φησὶ καὶ γοῶσά τε μυρομένητε  
 καί μοι ἔκαστ' ἐπιτέλλει ἔκτο ὃ θεὸς κελεύει αὐτῶν.

Ὡς φάτο, θεῖσι δ' πᾶσιν ὑφίμερον ὤρεσε γόοιο,  
 μυρομένοισι δ' θεῖσι φάνη ῥοδοδάκτυλος ἠώς,  
 ἀμφὶ νέκυα ἔλεον, ἀτὰρ κρείων ἀγαμέμνων,  
 ἔρῃας τ' ὤρωε καὶ ὠνέρας ἐξέμην ὕλιν  
 πάνθ' ὅσ' ἐκ κλισίῃων, ὧ δ' ἀνὴρ ἐβλόεσθε δρῶν

θασσον ἀπ' ὀφθαλμῶν, λαοὶ δ' ἵερὰ ῥά τ' ἀπώπει·  
 ὧς ἴφ' αὖθ', οἱ δ' ἄρα τῷ μολα μῦθ' κλύον ἢ δ' ἐπιθού·  
 ἱερυμένως δ' ἄρα δ' ὄρπον ἐφοπλίζοντες ἔκαστος  
 θαίνωτ', ἢ δ' ἐπ' θυμὸς ἰδύνει δαίμων ἱέσθαι  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιος καὶ ἰδητύος ἐξ' ἔρον ἔνθ'·  
 οἱ μὲν κακκείοντο δ' ἔβω κλισίῳ δ' ἐκαστος  
 πηλείδης δ' ἵθι πολυφροσύνῳ θαλάσσης,  
 κείτ' ἐβ' αὖτις ἀνὰ χαν πολίσι μετὰ μυρμιδόνεσσιν,  
 ἐν καθαρώ ὅθι κύματ' ἐπ' ἠϊόνος κλύεσσιν,  
 οὔτε ἄν ὕπνος ἑμαρπῇ λύων μελιδύματα θυμῷ  
 οὐδ' αὖτις ἀμφιχυθεὶς, μάλα γὰρ κάμει φαίδιμα γυῖα.  
 ἔκτ' ἐπαΐσων προτὶ Ἴλιον ἠνεμόεσσαν  
 ἔλθε δ' ἵθι ψυχὴ παροκλήος δ' ἔλθοιτο  
 πάντ' αὐτῷ μέγ' ὅστις καὶ ὄμματ' ἀνὰ ἔκκυϊα,  
 καὶ φωνήν, καὶ βῆα περὶ χροὶ ἱμάτα ἔσο  
 σῆ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς, καί μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν,  
 εὐδ' ὅς αὐτὰρ ἐμεῖο λυλασμένῳ ἔπλεον ἄχιλλεύ·  
 σὺ μὲν μιν ἰώντος ἀκήδεις, ἀλλὰ θανόντ'·  
 θάπῃ με ὅττι τάχιστα, πύλας αἰδέοιο περὶσαι·  
 τῇλ' ἐμὲ ἱργυσι ψυχὰς ἰδὲ δακρυμόντων,  
 σὺ δ' ἐμὲ πως μίσγ' εἶναι ὑπὲρ ποταμοῖο ἰῶσιν,  
 ἀλλ' αὐτὸς ἀλωλῆμαι αὖ δ' ὄρυπυλὸς αἰδέοιο δ' αὖ·  
 καί μοι δὸς πλὴν χεῖρ' ὀλοφύρομαι, σὺ γὰρ ἔτ' αὖτις  
 νίσσομαι ἐξ' αἰδέοιο, ἐπὴν με πυρὸς λυλάχῃ·  
 σὺ μὲν γὰρ ἰωοί γε φίλων ἀπώνευθεν ἱταίρω  
 βυλάς ἐξ ὁμοιοι βυλεύθμεν, ἀλλ' ἐμὲ μὲν κῆρ  
 ἀμφὶ χανε στυγερῇ, σὺ πρὶ λάχε γ' ἀπομυόν πρ·  
 καὶ δ' ἐπὶ αὐτῷ μοῖρα θεοῖς ἐπιείκ' ἄχιλλεύ·  
 τέχεσ' ὑπὸ βῶων ἀνιόντων ἀπολίσσεται·  
 ἄλλος δ' ἐπὶ ἱρίῳ καὶ ἱφύθμῳ εἴκει πίθηται·

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

φῶρ ἄγλαα τέκνα, σέθεν κταμένοιο χολωθείς.  
 ἢ ῥά, καὶ ἑκτέρα δῖον Ἀηκία μήδ' ἔργα.  
 πρῶτα πάρ λιχίεσσι μῆμοι' ἰάδαο τανύσας  
 ἐν κενήσ', οἷδ' ἐν τε ἄφωπλίζοντο ἕκαστοι,  
 χάλκιε μαρμαίροντα λύοντο δὲ μώνυχας ἵππους.  
 καὶ δῖον παρὰ νηὶ ποδῶκεος αἰακίδαο  
 μυρίοι, αὐτὰρ ὁ τοῖσι τάφορ μῆμοι' ἐκείνῳ.  
 πολλοὶ μὲν βόες ἄργοι, ὄρε' ἔχουσιν ἄμφι σιδήρεσσι  
 σφαγόμενοι πολλοὶ δ' ὄϊες καὶ μηκάδες αἰγες.  
 πολλοὶ δ' ἄρ' ἰόδοντο δὲ ὕεσσι θαλίεθοντο δὲ ἀλοφῆ  
 ἐν ὀμῆμοι τανύοντο δὲ φλαγὸς ἠφαιόσιοι.  
 πάντῃ δ' ἄμφι νέκυν κατυλήρυτόν τ' ἔρρεν αἶμα.  
 αὐτὰρ τότε γὰρ ἄνακτα ποδῶκεα πηλείωνα  
 εἰς ἀγαμέμνονα δῖον ἄγρον βασιλῆες Ἀχαιῶν.  
 σπονδῇ παρπλίσθοντο δὲ ἱταίρῳ χθονίῳ κυρ-  
 δοὶ δ' ὅτε δὴ κλισίῳ ἀγαμέμνονι ἴον ἰόντο.  
 αὐτίκα κηρύκας λιβυφθόγγοισι κέλων,  
 ἄμφι πυρὶ σῆνοα τρίποδα μέγα, εἰς πεπύθειν  
 πηλείδῳ λυβραδα ἀποβρότον αἵματόντα.  
 αὐτὰρ ὁ γὰρ ἠρνεῖτο συγχεῖν, ἐπὶ δ' ὄρεον ὄμοσεν.  
 οὐ μὰ ἦν ὅς τις τε θεῶν ὕπατ' ἔσται, καὶ αἰετος,  
 οὐ θέμις ἐστὶ λυβρὰ κερήατ' ἄσπερον ἰκέσθαι.  
 πρὶν γὰρ ἐνὶ πάρος κλονέμεσθαι πυρὶ σῆμα τε χθονίαν  
 κείραδαί τε κόμην ἐπὶ οὐ μ' ἐτι δούτορον ὦδε  
 ἴξεται ἄχος κραδίῳ ὄφρα ἴωσι μετέω.  
 ἀλλ' ἔτσι μὲν νῦν συγχεῖν πεθώμεθα δαυτί.  
 ἠῶθεν δ' ὄρωρον ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 ὅλῳ τ' ἀξέμεσθαι παρὰ τε γαίῃ δὲ ἐπιηκίῃ  
 νικητὸν ἔχοντα νέεσθαι, ὑπὸ ἴοφον ἠερόντα  
 ὄφρ' ἔτσι τῷ τῷ μὲν ἐπιφλέγῃ ἀκωμάτῳ πυρ

ΙΛΙΑΔΟΣ. Ψ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ψὶ δ' ἀναοῖς ἀγῶνα διδύς ἐτέλειαιρ Ἀχιλλεύς.

Σ οἱ μὲν σιναχόντο κατὰ πόλιν,  
ὦν τὰρ Ἀχαιοὶ

ἔπειθ' ἢ νῆας τε καὶ ἑλλάσσον·  
τορὶ γὰρ.

οἱ μὲν ἄρ' ἐσκήδινοντο ἑὸν ἐπὶ  
νῆα ἔκαστος,

μυρμιδόνες δ' οὐκ εἶα ἀποσκήδινάδαι Ἀχιλλεύς,  
ἀλλ' ὅ γε οἷς ἐτάροισι φίλοισι οἷοι μοισι μετῆνδ' αἶν.

Μυρμιδόνες ταχύπωλοι ἱμοὶ ἱρήρεις ἐταῖροι.

μὴ δ' ἦ πω ὑπ' ὄχεσφι λυώμεθα μώνυχας ἵππους,  
ἀλλ' αὐτοῖς ἵπποισι καὶ ἄρμασιν ἄγορ' ἰόντο·  
πάροκλον κλαίω μιν, ὃ γὰρ γέρας ἐστὶ θανάοντων,  
ὦν τὰρ ἐπεὶ ὅλοοιό τεταρπόμεθα γόοιο,  
ἵππους λυσάμενοι, δερπύθ' ὅ μιν ἐνθάδε πάντοτε.

ὣς ἔφαθ' οἱ δ' ὥμωξον ἀολλέες, ἦρχε δ' Ἀχιλλεύς·

οἱ δ' ὅτις περὶ νεκρὸν ἐϋβίχας ἤλασσαν ἵππους  
μυρόμενοι, μετὰ δ' ἐσφι θέτις γόνι ἱμόρορ' ὤρσαν·  
διούνοντάμαθαι, διούνοντά τ' ὀδύχια φωτῶν  
διέκρυσι, τοῖον γὰρ πόθειον μήσδρα φοβόιο·  
τοῖσι δ' ἐπὶ πηλείδης ἀδινῶν ἐξῆρχε γόοιο.

χεῖρας ἐπ' ἀνδροφόνους θέμεν, ὅς σ' ἐθέλειαιρ ἐταίρων.

Χῶρι μοι ὦ πάροκλε, καὶ εἴρ' αἰεὶ δαο δόμοισι,

πάντα γὰρ ἦδη σοι τελείω τὰ πάροιθ' ἐν ὑπέστω.

ἔκτορα δ' εὖρ' ἐρύττας δ' ὄσσην κυσίην ὥμ' ἀδ' ἔαδαι,

δ' ὀδύχια δ' προπάροιθε πυρῆς ἀποδ' εἶροτο μύσσην.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

εὐδίσκ' ἐν λίκτροισιν ἐν ἀγκυλίδεσσι τιθύνησ  
 εὐνή ἐνὶ μαλακῇ θαλέωρ ἐμπλησάμεν θ' κῆρ.  
 νῦν δ' ἄρ' πολλὰ πάθῃσι φίλῃ ἀπὸ παρὸς ἁμαρτῶν  
 ἄστυάναξ, ὃν ἄϊς ἐπὶ κλησίῃν καλίσσιν,  
 οἷος γὰρ σφιν ἔρυθ' πύλας καὶ τείχια μακρὰ,  
 νῦν δ' ὅτ' ἐπεὶ γὰρ παρὰ νῆυσὶ κερωνίσιν νόσφι τοκῶν  
 αἰολαὶ δούλῃ ἐδόνται, ἐπεὶ κε κύνας κρέσσωνται  
 γυμνόν, ἀτὰρ τοι εἴματ' ἐνὶ μέγαροισι κίονται,  
 λιπῆά τε καὶ χαρίντα τετυγμένα χερσὶ γυωαυῶν,  
 ἀλλ' ἔτοι τάδε πάντα καταφλέξω πυρὶ κηλῷ  
 οὐδ' ἐν σοὶ γ' ὄφελος, ἐπεὶ οὐκ ἐγκέσται αὐτοῖς,  
 ἀλλὰ πρὸς βῶων καὶ βωιάδων κλέος εἶν.  
 ὣς ἔφατο κλαίῃσ' ἐπὶ δ' ἐνὶ χροῖ γυωαυῆς.

## ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ψ. ΟΜΗ- ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Χιλδὺς τῶν νενομισμένων ἐπὶ τοῖς νεχροῖς με-  
 ἂ ταδίδωσι παρόχλῳ, τυρῶν ἡῆς καὶ σφάξας  
 ἐπ' αὐτῷ δουρακίδεα βωϊκὺς νεανίσκους, καὶ  
 κύνας καὶ ἵππους, καὶ ἄλλα ἱερεῖα. ἔπειτα καὶ ἀγῶνα ἐπὶ  
 τάφῳ ποικί, ἐν ᾧ νικᾷ, ἵπποις μὲν διομήδης, θρόνον  
 δ' ἄνθρωπος, ἄλλοι δ' ἄλλως, καὶ οὕτως ὁ ἀγὼν διαλύειτο.

Ἐκτορ, ἐγὼ δύσλωσ' ἤ ἄρα γινώμεθ' αὖσιν  
 ἀμφοτέρω, σὺ μὲν ἐν τροίῃ, ἡγιάμην κατὰ δῶμα,  
 αὐτὰρ ἐγὼ θήβησιν, ὑποπλάκω ὕληεσσιν,  
 ἐν δόμῳ ἡετίωνος, ὃ μ' ἔβριθε τυτθὸν ἐῖσαυ  
 δύσμορος ἀνόμορον, ὥς μ' ὤφελλε τέκε' ὠσα.  
 οὐρ δ' ἐ σὺ μ' αἰδέοιο δόμους ὑπὸ κούρῳσι γαίης  
 ἔρχεαι, αὐτὰρ ἐμὲ συγχεῶ ἐν πένθεϊ λήπεις  
 χήρῳ ἐν μέγαροισιν, πάϊς δ' ἐτινήπιος αὐτῶς,  
 ὃν τέκε' ἔμην σὺτ' ἐγὼ τε δύσάμμοροι, οὔτε σὺ τούτῳ  
 ἔσσαι· ἔκτορ ὄνδ' ἀρ' ἐπὶ θάνεις, οὔτε σοὶ οὗτος  
 ἦν περ γὰρ πόλεμόν γε φύγῃ πολυδάκρυτον ἀχαιῶν,  
 αὐεῖ τοι τούτῳ γε πόνος καὶ κήδ'· ἐπίσσω  
 ἔσονται, ἄλλοι γάρ οἱ ἀπερίσπασιν ἄρουράς,  
 ἦμαρ δ' ὀρφανικὸν, πῶμα φήλικα πᾶσι δαίτῃσιν.  
 πάντα δ' ὑπεμνήμυκε, διδάκρυται δ' ἐπαρσά,  
 δινόμενός δ' ἐτ' ἄνισι πάϊς ἐς πατρὸς ἑταίρους  
 ἄλλον μ' ἑλαινὴς ἱρῶν, ἄλλον δ' ἐχιτῶν.  
 τῶν δ' ἐλεησάντων κατὰ ἄλῳ τίς τυτθὸν ἐπείχε  
 χεῖλα μὲν τ' ἐδίω, ὑπεδῶλ' δ' οὐκ ἐδίηνε.  
 τὸν δ' ἐ καὶ ἀμφιθαλῆς ἐκ δαυτοῦ ἐσφύλιξε  
 χόρσ' ἐπιπληγῶς, καὶ ὄνδ' ὀλοισιν ἐνίσταν,  
 ἔρ' οὐτῶς οὐσός γε πατήρ μεταδιδύνηται ἡμῖν.  
 δακρυόεις δ' ἐτ' ἄνισι πάϊς ἐς μητέρα χήρῳ  
 ἀσύναιξ, ὃς πρὶν μὲν ἐπὶ γούνασι πατρὸς  
 μυιλοῖν οἶον ἐδίεσκε, καὶ οἶον πίονα δ' ημιόν,  
 αὐτὰρ ὅθ' ὕπνος ἐβη παύσαι τῷ τε κηπια χόρῳ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἄμφι πυρὶ σῆσαι τρίποδά μέγαν, ὄφρα πέλαιτο  
 ἔκτοσε θοῶν μάλα μάχης ἐκνοσήσωσι π  
 νηπὶν, οὐδ' ἐνόησεν, ὅ μιν μάλα τῆλε λαιῶν  
 χερσὶν Ἀχιλλῆος, δάμασεν γλαυκῶπις Ἀθήνη·  
 κακὺ τὸ δ' ἔκυσσε καὶ οἰμωγῆς ἀπὸ πύργου.  
 τῆς δ' ἰλιλίχθη γῆνα, χαμαὶ δ' ἐοἶκε κερκίς,  
 ἥ δ' ἄντισ δμοῖσιν ὑπλοκάμοισι μετνύδα.  
 Δόυτε δ' οὖν μοὶ ἔπειδον, ἰδῶμ' ὅπν' ἔργα τέτυκται,  
 αἰδοίης ἐκυρῆς ὁπὸς ἔκλυον, ἐν δ' ἐμοὶ αὐτῇ,  
 σῆθεσι πάλλεται ἥτορ ἀνὰ σῶμα, νέρθε δ' ἐγὼνα·  
 πύργυται, ἔγγυς δ' ἢ τι πακὸν πριάμοιο τέκεσιν,  
 αἶ γάρ ἄπ' οὐατος εἶη ἱμοῦ ἔπος, ἀλλὰ μάλ' αἰῶς  
 δαίδω, μὴ δ' ἢ μοι θρασύν' ἔκτορα δῖος Ἀχιλλεύς,  
 μῆνον ἀποτμήξας πόλιος πεδίοιο δ' ἐδίηται  
 καὶ δ' ἡμιν καταπαύσῃ ἀγλωορίης ἀλεγεινῆς,  
 ἥ μιν ἔχεσκε· ἵππ' οὐ ποτ' ἐνὶ πληθύϊ μὲν ἀνδρῶν  
 ἀλλὰ πολὺ προθέεσκε, εἴ οἳ μὲν οὐδ' ἐνὶ ἔκων.  
 Οὐ φαμένη, μέγαροιο δ' ἐκαστοῖς μαινάδι ἴση  
 παλλομένη κραδίῳ, ἅμα δ' Ἀμφίπολοι κίον αὐτῇ·  
 αὐτὰρ ἐπὶ πύργον τε καὶ ἀνδρῶν ἵξεν ὄμιλον,  
 ἔση παπλήνας' ἐπὶ τείχεϊ, τὸν δ' ἐνόησεν  
 ἱλκόμηνον πρόδιον πόλιος, ταχέες δ' ἐμιν ἵπποι  
 ἔλκον ἀκιδέως κοίλας ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν,  
 πλὴν δὲ κατ' ὀφθαλμῶν ἐριβεννὴ νύξ ἐκολύφιν,  
 ἦεν δ' ἐξ ὀπίσω, ἀπὸ τοῦ ψυχρῶ ἱκάπυσσε.  
 τῆλε δ' ἀπὸ κρατὸς χεῖρ' ἐσμάτα σιγαλοῖντα,  
 ἄμπυκα κερκύφαλόν τε ἠδ' ἐπικτῶν ἀνὰ δέσμιον  
 κρήδεμνον θ' ὅ ῥά οἱ δῶκε χρυσὴ Ἀφροδίτη  
 ἔμαπτε δ' ὅτι μιν καρθαίολος ἠγάγεδ' ἔκτορ  
 ἐκ δόμου ἠιτίωνος, ἐπὶ πόρε μυστρά ἔδνα.

ἔξελθ' ἵν' ἐμὲ μὲν πύλας δ' ἄρ' ἀνιῶν.

πάντας δ' ἑλλιτάνων κυλινδόμεν' ἔκαστ' ἀκόπρην,

ἔξονομα κλέδ' ὀνομάζων ἄνδρα ἔκαστον,

οὐκ ἔτι φίλοι καὶ μὲν οἷον ἔατε κηδόμενοι πόρ',

ἔξελθόντα πόλιν' ἰκέει' ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν,

λίαν μὲν ἄνδρα τῆτορ' ἀτάσθαλον ὀβριμόρ' ἄνδρα,

ὅν πως ἑλικίῳ αἰδέσθεται, ἦ δ' ἑλκήσῃ

γῆρας, καὶ δ' ἐνὶ ᾧ δὲ πατήρ τοιός δὲ τίτυκται

πηλός, ὅς μιν ἔλκετε καὶ ἔρριπ' ἡμᾶς γένεσθαι

ῥωσὶ, μάστιγι δ' ἐμοὶ περὶ πάντων ἄλγε' ἔθηκε,

τόσους γὰρ μοι πᾶσδ' ἀπέκτενε τηλιθόοντας,

τῶν πάντων οὐ τόσων δ' οὐδέ μοι ἀχλύμυός πόρ',

ὥς ἐνός, οὐ μὲν ἄλλος ὅξυ' ἐκτοίσεταί κ' ἄλλος ἐῖσω

ἔκτορ' ὅς, ὥς ὅφελι θοάϊον ἐν χειρὶν ἐμῇσι,

ᾧ κεχρησάμεθα κλαίοντί τε μυρομένῳ τε,

μήτηρ θ' ἢ μιν ἔπκτε δυσάμμορος, ἦ δ' ἐγὼ αὐτὸς

ὣς ἔφαθ' κλαίων, ἐπὶ δ' ἐκείνου παλίστα,

ῥωῆσιν δ' ἐκάβη ἀδινῶ' ἐξήρχετο.

Τέκνον, ἐγὼ δ' ἡλὴ τί νυ βέομαι ὀνὸν παθῆσαι,

σεῦ ἀποτεθνηῶτος, ὃ μοι νύκτας τε καὶ ἡμέρας

εὐχολή' ἐκαστὸν ἄστυ πελίσκεο. πᾶσι τ' ὄνησας

ῥωσὶ τε καὶ ῥωῆσιν κατὰ πῆλιν, οἷσι θεὸς ὥς

διδείχεται, ἢ γὰρ κίεσφι μάλα μέγα κῦδος ἐκείνου

ῥωὸς ἑὸν, νῦν δὲ θάνατος καὶ μοῖρα κίχνησιν,

ὣς ἔφατο κλαίοντα, ἄλλος δ' οὐ πῶν πίπτω

ἔκτορ' ὅς, οὐ γὰρ οἷ' τις ἐτήτυμος ἀγγεὺς ἔλθων

ἔγγηλ' ὅτ' ἴδ' οἱ πόσις ἐκτοθι μίμνε πύλων,

ἀλλ' ἔγ' ἴδ' ὅν ἔφασκε μυχῷ δόμῃ ὑπὸ κρητῷ.

διπλάσια μαρμαρέῳ ἐν ᾧ θρόνα παρὶς ἐπείσσει

κέκλετο δ' ἀμφιπόλοισιν ἐπὶ πλοκάμοις κατὰ δόμῳ,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἢ καταλείψουσιν πόλιν ἄκρῳ τῷδε πισόντ'·  
 ἢε μίνην μεμάασι καὶ ἔκτορ' οὐκ ἔτ' ἔόντ'·  
 ἀλλὰ τίη μοι ταῦτα φίλος διελίξαι θυμός,  
 κηῖται παρὰ νήασι νέκυσ ἀκλαυστος ἄθαπ'·  
 πάροκλος, τῷδ' οὐκ ἐπιλήθμαι ὅφρ' ἂν ἔρωγ·  
 ἴσοισιν μετίω, καὶ μοι φίλα γούνατ' ὀρώρη.  
 εἰδὲ θανόντων περ καταλήθοντ' ἐν αἴδαο,  
 οὐτάρ ἐγὼ κακίῃσι φίλῃ μεμνήθμ' ἱταίρῃ·  
 νῦν δ' ἄγ' αἰέδοντο παῖδες κῆροι ἄχαιῶν,  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσι νιώμεθα, τόνδε δ' ἄρωμνον,  
 ἦράμεθα μέγα κῦδος, ἐπὶ φρονιμῷ ἔκτορα δῖον,  
 ὧς ῥῶϊς κατὰ ἄστυ θιῶ ὧς εὐχετόωντο  
 ἢ ῥὰ καὶ ἔκτορα δῖον ἀεκέα μῆδιζο ἔργα,  
 ἀμφοτέρων μετόπιον ποδῶν τέβρωε τίνοντε.  
 εἰς σφυρὸν ἐκ πῆρνης, βοέεσ δ' ἔξῃ πῆν ἱμάντας,  
 ἐκ δίφροιο δ' ἐδήσαν, κάρη δ' ἐλκεῖσσι ἔασεν.  
 εἰς δίφρον δ' ἀναβὰς ἀνάτε κλυτὰ τεύχε' αἶερας,  
 μάστιξεν δ' ἐλάων, τῷδ' οὐκ ἄκοντε πνέειν.  
 τῷδ' ἦν ἐλκεμένοιο κενίθελος, ἀμφὶ δ' ἤχουται  
 κυάνεαι πίπνουσιν, κάρη δ' ἄποιεν κενίθεσι  
 κηῖτο πάρος χαρίεν, τότε δ' ἔδους διισμυμέναι  
 δῶκεν ἀεκίαν αἰδοῦ ἢ ἐν παρὶδ' ἰγαίῃ.  
 ὧς τῷ μῆν κεκόνετο κάρη ἄποιεν, ἡδὲ νυ μήτηρ  
 τίλλε κόμην, ἀπὸ δ' ἑλιπαρὺν ἔρριψε κλυτὴν ἥρω  
 τηλόσε, κώκυσεν δ' ἡ μάλα μέγα παῖδ' ἰσιδύσα,  
 ὧμωξεν δ' ἐλεεινὰ πατήρ φίλος ἀμφὶ δ' ἑταοί,  
 κωκυτῷ τ' ἔχοντο καὶ οἱ μογῇ κατὰ ἄστυ.  
 τῷδ' ἡ μάλιν ἄρ' ἔλω, ἐναλίγκιον ὥσεί' ἄπασα  
 ἱλίοσ' ὀφρυόεσσα πυρὶ σμήχοιτο κατ' ὄψεσσι,  
 λαοὶ μὲν ῥὰ γέροντα μόλις ἔχον ἀχαλόνωνται.



ἐπιμένη λεχέσσι γούσεται, ὅρ τε κέρν αὐτῇ.

ἀλλὰ κύνες τε, καὶ οἱ ὦνοὶ καταπάντα δάθονται,

τὸν δ' ἐκ καταθνήσκων προσέφη κερυθαίολος ἑκτορ·

ἦσ' οὐ γινώσκων προύλοσσομαι, οὐδ' ἄρ' ἐμῆλιν

πέσσειν, ἢ γὰρ θί γ' ἐσθλὸς ἐνδεδιθυμός,

φράζω νῦν μή τοι τιθῶν μῆνιμα γένωμαι

ἕματι βῶδ', ὅτι κέρν σι πάεις καὶ φοῖβος ἀπόλλων,

ἰδὼλόν ἐόντ' ὀλέσσωσιν, ἐνὶ σخαιῆσι πύλῃσιν.

ὣς ἄρα μιν εἰπόντα, τέλος θανάτοιο κάλυψεν,

ψυχὴ δ' ἐκ ρεθίων πηαμένη, αἴθερος δὲ βεβήκει

ὅρ πότμον γούσσει, λιπὺς ὠκυβοτήτα, καὶ ἦβω,

τὸν καὶ τιθηῶτα προσηύδα δῖος Ἀχιλλεύς.

Τιθηαθί, κῆρα δ' ἐγὼ τί τε δέξομαι, ὅπποτε κέρν δῖ

βούς ἐθέλῃ τυλίσσαι, ἦδ' ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι.

ἦ ῥά, καὶ ἐκ νεκροῦ ἐρύσας ἅλκιον ἔγχε·

καὶ τόγ' ἀνευθύν' ἔθνηχ', ὅδ' ὅπ' ὤμων τούχῃ ἐσύλας

αἵματόντ', ἄλλοι δ' ἐπιδράμον ὕπνῃσιν ἀχαιῶν,

οἳ καὶ θνήσσαντο φυλῇ καὶ εἶδος ἀγνόν

ἑκτορ, οὐδ' ἄρα οἱ τίς ἀνστητὶ γὰρ παρῆσιν

ᾧδε δ' ἐπεὶ ἐπισκνίδ' ὦρ' ἐς πλησίον ἄλλον,

ᾧ πόποι, ἦ μάλα δ' ἡ μαλακώτερος ἀμφαφάαδαι

ἑκτορ, ἢ ὅτε νῆας ἐνέπρησε πυρὶ κηλέρ,

ὡς ἄρα τίς ἐπισκνέει, καὶ οὐτὴ ἄσκει παραστάς·

τὸν δ' ἐπεὶ ἐξενάειξε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,

εἰς ἐν ἀχαιοῖσιν, ἐπὶ αὖ ποδῶν ἐντ' ἀχέρυνιν.

ὦ φίλοι ἀργείων ἡρώτορος ἦδ' ἐμείδοντος

ἱππιδῆ τὸν δ' ἀνδρα θεοὶ δαμάσσειν ἰδὼκαδ'.

ὅς κενὰ πόλλ' ἐρδισκεν, ὅσ' οὐ σύμπαντός οἱ ἄλλοι,

εἴδ' ἄγχι ἀμφὶ πόλιν σὺν τούχῃσι πέφρωτοισιν.

ὄφρα κ' ἐτι γινώσκω βῶων νόον ὅτι πῶν ἐχέσιν,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἀλλὰ τὰ παρόκλοιο βίῳ ἰνάξει κατακταῖς,  
 φαίνω δ' ἢ κληίδες ἀπ' ὤμων αὐχέν' ἔχουσι  
 λούκανίη, ἵνα τε ψυχῆς ὠκιστος ὄλιθρος,  
 πῇ ῥ' ἐπὶ οἱ μιμαῶς ἔλασ' ἐγχεῖσθ' ἀχιλλεύς.  
 αὐτὶ κεν δ' ἀπαλαῖο δὲ αὐχέν' ἤλυθ' ἀκωκὴ,  
 οὐδ' ἄρ' ἀπ' ἀσφαλραγον μελίη τάμε χαλκοβάρβα  
 ὄφρατ' ἔμιν προῖείποι ἀμφόμην' ἐπέεσσιν  
 ἤεπε δ' ἐν κενίῃσ' ὅδ' ἐπὶ βύξαθ' ἰδὼς ἀχιλλεύς.  
 ἔκτορ, ἀτὰρ πῃ ἔφῃδα παροκλή' ἐξεναρίσων  
 σῶς ἔατε δ' ἐμὲ δ' οὐδ' ἐν ὀπίσσω νόσφιν ἰόντα.  
 νῆπιε, τοῖο δ' ἀνδύθην ἀοσσητῆρ μέγ' ἀμείνων  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐγὼ μετ' ὀπίωι λελεῖμυ.  
 ὅς τοι γούνατ' ἔλυθας, σὲ μὲ κύνες ἦδ' οἰωνοὶ  
 ἔλκυσσ' ἀϊκῶς, τὸν δ' ἐκτελεύσειν ἀχαιοί.

Τὸν δ' ὀλιγοφρονέων προσέφη κερυθαίολος ἔκτωρ,  
 λίστομ' ὑπὲρ ψυχῆς καὶ γούνων σῶν τε τοκῆων.  
 μή μιν παρὰ νηυσὶ κύνες καταδύψαι ἀχαιῶν.  
 ἀλλὰ σὺ μὲ χαλκὸν τεῖχος χρυσόν τε δέ διξο  
 δῶρα, τὰ τοι δώσσει πατήρ καὶ πότνια μήτηρ,  
 σῶμα δ' ἐοῖκα δ' ἐμὸν δόμῳ παλιν, ὄφρα πυρός με  
 φῶς καὶ φῶν ἀλσχοι, λελάχῃσι θωπόντα.

Τὸν δ' ἄρ' ὑπόφραϊδων προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς,  
 μή με κύων γούνων γενναῖοι μὲν δ' ἐτοκῆων,  
 οὐ γάρ πως αὐτὸν με μείν' καὶ θυμὸς ἀνείη  
 ὃ μὲ ἀποταμνόμενον κρεῖα ἔδωμαι οἷόν μ' ἐοργασ-  
 ῶς οὐκ ἔδ' ὅς σ' ἦς γὰ κύνες κεφαλῆς ἀπαλαλῆας  
 οὐδ' εἴκιν δικάκεις τε καὶ εἴησι νήειτ' ἀποινα  
 εἴσω δ' ἐνθαδ' ἄγοντες ὑπόχωνται ᾧ καὶ ἄλλα  
 οὐδ' εἴκιν σῶν τὸν χρυσὸν ἐρύσσεια ἀνδρῶν  
 διαφιδανίδης παῖς μὲν, οὐδ' ὧς σ' ἐγὼ πότνια μήτηρ.

ἦν ὃ κατηφής, οὐδ' ἄλλ' ἔχε μέλινον ἔγχος,  
 διήφορον δ' ἐκάλεε λινκασιπίδα μακρὸν αὐτός  
 ἦν τέ μιν ὄρου μακρὸν, ὃ δ' οὔτι δι' ἐγγύθεν ἦεν.  
 ἔκτορ δ' ἔγνω ἥσιν φρεσὶ φώνησέν τε.  
 ὦ πόποι ἦ μάλα δ' ἡ μεθιοὶ θάνατόν δ' ἐκάλεσσε,  
 διήφορον γάρ ἐγω γ' ἐφάμην ἦρωα παρῆναι.  
 ὦλλ' ὃ μὲν ἐν τείχεσσι, ἐμὲ δ' ἐξαπάτησεν ἀθήνη.  
 νῦν ὃ δ' ἡ ἐγγύθι μοι θάνατ' ἔκαστος, οὐδέ τ' ἀνευθύν.  
 οὐδ' ἄλ' ἡ γὰρ ῥα πάλαι τό γε φίλτορον ἦεν  
 ἔηνί τε καὶ δῖος Ἡεῖ ἐκηβόλω, οἱ μὲ πᾶρος γε  
 πρόφρονες εἰρύαται. νῦν αὐτὲ με μοῖρα κιχάων  
 μὴ μὰρ ἀσπυδείῃ καὶ ἀκλειᾷ ἀπολαίμῃ,  
 ἀλλὰ μέγα ξείνας τι καὶ ἐστομένοισι πυθέσθαι.

Ὡς ἄρα φωνήσας, εἰρύσας θ' φάσγανον ὄξυ.  
 τό δι' ὑπὸ λαπάρῳ τέταθ' ἐμέγα τε σιβαρόν τε·  
 οἷμσεν δ' ἐαλὲς, ὥς τ' αἰετὸς ὑψιπέτης,  
 ὅς τ' εἴσιν πεδίον ὃ σὺν νιφέων ἐρεβινῶν,  
 ἄρπαζον ἢ ἄρ' ἀμαλῶν, ἢ πῶκα λαγῶν,  
 ὥς ἔκτορ οἷμσεν πινάσων φάσγανον ὄξυ,  
 ἐρμήθη δ' ἀχιλλεύς, μένεις δ' ἐμπλήθε θυμὸν  
 ἀγρίον, πρόθεν ὃ σάκος σέρνοιο κάλυψαι  
 καλὸν διαδάλειον, κόρυθι δ' ἐπένυε φαινή  
 τετραφάλῳ, καλαὶ δ' ἐπεισεῖον ὅθι θηαι  
 χρύσεαι, ἅς ἦφαιτος ἴει λόφον ἀμφὶ θαμνίς.  
 οἷος δ' ἀστὴρ εἴσι μιν ἄσρασι νυκτὸς ἀμολγῶ  
 ἔσπερος, ὅς κάλλιστος ἐν οὐρανῷ ἵσταται ἀστὴρ,  
 ὥς ἀχμῆς ἀπέλαμπ' εὐήκιος, ἣν ἄρ' ἀχιλλεύς  
 πάλλιν διεΐτορ ἢ φρονέων κακὸν ἔκτορ δῖον,  
 ἐθρώων χρόα καλὸν ὅπῃ εἴξαι μάλισσιν.  
 τῷ δ' καὶ ἄλλο τόσον μὲν ἔχε χρόα χάλκῳ τούτῳ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

οὐ δ' ἐλύνθαι τε καὶ ἄρνης δμόφρονα θυμὸν ἔχουσιν,  
 ἀλλὰ κακὰ φρονέουσι διαμποδὶς ἀλλήλοισιν,  
 ὥς οὐκ ἔς' ἐμὶ καὶ σέ φιλήμηναι, οὔτε τι νῶϊν  
 ὄρκια ἑσονται, πρὶν γ' ἢ ἱπποῖν γε πεσόντα  
 αἵματ' ἄσαι ἄρῃα ταλαύεινον πολεμιστὴν,  
 πωυτόης ἀρετῆς μιμνήσκου, νῦν σε μάλα χρὴ  
 αἰχμητὴν τ' ἔμηναι καὶ θαρσέλιον πολεμιστὴν  
 οὔ τοι ἰδὲ ὑπάλυξίς, ἄφαρ δ' ἐσε παλλὰς Ἀθήνη  
 ἔγχεϊ μὲν δαμάα, νῦν δ' ἀβροῖα πάντ' ἀποτίσεις  
 κῆρ δ' ἐμῶν ἱτάρων, οὐς ἔκτανός τ' ἐγχεῖ θύων,  
 ἢ ῥά, καὶ ἀμπιπαλῶν προΐει δολιχόσκιον ἔγχεος.  
 καὶ τὸ μ' ἄντα ἰδὼν ἠλδύατο φαίδιμ' ἔκτωρ,  
 ἔϊξο γάρ προΐδων, τόδ' ὑπὲρ Πάριος χάλκιον ἔγχεος.  
 ἐν γαίῃ δ' ἐπάγῃ ὦκα δ' ἤρπασε παλλὰς Ἀθήνη,  
 ἄτ' δ' ἀχιλῆϊ δίδυ, λάθε δ' ἔκτορα ποιεμένα λαῶν,  
 ἔκτωρ δ' ἐπρόσθει πεν ἀμύμονα πηλείωνα.  
 ἤμβροτόν, οὐδ' ἄρα πῶ τι θεοῖς ἐπιείκελ' ἀχιλλεύς  
 ἐκ Διὸς ἡείδης τὸν ἐμὸν μόρον ἢ τοι ἔφης γε,  
 ἀλλά τις ἀρτιεπὴς καὶ ἐπίκλοπος ἔπλεο μύθων,  
 ὅφρα σ' ὑποδδείξας μένος ἀλκῆς τε λαθοίμην.  
 οὐ μὲν μοι φύγοντι μεταφρένω ἐν δόρῳ πῆξας,  
 ἀλλ' ἰθὺς μεμαῶτι στήθεσθεσφιν ἔλασσον.  
 εἴ τοι ἰδὼκε θεὸς νῦν αὐτ' ἐμὸν ἔγχεος ἄλκυε  
 χάλκιον, ὥς δή μιν σῶ ἐν χροῖ πᾶν καμίσασο.  
 καὶ κεν ἔλαφρότερος πόλιμος βῶεσι γένοιτο  
 σοῖο καταφθιμένοιο, σὺ γάρ σφίσι πῆμα μέγιστον,  
 ἢ ῥά, καὶ ἀμπιπαλῶν προΐει δολιχόσκιον ἔγχεος,  
 καὶ βάλε πηλείδαν μέσον σάκους, οὐδ' ἀφάμαρτε.  
 τῆλ' δ' ἀπεπλάγχθη σάκειος δόρυ, χῶλός δ' ἔκτωρ  
 ὅτ' ἰῥά οἱ βίβρεσεν ἐκ τὸσιον ἔκφυγε χερσός.

Θηήφοβ' ἡμῖν μοιτὸ πάρος πολὺ φίλτατ' ἦδε  
 γυναικῶν, οὓς ἐκάβη ἡδὲ πρίαμος τέκε παῖδας,  
 νῦν δ' ἐπὶ καὶ μάλα νόεω φρεσὶ πηύθεσθαι  
 δεῖ τλῆς ἐμεῦ ἔνεκ' ἐπεὶ ἴδεις ὀφθαλμοῖσι  
 τέχνης ἐξελεῖν, ἄλλοι δ' ἐντοδὲ μένουσι.

Τὸν δ' αὖτε προσέφη θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη  
 ἠϊοῦ ἢ μὲν πολλὰ πατήρ καὶ πότνια μήτηρ,  
 λίαν οὖν ἐξείης γυνούμηναι, ἀμφὶ δ' ἑταῖροι  
 δευθὶ μένουσιν, τοῖον γὰρ ὑποβορέεσι ἄπαντός  
 ἀλλ' ἐμὸς ἐνδοθι θυμὸς ἐτέρῳ πένθει λυγρῷ  
 νῦν δ' ἰθὺς μεμαῶτι μαχώμεθα, μὴ δὲ τι δούρῳ  
 ἔσω φειδωλή, ἵνα εἴδομαι εἴκερ Ἀχιλλεύς  
 νῶϊ κατακτείνας ἑναρὰ βροτῶντα φέρηται  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, ἢ κεν σῶθ' ἐνὶ δαμείῃ.

Ὡς φασμένη, καὶ κορδοσύνην ἤγαγε Ἀθήνη.  
 οἱ δ' ὅτε δὴ χιθόρον ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες  
 τὸν πρότερος προσέφη μέγας κερυθαίολος ἑκτωρ.  
 οὗτος ἔτι πηλὸς ἢ ἐφοβήθηναι, ὥς δ' πάρος περ  
 φῖς περὶ ἄστυ μέγα πρίαμεν δῖον, οὐδὲ πούτ' ἐτλῶ  
 μεῖναι ἐπερχόμενον, νῦν αὖτ' ἐμε θυμὸς ἀνῆκε  
 εὐμενῆαι ἀντίᾳ σιῖο· ἐλθίμ' κεν ἔκην ἀλγίμῳ  
 ἀλλ' ἄγε δούρο θεὸς ἐπιδώμεθα, τοι γὰρ ἄριστοι  
 μάρτυροί ἐσονται καὶ ἐπίσκηποι ἄρμονιῶν  
 οὐ γὰρ ἔγωγ' ἐγπαγλῆρ' αἰεὶ κῆρ, αἴκερ ἐμοὶ βούς  
 δῶν χαμμονίῳ, σῶν δὲ ψυχῶν ἀφέλωμαι  
 ἀλλ' ἐπεὶ ἄρ' ἐκεῖ σε συλήσω κλυτὰ τεύχε' Ἀχιλλεύς,  
 νικητὸν Ἀχαιοῖσιν δώσω πάλιν, ὥς δ' ἐσύρῃς.

Τὸν δ' ἄρ' ὑπόφρα' ἰδὼν προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς.  
 ἑκτωρ μὲ μοι ἄλασε σωνημοσύνας ἀχρευνε  
 εἰς οὐκ ἔστι λίσσι καὶ ἀνδράσιν ὄρκια πιστά,



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔμῃ δὲ πύματόν τι, καὶ ὕστατον ἔνι τέ' ἀπόλλων  
 ἱγνυθῆν ὅς δ' ἐπῶρε μένος λαοφράτε γυναι  
 λαοῖσιν δ' ὤνεινε καρῆα δῖος Ἀχιλλεύς.  
 οὐδ' εἴα ἱέμεναι ἐπὶ ἔκτορι πικρὰ βέλεμεναι  
 μὴ τις κῦδος ἄροιο βαλὼν, ὃ δὲ δούπορος ἔλθοι,  
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὸ τέταρτον ἐπὶ κρουῦς ἀφίκετο  
 καὶ τότε δὴ χύσφα πατήρ ἐτίττανε τολωνταίῃ.  
 ἔρ δ' ἐτίθει δύο κῆρε ταμηγίῃ θοοαίῃ.  
 τῷ μ' Ἀχιλλῆϊ, τῷ δ' ἔκτορος ἱποδάμοιο.  
 ἔλκε δὲ μέγα λαβὼν, ῥίπε δ' ἔκτορ' αἰσιμον ἕμαρ  
 ὄχθος δ' ἐς αἰδαο, λίπεν δὲ ἐφοῖβος ἀπόλλων  
 πηλείωνα δ' ἶκανε θιά γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 ἀρχῇ δ' ἰσαμένη, ἔπει πῆδρόντα προσνύδαι.  
 Νῦν δ' ἠνδὶ γ' ἰολπαδὶ φίλῃ φαίδιμ' Ἀχιλλεύς,  
 οἷσι δαυ μέγα κῦδος Ἀχαιοῖσι προτὶ νῆας  
 ἔκθρα δὴνῶσαντε μάχης ἔκτορ περ ἰόντα,  
 οὐδ' οἱ νῦν ἐτι δ' ἐστὶ πεφυγμένον ἄμμε γένεσθαι  
 οὐδ' εἴκερ μωλα πολλὰ πάθοι ἐκδορῆος ἀπόλλων,  
 προπροκυλινδόμεν' πατρὸς δῖος ἀγχιόχοιο.  
 ἀλλὰ σὺ μ' νῦν σῆθι καὶ ἄμπνυε, τὸν δὲ δ' ἐγὼ τοι  
 εἰχομένη πεπιθήσω, ἐναντίβιον μαχέσθαι.  
 Ως φάτο' Ἀθωαίη, ὃ δ' ἐπέθετο, χαῖρε δὲ θυμῷ.  
 σῆ δ' ἄρ' ἐπὶ μελίης χαλκὸν γλῶχιν' εἰδὼς,  
 ἢ δ' ἄρα τὸν μῦθον ἔλαπε, κιχέετο δ' ἔκτορα δῖον,  
 δὴ φόβῳ ἐκῆα δέμας καὶ ἀτρεῖα φωνήν.  
 ἀρχῇ δ' ἰσαμένη ἔπει πῆδρόντα προσνύδαι.  
 ἠθι' ἱμάλα δ' ἦσε βιάζεται ὠκὺς Ἀχιλλεύς,  
 ἄστυ περὶ πριάμοιο πρὸς ἰν ταχέεσσι δῖῳ κων.  
 ἀλλ' ἄγε δὴ εἰώμεν, καὶ ἀλιξάμεθα μένοντες.  
 Τὺν δ' αὖτε προσέειπε μέγας κερυθαίολος ἔκτορ.

ἄστυ περὶ πριάμοιο ποσσὶν ταχίῃσι διώκει.  
 ἀλλ' ἄγετε φράζεσθε θεοὶ καὶ μητιάαδι,  
 ἢ ἐμὴν ἐκ θαυάτοιο βῶσθ' ὦμι, ἢ ἐμὴν ἔθ' ἢ  
 πηλείδῃ ἀχιλῆϊ δαμάσσομι ἐδλὸν ἰόντα.

Τὸν δ' αὖτε προσέφη θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 ὦ πάτερ ἄρ' ἰκέραυνε κελαινῆς οἴον' εἶπες·  
 ἀνδρα θνητὸν ἰόντα πάλα πεπρωμένον αἴσῃ,  
 ἄψ' ἐθέλεις θαυάτοιο δυσσχέ<sup>ϛ</sup> ἐξωαλῦσαι;  
 ἔρδ', ἄτερ οὔτοι πάντες ἐπαυέομι θεοὶ ἄλλοι.

Τὴν δ' ἀπαμειβόμεν<sup>ϛ</sup> προσέφη νεφεληγρέτα Ζεύς.  
 θάρσσε φίτ' ὀγένησθαι φίλον τέκος οὐ νύ τοι θυμῷ  
 πρόσφρονι μνέομαι ἐθέλω δ' ἐτοίῃπιος εἶν<sup>αι</sup>.  
 ἔρξον ὅπῃ δὴ τοι νόος ἐπλήξω, μὴ δ' ἐτ' ἐρώσῃ,

ὧς ἔπ' ὄρωε πάρος μιμαῖνιον ἀθήνῳ,  
 βῆ δ' ἐκ αὐτ' οὐλύμποιο καρήνων αἵξασα,  
 ἔκτορα δ' ἀσπὶρ χεῖς κλονέων ἔφ' ἔ' ὥκ' ἀχιλλεύς,  
 ὧς δ' ὅτε νεβρὸν ὄρεσφιν κύων ἐλάροιο δῖπτα  
 ὄρεσ' ἐξ δυνῆς διὰ τ' ἄγκια καὶ σῆξ' βύσσας,  
 τὸν δ' ἐπ' ἐρ τε λάθῃσι καταπλήξας ὑπὸ θάμνω  
 ἀλλὰ τ' ἀνιχνύων θέει ἐμπέδον ὄφρα κεν εὕρῃ.  
 ὧς ἔκτωρ οὐ λῆθε ποδῶκεα πηλείωνα.  
 ὁσάκι δ' ὄρμησθε πυλάων διαρδωϊάων  
 ὠτίον αἵξασαι ἱὺ δ' μύτος ἐπὶ πύργῃς,  
 εἴ πως οἱ καθύπερθε ἀλάλχαιεν βελείωσι,  
 ἴστω κίμιν προπάρῃθιν ἀποσρέψασκε παραστάς  
 πρὸς πεδίον γ' αὐτὸς δ' ἐπὶ πτόλιος πέτετ' αἰεὶ,  
 ὧς δ' ἐν δνείρῳ οὐ δύναται φεύγοντα διώκειν  
 οὔτ' ἄρ' οὐδ' ὅνυαται ὑποφύγῃν, οὔθ' ὃ διώκειν,  
 ὧς ὃ τὸν οὐ δύνατο μάρψαι ποσσὶν οὔδ' ὅς ἀλύξαι,  
 ἥως δ' ἐκεν ἔκτωρ κῆρας ὑπεξέφυγεν θωαυτοιο

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὣς ἄρ' ὅτ' ἱμμεμαῶς ἰθὺς πέτρεο, βίσι δ' ἐκτὼρ,  
 τεῖχος ὑπὸ βῶων λαυτήρα δ' ἐχούνατ' ἐνώμα.  
 οἱ δ' ἐπ' ἀρὰ σκαπιδῶ καὶ εἰνιόρην ἐνεμόεντα,  
 τείχεος αἶψα ὑπὲρ κατ' ἀμαξιτὸν ἐσδύοντο,  
 κρηνῶ δ' ἱκανοὺς καλλιῤῥόω ἐνθα ὅτ' πηγαί  
 οἰαὶ ἀναΐσασσι σκαμάνεσσιν ἐνέοντο.  
 ἢ μὲν γὰρ θ' ὕδατι λαρῶ ῥέει ἀμφὶ δ' ἐκ πηδῶ  
 γίνεταί τις αὐτῆς ὥσιν πυρὸς αἰθομένοιο.  
 ἢ δ' ἐπὶ ῥῆθι ῥέει προρέει ἐκὺια χαλάστῃ  
 ἢ χιόνι ψυχρῇ, ἢ ἐξ ὕδατος χρυσάλλω,  
 ἐνθα δ' ἐπ' αὐτῶν πλωοὶ εὐρέες ἱγνύς ἐασσι  
 καλὰ λαΐνιοι ὅθι εἴματα σιγαλόεντα  
 πλύνουσιν βῶων ἄλχοι καλαί τε θυγατρὶς,  
 τοπρὶν ἐπ' ἐρήνης πρὶν ἐλθῆν ὕϊας ἀχαιῶν.  
 τῇ ῥα παραδραμέτω φούγων ὅδ' ὅπιδι δῖωκων,  
 πρὸς δ' ἐνθα ἐδιδός ἐφύγε δῖωκε δ' ἐμιν μέγ' ἀμείνω  
 καρπαλίμως, ἐπεὶ οὐχ' ἱερίον οὐ δ' ἐβοείλω.  
 ἀρνύδιω, ἅ τε πρὸς ἀέθλια γίνεταί τε ἀνδρῶν,  
 ἀλλὰ περὶ ψυχῆς θέον ἑκτορος ἱποδάμοιο.  
 ὣς δ' ὅτ' ἀεθλοφόροι περὶ τέρματα μώνυχες ἵπποι,  
 ῥίμφα μάλα βωχῶσι, τὸ δ' ἐμὲ γὰρ κείται ἀέθλων  
 ἢ τρίπος ἢ ἑλκὺς ἀνδρὸς κατὰ τεθνηῶτα,  
 ὣς τῶ ῥις πριάμοιο πόλιν περὶ δῖον ἠθήτω.  
 καρπαλίμοισι πόδεσσιν, θεοὶ δ' ἐπεὶ πάντες ἐρῶντες  
 τοῖσι δ' ἐνθάδ' ἤρχει πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε,  
 ὦ πόποι, ἢ φίλον ἀνδρα δῖωκόμηνον περὶ τεῖχος  
 ὀφθαλμοῖσιν ὄρωμαι, ἑμὸν δ' ὀλοφύρεται ἦτορ,  
 ἑκτορ ὅς μοι πολλὰ βόων ἐπὶ μηρὶ ἔκην,  
 ἰδὲς ἐν κρηνῇσι πολλὰ πύχυν, ἄλλοτε δ' αὖτε  
 ἐν πόλει ἀκροτάτῃ, νῦν αὖτε ἐν δῖος ἀχιλλεύς,

αὐτὸς ἰδὼν Ἀχιλλεύς ἀμύμον' ὅς ἑντίος ἔλθω,  
 καὶ δ' οὐ πόχωμαι ἑλένῳ καὶ κτήμαθ' ἅμ' αὐτῇ,  
 πάντα μάλ' ὅσσά τ' ἀλέξανδρος κείλῃς ἐνὶ νηυσὶν  
 ἦ γὰρ ἔσοιό μιν δ', ἢ τ' ἐπλῶ νέκυντας ἀρχῇ  
 θωσέμεν ἀπείδησιν ἀγειν, ἅμα τ' ἀμφὶς Ἀχαιοῖς  
 ἄλλ' ἀποδῶσθαι, ὅσα τε πόλεις ἦν κέκυθε.  
 θωσίην δ' αὖ μετόπιθεν γερουσίῳ ὄρκον ἔλωμαι  
 μή τι κατακρύψῃς ἄλλ' ἀνδρίχα πάντα δάξασθαι,  
 κτῆσιν ὅσῳ πολλίεθρον ἐπήρατόν ἐντός ἐδρῆς,  
 ἀλλὰ τί μοι ταῦτα φίλος διελέξατο θυμός,  
 μή μιν ἐγὼ μ' ἰκώμαι ἰδὼν ὅδ' ἐμ' οὐκ ἐλήσῃ,  
 οὐδ' ἐτι μ' αὐδῖσεται, κτενέει δ' ἐμε γυμνὸν ἑόντα  
 αἶψα ὥς τι γυῶμαι, ἐπεὶ κ' ἀπὸ τοῦ χιὰ δύνω.  
 οὐ μὲν πως νῦν ἔσθ' ἀπὸ δρυὸς οὐδ' ἀπὸ πέτρης  
 τοῦδ' ἀειζέμεναι ἅ τε παρθέν' ἠΐθεός τε.  
 παρθέν' ἠΐθεός τ' ὀαρίσσοι ἀλλήλοισιν.  
 βέλτορον αὖτ' ἐείδ' ἔωλεα νύμεν ὅτ' ἰτάχισα  
 εἰδομένη, ὅπποτέρω κεν Ὀλύμπιος ἔχρος ὀρέξῃ.  
 ὥς ὄρμαυε μένων, ὅδ' ἐδὶ χερσὶν ἦλθεν Ἀχιλλεύς,  
 ἴσος ἐνυαλίῳ κερυθάϊκι πολέμισσῃ,  
 στήων πηλεδάδε μελίῳ κατὰ δεξιὸν ὦμον.  
 θανὼν, ἀμφὶ δ' ἐχαικὸς ἐλάμπρο ἴκελος αὐγῇ,  
 ἢ πυρὸς αἰθομένοιο ἢ ἡελίος αἰνιόντ' ὅ.  
 ἵκτορα δ' ὥς ἐνόησεν ἔλε βόμος, οὐδ' ἄρ' ἔτ' ἔτλη  
 αὖθι μένων, ὀπίσω δ' ἐπύλας λίπε, βῆ δ' ὅφροβησας.  
 πηλείδης δ' ἐπόρουσε ποσσὶ κραιπνοῖσι πεποιθώς,  
 ἠὔτε κίρκης ὄρεσφιν ἐλαφρότατ' ὅ πετιηνῶν.  
 φηιδίως οἶμνε μετὰ φέρωνα πέλασσαν,  
 ἢ δ' ἐθ' ὑπαιθα φοβεῖται, ὅδ' ἐγγύθεμ ὀξύλιπῃ,  
 ταρφέ' ἐπαίψω, ἐλίσσιν τέθ' ἐθυμὸς ἀνώγει.

ΥΛΙΑΔΟΣ

၁၆၁



ἄλγος ἱμῶ θυμῶ τε καὶ μητίεσσι τιμώμεναι.  
 λαοῖσιν δ' ἄλλοισι μινωθαδιώτερον ἄλγος  
 ἔσσεται, ἢν μὴ καὶ σὺ θάνῃς Ἀχιλλῆϊ δαμαδίει·  
 ἀλλ' ἐσέρχεο τείχεος ἑμὸν τέκεος, ὅφρα ὠσέῃ  
 ῥῶας καὶ ῥῶας μὴ ᾧ μέγα κῦδος ὀρέξῃ  
 πηλείδῃ, αὐτὸς δ' ἐφίλης αἰῶνας ἀμρθῆς.  
 πρὸς δ' ἐμὲ πρὶν δῦσονον ἔτι φρονέοντ' ἱλείαρε  
 δυσμόρον, ὃν ῥὰ πατέρη χρονίδης ἴδ' ἑυρέος ἔδω·  
 αἴσῃ ἐν ἀργαλῇ φθίσθαι, κακὰ πόλιν ἐπιδόοντα,  
 υἱας τ' ὀλυνμένους ἑλκυδίεσσι τε θυῖαρες,  
 καὶ θαλάμους κεραϊζόμενους, καὶ νύπια τέκνα,  
 βαλλόμενα ποτὶ γαίῃ, ἐν αἰνῇ δ' ἡιοτῆτι,  
 ἑλκόμενους τε νουῶν, ὀλοῆς ὑπὸ χρυσὶν Ἀχαιῶν,  
 αὐτόν δ' ἂν πύματόν με κύνεσσιν πρῶτῃσι θυρήσιν  
 ὤμῃσιν ἱρύουσιν ἐπεί κ' ἐπὶ οὐδ' ἔτι χαλκῶ  
 τύψας ἢ ἐβαλὼν ῥεθίων ἐκ θυμὸν ἔλῃται,  
 οὗτος ῥέφον ἐν μεγάροισι ῥαπειῖναι πυλαωρούς,  
 οἷον ἑμὸν αἶμα πιόντοσσι ἀλύαγοντοσσι περὶ θυμῶ  
 κείμεν' ἐν προθύροισι, νέεσσι δ' ἐτε πάντ' ἐπέοικε  
 ἄρηι κταμένω δεδαϊγμένω ὀξείῃ χαλκῶ  
 κείδαι, πάντα δ' ἐκαλὰ θανόντι περ' ὅττι φανέῃ.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἂν πολίοντε κάρη πολίοντε γένησιν,  
 αἰδῶ τ' αἰσχύνωσι κύνεσσιν κταμένοισι γέροντι·  
 τῆτο δ' ἂν οἴκτισον πέλιται δ' ἡλοῖσσι βροτοῖσιν,  
 οἷον ὁ γέρον πολιάς δ' ἄρ' ἀνὰ ῥίχας ἑλκτο χρυσί  
 τίλλων ἐκ κεφαλῆς, ὅδ' ἐκτορε θυμὸν ἔπειθε.  
 μήτηρ δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ὀδύρῃσιν δακρυχέουσιν  
 κόλπων ἀνιμένη, ἐτέρωφιν ᾧ μάγον ἀνέχει,  
 καὶ μιν δακρυχέουσ' ἐπὶ πᾶσι πῆρόεντα προσσύνει.  
 ἐκτορ τέκνον ἑμὸν τάδ' ἐγὼ αἶδω καὶ μὲν ἑλκτο

ὅς ῥά τε ριῖα θέησι ῥιτανόμην· πιδίοιο·  
 ὡς ἀχιλῆος λαυφῆρὰ πόδες κ' ἰγύναντ' ἰνώμα·  
 τόν δ' ὁ γέρον πρίαμος πρῶτος ἴδον ὀφθαλμοῖσιν,  
 παμφαίονθ' ὡς τ' ἄσιρ' ἰπιασύμῃον πιδίοιο·  
 ὅρ ῥά τ' ὀπῶρης εἴσιν, ἀρίστῃσι δέ οἱ αὐγαὶ  
 φαίνονται, πολλοῖσι μετ' ἄσρασι νυκτὸς ἀμολγῶ·  
 ὃν τε κύν' ὠρίων· ἐπίκλησιν καλίσσιν·  
 λαμπρότατος μ' ὅγ' ἐστὶ κακὸν δέ τι σῆμα τίτυκται,  
 καί τε φέρετ' πολλὸν πυρετὸν δόλοισι βροχῶσιν,  
 ὡς τῷ χαλκὸς ἑλαμπι περὶ σῆθισι θέοντ',  
 ὥμαξεν δ' ὁ γέρον κεφαλὴν δ' ὅγε κοῦφον χρῆσιν,  
 ὑπόσ' ἀναχόμεν', μέγα δ' ὀμώξας ἐγχεῖν·  
 λιασύμῃον φίλον ἦδ' ὃν· ὁ δ' ἐπροπάρεθι πυλάων  
 εἰσέκηδ' ἄμορην μεμαῶς ἀχιλῆϊ μάχεσθαι·  
 τόν δ' ὁ γέρον ἱλεσινὰ προσηύδα χιτῆρας δρεγνύς,  
 ἔκτορ μή μοι μίμνῃ φίλον τέκος ἀνέρε βῆρ  
 οἷος ἄνκῃ θ' ἄλλων ἵνα μὴ τάχα πότμον ἐπίσσης·  
 πηλείωνι δάμεις ἐπειὴ πολὺν φέρτερός ἐστιν  
 χέτλιος, αἶθε θεοῖς φίλος θεσπόμενός γένοιτο,  
 ἔσθον ἐμοί, τάχα κέν ἐκύνεθ' καὶ γυῖός ἐδόνται·  
 κέλευμον ἢ κέ μοι αἶνόν ἀπὸ πραπίδων ἄχος ἔλθοι,  
 ὅς μ' ἦν πολλῶν τε καὶ ἰδλῶν εὖνιν ἔθηκε  
 κτείνων, καὶ πρὶν ἀνίσσων τῷ τηλεδίπλῳ,  
 καὶ γὰρ νῦν δύο παῖδες λυκάονα καὶ πολυδάωρον,  
 ἔδ' ὀνύμαϊ δῖον ῥῶον ἐς ἄστυ ἀλέντων,  
 βῆς μοι λαοβόη τέκετο κρήνησα γυναικῶν,  
 ὦλλ' εἰ μὴ βῶσι μετὰ στρατῷ ἦτ' ἂν ἐπιταῖ,  
 χαλκῷ τε χρυσοῦ τε ἀπολυσόμεθ', ἐστὶ γὰρ ἱνδορ,  
 πολλὰ γὰρ ὥπασε παιδὶ γέρον ὀνομακλυτὸς ἄλκιος,  
 αἶψ' ἔδ' ἠτεθνάσσι καὶ ἔν' αἰίδαο δόμοισιν·

ΙΛΙΑΔΟΣ Χ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Χῖδ' ἄρα τῖς περὶ τείχεος ἄσθνη, κτάνων ἑκὼρ ἀχιλαιοῖο.

Σ οἱ μὲν κατὰ ἄστυ πιφυζόμενοι

ἦν τε νεβροί,

α

ἰβρῶ ἀπιφύχοντο, πίνοντ' ἀκίον

τό τε δίψαν.

κεκλιμένοι καλῆσιν ἀπώλεσι σῆμα

αὐτὰρ ἀχαιοὶ

τείχεος ἄστρον ἴσταν σάκε' ὥμοισι κλίναντο δέ,

ἔκτορα δ' αὐτὸ μέιναι ὄλην μεῖν' ἐπίδησαν.

ἰλίῳ προπάρειθε πυλάων τε σκαυόμεν,

αὐτὰρ πηλείωνα προσήνθε φοῖβ' ἀπόλλω.

Τίπτε μιν πηλείος ἡἷ' ποσσὶν ταχέως διώκεις.

αὐτὸς θνητὸς ἔων θεὸν ἄμεινον, εἴδ' ἐνυπώμην

ἔγνωσ' ὡς θεός ἐμι, σὺ δ' ἀσπρῆχες μῆλαινεις.

ὅ νύ μοι οὐρα μίλλετ' ὥρων πόνος, οὐδ' ἐφείβεσθαι

οἶδ' ἤτοι εἰς ἄστυ ἄλυν, σὺ δ' ἐδύρο λιάδης,

εἴ μιν μεκτανέεις ἐπὶ εὐτοί μορσισμός ἐμι,

Τόνδε μίγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκύν ἀχιλλεύς·

ἔβλασάς μ' ἑκάβρι θεῶν ὀλωτάτε πωντορ,

ἐνθάδε νῦν ῥέψας ἀπὸ τείχεος ἔκ' ἐπὶ πολλοὶ

γαῖαν ὀδ' ἄξ' εἶλον πρὶν ἰλίον ἐξοφικέειναι.

νῦν δ' ἐμὲ μὲν μέγα κῦδος ἀφείλεο βύς δ' ἰσάμενος

ῥηιδίως ἔσ' οὐπὶ τίσιν γ' ἐδίδεσσαι ὀπίσω.

εἴ σ' ἂν ἑσταίμην ὅ μοι δυνάμεις γὰρ παρέη.

Ὡς ἐπὶ πρὸτ' ἄστυ μέγα φρονέων ἐβίβηκε

σενωμῆν' ὅς τ' ἴππους ἀέθλοφόν' ἐν ὀχέσσειν.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

σμῖδ' ἑλὶον κενάβησε πάλιν δ' ἀπὸ χαλκὸς ὄρησε  
 βλημένον, ὅδ' ἐπέρησε, θεοῦ δ' ἠρύκακε δ' ὤρασε.  
 πηλείδης δ' ὠρμήατ' ἀγένορ' ὠνπιθίοιο,  
 δυνάτερος ὅδ' ἐτ' ἔσσω ἀπείλων κῦδος ἀρίστω.  
 ἀλλὰ μιν ἐξέρπαξε κάλυφε δ' ἄρ' ἦεν πολλῇ,  
 ἠσυχίον δ' ἄρα μιν πολέμευ' ἐκπιμπνέεισθαι  
 οὐτάρ ὃ πηλείωνά δ' ὅλω ἀποιρῆσθαι λαοῦ,  
 οὐδ' ὅτ' ἄρ' ἐκάρβυος ἀγένορε πάντα ἰοικώς.  
 ἔση προῖδε ποδῶν, ὅδ' ἐπείσσυρ ποσὶ διώκῃ,  
 ἔως ὃ, ἐν πεδίῳ διώκῃ πυροφόροιο,  
 ὀρίφας πὰρ ποταμὸν βαθυδίνοντα σκαυμοσφον.  
 τυτθὸν ὑπὲρ προθέοντα, δόλω γὰρ ἐβίβην ἀπολλῶν.  
 ὅς αἰὶ' ἔλποισι κίχυσιν ὡς ποσσὶν οἴσιν,  
 τόφρ' ἄλλοι βῶες πεφοβημένοι ἦλθον δμίλῳ.  
 ἀσπασοιοι προτὶ ἄστυ, πόλιν δ' ἐμπληρ' ἀλέντων.  
 ὅδ' ἄρα βίβ' ἔτλαν πόλιος καὶ τείχεος ἐκτὸς  
 μέναι ἐτ' ἀλλήλους καὶ γνώμεσθαι, ὡς τι πιφύγοι.  
 ὅς τ' ἐθάν' ἐν πολέμῳ, ἀλλ' ἀσπασίως ἐσέχων  
 ἐς πόλιν, ὃν πινε τῶν γε πόδες καὶ γούνα σάωσεν.

## ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ ΧΟΜΗΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ὡς τῶν ἐγκληθέντων ἕς τὴν πόλιν, μόνον  
 ἔκταρ ὑπομένει ἀχιλλεύς, τὸ μὲν πρῶτον φεύ-  
 γει, ἔπειτα δ' ἐνθίσταται ἀθηνᾶς αὐτὴν πεισάσης καὶ ἀνα-  
 ρεῖται, ἐξελθὼς δ' αὖτις τὸ ἄρματον ἀχιλλεύς, σὺν  
 πεδίῳ δ' ἐν ναύσταθμον ἔλκει, οἱ δ' ἔπειτα τὴν πόλιν ἐδύ-  
 ροντα ταῦτα ὁρῶντες ἐγκλησόμενοι.

ῥόμ' ἀπαείρομ' ἄνθρωπον, πόλιος πεδίονδε νοήσῃ·  
 καί με μεταίξας μάρψῃ ταχέεσσι πόδισσιν,  
 ἔκ' ἔτ' ἔπειτ' ἔσται θάνατον καὶ κήρας ἀλύξαι,  
 λίλῳ γὰρ κρατερὸς περὶ πάντων ἔς ἀνθρώπων·  
 εἰδὲ κεν οἱ προπάραιθε πόλιος κατακυαντίον ἔλθῃ,  
 καὶ γὰρ θὴν θύτῳ τῶς χροὺς δέξῃ χαλκῷ·  
 ἔνδ' ἔα ψυχὴ, θνήσκ' ἔνδ' ἔφασ' ἀνθρώποι  
 ἔμμεναι· οὐτάρ οἱ κρονίδης γυνὴ κῦδος ὀπάσῃ·  
 ὦς ἐπὶ ἄχιλλῆα ἀλκίς μένου ἐν δ' οἱ ἦτορ  
 ἄλκιμον ὤρματο πηολιμίῃσιν, ἦ δ' ἐμ' ἄχευαι,  
 ἦντι παρδαιλὶς ἔισι βαθείης ἐκ ξυλόχοιο  
 ἀνδρὸς θρηνητῆρος ἐναντίη, ὅδ' ἐτι θυμῷ  
 ταρβέῃ ὅδ' ἐφοβέϊτο· ἐπείκου ὕλαχμον ἀκούσῃ,  
 εἴπῃ φθάμευς μιν ἢ ὑτάσῃ ἢ ἐβάλλησιν·  
 ἀλλὰ τί κ' ἐπεὶ περὶ δ' ἐπὶ πεπαιρμένη ἔκ' ἀπολήγῃ  
 ἀλκίης πρὶν γ' ἢ ἐξυμβλήσθαι ἢ ἐδαμῆναι·  
 ὥς ἀντήνορος ἡδὲ ἀγαυοῦ δῖος ἀγένορος  
 ἔκ' ἔθελεν φεύγειν πρὶν παρήσασθαι ἄχιλλῆος,  
 ἀλλ' ὁ γὰρ ἀσπίδα μὲν πρόδ' ἔαχε πολυτοσεῖσσι,  
 ἐγχείῃ δ' αὐτοῖο ὑτύσκετο καὶ μέγ' αὐτῇ,  
 ἢ δ' ἦ πῃ μάλ' ἐολπας ἐνὶ φρεσὶ φαίδιμ' ἄχιλλεῦ  
 ὅματι ἴδ' ἐπὶ πόλιν πέρσεν βῶων ἀγέρωχων  
 νηπύτι, ἥ τ' ἐπὶ πολλὰ τετιώξεταί ἄλγ' ἐπ' αὐτῇ,  
 ἐν γὰρ οἱ πολέες τε καὶ ἄλκιμοι ἀνέροβ' εἰμὲν,  
 οἱ κεν πρόδ' ἐφίλων θέκων ἀλόχων τε καὶ ἡῶν,  
 Ἴλιον εἰρυσόμεθα, σὺ δ' ἐνθάδε πότμον ἐφέβῃ  
 ὥς' ἐκπαγλὸς ἔων, καὶ θαρβέλιος πολέμιας·  
 ἢ ῥά, καὶ ὅθ' ἄν' ἀκοντα βαρείης χερὸς ἀφῆκε·  
 καί ῥ' ἐβαλε κνήμῳ ὑπὸ γούνατος, ὅδ' ἀφάμαρτεν,  
 ἀμφιδέ μιν κνημὶς νεοτύνκτου κασιτέρου



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἱγυῖς ὅδ' ἐκλονέων, νῦν ὅτ' ὠ λυγρὶ ἔσειδα,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ἐς τιῆχος ἀναπνύσασιν ἀλάντοδ',  
 ἔνυπς ἐπ' ἄψ' θίμμαι στανίδες πυκινῶς ἀραρυῖαι,  
 δειδία γὰρ μὴ οὐλῶς ἀνὴρ ἐς τιῆχος ἄλῃται.  
 Ως ἔφαθ', οἷδ' ἀνίσαντε πύλας, καὶ ἀπῶθεν ὄχῃας,  
 αἱ δ' ἐπεταδιῖσαι τινύξαι φάος, αὐτὰρ ἀπόλλων  
 ἀντίος ἐξέθρε, βῶων ἵνα λυγρὸν ἀλάλῃσι,  
 οἷδ' ἰθὺς πόλιος κ' τιῆχος ὑψήλοιο.  
 δ' ἴψ' ἡ καρφαλίοι κεκρυμμένοι ἐκ πεδίοιο  
 φεύγον, ὅδ' ἐσφειδανὸν ἔφεπ' ἔρχετο δ' ἐοικῆς  
 αἰὲν ἔχ' κρατερὴν, μῆν' αὖναι δ' ἐκυδὸς ἀρήϊα.  
 ἔνθα καὶ ὑψίπυλόν βοῖον ἔλθ' ὕψος ἀχαιῶν.  
 αὐτὰρ ἀπόλλων βοῖος ἀγένορα δ' ἴον ἀνῆκε,  
 φῶτ' ἀντήνορος ἦδ' ὀν ἀμύμονος τε κρατερόν τε.  
 ἐν μὲν δὲ κραδίη θάρσος βῶλε, παρ δ' ἐοικῆς  
 ἔση ὅπως θανάσιο βαρέας χεῖρας ἀλάλῃσι,  
 φηγῶ κεκλιμένος, κινάλυπτο δ' ἄρ' ἦεν πολλῇ,  
 αὐτὰρ ὅτ' ὥς ἐνόησεν ἀχιλῆα πολλὸν ὠρθεον,  
 ἔση, πολλὰ δ' ἐοικῆς κραδίη πόρφυρι μένοντι,  
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἴπε πρὸς ὃν μεγαλήτορα θυμὸν.  
 ὦ μοι ἔγωγε, εἰ μὲν καὶ ἀπὸ κρατεροῦ ἀχιλῆος  
 φεύγω τῇ πρὸς οἱ ἄλλοι ἀνδρῶν μοι φοβέονται.  
 αἰρήσῃ με καὶ ὥς καὶ ἀνδρῶν κλιδεῖ δ' ἐροσμήσει,  
 ὅδ' ἔν' ἔγωγε θύρευσ μ' ὑπεκλονέειναι ἰάσω  
 πηλείδῃ ἀχιλῆϊ, ποσσίν δ' ἀπὸ τέχεσσι ἄλλῃ  
 φεύγω πρὸς πεδίον ἰλίου ὄφρ' ἂν ἴκωμαι  
 ἴδης τε κνημοὺς κατὰ τε ῥέπηϊα δ' ὕω,  
 ἰσχυροῦς δ' ἐν ἑπείτα λυγρὰ μῆν' ὀπταμοῖο.  
 ἰσχυρὸν ἀποφυγεῖς ποτὶ ἴλιον ἀποτειοίμην,  
 ἀλλὰ τί μοι ταῦτα φίλος δ' ἐμὲ ξανθὸν θυμὸς.

πειθύνειτ' ἄλλους δ' ἄλλα μετὰ σφοδραλήγη καρδίας,  
 ἢ μὴ τόξα λαβῆσα πάλιν κίε θυγατέρος ἤς,  
 ὅδ' ἄρ' ὄλυμπον ἵκανε διὸς ποτὶ χαλκὸς καί τις δῶ,  
 διακρούεσθαι δ' ἐπαρὸς ἐφείβοι γούνασι καὶ ῥη.  
 ἀμφοῖ δ' ἄρ' ἀμβρόσιος ἑανὸς ἔμελλε, τῶν δ' ἐπὶ προτὶ εἴ.  
 εἴλη πατὴρ κρονίδης, καὶ ἀνὴρ δ' ἠδὲ γυλαῶτας.

Τίς νύ σε θιὰ δ' ἔριξε φίλοι τέκος ὑβρανίωνων,  
 μαφιδίως ὥς εἴπῃ κακὸν ῥέϊσταν ἐνωπῇ,  
 τόνδ' ἄν τε προσέειπεν εὐσεφάνος κελαδενή.  
 σήμ' ἀλγος συρίλιξε πάτρ' λευκώλων ὅδ' ἦρ.  
 ἐξ ἧς ἀθανάτισιν ἔεις καὶ νῆκος ἐφῆπτο.

Ὡς δὲ μὴ θιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον,  
 αὐτὰρ ἀπόλλων φοῖβος ἰδύσσοι ἴλιον ἱρήν,  
 μέμελτο γάρ οἱ τιῆχος ἐυδμήτοιο πόληθ',  
 μὴ δαναοὶ πέρσῃσι ὑπὲρ μόρον ἤματι κένω.  
 οἱ δ' ἄλλοι πρὸς ὄλυμπον ἵκαν θεοὶ ἄϊον ἰόντες,  
 οἱ μὲν χαομήμοι, οἱ δ' ἐμείγα κυδιόοντες.  
 καὶ δ' ἴσον παρὰ παρὶ κελαινεφίῃ, αὐτὰρ ἀχιλλεύς  
 ἔσθας ὁμῶς αὐτοῦς τ' ἔλεκεν καὶ μώνυχας ἵππους.  
 ὥς δ' ὅτε καπνὸς ἰὼν ἐς ὑβρανὸν δῖρ' ἰκάνοι  
 ἄετος αἰθομένοιο θιῶν δ' ἐμῆνις ἀνῆκε,  
 πᾶσι δ' ἔθηκε πόνον, πολλοῖσι δ' ἐκὼν ἐφῆκε.  
 ὥς ἀχιλλεύς ἔσθας πόνον καὶ κήδ' ἐθηκεν,  
 νῆσθ' ὅδ' ὁ γέρον παρὰ πρῶτος θείῃσι πύργῳ,  
 ἐς δ' ἐνόησ' ἀχιλλῆα πηλώειον, αὐτὰρ ὑπ' αὐτῷ,  
 ἔσθας ἄφαρ κλονέοντο πεφυγότες, ὅδ' ἐπὶ πρὸς ἀλκή.  
 γίνεθ', ὅδ' οἱ μῶξας ἀπὸ πύργου βαῖνε χαμᾶϊ.  
 ὁρῶντων παρὰ τιῆχος ἀγακλεπτοὺς πυλαωρούς,  
 πεπλάμενας ἐν χερσὶ πύλας ἔχοντες, ἐσέοι λαοὶ  
 ἔλθωσι προτὶ ἄστυ πεφυγότες, ὃ γὰρ ἀχιλλεύς

ἔννοιον δὲ θεῶν ὅτ' ἀγήμεν λαομέδοντι  
 πᾶρ δ' ἰὸς ἐλθόντος θητεύσας μὲν ἐς ἑνιαυτὸν  
 μισθὸν ᾧ ῥήθῳ ὅδ' ἐσημαίνων ἐπέτελλεν·  
 ἦρ' ἔγωγε βῶσσι πόλιν πῖε τείχεος ἑλπίμα·  
 οὐρὺν τε καὶ μάλα καλὸν ἴν' ἄρρηκτος πόλις εἴη  
 φοῖβε, σὺ δ' ἐλπίσθας ἑλίκας βούς βυβλάεσκεν,  
 ἰδὼς ἐν κνημοῖσι πολυπύχου ὑλήεσσης·  
 ἀλλ' ὅτε δὴ μισοῖτο τέλος πολυγυῖός τ' ὦρα  
 ἐξέφροι τότε νῆπι βίηθερ μισθὸν ἅπαντα  
 λαομέδων ἐπαγλας ἀπαλήσας δ' ἀπέπεμπε·  
 θεῖ μὲν δ' ἠπάλησε πόδας καὶ χεῖρας ὑπὲρθε  
 δῖος δ' ἐν καὶ περάσας νήσαν ᾧ τηλεδαπάδην,  
 εὖτο δ' ὅτ' ἀμφοτέρων ἀποκῆψεν οὐκτα χαλκῷ.  
 νῆπι δ' ἐτ' ἀφ' ὅρροι βίομην κικηνηότι θυμῷ  
 μισοῦ χροόμενοι τὸν ὕπνου δ' οὐκ ἐτέλεσεν·  
 τῷ δ' ἠὲ νῆπι λαοῖσι φέρεται χεῖρ, εἰδὲ μεθ' ἡμῶν  
 πῆρθε, ὅσκει βῶσσι ὑπὲρφίαλοι ἀπόλωνται,  
 πτόχου κακῶς, σὺν πασὶ καὶ αἰδοίης ἀλόχοισι,  
 τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἀναξ' ἐκάρης ἀπόλλων·  
 ἔννοσίγαι', εἰς ἂν με σταόφρονά μιν θέσαιο  
 ἔμμεναι ἐδὴ θεῖ γὰρ βροτῶν ἔννεα πολεμίσαν  
 δαδὼν οἱ φύλοισιν ἐοικότας ἄλλο τε μέν τε  
 ἱερλεγέος τελεθυσὶν ἀρούρης καρπὸν ἰδόντες·  
 ἄλλο τε δ' αὖ φθινύθυσιν ἀκήεροι, ἀλλὰ τὰ χιῖα  
 παύσώμεσθαι μάχης, οἷον αὐτοὶ δ' ἡεαλώσων·  
 ὣς ἄρα φωνήσας πάλιν ἔβραπε· αἰδοῖτο γὰρ ῥα  
 παρκασιγνήτοιο μετ' ἡμῶν ἐν παλάμῃσι·  
 τὸν δ' ἐκασιγνήτη μάλα νέκυσσε πότνια θερῶν  
 ἄρτεμιν ἀγροτέρην, καὶ δ' ἐδίδον φώτο μῦθον·  
 φεύγε δ' ἐκάρη παρκασιγνήτοιο δ' ἐνίκλιν

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἴποι χρομένη κακὰ μήδεται, οὐνεκ' ἀχαιοὺς  
 κάλλιπες, αὐτὰρ φασὶν ὑπὲρ φιλῶσις ἰν' ἀμύνεσθαι,  
 Ως ἄρα φωνήσασα πάλιν βῶπαι ὅσας φασινῶ  
 τὸν δ' ἄγε χερὸς ἱσθῆαι διὸς θυγάτηρ ἀφροδίτη,  
 πυκνὰ μάλα σενώχοντα· μόγῃς δ' ἴσα γέρας το θυμὸν  
 τήνδ' ὥς οὖν ἐνόησε θεὰ λευκώλενας Ἥρη,  
 αὐτίκ' ἀθηναίῳ ἔπεια πῆρόεντα προσηύδα·  
 ὦ πόπαι αἰγλόχοιο διὸς τέκος ἀρετῶν,  
 καὶ δ' αὖθ' ἡ κυωμῖα ἀγὰ βροτοχόρον ἄρῃα  
 δῆϊς ἐκ πολέμοιο κατὰ κλόνον, ἀλλὰ μέθιθε.  
 Ως φάτ' ἀθωαῖν δ' ἐμετίσυνε χαῖρε' ἧ θυμῷ  
 καὶ ῥ' ἐπιφασμένη πρὸς σῆθια χερὶ παχείῃ  
 ἦλασε, τῆς δ' αὐτὸ λυρ γούνατα καὶ φίλον ἦτορ  
 τῷ μῦθ' ἄρ' ἀμφω κῖντο ποτὶ χθονὶ πηλυβοτέρῃ,  
 ἧ δ' ἄρ' ἐπυχωμένη ἔπεια πῆρόεντ' ἀγόρευε·  
 τοιοῦτι νῦν πάντες ὅθι βῶσι σιν ἄρωχοι  
 εἶον, ὅτ' ἀργείοισι μαχρίατο θωρηκτοῖσιν  
 ὦ δ' ἐτε θαρσάλλιοι καὶ τλήμονες ὥς ἀφροδίτη,  
 ἔλθον ἄρ' ἐπὶ κυρος ἐμῷ μένει ἀνπίωσεν.  
 ἴσθαι κε δ' ἡ πολλὰ ἀμμοὶς ἐπαυσάμεθα πολέμοιο  
 ἰλίῃ ἐκπέραντες ἱυκτίμῳ πολέμοιο,  
 Ως φάτο· μέειδ' ἡ δ' ἐκ λευκώλενας Ἥρη,  
 αὐτὰρ ἀπέλωνα προσέφη κρείων ἐνοσίχθων·  
 φεῖθε τίη δ' ἡ νῶϊ δῖε σάμῃ ἔδ' ἐοικεν  
 ἀρξάντων ἐτέρων τὸ μῦθ' αἰχλὸν αἰὶ ἀμαχητὶ  
 ἴσθαι οὐλυμπόν δ' ἐδὶος ποτὶ χαλκῶδες δ' ὦ·  
 ἄρχε, σὺ γάρ γε νῆφιν ἡνέειρ' ἔθ' ἄρ' ἐμοὶ γὰρ  
 καλὸν ἐπὶ πρότερος γένεσθαι καὶ πλείονα οἶδα  
 νηπύτῃ, ὥς ἄνοον κραδίῳ ἔχῃς, ἔδ' ἐν τῶν περ  
 μέμνηται ἔσθαι δ' ἡ πάθομεν κακὰ ἴλιον ἀμφί·

αὐτὰρ ἐπεὶ ξάνθοιο δῶλμ' ἔμεινος, οἱ μὲν ἔπειτα  
 πνευσάδω, ἦρ' ἄρ' ἐρύκακε χρομένη πρ',  
 ἐν δ' ἄλλοισι θεοῖσιν ἔειπε σὺν βίβειθ' ἰαλὰ  
 ἀργαλίη, δίχα δ' ἐσφιν ἐνὶ φρεσὶ θυμὸς ἄηρ,  
 σὺν δ' ἔπειθ' ἐμὴν μάλα δ' ὀμᾶδ' ἔβραχε δ' ὀριεῖα χθονὶ  
 ἀμφὶ τὴν σάλπιγξον μέγας ἕρηνος, αἶψ' ἔπειτα  
 ἔμμενος ἑλνύμπω, ἐγέλασε δ' ἐοφίλῳ ἦτορ  
 γηθοσύνην ὅθ' ὄρωρ' θεοὺς ἐειδὶ ξυνιόντας,  
 ἐνθ' οἱ γ' ἔκ' ἐπὶ δ' ἡρὸν ἀφίστασθαι, ἦρχε γὰρ ἄρης  
 φιντοτόρῳ, καὶ πρῶτος ἀθηναίῃ ἐπέρρασε,  
 χολακεὺν ἔγχευ' ἔχων καὶ δονείδην φάτο μῦθον·  
 τί π' ἄν ὦ κωρόμην θεοὺς ἐειδὶ ξυνιλάουσας,  
 θάρσος ἄητον ἔχουσα, μέγας δ' ἐσὶ θυμὸς ἀνῆκεν,  
 ἢ ὅ μ' ἐμνήσθ' ἐπεὶ τυδείδῳ διομήδ' ἐκώϊσας  
 ἔτάμηναι, αὐτὴ δ' ἐπ' ἀνὸς ἔγχευ' ἔλυσ' ἔλυσ'·  
 ἰθὺς ἐμὲ ὤσας, σέθεν γ' ἐχέει καλὸν ἔδαφος·  
 τῷ σ' ἄν νῦν οἶω ἀποπείσωμαι ὅσα μ' ἔρρασε.  
 Ὡς εἰπὼν, οὔτῃσιν κατ' αἰγίδα θυγατρὶς ἔταρ  
 σμυδαλίῳ, ἦν ἔδ' ἐδ' ἰὸς δῶλμ' ἡσυχάζοντος,  
 τῇ μιν ἄρης οὔτῃσιν μιαιφόνος ἔγχευ' ἔμαχον,  
 ἔδ' ἀναχάσασθαι μὲν λίθον ἔλυσ' ἔλυσ' ἔλυσ'·  
 κείμηνον ἐν πεδίῳ μέλανα φηχύν τε μέγαν τε,  
 τὸν δ' ἀνδρὸς πρότεροι θέσαν ἔμμενος ὄρον ἀρούρης,  
 ἔδ' ἐβόλε θυρὸν ἄρηα κατ' αὐχέναν, λῦσι δ' ἔρρασε·  
 ἐπ' ἄρ' ἐπὶ χεὶρ πέλιθ' ἐπὶ σὺν ἐκόνισσιν ἔχαιτας,  
 τεύχεά τ' ἀμφαράβησε, γέλασε δ' ἐπὶ πάλαι ἀθήνη,  
 καὶ οἱ ἐπὶ χρομένη ἔπια πῆρόοντα προσήνδ' ἔταρ·  
 Νηπιτὶ δ' ἐν νύπῳ πρὶ ἐπιφράσῳ ὄσαν ἀρείων  
 ἔγχευ' ἔχων ἔμμενος ὅπ' μοι μένος ἀντιφείρεται,  
 οὐτά κ' ἔμμενος ἐμμενος ἐξ ἀποτίνοισι,



# ΙΛΙΑΔΟΣ

τέροντ' ἐγχείλεις τε καὶ ἰχθύεις, οἱ κατὰ δῖνας,  
 οἱ κατὰ καλὰ ῥέεθρα κυβίσων ἔνθα καὶ ἔνθα.  
 πνοιῇ τέρομυ μοι πολυμήτιος ἠφαίσιο,  
 καί τοι δὲ ἴς πεταμοῖο. ἔσος τ' ἔρατ' ἐκτ' ὀνόμαζεν  
 ἦρας, οὐτις θίγῃ θεῶν δύνατ' ἀντιφρίξιν.  
 οἷδ' ἄν ἐγὼ θίγῃ ὧδε πυρὶ φλεγέθοντι μαχοίμην,  
 λῆγ' εἰδὸς ῥῶας ἧ καὶ αὐτίκα δῖος Ἀχιλλεύς,  
 ἄετος ἐξυλάσσει, τί μοι εἰδὸς καὶ ἄρωγῆς,  
 φῆ πυρὶ καοόμενος, ἀναδ' ἐφλυε καλὰ ῥέεθρα.  
 ὥς ἧ λίβης ἵει ἔνδον ἐπηρόμενός περὶ πολλῷ,  
 κνήσῳ μιλοόμενός ἀπαλαφείβεις σιάλαιο  
 πάντοθεν ἀμβολοῦδῳ, ὑπὸ ἧ ξύλα κωλύενα κίττα,  
 ὥς τῷ καλὰ ῥέεθρα πυρὶ φλέγῃ, ἵειδ' ὕδωρ,  
 οἷδ' ἐθέλει προρίδναι, ἀλλ' ἴσχετο τεῖρε δ' αὐτὸς  
 ἠφαίσιο βίηφι πολύφρονός, αὐτὰρ ὅγ' ἦρῳ  
 πολλὰ λισόμενος ἐπὶ ἀπείρουντα προσήυδα.  
 ἦρῃ, τί πῃ σε δὲ ἡὸς ἐμὸν ῥῶον ἔχραυ κήδεσιν  
 ἐξ ἄλλων, εἰ μὲν θοῖ ἐγὼ τέθνη αἰπὸς ἐμῇ,  
 ὅσων οἱ ἄλλοι πάντες ὅθι ῥώωνιν ἄρωγός,  
 ἀλλ' ἦ περὶ μὲν ἐγὼν ἀποπαύσμεν εἰ σὺ κίλεύεις,  
 σπᾶνέω δὲ καὶ οὗτος, ἐγὼ δ' ἴστω καὶ τόδ' ὀμύμας.  
 μή ποτ' ἴστω ῥώωνιν ἀλιξήσῃν κακὸν ἡμᾶρ,  
 μή δ' ὑπόταν ροήν μαλ' ὧ πυρὶ πᾶσαι δάηται  
 καιομένη, καί τοι δὲ ἄρῃοι, ὅτε ἀχαιῶν,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ τόγ' ἄκυσσιν θεὰ λευκώλενας ἦρῃ.  
 αὐτίκ' ἄρ' ἠφαισον προσεφώνεον ὃν φίλον ἦόν.  
 ἠφαισε, χεῖρ' ἰκνον Ἀγακλῆϊς, εἰ γὰρ εἰοικὼς  
 ἀθάνατον θεὸν ὧδε βροτῶν ἵστα σφελίξιν,  
 ὧς ἴφαιθ', ἠφαισος ἧ κατ' ἐσβίσι θεσπιδαῖς πῦρ.  
 ἀπὸ ῥῶον δ' ἄρα κύμα κατέστυτο καλὰ ῥέεθρα.

ἴσασι τυμβοχοῆς ὅτε μιν θάπῃσιν ἄχαιοι,  
 ἢ καὶ ἱπῶρτ' ἀχιλῆϊ κυκώμεν ὅς ὕψοσε θύωρ  
 μορμύρων ἄρῳτε καὶ αἵματι καὶ νικύεσιν,  
 πορφύριον δ' ἄρα κῦμα δι' ἵππετος ποταμοῖο  
 ἵστατ' ἀφρόμενον, καταδ' ἦρει πηλείωνα.  
 ἦρ' ἔδ' ἐμὲ γ' αὔσε περὶ δέισαο' ἀχιλῆϊ.  
 μή μιν ἀποέρσαι μέγας ποταμὸς βαθυδίνης,  
 αὐτίκα δ' ἤφαισον προσεφώνει φίλον ἦδ' ὄν,  
 ὅρσιο κυλλοπόδιον ἱμὸν τέκες ἄντα σέθεν γὰρ.  
 ξάνθον δινήεντα μάχῃ ἠίσκημεν εἴν.  
 ἀλλ' ἐπάμωε τάχιστα πιφάυσκεο δὲ φλόγα πολλήν,  
 αὐτὰρ ἐγὼ βεφύροιο καὶ ἀργέεσσι νόρσι,  
 εἴθ' ἔμ' ἐξ ἀλόθεν χαλεπὴν ὄρσσοι θυίλλαν,  
 ἥκου ἀπὸ βῶων κεφαλὰς καὶ τινύχεα κῆαι,  
 φλέγμα κακὸν φορέεσαι σὺ δὲ ξάνθοιο πατ' ὄχθας  
 δένδρεα κατ', ἱνδ' ἀνὰ νῆϊ πυρὶ, μή δ' ἐσι πάμπαν  
 μαλιχίοις ἐπείεσιν ἀποριπέτω καὶ ἀρῇ,  
 μή δ' ἐπρὶν ἀπόπανι τιδὸν μένος, ἀλλ' ὁπότ' αὖ δ' ἦ  
 φθίγξῃ μ' ἐγὼν ἰάχῃ, τότε χεῖν ἀκαίματον πῦρ.  
 ὣς ἔφαθ'. ἤφαισος δ' ἐκτύσκετο θεσπιδάϊς πῦρ.  
 πρῶτα μὲν ἐν πιδίῳ πῦρ δαίξο κατ' ἐν νικηροῖς  
 πολλοῖς, οἳ ῥα κατ' αὐτὴν ἄλκι' ἔσαν, οὓς κτάν' ἀχιλλεῖν,  
 πᾶν δ' ἐξηράνθη πιδίον, χεῖρ δ' ἀγλαὸν ὕδωρ,  
 ὥς δ' ὅτ' ὁπωρινὸς βορέης νιοαρδ' ἐάλωλ' ὠ  
 αἶψ' ἂν ξηράνῃ, χαίρει δ' ἐμιν ὅς τις ἐθέρῃ,  
 ὣς ἐξηράνθη πιδίον πᾶν, κατ' δ' ἄρα νικηροῖς  
 κῆεν, ὅδ' ἐς ποταμὸν βέβη φλόγα παμφανώσασιν.  
 καίοντο πηλείαι τε καὶ ἰτῆαι, ἠδ' ἐμυρίκαι,  
 καί τις δ' ἠλωτὶς τε ἠδ' ἐθρῶν ἠδ' ἐκύνερον,  
 τὰ περὶ καλὰ ῥέεθρα ἄλκις ποταμοῖο πεφύκει.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

αὐτὰρ τοὶ πυκινῶς ὑποθῆσόμεθ' αἰὶ κε πίθηται  
 μὴ πρὶν παύειν χεῖρας ὁμοῖον πηολέμοιο,  
 πρὶν κατὰ ἱλίοφιν κλυτὰ τεύχεα λαὸν ἑλῶσαι  
 φρικτὸν, ὃς κε φύγησι, σὺ δ' ἐκτοει θυμὸν ἀπύρρατον  
 ἄψ' ὧς νῆας ἱμῶν δίδραμῶν δέ τοι εὖχος ἄρειναι,  
 τῷ μὲν ἄρ' ὧς ἐπόντι μετ' ἀθανάτους ἀπιβήτω·  
 αὐτὰρ ὃ βῆ μέγα γὰρ ῥά θιν' ὠφωϊν ἱφειτμή  
 ἐς πεδίον, τὸ δέ πᾶν πληθὺ ὕδατος ἐκ χυμίνοιο,  
 πολλὰ δ' ἐτεύχεα καλὰ δαϊκταμένωρ αἰΐηδερ,  
 πλῶον κ' ἐνεκυόβ, τῷ δ' ὑφόσιν γούνατ' ἐπὶ δ' αὖ  
 πρὸς ῥόον ἀΐσαντο δ' ἄν' ἰθύν, ὅθι μιν ἔχε  
 οὐρὸν ῥέων ποταμὸς μέγα γάρ θιν' ἐμβαλ' ἀθήνη·  
 ὅθι σκάμανδρ' ἔληγε τινὸν μένος, ἀλλ' ἐπ' ἐμῶν  
 χάσσοι πηλείωνι, κόρυσσι δ' ἐκῶμα ῥόοιο  
 ὑφ' ὅσ' ἀερόμηνε, σιμόωντι δ' ἐκέκλυτ' αὐτοῖς,  
 φίλιν κισσίγηντε δένεον ἀνέρος ἀμφοτέροισι πρὸ  
 εὐμῶν, ἐπὶ τὰ χαῖα ἄστυ μέγα πρῆμα μοιο ἀνακτὸς  
 ἐκπέσσει, φῶδός δ' ἐκατὰ μόθον ἐμῶν κισσῶν,  
 ἀλλ' ἐπάμυνε τολχιστῶν, καὶ ἐμπίπληθι ῥέεθρα  
 ὕδατος ἐκ πηγῶν πλυντας δ' ὀρόθωνον ἐναύλεις,  
 ἴση δ' ἐμὲ γὰρ κῶμα πολλὴν δ' ὀρυγμαδὸν ὄρει·  
 φηδὼν καὶ λάων ἵνα παύσῃμαι ἄρριον ἀνδρα·  
 ὅς δ' ἡνὺν κρατίζει μέμονον δ' ὄγε ἴστα θιοῖσιν·  
 φημί γάρ οὔτε βίω χραισμησέμεν οὔτε τι ἰδὲ  
 οὔτε τὰ τεύχεα καλὰ τὰ που μάλα νηοῖσι λίμνης  
 κῶσιβ' ὑπ' ἱλὺν κεκαλυμμένα καὶ δέ μιν αὐτῶν  
 εἰλύσω φαρμαθοῖσιν, ἅλῃς χερσὶν περικυίας  
 μυρίον, ὅθι οἱ ὅς ἐπὶ πηδύοντα ἄχαιοί,  
 ἀλλ' ἔξαι τόσσων οἱ ἄσιν καθύπερθε καλύψω·  
 αὐτῶν οἱ καὶ σῆμα τετεύξεταί, ὅθι π' ἐμιν χρεῖ



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ.

ἦ, καὶ ἀχιλλεύς μῦν δ' ἐκλυτοὺς ἐνθορε μέσῃ  
 κρημνὺς ἀπαΐσων, ὅδ' ἀπίσυντο οἷδ' ἄνδ' ὅρων,  
 πάντα δ' ὅεινε ῥέεθρα κυκώμην. ὣς εἰς ἡνερπὺς  
 πολλὰς, οἳ ῥά κατ' αὐτὸν ἄλλος ἔσσω, οὐκ ἐκτάν' ἀχιλλεύς  
 τὸς ἐκβαλλε θύραζε μινυκῶς, ἥντι ταῦρος  
 χόρῳ δὲ. ἴσως δ' ἔσσω κατὰ καλὰ ῥέεθρα  
 κρύπτον ἐν δίνῃσι βαθείῃσι μὲγαλῃσι.  
 δ' ἄνδ' ὅδ' ἀμφ' ἀχιλλῆα κυκώμην ἴστατο κύμα,  
 ὦθ' ὅδ' ἐν ἀκίῃ πίπῃων ῥόος, οὐδ' ἐπὶ δ' ἔσσω  
 εἴχε σπρίξασθαι, ὅδ' ἐπ' ἡλίου ἔλκε χόρῳ  
 εὐφύειά μιν ἀλλω, ὅδ' ἐκ ῥέεθρον ἔειπεν  
 κρημνὸν ἀπῶντα δ' ἴδων, ἐπ' ἄχ' ὅδ' ἐκ καλὰ ῥέεθρα  
 ὅσοισι πυκνοῖσι, γλυφύρῳ δ' ἐμιν αὐτό,  
 εἴσω πᾶσ' ἔειπεν, ὅδ' ἄρ' ἐκ λίμνης ἀνορούσας,  
 ἦϊξεν πινύοιο ποσὶ κραιπνοῖσι πίτιναι  
 δ' ἔειπεν, οὐδ' ἐπ' ἔλκε μιν ἀλλω, ὅδ' ἐπ' αὐτῷ  
 ἀκροκελαινίσων, ἵνα μιν παύσῃ πόνοιο  
 δ' ἴδων ἀχιλλῆα φῶσιν ἡλίου ἄλλω,  
 πηλείδης δ' ἀπόρυσεν ὅθ' ἐπ' ἴδων ἐρῶν  
 αἰετὺς οἷματ' ἔχων μέλου. ὅθ' ἐπ' ἡρητῆρ.  
 ὅθ' ἄμα κάρπισός τε καὶ ὠκιστος πετεινῶν,  
 ὅθ' ἐκὼς ἦϊξεν, ἐπ' ἡλίου δ' ἐκ καλὰς  
 σμυρδαλίου κενάβειν ὑπαιθα ἡ τοῖο λιαδίου  
 φῶν, ὅδ' ὅπιδι ῥέων ἔπρω μιν ἀλλω ὀρμητῆρ.  
 ὅθ' ὅτ' ἀνὴρ ὀχρητῆρ ἀπὸ κρήνης μελαινύδης  
 ἀμφυτὰ καὶ κήπας ὕδατ' ὅθ' ὅθ' ἡλμονεύς,  
 χόρσιν μιν ἀλλω ἔχων ἀμάρης δ' ἐξ ἔχματα βάλλων  
 τῷ μιν τε προρίοντ' ὑποφῆφιδις ἀπασαι  
 ὀχληῦνται, τὸ δ' ἐπ' ὅθ' κατὰ βόμῳ κλαρύει  
 χόρσιν ἐπ' ἡλίου, φθάνει δ' ἐπ' ἡλίου τὸν ἀγόντα.



τὸν μὲν ἄρ' ἐγχεύεις τε καὶ ἰχθύς ἀμφιπέπονθε  
 δὴ μὲν ἐρεπόμενοι ἐπινεφρίδιοι κείροντόδε.  
 αὐτὰρ δ' ὁ βῆ ῥ' ἵνα μετὰ παίονας ἵπποχαρυσά,  
 οἱ ῥ' ἐπὶ πὰρ ποταμὸν πεφοβύλαθ' εἰνέεσσαν,  
 ὡς εἶδον τὸν ἄεισον ἐνὶ κρατορῇ ὕσμινῃ  
 χερσὶν ὑπο πηλείδαο καὶ ἄοι ἴφι δαμέντα,  
 ἐνθ' ἔλε θερσίλαχόν τε μύδωνά τε ἀστυπυλὸν τε  
 μνηστὸν τε θράσιόν τε, καὶ αἰνιον ἠδ' ὀφίεσσαν,  
 καὶ νύκ' ἐπὶ πλείονας κτάνι παίονας ὥκυσ ἀχιλλεύς.  
 εἰμὶ χασάμηνθ' προσέφη ποταμὸς βαθυδίνης,  
 ἀνείεσάμηνθ' βαθύης δ' ἐφοβύλαθ' δίνης,  
 ὦ ἀχιλλεῦ, πῆρι μὲν κρατίης πῆρι δ' αἴσυλα ῥέει  
 ἀνδρῶν, αἰεὶ γάρ τοι ἀμύνεσι θεοὶ αὐτοί,  
 εἴσοι βῶας ἔδωκε χρόνῳ παῖς πάντας ὀλέσσει,  
 εἴξ' ἐμῶν γ' ἐλάτεις πεδίον κατὰ μόρμόρῃα ῥέει.  
 πλῆθει γάρ δ' ἡμοὶ νικῶν ἐρατὴν ἄρ' εἰθεῖα  
 οὐδέ τι πῇ δύνάμει προχέειν ῥέον ἐς ἄλλα δῖον  
 σφινόμηνθ' νικύεσσι, σὺ δ' κτείνεις αἰδ' ἡλως.  
 ἀλλ' ἄγε δὴ καὶ ἔαθ' ἀγῆμι' ἔχει ὄρχαμι λαῶν.  
 Τόν δ' ἀπαμειβόμενθ' προσέφη πόδας ὥκυσ ἀχιλλεύς.  
 ἔσαι ταῦτα σκάμουσθ' διοφειῖς ὡς σὺ κελούης,  
 βῶας δ' οὐ πρὶν λήξω ὑπερφιάλεις ἐναρίζων.  
 σπῆν' ἔλασε κατὰ ἄστυ καὶ ἔκβει πφρηθῆναι  
 ἀνελβίλω κέν με δαμάσσεται, ἥ κεν ἐγὼ τόν.  
 ὣς ἐπὶ δὴ βῶας ἐπίστυλ' δαίμονι ἴσος,  
 καὶ τότε ἀπόλλωνα προσέφη ποταμὸς βαθυδίνης,  
 ὦ πόποι ἄργυρότοξ' εἰδὸς τέκος οὐ σύ γε βέλτερος  
 εἰρύσαιο κρονίανος ὅτοι μάλ' ἀπὸ πολλ' ἐπίτελλεις,  
 βῶσ' ἡγεῖσάμην καὶ ἀμύνειν, εἰσέσκεν ἔλθῃ  
 δειλὸς δ' ἐπὶ δυνάμει σκιάσῃ δ' ἐρίβωλον ἄρ' ἔραται.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Πηλεΐδης δ' ἄορ ὄξυ ἱρυσάμεν παρὰ μῆρ' ὅ  
 ἔλτ' ἐπὶ οἱ μεμαώς, ὃ δ' ἄρα μελίῳ Ἀχιλῆϊ  
 εὐδύνατ' ἐκ κρημνοῖο ἐρύσαι χεὶρὶ παχείῃ,  
 ῥίς μιν μιν πελὶ μίξιν ἱρὸν αἰών,  
 ῥίς ὃ μεθήκε βίην, τὸ ὃ τίταρτορ ἦθελε θυμῷ  
 ἄξαι, ἐπιγνάμψας ὄρου μέλινον ὠακίδας  
 ἀλλὰ πρὶν Ἀχιλῆος χεῖρ' ὅσοι θυμὸν ἀπνύει,  
 γαστέρα γάρ μιν τύψει παρ' ὀμφαλὸν, ἐκ δ' ἄρα πᾶσά  
 χυθὲ χαμαὶ χολάδις, τόνδε σκοτ' ὅσας κάλυψεν  
 ὠακιδῶν τ', Ἀχιλῆος δ' ἄρ' ἐνὶ σήθεσιν ὀρούσας  
 τούχια τ' ἐξινάειξιν καὶ δὴ χόμῳ ἔπος ἔσθαι.  
 Κεῖσ' οὕτω, χαλεπὸν τοι εἰδένεσθαι χρονίων  
 παισὶν εἰς ἑμῶν ποταμοῖο περὶ κρηναῖται.  
 φῆδ' αὖ σὺ μὲν ποταμὸν γένος ἑμῶν εὐρὺ ῥέοντα  
 ὠτὲρ ἰγὼ γυνήν μεγάλην Διὸς εὐχραιεῖν,  
 τίκτεμ' ἀνὴρ πολλοῖσιν ἀνάσσειν μυρμιδόνεσσι,  
 Πηλῆος ὠακίδης, ὃ δ' ἄρ' ὠακὸς ἐκ Διὸς ἦν,  
 ἔσθ' κρείων μὲν ἴδους ποταμῶν Ἀλφειύωντων,  
 κρείων δ' αὖτε Διὸς γυνὴ ποταμοῖο τίτυκται.  
 καὶ γὰρ σοὶ ποταμός γε μέγας πάρα, εἰ δύναιταί τοι  
 χρασμεῖν, ἀλλ' οὐκ ἔστι Διὶ χρονίῳ μάχεσθαι,  
 ἔσθ' οὔτε κρείων Ἀχιλῆος ἰσθ' ἀρίστος.  
 οὐδ' ἐβαθυρρέταο μέγα δίνος ὠκεανοῖο,  
 ἔξ οὔ περ πάντες ποταμοὶ καὶ πᾶσαι θάλασσαι  
 καὶ πύσαι κρήναι καὶ φρεῖατα μακρὰ νάεσιν,  
 ἀλλὰ καὶ ὃς Διὸς Διὸς μέγαςιο κέραυνόνε  
 θεοὶν τε βροντῶν, ὅτ' οὐρανὸν σμαραγδήσει,  
 ἦ ῥά, καὶ ἐκ κρημνοῖο ἐρύσας χάλκιορ' ἔγχεσ,  
 τὸν ὃ καταπύθει λείπην ἐπὶ φίλῳ ἦτορ ἀπνύει  
 κέκμητον ἐν ταμῶσι, δίκαιε δὲ μιν μέλινον ἔσθαι.

πρὸς βυτάτη, τῇ γὰρ ῥα μίγῃ πωταμὸς βαθυδίνης,  
 τοῖ δ' ἀχιλλεύς ἐπόρουσεν ὅδ' αὐτίος ἐκ ποταμοῖο  
 ἔση ἔχωρ δ' ὕο δ' ἔρε, μίνῳ δ' εἰ ἐν φρεσὶ θῆκε  
 ξάνθος, ἐπὶ κεχόλωθ' ἀϊκταμέων ὠϊήων,  
 τὺς ἀχιλλεύς ἐδάϊξε κατὰ ῥόον οὐδ' ἐλίσσεν  
 εἰδ' ὅτι δ' ἡ χιὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντοδ',  
 τὸν πρότορος προσέειπε πεδάρκης δ' ἴος ἀχιλλεύς,  
 τίς πόθεν εἰς ὠδρῶν, ὅ μιν ἔτλης ἀντίῳ ἐλθεῖν;  
 δυσήνων δ' εἰ τε παῖδες ἐμῷ μένει ὠκυόσσι.

Τὸν δ' αὖ πηλεῖδ' ὅν' προσεφώνε φαίδιμ' ἦοι,  
 πηλεΐδ' ημεγάθυμε, τίη γυνὴν ἱρεΐνεις,  
 αἶμ' ἐκ παιονίης εἰβώλῃ τηλόθ' ἰουσίης,  
 παίονας ἀνδρας ἄγων δολιχιγχείας, ἔδ' εἰ μοι νῦν  
 ἔως ἐνδεκάτῃ ὅτ' εἰς Ἴλιον ἐλθὺνθα  
 αὐτὰρ ἐμοὶ γυνὴ ἐξ ἀξίῃς εὐρὺ ῥέοντ' ὅ.  
 ἀξίῃς, ὅς κάλλιστον ὕδωρ ἐπὶ γαῖαν ἴησι,  
 ὅς τέ κε πηλεῖδ' ἀνὰ κλυτὸν ἔγχεϊ, τόνδ' ἐμὲ φασὶ  
 γένεσθαι, νῦν δ' αὖτε μαχώμεθα φαίδιμ' ἀχιλλεύ.

Ὡς φητ' ἀπειλῶν, ὅδ' ἀνέχετο δ' ἴος ἀχιλλεύς  
 πηλιάδα μελίῳ, ὅδ' ἀμαρτῇ δούρασιν ἀμφὶ  
 ἔρωσ' ἀεεροπαῖος ἐπὶ πόρῳ ἐξίος ἦν,  
 καὶ ῥ' ἐτέρῳ μ' ὀδρὶ σάκος βάλεν, οὐ δ' ἐσχετο  
 ῥῆξ' ἐσάκος, χρυσὸς γὰρ ἐρύκακε δῶρα θεοῖο.  
 τοῖ δ' ἐτέρῳ μιν πῆχυν ἐπιγράβδ' ἰω βάλε χροῖς  
 δειξιτορῆς, σῦτο δ' αἶμα κελαινεφές, ἦδ' ὑπὲρ αὐτῆς,  
 γαίῃ ἐνισέεικ' ὀλοαυμένην χροῖς ἔσαι,  
 δῶτορος αὐτ' ἀχιλλεύς μελίῳ ἰθὺ πῆλ' ὠνα,  
 ἀεεροπαῖς ἐφῆκε κατακτάμεναι μνηκείων,  
 καὶ τὸ μὲν ῥ' ἀφωμαρτεν, ὅδ' ὑψηλὴς βάλεν ὄχθῳ  
 μεσοπαγίς δ' ἄρ' ἔθηκε κατ' ὄχθης μέλινον ἔγχεϊ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἢ ὃ γὰρ δὲ βαλὼν, ἢ ἀπὸ νευρῆφιν οἶσε.

Ως φάτο, τῷ δ' αὖ τῷ λυτο γούνατα καὶ φίλον ἦτορ.  
 ἔρχοι μὲν ῥ' ἀφ' ἡκεν, ὅδ' ἔφρα χεῖρε πιτύσας  
 ἀμφοτέρω ἀχιλῶνς ὃ ἱρυσάμην· ὅξιος δ' ἐστὶ  
 τυτὴ κατὰ κληῖδ' παρ' αὐχένα, πᾶν δ' ἐοῖσιν  
 δὴ ξίφος ἀμφηκας, ὅδ' ἄρα πρηνὴς ἐπὶ γαίῃ  
 κείτο ταθείς, ἐκ δ' αἶμα μέλαινα ῥέει, λίπ' ὃ γούνα.  
 τὸν δ' ἀχιλῶνς ποταμόν δ' ἐλαβὼν ποδῶς, ἔκει φέροντα  
 καὶ δὲ ἐπενχόμεν· ἔπειτα πῆδόν τ' ἀγρόδον,  
 ἐνταυθοῖ νῦν κίισο μὲν ἰχθύσιν, οἱ σ' ὠτ' ἄλλης  
 αἰὲς ἀπολιχμύθονται ἀκηδέες, οὐδ' ἐσὶ μήτηρ  
 ἐνθιμὴν λελίχωνι γοήσεται, ἀλλὰ σκάμου φθοῶς  
 οἶσθαι δινῆες, ἔστω ἄλδος εὐρία κόλπον,  
 θρώσκων τίς κατὰ κῦμα μέλαινα φέρῃ· ὑπαίξας  
 ἰχθύς ὅσκι φάγησι λυκάον· ἀργεῖα δὲ μὲν  
 φθέρει δ' ἐσέκεν ἄστυ κίχτιον ἰλίῃ ἱρήῃ  
 ὑμεῖς μὲν φνύγοντες ἐγὼ δ' ὀπίθην κόραϊζων,  
 οὐδ' ὑμῖν ποταμός περ ὑέρος ἀργυροδίνης  
 ἀρκέσει, ὡς δ' ἴδ' ἴθα πολλύς ἐφ' ἑνὶ τεταύρῃ,  
 ἴδους δ' ἐν δίνῃσι καθεύδει μώνυχας ἵππους·  
 ἀλλὰ καὶ ὡς ὀλέεσθαι κακὸν μόρον ἐσέκε πάντες  
 τίσι τε πατρόκλοιο φόνον, καὶ λαγὼν ἀχαιῶν,  
 οὐς ἐπὶ νηυσὶ θοῆσιν ἐπέφνετε νόσφιν ἐμεῖο.  
 Ως ἄρ' ἔφη, ποταμός ὃ χολώσθαι κηρόθι μάλλον.  
 ἔρμηνεν δ' ἀνὰ θυμὸν ὅπως παύσθαι πόνοιο  
 εἶπον ἀχιλλῆα, βῶναι ὃ λαγὼν ἀλάλχει,  
 τόφρα ὃ πηλῆος ἑλὸς ἔχων δολιχόσκιον ἔρχοι·  
 ἀσπεροπαῖδ' ἱππῶν κατὰ μέλαινα μινεαῖον  
 ἡϊππὶ πηλῶν· τὸν δ' ἄξιός ἐφ' ὑφ' ἑσθλός  
 γήραθ' καὶ πόρ' ἰβόα ἀκιδάμοιο θυγατρὶ

μοῖρ' ὀλοῦ· μίλλω περ ἀπὲρ χθεῖναι δ' ἢ παρὶ,  
 ὅς με σοι αὐτὶς ἴδωκε μινωθάδιον δ' εἰ μὲν μήτηρ  
 γένετο λαοθόη, θυγάτηρ ἄλταο γέροντ'·  
 ἄλθαω δ' εἰς λιλήγασσι φιλοπτόλεμοισιν ἀνάσσει,  
 πηδῶτασιν ἀπήλασαν ἔχων, ὕπὸ σατνιόυνη,  
 τῷ δ' ἔχει θυγάτηρα πρίαμ'· πολλὰ δ' εἰ καὶ ἄλλα,  
 τῆς δ' ὅν' οὐ γινόμεναι, σὺ δ' ἀμφω διαροῖς μέσσης,  
 ἥτοι τὸν πρῶτόισι μετὰ πρυλίσσι διαμάσσει  
 ἀντίθεον πολυδωρον ἐπεὶ βάλλει ὄξει δαρὶ  
 νῦν δ' εἰς ἐνθάδε μοι κακὸν ἔσσεται· οὐ γὰρ οἶω  
 σὰς χεῖρας φεύξειναι, ἐπεὶ β' ἐπέλασσε γὰρ δαίμων  
 ἄλλο δ' εἰ τοι ἔριω, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλει σῆσιν  
 μή με κτεῖν' ἐπὶ οὐχ' ὁμοχάσσει· ἐκβρός ἐμὲ,  
 ὅς τοι ἱταῦρον ἐπέφνην ἰνὴν ἅ τι κρατὸς ὀρεῖ.

Ὅς ἄρα μιν πρίαμοιο, προσκύνει φαιδίμ' ἡδύς·  
 λιαρόμην' ἐπέειπεν, ἀμείλικτον δ' ἔπ' ἄκυσεν,  
 νύπτε, μή μοι ἀποινα πιφάνσκω μὴδ' ἀζόρευι  
 σπῆρ' ἢ γὰρ πάροκλον ἐπισπεῖν μόρσιμον ἤμαρ,  
 τόφρα τί μοι πεφιδέωμαι ἐνὶ φρεσὶ φίλτορον ὕιν,  
 βῶων, καὶ πολλὰς ῥυτίδας ἡδ' ἐπέρασσε,  
 νῦν δ' οὐκ ἔω· ὅς τις θάνατον φύγῃ ὅρκει θεός γε  
 ἰλίε' προπάρουθεν ἱμῆς ἐν χερσὶ βάλλῃσι  
 συμπάντων βῶων πέει δ' αὖ πρίαμοιό γε παίδων·  
 ἀλλὰ φίλος θάνει καὶ σὺ, τὴν ὀλοφύρεαι αὐτῶς,  
 κατθανεῖ καὶ πάροκλος, ὃ περ σίω πολλὸν ἀμείνων  
 οὐχ' ὁράας οἶος κατὰ καλὸς τι μέγας τε,  
 πατὴρ δ' ἐμὲ ἀγαθοῖο, θεὸς δ' ἐμὲ ἱγίνατο μήτηρ·  
 ἀλλ' ἐπὶ τοι καὶ μοι θάνατ'· καὶ μοῖρα κραταῖη  
 ἔσσεται, ἢ ἥδ' ἢ δαίμων, ἢ μίθρ' ἤμαρ,  
 ἐπὶ οἷς τις καὶ ἐμεῖο ἔχρ' ἐκ θυμὸν ἔλκεται,



# Ι Λ Ι Δ Ο Σ.

Ἰχθύες δ' ἄρα ἐπιπρὸς ὄν μεγαλύτορα θυμόν,  
 ὧ πόποι ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὀρῶμαι.  
 ἦ μάλα δ' ἡ βῶϊς μεγαλύτορες οὖς περ' ἐπιφρονι  
 αὐτίς ἀνασύνθεται ὑπὸ ῥόφῳ ἡδρόντ'·  
 οἶον δ' ἡ καὶ ὅδ' ἦλθε φυγῶν ὑπονηλὺς ἡμάρ.  
 λῆμνον ἰς ἠγαθίῳ πιπρηνμένον, οὐδ' ἐμν' ἔχει  
 πόντ'· ἀλὸς πολλῆς δ' πολλοῖς αἰχνοῦσας ἱρύκα.  
 ἀλλ' ἄγε δ' ἡ καὶ δ' ἄρ' ὁ ἀκακῆς ἡμιτέρου  
 γαύσιται, ὅφρα ἴδωμαι ἐνὶ φρεσὶν ἡδ' ἐσθλῶ.  
 ἦ ἄρ' ὁ μὲν καὶ κίθιν ἱλύνεται ἤμιρ ἱρύκα  
 γὰρ φυσίβοις, ὅτι κατὰ κρατὸρ' ὄν περ' ἱρύκα,  
 ὡς δρμῶνι μένων, ὃ δ' ἐδ' ὁ χιτῶν ἦλθε τιθηπὸς  
 γούνων ἄτακται μιμαδὸς, πῖα δ' ἔθιλε θυμῷ  
 ἐκφυγῆν θάνατόν τε κακὸν καὶ κῆρα μέλαιναν,  
 ὅτοι δ' μὲν ὄφρ' ὁ μακρὸν ἀνέχετε δῖος ἀχιλλεύς,  
 οὐτά μιν μιμαδὸς, ὅδ' ὑπέδραμε καὶ βάλε γούνων  
 κούρας, ἐγχείηδ' ἄρ' ὑπὲρ νώτο, ἐνὶ γαίῃ  
 ἔση ἱμῖν χροὸς ἀμυδρῶν ἀνδρομέοιο,  
 αὐτὰρ δ' τῇ ἑτέρῃ μὲν ἰλῶν ἱλίσσῳ γούνων.  
 τῇ δ' ἑτέρῃ ἔχειν ἔχρος ἀκαχμένον, οὐδ' ἐμν' ἔχει  
 καὶ μιν λισσόμενον· ἐπὶ αὖ πῶς ὄντα προσήδ' αἶ.  
 γυνεμαί σ' ἀχιλλεὺς σὺ δ' ἐμ' αἶδ' αἶ καὶ μ' ἱλύνθην  
 ἀντί τοι ἐμ' ἰκίταο διοτρεφὺς αἰδοίοιο.  
 παρ γὰρ σοὶ πρῶτ' ἀσάμῳ δημήτρος ἀκτῆν  
 ἔμαθ' ὅτ' ἐμ' ἱλὺς ἐκκλήμην ἔν' ἀλῶν,  
 καὶ μ' ἐπὶ ῥακας ἀνέστην ἄγαν παρὸς τι φίλῳ τι,  
 λῆμνον ἰς ἠγαθίῳ ἱκατόμβοιον δ' ἐπὶ ἡλφον,  
 νῦν δ' ἐμ' ἱλύνθην τὸς τόσους πορῶν, ἡδ' ἐμ' ἱλύνθην  
 ἡδ' ἐμ' ἱλύνθην, ὅτ' ἐμ' ἱλύνθην ἐλλήλθην  
 πολλὰ παθῶν, νῦν δ' ἐμ' ἱλύνθην ἐν χερσὶν ἑσθλῇ

φεύγοντος πιμπλάσι μυχὸς λιμὲν ὅτ' εὐόρμυ  
 διψιδίοτος, μάλα γάρ τε κατιδίε ὅρ' κε λάβησαν  
 ὡς βῶε ποταμοῖο κατὰ δ' αἰνοῖο ῥέεθρα,  
 πῖπασον ὑπὸ κρημνὺς, ὅδ' ἐπὶ κάμῃ χεῖρας ἱναίρων.  
 Ἰωὺς ἐκ ποταμοῖο δυνώδεια λείξατο κύρυν,  
 ποινὴν παφρόκλοιο μῆμοι ἀάδαο θωόντ' ὅτ'  
 τὺς ἐξῆγε θυράζει τιθηπότας ἡῦτε νεβρούς,  
 δῆσε δ' ὀπίσσω χεῖρας ἐὺτ' ἐμύθεισι ἱμάσι,  
 τὺς αὖτοι φορέεσκον ἐπὶ σρεπτοῖσι χιτῶσι.  
 δῶκε δ' ἱταίροισιν κατὰ γὰρ καίλας ἐπὶ νῆας.  
 αὐτὰρ ὁ, ἅψ' ἐπόρυσσε κατακτάμεναι μῆμαίαν,  
 ἐνθ' ἦεν ἡριάρμοιο σωμήντης διαρδανίδιο  
 ἐκ ποταμῷ φεύγοντι λυκάονι, τὸν ῥά ποτ' αὐτὸς  
 ἦγε λαβῶν ἐκ πατρὸς ἀλωῆς οὐκ ἐθέλωντα  
 ἐννύχιος προμολῶν, ὅδ' ἐλευθὸν ὀξείῃ χαλκῷ  
 τάμνει νέεσ' ὀρπηκας, ἵν' ἄρματ' ἄντυγας ἦεν.  
 τῷ δ' ἄρα νῶϊσιν κακὸν ἔλυθε δῖος Ἀχιλλεύς,  
 καὶ τότε μὲν μιν λῆμνον ἐὺκνήμεναι ἐπέρησε  
 νηυσὶν ἄγων, αὐτὰρ ἦρ' ἐπ' ἰήθνος ὤνον ἰδῶκε.  
 κειθὲν ᾧ ξενὸς μιν ἐλύατο, πολλὰ δὲ δῶκεν  
 ἱμβραὶ ἠετίων, πέμψεν δ' ἐς δῖον Ἀρίσβην.  
 ἐνθ' ἦν ὑπὸ κρημνῶν, παρῶϊον ἱκτοῖο δῶμα.  
 ἰνδία δ' ἤματα θυμὸν ἐτορπύζοντο φιλῶσιν,  
 ἐλθὼν ἐκ λήμνοιο, δυνώδεια δὲ μιν ἄνυπς.  
 χερσὶν Ἀχιλλῆος θεὸς ἱμβάλεν ὅς μιν ἱμέλλει  
 πέμψαν ἀΐδαι, καὶ οὐκ ἐθέλοντα νείεσθαι.  
 τὸν δ' ὡς ὤω ἐνόησε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 γυμνὸν ἄτρ' κόρυθός τε καὶ ἀσπίδος οὐδ' ἔχεν ἔγχος  
 ἀλλὰ τὰ μὲν ῥ' ἀπὸ πάντα χαμαὶ βάλε, τεῖρε δ' ἰφθίμῳ  
 φεύγοντ' ἐκ ποταμῷ, κάματ' ὅτ' ὑπὸ γούνατ' ἰδῶμενα.

ΙΛΙΑΔΟΣ. Φ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Φι μόθος εὐακίδας παρ' ἡϊόνας ποταμοῖς.

Δλ' ὅτε δὴ πόρον ἶξον ὑρρύνῃ  
ποταμοῖο

ξάνθος δινήντ', ὃν ἄθλωντ'  
τίκτο ἰδύς,  
ἦνθα διατμήξας τὺς μὲν πιδί  
ονδὶ διώκει

πρὸς πόλιν, ἣ περ οἱ ἄλλοι ἀτυζόμενοι φοβέοντο  
ἤματι τοῦ προτέρω, ὅτε μαίνετο φαίδιμος Ἴκτωρ,  
τῇ δ' οἱ γὰρ προχέουσι πεφυζότες, ἥ ἑρα δ' ἦν  
πίτνα πρόδι βαθεῖαν ἐρυκέμην, ἡμίσεις δ'  
εἰς ποταμὸν ἐλύνοντο βαθυρροὺς ἀργυροδίπλω,  
ἦν δ' ἔπειθ' ἐπὶ μέγαλ' ἑσπέρῳ· βράχε δ' αὖτ' ῥέεσκε  
ὄχθαι δ' ἀμφὶ περὶ μέγαλ' ἴαχον οἶδ' ἀλαλητῶ  
ἔννεον ἦνθα καὶ ἦνθα, ἱλίας ὅμιλοι κατὰ δίνας,  
ὥς δ' ὅθ' ὑπ' αἰπῆς πυρὸς ἀκρίδης ἠερέθοντα  
φευγέμεθα ποταμόνδε, τὸ δ' ἐφλέγει ἀκάματον πῦρ  
ὄρμητον ἐξαίφνης, ταὶ δ' ἐπ' ὤχεσσι καὶ ὕδαρ,  
ὥς ὑπ' ἀχιλλῆος ξάνθος βαθυδινήντ'  
πληθὺς ῥόος κιλιάδων ἐπιμίξ', ἵππων τε καὶ ὠνδρῶν,  
ὧν τὰρ δ' διογενὴς, σῆρυ μὲν λίπιν ὧν τ' ἐπ' ὄχθαις  
κεκλιμένον μυρίκῃσιν, ὅδ' ἐκθορε δαίμονι ἴσος  
φάσγανον οἷον ἔχων, κακὰ δ' ἐφρεσὶ μῆδεσσι ἔργα,  
τύπτε δ' ἐπιστροφάδων τῶν δ' ὀνόος ὦρνυτ' ἀεκέας  
ἄσπεθ' ἀνομόνων, ἐρυθαίνετο δ' αἵματι ὕδαρ.  
ὥς δ' ὑπὸ δολφίνος μεγακῆτις ἰχθύς ἄλλοι

πύξ, ἀπὸ δ' ἄρματ' ὦσε, κυκλόσσαν δ' οἱ ἵπποι  
 ὧς δ' ἀναμαιμάτ' βαθεί' ἀγκυα θεσπιδαῖς πύρ  
 θυρεος ἀλίοιο βαθεία δ' καίεται ὕλη.  
 πάντῃ τε κλονέων ἀνεμος φλόγα ἐλυφάτῃ,  
 ὧς ὅγ' πάντῃ θύνει σὺν ἑρχί' δαίμονι ἴσος,  
 κτφνομένους ἐφέπων, ῥίει δ' αἶματι γαῖα μέλαινα,  
 ὧς δ' ὅτι τις βούσ' ἄρσιναις ὑρυμετώπης,  
 τειβέμεναι κρῖ λευκὸν ὑβροχάλῳ ἐν ἀλώῃ,  
 ῥίμφα τε λείπ' ἐγένοντο βοῶν ὑπὸ πόσ' ἐιμύκων,  
 ὧς ὑπ' ἀχιλλῆος μεγαθύμου μώνυχες ἵπποι  
 στίβον δ' ἄν' ἐκνέσσει, καὶ ἀσπίδας, αἶματι δ' ἄξων  
 νέρθεν ἅπας πεπτάλακτο, καὶ ἀντηγχεσθ' περὶ δίφρον,  
 ὧς ἄρ' ἄφ' ἱππέων δ' πλείων ῥαθάμιγγες ἔβαλλον,  
 αἶτ' ἄπ' ἐπιπώρων δ' οἱ ἴσον κῦδος ἀρέδαι,  
 πηλείδης λυθρῶ δ' ἐπαλάατ' ὅσοι χεῖρας ἀάπηες.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Φ. ΟΜΗ  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ωρῶν ἐς δύο διαμεθεῖνται μέρη, τοὺς μὲν  
 ἐς τὴν πόλιν, τοὺς δ' ἐς τὸν σκάμασθον.  
 ἀχιλλεύς διώκει, καὶ διακλύει νεανίας ἰωφύ  
 ἐς ποινὴν παρόκλη, αὐτὸς δ' ἐλκεῖ τὸν πρίαμν καὶ  
 ἀσπεροπαῖον ἀνικεῖ, ἔπειτα τὸ ποταμὸν πλημμυρῶν  
 κινδυνεύοντα αὐτὸν σώζει ἥφαιστος, ἐμπερύει τὸν πο  
 ταμὸν καὶ τὸ πεδίον, μετὰ ταῦτα θείων μάχη γίνεται  
 πρὸς ἀλλήλους. ἀχιλλεῖα δ' ἐπὶ πολλῶν ἔργει ἀγένοε  
 ὁμοιωθεὶς, καὶ φευγῶν ἐξαπατᾷ, ἕως οἱ ῥῶες διασώ  
 ζονται ἐς τὴν πόλιν.

ἄσπορ ἰθὺς κε θάσπορ ὀλίθου πέτρας ἴκηαι.

Τόν δ' οὐ ταρβήεις προσέφη κερυθαίολος ἔκτορ.

πηλείδῃ μὴ δ' ἡμ' ἐπέεσσιν ἐνὶ πύποι ὦς.

ἔλπεο δ' ἐδίδεσθαι, ἐπὶ σάφα οἶδ' αὖ καὶ αὐτός

ἢ μ' κερτομίας, ἢ δ' ἄστυλα μυθήσασθαι,

οἶδ' αὖ δ' ὅπ' σὺ μὲν ἐδολός, ἐγὼ δ' ἐσέθην πολὺ χεῖρων.

ἀλλ' ἦτοι μ' ταῦτα θεῶν ἐργαίνεσσι κεῖται.

αἶκι σε χερότερός ποδῶν ἀπὸ θυμὸν ἔλωμαι

δυσρὶ βαλὼν, ἐπεὶ καὶ ἐμὸν βέλος ὀξύ πωροίθην.

ἢ ῥά, καὶ ἀμπεπαλὼν προΐει δόρυ, καὶ τόγ' ἀθήνη

πνοιῇ ἀχιλῆος πάλιν ἔραπε κυδαλίμοιο

ἔκα μάλα φύξασθαι, τὸ δ' ἄψ' ἴκεθ' ἔκτορα δῖον,

αὐτὲς δ' ἐπροπάροιθε ποδῶν πέσιν, αὐτὰρ ἀχιλλεύς

ἰμυιμαῶς ἐπόρουσε κατακτάμεναι μνηστῆρων

σμερδαλία ἰάχων, τὸν δ' ἐξήρταξεν ἀπόλλων

ῥῖτα μάλ' ὥς τε θεὸς ἐκάλυψε δ' ἄρ' ἦεν πολὺν,

ῥίς μ' ἔπειτ' ἐπόρουσε ποδάρεκς δῖος ἀχιλλεύς

ἔγχυ' χαλκείῳ, ῥίς δ' ἦεν τύψε βαθεῖον,

ἀλλ' ὅτε δ' ἡ τὸ τέταρτον ἐπέστυβ' δαίμονι ἴσος,

δηνάδ' ὁμοκλήεις ἔπειτ' ἐπείοντα προσηύδα.

ἔξ' αὖ νῦν ἐφυγες θάνατον κύον, ἦ τί τοι ἄγχι

ἔλθεις κακόν, νῦν δ' αὖ τί σ' ἐρύσσοτο φοῖβος ἀπόλλων

ἢ μέμεις εὐχεσθαι ἰὼν ἐς δ' ἔσπορ ἀκόντων,

ἢ θῆν' σ' ἐξουνοῖα καὶ ὕπερον ἀντιβολήεις,

εἴπῃ τις καὶ ἔμοιγε θεῶν ἐπιτάξεσθός ἐστι

νῦν δ' ἄλλος πῶον ἐπικέσσομαι ὅρκε κιχέει.

ὣς ἐπὶ δ' ἔστυβ' οὗτα κατ' αὐχίνα μέσσορ ἄκρον.

ἦεπε δ' ἐπροπάροιθε ποδῶν, ὁ δ' ἐπὶ τὸν μὲν ἔασι.

δημῶρον δ' ἐφιλητορίδω ἥϊον τε μέγαν τε

καγγόνου δυσρὶ βαλὼν ἠρύκακε, τὸν μ' ἔπειτα



# ΙΛΙΔΟΣ.

ἄχμῃ ἱεμίνῃ ῥῆξ ὀσίον, ἐγκέφαλος δὲ  
 ἔνδορ ἄπας πεπτάλας, δάμασι δὲ μιν μιμάσσει,  
 ἱποδάμωτα δ' ἔπειτα καὶ ἵππων αἰσονται  
 πρόωκον ἔθιν φεύγοντα, μετὰ φρενον οὔτασ' ἔχοντι.  
 αὐτὰρ ὁ θυμὸν αἰεὶ καὶ ἔρυν, ὥς ὅτε ταῦρ  
 ἔρυν ἱλκόμην ἑλικώνιον ἀμφὶ ἀνακταί,  
 κούρων ἱλκόντων γάνυται δὲ τι τοῖς ἐνοσίχθων.  
 Ὡς ἄρα τὸν γ' ἐρύγοντα λίπ' ὀσία θυμὸς ἀγένηρ  
 αὐτὰρ ὁ βῆ σὺν δαίρι μετ' ἀντίθεον πολυδύωρον  
 πριαμίδῳ, τὸν δ' οὐ π πατὴρ εἶασκε μάχεσθαι,  
 οὐνεκα οἱ μετὰ πᾶσι νέωτατ' ἔσκει γόνειο,  
 καὶ οἱ φίλτατ' ἔσκει, πύδισι γ' πάντας ἐνέκα.  
 δὴ τότε ἰηπίησι ποδῶν ἀρετὴν ἀναφαίνων,  
 θῦν σφ' προμάχων, ἔως φίλον ὤλεσε θυμὸν,  
 τὸν βάλε μίσηρ ἀκύνε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς  
 νῶτα παραΐσσοντ' ὄθι Ἰωσῆρος ὄχλῃς  
 χρυσέοι σύνεχον, καὶ διπλόος ἦντο θώρηξ.  
 ἀνελκύν δὲ δίεχε παρ' ὀμφαλὸν ἐγχείας ἀχμῇ.  
 γυνὴ δ' ἔειπ' οἰμώξας, νιφέλη δὲ μιν ἀμφεκάλυψε  
 κυανέη, προτὶ δὲ δ' ἔλαβ' ἐντορὰ χερσὶ λιαδίης,  
 ἔκτορ δ' ὥς ἐνόησε κασίγνητον πολυδύωρον,  
 ἐντορὰ χερσὶν ἔχοντα λιαζόμενον ποτὶ γαίῃ  
 παρ' ῥά οἱ ὀφθαλμῶν κέχυτ' ἀχλὺς, οὐδ' ἄρ' ἐτ' ἔτλη  
 θνητὸν ἱκὰς σφαφάδ' ἀλλ' ἀντίος ἦλθ' ἀχιλῆος.  
 ὅξυν δόρυ κραδίωρ φλογὶ ἱκέτας, αὐτὰρ Ἀχιλλεύς  
 ὥς ἔδ' ὥς ἀνέπαλτο καὶ ἐν χόμῃ ἔπος ἔνδρα.  
 ἐγγὺς ἀνὴρ ὅς ἐμὸν γὰ μάλιν ἐπιμάσσει θυμὸν  
 ὅς μοι ἐταῦρον ἐπεφνε τιπμίνον, οὐδ' ἄρ' ἐπὶ δῆν  
 ἀλλήλω πῶας οἰμὴν ἀνὰ πηολέμοιο γαφύρας  
 ἔκ, καὶ ἐντορὰ ἰδὼν προσιφώνων ἐκτορὰ δῖον.

οὐδ' ἀχιλῆος πάντως τέλος μύθοις ἐπιθήσει.

ἔλλα τὸ μῆν τέλει, εἰ δὲ καὶ μεταγνῶν καλῶς.

τῷδ' ἐγὼ ἀντίος ἔμει, καὶ ἐπὶ πυρὶ χεῖρας ἔοικεν.

ἐπὶ πυρὶ χεῖρας ἔοικεν μένος δ' αὐθωνισιδύφω.

Ὡς φάτ' ἐπορύνων, οἷα δ' ἀντίοι ἐγχεῖ ἄερον

ῥῶϊς, τῶν δ' ἀμυδρὸν μίχθη μιν, ὥρτο δ' αὐτῷ

καὶ τὸτ' ἄρ' ἐκθραῖπε παρασὰς φοῖβος ἀπόλων.

ἔκτορ μὴ κίε πάμπαν ἀχιλλῆϊ προμάχιε,

ἀλλὰ κατὰ πληθύν τε καὶ ἐκ φλοίσβοιο δέειξο.

μή πως σ' ἢ ἐβάλη ἢ ἐχιδνὸν ἄορι τύψῃ.

Ὡς ἔφαθ', ἔκτορ δ' αὖτις ἐδύατο οὐλαμόρην ἀνδρῶν

ταρβέσας ὅτ' ἄκυσεν ἰσθμῶν φωνήαντων,

ἔνδ' ἀχιλῆος ῥῶϊσι θόρε φρεσὶν ἐμίνων ἀλκίως

σμερδαλέα ἰάχων, πρῶτον δ' ἔλεν ἰφίτιάδα.

ἔδλὸν ὄρω τεύειν πολέων ἡγήτορα λαῶν.

ἔν νύμφῃ τέκεν ἡς ὄρωτ' ἡ Πηολιπόρθω,

τμῶλῳ ὑπὸ νιφόεντι, σῆς ἐν πίοισι δ' ἡμῶ.

τόν ῥ' ἰθὺς μεμαῶτα βάλ' ἐγχεῖ δ' ἴος ἀχιλῆος.

μίσσων κακκεφαλῶν, ὅδ' ἀνδρὶ χαπῶσα κιάδῃ.

δούπησε ὃ πρὶν ὅδ' ἐπὶ δ' ἐπὶ δ' ἴος ἀχιλῆος.

κεῖσαι ὄρω τεύειν, πάντων ἐκπαγλότεατ' ἀνδρῶν.

ἔνθα δ' ἐτοί θάνατον, γαῖῃ δ' ἐπὶ ἐπὶ λίμνῃ

ῥυγαίῃ ὅθι τοι τέμνω παρ' ὧτόν ἐστιν,

ὅλω ἐπ' ἰχθυόεντι, καὶ ἔρμω δ' ἰνὴν ἐντι.

Ὡς φάτ' ἐπὶ χόμῳ τὸν ὃ σκότος ὅσιν καλυψέτω

τὸν μῆν ἀχαιῶν ἱπποὶ ἐπιπύλοισι δατέοντες,

ἐπ' ὧτ' ἔν σμίνῃ, ὅδ' ἐπ' αὐτῷ δ' ἡμολέοντα.

ἔδλὸν ἀλεξήτῃρα μάχης ἀντήνορον ἕον,

ἡξέ κατὰ κρόταφον, κυνέης σφῆ χαλκεπαρήν,

ἔνδ' ἄρα χαλκείῃ κόρυς ἐχέθη ἀλλὰ δ' ἐπὶ αὐτῇ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

οὐ μὲν γάρ τις δ' ἄλλος ἀχαιῶν ἱξεναρίξῃ.

Ὡς ἐπὶ λῖπεν αὐτόθ' ἐπὶ δ' ἐπὶ φραδίᾳ πάντα.  
 αἶψα δ' ἔπειτ' ἀχιλῆϊ ἅπ' ὀφθαλμῶν σκίδας ἀχλὺν  
 θινωσίνων, ὃ δ' ἔπειτα μέγ' ἱξίδην ὀφθαλμοῖσιν,  
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς θῆρ' ἀγαθήν τε θυμόν,  
 ὦ πόποι, ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὀρῶμαι,  
 ἔρχος μὲν τόδ' ἐκίτα ἐπὶ χθονὸς, οὐδ' ἐτι φῶτα  
 λυώσῃ τῷ ἐφ' ἔκτα κτακτὰ μῆμα μῆμαίηων,  
 ἦ ῥὰ καὶ αἰνείας φίλος ἀθανάτοισι θεοῖσιν  
 εἶεν, ἀτὰρ μιν ἔφω μάτ' αὖτως ἐν χεῖράσιν αἰῶ,  
 ἔρρετω, οὐδ' ὅι θυμὸς ἐμὲ ἐπὶ περὶ θῆναι  
 ἔαται, ὅς καὶ νῦν φύγῃν ἄσμεν ἐκ θανάτου.  
 ἀλλ' ἄγε δὴ δαίμοσι φίλοισι μοῖσιν ἐκλύοιτο  
 τῶν ἀλλῶν βῶν περὶ θῆμα ἀντίος ἐλθόν.  
 ἦ καὶ σίχας ἄλτο, κίλενε ὃ φῶτ' ἐκείσθ.  
 μηκέτι νῦν βῶν ἐκείσθαι δ' ἴοι ἀχαιοί,  
 ἀλλ' ἄρ' ἀνὴρ, ἀντ' ἀνδρὸς ἴτω, μεμάτω ὃ μάχεσθαι.  
 ἀργαλίων δ' ἐμοὶ ἐσὶ καὶ ἰφθίμῳ περ ἐόντι,  
 τῶσους δ' ἀνδρῶν ἐφ' ἔκτα καὶ πᾶσι μάχεσθαι  
 οὐδ' ἐκ' ἄρης ὅς περ θιὸς ἀμβροτῶν οὐδ' ἐκ' ἀθήνη.  
 τῶσους δ' ὕσμίνης ἐφ' ἔκτα σόμα καὶ πόνειοι  
 ἀλλ' ὅσους μὲν ἐγὼ δύνάμει χερσίν τε ποσσίν τε  
 καὶ νείησιν, οὐδ' ἐτι φημὶ μελίσσῃ οὐδ' ἡβῶν.  
 ἀλλὰ μάλα σιχρὸς εἰμι δ' ἰαμπερὶς, οὐδ' ἐπὶ δ' ὅτ'  
 βῶν χαρῆσθαι ὅς τις ὀφθῇ ἐρχομαι ἐλθῃ.  
 Ὡς φάτ' ἐποτρύνων βῶν δ' ἐφ' ἔκτα ἰκτῶρ.  
 κίλενε ὅμοι καὶ φῶτ' ἐκείσθαι ἅπ' ἀχιλῆϊ  
 βῶν ἐπὶ θυμοὶ μὴ δ' ἐπὶ πῆμα πηλείων.  
 καὶ κινῇ ἐγὼν ἐπ' ἔκτα καὶ ἀθανάτοισι μαχοίμεν,  
 ἔρχομαι δ' ἀργαλίων ἐπ' ἔκτα πολυφύροισι βῶν.

Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρη.

ἱννοσίγαι' αὐτὸς σὺ μετὰ φρεσὶ σῇ σινύχῃ

ἀνείσῃ, ὃ κίρ μιν ἱρύσσει, ἥ κεν ἰάσῃς,

πηλείδῃ ἀχιλῆϊ δαμήμῃ καὶ ἰδὼν ἰόντα,

ἔτοι, μὴ γάρ νῶϊ πολεῖς ὠμόταμεν ὄρκυς,

πᾶσι μὲθ' ἀθανάτοισιν ἰγὼ καὶ παλλὰς Ἀθήνη.

μή ποτ' ἐπὶ τρώεσσι ἀλιξήσῃς κακὸν ἤμαρ,

μή δ' ὁπότεν τροίη μαλ' ἱρῶ πυρὶ πᾶσι δάηται

δαομένα, δαΐωσ' ὃ δ' ἀρήιοι ὕμιν ἀχαιῶν.

αὐτὰρ ἐπὶ τῷ ἄκρῳ ποσὶ δάων ἱννοσίχθων,

βῆ δ' ἰὺν ἄρ τε μάχῃ καὶ ἀνὰ κλόνον ἰχθῆεν.

ἔξε δ' ὅθ' ἀνείας ἦδ' ὁ κλυτὸς ἦεν ἀχιλλεύς.

αὐτίκα δ' ἰὺν ἔπειτα κατ' ὀφθαλμῶν χίερ' ἀχλὺν

πηλείδῃ ἀχιλῆϊ, ὃ δ' ἐμελίψατο ἔχλακον

ἄσπίδος ἐξέρυσιν μεγαλήτορ' ἀνείας.

καὶ τὴν μὴν προπάρειθε ποσὶ δάων ἀχιλῆϊ ἔειπεν.

ἀνείας δ' ἐπίσενεν ἀπὸ χθονὸς ὑφ' ὅσ' αἰέρας,

πολλὰς δ' εἰχας ἥρώων πολλὰς δ' καὶ ἵππων

ἀνείας ὑπερᾶλθεν ἀπὸ χειρὸς ὀρούσας.

ἔξε δ' ἐπ' ἰσχυρὴν πολυδάκρυς πολέμοιο,

ἔνθα δ' αὖ κώνες πόλεμον μεταθωρήσασιν.

δὲ δ' ἔμολ' ἰγνύθεν ἦλθε ποσὶ δάων ἱννοσίχθων,

καὶ μιν φωνήσας ἔπειτα πῆρόντα προσήνδα.

Αἰνεία, τίς σ' ὦδ' ἑὼν αἰκητὶ κελεύει

ἀντί' ἀχιλῆϊ πόλεμ' ἵεν ἦδ' ἐμὸν μάχεσθαι;

ὅς σιν ἅμα κρείων καὶ φίλτορος ἀθανάτοισιν,

ἀλλ' ἀναχωρῆσαι, ὅτε κεν συμβῇσιν αὐτῷ,

μή καὶ ὑπὲρ μοῖραν δόμον αἴδος εἰσφύκηαι,

αὐτὰρ ἐπεὶ ἄχιλλεύς θάνατον καὶ πότμον ἐπίσῃ.

θαρσύνει δ' ἔπειτα μετὰ πρῶτοισι μάχεσθαι.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

δ' ἔσθ' ἔχ' ἔκ' ἄρ' ὑπὲρ νώτους ἐνὶ γαστρίῃ  
 ἔσθ' ἰμίνῃ, διὰ δ' ἀμφοτέρους ἔλε κύκλους,  
 ἀσπίδος ἀμφιβρότης, ὅδ' ἀλκυόμβριος δόρυ μακρόν·  
 ἔσθ' ἔκ' ἄχος δὲ χύτο μυρίον ὀφθαλμοῖσι  
 ταρβήσας, ὃ οἱ ἄγχι πάγῃ βέλος, αὐτὰρ ἀχιλλεύς  
 ἔμμεμαώς ἐπόρουσαν ἔρυσά μιν· ἔξίφος δ' ἐξυ·  
 σμυρδάλεια ἰάχων, ὃ ᾧ χερσὶ μολιδιον λάβε χερσὶ  
 κινήσας μέγα ἔργον, ὃ ὅδ' ὄν' ἀνδρὶ φέροιεν,  
 οἷοι νῦν βροσί' εἰσ', ὃ δ' ἔμιν ῥέει πολλὰ καὶ οἷον  
 ἐνθακὼν αἰνείας μὲν ἐπὶ αὐτὸν μῆλον βάλλει πέτρῃ·  
 ἢ κόρυθ' ἢ ἐσώχους, τό οἱ ἔρκεσι λυγρὸν ὄλεθρον·  
 τὸν δ' ἔκε πηλείδης σχεδὸν ἄορι θυμὸν ἀπύρρα,  
 εἰ μὴ ἄρ' ὅξ' ὀνόσῃ ποσσὶ πόων ἐνοσίχθων·  
 αὐτίκα δ' ἀθανάτοισι θεοῖς μετὰ μῦθον ἔειπεν,  
 ὦ πόποι, ἢ μοι ἄχος μεγάλῃ φρεσὶ αἰνείας·  
 ὅς τ' ὅλχα πηλείωνι δαμείς, αἰδώς δὲ κάτ' ἐσι  
 παθόμεν· μύθοισιν ἀπόλλωνος ἔκαστο  
 νῆπιος, ὃ δ' ἔτοι δὲ χερσὶ μέσῃ λυγρὸν ὄλεθρον·  
 ἀλλὰ τίη νῦν οὗτος ἀνείπιος ἄλγος πάσχει·  
 μάτ' ἔκ' ἄλλοτρίων ἀχέων, κεχαισμένα δ' αἰεὶ  
 εἴωρα θεοῖσι δίδωσι, τοί ἔρ' ἀνδρὸν δόρυν ἔχουσιν  
 ἄλλ' ἄγχι ἡμῖν πέρ μιν ὑπὸ ἐκ θανάτῃ ἀγάρωμιν  
 μὴ πως καὶ κρονίδης κίχλωσται, αἴκων ἀχιλλεύς  
 τὸν δὲ κατὰ κτείνῃ, μόρσιμον δ' ὃς ἔς ἀλκίαν  
 ἔφρα μὴ ἀσπίδος γυνή ἢ ἄφροντος ἔλκεται·  
 δαΐδ' ἄνδρ', ὃν κρονίδης περὶ πόλιν φέρεται παίδων·  
 οἳ ἔθω ἐξέγινον γυναικῶν τιθνητάων·  
 ὃ δ' ἔρ' ἀσπίδος γυνή ἢ ἄφροντος ἔλκεται  
 νῦν ᾧ δὲ αἰνείας βίη βῶσται ἀνείας·  
 καὶ πατρίδ' ἀπὸ παίδων βίη καὶ μετόπισθε γένεσθαι·

Τὸν δ'



παρτοί, ἱπίων ὃ πολὺς νόμος ἔνθα καὶ ἔνθα,  
 ὃ ποῖον κ' εἴηδα ἔως ὅσον κ' ἐπακούσαις,  
 ἀλλὰ τίη εἰδῆς καὶ νείκῃα νῶιν ἀνὰ γῆ  
 νηκτὴν ἀλλήλοισιν ἐναντίον ὥς τι γυναικίαις,  
 αἵ τε χολωσάμεναι εἰσὶς πέρι θυμοβόροισιν  
 νηκεῦσ' ἀλλήλοισι μίσῳ ἐς ἀρχὴν ἰοῦσαι.  
 πόλλ' ἱτιά τε καὶ ἔκῃ, χόλος δ' ἐπὶ καὶ τὰ κελύη,  
 ἀλκῆς δ' οὐμ' ἐπὶ εἶσιν ἀπορίψης μιμαῖστα,  
 πρὶν χαλκῷ μαχεῖσθαι ἐναντίον, ἀλλ' ἀγέθαιον  
 χρυσόμειθ' ἀλλήλων χαλκήρεσιν ἐρχέσθαι.  
 ἢ ῥά καὶ ἐν δυνάσσει σάκε' ἔλασε χαλκεον ἐρχο  
 σμυδαλίον, μέγα δ' ἀμφὶ σάκῃς μῦκε θυρὸς ἀκοκ  
 πηλείδης ὃ σάκῃς μ' ἀπὸ τοῦ χερὶ παρ' αἰ  
 ἔχσο ταρβήσεις, φάτο γάρ σδλιχόσκιον ἐρχο  
 ῥῖα δ' ἐλύνειδαι μεγαλὺτορ' αἰνείας,  
 νήπιος, ὃ δ' ἐνέσσει κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,  
 ὥς ὃ ῥῆσ' ἐπὶ θεῶν εἰκυδία δῶρα  
 οὐδ' ἀσπὶ γῆ θνητοῖσι δαμέμεναι ἢ δ' ὑπεείκον.  
 ὃ δ' ἐπὶ τὸτ' αἰνείας δαίφρον' ὄβριμον ἐρχο  
 ῥῆξε σάκῃς, χρυσὸς γάρ ἐρύσκει δῶρα θεοῖο  
 ἀλλὰ δύω μὲν ἔλασε σάκῃς πύχας, αἵ δ' ἄρ' ἐπὶ πρὶ  
 ἔσαν, ὃ πέντε πύχας ἔλασε κυλλοποδίδων,  
 πᾶς δ' ὅσ' χαλκείας. δ' ὅσ' δ' ἐνδύθι κασιγέροισιν.  
 πᾶν δ' ἐμίσῳ χρυσῆν, τῇ ῥ' ἔχσο χαλκεον ἐρχο  
 δ' ὅσ' δ' αὐτ' ἀχιλῆος προῖδ' σδλιχόσκιον ἐρχο  
 καὶ βαλὲν αἰνείας κατ' ἀσπίδα πάντοσιν ἰσῶν,  
 ἄντυγ' ὑπὸ πρῶτῳ, ἢ ληϊστὰς θίει χαλκός,  
 ληϊστοτάτη δ' ἐπὶ πᾶσι ῥήνους βοός, ἢ ὃ σάκῃς πρὸ  
 πηλιάς ἔβριξε μιλίην, λάτῃ δ' ἀσπίς ἐπὶ αὐτῆς.  
 αἰνείας δ' ἐώλη καὶ ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ἀνέχῃ

1 1 1 1 1 0 2.

[illegible]



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἔνι μὲν ἀμφοτέρων σωίτῳ μεμαῶτι μάχεσθαι.  
 αἰνέας τ' ἀρχισιάδης, καὶ δ' ἴθι' ἀχιλλεύς.  
 αἰνέας ὃ πρῶτος ἀπειλήσας ἱβιδήκη,  
 στυνάζων κόρυθι βεβαρῆ ἀπὲρ ἀσπίδα θούλην,  
 σπρόδιον ἔχει σέρνοιο, τίνασσι ὃ χάλκεον ἔρχετο.  
 πηλείδης δ' ἐτέρωθεν ἰκοντίον ὤρτο λείων ὡς  
 σίντης, ὃν τε καὶ ἄνδρος ἀποκτάμναι μεμάρσιν  
 ἀγρόμυμοι πᾶς δῆμος, ὃ δὲ πρῶτον μὲν ἀτίσιν.  
 ἔρχεται, ἀλλ' ὅτι κιν πῖς ἀρηιθόων αἰζηῶν.  
 διερὶ βάλη, ἰάλητι χανὼν περὶ τ' ἀφρὸς ὀδόντας  
 γίγνεται, ἐν δὲ τε δὶ κραδίη σίνει ἄλκιμον ἦρ.  
 ἕρῃ ὃ πλευράς τε καὶ ἰαχία ἀμφοτέρωθεν  
 μακίσται, ἔειδ' αὐτὸν ἐποτρύνει μαχέσασθαι.  
 γλαυκιδόων δ' ἰθύς φέρεται μένει ἦν πῖνα πίφνη,  
 αὐδρῶν ἢ αὐτὸς φθείεται πρῶτον ἐν δμίλῳ.  
 ὅς ἀχιλλῆ' ὤρωε μένος καὶ θυμὸς ἀγῆνδρ  
 ὀντίον ἐλθέμηναι μεγαλήτορ' αἰνέας,  
 οἶδ' ὅτι δὴ ἔχιδ' ὄν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντος,  
 τὸν πρότερον προσέειπε, ποδάρκης δῖος ἀχιλλεύς.  
 αἰνέας, πὶ σὺ τόσσον ὀμίλῳ πολλὸν ἐπελθῶν,  
 ἔσῃς, ἢ σέ γε θυμὸς ἱμοῖ μαχέσασθαι αὐώγῃ.  
 ἔλπόμηνον ῥώεσιν αὐωξὶν ἰπποδάμοισιν  
 ἑμῆς τ' πριάμην, ἀπὲρ ἔκεν ἔμ' ἐξωαρίξῃς.  
 οὐκ ἴδυνά γε πριάμετο γέρας ἐν χερσὶ θήσῃ.  
 εἰσὶ γὰρ εἰ παῖδες, ὅδ' ἔμπεδος ἔδ' αἰσιφρων.  
 ἢ οὐκ ἴδυνά γε τῆμος τάλμον ἔξοχον ἄλλων.  
 χαλὸν φυταλιῆς, καὶ ἀρούρης ὄφρα νίμῃαι  
 αἶκον ἔμει κτείνῃς, χάλιπῳς, δέσ' ἐολπᾶς ῥέξῃς.  
 ἦ δὴ μὲν σέ γε φημὶ καὶ ἄλλο τε διερὶ φόβῃ.  
 ἦ ὃ μὲν, ὅτι πέρσει βοῶν ἄπο μῆνοι ἰόντας,





καὶ δ' ἄλλως βῦγ' ἰθὺς βίβας, πέτεται ὅδ' ἀπολήγει,  
 πρὶν χρόος ἀνδρομένοιο διελθῆμεν, ἔδ' εἰ θεός περ  
 ἴθι τένειον πολέμου τίλεις· οὐ μὲν μάλα ῥέϊα  
 νικήσῃ. ὅδ' ἔπαρχ' ἡλκίος ἔχεται εἶναι.

Τόν δ' αὖτε προσέειπεν ἀναξοδὸς ἕως ἀπόλλων.  
 ἦρας ἀλλὰ γὰρ καὶ σὺ θεοῖς αἰετρώετ' ἔστιν  
 ἔνχιο, καὶ δ' εἰ σε φασὶ δῖος κούρης ἀφροδίτης  
 ἐκ γαγάμην, κύνος δ' ἔχρειον ὅ' ἐκ θεοῦ εἶναι.  
 ἢ μὲν γὰρ δῖος ἔδ' ἦδ' ἱξ' ἀλίοιο γέροντος.  
 ἀλλ' ἰθὺς φέρε χαλκὸν ἀτρήϊα μηδ' εἰ πάμπαν  
 λιγυράλοισι ἐπίεσιν ἀποβίβιτο καὶ ἀρηῇ.

Ὡς ἐπὼν ἔμπνευσε μένος μέγα ποιμὴνι λαῶν.  
 βῆ δ' ὄχ' προμάχων κεκρυμμένος αἰθόπι χαλκῷ.  
 ὅδ' ἔλαθ' ἀρχίσταο πάϊς λιγυράλων ἥρω.  
 ἀντία πηλείωνος ἰὼν ἀνὰ ὑλαμὸν ἀνδρῶν.  
 ἦδ' ἀμυνδὶς καλίστα ἔα θεοῖς, μετὰ μῦθον ἔειπε.

Φράζεσθον δ' ἡ σφῶϊ ποσειδάων καὶ ἀθήνη  
 ἐν φρεσὶν ὑμετέρῃσιν, ὅπως ἔσται τάδε ἔργα.  
 κινείας δ' ἔβη κεκρυμμένος αἰθόπι χαλκῷ.  
 ἀντία πηλείωνος, ἀνῆκε δ' φοῖβος ἀπόλλων,  
 ἀλλ' ἄγεθ' ἡμῖν πέρι μιν ἀποβωπῶμην ὀπίσσω  
 αὐτόθεν, ἢ τίς ἐπείτα καὶ ἡμείων ἀχιλῆϊ  
 παρσάειν. οὐδὲν δ' κρέας μέγα, μηδ' εἰ τι θυμῷ  
 λυέσθω. ἵνα ἐδ' ἡ ὅμιν φιλήσιν ἄεσσι  
 ἀθανάτων, οἳ δ' αὖτ' ἀνιμῶλιοι οἳ τ' πάρος περ  
 φασὶν ἀμύνεσθιν πόλεμον καὶ δῆιοι τῆτα.  
 πῶντος δ' ἑλνύμωσι κατ' ἡλθομένη ἀντιόοντος  
 τῆς δ' εἰ μάχης ἵνα μή τι μέγα βῶεσι πάθῃσι  
 σήμερον, ὕερον αὖτε τὰ πείσονται ἅα δ' οἳ αἴσῃ  
 γηνομένη ἐπένησε λίγῳ ὅτε μιν τίκε μῆτηρ.

ἔντα δ' ἐνυελίοιο θεᾷ γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 ἔρη δ' ὠντίεσσι χρυσηλαῶν κελαιδίη,  
 ἄρτεμις ἰοχέαιρα, κασιγνήτη ἱκάριο,  
 λητοῖ δ' ὠντίεσσι σῶκος εἰλούνοιο ἱρμῆς.  
 ἔντα δ' ἄρ' ἠφαίσιο μέγας ποταμὸς βαθυδίην,  
 ὃν ξάτθον παλίσσι θεοί, ἄνδρες δ' ὅσκιμον ἄνδρον.  
 ὧς οἱ μῦθον οἰοί, ἄντα θεῶν ἴσαν, αὐτὰρ Ἀχιλλεύς.  
 ἔκτορ' ὅντα μάλιστα λιλαίετο δύνασθ' ὁμίλον  
 πριαμίδει, τὸ γὰρ ῥα μάλιστα γέ θυμὸς ἀνώγει  
 αἵματος ἄσαι ἄρηα ταλαύεινον πολεμειήν.  
 αἰνέων δ' ἰθὺς λαοαγός ὤρσεν ἀπόλλων.  
 ὠντία πηλείων', ἐνῆκε δ' οἱ μέν' ἦν.  
 ἦϊ δ' ὅντα ῥα μοιο λυκαόνι εἶσατο φωνήν,  
 ὦ μιν ἰδσάμενος, προσέφη δῖος ἦρς ἀπόλλων.  
 αἰνέει βῶων βασιλῆσιν ὕπεια οἶνοποτάϊον.  
 πηλείδην Ἀχιλλῆ', ἰονατίβιον πολυμήϊδην.  
 τόν δ' ἔντα αἰνέεισσι ἀπαμειβόμεν', προσέειπε.  
 πριαμίδην, τί με ταῦτα, καὶ τίς ἐθέλονται κελύφει,  
 ὠντία πηλείωνος ὑπερβύμοιο μάχεσθαι.  
 εἴ μ' γὰρ δὴ πρόβητα ποδάρκτος ἄντ' Ἀχιλλῆ'  
 εἴθε μοι, ἀλλ' ἦ δὴ με καὶ ἄλλοτε δὴρὶ φόβησιν.  
 ἐξ ἰδῆς ὅτε βυσσὶν ἐπὶ λυθον ἤματι ῥῆσιν.  
 πέρσε δ' ἐλυννησὸν καὶ πύδαθ', αὐτὰρ ἐμὲ ζυῖς  
 ἔρυσθ', ὅς μοι ἐπώρσει μένος λαυφῆρά τε ζυῖνα.  
 ἦ κ' ἐδάμην ὑπὸ χερσὶν Ἀχιλλῆ' καὶ Ἀθήνη  
 ὅ οἱ πρόβητα ἴθε τίθε φάθ' εἴδ' ἐκέλευεν.  
 ἔρχεαι χαλκείῳ, λίλεχας καὶ βῶας ἱναίρεν.  
 ὦ μιν ἰδσάμενος Ἀχιλλῆ' ἰονατίον ἄνδρα μάχεσθαι.  
 αἰεὶ γὰρ πάρεα, εἴς γε θεῶν ὅς ποτ' ἔδον ἀμύνει.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

φοῖβος ἀκρίστικόμης, ἦ δ' ἄρτι μιν ἰοχίαιρα  
 λητῶτε, ξάνους τε, φιλομηδῆς τ' ἀφροδίτη.  
 τίως μὲν ῥ' ἀπάνευθε θεοὶ θνητῶν ἔσαν ἀνδρῶν,  
 τίως ἀχαιοὶ μὲν μίγ' ἐκὺδανον οὐνικ' ἀχιλλεύς  
 ἔξεφάνη, δῆρ' ὃν ῥ' μάχης ἐπέπαυτ' ἀλιγανῆς.  
 ῥῶας ῥ' ῥόμος αἰνὸς ὑπὲλκυθε γυῖα ἔκαστον,  
 διδιδιώτας, ὅθ' ὄρωντο ποδῶκεα πηλείωνα  
 τεύχεσι λαμπρόμυμον βροχλῆγ' ἴδον ἄρηι.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ μὲθ' ὀμίλῳ δολύμπιοι ἤλυθον ἀνδρῶν,  
 ὦρ' δ' ἔεις κρατερὴ λαοαγόρῃ, θυε δ' ἀθήνη  
 εἶπ' ὅτι μ' παρὰ τάφρον ὄρυκτὴν τέχε' ἔκτος.  
 ἄλλοτ' ἐπακτωδὼν ἐειδὺπάν μακρὸν αὐτῇ,  
 θυε δ' ἄρης ἐτέρωθεν, ἱρεμνὴ λαίλαπι ἴδρα  
 ὄξυνε, κατ' ἀκροτάτης πόλιος ῥώεσσι κελύων.  
 ἄλλοτε παρ' σιμόεντι θέων ᾧ καλλιπυλῶν  
 ὣς βύς ἀμφοτέρως μάκαρος θεοὶ ὄρνυοντο,  
 σύμβαλον, ἐν δ' αὐτοῖς ἔειδα ῥήγνυτο βαρεῖαν.  
 δηνόν δ' ἐβρόντησε πατήρ ἀνδρῶν τε, θεῶν τε  
 ὁψόθεν, αὐτὰρ ἔνθε ποσειδάων ἐτίναξε  
 γαῖαν ἀπηρεσίῳ, ὀρέοντ' αἰπεινὰ κάρωα.  
 πάλγεις δ' ἐσείοντο πόδες πολυπιδάκκ' ἰδης,  
 καὶ κερυφαί. ῥῶων τε πόλιν, καὶ νῆδ' ἀχαιῶν.  
 ἔδιδυσσε δ' ὑπὲρθευ ἀναξινέρον αἰδωνύς,  
 δίδισαι δ', ἐκ θρόνου ἄλτο καὶ ἰάχε μὴ οἱ ὑπρθε  
 γαῖαν ἀναρρῆξαι, ποσειδάων ἐνοσίχθων.  
 οἰκία ῥ' θνητῶν, καὶ ἀθανάτοισι φανείη,  
 σμυρδαλέ' ἐβρώοντα τάτε συγέεισι θεοὶ περ.  
 τόσσ' ἄρα κτῦπος ὦρ' ἐπὶ θυῶν, ἔειδι ξωιόντων.  
 ἔτοί μιν γὰρ ἔνοντα ποσειδάωνος ἀνακτ' ὅς  
 ἔσσετ' ἀπόλλων φοῖβος ἔχων ἰὰ πηρόντων.

καὶ πηγάς ποταμῶν καὶ πείσεις ποιήσαντα·  
 ἐλθόντος δ' ἐς δῶμα διὸς νεφεληγερέταο·  
 ξυσθεὶς αἰθούσῃσιν ἐφίβανεν, ὥς δ' ἰὶ πατρὶ  
 ἔφρατος ποίησαν ἰδυίησι πραπίδιαισι·  
 ὧς δὲ μὲν διὸς εἰδὼν ἀηγήρατ'· οὐδ' ἐνοσίχθων  
 νηκεύσθησι θεῶς, ἀλλ' ἐξ ἁλὸς ἦλθε μετ' αὐπύς,  
 ἵξε δ' ἄρ' ἐν μέσσοισι, διὸς δ' ἐξείρξο βελήν·  
**Τί** π' ἄν ἀργικέραυνε θεοὺς ἀγορήνδ' ἐκαλίσσας;  
 ἢ τί περὶ βῶων καὶ ἄχαιῶν μρμηρίζεις;  
 τῶν γάρ νῦν ἀρχιστο μάχη πόλεμός τε δ' ἔδνη·  
**Τόν** δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεύς,  
 ἔγνωσ' ἐννοσίγαιε ἱμῆ, ἐν σήθισι βελήν,  
 ὧς ἔνκα ξυωλήθεα, μέλυσσί μοι ὀδλύμμοί περ·  
 ἀλλ' ἦ καὶ μὲν ἔγωγε μέλει πλὴν χιὲρ ἑλνύμεσσι  
 ἔμμεθ' ἐνθ' ὄρώων φρένα τέρφεσμαι, οἳ δὲ δὴ ἄλλοι;  
 ἔρχεσθ' ὄφρ' ἂν ἵκησθε μετὰ βῶας καὶ ἄχαιούς  
 ἀμφοτέροισι δ' ἀρήγῃσθ' ὅπῃ νοοῖς ἐστὶν ἑκάστου·  
 ὃ γάρ ἀχιλλεύς οἷός ἐστι βῶαςι μαχίτοισι,  
 ὃ δ' ἐμίνωσθ' ἔξυσσι ποδῶ κίκα πηλείωνας,  
 καὶ ὃ τέ μιν καὶ πρόδωκ' ὑπερβορέϊσιν ὄρνυτον·  
 νῦν δ' ὅτε δὴ καὶ θυμὸν ἱταίρῃ χῶεται αἰνῶς,  
 δίδω μὴ καὶ τυῖχος ὑπὲρ μόρον ἐξαλαπώξῃ·  
**Ὡς** ἔφατο κρονίδης πόλεμόνδ' ἀλίσσον ἔχθρην·  
 βῆν δ' ἱμῶναι πόλεμόνδε θεοὶ δίχ' αὖ θυμὸν ἔχοντες  
 ἦρ' ἔμμεθ' ἀγῶνα νῦν καὶ παλλὰς ἀθήνη·  
 ἠδὲ ποσειδάων γαίηοχος ἠδ' ἐπειούνης  
 ἱρμείης, ὅς ἐνὶ φρεσὶ πινυαλιμῇσι κίεσσι,  
 ἔφρατος δ' ἅμα βῆσι κίε δ' ἐνὶ βελιμαίνων  
 χολεύων, ὑπὸ ὃ κνήμα ῥῶντο ἀραιαί·  
 ἐς δ' ἐβῶας, ἄρης κερυθαίρης· αὐτὰρ ἄμ' αὐτῶς·

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Υ. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ἰὸς ἐπιβέβηκτος κατέρχονται βοηθήσονται  
οἱ θεοὶ πάντες. ὅτ' ἔμ' ἑλλησιν ἦρα, καὶ Ἀθηναίᾳ,  
καὶ Πρωτοφειδῶν καὶ Ἡφαιστος καὶ Ἑρμῆς, ὅτ' ἐπὶ τῶσιν ἄφραστον  
δίτῃ καὶ ἀπέλλων, ἐπὶ δὲ καὶ ἄρτεμις, καὶ Λητώ, ἄρμενε.  
καὶ σκαλίσαντο, αἰνέειαν δὲ ἀντιστάμεν Ἀχιλλεύῳ  
καὶ σώσει ἀπέλλων νεφέλῃ καλύψας, Ἀχιλλεύς δὲ ἄλλους  
τε ἀναιρεῖ, καὶ πολυδάκρυον ἐν πριάμει παῖδ' ἔειπε.  
ὅτ' ἀντιπύρρον αὐτῷ φεύγει ἀπόλλωνος σῶσιν αὐτόν,  
ὅς δὲ ἄλλος Ἀχιλλεύς, ἐπὶ τῶν πόλιν φεύγοντας καὶ  
τύφοντι.

ΙΛΙΑΔΟΣ .Υ. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ἐ μακάρων ἔσθ' ὅρτω, φίρμ' ὅτ' ἔκ' ἄρτ' Ἀχαιοί.

Σ οἱ μὲν παρὰ νηυσὶ κερῶνι.

σιθάρησκοντο.

ἄμφ' ὅτ' πηλῖος ἦν μάχης ἄκρ'.

ρητοὶ Ἀχαιοί.

τῶν δ' ἄνδ' ἐτέρωθεν ὅτ' ἔρδ'.

σμεῖν πεδίῳ.

ὅς δ' ἐθίμιστα κίλινσε θεοὺς ἀγορήνδ' ἐκλίεσθαι,  
ἡρᾶς ἀπ' ὑλόμενος πολυπύχου, ἥδ' ἄρα πάλιν  
φοιτήσασθαι κίλινσε διὸς πρὸς δῶμα νέεσθαι,  
οὗτις τις δῶα ποταμῶν ἀπὲρ νόσφ' ὠκίανότο,  
οὗτ' ἔρα νημφάωνταί τ' ἔλκεα καλὰ γέμοντα.



ξάνθε τε, καὶ βαλὶε, τηλικαυτὰ τέκνα ποδάρχη,  
 ἄλλως δ' ἡ φράϊδα αἰωσέμεν ἡνιοχῆας,  
 αὐτὸς δ' ἀναὼν ἐς ὁμίλον, ἐπείχ' ἔωμην πολέμοιο.  
 μὴ δ' ὥς πωροκλον λήπει· αὐτόθι γενεῶντα.  
 τόν δ' ἄρ' ὑπὸ Ἰνυόφιν, προσέφη πόδας αἰόλους ἱππῶν  
 ξάνθος, ἄφαρ δ' ἤμυσσε κερήαι, πᾶσα δ' χαίτη,  
 Ἰνύλης ἐξεειπὼντα παρὰ Ἰνυὸν οὐδ' αἶψ' ἵκανε,  
 αὐδ' ἔσσυτο δ' ἐβηκε θιὰ λυγκώλιν ἔρρη.  
 καὶ λίω σ' ἐπὶ νῦν γε αἰωσέμεν ὄβριμ' ἀχιλλεῦ.  
 ἀλλὰ τοι ἤμαρ ἱγγύθου ὀλίβριον, ὅδ' ἐπὶ ἡμεῖς  
 αἵ ποιοι, ἀλλὰ θεὸς τε μέγας καὶ μοῖρα κραταῦς.  
 ὅς γ' ἄρ' ἡμιτέρῃ βραδυτῇ περ γε, νωχελίητι,  
 ῥῶδ' ἀπ' ὧμοισιν παρόκλιν' ἐνὶ χεῖρσιν ἔλκετο,  
 ἀλλὰ θιὼν ἄριστος· ὃν ἡνέχθ' ἔκλυε λητώ,  
 ἔκταν' ἐνὶ προμάχοισι, καὶ ἔκτορ' ἐκυδὸς ἔδωκε.  
 νῶϊ δὲ καὶ κῶν ἅμα πνοιῇ ἱεφύροιο θεοῖσιν,  
 ὃν περ ἐλαφροτάτῳ φάσ' ἔμμεναι, ἀλλὰ τοι αὐτῷ  
 μύροισι μόν' ἐστὶ, θεῶν τε, καὶ ἀνέειπ' ἱππὶ δαμῆναι.  
 ὣς ἄρα φωνήεντος εἰηνύης ἔλαθον αὐδ' ἄρ',  
 τόν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκύν' ἀχιλλεύς,  
 ξάνθε τί μοι θάνατον μωστρεύεις, ὅδ' ἐπὶ πειρή.  
 εὐνύτοι οἶδ' αὖ καὶ αὖτις, ὅ μοι μύρος ἐνθάδ' ὀλίβριον  
 πόσφι φίλος πατὴρ, καὶ μητήρ, ἀλλὰ καὶ ἔμπη.  
 ὅ λυξω πρὶν ῥῶας ἄδ' ἰλῶσαι πολέμοιο.  
 ἦ ῥά, καὶ ἐν πρώρῃσι ἰάχων ἔχει μώνυχας ἱππας.

ΙΛΙΑΔΟΣ

[illegible]

ἔκτο μιν δ' ἄρα βύς γ' ἰδὼν ἐλέησε κρονίῳν,  
 αἰΐτα δ' ἀθηναίῳ ἔπια πῆρ' οὐντα προσήδα.  
 τέκνον ἱμὸν δ' ἡ πάμπαν ἀπείχου ἀνδρὸς ἐῆθ'.  
 οὐτοὶ ἔκ' ἐπὶ πάγ' χυμὶτὰ φρεσὶ μέμβλετ' ἀχιλλεύῃ.  
 κίνος ὅ γε προπάροιθε νεῶν ὀρθοκραιράων,  
 ἔσαι ὀδυρόμενος ἔταρον φίλον, οἷ ὃ δ' ἄλλοι,  
 οἴχονται μετὰ δαΐπνον, ὅδ' ἀκμῶος καὶ ἄπασι  
 ἀλλ' ἴθι οἱ νίκταρ τε καὶ ἀμβροσίῳ ἱρατὴν ἡν  
 σάξον ἐνὶ σήθεισι νῖνα μήμιν λιμὸς ἵκηται.  
 ὦς ἐπὼν ὥρῳτε πάρος μεμαθίαν ἀθήνῳ.  
 ἦ δ' ἄρ' ἡ ἐκὺια τανυπῆρυγι λιγυφώνῳ.  
 ἕρανος ἐκ κατ' ἐπαλτο δ' αἰθέρος, αὐτὰρ ἄχαιῳ  
 αὐτίκα θωρήσονται κατὰ στρατόν, ἦ δ' ἀχιλλεὺς  
 νίκταρ ἐνὶ σήθεισι καὶ ἀμβροσίῳ ἱρατὴν ἡν  
 σάξ', ἵνα μήμιν λιμὸς ἀτερπὴς γούναθ' ἵκηται,  
 αὐτὴ δὲ πρὸς πατρὸς ἐλευθίνεος πυκινὸν δῶ  
 ἔχ' ἔσο, βίῳ δ' ἀπάνευθε νεῶν ἐχέοντο θοάων,  
 ὥς δ' ὅτε ταρφῆαι νιφάδ' οὐδ' οἶδ' ἐκποτέοντα  
 ψυχραὶ ὑπαὶ ῥιπῆς αἰθρηγενέος λυρέας  
 ὥς τότε ταρφῆαι κόρυθος λαμπρὸν γαιόωσας  
 νηῶν ἐκφορέοντα, καὶ ἀσπίδ' οὐδ' ὀμφαλὸς εἶσαι  
 θώρηκός τε, κραταιγύαλοι, καὶ μέλαινα δοῦρα.  
 καὶ γὰρ δ' ἕρανὸν ἵκε, γάλαατι δ' ἅπαντα περὶ χθών.  
 χαλκῷ ὑπὸ σιροπῆς, ὑπὸ δ' κτύπος ὤρνυτο ποσσὶν  
 ἀνδρῶν, ἐν δ' ἐμίσισι, κερυαίῳ δ' ἴθ' ἀχιλλεύς.  
 τὸ καὶ ὀδόντων μ' ἐκναχὴ πέλει, τὸ δ' ἐοῖα  
 λαμπρῶν, ὥς τί τι πρὸς σέλας, ἐν δ' ἐοῖα  
 δυν' ἄχος ἀπληκν, ὅδ' ἄρα βῶσι μνηστῆρων,  
 δύνωσθ' οὐδ' ἄρα θεοῦ, τὰ δ' οἱ ἕφαιστος κάμει τεύχεον.  
 κνημίδας μὲν πρῶτα περὶ κνύμῃσιν ἔθηκε

# ΙΛΙΑΔΟΣ

Διδάω δ' ἀφείδαι μὲν ἔτι, καὶ δῖος Ὀδυσσεύς,  
 νῆσφι ἰδομένης τε γέρονθ' ἱππηλάτα φοῖνιξ,  
 τέρποντο δὲ πυκινῶς ἀσπασόμενοι θυμῷ  
 τέρπτοσ' ἦν πολέμῳ σέμα δύναιτο αἵματόεντος,  
 μνησάμενοι δ' ἀδινῶς ἀνενείκατο φώνησέν τε.  
 ἦ ῥα νύ μοι τότε καὶ σὺ δυσάμμορε φίλταθ' ἑταίρων,  
 αὐτὸς ἐνὶ κλισίῃ, λαρὸν παραδιδίπνοι ἔθνης  
 αἶψα καὶ ὀφθαλμῶς, ὅποτε σπέρχοντο ἄχαιοι  
 φασίν, ἐφ' ἱπποδάμοισι φέρειν πελιδνὴ κρητὴ ἄρματα  
 νῦν δ' σὺ μ' ἐκείσιν διδάτεις, αὐτὰρ ἐμὸν κῆρ  
 ἔκμηνον πόσιος καὶ ἰδνυόος ἑνδον ἐόντων  
 σὴ περὶ, ὅ μιν γὰρ ἔκακώτερον ἄλλο πάθειμι,  
 ἔδ' ἴκων τὸ παρὸς ἀποφθιμένοιο πυθοίμην,  
 ὅς περ νῦν φθίηφι τέρεν καταδύκηνον ἔβη.  
 χήτη θιούδ' υἱὸς ὅδ' ἄλλοδαπῶ ἐνὶ δῆμῳ  
 εἵνεκα ῥιγδαλῆς ἐλένης φασὶν πολυμήτωρ,  
 ἦ ἔσθ', ὅς σκύρω μοι ἐνὶ φέφεται φίλος υἱός.  
 εἴ περ ἐπὶ βίῃ γε νεκρῷ λῆμος θιόεός τις,  
 πρὶν μ' γὰρ μοι θυμὸς ἐνὶ στήθεσιν ἰώληφι  
 οἶον ἐμὲ φθίσεσθαι ἀπ' ἄρκος ἱπποβότοιο,  
 αὐτὸς ἐνὶ βροίῃ, σὲ δέ τι φθίλωδινέεσθαι,  
 εἴε' ἂν μοι πρὶν παῖδα θεῶν σὺν νηὶ μελαίνῃ  
 σκυρόσθην ἱερατοῖς καὶ οἱ δειξέας ἱεσάσθην  
 κτῆσιν ἐμῇν, δμῶές τε, καὶ ὑφ' ἡριφίης μίγχα δόμῳ.  
 ἔδ' ἦ γὰρ πηληϊάδ' ὀλομαι ἢ κατὰ πάμπαν  
 τεθνέωμι, ἢ περ τεθθὼν ἐπὶ βίῳ τ' ἀσπασόμεναι.  
 γῆραί τε συγχεῖν καὶ ἐμῇν περὶ δέ γ' ἄνδρα  
 λυγρὴν ἀγγελίην, εἴτ' ἀποφθιμένοιο πύθοιτο.  
 ὣς ἔφαθ' κλαίων, ὃ δ' ἐνείχετο γέροντος,  
 μνησάμενοι τὰ ἱεσάσθην ἐνὶ μεγάροισιν ἑλπεύοντες.

καὶ τὰ μὲν κλισίῃσι θέσαν, κάθισαν δὲ γυαῖ κα-  
τ' ἵππους δ' ἐς ἀγέλιω ἔλαβαν θεράποντες ἀγαστοί,  
βεισηῖς δ' ἄρ' ἐπ' ὀϊκίλῃ χυσοῖ ἄφροδίτῃ,  
ὡς ἴδε πάροκλον διδασκόμενον ὄξείῃ χαλκῷ,  
ἄμφ' αὐτῷ χυμένη λίγ' ἐκάκυνε χερσὶ δ' ἄμυνσε,  
εἴθε οὐτ' ἦδ' ἀπαλὴν δόφρον', ἴδ' ἐκαλὰ πρόσωπε,  
εἴπε δ' ἄρα κλαίονσα γυνὴ ἐκκύια θεῇσι.

Παρόνκέ μοι δ' ἄλλῃ, πλεῖστον κιχαισμένε θυμῷ.  
 Ἰὼν μὲν σε ἔλθων ἐγὼ κλισίῃσιν ἰούσας.  
 νῦν δ' ἐπεὶ τεθνῶτα κιχάνομαι ὄρχαμι λαῶν.  
 ἄψ' ὀνοῖός, ὅς μοι δέχεται κακὸν ἐκ κακῶ αἰΐ.  
 ἄνδρα μὲν, ὃν ἴδουσάν με πατὴρ καὶ πότνια μήτηρ  
 ἴδον πρό πολλος διδαστῆμενον ὄξ' ἱὲ χαλκῷ.  
 Ζῆς τε κασιγνήτης Ζεύς μοι μία γένατο, μήτηρ  
 κηδείης, οἳ πάντοδ' ὀλέθριον ἦμαρ ἐπέαορ  
 σ' δ' ἐμὲν ἔδ' ἐμὲν ἔασκοι, ὅτ' ἄνδρ' ἐμὸν ὥκ' ἀχιλλεύς  
 ἔκτ' ἔμεν πέρσεν ὃ πόλιν θείοιο μύνηται  
 κλαίειν, ἀλλ' ἐμὲν ἔφασκεν ἀχιλλῆϊ θεόιο  
 κενεδίῳ ἄλσχιον θήσεν, ἄξιον δ' ἐνὶ νηυσὶν  
 εἰς φθίῳ, δαΐσεν ὃ γάμον μετὰ μυρμιδόνεσσιν  
 τῷ σ' ἀμοιβὴν κλαίῳ τεθεικότα μέλιχρον αἰΐ.

Ως ἔφατο κλαίον· ὃς δὲ συνελκοντο γυναικὸς,  
 παύσαντων πρὸ φάσιν, σφῶν δ' αὐτῶν κήδε' ἑκάστη·  
 αὐτὴν δ' ἀμφιγέροντος ἀχαιῶν ἡγρέθοντο  
 λισσόμενοι δειπνήσαι, ὅς τ' ἥρνῃτο σιναχίῳ  
 λίσσεται, ὅστις ἔμοιγε φίλων ἐπιπέθε' ἱταίρων,  
 μή με πρὶν σίτοιο κελεύετε μὴ δ' ἐποτῆτος  
 ἄσπεδοι φίλων ἥτορ ἐπέμ' ἄχ· αἶνόν τ' ἰκάνει.  
 δύντα δ' ἐς ἥλιον μένει, καὶ τλήθματι ἔμπλεε.

Ὡς εἶπεν, ἄλλος μ' ἐπισκίδασαι βασιλεύει,



Ἰσάτο ταλθύβιος ὃ θεῶ' ἐναλίγκι' αὐδὴν,  
 κάπρον ἔχων ἐν χερσίν, παρίστατο ποιμένι λαῶν,  
 ἀφείδης ὃ ἱρυσάμην' ἄρ' ἐστι μάχουραι.  
 ἦ οἱ παρ' ξίφους μέγα κυλὲρ αἶν' ἄορβ',  
 κάπρον ἀπορίχας ἀρξάμην' δι' ἡ χιῖρας ἀναχών,  
 εὐχθρο, τοῖ δ' ἄρα πάντοδ' ἐπ' αὐτόφιν ἔειπε σιγῇ  
 ἀργαῖοι κατὰ μοῖραν ἀκούοντο βασιλῆϊ·  
 εὐξάμην' δ' ἄρα ἵπην ἰδὼν ἐς οὐρανὸν εὐρύν,  
 ἴσω νῦν ἴδους πρῶτα θεῶν ὕπατ' καὶ ἄεσος  
 γῆ τε καὶ ἥλιος καὶ εἰννύϊς, αἳ δ' ὑπὸ γαῖαν  
 ὠνέθ' ὥπας τύνωται, ὅς τις κ' ἐπιόρκῃ δμῶσιν  
 μὴ μὴ ἐγὼ κεύρῃ βεισηίδι χιῖρ' ἐπινεύκω.  
 οὐ γὰρ εὐνῆς πρόφασιν κεχημέν' οὔτε τιν' ἄλλαν  
 ἀλλ' ἔμην' ἀπρωτίμασος ἐνὶ κλισίῃσιν ἐμῇσιν.  
 εἰδὲ τι τῶν δ' ἐπιόρκῃ, ἐμοὶ θεοὶ ἄλγος δοῖεν  
 πολλὰ μάλ' ὅσ' αὖ διδύσειν ὅς τις σφ' ἀλίτῃται δμῶα,  
 ἦ, καὶ ἀπὸ σόμαχον κάπρον τάμιν' ἡλ' ἑὶ χαλκῶ.  
 τὸν μὲν ταλθύβιος πολλῆς ἀλὸς ἐς μέγα λαῖτμα  
 ῥίψ' ἐπιδινύσας βόσιν ἰχθύσιν, αὐτὰρ ἄχιλῆος  
 ἀνασὰς ἀργείοισι φιλοπτόλεμοισι μετῴδων.  
 Ζεὺς πῶτερ ἢ μεγάλας ἄτας ἀνδρασι διδοιδάων  
 οὐκ ἄρ' ἐήποτι θυμὸν ἐνὶ στήθεσιν ἐμοῖσιν  
 ἀφείδης ὥενε διαμπρέες, οὐδέ κε κεύρῃ  
 ἦεν ἐμὲυ αἰκοντ' ἀμήχαντ', ἀλλὰ ποθὶ ἴδους,  
 ὅθελ' ἄχαιοῖσι θάνατον πολλῆσιν γένεσθαι.  
 νῦν δ' ἔρχεσθ' ἐπὶ δειπνον ἵνα ξωάγ' αὐτῶν ἄρῃ.  
 ὣς ἄρ' ἐφώνησεν, λῦσεν δ' ἀγορὴν αὐτὴν.  
 οἱ μὲν ἄρ' ἐσκίδναντο ἡν ὧ νῆα ἔκαστος,  
 δῶρα δ' ἐμυρμίδοντες μεγαλήτορις ἀμφεπέποντο.  
 δῶν δ' ὧ νῆα φέροντο δ' ἄχιλῆϊ θάοιο,  
 καὶ τῷ

ὦ τοι ἐπιπλῦτο κραδίη μύθοισιν ἱμοῖσιν,  
 αἶψά τε φυλὸς πιδὸς πίλεται κόρος ἀνθρώποισιν.  
 ἥς τε πλείω μὲν καλὰ μὲν χθονὶ χαλκὸς ἔχουσιν.  
 ἄμνητο δ' ὀλίγους ἐπὴν γλίσχῃσι τάλαντα  
 [δύς, ὅς τ' ἀνθρώπων ταμίης πολέμοιο τίτυκται.  
 γαστέρι δ' οὕτως ἐσὶ νίκῃ πωθῆσαι ἀχαιούς.  
 λίω γάρ πολλοὶ τε καὶ ἐπὶ ἥριμοι ἕματα πάντα  
 σίπῃσιν τότε κέρη τις ἀναπνύσκει πόνοιο.  
 ἀλλὰ χεὶρ τὸν μὲν καταθάπτειν ὅς κε θάωνσι.  
 νηλεὲς θυμὸν ἔχοντας ἐπ' ἕματι διακρύβοντας.  
 ὅσσοι δ' ἄν πολέμοιο περὶ συγχεροῖο λήπωνται.  
 μεμνηῖσθαι πόσιος καὶ ἐδῆτύος ὄφρ' ἔτι μᾶλλον  
 ἀνδράσιν ἐν σμυμείεσσι μαχώμεθα νωλεμῆς αἰεί.  
 ἰσώμενοι χροὶ χαλκὸν ἀτρεΐα, μὴ δ' ἐπὶ πῶς ἄλλω  
 λαῶν ὄρωσιν, πολέδ' ἐγμένω ἰχθύνωντα.  
 ἦ δέ γ' οὐδ' ὄρωσιν κακὸν ἔσται, ὅς κε λήπεται  
 νηυσὶν ἐπ' ἀργείων, ἀλλ' ἀθρόοι ὀρμηθέντες  
 βροσὶν ἐφ' ἰπποδάμοισιν ἐγείρομεν ὄξυν' ἀρηαί.  
 ἦ καὶ νέεσρος ὕδατος πάλαια κυδαλίμοιο.  
 φιλείδω τε μέγιστα, θόσαντα τε μηρόνῳ τε.  
 καὶ κρηονέω δ' ὡς λυκαμέδεια, καὶ μελαινίππον.  
 βάλῃ δ' ἱμῆρ' ἐς κλισίῳ ἀγαμέμνονι ἀφείδω.  
 αὐτίκ' ἐπειθ' ἅμα μῦθος ἔω, τετίλειο ἧ' ἔργον.  
 ἐπὶ δ' μὲν ἐκ κλισίης ῥίποδας φέρον οὗς οἱ ὑπέστη.  
 αἰθώνας ἧ' λιβητας εἰήκοσι, δώδεκα δ' ἵππους.  
 ἐκ δ' ἄγορ' αἶψα γυναικας ἀμύμονας ἔργ' ἐδύϊα  
 ἔπῃ, ἀπὲρ ὀγδοάτῳ βεισηίδα καλλιπάρῃον  
 χρυσῇ δ' ἐσθῆτι ὀδυσσεύς· δέκα πάντα τάλαντα.  
 ἔφχ' ἅμα δ' ἄλλοι δῶρα φέρον κεύρητοσ' ἀχαιῶν.  
 καὶ τὰ μὲν ἐν μέσῃ ἀγορῇ θέσαν, ἀνδ' ἀγαμέμνονι

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

μῆνιτι δ' ἄλλοι πάντες ἀολλείς ὄφρα κὶ δῶρα  
 ἐκ κλισίης ἔλθῃσι καὶ ὄρκια πῖσά τ' ἀμωμῶν  
 σοί δ' αὐτῷ τό δ' ἐγὼν ἐπιτέλλομαι ἥδ' ἐκλιθεῖς,  
 κρινάμην θ' ἐκέρητας ἀεισῆας παυαχαῶν.  
 δῶρα ἐμῆς παρὰ νηὸς ἰνδκίμην ὅσ' ἀχιλλῆϊ  
 χθίζον ὑπέστημην δώσωρ ἀγέμην τε γυναικας.  
 ταλθύβιος δ' ἐμοὶ ὦκα κατὰ στρατὸν εὐρύρην ἀχαιῶν  
 κάπρον ἰτοίμασάτω ταμίην δ' ἱί τ' ἡελίῳ τε.

Τὸν δ' ἀπαμείβοντο προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς  
 ἀβρίδην κύδισι ἀναξ ἀνδρῶν ἀγάμινον  
 ἄλλο τί περ καὶ μάλλον ὀφέλλετ' αὐτὰ πένιδα  
 ὅπποτε τις μεταπαυσωλὴ πολέμοιο γίνηται  
 καὶ μένος οὐτόσον ἦσιν ἐνὶ σῆθεσιν ἰμοῖσιν.  
 νῦν δ' οἱ μὲν κίεσθαι δεδαιγμένοις ὕς ἰδάμασιν  
 ἔκτωρ πριαμίδης ὅτι δὲ ζυὺς κύδος ἔδωκεν.  
 ὑμεῖς δ' ἐς βροτὸν ὀρύνθον, ἥ τ' ἄρ' ἐγὼ γε  
 νῦν μὲν ἀνῶρομι πῶλημι ζῆν ὕιας ἀχαιῶν.  
 νήσιας ἀκμήνους ἅμα δ' ἡελίῳ καταδύντι.  
 τυγξίεσθαι μέγα ὄρπον ἐπὴν πῶλημι θαλάσῳ.  
 πρίν δ' οὐπὼς ἄρ' ἐμοὶ γε φίλον κατὰ λαμδὸν εἶπ  
 οὐ πόσις οὐ δ' ἐβρώσις, ἵταίρην τε θνητῶν.  
 ὅς μοι ἐνὶ κλισίῃ δεδαίγμεν θ' ὄξϊ χαλκῷ.  
 κεῖται ἀνὰ πρόθυρον τιβαμμένον, ἀμφὶ δ' ἱταῖροι  
 μύρονται, τό μοι οὗτοι μετὰ φρεσὶ ταῦτα μέμνην.  
 ἀλλὰ φόνος τι καὶ αἷμα καὶ ἀργαλίῃ θ' ὀνός ἀνδρῶν  
 Τὸν δ' ἀπαμείβοντο προσέφη πολέμοιο ὄδυσσεύς  
 ὦ ἀχιλλεῦ πηλὲως ἤε μέγα φέρτατ' ἀχαιῶν.  
 κρείσσων ἔς ἐμὲν καὶ φέρτερος οὐκ ὀλίγον περ  
 ἔρχεαι, ἐγὼ δ' ἐκ σείο νοήματι κερ προβαλίσμην.  
 πολλὸν ἐπὶ πρότερος γινώμην καὶ πλείονα εἶδ' αὖτε

ἀλλὰ πάθῃσαι ἐνδοχθεῖ θεῷς ἐπὶ τῆνυσὶν ἄχαιούς,  
 σίτω καὶ οἴνοιο, τὸ γὰρ μὲν ὅτ' ἐστὶ καὶ ἄλκυ.  
 οὐ γὰρ ἀνὴρ πρόπωι ἡμάρ' ἐς ἥλιον καταδύντα.  
 ἄκμηιός σίτοιο δ' ὠθήσεται ἄντα μάχεσθαι.  
 ἔπερ γὰρ θυμῷ γὰρ μῆδοι' ἀά πολέμῳ ἴβην,  
 ἀλλὰ τε λάβῃ γῆα βαρύνεται ἢ δ' ἐκίχῃσιν,  
 δίφῃ τε καὶ λιμός· βλάβεται δ' ἐτε γούνατ' ἰόντι.  
 ὅς δ' ἐκ' ἀνὴρ οἴνοιο κερυσάμενος καὶ ἰδωδῆς,  
 ἀνδράσι δυσμνήσας πανημίει' ὡλεμίσῃ,  
 θαρσάλοισιν νύ δ' ἦτορ' ἐνὶ φρεσίν, οὐδέ τι γῆρας  
 πρὶν κάμνη, πρὶν πάντας ἐρωῆσαι πολέμοιο.  
 ἀλλ' ἄγε λαὸν μὴ σκείδασον καὶ διεῖπνον ἄνωχθι  
 ὀπλῆας, τὰ δ' ἐδῶρα ἀναξ' ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 οἷσέ τω ἐς μέσσω ἀγορῇν, ἵνα πάντες ἄχαιοι  
 ὀφθαλμοῖσιν ἴδωσι, σὺ δ' ἐφρεσὶν ἦσιν ἰαυθῆς.  
 ὅμνυ' ὅ δ' ἐπὶ τοῖς ὄρκω ἐν ἀρχείοισιν ἀνασῶς,  
 μὴ ποτὶ τῆς ἐνῆς ἐπιβήμεναι ἢ δ' ἐμυῖναι.  
 ἢ θίμεις ἐστὶν ἀναξ' ὅτ' ἀνδρῶν ἢ δ' ἐγῶ κακῶν,  
 καὶ δ' ἐσοὶ αὐτῷ θυμὸς ἐνὶ φρεσὶν ἴλασθ' ἔσω.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ τὰ σὺ δαυτὶ ἐνὶ κλισίῃς ἀριστάω  
 πείρη, ἵνα μὴ δ' ἴκῃς ἐπιδυὺς ἔχουσα.  
 ἀφείδῃ σὺ δ' ἐπεὶ δ' ἐκαστοτέρῃ καὶ ἐπ' ἄλλῃ  
 ἴσται. οὐ μὲν γὰρ τινι μισσητὸν βασιλῆα  
 ἀνδρ' ἀπαρίστασαι, ὅτε τις πρότερος χαλεπήνῃ.  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἀναξ' ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 χαίρω σὺ λαίρτιάδῃ τὸν μῦθον ἀκούσας.  
 ἐν μοίρῃ γὰρ πάντα δ' ἴκτο καὶ κατέλιξας.  
 ταῦτα δ' ἐγὼν ἰθὺς ὁμῶσαι, μέλειται δ' ἐμὲ θυμός,  
 οὐδ' ἐπιόρκῃσιν πρὸς δαίμονα, αὐτὰρ ἄχαιῶν  
 μιμνῆσθαι ἀνθ' ἑωὶ γὰρ, ἐπὶ γὰρ μὲν πρὸς ἀρετῇ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

**Ω;** ἔπειθ' ἔρριψεν ἅπ' οὐρανῷ ἄστρόν τε  
 χαρὶ πεισρίψας, τὰ χαδ' ἴκτο ἔργ' ὠφειλόμεν.  
 τὴν αὖτις ἐνάχισ' ὅθ' ἰὸν φίλον ἦεν ὀρώ  
 ἔργον ἀφ' ἑξέχοντα ὑπ' ὑρυσσέμεν ἄεθλον.  
 ὡς καὶ ἔχον ὅτε δ' ἄντι μέγας κερυθαίοις ἐκταρ-  
 ᾶρχας ὀλέεσκεν ἐπὶ πρὸς μνησὶ νέεσιν,  
 οὐδ' ὠλεμὴν λελασθὲν ἄτης ἢ πρῶτον ἀάδω,  
 ἀλλ' ἐπὶ ἀσάμῳ καὶ μιν φρένας ἐξέλιθο φύς,  
 ἅτ' ἐθίλω ἀρίσται, δομναί τ' ἀπερείσι' ἀποινά-  
 ῳ ἔρσεν πόλι' ἑμὴν διὰ καὶ ἄλλας ὄρνυθι λαούς.  
 δῶρα δ' ἔχον ὅδε πάντα παραχρῆν ὅσα τοι ἔλθω  
 χθιζὸς ἐνὶ κλισίῃσιν ὑπὲρ ἔτος δόδυσσός.  
 ἔδ' ἐθέλεις ἐπίμνητον ἐπιδόμενός περ ἄρνηθ',  
 δῶρα δέ τοι θεράποντος ἑμῆς παρὰ νηὸς ἐλόντος,  
 οἷσιν σ' ὄφρα ἴδῃαι, ὅτοι μιν ὀφείλεις δώσω.  
**Τόν** δ' ἀπαμβόμηντο προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς,  
 ἀρέσῃ κῦδίσει ἀνάξ' ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 δῶρα μὲν αἶκ' ἐθίληθα παραχρῆμεν ὡς ἐπιδέας,  
 καὶ τ' ἐχέμεν παρὰ θεῖ νῦν ὃ μνησώμεθα χαλκήρεος.  
 αὐτὰ μάλ' οὐ γάρ χρεὶ κλοτοπύειν ἰνθάδ' ἐοίτας.  
 οὐδ' ἐδ' ἐδιδάκτεον· ἐτι γὰρ μέγα ἔργον ἄριτον.  
 εἰς κέ τις αὐτ' ἀχιλῆα μετὰ πρῶτοισιν ἴδῃται,  
 ἔρχεσθαι χαλκείῳ βῶον ὀλέκοντα φάλαγγας.  
 ὡ δ' ἐτις ὑμῶν μνησμένον ἀνδρὶ μαχέσθω.  
**Τόν** δ' ἀπαμβόμηντο προσέφη πολὺμυτις Ὀδυσσεύς,  
 μὴ δ' οὕτως ἀγαθός περ ἐδ' ἐθέλει κλ' ἀχιλλεύ-  
 νησας ὄρωε προτὶ Ἴλιον ὕψος ἀχαιῶν  
 βωσὶ μαχιστομένους, ἐπὶ οὐκ ὀλίγον χρόνον ἔσται  
 φύλας ἐπὶ τ' ἂν πρῶτον ὁμιλήσωσι φάλαγγας  
 ἀνδρῶν, ἐν δ' ἐθέσιν πινύσῃ μιντο ἀμφοτέρωσιν,



ἔτοι οἳ· ἔνχόμῳ μετέφη πάντεσσι θεοῖσι.

Εἰκλυτέ με πάντοτε θεοὶ, παῖσι τε θείαισιν

ὄφρ' εἴπω τὰ με θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι ἀνῶρε.

σήμερον ἀνδραφόως ἧ μογοςόχης ἐλθευῖα

ἐκφανεῖ, ὅς πάντεσσι πεικλύνεσθιν ἀνάξια

τῶν ἀνδρῶν γενεῆς οἱ θ' αἵματ' ἐξ ἐμεῦ εἶσι.

Τὸν δ' ὀδυσσεύς εἰσα προσηύδα πότνια Ἥρη.

ἦ τις ἴσθης, οὐδ' αὖτε τέλως μύθῳ ἐπιθήσῃς.

εἰδ' ἄγε νῦν μοι ὅμοστον ὀλύμπῃ κερτερόν ὄρχην.

ἢ μὴ τὸν πάντεσσι πεικλύνεσθιν ἀνάξιν.

ὅς κεν ἐπ' ἡμᾶν τῶδε πίση μετὰ παρὰ γυναικὸς

τῶν ἀνδρῶν, οἱ σῆς ἐξ αἵματός εἰσι γένεθλης.

Ὡς φάτο, ἰδὺς δ' οὐδ' ὀδυσσεύσιν ἑνόησιν.

ἀλλ' ὅμοσε μίγαν ὄρχην ἔπειτα ἧ πολλὸν ἀάσιν.

ἦρ δ' αἶψα ἑλίπερ ῥίον οὐλύμποιο.

καρπαλίμως δ' ἵκει ἄργος ἀχαϊκόν, ἐνθ' ἄρα ἦδη

ἰφθίμῳ ἄλσχερ ἀνέλεε περσηιάδαο.

ἦ δ' ἐκύσε φίλον υἱόν, ὃ δ' ἰσθδμος εἰσέκει μεῖς.

ἐκ δ' ἄρα γε προφύως ἧ καὶ ἡλιτόμῳ ἰόντα.

Ἀλκμήνης δ' ἀπέπαυσε τόκον, ἄχθε δ' ἐλθέσθιας.

αὐτὴ δ' ἀγγελεῖα, δία κρονίῳ ἀνα προσηύδα.

Ζεῦ πατὴρ ἀργικέραυνε ἔπος τί τοι ἐν φρεσὶ θύσῃ.

ἦ δὴ ἀνὴρ γέρον ἰδὼς, ὅς ἀργείοισιν ἀνάξια.

εὐρυδίδης, ἀνέλεο παῖς περσηιάδαο.

σὸν γένος, οὗ οἱ ἀεὶ κίς ἀναστέμῳ ἀργείοισιν.

Ὡς φάτο, τὸν δ' ἄχος ὅξυνε κατὰ φρένα τυτὴ βαθείῃσιν.

αὐτίκα δ' εἴλιν' ἄτλῳ κεφαλῆς λιπαροπλοκάμοιο.

χρόμῳ φρεσὶν ἦσι, καὶ ὥμοσι καρτερόν ὄρχην,

μέσση δ' οὐλύμπόν τε καὶ οὐρανὸν ἀστερόντα.

ἄντις ἐλευσεῖσθαι ἄτλῳ ἢ πάντας ἀσῆτας.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅφρ' ἔτι καὶ βῶων περὶ θυμοῖσιν αὐτίος ἔλθων.  
 αἶκ' ἐθέλωσ' ἐπὶ νηυσὶν ἰαύειν, ἀλλὰ πν' οἷον  
 ἀσπασίως αὐτῶν γόνυ κάμψαι ὅς κε φύγησιν.  
 θήϊς ἐκ πολέμοιο ὑπ' ἰγχεὸς ἑμετέροιο.  
 Ως ἔφαθ', οἳ δ' ἰχάρησαν ἐκνήμιδος ἀχαιοί.  
 μῆνιν ἀπὸ πόντος μεγαθύμου πηλείωνος.  
 τοῖσι δ' καὶ μετέπειρ' ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 αὐτόθιρ' ἐξέειπεν, οὐ δ' ἐν μέσσοισιν ἀνασῆς.  
 ὦ φίλοι ἦρώες δαυαοὶ θεράποντες ἄρησθε.  
 ἱσάοτ' ὅ μιν καλὸν ἀκνέμεν, οὐ δ' ἐῖοικεν  
 ὄβδάλειν, χαλιπὸν γὰρ ἐπιστάμεόν περ ἰόντα.  
 ἀνδρῶν δ' ἐν πολλῷ ὁμάδῳ πῶς κίεν τίς ἀκνέουσα.  
 ὃ ἵπποι, βλάβεται δ' λιγύς περ ἰὼν ἀγορητής.  
 πηλείδῃ μ' ἰγῶν ἐνδείξομαι, αὐτὰρ οἳ ἄλλοι  
 σύνθεσθ' ἀργεῖοι, μῦθον τ' εὖ γυνώτε ἴκαστος.  
 πολλὰ κί δ' ὅ μοι τῆτορ' ἀχαιοὶ μῦθον ἔειπον.  
 καί τε μενέκλεισθον, ἰγὼ δ' οὐκ ἀίτιός ἐμι.  
 ἀλλὰ βούε καὶ μοῖρα καὶ ἡεροφῶϊς εἰεννύς,  
 οἳ τε μοι ἐν ἀγορῇ φρεσὶν ἔμβαλον ἀγχιστὶν ἄτλω,  
 ὅ μιν ἔειπ' ὅτ' ἀχιλῆος γέρας αὐτὸς ἀπηνύρων.  
 ἄλλὰ τί κεν ῥέξαιμι θεὸς σέξῃ πάντα τελευτᾷ  
 πρὶς βῆα δῖος θυγάτηρ ἄτη, ἢ πάντας ἅαται  
 οὐλαμένη, τῆς μὲν θ' ἀπαλῇ πόδες, οὐ γὰρ ἐπ' οὐδ' οἷον  
 πίνυται, ἀλλ' ἄρα ἦγε κατ' ἀνδρῶν κράτα βαίνοι.  
 βλάπῃ γ' ἀνθρώπων, κατὰ δ' οὐρ ἱερόν γε πέδισον  
 καὶ γὰρ δὴ νύποτε ἦν ἀάσασθαι τὸν περ ἄριστον  
 ἀνδρῶν, ἢ δ' ἐθίων φασιν ἔμμεναι, ἀλλ' ἄρα καὶ τὸν  
 ἦρ' ἠλυσ' εὐσθῆ, σθεσφροσύνῃς ἀπάτησιν,  
 ὅ μιν ἔειπ' ὅτ' ἔμελλε βίω ἥρα κληῖω  
 ἀλκμήνῃ τέξειν εὐσεφάνῃ ἐνὶ θύβῃ.

αὐτὰρ δ' βῆ παρὰ θῖνα θαλάσσης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 σμυρδάλια ἰάχων, ἔρσιν δ' ἦρωας Ἀχαιοὺς  
 καί ῥ' ὅππῃ τὸ πάρος γε νῆρ' ἐν ἄλῳ μίνισσεν,  
 οἱ τε κυβερνῆται καὶ οἱ ἔχον οἰήσιν αἰνῶν.  
 καὶ ταμίαι παρὰ νηυσὶν ἴσων σίτοιο δ' ὀτῆρις.  
 καὶ μῆρ' οἱ τότε γ' ἔς ἀγορὴν ἴσων, οὐνέκ' Ἀχιλλεύς  
 ἐξεφάνη, δῆρ' οὖν δὲ μάχης ἐπίπασσ' ἀλκιρηνῆς.  
 τῷ δ' ὁ δῦο σκάζοντε βάτῳ ἄρεος θεράποντε·  
 τυδεΐδης τε μνηστῆρόλιμ', καὶ δῖος Ὀδυσσεύς,  
 ἔρχετο εἰδομένω, ἔτι γὰρ ἔχον ἔλκεα λυγρὰ,  
 καὶ δὲ μετὰ πρώτῃ ἀγορῇ ἴσον ἐκίοντο.  
 αὐτὰρ δ' ἐδύτατο ἦλθεν ἄναξ Ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἔλκεος ἔχων, καὶ γὰρ τὸν ἐνὶ κρατερῇ ὕσμινε.  
 οὕτω κοῶν Ἀντιφωρίδης χαλκῷριϊ θυρί,  
 αὐτὰρ ἐπὶ δ' ἢ πάντοσ' ἀολλίδησσαν Ἀχαιοί,  
 τοῖσι δ' ὀνίσταμην μετέφῃ πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς.  
 ἀφείδῃ, ἢ ἄρτι τὸ δ' ἀμφοτέροισιν ἄρσιν,  
 ἐπλῆσσοι καὶ ἐμοί, ὅτε νῶϊππῃ Ἀχινυμένω κῆρ  
 θυμοδόρῳ εἶδῃ μνηστῆρα μὲν εἴνεκα κούρης,  
 τῇρ' ὄφελ' ἐν νύεσσι κατακτάμεν ἄρτιμιν ἰῶ.  
 ἦ μάλα τοῖ, ὅτ' ἐγὼν ἐλόμενῳ λυρνησὸν ὀλίγας.  
 τοῖ κ' οὐ πόσοι Ἀχαιοὶ ὁδ' ἀξ' ἔλθῃ ἄσπερον θυδία.  
 θυσμνέων ὑπὸ χερσὶν ἐμὴν ἀπομνηνίσσαντο,  
 ἔκτοε μὲν καὶ πρῶσι τὸ κέρδιον, αὐτὰρ Ἀχαιοὺς  
 δῆρ' οὖν ἐμῆς καὶ σῆς εἶδος μνήσεσθαι οἶδ'·  
 ἀλλὰ τί μὲν προτιτύχθαι ἰάθῃ μὲν Ἀχινυμένοισι περ.  
 θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι φίλῃν διαμάσσαντο δ' ἀνάγκη,  
 νῦν δ' ἔστω μὲν ἐγὼ παύω χόλον, οὐδέ τι μίχῃ  
 ἀσκελίως αὐτὶ μνηστῆρά μιν, ἀλλ' ἄγε θάσσον,  
 ἔφωρον πόλεμόνδε κερκαυμόωντας Ἀχαιοὺς,

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Τ. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Εὐδῖος καμισάσης ἀχιλλεῖ τὰ ὅπλα παρὰ ἑφαι-  
σου, σωνιγαῶν ἐς ἐκκλησίαν τὸς ἑλλῶας ὁ  
ἦρως ἀπὸ ῥήσιν ποιεῖται τῆς μῆνιδος, καὶ λαμ-  
βάνει τὰ δῶρα ἀπὲρ αὐτῷ ἀγαμέμνων ἐπέχρη. Πο-  
φήν ᾧ ἀνελθόντων ἐκείνων, αὐτὸς ἀσιτῶ παραμείνας  
ὁπλίεται, καὶ στρατεῖαν ἐξάγει ἐπὶ τὸν πόλιμον, ὁ δὲ  
ἦσσερος τῶν ἱππῶν αὐτῷ ξάνθος, τῆν ἐθμίνην αὐτῷ ἀγαί-  
ρισιν μαντεύεται, καὶ ἐπιπλήττει.

ΙΔΙΑΔΟΣ .Τ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ταῦ δ' ἀπὲλκε χόλῳ, καὶ ἐκθορεδίῳ ἀχιλλεύς.

Ὡς μὲν κροκόπειπλος ἀπ' ὠκείας  
νοῖο ῥοάων  
ὦρυνθ', ἵν' ἀθανάτοισι φῶδες φέ-  
ροι, ἡ δὲ βροτοῖσιν.  
ἦ δ' ἐς νῆας ἵκανε θεῶ πάρα, δῖος  
ρα φέρυσσε.

ἦρε ᾧ παρόκλῳ περικέμνητον ὅς φιλῶν ἦν,  
κλαίοντα λιγέως, πόλιν δ' ἀμφ' αὐτὸν ἵσταυροι  
μύρονθ', ἡ δὲ ἐν τοῖσι παρίστατο δῖα θιάων,  
ἦν τ' ἄρα ὁ φῶ χερσὶ, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν,  
Τέκνον ἱμόν, τὸ τοῦν μὴν ἑάθ' μὴν ἀχνύμενοί περ  
κεῖσθαι, ἐπεὶ δ' ἡ πρῶτα θεῶν ἰότητι διαμολῶν.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔνθα μὲν ἠΐθεοι καὶ παρθένοι ἀλφεσίβοιοι.  
 ὦρχευντ' ἀλλήλων ἐπὶ καρπῷ χεῖρας ἔχοντες,  
 τῶν δ' αἱ ἤ λεπλῆς δόρυς ἔχον, οἷοι χιτῶνας  
 ἔαθ' εὐνήτος ἦεν εἰλβοντας ἐλαίῳ.  
 καὶ ῥ' αἱ μὲν καλὰς σφάντας ἔχον, οἷοι μαχαίρας  
 ἔχον χρυσείας ἐξ ἀργυρέων τελαμώνων.  
 οἷοι δ' ὅτι μὲν βρέξασκον ἐπισταμένοισι πόδισι  
 ῥ' ἴα μάλ', ὥς ὅτι τις ῥοχὸν ἄρμιλλον ἐν παλάμῃσιν  
 ἔξομεν ὅ κ' ἐραμύνει περὶ σῆμα αἴκε θήσιν.  
 ἄλλο τε δ' αὖ βρέξασκον ἐπὶ σίχας ἀλλήλοισι.  
 πολλοὺς δ' ἰμερόντα χορὸν περὶ σταθ' ὀμίλῳ  
 τερπόμενοι, οἷοι δ' ἡ κυβιστητῆρας αὐτῶν  
 μολπῆς ἐξάρχοντες, ἰδίνεον κατὰ μέγας.  
 ἐν δ' ἐτίθει ποταμοῖο μέγα δένος ὠκεανοῖο.  
 ἀντὶ γὰρ παρ' πυμάτῳ σάκιος πύκα ποταμοῖο  
 αὐτὰρ ἐπεδὴ τεύξε σάκος μέγατε σιβαρόν τε,  
 τεύξε ἄρα δι' θώρηκα φαεινότερον πυρὸς αὐγῆς.  
 τεύξε δ' ἐπὶ κωίῳ βειαρὴν κροτάφοις ἀραρυῖαν  
 καλὴν, διαδαλέῳ, ἐπὶ ᾧ χρύσειοι λοφὸν ἔκει.  
 τεύξε δ' ἐπὶ κνημίδας ἱανὴν κασιγέροιο.  
 αὐτὰρ ἐπὶ πάνθ' ὅπλα κάμει κλυτὸς ἀμφιγυήης  
 μηρὸς ἀχιλλῆος θῆκε προπάροιθον αἶρας.  
 ἥ δ' ἴρηξ ὥς ἄλτο κατ' οὐλύμπῳ νιφόντι.  
 τόδ' ἔχεν μαρμαίροντα παρ' ἠφαιστοῖο φέρυσσιν.

ΥΓΟ,



ἐσθήκη ὃ καίμαξι διαμπερές ἀργυρέησιν.  
 ἀμφὶ δ' κυανέω κάπρον, περὶ δ' ἔρκυς ἔλαση  
 κασιτέρη, μία δ' οἷη ἀταρπιδὸς ἐν ἐπ' αὐτῇ,  
 τῇ νίατον ὀφρῆς, ὃ τε βυρόων ἄλωήν  
 παρθινικὰ δ' ἐκὼς ἡβίοι ἀταλὰ φρονέοντο,  
 πλωτοῖς ἐν ταλάροισι φέρον μελινδία καρπὸν.  
 τοῖσιν δ' ἐν μέσοισι, πᾶσι φόρμιγγι λιγέῃ  
 ἡμερόν κιδάειρε λῖνον δ' ὑπὸ καλὸν ἄειδε  
 λιπῆαλήν φωνῇ, τοὶ δ' ῥῆσαντο δὲ ὁμαρτῇ,  
 μολπῇ τ' ἰὺ γὰρ τι ποσὶ σκαίροντο δὲ ἵποντο.  
 ἐν δ' ἀγέλλω ποίησι βοῶν ὀρθοκραράων  
 αἱ δ' ἐβόης χρυσοῖο τιτόνυχας κασιτέρη τε.  
 μυκηθμῷ δ' ἀπὸ κόπρης ἐπεσδύοντο νομόνδε.  
 παρ' ὠταμὸν κελάδοντα, περὶ ῥοδανὸν δανακίδα.  
 χρύσοι δ' ἐνομήεις ἀμ' ἐσχεῶντο βοῖσι  
 τίσαρτο, ἐν δ' ἐσφὶ κύνες πόδας ἀργοὶ ἵποντο  
 σμερδαλία δ' ἐλόντι δ' ἐν πρώτῃσι βοῖσι,  
 ταῦρον ἐρύμνηλον ἐχέτω, ὃ δ' ἐκαστὰ μεμυκῶς  
 ἔλκω, τὸν δ' ἐκύνες μετεκίαθον ἢ δ' αἰῆνοί,  
 τὸ μὲν ἀναρρῆξαντε βοὸς μεγάλῳ βοείῳ  
 ἔγκαστα καὶ μέλαν αἶμα λαφύαζον, οἱ δ' ἐνομήεις  
 αὐτῶς ἐν δ' ἐκὼς ταχίος κύνας ὀρύνοντο.  
 οἱ δ' ἦτοι δακύνειν μὲν ἀπερωπῶντο λεόντων,  
 ἱστᾶμενοι δ' ἐμὰ ἱγγύς ὑλάκτιον, ἐκτ' ἄλειοντο.  
 ἐν δ' ἐνομόν ποίησι πεικλυτὸς ἀμφιγυῖας  
 ἐν καλῇ δ' ἡσυχίᾳ μέγαν οἶων ἀργεννάων.  
 σταθμούς τε κλισίας τε κατηριφίας ἰδὲ σπηχεύς,  
 ἐν δ' ἐχθρὸν ποίκιλλε πεικλυτὸς ἀμφιγυῖας.  
 τοῖς ἱκνῶν οἰόν ποτ' ἐπὶ κνωσῶ δ' ὑρέειν,  
 ἐκείδ' αὖτε ὕσκησιν καλλιπλοκάμῳ ἀειδῶν.

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ.

σπασμένοι δ' ἰμάχοντο μάχῃ περὶ ταμοῖο παρ' ὄχλου  
 βάλλον δ' ἀλλήλους χαλκήρεσιν ἐρχέμενοι,  
 ἔρδ' ἔεις ἐν ᾧ κυδοιμὸς ὁμίλιον, ἔρδ' ὄλεσ' ἡγήρ.  
 ἄλλον ἴδον, ἔχον νεύτατον, ἄλλον ἄντον.  
 ἄλλον τιθνέμενα κατὰ μόρον ἔλκε ποδὶ ἰῖν,  
 εἶμα δ' ἔχ' ἀμφ' ὥμοισι διαφοίνον αἵματι φρεσὶν.  
 ὁμίλιον δ' ὥς τι ἴδον βροτοὶ ἡδ' ἰμάχετο.  
 νεκροὺς τ' ἀλλήλων ἔρπον κατὰ τελεσθῶτας.  
 ἔνδ' ἐτίθει νεὸν μαλακὴν πίεσαν ἄρυσαν,  
 δὴρῆσαν τρίπολον, πολλοὶ δ' ἀροτῆρες ἐν αὐτῇ.  
 ἵνυχα δινδύνοντο βλάστηον ἔνθα καὶ ἔνθα,  
 οἶδ' ὁπότε σρέψαντο βίβλια τέλθον ἀρούρης.  
 τοῖσι δ' ἄπειτ' ἐν χερσὶ δέπας μελινδῆος οἶνον.  
 εὖσκεν ἀνὴρ ἐπιών, οἶδ' ἐσρέψαντο ἀν' ὄγκον.  
 εἰμῖνοι νύθοιο βαθύης τέλθον ἰκίεσθαι,  
 ἡ δ' ἐμυλαίνετ' ὀπιθεν ἀρηρομένη ᾗ ἰώκει  
 χρυσείῃ περὶ ἔσθ' αὖ, τὸ δ' ἡ περὶ θαυμ' ἐτίτυκτο.  
 ἔνθ' ἐτίθει τίμενος βασιλῆϊον, ἔνθα δ' ἔειπτο  
 ἔμωι ὀξείας φρεσὶ πάντας ἐν χερσὶν ἔχοντο.  
 φράγματα δ' ἄλλα μὲν ὄγκον, ἐπὶ τειμα πίπεν ἔρατο  
 ἄλλα δ' ἀμαλλοδῆτηρες, ἐν ἐλιδ' αὐοῖσι δέοντο.  
 φρεσὶ δ' ἀμαλλοδῆτηρες ἐφίστασαν, αὐτὰρ ὀπιθεν  
 παῖδες φραγμδύνοντο, ἐν ἀγκαλίδεσσι φέροντο.  
 ἀσπίρχεις παρέχον βασιλῆος δ' ἐν τοῖσι σιωπῇ  
 σκῆπτρον ἔχων ἐσέκει ἐπ' ὄγκον γηθόσματος κῆρ.  
 κήρυκας δ' ἀπάνδυνον ὑπὸ φρεσὶ δαῖτα πίνοντο.  
 βούν δ' ἰερόσαντο μέγαν ἀμφίπον, αἶδ' ἐγνώσκοντο  
 λείπον ἐρίθοισι, λδοῦκ' ἀλφίτα πελὰ πέλωον,  
 ἔνθ' ἐτίθει σφυλῆσι μέγα βρήθσαν ἀλφόν,  
 πελῆ, χρυσείῃ, μέλωνες δ' ἀνὰ βόρυντες ἴσαν.

κήρυκας δ' ἄρα λαὸν ἐρύτουσιν, δι' ᾧ γέροντος  
 εἶατ' ἐπὶ ξεινοῖσι λίθοις ἐξῶ ἐνὶ κύκλῳ·  
 σκῆπτρα δ' κηρύκων ἐν χείρσ' ἔχον ἡεροφάνων,  
 τοῖσιν ἔπειτ' ὕψιστον ἀμοιβῆδός δ' ἐδίδουσαν.  
 κίττο δ' ἄρ' ἐν μέσοισι δύο χρυσοῖο τάλαυτα λαί-  
 λωδ' ὀδῶν, ὅς μετὰ τοῖσι δίκλῳ ἰδύντατα ἔπην.  
 τῆν δ' ἐτέρῳ πόλιν ἀμφὶ δ' ὤω στρατοὶ εἶατ' λαῶν,  
 τόλχεσι λαμπόμυροι, δίχα δ' ἐσφισιν ἠνδῶν· βυλῆ,  
 ἢ ἐδιαπραθείην ἢ ἀνδιχα πάντα δάδαυαι  
 κτῆσιν ὅσων πολίεσσιν ἐπύρατον ἱνὸς ἐίργα-  
 σίδ' οὐπω πέθοντο, λόχῳ δ' ὑπὲρ ὠρήσοντο.  
 τεῖχος μὲν ῥ' ἄλσχοί τε φίλαι καὶ νήπια τέκνα  
 ῥύατ' ἐφισαότο, μετὰ δ' ἀνέρες οὓς ἔχε γῆρας·  
 οἱ δ' ἴσαν, ἔρχε δ' ἄρα σφιν ἄρης καὶ παλλὰς ἀθήνη,  
 ἔμφω χρυσείῳ, χρύσῳ δ' εἴματα ἔδωκεν,  
 καλὰ καὶ μέγала σὺν τόλχεσιν, ὥς τε θεώπιδ  
 ἀμφὶς ἀείηλω, λαοὶ δ' ὑπολίθοντες ἦσαν.  
 οἱ δ' ὅτε δὴ ῥ' ἴκοντο ὅθι σφίσιν εἴκει λελυγμένα  
 ἐν ποταμῷ ὅθι τ' ἄρδ' μὸς ἔλῃ πάντεσσι βροτοῖσιν·  
 ἐνθ' ἄρα τοὶ γ' ἴδοντ' ἐλυμένον ἀΐθοπι χαλκῷ  
 τοῖσι δ' ἔπειτ' ἀπάνευθε δύο σκεποὶ εἶατ' λαῶν  
 δέ γ' ὧμοι ὁπότε μῆλα ἰδοῖατ' καὶ ἔλικας βούς·  
 οἱ δ' ἐπὶ τὰ χαλκὰ προγέγοντο, δ' ὤω δ' ἅμ' ἐποντο νομῆες,  
 τερπόμυροι σὺν εἰξί, δόλῳ δ' οὕτῃ προνόησαν·  
 οἱ μὲν τὰ προῖδ' ἐντόντο ἐπέδραμον, ὧκα δ' ἔπειτα  
 τῶνον τ' ἀμφὶ βαῶν ἀγέλας καὶ πώια καλὰ  
 ἀργυρῶν δ' ὅων, κτεῖνον δ' ἐπὶ μελεβοτήρας·  
 οἱ δ' ὥς ὤω ἐπύθοντο πολὺν κέλαδ' ὄν παρὰ βυσίῳ  
 ἱράων προπάροιθε καθ' ὧμοι, αὐτίκ' ἐφ' ἵππων  
 δ' ἄντο, ἀερίπυδ' ὦν μετ' ἐκείθον, ὧκα δ' ἴκοντο,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅπως ἔφρασεός γ' ἰθὺς καὶ ἔργον ἄνοιός.  
 χαλκὸν δ' ἐν πυρὶ βάλλειν ἀτρεΐα κασιγέτρων τε,  
 καὶ χρυσὸν τιμῆντα καὶ ἄργυρον, αὐτὰρ ἔπειτα  
 θῆκεν ἐν ἄκμοσίνω μίγαν ἄκμονα, γυῖός γ' ἔχει  
 φρασεῖα κρατερὸν, ἐτέρηφι δ' ἐγὼ πυράρην.  
 τοῖσι δ' ἐπρώεσσι σάκος μίγα τε σιβαρόν τε,  
 πάντες δὲ δουδ' ἄλλων, περὶ δ' ἄντυγα βάλλει φαεινὴν  
 βίπλακα μαρμαρέην, ἣ δ' ἄργυρεον τελαμῶνα.  
 πέντε δ' ἄρ' αὐτῷ ἔσαν σάκκος πλῆχες, αὐτὰρ ἐν αὐτῷ  
 ποίη δαΐδαλα πολλὰ ἰδυίῃσι πραπίδασι.  
 ἐν μὲ γαῶν ἔτιυξ ἐν δ' οὐρανὸν, ἐν δ' ἐθέλασσαν.  
 ἡλίου τ' ἀκάμουντα σελήνῃ τε πλῆθυσσαν.  
 ἐν δ' ἐπὶ τείρια πάντα τάτ' οὐρανόσ' ἐσιφάνωτα.  
 πληιάδας θ' ὑάδας τε, τό τε δίνος ὠρίωνος.  
 ἄρκτον θ', ἦν καὶ ἄμαξον ἐπίκλησιν καλέουσιν.  
 ὃ τ' αὐτῷ σρέφεται, καὶ τ' ὠρίωνα δοκύνει.  
 οἷη δ' ἄμμορός ἐσὶ λειψῶν ὠκεανοῖο.  
 ἐν δ' ἐδύω πώησε πόλεις μερόπων ἀνθρώπων  
 καλὰς, ἐν τῇ μὲν ῥὰ γάμοιτ' ἔσαν εἰλαπίναι τε.  
 νύμφας δ' ἐκ θαλάμῳ δαΐδωρ ὑπολαμπιμύων.  
 ἠγίνεον ἀνὰ ἄστυ, πολὺς δ' ὑμέναιος ὄρωρε.  
 κῆροι δ' ὄρχησθ' ἐδίνεον, ἐν δ' ἄρα τοῖσιν,  
 εὐλοὶ φόρμιγγ' ἐτε βοήν' ἔχον, αἱ δ' ἐγὼ αἶκας  
 ἰσάμβραι θαύμαζον ἐπὶ προθύροισιν ἐκάσθ.  
 λαοὶ δ' εἰν ἀγορῇ ἔσαν ἀθρόοι, ἐνθα δ' ἐνέκθε  
 ὠρώρε, δύω δ' ἀνδρὲς ἐνέκθεον εἵνεκα ποινῆς  
 ἀνδρὸς ἀποφθιμένον, ὃ μὲν εὐχθεὶς πάντ' ἀποδ' ἔννε.  
 δῆμω πιφάυσκων, ὃ δ' ἀναίνθε μῆδ' ἐν ἑλιδαι.  
 ἄμφω δ' ἰλιδῷ ἐπὶ ἴσσοι πεῖραρ ἑλιδαι.  
 λαοὶ δ' ἀμφοτέρωσι ἐπύπνον ἀμφὶς ἀρωγοί.

ἄχνηται, οὐ δ' ἐτι οἱ δύνανται χρασιμῆσαι ἴσασιν.  
 κούρῳ, ἦν ἄρα οἱ γέρας ἔξιλον ὕιες ἀχαιῶν.  
 τῆρ' ἄτ' ἐκ χερῶν ἔλθο κρείων ἀγαμέμνων,  
 ὅτοι οἱ τῆς ἀχέων φρένας ἐφθιν, αὐτὰρ ἀχαιούε  
 ῥῶες ἐπὶ πρύμνῃσιν ἐείλιον, οὐδ' ἐ θύραζε  
 εἶδον ἐξίεναι, τὸν δ' ἐλίποντο γέροντες  
 ἀργείων, καὶ πολλὰ πεικλυτὰ δῶρ' ὀνόμαζον,  
 ἐνθ' αὐτὸς μὲν ἔπειτ' ἠνύνατο λαίηδ' ἀμύναι,  
 αὐτὰρ δ' ἄτροκλον περὶ μὲν τὰ ἐ τούχια ἴσιν,  
 πέμπε δ' ἐ μιν πόλεμόνδε, πολλὴν δ' ἅμα λαὸν ὄπασεν.  
 πᾶν δ' ἤμαρ μάρνοντο περὶ σκαῖῃσι πύλῃσι,  
 καὶ νύκτιν αὐτῆμαρ πόλιν ἐπράθον, ἐμὴ ἀπόλλων  
 πολλὰ κακὰ ῥέξοντα μνηοιτίῃ ἄλκιμον ἦόν,  
 ἔκταν' ἐνὶ προμάχοισι καὶ ἔκτοε κῆδος ἐδῶκε.  
 τοῦνυν αὖ νῦν τὰ σά γούναθ' ἰκάνομαι αἴκ' ἐθέλησθαι  
 ὕπν' ἱμῶ ὠκυμόρῳ δόμῳ ἀσπίδα καὶ τειφάλλειαν.  
 καὶ καλὰς κνημίδας ἐπισφυρίοις ἀραρυίας.  
 καὶ θώρηχ', ὃ γὰρ ἦν οἱ ἀπώλεσε πιδὸς ἱταῖρος,  
 ῥωσὶ δαμνεί, ὃ ὃ κεῖται ἐπὶ χθονὶ θυμὸν ἀχούων.  
 Τύρ δ' ἠμείβετ' ἔπειτα πεινυλὺς ἀμφιγυφός.  
 θάλλεσθ', μή τοι ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῆσι μιλόντων.  
 αἱ γὰρ μιν θανάτοιο δυσσυχέος ὦδε δυνάμειω  
 νόσφιν ἀποκρύψαι, ὅτε μιν μόρος αἰνὸς ἰκάνῃ.  
 ὣς οἱ τούχια καλὰ παρέσται δῖά τις αὐτοῖς  
 ἀνθρώπων πολέων θαυμάσεται, ὅς κεν ἴδῃται.  
 ὣς ἐπὶ τῇρ' αὖτε μὲν λίπερ' αὐτῆ, βῆ δ' ἐπὶ φύλας.  
 τὰς δ' ἐς πῦρ ἔτρεψε, κελδυσέτε ἱργάζεσθαι,  
 φῦσαι δ' ἐν χράνοισιν ἐίκοσι παῖσαι ἱφύων,  
 παυτοίω ἐψηροσὶν αὐτῆν ἐξανείσσαι,  
 ἄλλοτε μὲν ἀπὸ δ' ὀρεῖ παρήμεναι, ἄλλοτε δ' αὐτῆ.



λάρνακ' ἴς ἀργυρίῳ συλλέξας· ὅς τ' ἐπὶ νειότη·  
 παύσῃ δ' ἀμφὶ πρόσωπα, καὶ ἄμφω χεῖρ' ἀπομόρῃ·  
 αὐχίνα τι σβαρὸν, καὶ σήθια λαχρήνεται·  
 δὴ δ' ἐχέτων ἔλε ᾧ σκῆπτρον ταχύ· ἔη δ' ἐθύραζε  
 χαλκύνων, ὑπὸ δ' ἀμφίπολοι ῥώοντο ἀνακτι  
 χύσσεια (ῥῆσι, νεήνισιν) ἰοικῦναι·  
 τῆς ἐν μῶν νόος ἰσὶ μετὰ φρεσίν, ἐν ᾧ καὶ αὐδὴ·  
 καὶ δίνος, ἀθανάτων ᾧ θεῶν ἀπὸ ἔργα ἴσασιν,  
 αἱ μὲν ὕπαιθα ἀνακτος ἐπεὶ πνυνον, αὐτὰρ ὁ ἔρρωρ  
 πλησίον ἔθα θέπς πρὸς ἑρῆν· ἴτε φαίνου,  
 ἐντ' ἀρά οἱ φῦ χεῖρ' ἔπος τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε·

Τίπῃ θέτι ταυῦπέπλε ἰκάνης ἡμέτερον δῶ,  
 αἰδοίη τέ φίλητε, πάρος γε μὴν οὐπ' θαμίστης,  
 αὐδὰ ὅπ' φρονίης, τελείσαι δ' ἐμε θυμὸς ἀνωγερ  
 ἐδύναμαι τελείσαι γε, καὶ ἐτετελεσμένον ἔσθρ·

Τόν δ' ἡμέβετ' ἔπετα θέπς καταδάκρυ χέουσα,  
 ἥφαις ἡ ἄρα δὴ πρὸς ὅσαι θεαὶ ἴσ' ἐν ὀλύμπῳ·  
 τρῶν δ' ἐνὶ φρεσίν ἦσιν ἀνίστατο κήδεια λυγρὰ,  
 ὅσ' ἑμοὶ ἐκ πασίων, κρονίδης (ἵν' ἀλγὶ ἔδωκεν,  
 ἐκ μὲν μ' ἀλλῶν ἀλιδῶν ἀνδρὶ δάμαστρον,  
 αἰακίδῃ πηληϊ, καὶ ἔτλῳ ἀνέρος δυνήρ,  
 πολλὰ μάλ' ἐκ ἐθείλῃ· ὁ μὲν δ' ἡγήραϊ λυγρῶ,  
 κεῖται ἐνὶ μεγάροις ἀρήμενος, ἀλλὰ δ' ἐμοὶ νῦν·  
 ἔχον ἐπεί μοι δῶκε γενέσθαι τε· τὰφ' ἡμῶν τε  
 ἔξοχον ἡρώων· ὅδ' ἀνὶ δρᾶμῳ ἔρνεϊ ἴσθς,  
 τὸν μὲν ἰγὰ θρέψασα φυτὸν ὥς λωπῶ ἀλωῆς·  
 νηυσὶν ἐπιπρόεσσα κερωνίσιν ἴλιον ἴσσω·  
 τρῶσιν μαχασόμενον, τόν δ' ἔχ' ὑποδίζομαι ἀντιπρ,  
 οἷα δ' ἐνὶ στήθεσιν, δόμεν πηληϊον ἴσσω·  
 ὄφρα δ' ἐμοῖ (ῥῆσι καὶ ὄφρα φάρος ἡελίοιο

ὄχινται·

παλὴ· τὼ ὅπου πεικλυσὲς ἀμφιγυήεις.  
 ἔν τ' ἀρά οἱ φῦ χερὶ, ἔποστ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαϊ.  
 τίτῃ θίπῃ ταυῦ πέπλε, ἰκάνεις ἡμίτρον δῶ;  
 αἰδοίητε φίλητι πάρος γε μ' οὔτε θαμίβεις.  
 ἀλλ' ἔπειο προτέρῳ, ἵνα βί παρξείνεια θέω.  
 Ως ἄρα φωνήσασσι, πρὸς ὧ ἄγε δῖα θιάρην.  
 τὼ μ' ἐπητα καθιῖσσαν ὧ θρόνον ἀργυροῦλῳ.  
 καλεῖ δ' αὖθις, ὑπὸ ᾧ θρόνον ποσσὶν ἦεν.  
 κίελ' οὖ δ' ἔφρασον κλυτοτέχνῳ, ἐπὶ τε μῦθον.  
 ἔφρασι πρόμολ' ὦδε, θίπε νύπσι το χατίρ.  
 Τὴν δ' ἡμέλειτ' ἐπείτα πεικλυσὲς ἀμφιγυήεις.  
 ἦ ῥα νῦ μοι δῖνῃ τε καὶ αἰδοίῃ θεὸς ἔνδον.  
 ἔμ' ἰσάωσ' ὅτε μ' ἄλγος ἀφίκοι τῇλε πισόντα.  
 μηρὸς ἐμῆς ἰότητι κωώπιδος, ἥ μ' ἐθέλῃ σκε  
 κρύψαι χολὸν ἰόντα, τότε ἂν παλθὼν ἄλγος θυμῷ.  
 εἰ μὴ μ' οὐρῶμένη τε θίπις θύπεδ' ἐξατο κόλπῳ.  
 οὐρῶμένη θυγατρὴ ἀφοξρόν ὠκεανοῖο.  
 τῇσι παρ' ἐνάετο δὲ χολκευον δαίδαλα πολλὰ.  
 πόρπας τε, γναμπῆας δ' ἑλίκας, κάλυκας τε καὶ ὄρμυς.  
 ἐν αὐτῇ γλαφυρῷ, περὶ ᾧ ῥόος ὠκεανοῖο.  
 ἀφρῷ μορμύρων ῥέου ἀσπρος, ὅδ' ἐπὶ πρὸς ἄλλῳ.  
 ὅδ' ἐπὶ οὔτε θινῶν οὔτε θνητῶν ἀνθρώπων.  
 ἀλλὰ θέλεις τε καὶ οὐρῶμένη ἔαν αἶμα ἰσάωσας.  
 ἔν νῦν ἡμέτερον δόμον ἔκδ'. ἔλθ' με μάλα χερσὶ.  
 σάντα θεὶ καλὶ πλοκάμῳ ἰώχρῃα τίηεν.  
 ἀλλὰ σὺ μ' νῦν οἱ παρῶν ξανθὴ καλὰ.  
 ὅφρ' ὄν γ' ὧ φύας ἀπὸ θεόμα, ἐπλά τε πάντες.  
 ἔκ καὶ ἀπ' ἀκμὸς βίτοιο, πέλωρ αἶψαν ἀνέστη  
 χολινῶν. ὑπὸ ᾧ κνήμαι ῥώοντο ἀφαιαί.  
 φύας μ' ῥ' ἀπαλινυθε τίς περὶ πύρρ' ἐπλά τε πάντες.

ἔς πόδας ἐκ κεφαλῆς καθύπερθε ὃ φάρι λυκῷ.  
 παννύχιοι μὲν ἔπητα πόδας ταχύν ἄμφ' ἀχιλῆα  
 κυρμιδόνες παρὸ κλῆν ἀναισώχοντο γοῶντόν·  
 Ζεὺς δ' ἤρῳ προσέειπε κισσηνῆτι ἄλοχόν τε·

Ἐπὴρ ἔσας καὶ ἔπητα βοῶπις ποτνια ἦρῃ·  
 ἀνέσασ' ἀχιλῆα πόδας ταχύν, ἥ ῥά οἱ σὺ  
 ἐξ αὐτῆς ἱγνέοντ' ἀρνησάμενοι ἀχαιοί·

Τὸν δ' ἠμέμβετ' ἔπειτα βοῶπις ποτνια ἦρῃ·  
 αἰνότατε κρονίδῃ τοιοῦτον τὸν μῦθον ἔειπες·  
 καὶ μὲν δ' ἤ περ τις μέλει βροτῶν ἀνδρὶ τελευτῇ·  
 ὅς περ θνητὸς ἐστὶ καὶ ὅτ' οἶσσι μέλαια οἶδε·  
 πῶς δ' ἡ ἔγωγ' ἢ φημί θεῶν ἐμμὴν ἀφίσῃ·  
 ἀμφοτέρων, γυνῆτι καὶ οὐνεκῇ σὴ παράκλειπς  
 κέκλημαι, σὺν δ' ὅπασιν μετ' ἀθανάτοισιν ἀνάσσεις,  
 ὅκ' ὄφελον βῶτασι κατὰ στήθεσσι κατὰ ῥαυτά·

Ὡς οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγέροντο·  
 ἠφαιόιο δ' ἵκανε δόμον θέτις ἀργυρόπιδας  
 ἀφθιπν' ἀσπρόεντα μεταπρεπὲς ἀθανάτοισι  
 χαλκίον, ὃν ῥ' αὐτὸς ποιεῖσθαι κυλλοποδῶρ·  
 τὸν δ' εὖρ' ἰδὲ δῶντα ἱλίου πόλιν περὶ φύσας  
 σπινθύνοντα φέροντας γὰρ εἰκασί πάντας ἔτινχιρ·  
 ἑσάμεναι περὶ βίχον, ἐϋσταθὲς μεγάροιο  
 χρύσεια δ' ἐσφ' ὑπὸ κύκλῳ ἐκείῳ πυθμένι θῆκεν·  
 ὄφρα οἱ αὐτόμαρσι θεῶν δύνοντα ἀγῶνα·  
 ὧ δ' αὖτις πρὸς δῶμα νεοῖα καὶ θαῦμα ἰδέσθαι·  
 εἶδ' ἥτοι τόσσον μὲν ἔχει τέλος, οὐατα δ' οὐ πῶ  
 δουδάλεια προσέειπε τά ῥ' ἤρην κέπῃ δ' ἰσμοῦς·  
 ὄφρ' ὅ γε ταῦτ' ἐπονείτο ἰδύνῃσι κραπίδασι·  
 τόφρ' οἱ ἐγγύθεν ἦλθε θεὰ θέτις ἀργυρόπιδας·  
 καὶ δ' ἰδὲ προμολοῦσα χαλκῷσι παρὰ κρήδεμνον

ὣς ὁ βαρυσυνώχων μετεφώνει μυρμιδόντασιν,  
 ὦ πόσσοι, ἢ ὅ ἄλιον ἔσσις ἐμβαλὼν ἤματι κείνῳ  
 θαρσύνων ἦρώα μενοίπον ἐν μεγάροισι,  
 φῆν ὃ οἱ εἰς ὀπώρα πεικλυτὴν ἤδ' ὀπ' ἄβυσσον,  
 ἴλιον ἐκπέσαντα, λαχόντα τε ληϊδὸς αἴσαν,  
 ἀλλ' ὅς τις ἀνδρασι νοήματα πάντα τελευτᾷ.  
 ἀμφω γάρ περ πρώτοι ὁμοίῳ γαῖαν ἱρεῦσαι,  
 αὐτῷ ἐνὶ τοίῃ, ἐπεὶ εὖδ' ἐμενοςήσαντα  
 δέξεταί ἐν μεγάροισι γέρον ἱππηλώτα πηλείδης.  
 εὖδ' ἐθέψι μήτηρ, ἀλλ' αὐτῷ γαῖα παθίξει.  
 οὐν δ' ἐπεὶ οὐκ ὦν πολυόκλει σεῦ ὕσερ' εἴμ' ὑπὸ γαῖαν.  
 οὔτε πρὶν κτερεῶ πρὶν γ' ἔκρη' ἐνθάδ' ἐκίπαι,  
 τεύχεα καὶ κεφαλὴν μεγαθύμῃ σεῖο φονῇ.  
 δώδεκα δ' ὑποπάροιθε πυρῆς, ἀποδείροτο μήσθ  
 βῶαν ἀγλαὰ τέκνα σέθεν κταμένοιο χλωθέης.  
 τόφρα δ' ἐμοὶ παρὰ νηυσὶ κερωνίσσι, κέσσει αὐτῶς.  
 ἀμφὶ δ' ἐσε βῶαὶ καὶ δαρδανίδες βαθυέσσωσι  
 κλαύθονται, νύκτας τε καὶ ἡμέρας δακρυχέουσιν  
 τὰς αὐτὰρ καμῶμεθα βίηφι τε δαυρί τε μακρῷ.  
 πείρας πέρθοντε πόλιν μερόπων ἀνθρώπων.  
 Ως ἔπων, ἱτάροισιν ἐκέκλετο δῖος Ἀχιλλεύς,  
 ἀμφὶ πυρὶ σῆσαι τρίποδα μέγαν, ὅφρα τάχιστα  
 πάροκλον λυθίσσῃ ἀποβρότον αἰμοτόοντα.  
 οἱ δ' ἰλαροχόον τρίποδ' ἵστασαν ἐν πυρὶ κηλῇ,  
 ἐν δ' ἄρ' ὕδωρ ἔχυσαν, ὑπὸ δ' ἔξυλα δαῖσαν ἱλόντες.  
 γάστρῳ γάρ τρίποδος πῦρ ἀμφεπὶ, θέρμετο δ' ὕδωρ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ ἴσσαν ὕδωρ ἐνὶ ἥνοπι χαλκῷ.  
 καὶ τότε δὴ λυῦσαν τε καὶ ἔλυσαν λίπ' ἱλαίῃ.  
 ἐν δ' ὠτειλὰς πλῆσαν ἀλείφαρ ἐννέοροιο,  
 ἐν λείκῃσι δ' ἐντὸς ἰωνῶ λίπ' ἀλυσάντων.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

οὖν δ' ὅτι πέρ μοι ἰδῶκε χρόνους παῖς ἀγκυλομήτης,  
 κύβους ἀρείδ' ὧς νηυσὶ, θαλάσῃ τ' ἔλασαι ἀχαιούς·  
 εὐήπια, μή κ' ἐπ' ταῦτα ἱρήματα φαῖν' ἐνὶ δῆμῳ,  
 εἰ γὰρ πρὸς φῶν ἐπιπίεσται, οὐ γὰρ ἰώσω.  
 ἀλλ' ἀγὰρ ὥς ἂν ἐγὼ εἴπω παθώμεθα πάντοτε.  
 οὖν μὲν δ' ὄρπον ἔλιπε κατὰ σραῖν' ἐν τελευταίῃ  
 καὶ φυλακῆς μνήσασθε, καὶ ἐγγύρορθε ἕσπετος,  
 φῶν δ' ὅς κτεώτ' εἰσιν ὑπὲρ φιάλῃς ἀνιῶσθαι  
 συλλέξας λαοῖσι, δ' ὅτ' ὡς καταδήμοβορῆσαι.  
 τῶν τίνα βέλτερόν ἐστιν ἐπαυρέμεν ὑπὲρ ἀχαιούς;  
 σπῆρ δ' ὑπ' ἥοιοι σὺν τινὶ χεῖρσι θωρηχθέντες,  
 νηυσὶν ὧς γλαφυρῆσιν ἐγγύρομην ὄξυν' ἄρῃα.  
 εἰ δ' ἐγὼν παρὰ ναῦφιν ἀνέστη δ' ἴος ἀχιλλεύς,  
 ἄλκιον αἶψ' ἐθέλῃσι τοῖς ἔσπετοι. οὐ μὲν ἐρωγῇ  
 φεύξομαι ἐκ πολέμοιο δυσσυχέος, ἀλλὰ μάλ' ἄντι  
 εἴθεμαι, ἥ κε φέρῃσι μέγα κράτος ἥ κε φειροίμην  
 ψυγὸς ἐνυάλιοι καὶ τε κτανέοντα κατέκταν.  
 ὦς ἱκτὼρ ἀγόμευεν, ὧς ὅτ' ἔρδον κελάδεσσαν  
 νήπιοι, ἐκ γὰρ σφιν φρένας εἴλθο παλὰς ἀθήνη,  
 ἱκτοεῖ μὲν γὰρ ἐπὶ νήσῃ κακὰ μητιόωντι.  
 πηλυδάμαντι δ' ἄρ' οὕτως, ὅς ἐδὴν φρωῖτο βαλὺν,  
 δ' ὄρπων ἐπὶ θ' εἴληντο κατὰ σρατὸν. αὐτὰρ ἀχαιοί,  
 πᾶννύχιοι παύροκλον ἀνενεγάχοντο γῶντες,  
 τοῖσι δ' ἐπὶ πηλείδης ἀδινού' ἐξήρχε γόοιο,  
 χιῶρας ἐπ' ὠφροφόνους θέμεν καὶ σήθεισιν ἑταίρων,  
 πυκνὰ μάλα σενάχων, ὥς τε λίς ἠὺ γένεσθαι,  
 εἰ ῥά θ' ὑπὸ σκύμνους ἑλαφνοῖος ἀρπυίῃ ἀνὴρ,  
 ὕλῃς ἐκ πυκνῆς, ὃ δ' ἐτ' ἀχνοται ὕειρ καὶ ἐλθῶν.  
 πολλὰ δ' ἐτ' ἀγὰρ ἐπὶ ἥλθε περ' ἀνέρος ἰχθὺν ἐρυμνῶν  
 εἰ ποθεν ἐξινύροι, μάλα γὰρ σφίμους χόλος αἰεῖ.



αὐτὰρ δ' βῆ παρὰ θῖνα θαλάσσης δῖος Ἀχιλλεύς,  
 σμυρδάλια ἰάχων, ὦρσιν δ' ἦρωας Ἀχαιοὺς  
 καί ῥ' οἵπιν τὸ πῶρος γα νῶν ἐν ἄγωνι μένισχον,  
 οἱ τε κυβερνῆται καὶ οἱ ἔχον οἰήα νηῶν.  
 καὶ ταμίαι παρὰ νηυσὶν ἴσων σίτοιο δ' οὔῃρις.  
 καὶ μῆν οἱ τότε γ' ἐς ἀγορὴν ἴσων, οὐκ Ἀχιλλεύς  
 ἐξεφάνη, θηρὸν δ' ἐμάχης ἐπὶ πᾶσι Ἀλκίονης.  
 τῷ δ' οὖν δύω σκάζοντε βάτω ἄρεος θεράποντε·  
 τυνδείδης τε Μυρτιάδης, καὶ δῖος Ὀδυσσεύς,  
 ἔρχετο εἰδομένοισι, τί γὰρ ἔχον ἔλκεα λυγρὰ,  
 καὶ δὲ μετὰ πρώτῃ ἀγορῇ ἵνοντο κλέοντες.  
 αὐτὰρ δ' ὀδύτατο ἦλθεν ἄναξ Ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἔλκεος ἔχων, καὶ γὰρ τὸν ἐνὶ κρατερῇ ὕσμινῃ.  
 οὕτω κόων Ἀντινωρίδης χαλκῷ ἰδρυί,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ πάντες ἀολλίδηςσαν Ἀχαιοί,  
 τοῖσι δ' ὤνιστάμην, μετ' ἔφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς.  
 ἄρείδῃ, ἣ ἄρτι τό δ' ἄμφοτέροισιν ἄριστον,  
 ἔπλετο σοὶ καὶ ἐμοί, ὅτε νῶϊπιν ἀχινυμένοισι  
 θυμοβόρῳ εἰδοὶ μνηστῆρα μὲν ἔνεκα κούρης,  
 τῇ ῥ' ὄφελ' ἐν νήεσσι κατακτάμεν ἄρτι μιν ἰῶ.  
 ἦ μάλα τοῖ, ὅτ' ἐγὼν ἐλόμην λυρνησὸν ὀλέσας.  
 τοῖ κ' οὐ τόσσοι Ἀχαιοὶ ὁδ' ἄξ' ἔλιν ἄσπερον θυδία  
 θυσμυρίων ὑπὸ χερσὶν ἐμῇ ἀπομηνίσσαντο,  
 ἔκτοε μὲν καὶ τῷσι τὸ κέρδιον, αὐτὰρ Ἀχαιούς  
 θηρὸν ἐμῆς καὶ σῆς εἰδος μνῆσθαι οἶδω.  
 ἀλλὰ πᾶ μὲν προτιτύχθαι ἰάθην, ἀχνύμενοί περ.  
 θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι φίλῃν διαμάσσοντες ἀνάγκῃ,  
 νῦν δ' ἥτοι μὲν ἐγὼ παύω χόλον, οὐδέ τι μίχην  
 ἀσκελέως αἰεὶ μνηστανέμεν, ἀλλ' ἄγε θάσσον,  
 ἔρῳον πόλεμόνδε κερήκεμόντας Ἀχαιοὺς,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

τύη δ' ἤφαισοιο πάρα κλυτὰ τεύχεα δέξοι  
καλὰ μάλ', οἳ οὐπὼ τις ἀνὴρ ὥμοισι φέρησιν

Ὡς ἄρα φωνήσασα θεὰ, κατὰ τεύχε' ἔθηκε.

πρόδιερ' ἀχιλλῆος, τὰ δ' ὀνείδραχε δαΐδαλα πάντα  
μυρμιδόνας δ' ἄρα πάντας ἔλε βοῖος, οὐ δέ τις ἔτλη  
ἀντὶ τῷ ἐσιδέειν, ἀλλ' ἔβρισαν, αὐτὰρ ἀχιλλεύς  
ὣς εἶδ', οἷς μιν μάλλον ἔδν χρόνος. ἦν δέ οἱ ὕπνῳ  
θεῖον ὑπὸ βλεφάρων ὥσεί σέλας ἐξίφασσθην.  
τέρπσο δ' ἦν χεῖρας ἔχων θεῶν ἀλλὰ δῶρα  
αὐτὰρ ἐπὶ φρεσὶν ἦσιν ἑτάρπσο δαΐδαλα λούατο  
αὐτίκα μητέρα ἦν ἔπει πηρόντα προσκύνει.

Μῆτερ' ἐμὴ, τὰ μὲν ὅπλα θεὸς πόρην οἳ ἐπέκεις,  
ἔργ' ἐμὴν ἀθανάτων, μὴ δέ βροτὸν ἀνδρᾶ τέλεισαι.  
νῦν δ' ὅτοι μὲν ἐγὼ θωρήσομαι, ἀλλὰ μάλ' αἰνῶς  
δέδωκε μὲ μοι τόφρα μῦθοις ἀλκιμον ἦόν.  
μῦθαι καὶ δῶσαι κατὰ χαλκῶτύπους ὠτφλὰς.  
αὐλὰς ἱγγύνωνται ἀφκίσασσι ὃ νεκρόν.

ἔκ δ' αὖθρ' ἐφαται, κατὰ δ' ἑλὸς πάντα λαίη.

Τόρ δ' ἡμείβετ' ἔπειτα θεὰ θέτις ἀργυρόπεζα.  
τέκνον, μὲ τοι ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῆσι μελόντων.  
τοῦ δ' μὲν ἐγὼ πέρηθμαι ἀλαλκεῖν ὄχηρα φύλα  
μῦθας αἶ' ῥά τε φῶτας ἀρηϊφώτους κατέδυσσι.  
ἦν περ γὰρ κίτταί γε τελεσφόρον ἐς ἱνιαυτόν,  
αὐτὶ τοῦ γ' ἔσαι χρόνῳ ἐμπεδος, ἢ καὶ ἀρείων,  
ἀλλὰ σύ γ' ἐς ἀγορὴν καλῆας ἦσθας ἀχαιούς  
μῆνιν ἀποφῶν ἀγαμέμνονι ποιμένι λαῶν.  
αὖψα μάλ' ἐς πόλεμον θωρήσαιο, δύσιν δ' ἀλκύν.

Ὡς ἄρα φωνήσασα, μένος πολυθαρσὲς ἔθηκε,  
παρόκλῳ δ' αὐτ' ἀμβροσίῳ καὶ νέκταρ ἱερὸν  
εὐξέ κατὰ ῥινῶν, ἵνα οἳ χρόνῳ ἐμπεδος εἴη,

ΥΦΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Τ. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Εὐδὸς καμισάσης Ἀχιλλεὶ τὰ ὄπλα παρὰ ἡφαι-  
στου, σωτηγῶν εἰς ἐκκλησίαν τὸς ἑλλήνας ὁ  
ἦρως ἀπὸ ῥῆσιν ποιεῖται τῆς μήνιδος, καὶ λαμ-  
βάνει τὰ δῶρα ἅπτερ αὐτῷ ἀγαμέμνων ἐπέχρη. πο-  
φῆρ ὃ ἀνελθόντων ἐκείνων, αὐτὸς ἄσιτ' παραμένει  
ὁπλίεται, καὶ στρατεῖαν ἐξάγει ἐπὶ τὸν πόλιμον, ὁ δ' ἰ-  
σσεύεται τῶν ἰππῶν αὐτῷ ξάνθος, τῆρ ἐθμένω αὐτῷ ἀγαί-  
ρισιν μαντεύεται, καὶ ἐπιπλήττει.

ΙΛΙΑΔΟΣ. .Τ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ταῦ δ' ἀπέλυε χόλοιο, καὶ ἐκθορεδίος Ἀχιλλεύς.

Ὡς μὲν κροκόπεπλος ἀπ' ὠκείας  
νοτοῖ ῥοάων  
ὦρνευθ', ἵν' ἀθανάτοισι φόδος φέ-  
ροι, ἡ δ' ἐβροτοῖσιν.  
ἦ δ' ἐς νῆας ἵκανε θεῶ πάρα, δῶ-  
ρα φέρεσσαν.

ὦρε ὃ παρόκλῳ περικείμενον ὅρ φίλον ἦδον,  
κλαίοντα λιγύως, πόλεις δ' ἅμφ' αὐτὸν ἑταῖροι  
μύρονθ', ἡ δ' ἐν τοῖσι παρίστατο δῖα θιάων,  
ἐν τ' ἄρα δὲ φῶ χερσὶ, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν,  
Τί κνον ἱμόν, τὸ πορ μὴν ἰάθ' μιν ἀχύν' ἡμιόοι περ  
κεῖσθαι, ἔπειθ' ἡ πρῶτα θεῶν ἰότητι διαμολώη.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔνθα μὲν ἦέτιοι καὶ παρθένοι ἀλφεισίβοιαι.  
 ὠρχεῦντ' ἀλλήλων ἐπὶ καρπῷ χεῖρας ἔχοντες  
 τῶν δ' αἱ μὲν λεπτὰς ὀθόνας ἔχον, οἷδ' ἔχιδνας  
 εἰαὶ εὐνύτους ἢ καὶ σίλβοντας ἑλαίῳ.  
 καὶ ῥ' αἱ μὲν καλὰς σιφάνας ἔχον, οἷδ' ἔχιδνας  
 εἰαὶ χρυσεῖας ἔξ ἀργυρέων τελαμώνων.  
 οἷδ' ὅτε μὲν θρέξασκεν ἐπισταμένοισι πόδες  
 ῥ' ἴα μάλ', ὥς οἱ τις τροχὸν ἄρμυμον ἐν παλάμῃσιν  
 ἔξομεν ὅ κ' ἐκαστὸς περήσεται αἶκι θέσπιν.  
 ἄλλο τε δ' αὖθις θρέξασκεν ἐπὶ εἰχὰς ἀλλήλοισι.  
 πολλοὶ δ' ἰμερόντα χορὸν περὶ σάβ' ὀμίλῳ  
 τερπόμενοι, οἷδ' ὅτε μὲν κυβιστῆρι κατ' αὐτῶν  
 μόλῃς ἐξάρχοντες, ἰδίνεον κατὰ μέσους.  
 ἐν δ' ἐτίθει ποταμοῖο μέγα δίνος ὠκίαν οἶο.  
 ἀντυγα παρ' πυμάτῳ σάκιος πύκα ποιετοῖο  
 αὐτὰρ ἐπεδὴ τεῦξε σάκος μέγα τε σιβαρόν τε,  
 τεῦξε ἄρα δι' ὠρήκῃ φαεινότερον πυρὸς αὐγῆς.  
 τεῦξε δ' οἱ κωέῳ βειαρὴν προτάφοις ἀραρυῖαν  
 καλὴν, δαιδαλέην, ἐπὶ ᾗ χρύσειοι λόφον ἔκει.  
 τεῦξε δ' οἱ κνημίδας ἱανὴν κασιγέροιο.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πάνθ' ὅπλα κάμει κλυτὸς ἀμφιγυήτης  
 μηρὸς ἀχιλλῆος θῆκε προπάροιθιν αἰέρας.  
 ἦ δ' ἴρηξ ὥς ἄλτο κατ' οὐλύμπῃ νιφόντι.  
 τόδ' ἔχεν μαρμαίροντα παρ' ἡφαίστιο φέρουσαν.

ΥΠΟ,

ἔσκη ὃ καμαξὶ διαμπερὶς ἀργυρέῃσιν.  
 ἀμφὶ ὃ κυκλίω κάπρον, περὶ δ' ἔρκυς ἔλασι  
 κασιτέρη, μία δ' οἷα ἀταρπιτὸς ἔεν ἐπ' αὐτὴν,  
 τῇ νίσσονος φορῆς, ὃ τε βυλάων ἀλώην  
 παρθινικὰ δ' ἐκὼς ἡίθιοι ἀταλά φρονέοντο,  
 πλικοῖς ἐν ταλάροισι φέρον μελινδ' ἐκαρπὸν.  
 τοῖσιν δ' ἐν μέσοισι, πάϊς φόρμιγγι λιγύῃ  
 ἱμερόν κιθάει, λῖνον δ' ὑπὸ καλὸν ἄειδε  
 λιπῆα λῆ φωνῇ, τοὶ δ' ῥήσονται δ' ὁμαρτῇ,  
 μολπῇ τ' ἰὺ μῶ τε ποσὶ σκαίροντο ἔποντο.  
 ἐν δ' ἀγέλλω ποίησε βοῶν ὀρθοκρατῶν  
 αἰ δ' ἐβοῶν χρυθῖο τιτύχαλ κασιτέρη τε.  
 μυκηθμῷ δ' ἀπὸ κόπρης ἐπεσδύοντο νομόνδε.  
 παρ ποταμὸν κελάδοντα, περὶ ῥοδανὸν δ' ἀνακῆαλ.  
 χρύσοι δ' ἐνομήϊς ἄμ' ἐσχεῶντο βοῖσι  
 τῆσιν αὖτε, ἐν δ' ἐσφί κύνες πόδας ἀργοὶ ἔποντο  
 σμερδαλίῳ ὃ λείοντι δ' ἐν πρώτῃσι βοῖσι,  
 ταῦρον ἐρύμνην ἐχέτω, ὃ δ' ἐκαστὰ μεμυκῶς  
 ἔλκω, τὸν δ' ἐκύνες μετεκίαθον ἢ δ' αἰζῆνοί,  
 τὸ μὲν ἀναρρήξαντε βοὸς μεγάλῳ βοείῳ  
 ἔχματα καὶ μέλαν αἶμα λαφύσσον, οἱ δ' ἐνομήϊς  
 αὐτῶς ἐν δ' ἐκύνες ταχέος κύνος ὀρύνοντο.  
 οἱ δ' ἔτοι δ' ἀκίην μὲν ἀπερῶντο λέοντων,  
 ἱστάμενοι δ' ἐγγὺς ὑλάκτιον, ἐκτ' ἄλιοντο.  
 ἐν δ' ἐνομόν ποίησε πεικλυτὸς ἀμφιγυῆς  
 ἐν καλῇ δ' ἄσῃ μέγαν οἶων ἀργεννάων.  
 ἐσθμους τε κλισίας τε κατηρῆφας ἰδὲ σπηλεῖς,  
 ἐν δ' ἐκύνες ποίησε πεικλυτὸς ἀμφιγυῆς.  
 τοῖ δ' ἔκλινον, οἷον ποτ' ἐπὶ κνωσῶ δ' ἐρείη,  
 δ' αἰδῶς ἔσκησεν καλλιπλοκάμῳ ἀειδῶν.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἐπὶ μένοι δ' ἰμάχοντο μάχῃ περὶ τοῦτο παρ' ὅχθας  
 βάλλον δ' ἀλλήλους χαλκήρεσιν ἔχοντες·  
 ἔρδ' ἔεις ἐν ᾧ κυδοιμὸς ὁμίλειον, ἔρδ' ὄλση κήρ.  
 ἄλλον ἴδον ἔχοντα νεώτατον, ἄλλον ἄντον.  
 ἄλλον τιθνέμενα κατὰ μόρον ἔλκε ποδούτιν,  
 εἴμα δ' ἔχ' ἄμφ' ὥμοισι διαφείνον αἵματι φροτῶν.  
 ὁμίλειον δ' ὥς τι ἴδον βροτοὶ ἦδ' ἰμάχοντο.  
 νικητοὺς τ' ἀλλήλων ἔρπον κατὰ τετιγῶτας.  
 ἔνδ' ἐτίθει νεὸν μαλακὴν πίεσσαν ἄρυσσαν,  
 δούρεϊ τ' ὅπως πολεῖν, πολλοὶ δ' ἀροτῆρες ἐν αὐτῇ.  
 ἰούγα δινδύοντο δ' ἐλάσσειον ἔνθα καὶ ἔνθα·  
 οἶδ' ὅποτε σρέψαντο δ' ἰκίατο τέλθον ἀρούρης.  
 τοῖσι δ' ἄπειτ' ἐν χερσὶ δέπας μελιηδέος οἶνου.  
 δούσκιν ἀνὴρ ἐπιὼν, οἶδ' ἐσρέψατο σπινθὴν ὄγκου·  
 εἰμῖνοι νύ τοι βαθείης τέλθον ἰκέσθαι,  
 εἰ δ' ἐμελαίνετ' ὅπιθεν ἀρηρομένη ᾧ ἰώκει  
 χρυσείῃ περὶ ἔσθ' αὖτ' ὅπ' ἐπὶ θαυμ' ἐτίτυκτο.  
 ἔνθ' ἐτίθει τίμενος βασιλῆϊον, ἔνθα δ' ἔλθοι  
 ἔμωι ὀξείας φρεσὶ πάντας ἐν χερσὶν ἔχοντο.  
 φράγματα δ' ἄλλα μὲν ὄγκον, ἐπὶ τεύχεα πίπταν ἔρατο·  
 ἄλλα δ' ἀμαλλοδότης, ἐν εἰλιδαυοῖσι δ' ἐόντο.  
 φητο δ' ἄμαλλοδότης ἐφίεσσαν αὐτὰρ ὅπιθεν  
 παῖδες φραγμύοντο δ' ἐν ἀρχαλίδεσσι φέροντο δ'·  
 ἄσπερ χεῖς πᾶρεχον βασιλῆύς δ' ἐν τοῖσι σιωπῇ  
 σκῆπτρον ἔχων ἐσέκειτο ὄγκον γηθόσματος κῆρ.  
 κήρυκας δ' ἀπᾶνδυνεν ὑπὸ φρεσὶ δ' αὐτὰ πίνοντο.  
 βοῶν δ' ἔρδυσαντο δ' ἐμὴν ἄμφιπον αἰδὲ γυναικὸς  
 δειπνον ἐρίβοισι, λδοῦκ' ἄλφιστα πελάγων,  
 ἔνθ' ἐτίθει σφυλῆσι μέγα βρίθυσαν ἀλῶν,  
 καλὴν, χρυσείην, μέλαιναν δ' ἀνὰ βούρην ἔισατο.

κήρυκε δ' ἄρα λαὸν ἐρήτυον, οἷον γέροντος  
 ἵατ' ἐπὶ ξυστοῖσι λίθοις ἰνῶν ἐν κύκλῳ.  
 σκήπτρα δ' κηρύκων ἐν χερσὶ ἔχον ἡεροφάνων,  
 τοῖσιν ἔπειτ' ἦσαν ἀμοιβῆς δ' ἰδίους.  
 κίττο δ' ἄρ' ἐν μίσοισι δύο χρυσοῖο τάλυντα.  
 ἔω δὲ μὲν οὐ μετὰ τοῖσι δίκλῳ ἰδύντατα ἔπην.  
 τὴν δ' ἐτέρῳ πόλιν ἀμφὶ δύνω στρατοὶ εἶατο λαῶν,  
 τόλχεσι λαμπόμυχοι, δίχα δ' ἐσφίσιρ ἦνδ' αὖ βυλῶ,  
 ἢ ἐδιαπραθείην ἢ ἀνδίχα πάντα δάξασθαι  
 κτῆσιν ὅσων πόλιν ἔχον ἐπὶ ἥρατον ἰνὸς ἐργῶ.  
 οἷον οὐ πῶ πείθοντο, λόχῳ δ' ἐπιθάρσυνοντο.  
 τεῖχος μὲν δ' ἄλσος τε φίλοι καὶ νήπια τέκνα  
 ῥύατ' ἐφεισκότο, μετὰ δ' ἀνέρις οὗς ἔχε γῆρας.  
 οἷον ἴσαν, ἔρχε δ' ἄρα σφίρ ἄρης καὶ παλλὰς ἀθύνη.  
 ἔμφω χρυσείῳ, χρύσῳ δ' ἑμάτα ἔδωκε,  
 καλῶ καὶ μεγάλῳ σὺν τόλχεσιν, ὥς τε θεῶπιρ  
 ἀμφὶς ἀειψήλω λαοὶ δ' ὑπολίζοντες ἦσαν.  
 οἷον ὅτε δὴ δ' ἴκανον ὅθι σφίσιρ εἶκε ληχῆσαι  
 ἐν ποταμῷ ὅθι τ' ἀρδμὸς ἔσω πάντεσσι βροτοῖσι.  
 ἐνθ' ἄρα τοὶ γ' ἴδοντ' ἐλυμένον αἰθόπι χαλκῷ  
 τοῖσι δ' ἔπειτ' ἀπάνευθε δύο σκῆποι εἶατο λαῶν  
 δίγμυχοι ὅπποτε μῆλα ἰδοῖατο καὶ ἔλκεας βοῦς.  
 οἷον τὰ χα πρόγεγοντο, δύνω δ' ἄμ' ἐποντο νομῆες.  
 τερπόμυχοι συνέγξι, δόλῳ δ' οὐδ' ἠρονόησαν.  
 οἷον μὲν τὰ προῖδ' ἐντοῖς ἐπὶ δ' αἶμον, ὥς δ' ἔπειτα  
 τῶνον τ' ἀμφὶ βαῶν ἀγέλας καὶ πώα καλὰ  
 ἀργενῶν ὄϊων, κτῆσιν δ' ἐπὶ μελεβοτήρας.  
 οἷον ὥς δ' αὖ ἐπύθοντο πολὺν κίλαδ' ὅρ' παρὰ βυσίῳ  
 ἱράων προπάροιθ' καθύμυχοι, αὐτίκ' ἐπ' ἵππων  
 πάντοσ' ἀερσιπόδων μετ' ἐκίαθον, αἶψα δ' ἴκοντο

# ΙΛΙΔΟΣ.

ὅπως ἔφασκός γ' ἰθὺς καὶ ἔργον ἄνοιός.  
 χαλκὸν δ' ἐν πυρὶ βάλλειν ἀτρεΐα κασιγέρον τε,  
 καὶ χρυσὸν τιμῆντα καὶ ἄργυρον, αὐτὰρ ἔπειτα  
 θῆκεν ἐν ἄκμοσίνω μέγαν ἄκμονα, γυῖός τ' ἔχει  
 φάσκειν κρατερόν, ἐτέρηφι δ' ἐγίνετο πυράχνη.  
 ποίει δ' ἐπρώτα σάκος μέγα τε σιβαρόν τε,  
 πάντες δ' αὖθις δαυδάλλων, περὶ δ' ἄντυγα βάλλει φαεινὴν  
 βίπλακα μαρμαρέην, ἣ δ' ἄργυρεον τελαμῶνα.  
 πέντε δ' ἄρ' αὐτῷ ἔσαν σάκκιοι πλῆχες, αὐτὰρ ἐν αὐτῷ  
 ποίη δαίδαλα πολλὰ ἰδυίῃσι πρᾶπίδασιν.  
 ἐν μὲν γὰρ αὖ ἔτιωξ' ἐν δ' οὐρανὸν, ἐν δ' ἐθάλασσαν.  
 ἠελιὸν τ' ἀκάμουντα σελήνην τε πλῆθυσαν.  
 ἐν δ' ἐπὶ τείρεα πάντα τάτ' οὐρανόσ' ἐξεφάνωτα.  
 πλησιάδας θ' ὑάδας τε, τό τε δίνος ὠρίωνος.  
 ἄρκτον θ' ἦν καὶ ἄμαξον ἐπίκλησιν καλύνειν.  
 ἣ τ' αὐτῷ σρέφεται, καὶ τ' ὠρίωνα δοκύνει.  
 οἷη δ' ἄμμορός ἐσσι λυγρῶν ὠκυνοῖο.  
 ἐν δ' ἐδύω ποίησε πόλιν μερόπων ἀνθρώπων  
 καλὰς, ἐν τῇ μὲν ἔα γάμοιτ' ἔσαν ἐλαπίνας τε.  
 νύμφας δ' ἐκ θαλάμῳ δαΐδωρ ὑπολαμπέμεναι.  
 ἠγίνετορ ἀνὰ ἄστυ, πολλὸς δ' ὑμῖναιτο δῶρθε.  
 κῆροι δ' ὄρχησθ' ἐδίνον, ἐν δ' ἄφατοῖσιν,  
 εὐλοὶ φόρμιγγες τε βοήν' ἔχον, αἱ δ' ἐγυναικες  
 ἰσάμεναι θαυμάζον ἐπὶ προθύροισιν ἐκάσθ.  
 λαοὶ δ' εἰν ἄγορῃ ἔσαν ἀθρόοι, ἔνθα δ' ἐνέκθε  
 ὠρώρεθ', δύω δ' ἀνδρῶν ἐνέκθεον εἵνεκα ποινῆς  
 ἀνδρὸς ἀποφθιμένου, ὃ μὲν εὖ χέρο πᾶντ' ἀποδίδου.  
 δῆμῳ πιφάυσκων, ὃ δ' ἀναίνετο μηδ' ἐν ἐλίδαι.  
 ἄμφω δ' ἰέδω ἐπὶ ἴσοι πεῖραρ ἐλίδαι.  
 λαοὶ δ' ἄμφοτέροισιν ἐπύπνον ἄμφος ἀφωγοί.

ἄχυνται, οὐ δ' ἐτι οἱ δύνανται χραίσμιστα ἴσασθαι.  
 πούρω, ἦν ἄρα οἱ γέρας ἔξιλον ὕψος ἀχαιῶν.  
 τῆρ' ἄψ' ἐκ χερσῶν ἔλθο κρείων ἀγαμέμνων,  
 ἦτοι δ' τῆς ἀχέων φρένας ἔφθιν, αὐτὰρ ἀχαιούς  
 ῥῶες ἐπὶ πρύμνησιν ἐέλκον, οὐδ' ἐ θυράζε  
 εἶδον ἔξιναι, τὸν δ' ἐλίσσοντο γέροντες  
 ἄργείων, καὶ πολλὰ πεικλυτὰ δῶρ' ὀνόμαζον,  
 ἔνθ' αὐτὸς μὲν ἔπειτ' ἠνύνατο λαῖον ἀμύναι,  
 αὐτὰρ δ' πάρον κλον περὶ μὲν τὰ δὲ τόλχεια ἴσιν,  
 πέμπε δ' ἐμιν πόλεμόνδε, πολὺν δ' ἅμα λαὸν ὅπασαι.  
 πᾶρ δ' ἤμαρ μάρνοντο περὶ σκαυῆσι πύλῃσι,  
 καὶ νύκτερ αὐτῆμαρ πόλιν ἔπραθον, ἐμὴ ἀπόλλων  
 πολλὰ κακὰ ῥέξοντα μνηοιτίῃς ἄλκιμον ἦόν,  
 ἔκταν' ἐνὶ προμάχοισι καὶ ἔκτορ κῆδος ἔδωκε.  
 τοῦτ' ἔκτα νῦν τὰ σά γούναθ' ἰκάνομαι αἰὲ' ἐθέλησθαι.  
 οἷε ἱμῶ ὠκυμόρῳ δούμῳ ἀσπίδι καὶ τειφάλλῳ.  
 καὶ καλὰς κνημίδας ἐπισφυρίοις ἀραρυίας.  
 καὶ θώρηχ', ὃ γὰρ ἦν δὲ ἀπώλεσε πῖσος ἱταῖρος,  
 ῥωσὶ δαμνείας, ὃ δ' κείται ἐπὶ χθονὶ θυμὸν ἀχούων.  
 Τύρ δ' ἠμέλειτ' ἔπειτα πεικλυτὸς ἀμφιγυφός.  
 θώρεσθ', μή τοι ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῆσι μιλόντῃν.  
 αἰ γὰρ μιν θανάτοιο δύσσηχ' εὖς ὠδὲ δ' αὐαίμῳ  
 νόσφιν ἀποκρύψαι, ὅτε μιν μόρος αὐτὸς ἰκάνῃ.  
 εἰς οἱ τόλχεια καλὰ παρέσται οἷά τις αὐτοῖς  
 ἀνθρώπων πόλιν θαυμάσεται, ὅς κεν ἴδῃται.  
 ὧς ἐπὶ τῆρ' ἡμῶν λίπεν αὐτῶν, βῆ δ' ἐπὶ φύλας.  
 τὰς δ' ἐς πῦρ ἔειπε, κελύσσειτε ἐργάζεσθαι,  
 φύσαι δ' ἐν χοάνοισιν εἴκοσι παῖσαι ἱφύων,  
 πωτοίῳ εὐπρηστον αὐτῆρ' ἐξαιεῖσθαι,  
 ἄλλοτε μὲν ἀνδρόνι παρ' ἐμμῶν, ἄλλοτε δ' αὐτῶν.

λάρνακ' ἐς ἀργυρέῳ συλλέξασθαι. ὅς τ' ἐπὶ νῆπι.  
 πάργῳ δ' ἀμφὶ πρόσωπα, καὶ ἄμφω χεῖρ' ἀπομόρῃτο.  
 αὐχένα τε σθαρὸν, καὶ στήθια λαχύνοντα.  
 οὗ δ' ἐχτῶν ἔλεγε σκῆπτρον ταχύ. ἔη δ' ἐθύραζε  
 χαλκίῳ, ὑπὸ δ' ἀμφὶ πολεῖ ῥῶον ἀνακτὸς  
 χρύσεια ῥῶσι, νεήνισιν ἰοικῦσαι.  
 τῆς ἐν μῦθῳ νόος ἐστὶ μετὰ φρεσίν, ἐν δ' καὶ αὐδῇ.  
 καὶ δεινός, ἀθανάτων δ' ἐκείνων ἀπὸ ἔργα ἴσασιν,  
 αἱ μὲν ὕπαιθα ἀνακτος ἐπεπνυον, αὐτὰρ ὁ ἔρρωτο  
 πλησίον ἐνθα θέπτο πρὸς ἑρῶνα. ἴξε φαεινοῦ,  
 ἐντ' ἄρα οἱ φῦ χεῖρ' ἔσπετο ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε.

Τίπτε τίπτε τανυπέπλεϊ κάκως ἡμίτερον δῶ,  
 αἰδοῖν τε φίλην, πάρος γε μὲν οὐπὶ θαμνίφει,  
 αὐδὰ ὅππῃ φρονέεις, τελείσαι δ' ἐμε θυμὸς ἀνδρῶν  
 εἰ δύναμαι τελείσαι γε, καὶ ἐτετελεσμένον ἔσθην.

Τόν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα θέπτο καταδάκρυχίεντα,  
 ἦφαις ἡ ἄρα δὴ τις ὄσαί θηαι ἴσ' ἐν ὀλύμπῳ.  
 τῶν δ' ἐνὶ φρεσίν ἦσιν ἀνίατο κήδεια λυγρὰ,  
 ὅσ' ἐμοὶ ἐκ πασέων, κρονίδης ἵν' ἀλγὶ ἔδωκεν,  
 ἐκ μὲν μ' ἀλλάνων ἀλιδάων ἀνδρῶν δαμάσσειν,  
 αἰακίδῃ πελῆϊ, καὶ ἔτλῳ ἀνέρος δυνήρ,  
 πολλὰ μάλ' ἐκείθεντα. ὁ μὲν δ' ἡγήρατο λυγρῶ,  
 κεῖται ἐνὶ μεγάροισι ἀρημένος, ἄλλα δ' ἐμοὶ νῦν.  
 ἦν ἔπειτα μοι δῶκε γένεσθαι τε. τὰ φίλῳ τε  
 ἔξοχον ἡρώων. ὅδ' ἀνὶ δρῶν ἐρνείῳ ἴδω,  
 τὸν μὲν ἔγωγε θέψασα φυτὸν ὡς ῥωπῶ ἀλωῆς.  
 νηυσὶν ἐπιπρόσθῃ καὶ κερῶνισιν ἴλιον ἴσω.  
 τῶσι μάχης ὀμῶν, τόν δ' ἔχ' ὑποδ' ἔξομαι ἀντιπύ.  
 εἴθε δὲ νοστήσαντα, δόμον πελῆϊον ἴσω.  
 ὅφρα δ' ἐμοὶ ῥῶσι καὶ ὄφρα φῶρ' ἐκείνοιο

ὄχινται.



παλὴ· τῶν ὥπυι πεικλυσὲς ἀμφιγυήεις.

ἔν τ' ἀρά οἱ φῦλ' ἡμεῖς, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαζι.

τίπῃ θέπι ταινύπιπλι, ἰκάνεις ἡμέτρον δῶ;

αἰδοίητε φίλητι πάρος γε μ' οὔ τι θαμίβεις.

ἀλλ' ἔτιο προτέρω, ἵνα βιπαρξείναια θέω.

Ὡς ἄρα φωνήσασα, πρὶς ὧς ἄγε δ' ἴα θαῖαρ.

τῶν μ' ἔπειτα καθιῖσσαν ὧς θρόνον ἀργυροῦλιν.

καλῶ δαυδάλιν, ὑπὸ ᾧ θρόνον ποσσὶν ἔει.

κίκλ' οὖ δ' ἔφρασαν κλυτοτέχνῳ, ἐπὶ τι μῦθος.

ἔφρασι πρόμολ' ὦδε, θέπις νύ π' σιτο χατίρ.

Τὴν δ' ἡμέβειτ' ἐπὶ γὰρ πεικλυσὲς ἀμφιγυήεις.

ἦ ῥα νῦν μοι δ' ἐνὶ τῇ κ' αἰδοίη θεὸς ἔνδορ.

ἦ μ' ἰσώσωσ' ὅτε μ' ἄλγος ἀφίκοι τῇλι πισόντα.

μῆδ' οὖ μῆς ἰότητι κυνώπιδος, ἦ μ' ἐθέλῃσκει

κρύψαι χολὸν ἰόντα, τότε ἂν παλθεν ἄλγος θυμῷ.

ἔμῃ μ' εὐρωόμην τε θέτις θ' ὑπεδέξατο κόλπῳ.

εὐρωόμην θυγατρὴν ἀποφύον ὠκεανοῖο.

τῇσι παρ' ἐνάϊτο δ' χολακτεον δαίδαλα πολλὰ.

πόρπας τε, γναμπῆς θ' ἑλίκας, κάλυκας τε καὶ ὄρμυς.

ἔν σπῃ γλαφυρῷ, περὶ ᾧ ῥέος ὠκεανοῖο.

ἄφρῳ μομφύρων ῥέον ἄσπετος, ἔδ' ἐπ' ἄλ' οὔ.

ἔδ' οὖν οὔτε θείων οὔτε θνητῶν ἀνθρώπων.

ἀλλὰ θέλεις τε καὶ εὐρωόμην ἔχειν αἶμα ἰσάωσαρ.

ἦ νῦν ἡμέτερον δόμον ἔκ' ἔδ' με μάλ' αὖ χριῶ.

πάντα θέτι καλὴ πλοκάμῳ ἰώχρ' αὖ τίνην.

ἀλλὰ σὺ μ' νῦν οἱ παρὰ τοῦ ξανθίου καλὰ.

ἔφρ' ὅν ἐγὼ φύας ἀπὸ θεοῖομαι, ἔπλα τε πάντα.

ἦ καὶ ἀπ' ἀκμῆς θέτιοιο, πέλ' οὖρ αἶψ' ἐν ἀνέσῃ

χολινύων. ὑπὸ ᾧ κνήμαι ῥέοντο ἀφ' αἰῶ.

φύας μ' ῥ' ἀπὸ νῦν τε τίς πυρὸς ἔπλα τε πάντα.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἔς πόδας ἐκ κεφαλῆς καθύπερθε ὃ φάρι λευκῷ·  
 παννύχιοι μὲν ἔπητα πόδας ταχύν ἄμφ' ἀχιλῆα  
 κυρμυιδόνες πολυκλόνων ἀναισίωντο γυνόντων·  
 ἵππῳ δ' ἤρω προσέειπε κασιγνήτῳ ἄλοχόν τε·

**Ἐ**πηξας καὶ ἔπητα βοῶπις πότνια ἦρ·  
 ἀνδρῶν σ' ἀχιλῆα πόδας ταχύν, ἦ ῥά τοι σείῃ  
 ἐξ αὐτῆς ἱγέοντο καρκινώοντες ἀχαιοί·

**Τ**όν δ' ἡμείβετ' ἔφητα βοῶπις πότνια ἦρ·  
 αἰνότατε κρονίδη ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;  
 καὶ μὲν δὴ πῦρ τις μέλαινα βροτὸς ἀνδρῶν τελέσσει·  
 ὅς περ θνητὸς ἐστὶ καὶ ὅτ' οἱ μέλαινα οἶδε·  
 πῶς δ' ἡ ἔγω γ' ἢ φημι θείων ἐμὲ μὴ ἀφίση,  
 ἀμφοτέρων, γινεῖται καὶ οὐνεκὰ σὴ παράκτισ  
 κέκλημαι, σὺν δ' ὅπασιν μετ' ἀθανάτοισιν ἀνίστασθαι,  
 ἃς ὅφελον βῶεαι κατὰ σταμένη κατὰ ῥέεσθαι.

**Ὡς** οἱ μὲν βιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγέριον·  
 ἠφαίσιο δ' ἵκανι δόμον θέπερ ἀργυρόπιπτα  
 ἀφθιπν' ἀσερόεντα μεταπρίπτει ἀθανάτοισι  
 χοληκίον, ὃν ῥ' αὐτὸς ποιεῖται κυλλοποδίσῳ·  
 τόν δ' εὖρ ἰδρῶντα ἱλίας ὀμῶν περὶ φύσας  
 σπειρόδοντα τρίποδας γὰρ ἔειπεν πάντας ἔτι νύχιον·  
 ἑσάμηναι περὶ βῆχον, ἐὺ σταθεὸς μεγάροισιν

**Χ**ρῦσια δ' ἐσφ' ὑπὸ κύκλα ἐκάσθω πυθμένι θῆκεν·  
 ὄφρα οἱ αὐτόμαρτι θιόν δ' ὕδοντα ἀγῶνα.

**Ἦ** δ' αὖτις πρὸς δῶμα νεοίαν θαυμάϊδ' ἰδμεν·

οἷδ' ἦτοι τόσσον μὲν ἔχει τέλως, οὕατα δ' οὐ πῶ  
 διαδάλεια προσέειπε τά ῥ' ἦρτι κέπῃ, ὃ δισμούς·

ὄφρ' ὅ γε ταῦτ' ἐπονείτω ἰδύησι πρᾶπιδαι.

τόφρ' οἱ ἱγγύθου ἦλθε θεὰ θέπερ ἀργυρόπιπτα·

πῶς δ' ἰδὲ προμολοῖται χολεὶς λιπαροκνέδμην·

εἰς ὃ βαρυσυνόχων μετεφώνη μυρμιδόνεσσι·  
 ὦ πόσσοι, ἢ ῥ' ἄλιον ἔπος ἐμβαλὼν ἤματι κείνῳ  
 θαρσύνων ἦρώα μενοίπον ἐν μεγάροισι,  
 φῆν' ὃ οἱ εἰς ὀπώρα περικλυτὴν ἦδ' ὀνείαξον,  
 ἴλιον ἐκπύσαντα, λαχόντω τε ληϊσδὸς αἴσαν·  
 ἀλλ' ὅς τις ἀνδρῶσι νοήματα πάντα τελευτῇ·  
 ἄμφω γὰρ πέπρωται ὁμοίῳ γαῖαν ἱρεῦσαι,  
 αὐτῷ ἐνὶ τροίῃ, ἐπεὶ εἰδὲ με νοσήσαντα  
 δέξεταί ἐν μεγάροισι γέρον ἱππηλώτα πηλεΐδης·  
 εἰδὲ θέτις μήτηρ, ἀλλ' αὐτῷ γαῖα παθίξῃ.  
 οὐν δ' ἐπεὶ οὐκ πολὺροκλὲ στυγερῶν εἴμ' ὑπὸ γαῖαν,  
 οὔτε πρὶν κτεειῶ πρὶν γ' ἔκρηθ' ἐνθάδ' ἐνέϊπαι,  
 τεύχεα καὶ κεφαλὴν μαχαθύμῃ σείτο φονῆῳ·  
 δῶδεα δ' ὑποπάροιθε πυρῆς, ἀποδείροτο μήσθῃ  
 βῶων ἀγλαὰ τέκνα σέθεν κταμένοιο χολωθείς·  
 τόφρα δέ μοι παρὰ νηυσὶ κερωνίσι, κέσσει αὐτῶς·  
 ἄμφι δέ σε βῶαί κ' ἀερδανίδος βαθυκλυτοί  
 κλαύθοντα, νύκτας τε καὶ ἡμέρας δακρυχέεσσιν  
 τὰς αὐρὴ καμῶμεθα βίηφι τε δαυρί τε μακρῷ·  
 πείρας πέρθοντε πόλιν μερόπων ἀνθρώπων·  
 ὦς ἐπὶ δὴν, ἐτάροισιν ἐκέκλετο δῖος Ἀχιλλεύς,  
 ἄμφι πυρὶ σῆσαι τρίποδα μέγαν, ὄφρα τάχιστα  
 πάροκλον λυῖσθαι ἀποβρότον αἰμοτόοντα·  
 οἱ δ' ἄρ' ἀποχόον τρίποδ' ἴστασθαι ἐν πυρὶ κηλέῳ,  
 ἐν δ' ἄρ' ὕδαρ' ἔχευον, ὑπὸ δ' ἐξύλα δαῖτ' αἰλόντο·  
 γὰρ σῶν γὰρ τρίποδος πῦρ ἄμφεπε, θέρμετο δ' ὕδαρ'·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ ἔσσαν ὕδαρ' ἐνὶ ὕνοπι χαλκῷ·  
 καὶ τότε δὴ λυῖσθαι τε καὶ ἔλκεσθαι λίπ' ἱλαίῳ·  
 ἐν δ' ὥτε λᾶς πλησάν ἀλείφατος ἐννέοροιο,  
 οὐ λείπειται δ' ἐντόνῳ ἰσχυρὸν λίπ' ἀλκυόνῳ·

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

νῦν δ' ὅτι πέρ μοι ἔδωκε χρόνῳ παῖς ἀγκυλομήτις,  
 κύδος ἄρεάδ' ὧς νηυσὶ, θαλάσῃ τ' ἔλασαι ἀχαιούς  
 νήπιε, μή κ' ἐπὶ ταῦτα ἱρήματα φαῖν' ἐνὶ δόμῳ,  
 ὅ γ' αἶψα πρὸς πῶν ἐπιπέσινται, ὅ γ' αἶψ' ἰούσω.  
 ἀλλ' ἄγεθ' ὥς ἂν ἐγὼ εἴπω παθώμεθα πάντοδ'.  
 νῦν μὲν δ' ὄρπον ἔλιπε κατὰ σραῶν ἐν τελέεσσιν  
 πρὸ φυλακῆς μνήσεαι, καὶ ἐργήγορθε ἕκαστος,  
 πῶν δ' ὅς κτεάτιασιν ὑπὲρ φιάλῃς ὀνιούσῃ  
 συλλέξας λαοῖσι, δότῳ καταδημοβορῆσαι.  
 τῶν πῖνα βέλτερόν ἐσιν ἐπαυρέμεν ὑπὲρ ἀχαιούς·  
 πρῶτ' δ' ὑπ' ἡοῖοι σὺν τῷ χεῖσι θωρηχθέντοδ',  
 νηυσὶν δ' ἄλγεα φερέσιν ἐγέρομεν ὅξυν' ἄρεα.  
 οἷδ' ἱεὶὸν παρὰ ναῦφιν ὀνείη δ' ἴος ἀχιλλεύς,  
 ἄλγιον αἶκ' ἐθέλησι τοῦτο ἵεσθαι. οὐ μὲν ἔγωγε  
 φεύξομαι ἐκ πολέμοιο δυνσυχέος, ἀλλὰ μάλ' ἄντην  
 εἴθευμαι, ὅ κε φέρησι μέγα κράτος ἥ κε φεροίμην  
 ζυγὸς ἐνναλίῳ καὶ τε κτανέοντα κατέκτα.

Ως ἔκτωρ ἀγόρευεν, ὧς δ' ὅτε κελάδεσσιν  
 νήπιοι, ἐκ γὰρ σφιν φρένας εἴλετο παλλὰς Ἀθήνη,  
 ἔκτορ μὲν γὰρ ἐπὶ νήεσσιν ἐκὰς μητιόωντι.  
 στεγνὸν δ' ἄμουσι δ' ἄρ' οὐ τις, ὅς ἐδλήν φρωῖτο βελύχῃ,  
 δόρπων ἐπεθ' εἴλετο κατὰ σρατὸν. ὡς τὰρ ἀχαιοί,  
 παννύχιοι πᾶντοκλον ὤνεσινάχοντο γῶντοδ',  
 τοῖσι δ' ἐπὶ πηλείδῃς ἀδινού' ἐξέρχετο γόοιο,  
 χιῖρας ἐπ' ὤνδροφόνους θέμεντο σήθεσσιν ἱταίρῃ,  
 πυκνὰ μάλα σενάχον, ὥς τε λῆς ἡνῆρα,  
 οἷός τ' ὑπὸ σκύμνῃς ἱλαφιδόλῃς ἀρπάζῃ ὀνείρ,  
 ὅλῃς ἐκ πυκινῆς, ὅ δ' ἐτ' ἀχνυται ὕστερ' ἐλθῶν.  
 πολλὰ δ' ἐτ' ἀγέειπ' ἡλθε πειτ' ὀνείρος ἱχί' ἐρινῶν  
 εἰ ποθεν ἐξενόροι, μάλα γὰρ σφίμιν χόλος αἰετῷ.

μήμισιν ἐν πεδίῳ ὅθι πρὸ ῥῶδου καὶ Ἀχαιοί,  
 ἐν μέσῳ ἀμφοτέρω μίνος ἄρμος διατέοντα.  
 ἀλλὰ περὶ πηλίου τε μαχήσεται ἠδὲ γυωαικῶν.  
 ἀλλ' ἰοῦμαι προτὶ ἄστυ, πίδαδε μοι, ὥς γὰρ ἔσαι.  
 νῦν μὲν νύξ ἀπέπαυσε ποδῶκεα πηλείωνα,  
 ἀμβροσίη, εἰδ' ἅμμι κιχήσεται ἐνθάδ' ἐόντας,  
 αὔριον ὄρμηθις σὺν τεύχεσιν, εἴ νύ τις αὐτὸν  
 γνῶσεται, ἀσπασίως γὰρ ἀφίξεταί ἱλιον ἱρήν.  
 ὅς κε φύγη, πολλοὺς δ' κύνες καὶ γυπὸς ἔδονται  
 ῥῶων, αἳ γὰρ δῆμοι ἀπ' οὐαρε ὥς γένοιτο.  
 εἰδ' ἂν ἐμοῖς ἐπέσσι πιθώμεθα κηδόμενοι πρὸ.  
 νύκτα μὲν ἐν ἀγορῇ δεινὸν ἔξομην, ἄστυ δ' πύργου  
 ὑψιθαλί τε πύλαι, ἀνίδεις γ' ὥς τῆς ἀραρυῖας  
 μακρὰ ἐϋξέσσι ἐξενγόμεναι ἐρύθνται.  
 πρῶτ' δ' ὑπ' ἠοῖοι σὺν τεύχεσι θωρηχθέντες,  
 εἰσομένοισιν αὖ πύργους, ἔσθ' δ' ἄλχιον αἰὲ' ἐθιλήσῃ  
 ἐλθὼν ἐκ νηῶν περὶ τείχεος ἅμμι μάχεσθαι.  
 αἶψ' πολλὴν εἶσο' ὥς νῆας ἐπέκ' ἐλαιύχονας ἵππους  
 σπαντοῖς δρόμοις ἄστυ ὑπὸ πῆλιν ἠλασκώζων.  
 εἴσω δ' οὐμιν θυμὸς ἐφορμηθῆναι ἰάσεται.  
 εἰδ' ἐπὶ ποτ' ἐκπίρσει πρὶν μιν κύνες ἀρξοὶ ἔδονται.  
 Τόν δ' ἄρ' ὑπόβραϊδῶν προσέφη κερυθαίουλας ἑκτορ  
 πηλυδάμα, σὺ μὲν ἔκ' ἐτ' ἐμοὶ φίλα ταῦτ' ἀγορεύεις.  
 ὅς κ' ἐλθὼν κατὰ ἄστυ ἀλήμμου ἀντιπύοντας.  
 ἢ οὐπω κεκόρηδε ἐλμένοι ἐνδοθὶ πύργων.  
 σπρὶν μὲν γὰρ πρῶτο μοιο πόλιν μέροπος ἀνθρώποι  
 πλῶντες μωδίσκων πολύχρουν, πολύχαλκων.  
 νῦν δ' ὅθ' ἐξ ἀπόλλω δόμων κήμηλια καλὰ.  
 πολλὰ δ' ὅθ' ἐφρυγίλω καὶ μιονίλω ἱρατεινήν.  
 κτήματα πρηνέμην ἔκασ' ἐπὶ μέγας ὠδύσεται ζεύς.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

κἀθίσταν' ἐν λιχίῃσι φίλοι δ' ἀμφίστασθ' ἱταῖροι  
 μυρόμενοι, μετὰ δὲ σφι ποδῶκες ἵππ' ἄχιλλεύς.  
 δάκρυα θρῆνα χέων, ἐπὶ ἱπιδί πιδόν' ἱταῖρον  
 κείμενον ἐν φέρεβ' ἀδαιγόμενον ὄξει χαλκῷ.  
 πρὶ δ' ἦτοί μιν ἐπεμπε σὺν ἱππίσιν καὶ ὄχεσφι  
 εἰς πόλιν, ὅδ' αὖτις ἐδέξατο νοσήσασα.  
 ἥλιον δ' ἀκάμωτα βοῶπις πότνια ἦρ  
 πύμψαν ἐπ' ὠκυνοῖο, ῥοὰς ἀέκοντα νέεσθαι.  
 ἥλιος μὲν ἴδεν, παύσαντο δ' οἱ ἀχαιοὶ  
 φυλεπίδος κρατερῆς, καὶ ὁμοῖον πόλεμοιο.  
 ῥῶϊς δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ἀπὸ κρατερῆς ὕσμίνης  
 χαρῆσαντο δὲ, ἔλυναν ὑφ' ἄρμασιν ὠκίας ἵππους.  
 εἰς δ' ἀγορὴν ἀγέροντο, πάρος δ' ὄρωιο μιν εἶδαι.  
 ὄρωϊν δ' ἐσταότων, ἀγορὴ γένετ', ὅδ' εἰς ἐτλη  
 εἶδαι, πάντας γὰρ ἐχέρομεν, οὐκ ἄχιλλεύς  
 ἐξέφραν δὴρὸν δ' μάχης ἀπέπαντ' ἀλεγεινῆς.  
 οἷσι δ' ἐπὶ πυλιδάμας πεπνυμένος ἦρχ' ἀγορεύειν  
 πανθοίδης, ὃ γὰρ οἶος ὄρα πρόσω καὶ ὀπίσω.  
 ἔκρεδ' ἦεν ἱταῖροι, ἱὴ δ' ἐν νυκτὶ γέροντο.  
 ἀλλ' ὃ μὲν ἄρ' μύθοισιν, ὅδ' ἐγχεῖ πολλὸν ἱνίκα.  
 οἷσφι ἐϋφρονέων ἀγορήσασθαι καὶ μετίεπιν.  
 ἀμφὶ μάλα φράζεσθαι φίλοι. κέλευμαι γὰρ ἔγωγε  
 αἶψα δὲ νῦν ἵεναι, μὴ μίμνην ἡῶ δῖαν.  
 ἐν πεδίῳ παρὰ ἰηυσίν, ἐκαστὸν ἀπὸ τέχειος ὕμιν.  
 ὄφρα μὲν οὗτος ἀνὴρ ἀγαμέμνονι μῆνιν δίδω.  
 τόφρα δ' ῥήϊτεροι πολλοί μιν ἦσαν ἀχαιοί.  
 χαίρεσκον γὰρ ἔγωγε θεῶν ἐπὶ νηυσὶν ἰάνων,  
 ἐλπίδμος ἦεν αἶψ' αἶψ' αἶψ' ἀμφιελίσσας.  
 νῦν δ' αἰνῶς δίδωκα ποδῶκεα πηλείωνα.  
 οἶος ἐκένυ θυμὸς ὑπέρβιος ἐκ ἐθελήσας

αὐτὰρ Ἀχιλλεύς ὦρτο δ' ἰὶ φίλος, ἀμφὶ δ' Ἀθήνη.  
 ὦμοις ἰφθίμοισι καλ' αἰγίδα θυβένεσσιν.  
 ἀμφὶ δ' ἐοικεφαλὴν νέρος ἔειπε δῖα θεάων  
 χρύσειον, ἣ δ' αὐτὸ δαΐφρονα παμφανόωσσαν.  
 ὥς δ' ὅτε καπιδὸς ἰὼν ἐξ ἄετος αἰθέρ' ἵκηται  
 τηλόθεν ἐκ νήσων, τῶν δ' ἦοι ἀμφιμολχονται,  
 οἷτε πανημέριοι συγρῶ κρύνονται ἄρηι.  
 ἄετος ἐκ σφριτέρων, ἅμα δ' ἠελίῳ καταδύντι,  
 πυρθί τε φλεγέθουσιν ἐπ' ἡταιμοί, ὑψόσσε δ' αὐγὰ  
 γίγνεται αἶαντα πρὶκτιόναςιν ἰδέσθαι  
 αἰκὴν πῶς σύν νηυσὶν ἄρεος ἀλκτῆρος ἴκωνται,  
 ὥς ἀπ' Ἀχιλλῆος κεφαλῆς σέλας αἰθέρ' ἵκανε.  
 σὴ δ' ὦ τάφρονι ἰὼν ἀπὸ τείχεος, ὅδ' ἐς Ἀχαιοὺς  
 μίσγεται, μῆδ' οὐ γὰρ πυκινὴν ὠπίϊετ' ἰφειμήνη-  
 ἔνθα σῆς, ἥ ὕσ' ἀπάτρθε παλλὰς Ἀθήνη  
 φθέρχεται αὐτὰρ βῶεσιν ἐν ἀσπρῶν ὦρσε κυδιμόρ.  
 ὥς δ' ὅτ' αἰετὴν φωνὴ γένετ' αἰακίδαο,  
 ἅσπερ πειπλωμένον δ' ἠΐων ὑπὸ θυμοραΐδεσσιν.  
 ὥς τότ' αἰετὴν φωνὴ γένετ' αἰακίδαο,  
 οἷ δ' ὥς οὖν αἶον ὅπ' αὖτε χαλκικὸν αἰακίδαο.  
 πᾶσιν ὀρίνθη θυμὸς, αὐτὰρ καλλίτερος ἵπποι.  
 ἀπ' ὀχέων βόπλιον ὄσανον γὰρ ἄλγεα θυμῶ.  
 ἐνιόχοι δ' ἐκπληγόν, ἐπὶ ἰδὸν ἀκοῦμαρ πῦρ  
 θεινὸν ὑπὲρ κεφαλῆς μεγαθύμου πηλείωνος,  
 διαόμβρον τό δ' ἰδὲαι θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη,  
 τῆς μὲν ὑπὲρ τάφρων μεγαλ' ἴαχε δῖος Ἀχιλλεύς,  
 τῆς δ' ἐκυκλήθη βῶδ' κλέπτειτ' ἐπίκρυροι,  
 ἔνθα ὃ καὶ τότ' ὄλοντο δυνώδεα φῶδ' ἄετοι,  
 ἀμφὶ σφοῖς ὀχέεσσιν καὶ ἔρχεσιν, αὐτὰρ Ἀχαιοὶ  
 πασσίως πάρεκλον ὑπ' ἐκ βελίων ἐρύσαντο δόξ',

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

Οἱ μὲν ἄμυνόμηνροι νέκυες πῆρι τεθνηῶντο·  
 οἱ δ' ἐρύσασθαι ποτὶ Ἴλιον ἦνεμόισιν,  
 φῶβος ἐπιθύεσι, μολίστα δ' φαίδιμος ἔκτορ,  
 ἑλκόμεμαι μέμονον, κεφαλὴν δ' ἐθυμὸς ἀνώγει  
 πῆξαι ἀνὰ σκολόπεσσι ταμόνθ' ἀπαλλῆς ἀπὸ δειρῆς.  
 ἀλλ' ἀνὰ μὴ δ' ἐπικέτο· σέβας δ' ἐσθυμὸν ἰκίδω,  
 παρὸκλον φῶσσι κυσὶν μέλπηθρα γνέδαι  
 θὶ λῶβῃ· αἱ κέντι νέκυες ἡχυμμένους ἔλθῃ,  
 Τὸν δ' ἡμιβίετ' ἐπειτα, ποδάρκης δ' ἴος Ἀχιλλεύς·  
 ἴει θεὰ, τίς τ' ἄρ' σε θινὴ μοῖ' ἀγγέλων ἦκε;  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπε, ποδ' ἦνεμος ὠκία ἴεις  
 ἦρμ' ἐπὶ προέεικέ δ' ἴος κυδρὴ παρὰ κλισίας,  
 εἴδ' οἶδε κρονίδης ὑψίστοχος, εἴ δ' ἐπὶ ἄλλοι  
 ἀθανάτων, οἳ ὄλυμπον ἀγάννιφον ἀμφιμένοντα·  
 Τὴν δ' ἀπαμείβετο μῆμος, προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·  
 πῶς τ' ἄρ' ἴω μετὰ μῶλῶν, ἔχουσι δ' ἐνὶ χεῖρσιν ἐκίνοι;  
 μήτηρ δ' οὔ με φίλῃ πρίν' εἶα θωρήσασθαι,  
 πρίν' αὐτῶν ἰλθοῦσιν ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδῶμαι,  
 εἴη γὰρ ἡφαίστιο παρ' οἴσέ μιν ἔντια καλῶ.  
 ἄλλ' αὖ δ' οὔθ' οἶδε τεύχε' ἄν κλυτὰ τεύχεα δ' ὕω,  
 εἴ μ' αἰάντος γε σάκος τελαμῶνιάδ' αἶο,  
 ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ὄγ' ἔλπομαι ἐνὶ πρῶσις ὀμιλεῖ,  
 ἔρχε' ἰδίοισιν περὶ παρὸκλοιο θανέντο,  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπε ποδ' ἦνεμος ὠκία ἴεις·  
 εἴ νυ καὶ ἡμεῖς ἴσμεν, ὅπ' κλυτὰ τεύχε' ἔχοντα  
 ἀλλ' αὐτῶς ἢ τάφρον ἰδὼν, φῶσσι φωνῆθι.  
 αἴ κε ἐπὶ ποδείοισιν ἀπόχωνται πολέμοιο  
 φῶβος, ἀναπνύσασθ' ἄρ' ἡνέκεσσι ἀχαιῶν  
 τερόμενοι, ὀλίγη δ' ἐστὶν ἀνὰ πνευσίς πολέμοιο·  
 εἴ μιν ἄρ' ὥς ἐποῦσ' ἀπέειπε πόδας ὠκὺς ἴεις.

ἦμι παρ' ἤφασον κλυτὲ χυλῶ, αἰκ' ἐθέλησιν  
 ἡγεῖμαι δόμῳ κλυτὰ τεύχεα παμφανόωντα.  
 Ω: ἔραθ', αἰδ' ὑπὸ κῦμα θαλάσσης αὐτίκ' ἔδυσαν.  
 ἦδ' αὐτ' οὐλυμπόνδε θεὰ θέπεσ' ἀργυρεπίεσσιν  
 εἶον, ὅφρα φίλῳ παιδὶ κλυτὰ τεύχε' ἐνέκωι.  
 τῶ μὲν ἄρ' οὐλυμπόνδε πόδες φέρον, αὐτὰρ ἄχαιοί,  
 θεῶσι σὶ ἀλαλητῶ ὑφ' ἔκτορ' ἄνδρ' ἀφρόνοις  
 φνύγοντο, νῆας τε καὶ ἐλλίσπον κενεῖοντο.  
 ὃ δ' ἐκὼν παρὸ κλόν' ἦρ', ἐκνήμιδι: ἄχαιοί  
 ἐκ βιέλων ἐρύσασθ' ἐνέκωι θεράπωντ' ἀχιλῆϊ.  
 αὐτὸς γὰρ δὴ τὸν γὰρ κίχον λαός τε καὶ ἵπποι  
 ἔκτωρ τε πριάμοιο παῖς φλογὶ ἱκέλεις ἄλλῃ.  
 φῖς μὲν μιν μετόπισθε πωδῶν λαοβίφαιδ' ἱμῶν ἔκτωρ.  
 ἰλκέμεναι μεμαῶς, μέγα δ' ὀρώμεναι ὁμόκλα.  
 φῖς δ' οὐδ' αἴαντες θῆεν ἐπιφύμενοι ἄλκῃ.  
 νικροῦ ἀπεσφίλιξαν, ὃ δ' ἐμπεδον ἄλκι πεπορθῶς.  
 ἄλλοτ' ἐπαΐξασκε κατὰ μόθον, ἄλλοτε δ' αὐτε  
 εἰσάσκε, μέγα ἰούχων, ὀπίσσω δ' ὃ χολίξο πάμπαν.  
 ὃς δ' ἀπὸ σώματος οὔτι λείοντ' αἰθῶνα δύνανται  
 ποιμίνους ἄρ' ἔκλυσι μέγα πεινῶντα δίδεσθαι.  
 ὡς ῥά τόν ἔκ' ἐδύναμ' ὀδῶ αἴαντες κερυαὶ  
 ἔκρηρα πριαμίδῳ ἀπὸ νικροῦ δ' ἐπ' ἵξασθαι.  
 καὶ νύ κε νῆρ' ἔρυσιν τε καὶ ἄσπερον ἦραρ κῦδ' ἔσθ.  
 εἰ μὴ πληθύνει πωδῶν ἐμῶν ὥκεια ἱεῖς  
 ἄγγελος ἦλθε θεῖος ἀπὸ δ' οὐλύμπ' ὁδὸν ἄγειναι.  
 κρύβδαι φίλος ἄλλων τε θεῶν. πρὸ γὰρ ἔκ' ἐμιν ἦρ' ἔσθ.  
 ἀρχοῦ δ' ἵσταμένη, ἔπειτα πῆρόεντα προσφύδα.  
 ὄρσειο πηλείδῃ πάντων ἐκπαγλότεατ' ἄνδρ' ὄν.  
 παρὸ κλῶ ἐπάμωμον οὔτινεα φύλας αἰνῇ  
 ἔσθαι πρὸ νῆων οἰδ' ἀλλήλους ὀλίκεσσιν

θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι φίλον διαμᾶσαντ' ὅτε ἀνώγει·  
 νῦν δ' εἴμι ὄφρα φίλης κίφαλῃς ὀλισθήρα κιχέω  
 ἕκπρα, κῆρα δ' ἐγὼ τότε δέξομαι ὁππότε κεν δῖος  
 Ζεὺς ἐθέλῃ τελέσσαι ἥδ' ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι.  
 ἦ δ' ἔγ' ἄρ' εὖδ' εἴη ἕρα κληῖος φύγε κῆρα.  
 ὅς περ φιλοταυτὸς ἴσκει δ' ἱὴ κρονίωνι ἄνακτι.  
 ἀλλὰ ἔμοῖρα δάμασσε καὶ ἀρχαλῆος χόλῳς ἥρης·  
 ὥς καὶ ἐγὼν ἐδ' ἡμοὶ ὁμοίῃ μοῖρα τέτυκται,  
 κ' ἴθι μ' ἐπέκει θάωνω, νῦν γ' κλέος ἐδὼδὸν ἀροίμην·  
 καὶ ἄνα βρώϊάδων καὶ διαρδανίδων βαθυκόλπου.  
 ἀμφοτέρῃσιν χερσὶ παρθεῶν ἀπαλωσιν.  
 δάκρυ ὁμορξαμένῳ ἀδινὸν εἰναχῆσαι ἐφείμην.  
 γνοῖεν δ' ὥς δ' ἡ δ' ἡρὸν ἐγὼ πολέμοιοι πίπταμαι·  
 μὴ δ' ἐμ' ἔρκε μάχης φιλέεσθ' ἅ περ ἔδ' ἐμὲ πείσσει·  
 Τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα θεὰ τίς ἀργυρόπεζα.  
 ναὶ δ' ἡ ταῦτά γε τέκνον ἱήτυμον ἔκασκ' ἐσ-  
 τερμένοις ἱτάροισιν ἀμυγῆ μιν αἰπὺν ὀλεθρον·  
 ἀλλ' ὅτ' ἐντα κατὰ μετὰ βῶεσιν ἔχονται.  
 χολκίκα μαρμαίροντα τὰ μὲν κερναίοις ἐκτορ-  
 αῦρος ἔχων ὥμοισιν ἀγόμεται, ἔδ' ἐφ' ἡμῖ  
 δ' ἡρὸν ἐπαχλαῖεῖναι, ἐπὶ φρονέει γγύθεν αὐτῶν·  
 ἀλλὰ σὺ μὲν μήπω καταδύσσεο μῶλον ἄρη·  
 πρὶν γ' εἴμι δ' αὖρ' ἐλθοῦσιν ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδεῖναι.  
 ἦ ὦθ' ἐγὼ γὰρ νεῦμαι ἅμ' ἡελίῳ ἀνιόντι.  
 τεύχεα κατὰ φίρσ' ἅ παρ' ἡφαίστιο ἄνακτος.  
 ὣς ἄρα φωνήσασα πάλιν ῥάπεθ' ὕιος ἰοῖο.  
 καὶ σπυφθεῖσ', ἀλὶήσι κρησιγνήτησι μετ' ἡδ' ἄλ·  
 ἡμεῖς μὲν νῦν δ' οὔτε θαλάσσης δόρυα κόλπου.  
 ὀφθαλμοῖσι γέρονθ' ἄλιον, καὶ δ' ὡματα πατρὸς·  
 καὶ εἰ πῶντ' ἀγορεύσας, ἐγὼ δ' ἐς μακρὸν ἔλκωμι



Πηϊώας ἀπέδυσσε πηλώεα θαῦμα ἰδέσθαι  
 καλὰ, τὰ μὲν πηλῇ θεοὶ δόξαν ἀγλαὰ δέσρα  
 ἔμαπτε δὲ, ὅτε σὺ βροτῶ ἀνέρος ἔμβασθον δύνῃ.  
 ὡς ὄφελός σὺ μὲν αὖθι μετ' ἀθανάτης ἀλὴϊσσι  
 ναίειν, πηλεὺς δ' ἐθνητὴν ἀγαγέσθαι ἀκρίων,  
 νῦν δ' ἵνα καὶ θεὸν πένθος ἐνὶ φρεσὶ μύριον ἔῃ  
 πασιδὸς ἀποφθιμένοιο. ἦν ἔχ' ὕποδ' ἔξειαι αὖθις  
 οἴκαδε νοσήσαντ' ἐπὶ ἕδ' ἐμὲ θυμὸς ἀνωγ  
 ῖόν, ἕδ' ἀνδρασι μετέμμεναι αἴκε μὴ ἔκταρ  
 πρῶτος ἐμῷ ὑπὸ δ' ἄρ' ἰτυπεῖς, ἀποθυμὸν ὀλέσῃ,  
 παρόκλειο δ' ἔλωρα μῆμοιπάδεω ἀποτίσῃ.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπε θέτις, καταδακρυχέεσσα.  
 ὠκύμορθε δῆμοι τέως ἔσσιαι, οἳ ἄγορεύεις.  
 αὐτίκα γάρ τοι ἔπειτα μετ' ἔκτορα πότμος ἔρῃμθε.

Τὴν δὲ μίγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς,  
 αὐτίκα τεθναίῳ, ἐπεὶ ἔκ' ἄρ' ἐμὲλλον ἑταίρω  
 κτενομένῳ ἑπαμῦναι, ὃ μὲν μάλ' αὖτε τῇ δόθι πάρος  
 ἔφθιπ' ἐμείο ᾧ δ' ἦσαν ἀρῆς ἀλκτῆρα γένεσθαι.  
 νῦν ἐπεὶ ἔνέομαί γε φίλῳ ἐς παρίδα γαίῃ  
 ἔδ' ἐπὶ παρόκλῳ γένόμενῳ φάος, ἔδ' ἑτάροισι  
 τοῖς ἄλλοις, οἳ ᾧ πολέος δ' ἀμύμ' ἔκκει δ' ἴφ.  
 ἀλλ' ἔμει παρὰ νηυσὶν ἐτώσιον ἄχθος ἀρούρης,  
 τοῖσ' ἔδ' ὧν, οἷος οὐπὲς ἀχαιῶν χαλκῷ χιτώνων,  
 ἐν πολέμῳ, ἀγορῇ δ' ἐτ' ἀμείνονός ἐσσι καὶ ἄλλοι.  
 ὡς ἔεις ἐκ τε θιῶν ἐκ τ' ἀνθρώπων ἀπόλυσθαι  
 καὶ χόλος, ὅς τ' ἐφίηκε πολύφρονά περ χαλεπῆναι.  
 ὅστις πολὺ γλυκίων μέλιτος καταλῖβομένοιο  
 ἀνδρῶν ἐν σήθεσιν αἰέξεται ἢ ἔτι καπνός,  
 ὡς ἐμὲ νῦν ἐχόλωσεν, ἔναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἀλλὰ τὰ μὲν προτιτύχθαι ἰάθ' μὲν ἀχρὺ μῆμοί περ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

εἶδ' ἄλγουςσσαι, εἶσ' ἐμῷ ἐνὶ κέδρα θυμῷ.  
 ὦ μοι ἐγὼ δειλὴ, ὦ μοι δυσταεισotόκηs,  
 ἥτ' ἐπεὶ ἄρ' τέκην ἕδ' ἄμύμονά τε κρατιρόν τε  
 ἔξοχον ἡρώων, ὅδ' ἀνέδραμ' ἐρνεῖ Ἴδῳ,  
 τὸν μὲν ἐγὼ θρέψασα φυεῖν ὥς ῥωμῷ ἀλoῆs,  
 νηυσὶν ἐπιπρόεηκα κερωνίσιν Ἴλιον εἶσω  
 ῥωσὶ μάχηςόμῃον, τὸν δ' ἔχ' ὑποδέξομαι ἄντι  
 οἷαδὲ νοσήθοντα δόμον πηλῆιον εἶσω,  
 ὄφρα δέ μοι ἴωσι καὶ ὄρεα φάσθ' ἠελίοιο,  
 ἀχυνται, εἰδ' ἐπὶ οἱ δύνάμαι χρασμῆσαι ἰούσῃ,  
 ἀλλ' εἰμ' ὄφρα ἴδωμαι φίλον τέκος ἥδ' ἐπακούσω.  
 οἷ ἱμῖν ἴκθο πένθος· ἀπὸ πτόλεμοιο μένοντα·

Ὡς ἄρα φωνήσασα λίπε σπείος, αἰδὲ σὺν αὐτῇ,  
 διακρυόεσσαι Ἴδαν, περὶ δ' ἐσφι κῦμα θαλάσσης  
 ῥέγνυτο, ταί δ' ὅτε δὴ ῥοήν' ἐρίβωλον ἴκοντο,  
 ἀκτιῶ ἐστάνειανον ἐπιχερῶ, ἔνθα θαμναί  
 μυρμιδόνων εἴρωτο νέεσ, ταχύν' ἀμφ' ἀχιλῆει.  
 Ἰδὼ δ' ἐβαρυσεν ὠχόντι παρίστατο πότνια μήτηρ·  
 ὀξύ ᾧ κωκύσασα κλέψῃ λάβε παυδὸς ἰοῖο,  
 καί ῥ' ὀλοφυρομένη, ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

Τέκνον τί κλαίς, τί δέ σε φρένας ἴκθο πένθος;  
 ἔξαυδα μὴ κινῶτε τὰ μὲν δ' ἡ περὶ τετέλιστα  
 ἐκ δίδος, ὥς ἄρα δὴ πρίν γ' εὐχέο χεῖρας ἀναχῶν.  
 πῶντας ὧς πρὺ μνησιν αἰλί μῃμα ὕιας ἀχαιῶν,  
 σὺν ἐπίδ' ἐνομένους παθίεντ' ἀνκήλια ἔργα.

Τὴν δὲ βαρυσεν ὠχὼν προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς·  
 μήτηρ ἐμὴ, τὰ μὲν ἄρ' μοι ὀλύμπιος ἔξιντέλειαι·  
 ἀλλὰ τί μοι τῶν ἥδ' ος, ἐπεὶ φίλος ὦλεθ' ἐταῖρ;  
 πάροκλος, τὸν ἐγὼ περὶ πάντων τῶν ἐταῖρων  
 ἴδον ἐμῇ κεφαλῇ, ἐν ἀπώλει, τινύχῃ δ' ἔκτορ

ἀμφοτέρῃσι δ' ἤρσιν ἱλὼν κόνιν αἰθαλόεσσαν·  
 χυλάτο κίχκε φαλῆς, χάρειν δ' ἤχωνε πρόσωπον·  
 νικταρίῳ δ' ἠιτῶνι μέλαιν' ἀμφίβανε τίφρη·  
 αὐτός δ' ἐν κνήῃσι μέγας μάχῳσι ταυθαίης·  
 κίῳ, φίλῃσι δ' ἤρσιν κόμῳ ἤχωνε δαΐφρον·  
 δμῳαὶ δ' ἄς ἀχιλῆος λήσαστο πάροκλος τε  
 θυμὸν ἀκηχέμενοι, μετὰ δ' ἴαχον, ἐκ δ' οὐραῖς  
 ἔδραμον ἀμφ' ἀχιλῆα δαΐφρονα ἤρσιν δ' πᾶσαι  
 εἴθεα πεπλήγοντο, λύθον δ' ὑπὸ γυῖα ἐκάσθη·  
 αὐτίλοχος δ' ἐτέρωθεν ὀδύρξο δάκρυα λείβων,  
 χαῖρας ἔχων ἀχιλῆϊ, ὃ δ' ἔειπε κυδῶλιμον κέρ·  
 δειδείτε γὰρ μὴ λαίμον' ἀποτμήξει σιδῆρα·  
 σμυδαλίον δ' ὠμῶξεν ἄκυσεν δ' πότνια μήτηρ,  
 ἡμῖνα ἐν βένθοισιν ἄλως, παρὰ πατρὶ γέροντι·  
 κῶκυσον τ' ἄρ' ἔπειτα, θεαὶ δ' ἐμιν ἀμφαγέροντο  
 πᾶσαι, ὅσαι κατὰ βένθος ἄλως νηρηίδεσσιν ἦσαν·  
 ἐνθ' ἄρ' ἔλω γλαυκὴ τε θαλασσαί τε, κυμοδόκῃ τε,  
 νησαίῃ· σπηώτε, θέσθ', ἀλίητε βοῶπις·  
 κυμοθόη τε καὶ ἄκταιν καὶ λιμνώρεα,  
 καὶ μελίτη, καὶ ἴαυρα καὶ ἀμφιθόη, καὶ ἄραυη·  
 δωτώ τε, πρωτώ τε, φερυσά τε, δισαμίνη τε·  
 Ἀξαμίνη τε, καὶ ἀμφινόμη, καὶ καλλιάνερα  
 δωρίς καὶ πανόπη, καὶ ἄρακλητὴ γαλατθεα·  
 νημερτής τε, καὶ ἀφειυδής, καὶ καλλιόνασσα·  
 ἐνθα δ' ἦν κλυμένη, ἰάνερα τε, καὶ ἰόνασσα,  
 μαῖρα καὶ ὠρέθηα ἐυπλόκαμος τ' ἀμάθεια·  
 ἅλλαι θ' αἱ κατὰ βένθος ἄλως νηρηίδεσσιν ἦσαν·  
 τῶν δ' καὶ ἀργύφειον πλῆτο σπέος, αἶδ' ἅμα πᾶσαι·  
 εἴθεα πεπλήγοντο, θέπις δ' ἐξήρχε γόοιο·  
 ἐλῦτε κασίγνηται νηρηίδεσσι, ὅφρ' εὖ πᾶσαι

ΙΛΙΑΔΟΣ Σ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Σίγμα θέπε ἀχιλῆϊ παρ' ἡφαίστου φέρον ὄπλη.

Σοὶ μὲν μάρναντο δέμας πυρ  
ρὸς αἰθεμένοιο.

ἀντίλοχος δ' ἀχιλῆϊ πόδας πε  
χὺς ἄγγιλον ἤλθε.

τόνδ' ἔβρι προπάροιθε νεῶν ὄρ  
θοκραράων,

τὰ φρονέοντ' ἀνὰ θυμόν· ἃ δὴ τιτιλισμένα ἦεν.  
ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς ὃν μεγαλήτρε θυμόν·  
ὦ μοι ἔγωγε, τίτ' ἄρ' αὖτε κερκεμέωντός ἀχαιοὶ  
νηυσὶν ἐπικλινέονται ἀτυγχεῖσθαι πιδίοιο.

μὴ δὴ μοι τιλίσσασθαι τοὶ κακὰ κέδρα θυμῷ.  
ὥς ποτὲ μοι μήτηρ διεπέφραδε καὶ μοι εἶπε.

μυρμιδόνων τὸν ὄρεσον ἐπὶ ζῶντος ἐμεῖο,  
χρὸν ὑπὸ τῶων λείψεν φάος ἡλίοιο.

ἢ μάλλα δὴ τέθνηκε μνηοπιδὺς ἀλκιμον ἦος  
σχέτιλον, ἥτ' ἐκείλυσον ἀπώσά μιν δόιον πῦρ.

ἄψ' ὣς νῆας ἱμῶν, μὴ δ' ἐκπείρι μάχεσθαι.

ἕως ὅταν θ' ὤρμαινε κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν.  
τόφρα οἱ ἐγγύθην ἦλθεν ἀγαν ἄνεσθον ἦος.

δάκρυα θειρὰ χέων φάρ δ' ἀγγελίῳ ἀλεγεινῇν,  
ὦ μοι πηλὶος ἦε δαΐφρονος, ἢ μάλλα λυγρῆς

πιύσσει ἀγγελίης, ἢν μὴ ὤφελι γενέσθαι.

κεῖται πάρος κλος, νέκυος δ' ἃ δὴ ἀμφιμάχοντα

γυμνοῦ, ἀτὰρ τά γε τιὺ χεῖρ' ἐχέει κερυθαίλας ἑκτορ,

ὦ φάρ, τόνδ' ὄχιος νεφέλῃ ἐκάλυψε μέλαινα.

ἢ δ' ὀκὸν ἢ ἐδ' ὄρυ μίχα νέϊον· ἐν δ' ἐτε θυμὸς  
 τείρεθ' ὁμῶ καμάτω τε καὶ ἰδρῶ πυνδόντεσσι·  
 ὧ· οἳ γε μιμαῶν γε ἱέκω φέρον, αὐτὰρ ὅπιδ' ὠ  
 αἶαντ' ἰχ' ἀνέτλω εἰσπρ' πρῶν ἰχ' ὠνδ' ὕδωρ,  
 ὑλῆς περ' ἰοιο διαπρύσιον τε κυχηκῶς·  
 ὅς τε καὶ ἰφθίμων ποταμῶν ἀλιγεῖν ἄρ' ἐβρα-  
 ἰχ' δ', ἄφαρ δ' ἐτε πᾶσι ῥύον πεδίονδ' ἐτίθησε  
 πλάζων, ὅς τε π' ἰμιν δ' ἐνὶ ῥηγυῖσι ῥέοντο δ',  
 ὥς αἰεὶ αἶαντε μάχῃ ἀνέβρον ὀπίσσω  
 πρῶν, οἳ δ' ἄμ' ἐπ' ἔσαντο· δ' ὕωδ' ἐν ἔϊσι μάλιστα  
 αἰνείας τ' ἀρχισιῶδης, καὶ φαίδιμος Ἴκτωρ,  
 τῶν δ' ὥς τε φαρῶν νέφος ἔρχεται ἢ ἐκ λαιῶν  
 οὐλὸν κεκλήγοντο δ' ὅτε προΐδωσιν ἰόντα  
 κίρκην, ὅς τε σμηρῆσι φόνον φέρεῖ ὀρνίθισσιν,  
 ὥς ἄρ' ὑπ' αἰνεία τε καὶ Ἴκτορ ἐκ τοῦ ἀχαιῶν,  
 οὐλὸν κεκλήγοντο δ' ἴαν, λήθοντο δ' ἡ χάρμης·  
 πολλὰ δ' ἐτεύχεα καλὰ πέθον περὶ τ' ἀμφὶ τετάρφρον  
 φευγόντων δαναῶν· πολέμῃ δ' ὅ γ' ἵν' ἐρωή·

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ· Σ· ΟΜΗ-  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

α Χίμεις ἐν παρόκλῃ θάνατον ἐπιγινύσκειν ὀφεί-  
 λουσι, ἀνελθῶσα δ' ἐπὶ θείῃς ἐκ τῆς θαλάσσης, πα-  
 ρηγορεῖ αὖτις, καὶ παραινέει ἀπέχεσθαι τοῦ πολέμου, ὡς  
 ἂν αὐτῶ ὅπλα καμίσῃ παρὰ τοῦ ἡφαίστου, κατενυσσόμε-  
 ναι ἥρας, ἀνοπλῆς προσελθὼν ὥς τὴν τετάρφρον, ἐπιφαίνε-  
 ται ὅτις πολέμοις, καὶ αὐτὸν ἐκπλαγέντος φεύγουσι,  
 καὶ κατὰ τὴν φυγὴν πολλοὶ διαφθείρονται, καὶ ὁ πατὴρ  
 κλυὸν σῶμα διασώσαντος οἱ μυρμιδόνες λούουσιν, ὅπως  
 τοῖς δ' ἀχιλλεῖ πατρὶσι καὶ πατρὶσι καὶ πατρὶσι.



Τῶν ἑξ ἱνοπῆς, θάνατόν καὶ κῆρα φύγοι μῆναι·  
 Τὸν δ' ἠμέβειτ' ἔπειτα μέγας τιλαμών· οἱ αἶας  
 πάντα κατ' αἴσων ἔειπεν ἀγκλιεὺς ὦ μιν ἔλαι·  
 ἀλλὰ σὺ μὲν καὶ μνηϊόνης ὑποδύντε μάλ' ὦκα,  
 νεκρὸν ἀείρωντόν φέρετ' ἐκ πόνου, αὐτὰρ ὅπασθε  
 νῶϊ μαχισόμεθα βρῶσιν τε καὶ ἔκτορι δίδω  
 ἴσον θυμὸν ἔχοντόν δ' ὁμώνυμοι, οἳ δ' ἴαρος περ  
 μένομεν ὀξύν' ἄρῃα, παρ' ἀλλήλοισι μένοντόν,  
 Ὡς ἴφαθ' οἳ δ' ἄρα νεκρὸν ἀπὸ χθονὸς ἀγκάστον  
 ὕψι μάλα μεγάλῳ ἐπὶ δ' ἴαχε λαὸς ὀπίσθιν  
 βωϊκός, ὥς ἴδον νίκῃ αἶρόντας ἀχαιοὺς,  
 ἴθυσαν ἧ κύνεσσιν ἰοικότον, οἳ τ' ὧς κἀπρηθ  
 βλημένοι αἰῖξωσι πρὸ κούρων θηρητῆρων·  
 ἔως μὲν γάρ τε θέεσι, διαρρῶαῖσσι μεμαῶτόν,  
 ἀλλ' ὅτε δούρ' ἐν τοῖσιν ἐλίξεται ἀλκὴ πνυτοῖός,  
 ἀφ' τ' ἀνέχωρσσαν, δία τ' ἔρισαν ἀλλυδίς ἄλλων,  
 ὥς βῶες, εἰς μὲν ὁμιλαδὸν αἶν' ἔποντο,  
 νύσοντόν ξίφισίν τε καὶ ἐγχεσιν ἀμφιγυόισιν,  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἦρ' αἰῶντε μεταστρεφθέντε κατ' αὐτούς,  
 παήσσαν, τῶν δ' ἔραπτο χρῶς· οὐ δ' εἰς ἔτλη  
 πρόσθε αἰῖξας, περὶ νεκρῷ δ' ὑρίσσεια·

Ὡς οἳ γὰρ μεμαῶτε, νίκῃ φέρον ἐκ πολέμοιο  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς· ἐπὶ ᾧ πτόλεμος τέτατό σφιν  
 ἄχρητος ἦν τε πῦρ, τό, τ' ἐπ' αὐτὸν πόλιν ἀνδρῶν  
 ὄρμιον ἐξαίφνης φλιγέθει, μινύθει ἧ οἴκει  
 ἐν σέλαϊ μεγάλῳ, τό δ' ἐπιβρέμει ἴς ἀνέμοιο  
 ὥς μιν τοῖς, ἵππων τε καὶ ἀνδρῶν ὀχμητῶν  
 ἀλγῆς ὄρμητος ἐπήϊεν ἐρχομένοισιν,  
 οἳ δ' ὥς θ' ἠμίονοι κρατερὸν μένος ἀμφιβαλόντο,  
 ἔλκοντο ἐξ ὄρειος κατὰ παπαλόεσσιν ἀταρπὸν·

δ' ὀσκόγ,

ἀρχὴ δ' ἰσάμην· προσέφη ξανθὸς μιν ἱλα·  
 Ἀντίλοχ' ἔδ' ἄγε δειῦρο διοτρεφὺς ὄφρα πύθῃαι  
 λυγρῆς ἀγγελίης, ἢ μὴ ὥφελι γινέσθαι.  
 ὅδ' ἡ μὲν σε καὶ αὐτὸν οἶομαι εἰθρόωντα,  
 γινώσκην ὅτι πῆμα θεὸς δαυκαοῖσι κυλίνθει.  
 νίκη δ' ἔφωρ, πέφαται δ' ὤειςος ἀχαιῶν  
 πάροκλος, μέγαλ' ὅ ποθ' ἑδαικαοῖσι τίτυκται·  
 ἀλλὰ σύ γ' αὖτ' ἀχιλῆϊ θίωρ ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν,  
 ἐπὶ νῆαί κε τάχιστα νέκω ἐπὶ νῆα βρώσῃ  
 γυμνὸν, ἀτὰρ τὰ γὰρ τόδ' ἔχει καρθαίοιοις ἔκτορ,  
 ὧς ἔφατ', ἀντίλοχος δ' ἐκείνου γὰρ μῦθον ἀκούςας.  
 δῆρ' ὅτ' ἡ μὲν ἀμφασίῃ ἐπὶ ὤρῃ λάβει, τὼ δ' ὅτ' ὅσπερ  
 δακρυόφιρ πληθύν, θαλίῃ δ' ὅτ' ἔχθρο φωνή·  
 ἀλλ' οὐδ' ὥς μιν ἱλάσῃ φημοσύνῃς ἀμίλησε.  
 βῆ δ' ὁ θείων, τὰ δ' ὅτ' ἔχει ἀμύμονι δῶκεν ἱταίρῳ  
 λαοδόκῳ, ὅς δ' ὁ γὰρ ἔσφι μώνυχας ἵππους·  
 τὸν μὲν δακρυχέοντα πόδες φέρον ἐκ πολέμοιο,  
 πληείδ' ἡ ἀχιλῆϊ κακὸν ἔπος ἀγγελλόντα·  
 οὐδ' ἄρα σοὶ μιν ἱλάσῃ διοτρεφὺς ἤθελε θυμὸς  
 τέρομένοισι ἐτάροισιν ἀμυνέμεν, ἔνθα ἀπῆλθεν  
 ἀντίλοχος, μέγαλ' ὅ ποθ' ἐπὶ νηυσὶν ἐτύχθη·  
 ἀλλ' ὅ γὰρ τοῖσι μὲν θρασυμήδεα δῖον ἀνῆκεν·  
 αὐτὸς δ' αὖτ' ἐπὶ παρόκλῳ ἦρωϊ βεβήκει·  
 καὶ δ' ἄρ' ἐπ' ἀάντασι κίων, εἴθεα δ' ὅτ' προσυῦδ' αἶα  
 κείτοιν μὲν δ' ἡ νηυσὶν ἐπιπροΐηκα βοῆσιν  
 ἐλθεῖν, εἰς ἀχιλῆα πόδας τάχυν, οὐδ' ὅτ' ἡ μιν οἶω  
 εἶναι μάλα περ κεχολαμένον ἔκτορι δῖῳ.  
 οὐ γὰρ πῶς ἂν γυμνὸς εἶναι φάσαιτο μάχῃτο·  
 ἡμῖν δ' αὐτοῖ περ, φραζώμεθα μῆτιν ἀρίστην  
 ἢ μὲν ὅπως τὸν νεκρὸν ἐρύθμεν, ἢ δ' ὅτ' αὐτοῖ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔρυσσεν δ' Ἀχιλλεὺς Δαΐφρονα θάλασσαν ἰόντα,  
ἐπὶ νῆρ' ὅτ' ἰδὼς πολὺ φίλτατ' ὅωλ' ἑταῶν  
ὣς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθκει βοῇν ἀγαθὸς μῆνιλαῖ.

βῆ δ' Ἴναια, ὡς τίς τε λίωρ ἀπὸ μετασύνου,  
ὅς τ' ἐπὶ ἄρ' κικλήμῃσι κύνας τ' ἀνδρας τ' ἐρεθίζῃ  
οἵ τε μιν οὐκ ἐμῶσι βοῶν ἐκ πῖασι λίωται  
παννύχιοι ἐγρήσσοντο δέ, ὃ δὲ κρηῶν ἑρατίζων  
ἰθύει, ἀλλ' οὔτι πρήσσει, θαμίνες γὰρ ἀκοντοῖ  
ἀντίοι αἴσσανσι θρασυφάρων ἀπὸ χερῶν  
καὶ οὐ μὲν αἶψα δαίτ' αἶψα, τὰς τε φίλ' ἑσσύμενός περ  
ἦδ' ἔθην δ' ἀπονόσφιν ἔβη, τετιηότι θυμῷ,  
ὡς ἀπὸ παρόκλου βοῇν ἀγαθὸς μῆνιλαῖ,  
ἔτι πόλλ' ἄεκον, πῖε γὰρ οἷε μὴ μιν ἄχαιοι  
ἄρ' ἀλὲν πρὸ φόβοιο ἔλωρ δ' ἡίοισι λίποιν  
πολλὰ δ' ἢ μνησέοντι καὶ ἀνάντεσι κίλιναι.

Δῖον δ' ἀργείων ἡγήτορι, μνησέοντι  
νῦν τις ἐν νείησιν παρ' ὀκλήσας δ' ἡλυσῖ  
μνησάμεναι, πᾶσιν γὰρ ἐπίστατο μέλιχος εἴν  
ἰωδὸς ἰών, νῦν δ' ἔνθ' ἔθανε καὶ μοῖρα κίχ' ἀνεί.  
ὣς ἄρα φωνήσας ἀπὲβη ξανθὸς μῆνιλαῖ.

πάντοσε πατρίων ὡς τ' αἰετὸς, ὃν ῥά τι φασὶν  
ἄνθρωπον δ' ἐρεκεῖναι ὑπὲρ βανίωρ πετινηῶν,  
ὃν τε καὶ ὑφ' ὅθ' ἰόντα πόδας ταχὺς οὐκ ἔλαθε πῖδξ,  
θάμνω ὑπ' ἀμφικόμῳ κατακείμενῳ, ἀλλὰ τ' ἐπ' αὐτῷ  
ἔσσυτο, καί τε μιν ὦκα λαβὼν ἐξήλθο θυμόν,  
ὥς τότε σοὶ μῆνιλαὶ διοβέφεις ὅσσιν φανῶ.

πάντοσε δ' ἐν νείησιν πολλῶν κατὰ ἔθνος ἑταίρων  
εἴ περ νέεστος ἦεν ἐπὶ ἰώντα ἰδούσιο.  
τόν δ' ἢ μάλ' αἶψ' ἐνόησε μάχης ἐπ' ἀεισερὰ πόλιν  
θαρσύνοντι ἑταίρους καὶ ὑποβύρνοντα μολχεῖναι.

Ως ἴφατ', ἰδοὺ μὲν δὲ ἵμασιν καλὶ ῥίχας ἵππων,  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, δὴ γὰρ δέος ἔμπιστε θυμῷ.  
 οὐ δ' ἔλαθ' αἰῶντα μεγαλήτορα καὶ μὲν ἔλασσον  
 βύς, ὅτε δὴ ῥώεσι δίδυ ἐτραλκεία νίκῳ.  
 τοῖσι δ' ὁ μύθων ἦρχε μέγας τελαμώνιος αἴας.

Ὡ πόποι, ὅδ' ἄν μιν γὰρ καὶ ὅς μάλ' ἀνυπίος ἔσται,  
 γνοίη ὅτι ῥώεσι πατήρ βύς κυδὸς ὁπάσσει.  
 τῶν μὲν γὰρ πάντων βέλε' ἄπλεται ὅς τις ἀφείη.  
 ἢ κακὸς, ἢ ἀγαθός, βύς δ' ἔμπης πάντ' ἰθύνει.  
 ἢ μιν δ' αὐτὸς πᾶσιν ἐτώσια πίπῃ ἔρασει.  
 ἀλλ' ἄγετ' αὐτοὶ περ φραζώμεθα μῆτιν ἀρίστην,  
 ἢ μὴ ὅπως τὸν νικητὸν ἐρύσσομεν, ἠδ' ἐκ αὐτοῖ  
 χάρμα φίλοις ἐτάροισι γηνοίμεθα νοστήσαντες.  
 οἶπ' ἀνδρ' ὁρώοντες ἀκηχέατ' οὐ δέ τι φασὶν  
 ἔκτορ. ὁ δ' ἀνδρόφονοιο μένος καὶ χιῖρας ἀάπτει  
 ῥήσσει δ' ἀλλ' ἐν νηυσὶ μελαίησιν πιστεύειν.  
 εἴη δ' ὅς τις ἐταῦρος ἀπαγγέλλει τάχιστα.  
 πῶλε δὲ, ἐπεὶ οὐ μιν οἶομαι οὐδ' ἐπιπύδαι  
 λυγρῆς ἀγγελίης, ὅτι οἱ φίλος ὦλεθ' ἐταῦρος.  
 ἀλλ' οὐπω δύναμαι ἰδέσθαι τοῦτορ ἀχαιῶν.  
 ἦει γὰρ κατέχονται ὁμῶς αὐτοί τε, καὶ ἵπποι,  
 εἴ μιν πάτερ ἀλλὰ σὺ ῥῦσαι ὑπ' ἠέρος ὕιας ἀχαιῶν.  
 πῶσιν ὁ δ' αἶσθ' ὅς δ' ἐφθαλμοῖσιν ἰδέσθαι.  
 ἐν δέ φάει, καὶ ὀλισσοο, ἐπεὶ νύ τοι ὑἷαδ' ἐν οὐτῳ.

Ως φάτο, τὸν δ' πατήρ ὀλοφύραθ' ἀκρυχέοντα.  
 αὐτίκα δ' ἠέρα μὲν σκιδάσεν, καὶ ἀπῶσεν ὁμίχλῳ,  
 ἠέλιος δ' ἐπέλαμψε μάχῃ δ' ἔπειτα φάειν.  
 καὶ τότ' ἄρ' αἴας ἔπει βοήρ' ἀγαθὸν μὲν ἔλασσον.  
 Σκέπῃ οὖν μὲν ἔλασε διοφείης αἴκην ἰδοῦναι.  
 βωρὸν ἐπ' αὐτίλῳ, μετὰ θυμὸν νείκερος ἔσται.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

μερμερίσω, ἴδω δ' ὅ κατωφείεσι κάλυψεν,  
 ἄσφακτος δ' ἡ μάλα μετὰ λ' ἔκτυπε, τύρ δ' ἐτίναξε.  
 νίκη δ' ὅ τρώεσσι δίδυ, ἐφόβησε δ' ἄχαιούς.  
 πηῶτ' ὅ πλωίλας βοιώτιος ἤρξε φόβοιο,  
 βλήτο γὰρ ὦμον, διερὶ πρόσω τετραμμένος αἰὶ,  
 αἶφον ἐπιλήθω, γράφειν δέ οἱ ὅς τ' ἐον ἄχρ' ἔτι  
 αἰχμὴ πηλυδάμωτ' ὅ γὰρ βώλε χειρὸν ἐλθών,  
 λήϊτον ἄνθ' ἔκτορ χιρὸν οὔτασε χιρ' ἐπὶ καρπῷ.  
 ἦ δ' ἄλλ' ἐκφυόνος μετὰ θυμῷ, παῦσε δ' ἡ χάρις,  
 φέει δ' ὅ πατὴρ ἐπὶ οὐκ ἐτι ὕλπε θυμῷ  
 ἔχρος ἔχον ἐν χειρὶ, μαχέσασθαι τρώεσιν,  
 ἔκτορα δ' ἴδομεν ὅς μετὰ λήϊτον ὄρμηθέντα.  
 βιβλήκει θώρηκα κατὰ σῆθος παρὰ μασόν,  
 ἐν κυλῶ δ' ἐάτη δολιχὸν ὄδον, τοί δ' ἐφόβησαν  
 τῶες, ὅ δ' ἴδομεν ὅς ἀκόντισιν ἐνυκλίδεα  
 δίφρῳ ἐφεισκότ' ὅ τ' ἐμὲν δ' ἀπὸ τυτθὸν ἄμαρτυ.  
 αὐτὰρ ὅ μνηστῆρας ὁππότεον θ', ἠνίοχον τε.  
 κείρουσιν, ὅς δ' ἐκ λυκτῶ ἐκτιμῆναι ἐπὶ αὐτῷ.  
 πείσας γὰρ τὰ πρῶτα λιπὼν νείας ἀμφιλείσας  
 ἔλυθε, καὶ κε τῶσιν ἐμὲν κράτ' ἐγγυολίξιν,  
 εἰ μὴ κείρουσιν ὅς κε τῶσιν ἐμὲν ἔλασιν ἱππας,  
 καὶ τῶσιν φάος ἔλθων, ἄμωε δ' ἠνίοχον ἔμαρ,  
 αὐτὸς δ' ὥλεσε θυμὸν ὅτ' ἔκτορ' ὁ ἀνδροφόνοςιο.  
 τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὐατ' ἐκ δ' ἄρ' ὄδοντα  
 ὅς οἱ ὄδον πρυμνὸν, σφῆ δ' ἔλθωσαν τὰ μὲν μέγαν,  
 ἔειπε δ' ἐξ ὀχίων, κατὰ δ' ἠνία χιρὸν ἐραξ.  
 καὶ τὰ γὰρ μνηστῆρας ἔλαβεν χεῖρας φίλησι,  
 κύψας ἐκ πεδίοιο, καὶ ἴδομεν ὅς προσήύδα,  
 Μάστει νῦν εἶως κε θοὰς ἐπὶ νῆας ἵκηαι,  
 γινώσκεις δ' καὶ αὐτὸς ὅτ' οὐκ ἐτι κάρτ' ἄχαιων.  
 Ως ἔφατ',



παρόκλω, μή γα γάρ με θανάδ' ἰσι μάλα β' θυμόν.  
 ἀλλ' ἔκτορ πυρὸς ἀνὸρ ἔχθ' ἔμιν' οὐδ' ἀπολύγῃ.  
 χαλκῷ δ' ἠϊόνων, ἔδ' γὰρ (ὄν κ' ὅς οὐ πάϊς).

Ως φάτο, γ' ἦθησιν ὃ θιὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη,  
 ὅτ' ἰδὲ δὲ πᾶμπρωτα θιῶν ἠρύξατο πάντων.  
 ἦν ὃ βίῳ ὤμοισι, καὶ ἐν γούνασιν ἔθηκε.  
 καὶ δὲ μῦθ' ἔειπεν ἐνὶ στήθεσιν ἐνὶ κνήμῃ.  
 ἦ τε καὶ ἐργαζομένη μάλα περ χροὸς ἀνδρομένοιο,  
 ἰοχναῖα δακίειν, λαρὸν τ' ἐδὲ αἰμ' ἀνθρώπων,  
 τοῖς μιν θάρσυνε πλησύν φρένας ἀμφιμυλαίνου.  
 βῆ δ' ἐπὶ παρόκλω, καὶ ἀκόντισε δ' ἐνὶ φανῶ.  
 ἔσκει δ' ἐνὶ βῶσι ποδῶν ἦδ' ἠετίων' οὐ,  
 ἀφ' ἑσθ' ἄγαθός τε μάλιστα δ' ἐμιν τῆν' ἔκτορ  
 δῆμν, ἐπεὶ δὲ ἔταυρ' ἔλω φίλος ἑλαπινασῆς.  
 τὸν ῥα κατὰ βωστῆρα βάλε ξανθὸς μῦμ' ἔλασιν.  
 αἰξάντα φόβον δ' ἐσχ' πρὸς ὃ χαλκὸν ἔλασιν.  
 δούπησεν ὃ πῖσων, αὐτὰρ ἀφ' ἑσθ' ἠετίων' οὐ.  
 νεκρὸν ὑπ' ἐκ βῶν ἔρυσεν, μετὰ ἔθνος ἰταίρων.  
 ἔκτορ δ' ἐγγύθεν ἰσάμην' ὤφειν ἀπόλλων  
 φαίνοπι ἀσιάδῃ ἐναλίγκι' οὐ, ὅς δὲ ἀπάντων  
 ξείνων φίλτατ' οὐ ἔσκειν ἀδυδὸς οἰκία ναίων.  
 ἔδ' ἐμιν ἐσάμην' προσέφη ἑκάεργος ἀπόλλων.  
 ἔκτορ, τίς κ' ἐστ' ἄλλος ἀχαιῶν ταρβήσων.  
 οἶον δ' ἡ μῦμ' ἔλασιν ὑπέβ' οὐ, ὅς τ' ἄλλος περ  
 μαλθακὸς αἰχμητής, νῦν δ' οἷχεται οἷος ἀείρας  
 νεκρὸν ὑπ' ἐκ βῶν σὸν δ' ἔκτανε πῖσων' ἔταυρον,  
 ἔδ' ἔδ' ἐνὶ προμάχοισιν, ποδῶν ἦδ' ἠετίων' οὐ.  
 Ως φάτο, τὸν δ' ἄχαιος νεφέλῃ ἐκάλυψε μίλων.  
 βῆ δ' ἐσχ' προμάχων, κενυρθεμένος αἰθόπῃ χαλκῷ.  
 καὶ τὸ τ' ἄφα κρονίδης, ἔλετ' αἰγίδα θυσσασίας

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔκτορ, αἰνέας τ' ἠδ' ἑχρόμιος θιοκλῆς.  
 ἄρητορ ὃ κατ' αὐθι, λίτορ δ' ἀϊγμέντορ ἦτορ  
 κείμωμον, αὐτομέδωρ ὃ θοῶ ἀτάλαντ' ἄρηι,  
 τοῦ χάτ' ἱξυνάειξι, καὶ εὐχόμωμ' ἔπος ἦυδα.  
 ἦ δ' ἡ μὰρ ὀλίγοι γ' ἔμμοι γιάδαο θανόντ'.

κῆρ ἄχιος μεθήκη, χερείονά περ καταπέφνων.  
 ἐπ' ἄρ' ἐς δίφρορ ἱλῶν ἵναρα βροτόντα.  
 θῆκ', ἀνδ' αὐτὸς ἔβαινε πόδας καὶ χεῖρας ὑπερβῶν  
 αἵματόεις, ὥς τις τε λῆωρ κατὰ ταῦρορ ἰδὲ δ' ὤς.  
 ἄτ' δ' ἐπὶ παρόκλῳ τέταθ' κρατερὴ ὕσμίνῃ,  
 ἀργαλὴν πολυδάκρυς, ἔγχευε ὃ νεῖκος ἀθήνη,  
 οὐρανόθεν καταβᾶσα, προῆκε γὰρ ὠρύοπα [δύς.  
 ὀρνύμηναι δ' αὐακούς, δὴ γὰρ νόος ἐράπειτ' αὐτῷ.  
 ἦν τε πορφυρίῳ ἔειν θνητοῖσι τοῦτο σῆ.  
 [δύς ἐξ οὐρανόθεν τέρας ἔμμεναι ἢ πολέμοιο,  
 ἢ καὶ χεῖμων' οὐδ' ἀλλότ' ὅς ῥά τε ἔργων  
 ἀνθρώπων ἀνέπαυσιν, ἐπὶ χθονί, μῦλα ὃ κύδ' αἰ.  
 ὥς ἢ πορφυρίῃ νεφέλῃ πυκάσσει αὐτήν.  
 δύσει τ' ἀχαιῶν ἔθνος, ἔγχευε ὃ φῶτα ἔπασον.  
 πρῶτορ δ' ἄφιος ἦδ' ἐποτρύνασα προσήυδα.  
 ἰφθιμον μῆνέλαον, ὃ γὰρ ῥά οἱ ἐγγύθεν ἦεν,  
 ἐλάμειν φοῖνικι δέμας, καὶ ἀτρία φανύν.  
 σοὶ μὲν δ' ἡ μῆνέλαε, κατηφείη καὶ ὄνδρος  
 ἔσπετα, εἴκ' ἀχιλλῆος ἀγανὺ πιδὸρ ἵταῖρον  
 τέχει ὑπὸ βῶων ταχέως κύνες ἑλκύνουσιν.  
 μὰ δ' ἔχειο κρατερῶς, ὥρῳι ὃ λαὸν ἀπάντα.

Τοῖ δ' αὖτε προσέειπε βοῆρ ἀγαθὸς μῆνέλαος.  
 φοῖνιξ ἄτ' αἰ γεραιὲ παλαιγενὲς, ἐ γὰρ ἀθήνη  
 δοίη κάρτ' ἐμοὶ βελίωρ δ' ἀπερὺν καὶ ἱερῶν,  
 ἔσθ' κεν ἔγωγ' ἰδέσθιμι παρὶ στήμῳ καὶ ἀμύνειν

παρόκλῳ.

πρὶν γ' ἐπ' ἀχιλλῇ· καλλίριχε βῆμῃμαι ἵππῃ·  
 νῶϊ κατακτείνοντα, φοβῆσαι δ' εἰχας ἀνδρῶν  
 ἀργείων, ἧ κ' αὐτὸς ἐνὶ πρῶτοισιν ἄλῳη.  
 Ως ἐπὼν, αἶωυτε καλίσταθ' καὶ μῆνέλαον·  
 αἶωυτ' ἀργείων ἡγήτορι καὶ μῆνέλαε,  
 ἦτοι μῆν' ἐρ νικητὸν ἐπιβράπιθ' ὅσσοι ἄεισοι  
 ἀμφ' αὐτῷ· βέβαμῃ καὶ ἀμύνεσθαι εἰχας ἀνδρῶν·  
 νῶϊν δ' ἰσοῖσιν ἀμύνετε νηλεὲς ἥμαρ,  
 τῇ δὲ γὰρ εἵβεισσαν πόλεμον κατὰ δακρυόεντα·  
 ἔκτωρ αἰνέας θ' οἱ βῶων ἐσὶν ἄεισοι,  
 ἀλλ' ἦτοι μῆν' ταῦτα θεῶν ἐν γούνασι κεῖται·  
 ἦσα γὰρ καὶ ἐγὼ τὰ δέ καὶ δι' ἡ πάντα μελύσθ·  
 ἦ ῥά, καὶ ἀμπεπαλῶν προΐει δολιχόσκιον ἔγχε·  
 καὶ βάλεν ἀρήτοιο κατ' ἀσπίδα πάντοσ' εἰσώ·  
 ἦ δ' οὐκ ἔγχεσ' ἔρυσθ', διαπρὸ δ' εἴβλε χαλκός,  
 νείαίρη δ' ἐν γαστρὶ στήθε' ἰσῆρος ἔλασεν·  
 ὥς δ' ὅταν ὀξύρ' ἐχῶν πίλεκω σάῃηος ἀνδρῶν,  
 κόπας ἐξοπιθεὶν κερῶν βοὸς ἀγραύλοιο,  
 ἵνα τάμῃ στήθε' πᾶσσαν, ὃ δ' ἐπ' προθορῶν ἐρίπησιν,  
 ὥς ἄρ' ὄγῃ, προθορῶν, πέσιν ὑπτίος, ἐν δ' ἐοῖ ἔγχεσθαι  
 νηδύνιοισι μάλ' ὀξύ κραιδανόμῃον λυέγῃα·  
 ἔκτωρ δ' αὐτομείδοντ' ἀκόντισε δ' ὕρῃ φαεινῇ·  
 ἀλλ' ὃ μῆν' ἀνταϊδῶν ἠλδύαθ' ἀλκίον ἔγχε·  
 πρόσσω γὰρ κατέκυψεν, τὸ δ' ἐξοπιθεὶν σῶρυ μακρόν  
 οὐδ' ἐν νισκίμφῃ ἐπὶ δ' οὐρίαχος πελεμίσχθη  
 ἔγχεσθ', ἐνθάδ' ἔπετ' ἀφίε μένος ὄβριμ' ἄρης,  
 καὶ νύκε δ' ἡ ξιφείατ' αὐτοσχεδὸν ὤρμηθη·  
 ἢ μή σφω αἶαντε δίκριναν μεμαῶτε·  
 οἳ ῥ' ἠλθον καθ' ὁμιλον ἑταίρων κικλήσκοντ'·  
 τῆς δ' ὑποταρβύσσαντοσθ', ἐχώρησαν πάλιν αὐτίς,

θνητῶ, ὅμῳ δ' ἐσὸν ἀγέρας ἀθρόα τε.  
 ἢ ἵνα δύσῃνοισι μετ' ἀνδράσιρ' ἄλγ' ἔχῃτοι.  
 οὐ μὲν γὰρ τί περ ἐῖρη οἷ' ὑρῶτερον ἀνδρὸς  
 πάνταρ ὄσασα γούῳ ἐπιπνέηται καὶ ἔρπαι-  
 ἄλλ' οὐ μοῦ ὑμῖν γε καὶ ἄρμασι διαδάλεισιν,  
 ἔκτορ πριαμίδης ἐποχῆσεται, οὐ γὰρ ἰάσω,  
 ἢ οὐχ' ἄλλως καὶ τούχ' ἔχῃ καὶ ἐπύχεται αὐτῶ.  
 σφῶϊρ δ' ἐν γούνασι βαλὼ μὲν ἔσθ', ἢ δ' ἐνὶ θυμῷ.  
 ὄφρα καὶ αὐτομίδοντα ἄωσθον ἐκ πολέμοιο.  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς ἐτι γὰρ σφίσι κῦδος ὀρέξω.  
 κτείνην, εἰσὸς νῆας ὑπ' ἑλμυς ἀφίκωνται.  
 δὴ τ' ἡελίος, καὶ ἐπὶ κνέφας ἱερὸν ἔλθῃ.  
 Ως ἔπῳν, ἵπποισιν ἐνέπνευσ' ἐμὲν ἔσθ' ἢ.  
 τῷ δ' ἀπὸ χατάων κατ' ἰὼ δύδῃς διβαλόντε,  
 εἰ μὲν ἔφειρον θοὸν ἄρμα μετὰ βῶας καὶ ἄχαιούς.  
 ρῖσι δ' ἐπ' αὐτομίδωρ μάχετ' ἀχινύμενος πρ' ἑταίρῳ  
 ἵπποισι αἶσαν, ὥς τ' αἰγυπὶος μετὰ χῆνας.  
 εἴτα μὲν γὰρ φούγισκεν ὑπ' ἐκ βῶων ὀρυγμαδῶ.  
 εἴτα δ' ἐπαΐξασκε πολὺν καὶ ὅμιλον ὀπάδων.  
 ἀλλ' οὐχ' ἦρθε φῶτας ὅτ' ἐσθλὸς διώκειν.  
 οὐ γάρ πως ἦν οἷον ἰόνθ' ἱερῶ ἐνὶ δίφρῳ.  
 ἔρχετο φορμαῖα, καὶ ἐπιχρῖν ὠκίας ἵππους.  
 ὅτε δ' ὀδύμην ἱταῦρος ἀνὴρ ἶδεν ὀφθαλμοῖσιν  
 ἄλκιμίδωρ υἱὸς λαίρκειος αἰμονίδεο.  
 εἴ δ' ὀπίθεν δίφροιο καὶ αὐτομίδοντα προσκῆδ' αἶ.  
 Αὐτόμειδον, τίς τοι νυθεῶν νηκερδία βυλὴν  
 ἐν σήθειαν ἔθηκε, καὶ ἔξιλθο φρένας ἐδλάς.  
 οἷον πρὸς βῶας μάχαι πρῶτῳ ἐν ὀμίλῳ  
 μῶν ἔσθ', αὐτὰρ τοι ἱταῦρος ἀπέκταθ', τούχ' αἰ δ' ἔκτορ  
 αὐτὸς ἔχων ὠμοῖσιν ἀγάλλεται αἰακίδεο.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὦλε δὲ τις ἐπίσκεπ' ἀχαιῶν χαλκῶ χιτῶνάων·  
 φίλοι οὐ μὰρ ἡμῖν ὑπλήεις ἀπονείδου·  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, ἀλλ' αὐτῷ γ' οὐα μέλαινα  
 πᾶσι χάνοι, τό κεν ἡμῖν ἄφαρ πολὺν κέρδιον εἴη·  
 ἢ τῶτον βῶσαι μεθ' ἑσθλῶν ἱπποδάμοισιν·  
 ἄστυ ποτὶ σφέτερον ἱρύνσαι καὶ κῦδος ἀρίδου·  
 ὦλε δὲ τις ἔν τῳ μὲν μεγαθύμῳ αὐδ' ἠΐθεσκεν·  
 φίλοι εἰ καὶ μοῖρα παρ' ἀνέει τῷδε διαμῖναι  
 πάντας ὁμῶς, μή ποτ' ἐρωέτω πολέμοιο·  
 ὦλε δὲ τις ἐπίσκε, μένος δ' ὄρεσκεν ἱκάδην·  
 ὅς οἱ μὲν μάρναντο, σιδήρεος δ' ὀρυμαδδῶ  
 χάλκεον οὐρανὸν ἴκε, δ' αἰθέρος ἀρυγέτοιο·  
 ἵπποι δ' αἰακίδαο μάχης ἀπάνευθεν ἰόντες·  
 κλυῶν ἐπεδ' ἢ πρῶτα πυθώδω ἠνίοχοιο  
 ἐμ' κρηῖσι πύοντο· ὅφ' ἔκτορ' ὀνείροφονοισι  
 ἢ μὰρ αὐτομέδων δῖος ἄλκιμος ἦος,  
 πολλὰ μὲν ἄρ' ἐμάστιθ' ὅφ' ἐπιμαίετο θεῖων,  
 πολλὰ δ' ἐμαλιχίοισι προσηύδα, πολλὰ δ' ἄρη·  
 τῷδ' οὐτ' ἄτ' ἐπὶ πλατύν' ἠλλήσποντον,  
 ἠθελίτω ἵεναι, οὐτ' ἐς πόλεμον μετ' ἀχαιούς·  
 ἀλλ' ὅς τις σῆλη μένει ἑμπεδον, ἢ τ' ἐπὶ τυμβῶ  
 ἀνέρος εἰσέκητι θνητό· ἢ γ' ἠψαυκός·  
 ὅς μινον ἀσφαλῆως περικαλλέα δίφρον ἔχοντες,  
 οὐδ' εἰ νιοσκῆψαντε καρῆατα, δάκρυα δ' ἔσφιν  
 θερμὰ κατὰ βλεφάρων χαμάδις ῥέει μυρομένοισιν·  
 ἠνίοχοιο ποθ' ἢ θαλερῇ δ' ἐμαίνετο χαίτη,  
 ἰδὺ ληθεῖε κρηῖσι παρὰ ἱνυδόν, ἀμφοτέροισι·  
 μυρομένω δ' ἄρα τῷ γε, ἰδὼν ἱλέησε χρόνιον·  
 κινήσας δ' ἐκέρη προτὶ ὄρ' ἐμυθ' ἔβ' θυμόν·  
 ἔβ' ἐβλώ, τί σφωὶ δόμῳ πηληϊΐ ἀνακτι



τοῖς δ' ἐπ' ἀνὴρσι τοῖς, εἰδὼς μέγα κτῆνος ὄρωρα  
 ἀργαλέης, καμάτῳ δ' καὶ ἰδρῶϊ νωλεμῆς αἰεὶ,  
 γούνατά τε, κνήμαί τε, πόδες δ' ὑπ' ἐνερθευ ἑκάεξ.  
 χείρῃς τ' ὀφθαλμοί τε, παλάσσοιο μαρναμένοισιν,  
 ἄμφ' ἀγαθὸν θιράποντα πωδῶκεος αἰακίδεω.  
 ὡς δ' ὅτ' ἀνὴρ ταύροιο βοὸς μιν ἄλκιον βοῶντα  
 λαοῖσιν δ' ὦν τανύειν μιν ὕψιστον ἄλκιον,  
 Λεξάμενοι δ' ἄρα τοίγ' διασάντες τανύεσσι  
 κυκλὸς ἀφάρσε τε ἱκμάς ἐβη, δύνη δ' ἐτ' ἄλκιον  
 πολλῶν ἑλκόντων, τάνυσται δ' ἐτε πᾶσα διαπύος,  
 ὡς οἷ' ἐνθα καὶ ἐνθα νέκυν ὀλίγη ἐνὶ χώρῃ  
 εἴλκεον ἀμφοτέρω. μάλλα γὰρ σφισιν ἔλπετο θυμός,  
 φασὶν μὲν ἐρύειν προτὶ ἵλιον, αὐτὰρ ἀχαιοὶς.  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς. περὶ δ' αὐτ' ἄλλως ὄρωρα  
 ἀχρεῖς, οὐ δ' ἐκ' ἄρης λαοσπόος οὐδ' ἐκ' ἀθήνη  
 τήν γε ἰδύσ', ὀνόσασατ' οὐδ' εἰ μάλλα μιν χόλος ἴκηι  
 τοῖον ἰδύς ἐπὶ παρόκλῳ ἀνδρῶν τε καὶ ἵππων.  
 ὕματι βῶν ἐτάνασε κακὸν πόνον οὐδ' ἄρα πῶτι  
 ἔδει παρόκλον τεθνηότα διὸς ἀχιλλεύς.  
 πολλὸν γὰρ ἀπάνευθε νῶν μάρνωντο θοάων.  
 τέχεα ὑπὸ βῶων, τό μιν οὐποτε ἤλπετο θυμῷ  
 τιθνάμεν, ἀλλὰ ἴδων ἐνι χειμῶντα πύλῃσιν,  
 ἄτ' ἀπονόσῃσιν, ἐπεὶ οὐδ' ἐτ' ἔλπετο πάμπαν  
 ἐκπέρσειν. πόλλ' ἐβροντῶν ἄνευ ἔθεν, οὐδ' ἐσὺν αὐτῶν.  
 πολλὰ κί γὰρ τό γε μὲν ἐπὶ βύθῳ νόσφιν ἀκτύωρ  
 οἱ ἀπαγγέλλεσκε διὸς μεγαλήτοιο νόημα.  
 δὴ τότε γ' οὐδ' οἱ ἔειπε κακὸν πόσον ὄσσον ἐτύχθη  
 μύτηρ, ὅτ' ἰδὼς οἱ πολὺ φίλτατος ὤλεθ' ἑταῖρος,  
 οἱ δ' αἰεὶ περὶ νεκρὸν ἀσχαμένα δούρατ' ἔχοντες.  
 νωλεμῆς ἐγχερίμποντο, καὶ ἀλλήλους ἐνάεινον.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἄλλ' οὐπὼς ἔτι ἔῃχε σάκεσι γὰρ ἔρχατο πάντῃ  
 ἰσχυρότερος περὶ παρόχλω, πρὸ δ' οὐράτ' ἔχοντο,  
 αἴας γὰρ μάλα πάντας ἐπώχθο, πολλὰ κελύδων.  
 οὐτ' ἐτιν' ἐξοπίσω νεκρὸν χάζεσθαι ἀνών.  
 οὐτ' ἐτινα προμάχεσθαι ἀχαιῶν ἐξοχὸν ἄλλων  
 ἀλλὰ μάλ' ἀμφ' αὐτῷ βεβιάμην, χυθόθων δ' μάχεσθαι,  
 ὥς αἴας ἐπέτελλε πελώριος, αἶματι δ' χυθὼν,  
 δινύξο πορφυρέω, τοῖδ' ἀρχηστῖνοι ἐπιπῆλον  
 νεκροὶ δ' μὲν φῶων, καὶ ὑπερμυδίων ἐπινυφῶων  
 καὶ δ' αὖ αὖν, οὐδ' οἱ γὰρ ἀναμωτίγ' ἐμολχόντο.  
 παυρότεροι δ' πολὺν φθίνυθον μέμνητο γὰρ αἰεί,  
 ἀλλήλοισι ἄν' ὁμιλεον ἀλεξιμῆμαι πόνοισι ἀπύν,  
 ὥς οἱ μὲν ἀρνέοντο δέμας πυρός, οὐδ' ἐκεφαίης  
 οὐτ' ἐτι ποτ' ἥλιον σόον ἐμυδα, οὔτε σιλήνῳ.  
 ἦει γὰρ κατέχοντο μάχης, ἔπειτ' ὅσσοι ἄεισοι  
 ἔστασαν ἀμφὶ μῆμοιτιάδῃ κατακτεθνηῶτι,  
 οἱ δ' ἄλλοι φῶες τε καὶ ὑκνήμιδες ἀχαιοί,  
 εὐκχεσθαι πολέμιον ὑπ' αἰθέρι, πέπλοιο δ' αὖ γ' ἦ  
 ἥλιον δ' ἐξέῖα, νέφος δ' οὐ φαίνετο πάσης  
 γαίης οὐδ' ὄρεων, μεταπαυόμενοι δ' μάχοντο  
 ἀλλήλων, ἀλεείνοντο βέλεια σονόουτα,  
 πολλὸν ἀφισπικότοιο, τοῖ δ' ἐν μέσῳ ἄλγ' ἐπαχοντο.  
 ἦει καὶ πολέμιος, τέροντο δ' νηλεὶ χαλκῷ  
 ὅσοι ἄεισοι ἔσαν, δῦο δ' οὐπὼ φῶτε πιπύδιω  
 ἀνέρε κυδάλιμω, θρασυμήδης ἀντίλοχος τε.  
 παρόχλοιο θανόντο ἀμύμοιο, ἀλλ' ἔτ' ἐφάτο  
 ἰδὼν ἐνὶ πρῶτῳ δμάδ' ὡς ἔσθαι μάχεσθαι.  
 τῷ δ' ἐπιστομένῳ θάνατον καὶ φύλας ἰταίρων,  
 νόσφιρ ἐμαρνάδιω, ἐπὶ ὥς ἐπιτέλλοτο νέεσθαι,  
 ὅτ' ἄν' ὦν πολέμιον δὲ μιλαυῶν ἀπὸ νηῶν.

ἐρύκει ἡ πυγὴ δὴ, ὅς οἱ παρὰ παρὶ γέροντι  
 κηρύσσων, γῆρας κε φίλα φρεσὶ μῆδεα ἐιδώε,  
 τοῖ μιν εἰσάμινθ' προσέφη δῖος ἱὸς ἀπόλλων,  
 αἰνεία πῶς ἄρ' καὶ ὑπὲρ θεῶν ἐρύσσειαι  
 ἴλιον ἀπὸ νῆρ' ὥς εἴη ἴδιον ὠϊράς ἄλλων  
 κάρτεϊ τε δινεῖ τε πεποιθότας, ἠνορέη τε,  
 πλεῖθεϊ τε σφετέρῃ, καὶ ὑπερδ' ἑα δ' ἡμῶν ἔχοντάς.  
 ἡμῖν δ' ἴδους μὲν πολὺ βούλεται, ἢ δ' ἀναοῖσι  
 νίκη, ἀλλ' αὐτοὶ τρεῖτ' ἄσπερον οὐ δ' ἐμάχεσθαι.  
 ὧς ἔφατ', αἰνείας δ' ἱεστηβόλον ἀπόλλωνα  
 ἔγνω ἰσάντα ἰδῶν, μέγα δ' ἔκτορα ἔπει βοήθεα.  
 ἔκτορ τ' ἦ δ' ἄλλοι βῶων ἀγροί, ἦ δ' ἐπικυβερων  
 αἰδῶς μὲν νῦν ἔδε γ' ἀρηϊφίλων ὑπ' ἀχαιῶν.  
 ἴλιον ἐσσωαβῆναι ἀναλκίῃσι θαμέντας.  
 ἀλλ' ἔτι γὰρ τίς φησι θεῶν ἐμοὶ ὄγχι παρασῆς,  
 ἦν ὑπατὸρ μήσῳρα μάχης ἐπιτάττο ῥόθον εἶν.  
 τοῖ δ' ἴθις δ' ἀναοῖσι ἴομεν, μὴ δ' οἷδ' ἔκλεισι  
 πάροκλον νηυσὶν πηλαγῶν τε θηῶν τε.  
 ὧς φάτο, καὶ ῥα πολὺ προμάχων ἐξάλεμινθ' ἔστη,  
 οἷ δ' ἐπελίχθησαν, καὶ ἰνωτίον ἔσαν ἀχαιῶν  
 ἐνθ' αὐτ' αἰνείας λαόκριτον οὕτως εἰσεβί.  
 ἦ δ' ἄρ' ἀρίσταντ' ἄλκιμῃ δ' ἐδλὸν ἔταυρον.  
 τὸν δ' πείσοντ', ἐλέησεν ἀρηϊφίλος λυκῆ μῆδε.  
 εἴη δ' μάλ' ἐγγυῖσιν, καὶ ἀκύντισι δ' ἄρ' φασινῶ.  
 καὶ βάλεν ἱππασίδω ἀμυθάονα ποίμινά λαῶν,  
 ἥ παρ' ὑπὸ πρᾶπίδων εἴθερ δ' ὑπὸ γούνατ' ἔκτανεν  
 ὅς δ' ἐκ παιονίης εἰβώλακος, ἐλκευθῆεν.  
 καὶ δ' μετ' ἀσπεροπαῶν, ἀεὶ δ' ἐβύσκε μάχεσθαι  
 τὸν δ' πείσοντ' ἐλέησεν ἀρήϊος ἀσπεροπαῶς.  
 ἴθυσεν δ' καὶ ὁ πρόφρων δ' ἀναοῖσι μάχεσθαι.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

πληξ' αὐτοχιδίῳ, κινήσῃ δ' ἔχ' χαλκὸν παρ' ἑν-  
 ὅκει δ' ἵπποδάσσεια κόρυς περὶ δ' ὕρως ἀκωκῇ,  
 πληγῆϊσ' ἔχ' ἑῖ τι μεγάλην καὶ χαρὶ παχεῖῃ·  
 ἔγκεφαλός ῥ' παρ' αὐλὸν ἀνέδραμν' ἐξ ὠτφλῆς  
 αἵματόεις, τῷ δ' ἀνθι λύθη μιν θυρ', ἐκ δ' ἄρα χαρῶν  
 παρ' ὀκλοιο πόδα μεγαλύτορ' ἔκε χαμαῖζε  
 κειῖσθαι, ὅδ' ἄρ' αὐτοῖο πίσει πρὶν ἡς ἐπὶ νεκρῷ.  
 τῇλ' ἀπὸ λαρίσσης εἰδὼ λαιῆς, οὐ δ' ἐτοκεύσει  
 ἐξέπ' ἡ φίλῳσι ἀπείδωκε, μινωθ' ἀδιδ' ὅς οἱ αὖθις  
 ἔπλεθ' ὑπ' αἴαντ' ὅτ' ἀνὰ θυμὸν δ' ὕρ' ἀμείνεντι.  
 ἔκτορ δ' αὐτ' αἴαντ' ὅτ' ἀκόντισε δ' ὕρ' ἀμείνεντι.  
 ὅλλ' ὁ μὲν αὐτὰ ἰδὼν, ἠλεύατο χάλκιον ἔγχος  
 τυτθόν, ὃ ῥ' ἔχ' ἐθίον μεγαθύμον ἰφίτῳ ἡόν  
 φωκῆων ὃ χ' ἄεισον, ὅς ἐν κλειτῷ πανοπῆϊ  
 οἰκίαν ναυετάσκει, πολλὰ δ' ἀνδραγαθῶν ἀνίσταται,  
 τὸν βάλ' ὑπὸ κληῖδ' ἀμείνω, σφῆ δ' ἀμπιγρὲς ὄρη  
 αἰχμὴ χαλκείῃ, παρὰ νείατον ὤμον ἀνίσταται,  
 δούπησεν ῥ' πρὶς ὤμων, ἀράβησιν ῥ' τεύχε' ἐπ' αὐτῷ  
 αἴας δ' αὖ φέρκωα δαΐφρονα φαίνοπος ἡόν  
 ἵπποθόῳ περὶ βάντα, μείσω κατὰ γαστέρα τύφει·  
 ῥῆξ' ῥ' θώρηκος γυάλῳ, σφῆ δ' ἔντερα χαλκὸς  
 ὕφυσ', ὅδ' ἐν κνήῃσι πρὶς ὤμων, ἐλὶ γαστρὶ ἀγροῦ,  
 χώρησεν δ' ὑπὸ τῷ πρόμαχῳ, καὶ φαίδιμ' ἔκτορ  
 ἀργεῖοι ῥ' μὲν ἔαχον, ἐρύσσω δ' ῥ' νεκρούς.  
 φέρκωθ', ἵπποθόορ τε, λύνοντο ῥ' τὸν χεῖρ' ἀπ' ὤμων  
 ἐνθά κερ' αὐτε βῶες ἀρῆφίλων ὑπ' αἰχμῶν,  
 ἴλιον εἰδὼν ἐβήσσω ἀναλκίῃσι δαμίντοβ,  
 ἀργεῖοι δ' ἐκ κῦδος ἐλιν καὶ ὑπὲρ διὸς αἴσαν,  
 κάρτεϊ καὶ δίνεϊ σφιτέρῳ, ἀλλ' αὐτὸς ἀπόλλων,  
 ἀνείων ὤφρωνε, δέμας περὶ φαντὶ ἰοικῶ

βέβρυχε μέγα κύμα ποτὶ ῥόον, ἀμφὶ δ' ἐτ' ἄκρον  
 ἡϊόνες βοόωσιν ἱερὸν γομένης ἀλός ἐξω,  
 πόσῃ ἄρα βῶων ἰαχὴ γένετ', αὐτὰρ ἄχαιοι  
 ἔστασαν ἀμφὶ μνηοιτιάδῃ, ἵνα θυμὸν ἔχοντόβι,  
 φραχθέντες σάκεσι χαλκήρεσιν, ἀμφὶ δ' ἄρα σφιν  
 λαμπρῆσι κερύθαισι κρονίῳρ ἥερα πολλὴν  
 χεῖρ', ἐπεὶ οὐδ' ἐμνηοιτιάδῃ ἤχθηρ πάρος γε  
 ὄφρα βῶος ἐὼν θεράπων ἦν οὐακίδεο.  
 μίσσῃσιν δ' ἄρα μιν δῆϊων κυσὶ κύρμα γνέδασιν  
 βῶσιν, βῶ' καὶ οἱ ἀμυνέμεν ὤρσεν ἑταίρους  
 ὥσων ὃ πρότεροι βῶες ἐλίκωπας ἀχαιούς·  
 νεκρὸν δ' ἡρολιπόντοβ' ὑπέβισσαν, οὐδ' ἐτιν' αὐτῶν  
 βῶες ὑπέρθυμοι ἐλθὲν ἐγχεσθῆναι ἐμνηοίπερ.  
 ἀλλὰ νέκω ἐρύοντο, μίνωθα δ' καὶ τῷ ἀχαιοὶ  
 μέλλον ἀπέσιδα, μάλα γὰρ σφίεας, ὥκ' ἐλέλιξαν  
 αἴας, ὅς περὶ μῦν εἶδος περὶ δ' ἔργα τέτυκτο.  
 τῶν ἄλλων δ' αἰαῶν μετ' ἀμύμονα πηλείωνα  
 ἴθυσεν ὃ σὺ προμάχαν, σὺν ἱκέλῳ ἀλκὴν  
 κατρίδω, ὅς τ' ἐν ὄρεσσι κύνας θαλινούς τ' αἰήου  
 ῥῆιδίως ἐκίδεσσεν ἐλιξάμεν σὺ σὺ βήσας.  
 ὥς ἡὸς τιλαμῶνος ἀγανὺ φαίδιμ σὺ αἴας.  
 ῥῆϊα μετ' ἐσάμεν σὺ βῶων ἐκίδεσσε φάλαγγας,  
 οἳ περὶ παρόκλῳ βέβασσαν, φρόνεον δ' μάλιστ'  
 ἄστυ ποτὶ σφέτερον ἐρύειν, καὶ κῦδος ἀρίδασιν.  
 ὅτοι τὸν, λήθοιο πηλασχοῦ φαίδιμος ἡὸς  
 ἱππόθοος, πρὸ δ' ἔλκε κατὰ κρατερὴν ὕσμίνῃ,  
 δῖος ἄμυν σὺ τελαμῶνι παρὰ σφυρὸν ἀμφὶ τίνοντας  
 ἔκτορι, καὶ βῶεσσι χαλκίῳ μιν σὺ τὰ χαρὴν αὐτῶ  
 ἦλθε κακὸν, τὸ οἱ οὐτις ἐρύκακεν ἱμῶν περ.  
 τὸν δ' ἡὸς τιλαμῶν σὺ ἐπαίξας δὴ ὁμίλῃ.



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

δοῦρατ' ἀναχέμενοι, μάλα δ' ἐ σφισιν ἔλπεσθοντο·  
 νικητὸν ὑπ' αἰῶντος ἱρὺν τιλαμωνιῶδαο.

νήπιοι, ἥτε πολέσιν ἐπ' αὐτῷ θυμὸν ἀπῆυξαν·

καὶ τότ' ἄρ' αἴας ἱπὶ βροτῶν ἀγαθὸν μνείλαορ·

ὦ πείων ὦ μνείλαι διορυφές, ἕκίπινω

ἔλπομαι αὐτῷ πρὸ νοσησέμεν ἐκ πολέμοιο·

εὖ γὰρ τὸν νίκυος πείει δειδία παρόχλοιο,

ὅς κε τολχα τῶν κέρει κύνας ἦδ' οἶωνους,

ὅσων ἐμὴ κεφαλῇ πείει δειδία μή τι παύθῃ

καὶ σῆ, ἐπὶ πολέμοιο νίκυος περιπλντα καλύπῃ

ἔκτωρ, ἡμῖν αὐτ' ἀναφαίνεται αἰπὺς ὄλεθρος,

ἀλλ' ἄγ' αἰεσῆας δαναῶν κώλῃ· ἔνπερ' ἀκεύσῃ.

Ως ἔφατ', ἔδ' ἀπίθουσε βροτῶν ἀγαθὸς μνείλαος·

ἥντι δ' ἐπὶ διαπρυσίον δάναοῖσι γέγονώς,

ὦ φίλοι ἀργείων ἡγήεσθ, ἦδ' ἐμίδουτο·

εἴτε παρ' ἀρείδῃς ἀγαμέμνονι καὶ μνιλωῷ,

δήμια πίνουσιν, καὶ σιμαίνουσιν ἔκαστος

λαοῖς, ἐκ δ' ἐπὶ δῖος τιμὴ καὶ κῦδος ὀπηδεῖ.

ἄρ' ἀλὶον δ' ἐμοί ἐστι διασχεπιδεῖαι ἔκαστον·

ὅ γε μόνων, τόσῃ γὰρ ἔεις πολέμοιο δειδῖος

ἀλλὰ τις αὐτὸς ἴτω νημισί (ἰδω δ' ἐνὶ θυμῷ·

πάροχλον βωῆσι κυσὶν μέλπηθαι γυνέωαι·

Ως ἔφατ', ὅξυν δ' ἄκυσεν οἴλῃ ταχύς αἴας·

σηῶς δ' αὐτίκα ἦλθε θέων ἀνὰ δῖοιότητα·

ἐν δ' ἐμὴν ἰδομένους καὶ ὀπῶν ἰδομένην

μειόνης, ἀτάλαντος ἐνναλῖω ἀνδριφόντῃ

τῶν δ' ἄλλων τίσκεν ἔσι φρεσὶν οὖνοματ' ἵππου

ὅσοι δ' ἐμὴν ὀπίωι μάχῃ ἡγήσαντο ἀχαιῶν,

τῶν δ' ἐπὶ προὔτυφον ἀολλείς, ἦρχε δ' ἄρ' ἔκτωρ·

ὧς δ' ἔτ' ὦ προχοῇσι δῖηπιτ' ἐπὶ ποταμοῖο

ἔλπεσθοντο

τὸ δ' ἡ τ' αἶρον ἐπιφνὺς ἐνὶ ἀτὲ κρατερὸν τι.  
 τινύχια δ' ὅ κατὰ κόσμον ἀπὸ κρατός τι καὶ ὤμων  
 εἶδος, ἀτὰρ τοὶ νῦν γὰρ μέγα κρῆτος ἐγγυαλίξω.  
 τῶν ποινὴν ὅτι οὕτω μοι χεὶς ἐκνοσήσαντι.  
 δέξιται ἀνδρομάχη κλυτὰ τινύχια πηλείωνος,  
 ἦ, καὶ κυανέησιν ἐπ' ὄφρυσιν εὐσεῖ κρονίων,  
 ἔκτοε δ' ἤρμωσε τινύχῃ δ' ἄρ' οἱ δ' ὕδρ' ἀμιν ἄρῃσ'  
 δφνὸς ἐνυάλιος πλεῖσθαι δ' ἄρα οἱ μέλ' ἐν ἔσθῃ,  
 ἀλκῆς καὶ δόλεος, μετὰ δ' ἐκλεπτοῦς ἐπιχεύρεται  
 ἐν ἔσθῃ μέγα ἰώχων ἰνδάλμας δέσφοισι πᾶσι,  
 τινύχισι λαμπροῦσιν ὁ μὲν γὰρ ὤμων πηλείων.  
 ὄφρ' ὦν δ' ἐκαστὸν ἐπιχόμῃσιν ἐπέεσσιν.  
 μέδων τε γλαυκῶν τε, μεδοντά τε θρῆσιν ἰσχυρόν τι.  
 ἀσιροπαῖον τε δεσίνον ἄθ' ἰπποδόον τι.  
 φόρῳ τε χρομίον τι, καὶ ἐνομοῖ διωνισίῃ.  
 οὗτος δ' ἐπὶ ποινῶν. ἔπειτα πῆρ' ὄντα προσήδεται.  
 ἔκλυται μυρία φῦλα περικπόνων ἐπιχεύρων.  
 ὅ γὰρ ἐγὼ πληθὺν δειλῆσιν ὅσ' ἐχάτ' ἴσθην.  
 ἐνθάδ' ἄφ' ὅσ' ἐμ' ἔτι πλεονέκων ἤγερα ἔκαστον.  
 ἀλλ' ἵνα μοι βῶν ἄλλοι χεὶς καὶ νήπια τέκνα  
 προφρονέως ῥύοιαι, φιλοπτόλιμων ἀπ' ἀχαιῶν.  
 τὰ φρονέων δώροισι καταβύχῳ καὶ ἐδωδῇ  
 λαοῦς, ὅσ' ἐμ' ἔτι πλεονέκων ἔκαστον ἀείξω.  
 ἔδ' οἱ πῆρ' ἰθὺς τετραμμένῃσιν, ἢ ἀπολίεσθαι.  
 ἢ ἐσαωθήτω, ἢ γὰρ πολέμῳ δαείνῃ.  
 ὅς δ' ἐκεῖ πάρος κλέος καὶ τεθνηῶτά περ, ἔμπεδον  
 βῶας ἐς ἰπποδάμους ἐρύσσει, ἔξδ' οἱ οἱ αἴας  
 ἔμπεδον ἔδ' ἐν ὤμων ἀποδράσσομαι, ἔμπεδον δ' αὖτ' οἱ  
 ἔξδ' ἐγὼ τότ' ὅσ' ἐκ κλέος ἔσταιται ὄσθον ἐμοί περ.  
 ὅς δ' ἐπ' αὖτ' οἱ δ' ἰθὺς δαίμων βρίθωντος ἔβησαν.

ὅς τε με φῆς αἶαντα πηλώειον ἔχ' ὑπομείναι·  
 οὔτοι ἐγὼ ἔρριζα μάχῃω ἔδ' ἐκ τῶν ἰππῶν·  
 ἄλλ' αἰεὶ τι δῖος κρείσσων νόος ἀγχιόχοιο·  
 ὅστις καὶ ἀλκιμον ἄνδρα φοβεῖ, καὶ ἀφείλθο νίκῃω·  
 ῥηιδίως, ὅτε δ' αὐτὸς ἐπορύνει μαχίσσασθαι·  
 ἀλλ' ἄγε Διὶ ὄρον πέπων παρ' ἐμ' ἵσταθ, καὶ ἴδ' ἔργον·  
 ἢ ἱ πανημίεος κακὸς ἔασομαι ὥς ἀγορεύεις,  
 ἢ ἱνὰ καὶ δαίμων ἀλκίης μέγα πρ' ἡμαῶτα  
 ὀχύσω, ἀμυμέλῃαι περὶ πατρόκλειο θανόντος·  
 ὧς εἰπὼν ῥώσιν ἐκίκλητο μακρὸν αὔρας·  
 ῥῶις καὶ λύκιοι καὶ δολροδάνοι ἀγχιμαχηταί·  
 αὐέροβ' ἐς φίλοι, μνήσασθαι ὃ θούειδος ἀλκίης·  
 ὅφρ' ἂν ἐγὼν ἀχιλῆος ἀμύμον' ἐν τεα δύνω·  
 καλὰ τὰ πατρόκλειο βίῳ ἱναίεξα κατακτάς·  
 ὧς ἄρα φωνήσας ἀπέβη κερυθαίολες ἔκτορ·  
 διήϊε ἐκ πολέμοιο, θέων δ' ἐκίχανον ἑταίρους·  
 ὧς μολ' οὔπω τῆλε πρὸς ἰκραπνοῖσι μετασπῶρ·  
 οἱ πρὸτ' ἄστυ φέρον κλυτὰ τεύχεα πηλείδαο·  
 εἰς δ' ἀπάνευθε μολχῃς πολυδάκρυτον, ἐντὶ ἄμβροτο,  
 ἔρι δ' ὅ μιν τὰ ἑδῶκε φέρεν πρὸτ' ἱλίον ἱρήν·  
 ῥωσὶ φίλες πόλεμοισιν, ὅδ' ἄμβροτα τεύχε' ἔδωκε  
 πηλείδῃω ἀχιλῆος, ἃ οἱ θεοὶ ἕρανιδάνοντο,  
 πατρὶ φίλῳ ἔσπορον, ὅδ' ἄρα ὦ παιδὶ ὅππασιν  
 γηράς, ἀλλ' ἔχ' ἡδὲ ἐν ἐντεσι πατρὸς ἐγέραι·  
 Τόν δ' ὥς οὖν ἀπαλινυθαι ἴδον νεφεληγερέτα ζῆνς,  
 τεύχεσι πηλείδαο κερυσσόμενον θείοιο·  
 κινῆσας ῥα κάρη πρὸτ' ὃν μυθήσασθαι θυμὸν·  
 ἃ Διὶλ' ἔδ' ἐπ' ἰθὺς θάνατος καταθύμιός ἐστιν·  
 ὅς δ' ἡ φιλῶν ἔστι, σὺ δ' ἄμβροτα τεύχεα δύνῃς  
 ἄνδρὸς ἀεισῆ', τόν τε βρομέεσσι καὶ ἄλλοι·

φράξο νῦν ὅπως κε πόλιν καὶ ἄστυ σάωσῃς.

οἷος σὺν λαοῖσι, θεὸς ἰλίου ἱγγυάσιν.

ὅ γὰρ τις λυκίων γε μαχυσόμενός τ' ἀναοῖσιν

ἄισι περὶ πόλιος, ἐπεὶ ἔκ ἄρα τίς χάρις ἔσται.

μάρνασθαι δ' ἡίοισι μετ' ἀνδράσι νολεμὲς αἰεὶ,

πῶς κε σὺ χείρονα φῶτα σάωσθας μετ' ὁμιλῶν

ῥέτλι' ἐπεὶ σαρπηδὸν ἅμα ξῖνον καὶ ἱταῖρον,

κάλλιπες ἀργείοισιν ἔλωρ καὶ κύρμα γινέσθαι,

ὅς πε πόλιν ὀφείλεις γένεσθαι πλεῖστε καὶ αὐτῷ.

ζῶς ἰδὼν, νῦν δ' οὐδ' ἀλαλκόμεμαι κύνας ἔτλης

ἔσθ' νῦν εἴ τις ἐμοὶ λυκίων ἐπιπείσινται ἀνδρῶν.

οἷκαδ' ἱμῶν, ποίη δ' ἐπιφύσεται αὐτὸς ὄλεθρος.

ὅ γὰρ νῦν βῶσι μὲν πολυθαρσὲς ἰνέη

ἄρομον, εἶοντ' ἀνδρας ἐσέρχεται, οἱ περὶ πόλιν

ἀνδράσι δυσμνέσται πόνον καὶ δ' ἔειν' ἔθινον.

αἶψα κε πώροκλον ἐρυγίμεθα ἱλίον εἶσω.

εἰδ' οὗτος προτὶ ἄστυ μέγα πριάμοιο ἀνακτ'.

ἔλθοι τιθηνῶς, καὶ μιν ἐρυγίμεθα χάρις.

αἶψα κε ἀργεῖοι σαρπηδόνος ἔντα καλὰ

λύσθων, καὶ κ' αὐτὸν ἀγοίμεθα ἱλίον εἶσω,

θεῖς γὰρ θεράπων πίφατ' αὐτῶν, ὅς μιν ἄεισθ'.

ἀργείων παρὰ νηυσί, καὶ ἀρχέμαχοι θεράπωντός.

ἀλλὰ σὺν' αἰῶνος μεγαλήτορος ἔκ' ἱτάλασας.

σὺ μὲν ἄντα, κατ' ὄφρα ἰδῶν δ' ἡίων ἐν αὐτῇ.

εἰδ' ἰθὺς μαχίσσασθαι, ἐπεὶ σέο φέρτερός ἐστι.

τόν δ' ἄρ' ὑπόσθ' ἰδῶν, προσέφη κερυθαίοιο ἱκτῶρ.

γλαῦκε, τίη δ' σὺ θεῖος ἰδὼν ὑπέροπλιν ἔφες,

ὃ πύσσον, ἥτ' ἐφάμην σε περὶ φρίνας ἱμῶν ἄλλων.

τῶν δ' αὖτοι λυκίῳ ἐβόλακα ναυτάνσι,

νῦν δ' ἐσὶ ὄνοσάμην πάγχυ φρίνας, εἶν' ἔφες.

πάπηνον δ' ἄρ' ὕπητα κατὰ σίχας, αὐτίκα δ' ἐγ-  
 νη μῦν, ἀπαινύμηνον κλυτὰ τεύχεα, τόνδ' ὤραϊ  
 κείμηνον ἔρρε δ' αἶμα, κατ' ἑταμένινω ὠπλήν.  
 βῆ δ' ὅχλῳ προμάχων κεκυρθυμένος αἰθοπι χαλκῷ.

ὄξεια κεκληγῶς φλογὶ ἱκέλης ἠφάισιο

ἀσβέσω, ἔδ' ἦδ' ἰὸν λάθου ἀτρείος δῖον βοήθης.

ὁχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς ὃν μεγαλήτορα θυμόν.

ὦ μοι ἐγὼν, εἴ μιν κε λίπω κατὰ τεύχεα καλὰ

πάτροκλον θ', ὅς κεῖται ἱμῆς ἐνὶ ἐνθάδε πμῆς.

μή τις μοι δαναῶν νεμίσσῃσινται ὅς κεν ἴδῃται.

ἔδ' ἐκὼς ἐκτοει μοῦνος ἰὼν, καὶ τρωσὶ μάχωμαι

ἄδιδωκίς μήπως με πεισεύωσ' ἵνα πολλοί.

τρώας δ' ἐνθάδε πάντας ἄγῃ κυρθυαίοις ἐκτορ-

ἄλλὰ τίη μοι ταῦτα φίλος διελίξατο θυμός.

• ὅππότε δ' ὤνῃ ἐθέλει πρὸς δαίμονα φωτὶ μοι χεῖρας

• ὃν κε θεὸς ἡμᾶ, τάχα δὲ μέγα πῆμα κυλίειν.

ἔδ' ἔμ' οὐ πῆς δαναῶν νεμίσσῃσινται, ὅς κεν ἴδῃται

ἐκτοει χωρήσας ἐπὶ ἐκθίοφιν πολέμῳ.

ἔδ' ἐκὼς αἶαντός γε βῆν ἄραθοιο πυθοίμην,

ἄμφω κ' ἄν τις ἰόντος ἐπιμνησαίμεθα χολρμης.

καὶ πρὸς δαίμονα πρὶ εἴπως ἐρυαίμεθα νεκρῶν

πηλείδῃ Ἀχιλλῇ, κακῶν δ' ἐκὼς φέρτερον εἴη.

ἔως δ' ταῦθ' ἄρμυιν κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,

τόφρα δ' ὤραϊ τρώων σίχας ἔλυσθον, ἦρξε δ' ἄρ' ἐκτορ.

αὐτὰρ ὅγ' ἐξοπίσω ἄνιχάσσο, λείπει δ' ἐνερῶν

ἐν τροπαλίῳ μῦθον, ὅς τε λῆς ἠὲ γένηται.

ὃν ῥὰ κύνης τε καὶ ἀνδρῶν ἀπὸ σταμοῖο δίδωνται.

ἐγχεσι καὶ φωνῇ, τῶ δ' ἐνὶ φρεσὶν ἄλκιμον ἔτορ

παχύνεται. αἶκον δ' ἐκὼς ἀπὸ μεσούλαιο,

ὅς ἀπὸ πατρώκλειο κίε ξανθὸς μῦθός τε.



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ .

χώρῃ ἐν οἴοπόλῳ , ὅθ' ἄλλῃς αὐαβίβρυχον ὕδαρ  
 καλὸν τηλεθάον , ὃ δέ τε πνοαὶ δονέουσι  
 πατρίων ἀνέμων καὶ τε βρυεὶ ἀνθεῖ λωκῶ .  
 ἰλθὼν δ' ἐξαπίνης ἄμιμος σὺν λαίλαπι τυλλῆ .  
 βόθρῳ τ' ἐξέσρεψεν καὶ ἐξετάνας ὣς γαίῃ .  
 ἱεῖον πάνθ' ἔχον ἐϋμελίῳ ὑφορβον  
 ἀτρείδης μινέλαος ἐπεὶ κτάνε τεύχε' ἐσύλαε .  
 ὥς δ' ὅτε τίς τε λείων ὄρεσ' ἵτροφος ἀλκί πεπονηῶς .  
 βροσθεμένης ἀγέλης βῆν ἀρπάσῃ , ἥ ἔς ἀρίστη .  
 τῆς δ' αὖ χεῖν' ἔαξε λαβὼν κρατεροῖσιν ὁδοῦσι  
 πρῶτον , ἐπὶ τὰ δ' ἐπ' αἶμα καὶ ἔγκατα πάντα λαφύρα  
 δὴ δὲν , ἀμφὶ δ' τὸν γὰρ κύνοβι τ' ἀνδρὶς τε νομῆες  
 πολλὰ μολλ' ἰύουσιν ἀπόπροθεν , ὅθ' ἐθέλουσιν  
 ἀντίον ἰλθέμεναι . μολλα γὰρ χλωρὸν δέος αἶρεν .  
 οἷοι τῶν οὐδ' ἐνι θυμὸς ἐνὶ στήθεσιν ἐτόλμα  
 ἀντίον ἰλθέμεναι μινέλαον κυδάλιμοιο .  
 ἔνθα κε ῥέϊα φέροι κλυτὰ τεύχεα πανθοῖδα  
 ἀτρείδης , ἐμὴ δὲ ἀγέλαστο φοῖβος ἀπόλλωρ .  
 ὅς ῥά οἱ , ἔκρη' ἐπῶρσε βοῶν ἀτωλαντὴν ἀρηι-  
 ἀνέει ἐσολέμενος κικόνων ἡγήτορι μέντι .  
 καί μιν φωνήσας , ἔπεια πῆροσιντα προσνύδαε .  
 ἔκτορ νῦν σὺ μὲν ὥδε θέεις ἀκίχνητα διώκων  
 ἵππας οὐακίδεα δειφρονος , οἷδ' ἀλιγενοὶ  
 ἀνδράσι γὰρ θνητοῖσι δαμήμεναι ἢ δ' ὀχέεσθαι .  
 ἄλλω γ' ἢ ἀχιλῆϊ , τὸν ἀθανάτη τέκε μήτηρ .  
 τόφρα δ' ἐγὼ μινέλαος ἀρήιος ἀτρείος ἦος .  
 πατόρ κλω πειθεῖς , τρώων ἐν ἄεϊσον ἐπιφρον  
 πανθοῖδ' ἰω ὑφορβον ἔκασσε δ' ἑοῦειδος ἀλκῆς .  
 ὣς ἐπὼν , ὁ μὲν ἄνδρ' ἐβη θεὸς ἀμυτονον ἀνδρῶν .  
 ἔκτορα δ' ἀνὸν ἄχος πύμασε φρένας ἀμφὶ μελαίνῃ  
 πᾶπῃναι

ἔδ' ἐ μὲν ἔδ' ἐ βίη ὑπὲρ ἥνορ· ἰπποδάμοιο,  
 ἔς ἕβης ἀπόνθη δ' τε μ' ὦναρ καὶ μ' ὑπέμειν·  
 καὶ μ' ἔρατ' ἐν δαναοῖσιν ἐλέγχισον πολεμίστηρ  
 ἑμυῖα· ἔδ' ἐ φημί πόδεσσι γὰρ δισικιόντα,  
 δὺ φρῆναι ἀλόχον τε φίλῳ κεινούς τε θεκῆας,  
 ἔς θην καὶ σὸν ἐγὼ λύσω μένος, ἑκὲ μιν ἄστα  
 εἴης, ἀλλ' ὅσ' ἐγὼ ἀναχαρήσονται κελύω  
 ἐς πληθύν' ἵεναι, μήδ' ἀντίθ' ἵστασ' ἑμοῖο.  
 πρὶν πικρόν περ εἶναι· ῥεχθέν δ' ἐ τε νύπιθ' ἐγὼ.

Ως φάτο τόνδ' ἔπειθ' ἔπειθ' ἑμὸς ὅς προσήνδα·  
 νῦν μὲν δὴ μενέλαε διοβίφει, ἡ μάλα τίσις  
 γνωρὲν ἑμὸν τὸν ἐπιφνης, ἔπειχό μιν θ' δ' ἀγορεύει,  
 χήρωσαι ὃ γυναικα μυχῷ θαλάμοιο νέοιο,  
 ἄρρητον δ' ἐθεκῶσι γόον καὶ πένθ' ἐθέλεις,  
 ἡ κ' ἐ σφιν διφλοῖσι γόος καταπαυμά γνοίμην,  
 εἴκων ἐγὼ κεφαλὴν τι τήν καὶ τεύχε' ἐνείκας,  
 πάλινθ' ἐν χείρεσσι βάλλω καὶ φρόντι διή,  
 ἀλλ' ἔμ' μὲν ἐπὶ δ' ἥρὸν ἀπείρητος πόνος ἔσται.  
 ἔδ' ἐ τ' ἀδ' ἕρπυς οὐτ' ἀλκῆς οὔτε φρεσίοιο.

Ως ἐπὶ οὕτως ἐκατ' ἀσπίδα πάντας ἴστω·  
 ἔδ' ἐρῆξε χαλκὸν· ἀνιγνάμφθ' δ' ἐ δισχυμῇ  
 ἀσπίδι ἐνὶ κρατερῇ· ὃ δ' ἐ δυνάτερ' ὦρνευ χαλκῷ  
 ἀρείδης μενέλαος ἔπειξά μιν θ' δ' ἰππατρί,  
 ἔδ' δ' ἀναχαζόμενος κατὰ σωμαχοιο θέμεθλα  
 νύξ, ἔδ' δ' αὖτ' ἐρεσι βαρεῖα χεῖρι πιθήσας,  
 ἀντικρὺ δ' ἀπαλειῶ δ' αὖ χίνοσ' ἤλυθ' ἀκωκή·  
 δουπήσιν ὃ πεισὼν· ἀράβησιν ὃ τεύχε' ἐπ' αὖτ' ἔδ'·  
 αἵματι δ' ἐδύοντο κόμαι χαρίτιστα ὁμοῖα·  
 πλοχμοῖθ' οἱ χρυσῷ τε καὶ ἀργύρῳ σφῆκωντο,  
 οἷον δ' ἐτρέφ' ἔρνος ἀνὴρ ἐρεθλὺς ἐλαίης

ΙΛΙΑΔΟΣ . Ρ . ΟΜΗ,  
ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ .

Ρ 5, διαγαὶ βῶϊς τε, περὶ νύκτω ἀμφιμάχοντο .

Υδ' ἔλαθ' ἀρείῳ ἦδ' ἀρηίφιλον  
μνίλαον .

πάλροκλος βῶϊσι δαμνίς ἐν δῆ  
ιοτῇ π .

ἔη δ' ὅλῳ προμύλων κικερυθμίνῃ αἰδοπι χαλκῷ .  
ἀμφὶ δ' ἄρ' αὐτῷ βαῖν', ὅς τις πίει πέρτακι μύτης  
πρωτόκως κινυρή, ἢ πρὶν εἰδῆ τούτοιο,  
ὅς περὶ παρόκλῳ βαῖνε ξανθὸς μνίλαος .  
πρῶτον δ' οἱ δόρατ' ἔαχε, καὶ ἀσπίδα πάντοσ' ἐῖσε .  
τὸν κτάμεμαι μεμαῶς, ὅς τις τῷ γ' ἀντίῳ ἔλθοι,  
ὅδ' ἄρα πάνθ' ἦδ' οὐ μελίνης ἀμίλησι,  
παρόκλοιό πισόντος ἀμύμονος, ἄγχι δ' ἄρ' αὐτῷ  
ἔση, καὶ προσέειπεν ἀρηίφιλον μνίλαον,  
ἀρεῖδ' ἡ μνίλαε, διοτρεφεὶς ὄρχαμε λαῶν .  
χάϊεο, λῆπε δ' νεκρὸν, ἔα δ' ἔναρα βροτούτα .  
ἢ γάρ τις πρότερος βῶων κλητῶν τ' ἐπικεύρων  
πάλροκλον βάλε διστὶ κατὰ κρατερὴν ὕσμίνῳ .  
ὦ φίλ' ἐγὼ κλέος ἐδλὸν ἐνὶ βῶισιν ἀρίδαι .  
μή σε βάλε, ἀπὸ δ' ἐμελινδ' ἐὰ θυμὸν ἔλωμα .  
Τόνδε μέγ' ὀχθήσας προσέφη ξανθὸς μνίλαος .  
ἔγῃ πάτερ, ἢ μὲν καλὸν ὑπέρβιον δόχετα αἰῶνι .  
οὗτ' οὖν παρδωλῖος τόσσον μίνῃ, οὔτε λίοντῃ .  
οὔτε σὺνός, κάπρη δ' ὀλοόφροντ', οὔτε μέγιστῃ  
θυμὸς ἐνὶ σῆθεσι μέγα δίνεϊ βλεμμαίνῃ,  
ἴσων πάνθ' ὕϊσ' ἐν μιλήϊα φρονέουσιν .

ἢ δ' ἐμῇ

αὐτίκα δ' ἔξυν' ἑσθ' ἰμετ' αὐτὸν μὲν δὲντα βιβήκα,  
 αὐτίθιον θιράσωντα, ποδῶκιος αὐακίθιο.  
 ἴτο γὰρ βαλῆεν τόνδ' ἐκφίρον ὠκείδ' ἴπποι.  
 ἀμβροτοί, οὐς πηλῆι θιοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῖδρα.

ΥΓΡΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ρ. ΟΜΗ.  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

■ Εὐρὶ τῷ παρόκλῳ σώματος, κρατερὰ σῶματα  
 μάχη, καθ' ἣν καὶ ὑφορβος ἀναρεῖται ὑπὸ μιν  
 λάσ. ἔκτορ δ' ἐπὶ τῷ ἀχιλλέως ἐνδύετ' πανοπλίαν. καὶ ἀνθ'  
 πατα βίς ἑλλησιν. οἱ δ' ἐπὶ μιν ἑλκον, ἀντίλαχον διαπέμ  
 πονται, πρὸς ἀχιλλέα, πρὸς πατρόκλῳ θάνατον ἀγγέλο  
 λοντα, ὑποδύντο δ' ἐπὶ καὶ ἀράμμοι πρὸ σώμα βίς ὅμοις φέ  
 ρουσιν. οἱ δ' ἐπὶ ἀρῶντις προμαχοῦσι καὶ ἀπείργουσιν ἐπὶ  
 πολυμίγῃ.

πονεῖν ὁρρεῖχεται πολέμιον· ἔγχεϊ δ' αὖτε,  
 φασὶ φίλοισι πόλεμοισι μεταπρίπω, ὅσφιν ἀμύνω  
 ἔμαρ ἀναχαιτῶν· σέ δ' ἐνθάδε γυῖός ἐδόνται·  
 ἔλ' ἄλ' ἔδ' ἐτοι· ἐδὸς ἐὼν χαίσι μισέω ἀχιλλεύς·  
 ὅς που θιμολάω πωλὰ μένων ἐπετέλλει τ' ἴοντι·  
 μύμοι πρὶν ἵεναι παρόκλης ἱποκίλευθε  
 νῆας ἀνὰ γλαφυράς, πρὶν γ' ἔκπερ' ἀνδροφόνοιο·  
 αἵματόεντα χιτῶνα περὶ σῆθεσι δαΐξαι·  
 ὅς που σε προσέφη, θι δ' ἐφρένας ἄφρονι πεῖθε·  
 τόη δ' ὀλιγοφρανίω προσέφη παρόκλης ἱππεύς·  
 ἔδ' ἡ νῦν ἔκτορ μεγάλ' ἔυχεο, θι γὰρ ἔδωκε  
 νίκην ζῆνός κρονίδης καὶ ἀπόλλων, οἱ μ' ἐδωμάσαν·  
 ῥηιδίως, αὐτὶ γὰρ ἀπ' ὤμων τινύχ' ἔλθω·  
 βούτοισι δ' ἵππερ μοι εἰήσιν ἀντιβόλησιν·  
 πωλόνδε κ' αὐτὸς ἔλθω, ἐμῷ ὑπὸ δ' ἐρὶ δαμέντο·  
 ἀλλὰ με μοῖρ' ὀλοή καὶ ληστὴς ἔκτακεν ἧός·  
 ἀνδρῶν δ' εὐφορβέω, σὺ δ' ἐμὲ τῆς ἔξουαρῖδε·  
 ἄλλο δ' ἐκίριώ, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βωλλίω σῆσιν·  
 οὐθὼν ἔδ' αὐτὸς δ' ἡρὸν βίη, ἀλλὰ κί ἦδ' ἡ  
 ἄγχι παρέστηκε θάνατος, καὶ μοῖρα κραταή·  
 χερσὶ δαμέντ' ἀχιλλῆος ἀμύμονος αἰακίδαο·  
 ὅς ἄρα μιν ἐπόντα, τέλος θανάτοιο κάλυψε·  
 ψυχὴ δ' ἐκ ῥεῖω· πηαμένη· αἰδώς δ' ἐβέηκε·  
 ἐν πόντον ροῶσα, λιπρὸς ἀσροτήτα καὶ ἥβη·  
 φν καὶ τεθνῶτα, προσνύδα φαίδιμ' ἔκτορ·  
 παρόκλης, τίνυ μοι μαντιύειαι εἰπὺν ὀλεσθῆναι,  
 τίς δ' οἶδ' εἰκ' ἀχιλλεύς θεῖος παῖς ἠὲ κόμοιο·  
 φθῆν' ἐμῷ ὑπὸ δ' ἐρὶ τυπκίς, ἀπὸ θυμὸν ὀλέσσαι·  
 ὅς ἄρα φωνήσας δόρυ χάλκιον ἐξ ὠτειλῆς  
 ἔρυσσε λαῖξ προβάς, ἐν δ' ὑπὲρ ὧς ἀπὸ δ' ἡρὸς,  
 αὐτίκ'



λυσε δ' εἰθώρησεν ἀναξ διὸς υἱὸς ἀπόλλων.  
 τόν δ' ἄτη φρένας εἴλη, λυθὼν δ' ὑπὸ φαίδιμα γυῖα,  
 εἴ τ' ταφῶν. ὅπιθον δ', μετὰ φρινον ὀξείθυρ  
 ὅμων μεσσηγὺν σχεδόνθω βάλε δαρδάνος ἀνὴρ.  
 πάνθοιόης εὐφορεῖτο. ὅς κ' ἐκίχυν ἐκίχαστο,  
 ἔρχετο ἰπποσύνη τε. πόδες αἵ τε παρπαλίμοισι.  
 καὶ γὰρ δ' ἤποτε φῶτας εἴκασσι βῆσεν ἀφ' ἱππῶν  
 πρῶτ' ἐλθὼν σὺν ὀχεσφι διδασκόμενον πολέμοιο.  
 ὅς τοι πρῶτος ἰφῆκε βέλος πατροκλῆος ἱππυῖ.  
 εἴδ' εἰ δ' ἄμασθ'· εἴ μιν ἀνθις ἀνέσθραμε, μίκρ' δ' ὀμίλῳ.  
 ἐκ χροὸς ἀρπάξας δόρυ μέλινον. εἴδ' ὑπὸ μῖν  
 πατροκλῆν γυμνὸν πρὶ ἔντ' ἐν δ' ἡιοτῇ π.  
 πατροκλῆς δ' οἷον πληγῇ καὶ θυρὶ δαμασπίς,  
 ἀφ' ἑτάρων εἰς ἔθνος ἐχάρυστο κῆρ' ἀλείψων,  
 ἔκτωρ δ' ὡς εἶδεν πατροκλῆα μεγάρθυμον  
 ἀφ' ὠναχάρ' ὀμρον βιβλημένον ὀξεί χαλκῷ,  
 ἀρχίμολον ῥά οἱ ἦλθε κατὰ σίχης οὐτά τ' ἑυρί,  
 θέειν εἰς κενεῶνα, σῆξ' πρὸ δ' χαλκὸν ἔλασσε.  
 οὐδ' ὕπησεν δ' πεσὼν μέγα δ' ὑπεχέλαον ἀχαιῶν.  
 ὥς δ' ὅτι σὺν ἀκάμαντα λείων ἐβίβαν χάρμη.  
 τῶτ' ὄρεος κρυφῆσι μέγα φρονέοντε μολχεῖον  
 πίδακας ἀμφ' ὀλίγης, ἐθίλυσσι δ' πινέμην ἀμφο.  
 πολλὰ δ' εἰ τ' ἀδ' αἰμαίνοντα λείων ἐδάμασσε βίηφι.  
 ὥς πολλὰς πέφνοντα μνηοιτῖς ἀλκιμοὶ υἱόν,  
 ἔκτωρ πριαμίδης σχεδὸν ἔρχετο θυμὸν ἀπῆυρα.  
 καὶ οἱ ἱπυχομένον, ἔπεια πῆρόντ' ἀγόρευε.  
 πατροκλ', ἥπυσ' ἐφ' ὧσα πόλιν κρατίζεμιν ἀμύν.  
 τρωῶσι δ' εἰς δ' γυναικας ἐλευθέρον ἡμᾶρ ἀπύρρα  
 ἄξιον ἐν νύκτι φιλῶν εἰς πατρίδα γαῖαν.  
 ἔνυπτε, τάων δ' εἰς τῷ δ' ἔκρητο ὠκείῳ ἱπποῖ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

πολλά δ' ἔχρησε δία μέγαλ' ἀσπίδες ἐσφίλιξε.  
 μέγνα μιν ἄμφ' αὐτὸν· ὃ δ' ἐν σφοδρῇ γιγνέσθην·  
 κτερὸν μέγας μεγαλωσὶ ληλασμένος ἱπποσώων,  
 ὄφρα μὲν ἥλιος μέδον ἕρπεν ἀμφιβέβηκε.  
 τοφρα μάλ' ἀμφοτέρων βίλ' ἤπ' ἔσσο, πίπτε δ' ἐλαός·  
 ἦμος δ' ἥλιος μετενείσσο βυλυτόν τε,  
 καὶ τότε δ' ἄρ' ὑπὲρ αἶαν' ἀχαιοὶ φέριτροι ἦσαν·  
 ἐκ μὲν κίβελον βαλὼν ἕρπεν ἔρυσσεν  
 φῶν ἐξ ἑνὸς πῆς, καὶ ἀπ' ὧμων τεύχε' ἔλκοντο,  
 πάρεκλῆς δ' ἔρυσσεν κακὰ φρονέων ἑνὸς ἄρ' ἑ.  
 εἰς μὲν ἔπειτ' ἐπόρυσσε θεῶν ἀτολῶντος ἄρ' ἑ·  
 συμβαλὶα ἰάχων, εἰς δ' ἐννέα φῶτας ἐπεφρον·  
 ὅλλ' ἔτε δ' ἄρ' ἐτίταρτον ἐπίστυτο δαίμονι ἴος·  
 ἐνθ' ἄρα ριπάτροκλε φωνήσας οἷοιο τιλαυτή,  
 ἔνθ' ὅ γ' ἄρ' τοι φοῖβε ἐνὶ κρατερῇ ὕσμίνῃ  
 εἰσὶν, ὃ μὲν πρὶν ἰοῖτα κατὰ κλόνον ἐκ ἐνόησεν·  
 ἦεν γὰρ περὶ καλυμμένος ἀντεβόλησε.  
 σῆ δ' ἐπιθεῖ, πληῆξον δ' μετὰ φρονον δῦρεϊτ' ὧμῳ·  
 χερσὶ κατὰ πρηνέϊ, σρεφιδίνηνθον δ' ἐδῶκε.  
 τὸ δ' ἀπὸ μὲν κρατὸς κωέλω βάλε φοῖβε ἀπόλλων,  
 ὃ δ' ἐκυλινδομένη περὶ χεῖρ' ἔχ' ὡσὶν ὑφ' ἱπποῦ  
 οὐλῶπις τρυφάλειά, μίανθησκον δ' ἐθέσθαι,  
 αἶματι καὶ κενέσθαι πάρος γε μὲν ὃ θέμις ἦεν,  
 ἱππόκομον πύληα μαιίνεσθαι κενέσθαι,  
 ἀλλ' ἀνδρὸς θῆοιο κάρη χαλεπὸν μέταπον,  
 εἴς τ' ἀχιλλεύῃ, τότε δ' ἐξ ἑνὸς ἐκτόρε δῶκεν  
 ἐκ φαλῇ φορέειν, οὐδέσθαι δ' οἱ ἦεν ὄλεσθαι,  
 πᾶν δ' οἱ ἐν χεῖρας ἄρ' ὀλιχόσκιον ἔρχετο·  
 βαιὸν μέγα σέαρον κενεσθῆναι, αὐτὰρ ἀπ' ὧμων  
 ἀσπίς ἐν τελαμῶνι χαμαὶ πῖσι τερμίσσασα

λῦσι δ'

τὸν δ' ὅς κ' ἔτ' ἐμὴν προσέφη παρόυλης ἱππεύ.  
 ὦ πόσι, ἢ μάλ' ἐλαφρὸς ἀνὴρ ὅς ῥ' ἴα κυβισᾷ.  
 εὐδ' ἡτοῦ καὶ πόντῳ ἐνὶ χυθούνη γένοιτο,  
 πολλοὺς ἂν κέρσειεν ἀνὴρ ὅδε τήθια διφῶ  
 νηὸς ἀποβρώσκων, εἰ καὶ δυνάμεφίστες εἴη  
 ὡς νῦν ἐν πεδίῳ ἔξ' ἱππῶν ῥέϊα κυβισᾷ.  
 ἢ ῥὰ καὶ ἐν φώεσσι κυβισητῆρόν τ' ἔασθαι.

Ὡς εἰπὼν ὅς κε βειὼν ἦρ' αἰβίβηκε,  
 οἷμα λείονος ἔχων, ὅς τε παθμοὺς κεραίῳ.  
 ἔβλητο πρὸς σῆθος ἐπ' εἰ μὴν ὥλισσεν ἀλκή,  
 ὡς ὅς κε βειὼν παρόυλης ἄλθ' ἐμεμῶς.  
 ἔκτορ δ' ἄνθ' ἐτέρωθεν ἀφ' ἱππῶ ἄλτο χαμᾶϊ.  
 τῷ περὶ κεβειόναο λείονθ' ὡς δ' ἡευνθήτω,  
 ὦτ' ὅρε' ὅ κ' ἐρυφῆσι περὶ κταμένης ἐλάφοιο,  
 ἄμφω πρηνέοντε μέγα φρονέοντε μάχιδον.  
 ὡς περὶ κεβειόναο δ' ὕω μήσσορ' αὐτῆς.  
 πᾶρ' οὐκ ὅς τε μῦθοι πᾶσιν καὶ φαιδίμῳ ἔκτορ,  
 ἵεντ' ἀλλήλων ταμείν χροῶν ἡλκί χαλκῷ  
 ἔκτορ μὲν κεφαλῆφιν ἐπὶ λάβει, ὕχι μεθί  
 πᾶρ' οὐκ ὅς τε ἐτέρωθεν ἔχων ποδὸς, εἰ δ' ἐπ' ἄλλοι  
 φῶς καὶ δάναοι σύναχον κρατερὴν ὕσμίνῃ.  
 ὡς δ' εὐρὸς τε νόρς τ' ἐειδᾶίνετον ἀλλήλοισιν  
 οὐρεὶς ἐν βήσῃ βαθείῃ πηλὴ μίμ' ἔμην ὕλῃ.  
 φηγόν τε μελίῃ τε πανύφλοιν τε κράθει.  
 αἶτε πρὸς ἀλλήλας ἔβαλον πανύκτας ὄϊας.  
 ἢ χῆθ' ἡσπίσιν, πάλταρ δ' ἐπ' ἀγνυμνάδῃ.  
 ὡς βῶδ' καὶ ἀχαιοὶ ἐπ' ἀλλήλοισι θορόντο  
 δῆλιν, ὅδ' ἐτεροὶ μιν ὄντ' ὄλοιο φόβοιο.  
 πολλὰ δ' ἐκεβειόναο ἀμφ' ὅξ' αὖ δ' οὐρα πεπύγῃ.  
 ἰοίτε πῆρ' ὄντο ἀπὸ νευρῆφι θορόντο

ἦ λαοὺς ἐς τῆχος ὁμοκλήσῃεν ἀλῆναι·  
 ταῦτ' ἄρα οἱ φρονέοντι παρίστατο φοῖβος ἀπόλλων·  
 οὐδ' εἰ ἐσάμηνος αἰήϊ τε κρατερῶ τε  
 ἀσΐῳ, ὅς μ' ἦρως ἦν ἱκρῆσθ' ἵπποδάμοιο·  
 αὐτοκτεσίγητος ἱκάδης, ἡδὲ δ' ἐδύμωτο·  
 ὅς φρυγίῳ καίϊσκει ῥοῆς ὡς σαγγαγίοιο·  
 τοῦ μιν ἐσάμηνος προσεφώνεε φοῖβος ἀπόλλων·  
 ἱκρὴ τί πη μοῖχης ἀποπαύεται ὕδ' ἐπὶ σιχρῇ·  
 αἰθ' ὅθ' ἦσαν ἐμὶ τόθ' οὐ σέο φίλτερο ἴλω·  
 τοῦ κε τάχα συγχεῶς πολέμῳ ἀπειρούσδας·  
 ἀλλ' ἄγε παρόκλω ἔφιπε κρατερῶν χάσ' ἵππου·  
 αἰκίην πως μιν ἔλῃς δώῃ δ' ἐρι λυγρὸς ἀπόλλων·  
 ὣς ἐπών, ὁ μὲν αὖτις ἔειθε δὲ ἀμπονον ἀνδρῶν·  
 κειθελόντ' ἐκίλευσε δαΐφροني φαίδιμος ἔκτωρ·  
 ἵππου ἐς πόλεμον πεπληγέμεν, αὐτὰρ ἀπόλλων  
 δύσεθ' ὁμίλον ἴων, ἐν δ' κλόνον ἀρχαίοισιν  
 ἔκτε κελόν, ῥώσιν δ' ἐκτὸς ἐκτοῖς κῦδος ὅπασεν·  
 ἔκτωρ δ' ἄλλους μὲν δαίμονας ἔα ὕδ' ἱνάειν·  
 αὐτὰρ, ὃ, παρόκλω ἔπιχε κρατερῶν χάσ' ἵππῳ·  
 παρφοκλος δ' ἐτέρωθεν ἀφ' ἵππων ἄλφ' χαμαῖς,  
 σκαῖ' ἔγχε' ἔχων· ἐτέρωφ' ἵ' λάρ' ἔσπερον,  
 μούρμαρον ὀκρίοντα, τόν οἱ περὶ χεῖρ' ἐκάλυψε·  
 ἔκτε δ' ἐρεσάμετο ὕδ' ἐδ' ἦν ἄλ' ἔσφωτός·  
 ὕδ' ἀλίωσσε βέλτο, βάλε δ' ἔκτορο ἠνίοχ' ἔα  
 κειθελόντ' ἡδὲ νόθον ἡδὲ ἀρχακλῆος πριάμοιο·  
 ἵππων ἠνί' ἔχοντα μετώπιον ὀξεί' ἡαῖ·  
 ἀμφοτέρως δ' ὀφρὺς σύνελθε λίθο, ὕδ' οἱ ἔχον  
 ὀσείον, ὀφθαλμοὶ δ' ἡδὲ χαμαὶ πίον ἐν κνήμῃσιν  
 αὐτῷ πρὸδε ποδῶν, ὃ δ' ἄρ' ἀρκευθεῖς οἰκῶς·  
 κάππεσ' ἀπ' οὐβγίος δ' ἴφρυ, λίπε δ' ὀσεία θυμῶς  
 τόν δ'

παρόκλος δ' ἵπποισι καὶ αὐτομέδοντι κειεύσας,  
 τῷας καὶ λυκίης μετεκίανει, καὶ μίγ' ἀάδῃ  
 ῥήπιος, εἰ δ' εἴς τοι πηληϊάδαο φύλαξον,  
 ἔγ' ἂν ὑπέκφυγε κῆρα κακὴν, μέλανος θανάτοιο.  
 ἀλλ' αἰεῖτε δῖος κρείσσων νόος ἢ ἐπὶ ἄνδρῶν  
 ὅς τε καὶ ἄλκιμον ἄνδρα φοβεῖ, καὶ ἀφείλξονί κεν.  
 ῥῆιδ' ἴως, ὅτε δ' αὖτ' ἐποτρύνῃσι μάχεσθαι,  
 ὅς οἱ καὶ τότε θυμὸν ἐνὶ στήθεσιν ἐνῆκεν,  
 ἔνθα τίνα προῶν, τίνα δ' ὕστατον ἱξενάριξας  
 παρόκλος, ὅτε δ' ἤ σε θεοὶ θάνατόν γε κάλεσαν  
 ἄδρῃσιν μὲν προῶτα, καὶ αὐτόνοον, καὶ ἔχεκλον,  
 καὶ περίμον, μεγαδῶν, καὶ ἐπίτορα καὶ μελῶνιππος  
 αὐτὰρ ἔπειτ' ἔλαθον, καὶ μούλιον, ἢ δ' ἐπυλάρτιον.  
 εἴς' ἔλεν, οἱ δ' ἄλλοι φύγαδ' ἐμνῶντο ἔκαστος  
 ἔνθα κεν ὑψίπυλον τοίῳ ἔλθον ὕβρις ἀρχαῶν  
 παρόκλος ὑπὸ χρσί. πῖε προδ' ἔρχετο θυῶν  
 εἰ μὴ ἀπόλλων φοῖβος ὕδ' ἐμήτην ἔσπεύγῃ  
 ἔση, τῷ δ' ὅλα φρονέων, τῷασιν δ' ἀρήγων.  
 τῖς μὲν ἐπ' ἀγκῶνος ἦν τέχιος ὑψηλοῖο  
 παρόκλος, τῖς δ' αὐτὸν ἀπὸ σφύρελιξεν ἀπόλλων.  
 χείρεσιν ἀθανάτησι φαεινὴν ἀσπίδα νύσαν.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἤ εἴ ταρην ἐπίεσυντο δαίμονι ἴδως,  
 δεινὰ δ' ὁμοκλήτας, προσέφη ἑκάργος ἀπόλλων.  
 Κάϊο διογενὲς παρόκλος ὃ νύ τοι αἴσαν  
 σῶ ὑπὸ δ' ἄρ' ἰ, πόλιν πέρθαι τῶων ἀγρώχων.  
 ὃ δ' ὑπ' ἀχιλλῆος, ὅς περ σέο πολλὸν ἀμείνων.  
 Ὡς φάτο παρόκλος δ' ἀναχάξας πολλὸν ὀπίσσω  
 μῆνιν ἄλγυον μὲν ἔκαστη βόλῃ ἀπόλλωνος.  
 ἔκτωρ δ' ἐν σκαιοῖσι πύλης, ἔχει μῶνυχας ἵππων.  
 δῖος γὰρ ἢ ἐμάχοιτο κατὰ κλόνον ἐνθ' ἰώλασας



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Ξεῦτις ῥῶας τε καὶ ἑκτόρα χαλκὸν κερύνει,  
 ὥσπερ οὗτος ἄστυ, πολλῶν δ' ἀπὸ θυμὸν ἐλαΐ  
 ἑκτορα δ' ἡρώτις, ἀνὰ λυκίαν θυμὸν ἐνὶ κιν-  
 ῆς διφρὸν δ' ἀνὰ λυκίαν φύγαν δ' ἔραπε κίκλιν δ' ἄλλαν  
 ῥῶας φεγγέμεναι, γυνὴ γάρ δ' ἰδὸς ἰρὰ τὰ λῶνται.  
 ἐνθ' οὐδ' ἴφθιμοι λυκιοὶ μένον, ἀλλ' ἐφόβηθεν  
 πάντες ἐπὶ βασιλῆα ἴδον βεβλαμμένον ἦτορ,  
 κέκμητον ἐν νεκύων ἀγύρει, πολλὰς γὰρ ἐπ' αὐτῷ  
 κώπυσσεν εὖτ' εἶδε κρατερὴν ἱτάνυσαν κρονίαν,  
 οἷδ' ἄρ' ἀπ' ὤμοισιν ἄρπηδόν τε ἐντὶ ἔλκεσσι,  
 χαλκία μαρμαίροντα, τὰ μὲν κείλας ἐπὶ νῆας  
 δῶκε φέρεσθαι ἱτάρουσι μνηοπιδὺς ἄλκιμον ἦος.  
 καὶ τότε ἀπόλλωνά προσέφη περὶ ληγερίτα βόες,  
 εἰδ' ἄγε νῦν φίλε φοῖβε κίλανε φέες αἶμα κώθηρ,  
 ἐλθὼν ἐκ βελίων ἄρπηδόν τε, καὶ μιν ἔπειτα  
 πολλὸν ἀπο προφίρων, λῆσεν ποταμοῖο ῥοῇσι,  
 χρίσεν τ' ἀμβροσίῃ περὶ τ' ἀμβροτὰ ἔματα ἔσων.  
 πέμπει δ' ἐμιν πομποῖσιν ἅμα κραυνοῖσι φέρεσθαι,  
 ὕπνω καὶ θανάτῳ διδυμάοσιν, οἳ ῥά μιν ὤκα  
 θύσσειν λυκίης εὐρείης πτόνι δ' ἡμῶ.  
 ἐνθάδ' ἐταρχύσσει κασιγνητοὶ τε, ἔται τε,  
 τύμβῳ τε σήλῃ τε, τὸ γὰρ γέρας ἐστὶ θωόντων.  
 ὣς ἔφατ', οὐδ' ἄρα παρὸς ἀνιχνύσσειν ἀπόλλων,  
 βῆ δ' ἑκάτ' ἰδαιῶν ὀρίων, ἐς φύλοπιν ἀνήν.  
 αὐτίκα δ' ἐκ βελίων ἄρπηδόν τε διτὸν αἶρας,  
 πολλὸν ἀπο προφίρων λῆσεν ποταμοῖο ῥοῇσι,  
 χρίσιντ' ἀμβροσίῃ, περὶ δ' ἀμβροτὰ ἔματα ἔσων  
 πέμπει δ' ἐμιν πομποῖσιν ἅμα κραυνοῖσι φέρεσθαι,  
 ὕπνω καὶ θανάτῳ διδυμάοσιν, οἳ ῥά μιν ὤκα  
 κώπυσσεν ἐν λυκίης εὐρείης πτόνι δ' ἡμῶ.

αἵματι καὶ κρατερὸς περὶ δὴ καὶ χερσὶ ποιῶν  
 εὖχος ἱμοὶ δῶκε, ψυχὴν δ' αἰδὶ κλυτοπόλῳ.  
 ὧς φάτο τὸν δ' ἐννεΐπῃ μῆμοιτί· ἄλκιμος ἦος.  
 μηρόνῃ, τί σὺ ταῦτα καὶ ἐδλὸς ἐδὴ ἄγορ' ἐπὶ  
 ὧ πέπον, οὔτι φῶκε δὴ δέοις ἐπέεσσιν  
 νεκρῷ χωρῆσαι πάρος τινὰ γῶα καθεΐξει.  
 ἦ, ἦ γὰρ χερσὶ τέλῃς πολέμῳ, ἐπείωρ δ' ἐνὶ βελῳ.  
 ἦ, ἦ, οὔτι χεὶρ μῦθορ ὀφέλλῃ ἀλλὰ μάχεσθαι.  
 ὧς ἔπῳ, ὃ μὲν ἦρχ' ὃ δ' ἄμ' ἴσασθ' ἰσοθέοις φῶς.  
 τῶν δ' ὅστις ἐδρυτόμῳ ἀνδρῶν ὀρυγμαδὸς ὄρωρε  
 εὐρεος ἐν βήσῃ, ἵκαθον δ' ἐτε γίνετ' ἀκνύ.  
 ὧς τῶν ὥρνυτο δ' ἔπος ἀπὸ χθονὸς εὐρυοδείης.  
 χαλκῷ τε ῥινῷ τε, βοῶντ' ἐν ποινήσιν.  
 τυπομένην ξίφισιν τε καὶ ἐγχέσιν ἀμφιγύοισιν  
 οὐδ' ἄρ' ἐτι φράδμων περ ἀνὴρ, ἄρπηδ' ὄνα δ' ἴεν.  
 ἔγνω, ἐπὶ βελέεσσιν καὶ αἵματι καὶ κενήσιν.  
 ἐκ κεφαλῆς εἰλυτὸ διαμπερές ἐς πόδας ἄκρας.  
 οἱ δ' αὖτε περὶ νεκρὸν ὁμίλειον, ὧς ὅτε μῦθαι  
 σταθμῶ ἐπὶ βρομέωσι περιγλαγίας κατὰ πέλας  
 ἔρῃ ἐν εἰαυνῇ, ὅτε τε γλαγὸς ἄγρια δ' οὐρα.  
 ὧς ἄρα τοῖ, περὶ νεκρὸν ὁμίλειον, οὐδ' ἐπὶ τοῖς  
 ῥέτω ἀπὸ κρατερῆς ὕσμίνης ὅσπερ φαεινῷ.  
 ἀλλὰ κατ' αὐτῶς αἶεν ὄρα καὶ φράζο θυμῷ.  
 πολλὰ μάλ' ἀμφὶ φόνῳ παρόχλυσ μιν μινίῳ.  
 ἦ ἦ δὴ κακὸν ἐνὶ κρατερῇ ὕσμίνῃ.  
 αὐτῷ ἐπ' ἀντιθέῳ ἄρπηδ' ὄνα φαίδιμος ἔκτορ  
 χαλκῷ δὴ νῶσθ', ἀπὸ τ' ὧμων τούχῃ ἔλκεται.  
 ἦ ἦ ἐτι καὶ πλινθίσιν ὀφέλλῃ δὴ πόνορ αἰπὺν.  
 ὧς δ' ἐπεὶ φρονέοντι, δόξατο κέρδιον εἶναι.  
 ὅφρ' ἢ τοῖς θύρακων πηληϊάδῃω ἀχιλῆϊ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἰθάπτε τ' ἔστην ὃ βαθυκλιῖα μεγάθυμον,  
 χαλκῶνως φίλον ἦδ' ὅς ἑλλάδι οἰκία ναίων,  
 πῶλ' ὅτε πλούτῳ τε μιν ἔπρεπε μυρμιδόνων.  
 τὸν μὲν ἄρα γλαῦκος, εἴθεος μέσση οὐτάσιν δ' ἄρ'  
 σφιγμένοις ἐξαπίνης ὅτε μιν κατέμαρπτε διώκων.  
 δούπησεν ὃ πεισὼν, πυκινὸν δ' ἄχος ἔλλαβ' ἄχαιούς,  
 ὡς ἔπεσ' ἰδὼς ἀνὴρ, μέγα δ' ὃ βῶϊς κυχάρων.  
 εἰρ δ' ἄμφ' αὐτὸν ἰόντος ἀολλίης, οὐδ' ἄρ' ἀχαιοὶ  
 ἀλκῆς ἐξελάθοντο, μένος δ' ἰθὺς φέρον αὐτῶν.  
 ἐνθ' αὖ μνηστήρῃς βῶων ἔλεν ἀνδρᾶ κερυσηῖν  
 λαογόνοισιν θρασύν ἡδ' ὀνύτοισιν, ὅς δ' ἰδὼς ἱρήν  
 ἰδαίην ἔτετυχε, θεὸς δ' ὣς τίς πο δῆμῳ.  
 τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὐατ' ὦκα δ' θυμὸς  
 ὦχετ' ἀπὸ μελίων, συγχερός δ' ἄρα μιν σκότος ἔειλεν  
 αἰνείας δ' ἐπὶ μνηστήρῃσιν ὄδρυν χάλκεον ἔκεν,  
 ἔλπετο γὰρ τούτῳ βλάψαι ὑπασπίδια προβιβῶντα.  
 ἀλλ' ὃ μὲν ἄντα ἰδὼν, ἠλευάτο χάλκεον ἔγχεος.  
 πρόσσω γὰρ κατέκυψεν, τό δ' ἐξοπίθεν ὄδρυν μακρόν  
 οὐδ' εἰ νιν σκίμψθη, ἐπὶ δ' οὐρῖαχος πελεμίσχην  
 ἔγχεος, ἐνθα δ' ἔπειτ' ἀφίει μένος ὄβριμος ἄρητο.  
 αἰχμή δ' αἰνείαο κραδαινομένη κατὰ γαίης.  
 ὦχετ' ἐπεὶ ῥ' ἄλιον σβάρῃς ἀπὸ χειρὸς ὄρυσαν.  
 αἰνείας δ' ἄρα θυμὸν ἐχώσατο, φώνησέν τε.

**Μνηστήρ** τὰ χακίην σε καὶ ὄρχησθην περ ἑόντα.  
 ἔγχεος ἐμὸν κατέπαυσε διαμπερές, εἴσ' ἑαλόν περ  
**Τόν** δ' αὖ μνηστήρῃς δεικνυτὸς ἀντίον ἦνδ' αἶ.  
 αἰνεία, χαλεπὸν σε καὶ ἴφθιμόν περ ἑόντα,  
 πάντων ἀνθρώπων σβίσσαι μιν, ὅς κ' εἰ σὺ ἄντα  
 ἔλθῃ ἀμυνόμενος, θνητὸς δ' εἴνυ καὶ σὺ τέτυξαι.  
 ὦ καὶ ἔγχεος βάλοιμι τυχὼν μέσση ὅξ' ἔχαια.

ῥῶϊς καὶ λυκίοι καὶ μυρμιδόνες καὶ ἄχαιοί  
 σύμβαλον ἄμφι νύκτι κατατιθενῶτι μάχῃσι.  
 δεινὸν αὖ σῶσαντο, μέγα δ' ἔβραχ' ἐπὶ χερσὶ φάτο·  
 [δύς δ' ὦ νύκτ' ὀλοήν τάνυσσε κρατερῇ ὑσμίνῃ.  
 ὄφρα φίλῳ περὶ παιδί μάχης ὀλοὸς πόνος εἴη,  
 ὣσαν ὃ πρότεροι ῥῶϊς ἰλίκωπας ἄχαιούς.  
 βλήθ' γὰρ οὔτι κάκιστος ἀνὴρ μετὰ μυρμιδόνεσσιν  
 ἢ δὲ ἀγκληὸς μετὰ θυμῷ δῖος ἱππηγεύς.  
 ὅς ῥ' ἐν βυθόειῳ εὐναιομένῳ ἦτασσε  
 τοπρὶν, ἀτὰρ τότε γ' ἐβλήθ' ἀντιφύον ἱξουαρίξασθαι  
 ἰς πηλὴν ἰκέτινσιν, καὶ ἰς θέτην ἀργυρόπιπτον.  
 οἱ δ' ἄμ' ἀχιλλῆϊ ῥηξύνουσι πέμπορ' ἐπιπαι.  
 ἱλίουρ ἔς εὐπωλον, ἵνα ῥώσῃσι μάχοιτο,  
 τὸν ῥ' αὖ τόθ' ἀπὸ μύθοιο νέκυος βάλε φαίδιμος Ἴκτωρ.  
 χερμαδίῳ κεφαλὴν, ἣ δ' ἀνδρίχα πᾶσα κιάδῃ  
 ἐν κόρυθι βεβάρη, ὃ δ' ἄρα πρηνὴς ἐπὶ νεκρῷ  
 καλπίσσω, ἄμφι δ' ἐμιν θάνατον χυθ' θυμοραϊσίῃσι,  
 παρόκλῳ δ' ἄρ' ἄχος γένετο. φθιμένον ἰτάροισι,  
 ἴθυσαν ὃ σέξ' προμάχων ἱρήκι τοικῶς  
 ὠκείῃ. ὅς τ' ἐφροβόει καλοῖους τε φῆρας τε  
 ὡς ἰθὺς λυκίων παρόκλης ἱποκίλινθε.  
 ἴππου καὶ ῥῶων, κεχολωθ' ὃ κῆρ ἰτάροισι.  
 καὶ ῥ' ἔβαλε δινέλαον ἰθαμμένον φίλῳ ἱόν.  
 αἰχίνα χερμαδίῳ. ῥῆξεν δ' ἀπὸ τοῦ τίνοντι.  
 χῶρησσαν δ' ὑπὸ γ' ἐπρόμαχοι καὶ φαίδιμος Ἴκτωρ  
 ὄσση δ' ὠγανίης ῥίπῃ ταναοῖο τίτυκται.  
 ἦν ῥ' αὖ τ' ἀνὴρ ἀφικ' ἐπὶ πρῶμῳ ἢ ἐν αἰθέρι,  
 ἦε καὶ ἐν πολέμῳ δῆϊον ὑπὸ θυμοραϊσίῃσι,  
 τόσσον ἐχῶρησσαν ῥῶϊς. ὣσαν δ' ἄχαιοί,  
 ῥαῦτα δ' ἡρώτ' ἄλκιον ἀγὸς ἀπὸ πρῶμῳ

ΙΑΙ Α Δ Ο Σ.

[illegible]

தமிழக அரசு



ἐκ χροὸς ἰλκε δόρυ, προτὶ δὲ φρίνεις αὐτῷ ἵποντο.  
τοιο δ' ἅμα τυγχάνει, καὶ ἔγχεος ἐξέρυσ' αὐχμῆι.  
μυρμιδόνες δ' αὐτῷ χέρον ἵππους φυσιοῦντας  
ἰεμένους φοβεῖσθαι, ἐπεὶ λίπον ἄρματ' ἀνάκτων.  
γλαυκῶ δ' αὖθις ἄχος γένετο φθογγῆς αἰῶντι.  
ὠρίνθη δὲ οἱ ἦτορ ὅτ' οὐ δύνατο προβαμῦναι.  
χερσὶ δ' ἑλδὼν, ἐπὶ τῇ βραχίονα, τῆρι γὰρ αὖθις  
ἔλκεος, ὃ δ' ἡ μιν τεύχερος ἐπιστύμμενον βάλεον ἰθὺ  
τείχεος ὑψηλοῦ ἀρὴν ἱτάροισιν ἀμύνων.  
ἐν χόμῳ δ' ἄρα ἵππων ἐκκρόλῳ ἀπόλλωνι.

Κλυθὶ ἄναξ, ὅς περ λυκίης ἐν πίονι δήμῳ  
εἴς, ἡ ἐνὶ βοίῃς δύνασαι δέ τε πόντῳ ἀκύνει  
ἀνέει κηδομένῳ, ὥς νῦν ἐμὲ κῆδος ἰκάνει.  
ἔλκεος μὲν γὰρ ἔχω τόδε καρτερόν, ἀμφὶ δὲ μοι χεῖρ  
ᾧξείης δ' οὐ δύνησιν ἐλθέσθαι, οὐ δὲ μοι αἶμα  
τιρσῆναι δύναται, βαρύνθαι δὲ μοι ὤμος ὑπ' αὐτῶν.  
ἔγχεος δ' οὐ δύναμαι ἀχλὺν ἐμπεδόνου, οὐ δὲ μάχιδαν  
ἐλθὼν δύσμενέεσσι, ἀπὲρ δ' ὥειςτος ὀλοαυον.  
ἄρπηδ' ὦν δῖος ἑός, ὃ δ' ὦ παιδὶ ἀμύνει.  
ἀλλὰ σὺ περ μοι ἄναξ τόδε καρτερόν ἔλκεος ἀκέστω.  
καί μισον δ' οὐ δύνας, δὲ δὲ μοι κράτ' ὄφρ' ἱτάροις  
κεκλόμην λυκίοισιν, ἐποτρύνω πολέμιόν.  
αὐτὸς τ' ἀμφὶ νέκυϊ κατατιθηνῶτι, μάχωμαι.  
ὣς ἔφατ' ἐν χόμῳ, τῷ δ' ἔκλυε φοῖβος ἀπὸλλων.  
αὐτίκα παῦσ' οὐ δύνας ἀπὸ δ' ἔλκεος ἀργαλίοιο,  
αἶμα μέλαινα τέρσῳ, μένος δὲ οἱ ἐμβαλε θυμῷ.  
γλαυκῶς δ' ἔγνω ἧσιν ἐνὶ φρεσὶ γήθησέν τι.  
ὅτ' οἱ οἱ ὦκ' ἤκυσσε μέγας θεὸς εὐξαμένοιο.  
πρῶτα μὲν ὤρῳεν λυκίων ἡγήτορας ἀνδρας.  
πάντῃ ἐποιχόμενῳ ἄρπηδ' ὦν ἀμφιμάχιδαν.

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ.

εἶξας ἀπέκρηψε παρήγορον οὐδ' ἱμάτησι.  
 τῷ δ' ἰθὺς θήτω, ἔνθ' ῥυτῆρσι τάινυδεν.  
 τῷ δ' αὖτις σωίτῳ ἔειδος περὶ θυμοδόροισι.  
 εἴθ' ἂν ἄρπηδ' ὦρ μὲν ἀπὸ μύροιο, δ' ἄρ' ἔφηνε.  
 παρόχλυσ' ὑπὲρ ὤμον ἀεισερόν ἤλυθ' ἀκωκὴ  
 ἔρχεσθ', οὐδ' ἔβαλ' αὐτόν, ὃ δ' ὕστερος ὤρνυτο χαλκῷ  
 πάροχλος, τῷ δ' οὐχ' ἄλιον βίβας ἔκφυγε χερσός.  
 ἀλλ' ἔβαλ' ἐνθ' ἄρα τι φρένες ἔρχεται ἀμφ' ἀδινὸν κῆρ.  
 ἔειπε δ' ὡς ὅτε τις θύς ἔειπεν, ἡ ἄχρεώϊς.  
 οἷε πίτυς βλωθρὴ, τήν τ' οὐρεσι τέκτονις ἀνδρῶν  
 ἔξεταμον πελέκασιν ἐνέκασιν ἠΐον εἶναι.  
 ὡς δ' ἔπρ' ὅδ' ἰππων καὶ δίφρων τοῦνυδ' ἴς  
 βίβρυχ' ὡς, κόνιος δὲ θραγμίν' αἵματόεσθ' ἔσθ'·  
 αὐτὲ ταῦρον ἔπεφνε λίων ἀγέληφι μετιελθόν.  
 κ' ὅθ' ὦνα μὲν ἄθυμον ἔνθ' ἐλπίδοισι βόεσσιν.  
 ὅλετό τι σινάχων ὑπὸ γαμφηλῆσι λίοντ'·  
 ὡς ὑπὸ παρόχλῳ λυκίων ἀγρός ἀσπισαίων.  
 κτενὸς μὲν μὲν ἔειπεν, φίλον δ' ὀνόμωσεν ἑταῖρον.  
 Γλαῦκε πίπ' ὦν πολέμισα μετ' ἀνδράσι νῦν σὺ μάλα χρὸ  
 αἰχμητὴν τ' ἐμῶν καὶ θαρβέλιον πολέμισήν.  
 νῦν τοι ἔλδ' ἔειδω πόλιμος κακός, ἐθός' ἔστι.  
 πρῶτα μὲν ὤρῳον λυκίων ἡγήτορας ἀνδρας.  
 πάντ' ἐποχόμην' ἄρπηδ' ὦρ ἀμφιμάχεσθαι.  
 αὐτὰρ ἔπειτα καὶ αὐτὸς ἐμὺ πέει μάργον χαλκῷ  
 σοὶ γὰρ ἐγὼ καὶ ἔπειτα κατηφείην καὶ ὄνειδος  
 ἔσομαι ἡμάτα πάντα διαμπερές, ἐκ μ' ἀχαιοὶ  
 τοῦ χ' αὖ συλήσωσιν ἐνὶ ἄλῳ πεσόντα.  
 ἀλλ' ἔχειο κρατερῶς, ὤρῳε ὃ λαὸν ἅπαντα.  
 ὧς ἄρα μιν ἐπόντα τέλ' ἔειπεν θανάτοιο κάλυντον  
 ὀφθαλμούς, ἔϊνας θ', ὃ δ' ἔλ' ἐν εἴθεσι βαίναν.

ἐκ χροῖς.

ἄλλο δὲ τοι εἶρα, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλειο σῆσιν·  
 αἴ κε ἴδῃς πέμψης σαρπηδόνα ὄνδρ' ἐδόμενδ',  
 φρωῖεο μῆτις ἔπειτα θεῶν ἱθέλῃσι καὶ ἄλλοις,  
 πέμπειν δ' ἄν φίλῃν ἡδὲ ἀπὸ κρατερῆς ὕσμίνης·  
 πολλοὶ γὰρ περὶ ἄστυ μέγα πρὶωμοιο μολχονταί·  
 οἷος ἀθανάτων τοῖσιν κότον αὐτὸν ἐνήσας·  
 ἀλλ' εἴ τοι φίλος ἐσὶ τέον δ' ἀσφύρεται ἦτορ·  
 ἦτοι μὲν μιν ἰάσσοι ἐνὶ κρατερῇ ὕσμίνῃ,  
 χέρσ' ὑπὸ παρόκλειο μῆμοιτιάδαο δαίμηναι,  
 αὐτὰρ ἐπὴν δ' ἡ τὴν γέ λῖπ' ἔψυχ' ἔτι καὶ αὖν,  
 πέμπειν μιν θάνατόν τι φέρειν καὶ νήδυμον ὕπνον·  
 εἰσόκε δ' ἡ λυκίης δῦρέης δ' ἡμορῖκωνται·  
 ἔνθα ἔταρχ' ὕσσοι κασίγνητοί τε, ἔταυτε  
 τύμβω τε σήλῃ τε, τὸ γὰρ γέρας ἐσὶ θανόντων·  
 ὣς ἔφατ' οὐ δ' ἀπίθῃσι πατήρ αὐδ' ὦν τε θεῶν τε  
 αἵματούσας ὃ ἑιάδας κατέχουσιν ἔραζε·  
 ποῦδ' αὖ φίλῃν τιμῶν, τὸν δ' εἰ πάροκλος ἔμιλλαι  
 φθίσαν ἐνὶ βοίῃ ἐριδῶλακι τηλόθι πάρος·  
 οἱ δ' ὅτε δ' ἡ χ' ὦν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντοσ',  
 ἔνθ' ἦτοι πάροκλος μῆν' ἀγκλιστὸν θρασυμήδ' ὦν  
 ὅς τ' ἦν θέρωπ' ὦν ἀρπηδόν' ὦν ἄνακτ' ὦν·  
 τὸν βάλε νείαιραν κατὰ γαστέρα, λῦσε δ' ὃ γυναι·  
 ἀρπηδὼν δ' αὐτὸ μῆν' ἀπὸ μέρουσι δ' ἐνὶ φασγῶ  
 δ' οὐτερος δ' ὀρμηθείς· ὃ δ' ἐπὶ δ' αὖ οὐτ' αὖ ἵππον  
 ἔγχεϊ δ' ἐξιδὼν ὦμον· ὃ δ' ἔβραχε θυμὸν αἰείδων·  
 καὶ δ' ἔπεισ' ἐν κενήσιν μακρῶν ἀπὸ δ' ἐπὶ αὖ θυμός,  
 τὼ δ' ὃ διασέττω, χρίκει δ' ὃ ἔνθ' ὦν ἡνία δ' ἐσφι  
 σύγχευ' ἐπὶ δ' ἡ κείτο παρ' ὕπορος ἐν κενήσιν·  
 τοῖο μῆν' αὐτομέδων δ' οὐκ ἐκλυτὸς ὕρξος τέκμορ·  
 πῶσά μιν ὦν ταυνῆκ' ἄορ παχέος παρὰ μιν,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

καὶ πῖσεν· ἀμφὶ δ' ἐμὶρ θάνατον· χυβ' θυμορ αἰεὶς.  
 οὐτάρ' ἔπειτ' ἐρύσαντα καὶ ἀμφοτέρων, καὶ ἐπ' αἰτῶν  
 τληπόλιν ὁρῶν τι δαμιορίδῳ, ἐχίοντι πύρῳ τι,  
 ἰφίατ' ὑἱὸν πόρτι, καὶ ἀργαῖαν πολὺ μῆλον.  
 πῶντας ἀπασιγέρας πέλασε χθονὶ πενυβοτέρῃ·  
 σαρπηδῶν δ' ὡς ὤω ἴδ' ἀμφοχίταναις ἰταίρας,  
 χέρσ' ὑπὸ παρόκλοιο μῆροισι δάκρυ δαμύντας,  
 κέκλιτ' ἄρ' ἀντιθέοισι καθαπτόμεν· Λυκίοισιν.

Διὶ δ' ὡς ὃ Λυκιοὶ πόσιν φέβονται, νῦν θεοὶ ἐεῖ·  
 ἀντήσω γὰρ ἐγὼ τῷ δ' ἀνέρος ὄφρα δαείω,  
 ὅς τις ὅδε κρατίει καὶ δὴ κακὰ πολλὰ ἔοργε  
 τῶας· ἐπὶ πολλῶν τε καὶ ἰδλῶν γούνατ' ἔλυσεν.  
 ἢ ῥά, καὶ ἔξ ὀχέων σὺν τόλῃ χεῖρ ἄλτο χαμᾶϊ·  
 πάροκλος δ' ἐτέρωθεν ἐπὶ ἴδιν' ἐκθορε δίφρα·  
 οἳ δ' ὡς τε ἀνυπιοὶ γαμφάνυχος ἀγκυλοχεῖλαι  
 πείβῃ φ' ὑψηλῇ μιγάλα κλωῖοντι μάχοντα  
 ὡς οἳ κικλήγοντο δὲ, ἐπ' ἀλλήλοισιν ὄρυσσαν.

Τὸν δ' ἰδὼν ἐλέησεν κρόναις πᾶσι ἀγκυλομήτεω.  
 ἔρῳ δ' ἐπεσέειπε κρασιγυῖτῳ ἄλοχόν τε,  
 ὃ μοι ἐγὼν ὅτε μοι σαρπηδῶνα φίλτατόν ἀνδρῶν,  
 μοῖρ' ὑπὸ παρόκλοιο μῆροισι δάκρυ δαμῆναι.  
 διχθὰ δ' ἐμοι κραδίη μέμονε φρεσὶν ὀρμαίνοντι·  
 ὃ μιν ἰδὼν ἰόντα μάχης ἀπὸ δακρυόεσσης  
 θέω ἀναρπάζας Λυκίης ἐνὶ πτόνι δῦμα,  
 ἢ ὅδ' ὑπὸ χερσὶ μῆροισι δάκρυ δαμῶσθαι.

Τὸν δ' ἠμείβεται ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρη·  
 ἀνότατ' ἐκρονίδῃ, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;  
 ἀνδρα θνητὸν ἰόντα πάλαι πεπρωμένον αἴσῃ·  
 ἄψ' ἐθέλεις θανάτοιο δούση χέος ἐξωκαλῦσαι;  
 ἴρδ', ἀπὲρ οὗτοι πάντες ἐπαγέομεν θεοὶ ἅλλοιοι.

ἄλλο δ'

ὅς δ' ὑπὸ λαίλαπι παῖα κιλαυνὴ βίβειθε χθών  
 ἤματ' ὀπωρινῶ, ὅτε λαβρότατον χίη ὕδωρ  
 ἰδύς, ὅτε δ' ἡ τ' ἀνδρασι κατεσάμνηται χαλιπνή.  
 οἱ βίη ἐν ἀγορῇ σκαθιάς κρύνσι θιμισαί,  
 ἐκ δ' οἱ δίκῃ ἐλάσσωσι, θεῶν δ' ὅπιν οὐκ ἀλέχοντο.  
 τῶν δ' τε πάντοθ' μῦν ποταμοὶ πληθύνσι ῥέοντο.  
 πολλὰς δ' κλιτὺς τότ' ἀποτμήγνυσι χαράδραι,  
 ἐς δ' ἄλλα πορφυρίῳ μιγάλα σενάχυσι ῥέουσιν  
 ἔξ ὀρίων ἐπὶ κάρ, μινύθει δ' ἐπ' ἀνθρώπων

Ως ἴπποι βῶαὶ μιγάλα σενάχοντο θεῖναι.

πάροκλος δ' ἐπὶ δὺν πρώτας ἐπέκερσι φάλαγγας  
 ἅψ' ἐπὶ νῆας ἐργα παλιμπιτίς, οὐ δ' ἐπὶ πόλιν  
 εἴα ἱεμένους ἐπιβανέμεν, ἀλλὰ μεσηγνὴν  
 νηῶν καὶ ποταμῶν καὶ τείχεος ὑψήλοιο.  
 κτεῖνε μεταίστων, πολέων δ' ἀπετίννυτο πομπήν.  
 ἐνθ' ἦτοί πρόνοον πρῶτον βάλε δ' ἄρ' ἐφ' αἰνῶ.  
 εἰρηνὸν γυμνωθέντα παρ' ἀσπίδα, λῦσε δ' ὅ γ' οὐα-  
 λούπησεν δ' πεσῶν, ὃ δ' ἐτίσσερα ἥνοπος ἡρῶν  
 λύτερον ὀρμηθεῖς, ὃ μῦν ἐξέτερεν ἐνὶ δίφρῳ  
 ἦτο ἀλείς, ἐκ γὰρ πλήγῃ φρένας ἐκ δ' ἄρα χαρῶν  
 ἐνὶ αἰὶ χέθησαν, ὃ δ' ἐγχεῖ νύξε παρασάς.  
 γυναικὸν διετίτερον, σὺ δ' αὐτῷ πεῖρον ὀδόντων  
 ἦλκε δ' ἐπ' ἄρ' ἐλῶν ὑπὲρ ἀντυχός. ὥς ὅτε τις φῶν  
 πέτρῃ ἐπὶ προβλήτι καθύμνηται ἱερὸν ἰχθύν,  
 ἐκ πόντοιο θύραζε λίνῳ καὶ ἥνοπι χαλκῶ.

Ως ἦλκε ἐκ δίφροιο κιχλώτα δ' ἄρ' ἐφ' αἰνῶ.

καθ' ὃ δ' ἄρ' ἐπὶ σόμ' ἔωσε, πείσοντα δ' ἐμν λήπε θυμῷ.  
 αὐτὰρ ἐπ' ἐπ' ἐρύαλον ἐπ' αὐτὸν μῆλον βάλε πέτρῳ.  
 μέσῳ κακκίφαλῶν, ἡ δ' ἀνδρὶ χαπαῖα κεάδῃ.  
 ἐν κόρυθι βεβαρῇ, ὃ δ' ὄρα πρὸς ἐπὶ γαίῃ



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

σίνται ὑπ' ἐκ μύλων αἰρινύμμοι, αἵ τ' ἐν ὄρεσσιν  
 πομίνθη ἀφραδίῃσι δίετμαχον, δι' ἡ δὲ δόντος.  
 αἴψα διαρπάξουσιν ἀνάγκη δα θυμὸν ἐχούσιν.  
 ὡς δαναοὶ βῶταίρην ἐπέχραον, δι' ἡ φόβοιο  
 δυσκελάδην μνήσασθαι, λάθοντο δ' οὐνεδος ἀλκῆς.  
 αἴας δ' ὁ μέγας αἰνέει, ἡ ἔκτοε χαλκὸς ἐρυσσῆ  
 ἔει' ἀκοντίσσαι, ὅς ἡ ἰδρὴν πολέμοιο  
 ἀσπίδι ταυρήν κλισυμμένον ὑρέας ὤμους  
 σκιπὶ δῖσῶν τε βοῖσιν καὶ δ' ἔπορ ἀκόντων.  
 ἡ μὲν δ' ἡ γίνωσκε μάχης ἱταλκίαν νίκην.  
 ἀλλὰ καὶ ὡς ἀνέμιμνε, σάω δ' ἐρίφρας ἱταίρους.  
 ὣς δ' ὅτ' ἀπ' οὐλύμπου νέφος ἔρχεται οὐρανὸν ἰῆσα,  
 αἰθέρες ἐκ δῖης ὅτε τε βόες λαίλαπα τέμνει,  
 ὣς τῶν ἐκ νηῶν γένετο ἰαχὴ τε φόβος τε.  
 οὐ δ' ἡ κατὰ μοῖραν πέραρ πάλιν, ἔκτορα δ' ἱπποὶ  
 ἔκφερον ὠκύποδες σὺν τόλμασι, λίπτε δ' ἡ λαὸν  
 βωϊκόν, οὗς ἀέκοντας ὀρυκτὴ τάφρος ἔρυκε.  
 πολλοὶ δ' ἐν τάφρῳ ἐρυσάρματόν ὠκίει ἱπποὶ,  
 ἄξωντ' ἐν πρώτῳ θυμῷ, λίπορ ἄρματ' ἀνάκτων.  
 πάροκλος δ' ἔπρε σφειδανὸν δαναοῖσι κελύδων,  
 βωσι κακὰ φρονέων, δι' ἡ ἰαχὴ τε φόβος τε,  
 πᾶσιν πλήσασιν ὁ δ' ἡ ἐπὶ ἄρτεμάχην, ὅτ' ἡ ἀέλλῃ  
 σκιδναθ' ὑπαινίφειαν, ταυρὸν δ' ἡ μώνυχες ἱπποὶ  
 ἀπορρορὸν προτὶ ἄστυ, νηῶν ἀπο καὶ κλισιάων.  
 πάροκλος δ' ἡ πλεῖστον θεινόμενον ἰδε λαόν,  
 τῇ δ' ἡ ἔχ' ἀμοικλύσας, ὑπὸ δ' ἡ ἄξοσι πῶτόν ἐπιπῆρ,  
 πρῶτους ἐξ ὀχέων, δίφροι δ' ἀνικυμβαλίσσον.  
 ἀντηρὸν δ' ἀνὰ τάφρον ὑπέρβορον ὠκίει ἱπποὶ.  
 ἀμβροτοὶ, οὗς πηλῇ θεοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα,  
 πρόσω γέμμοι, ἐπὶ δ' ἡ ἔκτοε κέκλετο θυμός.  
 ἴσο γὰρ βαλεῖν, τὸν δ' ἡ ἔκφερον ὠκίει ἱπποὶ.

ὄμορ' ἄφαρ, πρυμνὸν ὃ βραχίονα διχρὸς ἀκωκή,  
 ἔφυ' ἀπὸ μυῶν, ἀπὸ δ' ὄσειον ἄχρ' ἄραξι.  
 Δι' ὕπνισεν ὃ πεσὼν, κατὰ δ' σκοτ' ὅσ' ἐκάλυψεν.  
 ὣς τὼ μὲν θοιόισι κασιγνήτοισι δαμέντε.  
 βῆλιν ἔς ἑρέβος, ἀρπησδὸν ὅτ' ἰδιῶι ἰταῖροι  
 ὕπτε· ἀλυσταί· ἀμισωδάρη, ὃς ῥα χίμαιραν  
 ἔρ' ἐφ' αἰμαμακίτῳ, πολέσι· κακὸν ἀνθρώποισιν.  
 κί' ας ὃ κλεόβελον οἰλιάδης ἱπορούς,  
 ἴδον' ἐλὶ βλαφθέντα κατὰ κλόνον, ἀλλὰ οἱ ἄνθι  
 λῦσε μένος πλήξας· ξίφη αὐχένα κοπήεντι.  
 πᾶρ δ' ὑπερμάσθη ξίφος αἵματι, τὸν δ' κατ' ὄσσε  
 ἔλλαβε πορφυρέος θάνατ' ὅτ' καὶ μοῖρα κραταῖη.  
 Πηνέλεως δ' ἐλὶ λυκῶν τε σωείδραμον, ἔρχισι μὲν γάρ  
 ἔμβροτον ἀλλήλων, μέλιον δ' ἠκόντισαν ἀμφω.  
 τῶν δ' αὐτὶς ξιφίεσσι σωείδραμον ἔνθα λυκῶν μὲν  
 ἰπποκόμος κόρυθος φάλαρ' ἤλασεν· ἀμφὶ δ' καυλόν,  
 φολσχατον' ἐρ' ῥέει, ὃ δ' ὑπ' οὐκτ' αὐχένα θύγῃ.  
 πηνέλεως, πᾶρ δ' ἔσσε δ' οὐ ξίφος, ἔχε δ' οἶον  
 δέσμα, παρήρθη δ' ἐκάρη, ὑπέλυσε δ' ἐγυῖα.  
 μηρόν· δ' ἀκέμασσε κίς ποσὶ καρπαλίμοισι,  
 νύξ' ἰπκῶν ἐπιβησόμενον κατὰ δεξιὸν ὤμον.  
 ἔπει δ' ἐξ ὀχέων, κατὰ δ' ὀφθαλμῶν κίχυντ' ἀχλὺς.  
 ἰδομνέου δ' ἐρύμασσε κατὰ σόμα νηλεῖ χαλκῷ  
 νύξ', τὸ δ' ἀντιφὺν δόρυ χαλκίον ἐξεπύρηνσε.  
 νέρθαν ὑπ' ἐγκεφάλαιον, κίεσσε δ' ἄρ' ὄσεια λούκῃ.  
 ἔκ δ' ἐτίνεχθεν ὀδόντος, ἐνέπλησεν δ' οἱ ἀμφω  
 αἵματ' ὀφθαλμοί, τοδ' ἀνὰ σόμα καὶ κατὰ ῥίνας  
 πρῆσε χρωδὸν, θανάτῳ δ' ἐμείλιν νέφος ἀμφικάλυψεν.  
 οὗτοι ἄρ' ἠγλόμενος δ' ὠκῶν ἔλθον ἀνδρᾶ ἱππαστος,  
 ὃς δ' ἐλὶ λυκῶν ἀρνησιν ἰπείχραον ἢ ἐρίφοισι,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔκ νηῶν δ' ἔλασαν καταδ' ἰσθίον αὐθιγὰ μῆνορ πῦρ.  
 ἡμιδαῖς δ' ἄρα νῆες λίπντ' αὐτόθι, τοί δ' ἰφρόβηθον  
 τῶες θειασισίῳ δμάδ' ὠδωναοί δ' ἐπὶ χῶλῳ  
 νῆας ἀνὰ γλαφυράς, ὀμαδος δ' ἀλίσσος ἐτύχθη.  
 ὡς δ' ὅτ' ἀφ' ὑψηλῆς κερυφῆς ὄρεος μεγάλοι  
 κινύσθαι πυκινὴν ἐφίλῳ στροπην γέρεα ἴδους,  
 ἔκ τ' ἔρωον πᾶσαι σκαπτικαὶ καὶ πρόωνες ἄκροι  
 καὶ νάπαι, οὐρανὸθεν δ' ἄρ' ὑπερφύαγ' ὁσπτος αὐθιγῶν.  
 ὡς δ' ὠναοὶ νηῶν μῆν' ἀπασσά μῆμοι δ' ἦϊον πῦρ  
 τυτθὸν ἀνέπνευσαν πελὶ μιν δ' οὐ γίνετ' ἔρωθι.  
 οὐ γάρ πω τι τῶες ἀρηϊφίλων ὑπ' ἀχαιῶν  
 προβοπάδῳ φρεσὶν ὀμιλαινάων ἀπὸ νηῶν  
 ἀλλ' ἔγ' ἄρ' αὐθίσαντο, νηῶν δ' ὑπὸ πτεροῖσι δαΐα κη.  
 ἔνθα δ' ἀνὴρ ἔλεν ὄνδρα, κεδιδείσσης ὕσμίνης  
 ἡγεμόνων, πρῶτ' ὅτ' ὃ μῆμοι τιν' ἀλκιμος ἦος  
 αὐτίκ' ἄρα σρεφθὲντ' ἀρηϊλύνε βαλὲ μῆρον  
 ἔρχετ' ὀξυόεντι δ' ἔχ' πρὸ ὃ χαλκὸν ἔλασσε.  
 ἤξει δ' ὀσείον ἔγχος, ὃ δ' ἐπ' ἡγνῆς ἐπὶ γαίῃ  
 κάππεσ', ἀτὰρ μῆμίλαος ἀρήϊος δῦτα θόωντα  
 εἰργον γυμνωθέντα παρ' ἀσπίδα· λῦσε δ' ὃ γυῖα.  
 φυλείδης δ' ἀμφικλον ἰφορμηθέντα δοκὺς ἔσσε.  
 ἔφθη ὀρεξάμεντ' πρυμνὸν σκέλες ἔνθα πάχιος  
 μυνῶν ἀνθρόπων πίλινται, περὶ δ' ἔγχος αἰχμῇ  
 νύρρα δ' ἐκχάιδε, τὸν δ' σκοτ' ὅσ' ἐκάλυψε.  
 νεσπρίδαι δ' ὃ μῆν, οὐτάσ' ἀτύμνιον ὀξείδ' ἐρῖ  
 αὐτίλοχος, λαπάρης δ' διήλασε χάλκεον ἔγχος,  
 ἔπει δ' ὃ προπάραιθε· μάεις δ' αὐτοχιδὸν ἐρῖ  
 ἀντιλόχῳ ἰπὸρυσσιν ἐσσιγνήτοιο χολωθείς.  
 εἰς πρὸθεν ἰέκυος, τῷ δ' ἀντίθεος βρασυμήδης,  
 ἔφθη ὀρεξάμεντ' πρὶν εὐτάσσειν δ' ἀφωμάρευν

τοῦ δ' ὑπὲρ παρὰ τίς τε κιδὼν ἀνθρώποις δότι  
κινῆσαι αἰκῶν, οἳ δ' ἄλκιμον ἦτορ ἔχοντο  
ὅσῳ πᾶς πέτεται, καὶ ἀμύνει οἷσι τέκεσσι.

τῷρ τότε μυρμιδόνες κραδίῳ καὶ θυμὸν ἔχοντο.  
ἐκ νηῶν ἔχοντο, βοὴ δ' ἄσβεστος ὁρώρε.

πάροκλος δ' ἑτάροισιν ἐκέλευε μακρὸν αὖτις.

Μυρμιδόνες ἑταροὶ πηληϊάδῳ ἀχιλῆϊ

ἄνδρες ἐς φίλοι, μνησάμενοι θεοῦ εἰδος ἀλκῆς.

ὥς ἄρ' πηλεΐδῳ τιμῆσομεν ὅς μέγ' ἄριστος

ἄργείων παρὰ νηυσὶ καὶ ἀρχιμέχοι θεράποντο.

γῶ δ' ἐκ ἀφείδης εὐρυκρείων ἀγαμέμνων.

ἦν ἄτῳ, ὅτ' ἄριστον ἀχαιῶν οὐδ' ἐν ἔτισιν.

Ως ἐπὶ νῆας ὤρωι μένος καὶ θυμὸν ἔκαστος.

ἔρ δ' ἔπεισον φάσμασιν ἀολλείς, ἀμφὶ δ' ἐνὶ

σμερδαλέῳ κενάβησαν αὐσάντων ὑπ' ἀχαιῶν.

φῶς δ' ὥς εἶδοιτο μνηστῆρ' ἄλκιμον ἦόν,

ὧν καὶ θεράποντα σὺν ἔντεσι μαρμαίροντας.

πᾶσιν ὀρίνθη θυμὸς, ἐκίνηθεν δ' ἐφάλαγγες.

ἔλπομενοι παρὰ ναῦφιν ποδῶκεα πηλεΐωτα

μνωθμόν μιν ἀπορρίψαι, φιλότιτα δ' ἐλέεα.

πᾶσιν δ' ἐκαστος ὅπῃ φύγοι αὐτὸν ὀλίβρον.

πάροκλος δ' ἐπ' αὖτ' ἀκόντισε δ' ἐρὶ φασγῶ

ἄντην κατὰ μέσσοις ὅτι πλεῖστοι κλονέοντο.

νῆα παρὰ πρύμνῃ μεγαθύμῃ πρωτισίλῃ.

καὶ βάλε πυραΐχμῳ ὅς παύονας ἵπποκαρυβάς,

ἦγαγερ ἐξ ἀμυδῶν, ἀπ' ἀξίῃς εὐρὺν ῥέοντα.

τὸν βάλε δειδὸν ὦμον, ὃδ' ὑπὸ πῆλ' ἐν κνήμῃσι

κάππεσεν οἰμώξας, ἑταροὶ δ' ἐμὴν ἀμφεφύβησαν

παίονες, ἐν γὰρ πάροκλος φόβον ἤκεν ἀπασιν.

ἦγεμόνα κτείνας, ὅς ἀεικέλιος καὶ μάχεσθαι.

# ΙΛΙΔΟΣ.

Ξούτ' ἀνὰ δαδ' ἀνῶν, πελασγικέ, τηλόθι ναίειν  
 δαδ' ὧν ἑς μέδων δ' ὕψος ἔμεινεν, ἀμφὶ δ' ὅσσοι  
 σοὶ ναίεισ' ὑποφῆται ἀνιπτόποδες χαμαὶ εὐναι-  
 ῆ μὴ δ' ἡπότ' ἐμὸν ἔπος ἔκλυες ἐν ξαμῖνοις.  
 τίμηθ' ὧν μὴ ἐμὲ, μέγα δ' ἴψαο λαὸν ἄχαυον.  
 ἦ δ' ἔτι καὶ νῦν μοι τόδ' ἐπικρύπτορ ἐκ λείωρ.  
 αὐτὸς μὴ γὰρ ἐγὼ μὲν ἴω κ' ἰνὸν ἐν ἄλῳ,  
 ἀλλ' ἐτέρωρ πέμπω πόλιν μετὰ μυρμιδόνεσσιν  
 μάργαδαι, τοῖς κῦδος ἅμα πρός τε ἑρῶσιν ἔδω.  
 θαρσυνωρ δ' οἱ ἦτορ ἐνὶ φρεσίν, ὅφρα καὶ ἔκτορ  
 εἰσέτω, ἢ ῥα καὶ οἷος ἐπίσπεται πολέμιον  
 ἡμέτερον θ' ἐν ἑσπέρῳ, ὅτε χεῖρες ἀπῆλοι  
 μαίνορ θ' ὅπποτ' ἐγὼ περ ἴω μετὰ μῶλ' ἄρηθ'.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ἀπὸ ναυφί μάχῃς ἐνοπήρ τε δῖηται  
 ἀσκηθῆς μοι ἔπειτα θεὸς ἐπὶ νῆας ἵκησθαι.  
 τόδ' ἔχιστ' ἐξυρπάσσει καὶ ἀρχιμάχοις ἐτάροισιν.  
 ὣς ἔφατ' ἐν χόμῳ. τῷ δ' ἐκλυε μήτις ἔδω.  
 τοῖ δ' ἐτέρωρ μὴ ἐδῶκε πατήρ, ἐτέρωρ δ' ἀνένδυσεν  
 νηῶν μέν οἱ ἀπώλιναι πόλεμόν τε μάχῃς τε  
 δῶκε, σόον δ' ἀνένδυσεν μάχης ἐξαπονείδαι.  
 ἦτοί οἱ μὴ σπείρειν τε καὶ εὐξάμεθ' οἱ πατρί.  
 ἄψ' κλισίῳ ἐσθῆλθε δ' ἐπας δ' ἀπὸ θηκῆς ἐνὶ χηλῶ.  
 οἱ δ' ἐπὶ πύροις ἑλθὼν κλισίης, ἔτι δ' ἔθελ' ἐθυμῶ  
 ἔσσι δ' ἐν πύροις καὶ ἀχαιῶν φύλοπιρ ἀνὴν.  
 οἱ δ' ἅμα παρόκλῳ μεγαλήτορ θωρηχθέντες  
 ἔσχεον, ὅφρ' ἐν πρῶσιν μέγα φρονέοντες ὄρεσσαν.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ σφῆκεσιν ἐοικότες ἐξέχοντο  
 ἑνοδίοις, οὓς πῶλιν ἐειδμαίνωσιν ἐθόντες  
 αὐτὸν κερτομέοντες ὁ δ' ἔπειτα οἰκί' ἔχοντες  
 κηπίεσσι, ξυρὸν δ' ἐκκὸν πολέων τιθέισιν.



ρχίτλη πηλῖος ἦε χόλω ἄρα σ' ἔριφε μῆτηρ  
 νηλῖς, ὃς παρὰ νηυσὶν ἔχης ἀΐκοντας ἰταίρας·  
 οἷα δ' ἐπερὶ σὺν νηυσὶ νεώμεθα ποντοπόροισιν  
 ἔκτισ, ἐπεὶ ῥά τοι ὦδε κακὸς χόλος ἔμπεσε θυμῷ·  
 ταῦτά μ' ἀγρόμοιροι, θά μ' ἐβάζετε, νῦν δ' ἐπὶ φαντα  
 φυλόπιδ' ὅ μ' ἐργον ἴης εἴη ἰρήν γ' ἐράαδι·  
 ἔνθα τις ἄλκιμον ἦτορ ἔχων, φώεσι μαχέσθω.

Ως ἐπὼν, ὥρων μῖνος καὶ θυμὸν ἰκάσθω.

μάμορ δ' εἰχες ἄρθω ἐπὶ βασιλῆος ἄκυσσάν·  
 ὡς δ' ὅτε τοῖσιν ἀνὴρ ἀράρη πυκινόισι λίθοις  
 δώματ' ὅ γ' ἔκλειτο βίης ἀνέμων ἀλείνων,  
 ὡς ἄρα ῥον κόρυθες τε καὶ ἀσπίδες ὀμφαλίσσασθαι,  
 ἑσπῆς ἄρ' ἀσπίδ' ἔρπιδε, κόρυς κόρυς, ἀνέρας δ' ἀνὴρ,  
 ψαῦρον δ' ἰππόχρημοι κόρυθες λαμπροῖσι φάλασι,  
 νινόντων, ὡς πυκινὸν ἔφεισαν ἀλλήλοισι,  
 πάλντων δ' ἡρώων προπαυροῖθε δὴν ὠνέρι θωρήσωντο.  
 παρφοκλός τε καὶ αὐτομέδωρ ἵνα θυμὸν ἔχοντο,  
 ἡρώων μυρμιδόνων πολεμιστῶν, αὐτὰρ ἀχιλλεύς,  
 βῆ δ' ἱμῶς ἐκ κλισίῳ, χηλὸν δ' ἀπὸ πῶμ' ὠνέσθω  
 καλῆς δαυδελίης· τῆρ δ' οἱ θέτις ἀργυρόπεζα  
 θῆκε ἐπὶ νηὸς ἄγκυραι, ἐμπλήσασθαι χιτῶνων  
 χλαυάων τ' ἀνέμοσκιπέων, οὐλῶν τε ταπήτων·  
 ἔνθα δ' οἱ δ' ἐπας ἔσχε τιτυρμένον, οὐδ' οἱ τις ἄλλος  
 οὐτ' ὠνέων πίνισκον ἀπ' αὐτῶν αἰθοπα οἶνον,  
 οὐτ' ἐπὶ σπένδισκε θεῶν, ὅτε μὴ δ' οἱ παρὶ  
 τό ῥα τότ' ἐκ χηλῶν λαβῶν ἐκωθῆρε θεῖον  
 πρῶτον, ἔπειτα δ' ἐνὶ φ' ὕδατ' ὅ καλῆσι ῥοῆσι,  
 ἐνὶ φ' αὖτ' αὐτὸς χιτῶνας, ἀφύατος δ' αἰθοπα οἶνον  
 ἔνθα χιτ' ἔπασσε σὰς μίσθω ἔρκεϊ, λιγυρὸν δ' οἶνον,  
 οὐρανὸν ἔκλειτο δ' οἱ δ' οὐ λάρθαι τερπικέραυνον.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

τῆς μὲν ἱκὸς σιχρὸς ἦρχε μινέειος ἀνδρῶν ἄρῃς·  
 ἦδ' ἀπὸ τοῦ διπνέος ποταμοῦ,  
 ἐν τῇ πελῆος θυγάτηρ καλὴ πολυδῶρη·  
 ἀπὸ τοῦ ἀκάμαντι γυνὴ θειὰ δύνηθη·  
 αὐτὰρ ἐπὶ κλησὶν βῶρε περὶ ἑλίου·  
 οὗτος δ' ἀναφανδὸν ὅππῃ παρῶν, ἀπερίσπαστος·  
 τῆς δ' ἐτέρης, ἐπὶ δ' ἄρ' ἡϊός ἦγε μόνον·  
 παρθένιος, ἐν ἑπικτὲ χορῶ καλὴ πολυμήλη·  
 φύλακας θυγάτηρ, τῇ κρατὺς ἀργεφόντης·  
 ἡράσας· ὁφθαλμοῖσιν ἰδὼν μετὰ μιν παρμένεσσι  
 ἐν χορῶ ἀρτίμιδος χρυσηλακάτου κλαδίφνης,  
 αὐτίκα δ' εἰς ὑπερῶ ἀναβὰς, παρλίξας το λάβρην·  
 ἱρμείας ἀκάκητα πόρον τῷ δὲ ἀγλαὸν ἦδ' ὄν  
 ἐπὶ δῶρον, περὶ μὲν θέειν τὰ χύν, ἡδ' ἐμαχῆν·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ τὸν γε μέγας ὄϊος ἐλθέμενος  
 ἐξάγαγε προφῶς δὲ καὶ ἡλίας ἰδὼν αὐγὰς,  
 πλὴν μὲν ἐχέκλῃος κρατερὸν μένος ἀκτοῖρ ἰδὼς·  
 ἦτολ' ὅς περ δῶματ', ὅς ποτε μυρία ἔδνα  
 τὸν δ' ὁ γέρον φύλας ἐπὶ ἔβριφον, ἡδ' ἀτίταλλαν·  
 ἀμφαγαπαῖο μῆμος ὥς ἐσθ' ἔδον ἦδ' ἔοντα·  
 τῆς δ' ῥίτης, πέισαν εἶρος ἀρήϊος ἦγε μόνον,  
 μαμαλίδης, οὗτος πᾶσι μετέπρεπε μύρμιδόνεσσιν  
 ἐγχεῖ μάνασθαι μετὰ πηλείδων ἐπαῖρον·  
 τῆς δ' τετάρτης ἦρχε γέρον ἱππικώτα φοῖνιξ·  
 πέμπτης δ' ὀλκιμίδων, λαίρκεος ἦδ' ἀμύμων·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ πόντας ἄμ' ἦγε μόνον ἀχιλλεύς  
 εἴσεν ἐπὶ κρίνας, κρατερὸν δ' ὅς μιν ἔτελλαν·  
 Μυρμιδόνες, μή τις μοι ἀπελάων λειλαθέω,  
 ὅς μιν νηυσὶ θοῇσιν ἀπὸ λῆγες ῥῶσιν,  
 πάνθ' ὑπὸ μιν ἰθὺς, παρ' ἡμ' ἦ παρὰ νῆας·

πηλιόδ' αὖ μελίω, τῶν πατρὶ φίλῳ πόρι χείρων  
 πηλίς ἐκ κρυφῆς φόνον ἔμμεναι ἠρώεσιν·  
 ἵππυς δ' αὖτο μέδοντα θοῶς βυγνύμεν' ἄνωγ·  
 τὸν μὲτ' ἀχιλλῆα ρήξ' ἔννορα τῷ μάλισσ'·  
 πισόταρς δ' εἰ δ' ἔσκε μάχῃ ἐνὶ μεῖναι δμοκλήρ·  
 τοῖ δ' ἐκ αὖτο μέδων ὕπαγ' βυγὸν ὠκίεας ἵππυς·  
 ξωνθον, κ' βαλίον, τῶ ἅμα πνοιῇσι πετέδω·  
 τοῖς ἔτεκε βιφύρῳ δ' ἑμ' ἄρπυι' αὖτο δ' ὀργη·  
 βοσχεμένη λειμῶνι παρὰ ῥόον ὠκεανοῖο·  
 ἐν δ' παρηορίῃσιν ἀμύμονα πῆδ' ἄθ' ἴει·  
 τὸν ῥά ποτ' ἠετίωνος ἰλὼν πόλιν, ὕλαγ' ἀχιλλεύς·  
 οὗ καὶ θνητὸς ἰὼν, ἐπεθ' ἵπποις ἀθανάτοισι·  
 μυρμιδόνας δ' ἄρ' ἐπιχόμμεθ', θώρηξον ἀχιλλεύς,  
 πῶντας ἀνὰ κλισίας σὺν τεύχεσιν, οἱ δ' ἰλὺσι ὥς  
 ὠμοφάγοι τοῖσι τε περὶ φρένας ἄσπετος ἀλκή,  
 οἷ τ' ἔλαφον κόραον μέγαρ οὐρεσι δ' ἠδ' ὠκύντο  
 δ' ὀπῆυσιν· πᾶσιν δ' παρήϊον αἶμα πφοινόν  
 καί τ' ἀγλαῆδ' ὀνίᾳσιν ἀπὸ κρήνης μελανύφου,  
 λαλόντο δ' ὀγλώσῃσιν ἀραιῇσι μέλαινα ὕδαρ,  
 ἀκρον ἐρυγόμενοι φόνον αἵματ'· ἂν δ' ἐτε θυμὸς  
 σήθεσιν ἄρομός ἐστι· περιστείνεται δ' ἐτε γάστρ·  
 τοῖοι μυρμιδόνων ἡγήτορες ἠδ' ἐμέδοντο δ'·  
 ἀμφ' ἀγαθὸν θεοῖσιν ὀνέσσοντα παδ' ὠκεὸς αἰακίδεο  
 ῥῶον τ' ἐν δ' ἄρα τοῖσιν ἀρήϊος ἱστὰ ἀχιλλεύς·  
 ὀφύων ἵππυς τε, καὶ δ' ὀνέρας ἀσπίδιώτας·  
 πεντήκοντ' ἦσαν νῆες θακί' ἦσαν ἀχιλλεύς  
 ἐσφρίω ἡγάτο δ' ἵφίλος, ἐν δ' ἐκ' ἑκάσῃ,  
 πεντήκοντ' ἔσαν ἀνδρῶν ὧς κληῖσιν ἱταῖροι·  
 πέντε δ' ἄρ' ἡγεμόνας παδ' ὀνέσσον, τοῖς ἐπιποῖθε  
 σημάϊσαν, ὅπως δ' ἔμελλε κρατῶν ὕνασθαι·

πέθεο δ' εἰς θλίψιν μὲν τέλει ἐν φρεσὶ θέω .  
 ὥς ἂν μοι πμὴν μιγάλλω καὶ κῦδος ἄρῃαι  
 ἥρως πάντων δαυαῶν , ἀτὰρ οἱ περικαλλέα χεῦρ' ἔω  
 ἄψ' ἀπονάσσωσιν , ποτὶ δ' ἀγλαὰ δῶρα πόρρωσιν  
 ἐκ νηῶν ἱλάσσαι ἵεναι πάλιν . ἐ δ' ἐκεν ἄνυσ  
 δῶν κῦδος ἀρίστω ἐρίγδυστος πόσις ἦρως ,  
 μὴ σύ γ' ἀνευθεν ἱμοῖο λιλαίεσθαι πολέμιζον  
 ἔωσι φιλοπτόλεμοισιν , ἀπμότερον δ' ἐμε θέσας .  
 μὴ δ' ἐπαγαλλόμενος πολέμῳ καὶ δ' ἡϊοτῆτι  
 ἔωας ἐναυρόμενος ποτὶ ἴλιον ἤγαμονεύην ,  
 μὴ τις ἀπ' ἐλύμποιο θείων ἀΐγανετάρων  
 ἐμβήῃ . μάλα θύς γε φίλῃ ἐκάργος ἀπόλλων .  
 ἀλλὰ πάλιν ἔωπαῖσθαι ἐπὴν φάος ἐν νήεσσι  
 θείης , θύς δ' ἐ δ' ἐὰν πιδίον καταδ' νεάαδαι .  
 αἱ γάρ (ῥ' ἔτι περὶ , καὶ ἀθηναίη καὶ ἀπολλων ,  
 μὴ τί τις δῖω ἔωων θάνατον φύγοι ὅσσοι ἔασι ,  
 μὴ τί τις ἀργαίων νῶν δ' ἐκδύμῳ ὀλιγοῖον ,  
 ὅφρ' οἶοι βοίης ἰβὰ κρήδεμνα λυοίμην .

Ὡς οἱ μὲν θοιαῦται πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον .  
 αἴας δ' ἐκέτ' ἐμίμνε βιάζω γὰρ βελίεσι ,  
 δάμνα μῖν ἡνός τε νόος , καὶ ἔωδ' ἀγανοὶ  
 βόλλοντες , δεινὴ δ' ἐπὶ κροτάφοισι φαεινὴ  
 πύληξ βαλομένη καναχὴν ἔχει . βάλλω δ' αὖτις  
 καπφάλα ρ' οὐποίνῃ . ὅ δ' ἀεισερόν ὦμον ἐκαμνοῖ  
 ἐμπεδον αἶν' ἔχων σάκκος αἴολον , ἐ δ' ἐ δύνωνται ,  
 ἀμφ' αὖθρ' πελεμίζου , ἐρείδοντο δὲ βελίεσιν .  
 αὖτις δ' ἀργαλὴν ἔχειτ' ἀδμαθι . καὶ δ' ἐ οἱ ἰδρωτός ,  
 πώνεσθαι ἐκ μελέων πολὺς ἔρρεν , ἐ δ' ἐπὶ ἔχου  
 ἀμπνεῦσαι , πώνεσθαι ὅ κακὸν κακῶ ἰσήμετο ,  
 ἔσσωτε νῦν μοι μῦσαι ὀλύμπια δώματ' ἐχέει .

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅπποτε δ' ἡ τὸν ὁμοῖον ἀνὴρ ἐθέλησιν ἀμείρσαι,  
 καὶ γέρας ἅψ' ἀφελείδαι ὅτε κρατὶ προβιβήκει,  
 αἰνὸν ἄχος τό μοι ἐστίν, ὅς πωθον ἄλγχα θυμῷ.  
 πρὸς ῥωπὴν ἄρα μοι γέρας ἐξέλθω ὅπως ἄχαῶν,  
 θυρίδ' ἐμῷ κτιάτιστα, πόλιν δὲ τέχια πέριστε  
 τῶν ἅψ' ἐκ χερῶν ἔλθο κρείων ἀγαμέμνων  
 ἀφείδης, ὥς τίπιν' ἀτίμητον μετανάσσω.  
 ἀλλὰ τὰ μὲν προτετύχθαι ἐάθωμιν, εἰ δ' ἄρα πρὶν  
 ἀσπρῆς κεχολῶσθαι ἐνὶ φρεσὶν, ἥρι' ἔφλω γε  
 εἴ πρὶν μινιθμὸν καταπαυσέμεν, ἀλλ' ὁπότεν δ' ἡ  
 νῆας ἐμὰς ἀφίκηται αὐτή τε, πόλιμός τε.  
 τύνη δ' ὥμοϊν μὲν ἐμὰ κλυτὰ τεύχεα δῶθι,  
 ἄρχη δ' ἡ μυρμιδόνεσσι φίλοισι πόλεμοισι μάχιδαι.  
 εἰ δ' ἡ κυκλίων βῶων νέφος ἀμφιβέβηκε.  
 νηυσὶν ἐπικρατίως, εἰ δ' ἐρῆγ' ἔμινι θαλάσσης  
 κυκλιάται, χόρης δ' ὀλίγῃ ἐπ' μοῖραν ἔχοντός  
 ἀργεῖοι, βῶων δ' ὅπως πόλις ὅς πᾶσα βέβηκε  
 θάρσυνος, εἰ γὰρ ἐμῆς κόρυθος λεύανται μέτωπον  
 ἐγγυθὶ λαμπρομένης, τάχα κεν φεύγοντός ἐναύλης  
 πλήσσειν νεκρῶν, εἰ μοι κρείων ἀγαμέμνων  
 ὕπια ἐδίδει. νῦν δ' ἐσραζὲν ἀμφιμάχονται.  
 εἰ γὰρ τυδείδῃ διομήδεος ἐν παλάμῃσι,  
 μαίνεται ἐγχείη δαναῶν ἀπὸ λαιγρὸν ἀμύναι,  
 εἰ δ' ἐπὶ ἀφείδῃ ὁπὸς ἐκλυον αὐδῆσαντ' ὦ.  
 ἐχθρῆς ἐκ κεφαλῆς. ἀλλ' ἔκπερος ἀνδροφόνος  
 βῶσι κελύοντος περιάγνυται. οἳ δ' ἀλαλητῶ  
 πᾶν πιδίον κατέχουσι, μάχη νικῶντός ἀχαιοὺς.  
 ἀλλὰ καὶ ὡς πάρος τε, νοῶν ἀπὸ, λαιγρὸν ἀμύνων  
 ἐμπεσ' ἐπικρατίως; μὴ δ' ἡ πυρὸς αἰθομένηοιο  
 νῆας ἐνὶ πρὸς ὄσσοι, φίλῃ δ' ἀπὸ νόσσοι ἔλονται.



δι μὲν γὰρ δὴ πάντες ὄθι πάρος ἦσαν ἄεστοι·  
 ἐν νηυσὶν κίεσσι, βίβλημένοι βτάμμοι τε·  
 βίβληται μὲν ὁ τυδείδης κρατερὸς διομήδης·  
 οὔτασσε δ' ὀδυσσεὺς λεικλυθεὶς, ἡδ' ἀγαμέμνων·  
 βίβληται δ' καὶ οὐρύπυλος κατὰ μηρὸν οἰσῶ·  
 ζυὺς μὲν τ' ἱηροὶ πολυφάρμακoi ἀμριπίνοντα·  
 ἔλκε' ἀκρόμμοι, σὺ δ' ἀμύχανος ἔπλω ἀχιλλεύ·  
 μὴ ἐμὲ λῶν οὗτός γε λαῶβοι χόλος ὃν σὺ φυλάσσῃς  
 ἀναρέτη, τίς σὺ ἄλλος ὀνήσιντα ὀφίγονός περ;  
 αἴ κε μὴ ἀργείοισιν ἀέκεια λαιγρὸν ἀμύνῃς  
 νηλεὺς, οὐκ ἄρα θίγῃ πατήρ ἦν ἱππότεα πηλεὺς·  
 οὐδὲ θέπῃς μήτηρ, γλαυκὴ δ' ἐσε τίκτε θάλασσα·  
 πέφαται ἡλίβατοι, ὅτι θινοὸς ἐστὶν ἀπηνής·  
 εἰδὲ ἴνα φρεσὶ σῆσι θεοπροπίνην ἀλείψῃς·  
 καί πινάρι πᾶρ ἱνὸς ἐπέφραδε πότνια μήτηρ·  
 ἀλλ' ἐμὲ περ πρόβῃς ὥχ' ἅμα δ' ἄλλον λαὸν ὄπασσας  
 κυρμιδόναν, ἣν περ ἡ φέως δαναοῖσι γένωμαι·  
 δὸς δ' ἐμοὶ ὥμοισιν τὰ σά τεύχεα θωρηχθῆναι·  
 αἴ κ' ἐμὲ θιῖσκοντόν ποτόχοντα πολέμοιο  
 φάος, ἀνὰ πνεύσας δ' ἀφύιοι, οἷς ἀχαιῶν  
 τηρόμμοι, ὀλίγη δ' ἐτ' ἀνὰ πνεύσας πολέμοιο·  
 φέϊα δ' ἐκ' ἀκμήτης, κικμηότας ἀνδρας αὐτῇ,  
 ὥσασιν μὲν ποτὶ ἄστυ νεῶν ἄπο καὶ κλισιάων·  
 Ως φάτο λισσόμενος μέγα νήπιος, ἦ γὰρ ἐμελλεν  
 οἰᾶσθαι θάνατόν τε κακόν, καὶ κῆρα λιτέσθαι·  
 τὸν δ' ἐμὲ γ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς·  
 Ω μοι διογενὲς παρόχλεις οἷον ἐπὶ πόδας;  
 οὔτε θεοπροπίης ἐμπαύσομαι ἦν πινά οἶδ' εἶ·  
 οὔτε τι μοι πᾶρ ἱνὸς ἐπέφραδε πότνια μήτηρ·  
 ἀλλὰ τόδ' αἶνδ' ἄρ' ἔστι κραδίη καὶ θυμὸν ἱκάνει·

ΙΔΙΑΔΟΣ. Π. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Εἴπατο κλον' ἐπιφρον ἀρήϊόν Εκκροτος ὀχμύ.

Σοὶ μὲν, περὶ νηὸς ἱδαιέλιμοιο  
μάχοντο.

πάροκλος δ' ἀχιλλῆϊ περίστατο  
ποιμένι λαῶν.

δωκρυα θρμά χείων, ὥς τε κρύνη

μιλάνουσθ'.

ἥτε κατ' αὐγίλιπτος πέτρης δνοφρὸν χεῖρ ὕδαρ  
τὸν δ' εἰδὼν ὠκταρε ποδάρκης δῖος ἀχιλλεύς,  
καί μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα.

τί πῃ δειδάκρυσσαι παρόκλης ἥ τε καὶ κούρη  
νηπίη, ἣδ' ἅμα μὲρ θέεσ' ἀνιλέσθαι ἀνώγει.  
εἰάνῃ ἀπλομένη, καί τ' ἐστυμένῳ κατερύκει.  
δάκρυόσσω δ' εἰ μιν ποτιδέρκεται, ὅφρ' ἀνιέλῃται.  
τῇ ἴκελτος πάροκλε τέρεν κατὰ δάκρυον ἱΐθης.  
ἢ ἐπὶ μυρμιδόνεσσι πιφάυσκεαι, ἢ ἐμοὶ αὖτοδ'.  
ἢ ἐπὶ ἀγγιλίῳ φθίης ἔξ' ἐκλυθεοῖς.  
ἴωαν μὲν ἐπὶ φασὶ μῆμοί ποιν' ἄκτορ' ἔχον.  
ἴω δ' αὐακίδης πηλὸς μετὰ μυρμιδόνεσσι.  
τῶν κε μολλ' ἀμφοτέρωρ' ἀσπασχέμεθα τεθνηώτων.  
ἢ ἐσὺ γ' ἀργείων ὀλοφύρεαι ὥς ὀλέκονται  
νηυσὶν ὅς γλαφυρῆσιν ὑπὲρ βασίης ἐνέκα σφῆς.  
ἔξαιδέ με κινυθένόω, ἵνα ἰδὼ μὲν ἄμφω.  
τὸν δ' βαρυσεν ὤχων προσέφη παρόκλης ἱππεύ.  
ὦ ἀχιλλεῦ πηλὸς ἢ ἐμέγα φέρτατ' ἀχαιῶν.  
μὴ νεμέει, τοῖον γὰρ ὄχρος βιβίηκεν ἀχαιούς.

εἰ μὲν γὰρ

173  
ἐν πυρὶ κηλῆσ' ἔχουσιν ἔκτορ' ὀφυνάωντες,  
τὸν δ' αἶας οὐτάσκει διδελγμένον ὀξείῃ χαλκῷ.  
θῶδ' ἔπειτα ὃ προπαύροιθε νηῶν, αὐτοχέδον οὐτά.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ρ. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

π Ἀφρόκλος δειθέειπ, ἀχιλλεύς τὴν ἑαυτοῦ πανό-  
πλιον ἐπὶ βέπει ἀναλαβεῖν, καὶ τοῖς μυρμιδον-  
εσσιν ἐξάγειν ὃ ἐν πόλεμον, οὗτοι δ' ἐξελθόντες, ἔφε-  
σαν τοῖς ῥῶας. πάροκλος δ' ἐσαρπηδόνει ἐν διὸς ἀναρῇ,  
τὸν παρήγορον ἵππον ἀχιλλεύς ἀνελόντα πῆδ' ἔει-  
πε δ' ἐπ' ἀφρόκλον ἔκτωρ ἀναρῇ πληγέντα πρότερον ὑπὸ  
δύφ' ὄρβη ἀπόλλωνος. ἀφελόμενος τῷ πανοπλίου αὐτοῦ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἄλλα μὲν ἔκ χειρὸς χαμῶδις πίσσω, ἄλλα δ' ἀπ' ὧμῶν  
 ἀνδρῶν μαρναμένων· ῥέειδ' αἵματι γαῖα μέλαινας  
 ἔκτορ ὃ πρὺμνηθον ἐπὶ λάβον, ὅχι μίθις.  
 ἀφλασον μετὰ χρυσὸν ἔχον· ῥωσὶν δ' ἐκέλευον  
 οἷσιν τε πῦρ· ἅμα δ' αὖτις ἀολλέες ὄρνυτ' αὐτῆρ,  
 νῦν ἡμῖν πάντων (ὧς) ἄξιον ἦμαρ ἔδωκε  
 γῆρας ἱλεῖν· αἰ δ' αὖτε θιῶν ἀέκητι μολεῦσαι.  
 ἡμῖν πύματα πολλὰ βίβαν κακότητι γερόντων,  
 ῥίμ' ἐθέλοντα μάχεσθαι ὡς πρὺμνησι νίκῃσιν,  
 αὐτόν τ' ἰσχανάσθην· ἐρητύοντό τε λαόν,  
 ἀλλ' ἐδὴ ῥα τότ' ἐβλαπῆον φρίνας δούροπα (ὧς)  
 ἡμετέρας, νῦν αὖτε ἰωπύρηναι καὶ ἀνώγει.

Ως ἔφαθ'· οἱ δ' ἄρα μᾶλλον ἐπ' ἀργείοισιν ὄρθαν,  
 αἴας δ' ἔκείτ' ἐμῖνι βιάσσο γὰρ βιλήεσιν,  
 ἀλλ' ἀν' χάσσο τυτθὸν οἷός μιν θάνατον ἰδῆναι  
 μνηστῶν ἐφ' ἐπὶ πόσῳ, λίπε δ' ἱκρία νηὸς εἴσθε  
 ἐνθ' ἄρ' ὄγ' ἐισήκη διεδοκημένῳ· ἔρχεσθ' αὖτε  
 ῥῶας ἀμυνεμένων· ὅς τις φέροι ἀκάματον πῦρ,  
 αὖτε ὃ σμυδνὸν βοόων δαίνοισι κέλευεν.

ὦ φίλοι ἦρωες δαίνοιο θεράποντες ἄρηθ'·  
 αὐέρις ἐστὶ φίλοι, μνήσθε ὃ θούεσθες ἀλκῆς·  
 ἡέπινος φαμὲν εἶν' ἀοσσητῆρας ὀπίσσω,  
 ἡέτι τέχος ἄρειον ὅκ' ἀνδράσι λαιγρὸν ἀμύνει,  
 ὅ μιν τις χερσὶν ἐσὶ πόλιν πύργοις ἀραρυῖαν  
 ἢ κ' ἀπαμυνάμεναι ἑτεράλκιε δῆμον ἔχοντο·  
 ἀλλ' ἐν γὰρ ῥῶαν πεδίῳ πύκα θωρηκτοῶν·  
 πόντοφ κεκλιμένοι, ἑκάς ἡμεθα περὶ δὸς αἴης,  
 ῥῶ' ἐν χρυσὸ φῶας ὅ μιν λιχίη πολέμοιο,  
 ὅ· καὶ μαμῶων ἐφ' ἑπ' ἔρχετ' ὀξυόωντι.  
 ὅς τις δ' ἐρῶν καίλας ὡς γῆρας ἀγοίτο·

σὺν πυρὶ

ἄρ' ὅσον ἄλλοι ἐπ' ἄλλοι ἀμείβεται, οἱ δὲ πέπονται  
 ὡς αἴας ὅ πολλὰ θοάων ἱκρία νηῶν  
 φοῖτα μακρὰ βιβάς. φωνὴ δ' ἐοικυῖα ἴκτανον.  
 αἰεὶ δ' ἐσφιδνὸν βοόων δακρυοῖσι κέλευε  
 νηυσὶ τε καὶ κλισίῃσιν ἀμυῖμην, ὅθι μ' ἔκτορ  
 μίμνον ἐνὶ τρώων ὁμάδῳ πύκα θορηκτοῦσαν.  
 ἀλλ' ὥς τ' ὀρνίθων πετεινῶν αἰετὸς αἰθῶν  
 ἔθνος ἱφορμᾶται ποταμὸν πέρα βοσπορμυῶν  
 χλωῶν, ἢ γέρωνων ἢ κύκνων δολιχοδείρων.  
 ὡς ἔκτορ ἴθυσεν εὖς κυανοπρώροιο,  
 αὐτίος αἴξας. ἦν δ' ἱὺς ὤρσεν ὀπίδει.  
 χαρὶ μάλα μεγάλῃ, ὥρσεν δ' ἑλὸν ἄμ' αὐτῷ.  
 αὐτὸς δ' ἐφραῖτα μάχῃ παρὰ νηυσὶν ἐτύχευ.  
 φάσκει ἀκμῆτας καὶ ἀτφρέας ἀλλήλοισιν  
 ἀντιῶν ἐν πολέμῳ ὡς ἐστυμένως ἐμάχοντο.  
 τοῖσι δ' ἐμαρναμένοισιν ὅθ' ἦν νόστος ἔχρη ἀχαιοὶ  
 οὐκ ἔφασσαν φεύξειναι ὑπ' ἐκ κεινῶν ἀλλ' ὀλίγησα.  
 τῶσιν δ' ἔλπετο θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι καὶ εὖ  
 νῆας ἐνιπρήσσειν κτενέειν θ' ἥρωας ἀχαιούς.  
 οἱ μὲν τὰ φρονέοντοβ' ἐφίστασαν ἀλλήλοισιν.  
 ἔκτορ δ' ἐπύμνης νεὸς ἔταρ παντοπόροιο,  
 καλῆς ὠκυπόρου, ἣ πρωτοσίλαον ἐνέκον  
 ἐσφοίλω, ὅθ' αὐτὸς ἀπύργα παρίδμεναι.  
 τοῦ περ δ' ἡ περὶ νηὸς ἀχαιοὶ τε τῶές τε  
 διήεν ἀλλήλους αὐτοχρῆστον. ὅθ' ἄρα τοῖς  
 τόξων αἰκὰς ἀμφὶς μένον ὅθ' ἐτ' ἀκούσαν  
 ἀλλ' οἷον ἐγγύθεν ἐσάμφοι ἵνα θυμὸν ἔχοντο.  
 ὅξισι δ' ἡ πελίκισι καὶ ἀξίνῃσι μάχοντο,  
 καὶ ξίφεσιν μεγάλῃσι, καὶ ἔγχυσιν ἀμφιγύοισι.  
 πολλὰ δ' ἐφασγανὰ καλὰ μέλινδ' ἐτα κούρυνται.



# ΙΛΙΑΔΟΣ

οἷες ὅσ' αὖ πρῶτα εἰρύατο, τοῖ δ' ἐπέχυστο.  
 ἀργεῖοι δ' ἐνὶ νηὶ ἐχώρησαν καὶ ἀνὰ γαλήνην.  
 τῶν προτέρων, αὖρ δ' ἔπαυσε κλισίῃσιν ἑμνῶν  
 ἄβροοι, ὅδ' ἐκείδ' αὖτε ἀνὰ στρατὸν ἶχε γοῖα αἰδώς  
 καὶ δέοιτο. ἀΐηχες γὰρ ὁμόκλειον ἀλλήλοισι.  
 νῆες δ' αὖτε μάλιστ' ἀμύνειοι οὐρ ἄχαιων.  
 λίαν ἐπὶ πύρρ' ἐκείων γένου' ἔμελλ' ἄνδρα ἕκαστον  
 εἰ φίλοι ἀνέροισι καὶ αἰδώς θείη ἐνὶ θυμῷ  
 ἄλλων ἀνθρώπων, ὅς δ' ἐμνήσασθαι ἕκαστος  
 παίδων ἡδ' ἀλόχων καὶ κτήσιν. ἡδ' ἐκείων.  
 ἢ μὴν ὅτιω ἴδωσι καὶ ὡς κατατεθνήκασιν.  
 τῶν ὕπρ' ἐνθάδ' ἰγὼ γυναιξὶ μοι ὕπαρ' ἰόντων.  
 ἰσαμύμαι κρατερῶς μὴ δ' ἱσπάρειν φόβονδε.  
 Ὡς ἐπὶ νηὶ μένος καὶ θυμὸν ἱκέσας  
 τοῖσι δ' ἀπ' ὀφθαλμῶν νέφος ἀχνύος ὤσεν ἀθήνη  
 θειασίον, μάλα δ' ἐσφιν φόως γένετ' ἀμφοτέρωθεν.  
 ἢ μὴν πρὸς νηῶν καὶ ὁμοίων πηολέμοιο.  
 ἔκρεα δ' ἐφρασαντο Ἰὼν ἀγαθὸν καὶ ἑταίρους.  
 ἢ μὴν ὅθι μετόπισθεν ἀφίστασιν ὅδ' ἐμάχοντο,  
 ἢ δ' ὅσοι παρ' νηυσὶ μάχην ἐμάχοντο θεῶσιν  
 ὅδ' ἄρ' ἐπ' αἶαντι μεγαλήρει ἦνδ' ἀνέθυμῷ.  
 ἰσάμεν, ἐνθάδ' ἄλλοι ἀφίσταντο ὅς ἐμαχῶν.  
 ἀλλ' ὅ γε νηῶν ἱκρὶ ἐπώχθε μακρὰ βιβλώωντο.  
 νώμα δ' ἐξυδὸν μέγα, ναύμαχον ἐν παλάμῃσι,  
 καλλήν βλήροισι, δύω καὶ εἰκοσίπηχυ.  
 ὅδ' ὅτ' ἀνὴρ ἱπποισὶ κλητὶ ἴεν' εἰς ἐδώς.  
 ὅς τ' ἐπὶ ἐκ πολλῶν πίσυρας σφαγείρεται ἵππους.  
 σπῆρας ἐκ πεδίοιο μέγα προτὶ ἄστυ δ' ἰώκετ'  
 λαοφόνον καὶ ὁδὸν πολέος τε ἰθιήσαντο  
 αἰετὶς ἢ δ' ἐγὼ αἰετὶς, ὅδ' ἐμπιδὸν ἀσφαλὲς αἰετὶ  
 βρώσκει

ἴνδ' ἔπεισ' ὥς ὅτε κῦμα θοῇ ἰν νηὶ πείσῃσι  
 λωβρον ὑπαί νεφείων ἀνιμορεφές, ἠδ' ἔτε πᾶσιν  
 ἄχην ὑπικρύφθη. ἀνέμοιο δ' ἰδὲνός ἀήτης  
 ἰσὶώ μεμβρέμεται. τρομέουσιν δ' ἐτε φρένα νῆαυται  
 δίδιδότοσ. τυτθὸν γάρ ὑπ' ἐκ θαλάττοιο φέρονται,  
 ὥς ἰδαίψεν θυμὸς ἐνὶ σήθεισιν ἄχαιῶν,  
 ὡν τὰρ ὁ γ', ὅς τε λείων ὀλῳόφρων βυσὶν ἐπιλῳῶν,  
 αἰετὰ τ' ἐν ἐκαμυμῇ ἑλεος μετ' ἄλγιο νέμονται  
 μυρία, ἐν δ' ἐτε τῇσι νομεύς οὐ πω σάφα ἐδίδω  
 θηρὶ μαχέσασθαι ἑλίκας βοὸς ἀμφὶ φονῆσιν,  
 ὕπρι δ' μὲν πρώτῃσι, καὶ ὑστατίῃσι βόεσσιν  
 αἰὲν ὁμόσιχαλῆ, ὁ δ' ἐτ' ἐν μέσσησιν ὀρούσας  
 βῦν ἔειπεν. αἰ δ' ἐτε πᾶσαι ὑπέβρισαν, ὥς τ' ἐτ' ἄχαιοι  
 θειασείως ἐφόβηθεν ὑφ' ἑκτορε, καὶ δὴ πᾶσι  
 πῶντοσ, ὅδ' οἶον ἔπειφνε μυκηναῖον περὶ φήτω  
 κρηῆος φίλων ἡδὲν, ὅς δ' ὀφρυαδῆος ἀνακτὸς  
 ἀγγελίης οἴχισκε, βίῃ ἤρα κληῆη,  
 τὸ γένει' ἐκ πατρὸς πολὺ χεῖρον ἡδὲ ἀμείνον  
 παντοίας ἀρετὰς ἡμῖν πόδας ἠδ' ἐμάχεσθαι,  
 καὶ νόον ἐν πρώτοισι μηχαναίων ἐτέτυκτο.  
 ὅς ῥα τόθ' ἐκρε κῦδος ὑπέριπρον ἐγγυαλιξον  
 σρεφθεῖς γὰρ μετόπισθεν, ἐν ἀσπίδος ἀντυγίπῳ λτω  
 πλῶν ἄνθρωπος φορέεισκε ποδηνεκίς ἑρκὸς ἀκόντων,  
 τῇ δ' ἔννελαφθεῖς, πείσεν ὑπὲρ πῆλος, ἀμφὶ δ' ἐπὶ πῆλῃ  
 σμερδαλέοι κενάβησε περὶ κροτάφοισι πεισόντ' ὅς.  
 ἑκτορ δ' ὄξυνόησε, θείων δ' ἐπὶ ἄγχι παρέστη,  
 εἰθιεί δ' ἐν δόρῳ πῆξε, φίλων δ' ἐμιν ἐγγύς ἐταίρων  
 κτεῖν'. οἷδ' ἐκ ἡδ' ὀνάντο καὶ ἀχνύμῃμοί περ, ἐταίρων  
 χραυσμῶν, ὡν τὸ γὰρ μολλ' ἐδέειδ' ἰδὼν ἑκτραδίῳ,  
 ὠσωπώδ' ἐγένοντο νεῶν, περὶ δ' ἐγχεθον ἄσπερα,

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὁ σπρην αἶν' ἐγδρε μένος μέγα· θέλγ' ὃ θυμὸν  
 ἀργείων, καὶ κῦδος ἐπαίνων, ζεύς δ' ὀρόθωναν,  
 ἔκτορ γάρ οἱ θυμὸς ἐβούλ' οὐ κῦδος ὀρέξαι  
 πρῖα μίδῃ, ἵνα νηυσὶ κερωνίσσι θῆσσι δαῖς πῦρ  
 ἐμβόλῃ ἀκολυμακν, θέτιδος δ' ἐξαΐσιον ἀρήν.  
 παῖδ' ἐπιπρήνῃ, τὸ γὰρ μένε μητίετα ζεύς.  
 νηὸς καιομένης σέλας ὀφθαλμοῖσιν ἰδέσθαι.  
 ἐκ γὰρ δὴ τῷ ἑλλεπαλίῳ ξιν παρὰ νηῶν  
 θησέμεναι βῶων, δῖαν κοῖσιν ὃ κῦδος ὀρέξεν.  
 τὰ φρονέων, νήεσιν ὧ γλαφυρῇσιν ἐγερων  
 ἔκπερ πρῖα μίδῃ, μάλα πρ μεμαῶτα καὶ αὐτῶν.  
 μαίν' οὐ δ', ὡς ὅτ' ἀρης ἐγχεσπας ἢ ὄλσον πῦρ  
 οὔρεσι μαίνηται βαθείης ἐνὶ τάρφῃσιν ὕλης,  
 ἀφλοισμός ὃ περὶ σόμα γίν' οὐ, τῷ ὃ δ' αὖτε  
 λαμπέδῳ, βλοσυρῇσιν ὑπ' ὀφρύσι, ἀμφὶ ὃ πύλη  
 σμυδαλίεν προτάφοισι ζυνάσ' οὐ μαρναμένοιο  
 ἔκτορ, αὖτε γάρ οἱ ἀπ' αἰθέρος ἦσαν ἀμύντορ  
 ζεύς, ὅς μιν πλεόνεσσι μετ' ἀνδράσι μῦνον ἐόντα.  
 τίμα καὶ κύδ' αἰνέ, μινωθάδιος γὰρ ἐμελλεν  
 ἔσσι δ' ἦ δὴ γάρ οἱ ἐπώρνευε μόρσιμον ἥμαρ  
 παλλὰς ἀθηναίῃ, ὑπὸ πηλείδῃο βίῃφῃ,  
 καὶ ῥ' ἐθέλων ῥῆξαι εἰχας ἀνδρῶν περσιτίῳ,  
 ἦ δὴ πλεῖστον ὀμίλον ὄρα, καὶ τεύχε' αἰετα  
 ἀλλ' ἔσθ' ὡς δύνατο ῥῆξαι μάλα πρ μεμαίνων.  
 ἴαχον γὰρ πυργηδὸν ἀρηρότε, ἥντε πέτρῃ  
 ἠλίβατος, μεγάλη, πολίῃς ἀλὸς ἐγγυς ἐοῦτα,  
 ἦντι μένει λιγύων ἀνέμων λαυτήρ' ἀκίλυθα.  
 κύματα τε βοφύοντα, τὰ τε προσβύγεται αὐτῇ.  
 ὡς δῖαν κοῖ βῶας μένον ἐμπεδὸν ἔδῃ φέροντο.  
 αὐτὰρ ὃ λαμπρόμυθος πυρὶ, παλινθῶν ἐνθοῖ δ' ἰμῖλθ.  
ἐν δ'

φωγόντων δ' οὐτ' ἄρ κλῆος ὄρνυται, οὐτ' ἐπὶ ἄλκιβ.  
 Ως ἔφαθ' οἱ δ' ἐκὼν αὐτὶ ἀλέξατο μιν ἱκάνον.

ἔν θυμῷ δ' ἐλάοντο ἔπος, φράξαντο δ' ἡνῆας,  
 ἔρκει χαλκείῳ, ὃ δ' ἔνυ βῶας ἔγειρεν.

ὦπτιλῶχον δ' ὥρως βόην ἀγαθὸς μιν ἔλασσε.

Ἀντίλῶχ'· οὐπὶς σείο νεώτερος ἄλλος ἀχαιῶν.

οὐτε ποσὶν θάσσων, οὐτ' ἄλκιμος ὥς σὺ μολχεῖσαι,  
 εἴπινά περ βῶων ἐξάλλω· ἄνδρα βολυβίαια.

ὣς ἐπὶ νῦν, ὁ μὲν αὖτις ἀπίσσων· τὸν δ' ὀρόθωσαν.

ἔκ δ' ἔθορε προμολχὼν καὶ ἀκόντισι δινεὶ φάνεσθαι.

ἄμφι ἑκαπλήνους ὑπὸ δ' ἔρδω κεκάσθοντο

ἄνδρες ἀκοντίσσαντες, ὅδ' ἔχ' ἄλιον βίβας ἦκαν.

ἄλλ' ἱκνέσθω· ἦ δὲν ὑπέρβυμεν μελάνιππον,

νισσόμεσθ'· πόλεμόν δ' ἐβόλε σῆθος παρὰ μαῖον.

στυπῆσαν δ' πεσὼν ἀρωβήσῃ δ' τινύχ' ἐπ' αὐτῶ.

ὦπτιλῶχον δ' ἐπόρυσσε κύων ὣς· ὅς τ' ὢν νεβρῶ

ἐλημένῳ αἶψῃ, τόν τ' ἐξ ὀνῆφι βορόντα

θηρητὴρ ἔτυχε βαλὼν ὑπέλυσσε δ' ἔνιαια.

ὣς ὢθ' ἐλάνιππε θόρ' ἀντίλῶχος μιν ἐχέριεν,

τινύχ' αὖτε σὺλῆσαν, ἄλλ' ἔλῃθεν ἑκπρὰ δῖον.

ὅς ῥά οἱ οὐτίος ἦλθε θείων ἀνὰ δῖοιότητα.

ὦπτιλῶχος δ' ἔμεινε θοός περ ἰδὼν πελεμιστής.

ἄλλ' ὅ γ' ἄρ' ἔρεσε θηρὶ κακὸν ῥίξαντι οἰκῶς.

ὅς τε κύνα κτείνας ἠβασκόλεν ἀμφὶ βόισι.

φινύχ'· πρὶν περ ὁμίλον ἀομιδὴν μῆσαι ἀνδρῶν.

ὣς ῥέσε νεορίδης, ὃ δ' ἔβῳας τε καὶ ἔκτωρ

ἠχῆθεσσι σίῃ βέλεια σονόωντα χέοντο.

σῆ δ' ἔμπαρσε φθίσι, ἐπεὶ ἴκερ ἔθνος ἑταίρων.

ἔρδω δ' ἔλῃσιν οἰκῶτοσ' ὁμοφάγοισιν.

νηυσὶν ἐπασπύοντο, δῖος δ' ἐπὶ λῶν ἐφειμάς.

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

οὐδ' οἶκόν τ' οὔτε παῖδάς ἀπὸ χροῶς ἔρκεσ' ὀλεσθρον.  
 ἔνθ' ἰμέγης κόρυθος χαλκῆριος ἱπποδασείης,  
 κύμβαχον ἀκρότατον νύξ', ἔρχε' ὄξυόωντι.  
 ῥῆξ' δ' ἀφ' ἱππικονλόφον αὐτῷ, πᾶς δ' χαμᾶϊ  
 κολπισσεν ἐν κενήῃσι, νέον φοίνικι φασγόνος.  
 ἔως ὅτ' ὠπλίμιζε μένων, ἔπ' δ' ἤλπετονίκλῳ.  
 τόφρα δ' ἐὶ μινέλασθ' ἀρήϊος, ἔλθον ἀμύντωρ.  
 εἴ δ' ἐβύραξ σὺν δ'υρὶ λαθὼν, βολῆ δ' ὤμον ὀπιπῶν.  
 αἰχμῇ δ' ἐρίοιο δ' ἑσσυμαιμώεσσι.  
 πρὸς αὖτ' ἰμίνῃ. ὅδ' ἄρα πρὶν ἢ ἐλθέειν.  
 τῷ μὲν ἐδ' ὀπλίσσῃ χαλκῆρεα τέχ' ἔκ' ὤμων  
 συλῆσθην. ἔκτωρ δ' ἐκσιγνήσισι κίλιναι  
 πᾶσι μολλα πρῶτον δ' ἰκταονίδῳ ἐνένιπεν,  
 ἰφθιμὸν μελάνιππον, ὅδ' ὅφρα μὲν ἐλπίπιδας βῶε  
 βόσκη' ἐν περκώτῃ δ'ηίων ἀπανόσφην ἐόντων,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δ' ἀναδ' ἐνέον ἔλυσθον ἀμφίλιππον,  
 αἶψ' εἰς ἴλιον ἦλθε, μετέπρεπε δ' ἔβῳσιν.  
 ναῖ δ' ἰπὸν πριάμῳ. ὅδ' ἐμιν τίον ἴστα τέκεσι.  
 τόν ῥ' ἐκτὼρ ἐνένιπεν. ἔπειτα τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζεν.  
 οὕτω δ' ἡ μελῶνιππε μεθύετο μῆνι, ὅδ' ἐν ὀπίπρ  
 ἐν βέπεται φίλον ἔφρ' ἀνέφικον κταμένοιο·  
 ἐχ' ὀρώεας οἶον δ' ὀλοπος περὶ τέχ' ἔπυσιν,  
 ἀλλ' ἔπειθ' ἐπ' ἔπιν ἀπασσάδ' ὄν' ἀργείοισι  
 μολραδίαι, πρὶν γ' ἢ ἐκτακτάμην, ἢ ἐκτ' ὀκρῆς.  
 ἴλιον αἰπενήν ἐλθόν. κταδίαι τε πολίτας.  
 Ως ἐπὶ δ' ὁ μὲν ἦρχ', ὅδ' ἄμ' ἔπειτα τοῖσ' ὀφείλοισι φῶε  
 ἀργείους δ' ὤφρως μέγας τελαμώνιος αἶας.  
 Ω φίλοι, ἀνέροντες ἐς ἐκτὸν αἰδῶ θείῳ ἐνὶ θυμῷ,  
 ἀλλήλους τ' αἰδύδιε, κατὰ κρατερὰς ὕσμινας.  
 αἰδ' ὀμύνω δ' ὀνέσθων, πλῆστον δ' ὀφί, ἢ ἐπ' ἐφ' ἀντα.  
 φευγόντων



ἢ ἔλπειδ' ἢ νῆας ἔλη κερυθαίοις ἐκτορ·  
 ἔμβροτον ἔξειδά ἢν παρίδω γαῖαν ἔκασθ'·  
 ἢ ἔκ' ὀρύνοντος ἀκρύετε λαὸν ἅπαντα  
 ἔκτορ·, ὅς δ' ἡ νῆας ἐνιπρῆσαι μενεαίνεθ',  
 ἢ μὲν ἔσγε χρόν κέλειτ' ἐλθέμεν, ἀλλὰ μάχεσθαι  
 ἡμῖν δ' οὐπὶς τοῦδε νόος καὶ μή τις ἀμείνων,  
 ἢ αὐτοχρὶς ἡ μῖξαι χεῖρας τε, μένος τε  
 βέλτερον, ἢ ἀπολέσθαι ἕνα χρόνον· ἢ εἰδῶναι·  
 ἢ δὴ θάδε στυγέσθαι ἐν ἀνῆ δ' ἡϊοτῆτι,  
 ὦδ' αὐτως παρὰ νηυσὶν ὑπ' ἀνδράσι χεῖροισι στήθε·  
 ὦδ' ἐπὼν· ὦρυνε μένος καὶ θυμὸν ἑκάσθ',  
 ἔθ' ἐκτορ μὲν ἔλε χερσίων πειριμήδεος ἱόν,  
 ἀρχὸν φωκῆων, αἶας δ' ἔλε λαοδάμουτα  
 ἡγεμόνα πρυλίων, ἀντήνορ· ἀγλαὸν ἱόν·  
 πηλεδάμης δ' ὦρυν κυλλήνιον ἑξενάεξι,  
 φυλείδω ἑταίρον· μεγαθύμων ἀρχὸν ἐπεών·  
 τοῦδε μέγης ἑπόρουσιν ἰδῶν, ὅδ' ὑπασθαλιώδης  
 πηλεδάμης, καὶ τῷ μὲν ἀπήμβροτον, ἢ γὰρ ἀπόλλων  
 ἔα παλινθι ἱόν ἐνὶ προμάχοισι διαμῆναι·  
 αὐτὰρ ὅ γε κροίσμης σῆθος μέθρ' οὐτάσιν διυρὶ  
 οἰούπυσσεν ὃ πεισδῶν, ὅδ' ἀπ' ὧμων τεύχε' ἰσύνει,  
 τόφρα ὃ τοῦδε ἑπόρουσιν δόλοφ' ἀχμῆς ὑπ' ἐδῶς,  
 λαμπετίδης· ὃν λάμπρος ἐγείνατο φέρτατος ἀνδρῶν  
 λαομειδοντιάδης ὑπ' ἐδῶτα θούριδος ἀλκῆς,  
 ὅς ποτε φυλείδω μέθρ' ὅσας οὐτάσιν διυρὶ  
 ἑγγύθεν ὀρμηθείς· πυκινὸς ὃ δὲ ἤρκεισε θώρηξ·  
 τὸν ῥ' ἐφορε γυάλοισιν ἀρηρότα, τὸν ποτε φυλίων  
 ἔγχεον ἐξ' ἐφύρης ποταμῷ ἀποσιλλήεντ'·  
 ἔξιν· γὰρ οἱ ἔδοκεν ἀναξ ἀνδρῶν εὐφρήτης,  
 ἔξ πολεμον φορέειν δ' ἡίων ἀνδρῶν ὀλιωρύη·

αὐτὰρ χερσὶν ἱλῶν δολιχὸν δόρυ καὶ σάκος ἄμφω  
μάρνασθαι βόωναι καὶ ἄλλας ὄρνυθι λαοὺς,  
μὴ μάρ' ἀπασθείη, θεμακατάμφοι περ ἔλθουσιν  
νῆας ὑβιάελλας, ἀλλὰ μνησώμεθα χάρις.

Ω: φάθ'· ὃ δ' ἐτόξεν μῦθον ἐνὶ κλισίῃσιν ἔθηκεν.  
αὐτὰρ ὃ γ' ἄμφ' ὤμοισι σάκος θέτο τετραθέλυμον·  
κρατὶ δ' ἐπ' ἰφθίμῳ κωέτω ὑψυκτορ' ἔθηκεν,  
ἵππεναι δ' ἐνὸν γ' ἰόφος καθύπερθεον ἔνυσεν,  
εἴλετο δ' ἄλκιμον ἔγχος ἀσπασμένον ὀξείῃ χαλκῷ·  
βῆ δ' ἵεναι, μάλα δ' ὤϊα θέων αἶσάν τε παρίσθη,  
ἔκτορ δ' ὥς εἶδεν τόλκεα βλαφθέντα βέλειμνα,  
τῶσὶ τε καὶ λυκίοισιν ἐκέκλετο μακρόν αὐτῶς.

Τρῶες καὶ λυκιοὶ καὶ δολρθενοὶ ἀρχιμαχάται.  
ἀνέρις ἔσε φίλῳ, μνησάδε γ' θοῦναι δὸς ἀλκή·  
νῆας ἀνὰ γλαφυράς, δ' ἡ γὰρ ἰδὸρ ὀφθαλμοῖσιν,  
ἀνδρὸς ἀεισῆος διόθεν βλαφθέντα βέλειμνα

ῥεῖα δ' ἀρίγνωτος διὸς ἀνδράσι γίνετα ἀλκή·  
ἢ μὲν δ' τέοισιν κῦδος ὑπέρτερον ἱγνυαλίξῃ.  
ἢ δ' ὅτινας μινύθητε καὶ οὐκ ἐθέλησιν ἀμύνειν·  
ὥς νῦν ἀργείων μινύθει μένθ' ἄμμι δ' ἀρήγῃ.  
ἀλλὰ μάχεσθ' ἐπὶ νηυσὶν ἀολλέες, ὅς δ' ἔκων ὑμῶν  
βλήμηνθ' ἢ τυπεὶς θάνατον καὶ πότμον ἱπίασθ'  
τεθνάτω, οὗ δ' ἄσκης ἀμυνομένῳ περὶ πάσης  
τεθνάμην, ἀλλ' ἄλοχός τε σόη καὶ πᾶσι δὲ ὀπίσσω,  
καὶ οἴκος καὶ κλῆρος ἀκέραιθ' ἔκων ἄχαιοι  
οἵχοντα σὺν νηυσὶ φίλῳ ἐς παρὶθε γαῖαν,

Ω: ἐπών, ὥρως μένος καὶ θυμὸν ἔκασεν,  
αἶας δ' αὐτ' ἐτέρωθεν ἐκέκλετο ὅς ἐτάροισιν,  
αἰδῶς ἀργεῖοι νῦν ἀρκίον, ἢ ἀπολείδω,  
ἢ ἐκασθῆναι, καὶ ἐπὶ θεῶν κακὰ νηῶν.

ἰσθδκον, μάλα δ' ὄνα βίλη βῶσιρ ἰρίσ.  
 καί ῥ' ἔβαλε κλειῖτον πεισύνορος ἀγλαὸν ἦιν.  
 πηλυδάμαντος ἱταῦρον ἀγανού παυθοῖδα,  
 ἑνία χερσὶν ἔχοντα. δ' μὲν πεπνύοντο καθ' ἵππους.  
 τῇ γὰρ ἔχ' ἢ ῥά πολὺ πλείεσσι κλονέοντο φάλαγγες,  
 ἔκτορε καὶ βῶσι χαεῖρόμινον, τάχα δ' αὐτῷ  
 ἦλθε κακόν, τό οἱ οὐτις ἐρύκακον ἱμένῳ περ.  
 αὐχί νι γάρ οἱ ὀπίσσω πολύσσονον ἔμπεσον ἰός.  
 ἔπειτα δ' ἐξ ὀχέων ὑπεώρηνσαν δ' οἱ ἵπποι,  
 κτεῖν' ὄχια κροτέοντο, ἀναξ δ' ἐνόησε τάχιστα  
 πηλυδάμας, καὶ πρῶτον ἐναντίον ἔλθειν ἵππων.  
 τὸς μὲν ὅτ' ἀσυνόφως προτιάονον ἡεῖ, δ' ὤκει.  
 πολλὰ δ' ἐπώρηντε χιρδὸν ἰχην ἐσορόοντες,  
 ἵππους, αὐτὸς δ' αὐτὶς ἰὼν προμάχοισιν ἐμίχθη  
 τδύκρος δ' ἄλλον οἶσεν ἐφ' ἔκτορι χαλκῆκερυσῇ  
 αἶνυτο, καί κεν ἵπασσε μάχης ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν  
 ἢ μιν ἀειπύοντα βαλὼν ἐξήλθο θυμόν.  
 ἀλλ' οὐ λῆθε δῖος πυκινὸν νόον, ὅς ῥ' ἐφύλασσε  
 ἔκτορ' ἀτὰρ τδύκρον τελαμώνιον ἔχρος ἀπούρα.  
 ὅς οἱ ἐῦστροφία νοδὺρῃν ἐν ἀμύμονι τόξῳ,  
 ῥῆξ' ἐπὶ βελ' ἐρύοντι, παρὲπλάγχθη δ' οἱ ἄλλῃ  
 ἰὸς χαλκῆβαρής, τόξον δ' οἱ ἔκπεσε χαρὸς.  
 τδύκρος δ' ἐρρήγησε κασίγνητον δ' προσνύδα.  
 ὃ πόποι, ἢ δ' ἢ πᾶν χυ μάχης ἐπὶ μῆδ' α κείρῃ  
 θαίμων ἡμιτέρης, ὅ, τε μοι βίον ἔκβαλε χαρὸς.  
 νοδὺρῃν δ' ἐξέρρηξε νέστροφον. ἦν οἱ ἔδωκε  
 πρῶτον, ὃ φ' ἀνέχρ' ἰθὺς θαμὰ θρώσκοντες οἶσους.  
 Τὸν δ' ἡμείβεται ἑπτα μέγας τελαμώνιος αἶας.  
 ὃ πίπον, ἀλλὰ βίον μὲν ἔα καὶ τερφίας ἰόντα  
 κτεῖναι ἐπὶ σῶν χυνὸς θιὸς δ' ἀναοῖσι μετ' ἄρας.

# ΙΔΙΔΟΞ.

ἄλλοι δ' ἀμφ' ἄλλῃσι μάχῃσι μάχοντο νέεσθαι·  
 ἔκτωρ δ' ὄντ' αἶψα τοῖσι κείνοις κυδαλίμοιο.  
 τὼ δ' ἔμῃσι περὶ νηὸς ἔχον πόνον, οὐδ' ἐδύναντο  
 οὐδ' ὅ τ' ὀνὺξ ἀλάσσει καὶ ἐνὶ πρῆσσαι πυρὶ νῆας.  
 οὐδ' ὅ τ' ὀνὺξ ἀλάσσει καὶ ἐνὶ πρῆσσαι πυρὶ νῆας.  
 ἐνθ' ὕια κλυτὶοιο καλὺτορα φαίδιμος αἶας.  
 πῦρ ἐς νῆα φέροντα κατὰ σῆθος βάλε δ' ὕρι.  
 δούπησεν δ' ἐπὶ σῶν, δαίμων δ' οἱ ἔκπεσε χερσὶ.  
 ἔκτωρ δ' ὡς ἐνόησεν ἀντιπρὸν ὀφθαλμοῖσι  
 ἐν κενήσιν πισόντα νηὸς προπαροῖθε μελαίνης.  
 τῷσι τε καὶ λυκίοισιν ἐκίχλῃσιν μακρὸν αὐτῶν.  
 Τρῶες καὶ λυκίοι καὶ δαρδάνιοι ἀρχιμαχηταί·  
 μὴ δ' ἢ πῶ χαλῖε μελῆσιν ἐν σείνῃ τοῖσι δαί·  
 ἀλλ' ὕια κλυτὶοιο ἄσπετος, μὴ μιν ἀχαιοὶ  
 τούχῃσιν συλῆσωσι νῆων ἐν ἀργεῖ πισόντα.  
 ὣς ἔπῳν, αἶψα τοῖσι ἀκονίσας δ' ὕρι φανῶ.  
 τῷ μὲν ἄμαρθ'· ὃ δ' ἐπειτα λυκόφρονα μεσσηρὶ ἔχον  
 αἶψα τοῖσι θερὰ ποντα κυδύειον, ὃς ῥα παρ' αὐτῶν  
 ναῖ', ἐπὶ ἀνδρῶν κατέκτα κυθήροισι λαοίοισιν,  
 τὸν ῥ' ἔβαλεν κεφαλὴν ὑπὲρ οὐατὸς ὄξιν χαλκῷ.  
 ἰσχυρὸν ἀρχ' αἶψα τοῖσι, ὃ δ' ὕπῃσιν ἐν κενήσιν  
 νηὸς ἀπὸ πρύμνης χαμῶδ' ἰς πέσιν, λύντο δ' ἔχοντα.  
 αἶας δ' ἐρρίγησεν κασιγνήτων δ' προσήλυτον.  
 Τόλμαρ πέπον, δ' ἠνῶϊν ἀπέκτατο πιδὸς ἑταῖρον  
 μασσιδῆς, ὃν νῶϊ κυθήροισιν ἐνδον ἔοντα.  
 ἴσα φίλοις τοκοῦσιν ἐτίομαρ ἐν μεσσηροῖσιν.  
 τὸν δ' ἔκτωρ μετὰ θυμὸς ἀπέκτανε, πῆνύ τοι ἴσθι.  
 ὠκύμοροι καὶ τύξον, ὃ τῷ πόρῃ φοῖβος ἀπόλλων.  
 ὣς φάτο, ὃ δ' ἐξωίκε, θίαν δ' οἱ ἀρχὴ παρέειπεν,  
 τύξον ἔχον ἐν χερσὶ παλίντονοι δ' ὃ φάτο·  
 ἰοδόν,

Ἰσθμίου μεγάλῃ ἰαχῇ κατὰ τείχος ἔβαινον.

ἵππους δ' εἰσελάσαντο, ἐπὶ πρύμνῃσι μάχοντο,  
ἔρχεσιν ἀμφιγυίοισιν αὐτοαχεύον, οἳ μὲν ἀφ' ἱππῶν,

οἷδ' ἀπὸ νηῶν ὑφιμελαινάων ἐπιβάντο,

μακροῖσι ξυστοῖσι τὰ ῥάσφ' ἐπὶ νηυσὶν ἕκαστο

ναύμαχα καλλήοντα, κατὰ σόμα ἐμίνα χαλκῷ.

πύρροκλος δ' εἴως μὲν ἀχαιοῖτε φῶϊς τε

τείχιος ἀμφιμάχοντο θοάων ἐκτοθι νηῶν,

τόφρ' ὅγ' ἐνὶ κλισίῃ ἀγαπήνορος εὐρύπυλῳ,

ἦσαν τε καὶ τὸν ἔτιρπε λόγοις, ἐπὶ δ' ἔλκεϊ λυγρῷ

φάρμακ' ἀκῆματ' ἔπασσε μελαινάων ὀδυνῶων.

αὐτὰρ ἐπεδὴ τείχος ἐπισυμένους ἐτόησαν

φῶας, αὐτὰρ δαναῶν γίγντ' ἰαχίητι φόβος τε

ᾤμωξαντ' ἄρ' ἔπειτα καὶ ᾧ πεπλόγθο μῆρῳ.

χερσὶ καταπρηνέσθ', ὀλοφυρόμενοι δ' ἔπειτα ἔνδον.

Εὐρύπυλ' οὐκ ἐπὶ τοὶ δυνάμει χατίοντ' ἐπερ ἔμπης,

ἐνθάδε παρμυμέμεν, δὴ γὰρ μέγα νῆψος ὄρωρον.

ἀλλὰ σὲ μὲν θιράπων ποτιτερπέτω. αὐτὰρ ἔγωγε

σώδ' ὅμα ἐς ἀχιλῆα, ἵν' ὀρύτω πολεμίσαν,

ῆς δ' οἷδ' εἶκον οἱ σὺν δαίμονι θυμὸν ὀρίνω

παρηπών, ἀγαθὴ δ' ἐπαραίφασίς ἱερὴταίρη.

Τὸν μὲν ἄρ' ὥς ἐπόντα, πόδες φέρον, αὐτὰρ ἀχαιοὶ

φῶας ἐπιρχόμενους μένοντ' ἔμπροσθεν, οὐ δ' ἐδύναντο

παυροτέρους περ ἵόντας ἀπώσασθαι παρὰ νηῶν

οὔτι ποτε φῶας δαναῶν ἰδύναντο φάλαγγας

ῥηϊδίμμοι κλισίῃσι μιγήμεναι, οὐ δ' ἐνέσσω.

ἀλλ' ὥς τε σάθμη δόρυ νήϊον ἐξιθύνει

τ' ἐκτοῖ' ἐν παλάμῃσι δαήμεν' ὅς τ' ἐπ' αὖτ' ἔκαστος

αἶψ' ἐπ' ἐσφίης ὑποθημοσύνησιν ἀθήνη.

ὣς μὲν τὸν ἐπὶ ἱσθμῷ μάχεται, πῶς ἑλπίσιν



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

πάντοδ' ὁμολύγαντο δὲ ἔχον ἱρυσάρματα Ἴππῳ.  
 ἢ χῆθ' αἰσιόη, προπάροθι δ' φοῖβοι ἀπόλλων  
 ῥιτ' ὄχθας καπέτοιο βαθείης πόντιν ἱρέπων,  
 ἔς μέσσην κατέβηκε γαφύρῳ δ' ἐκείλυθον  
 μακρὴν ἡδ' ὀβριεῖαν ὄθρη τ' ἐπὶ δ' ὕρδ' ἐρωπῇ  
 γίνεταί, ὁππότε ἀνὴρ δινέσθ' περὶ μῶν εἴσι  
 τῇ δ' οἴγα προχέουσι φαλαγγηδόν, πρόσθ' ἀπόλλων  
 αἰγὶδ' ἔχων ἱρίτιμον, εἰπε δ' τεῖχος ἀχαιῶν,  
 ῥιτ' αὖ μάλ' ὥς ὅτι τις ψάμαθον παῖς ἀγχι θαλάσσης,  
 ὅς τ' ἐπὶ ὄσῳ ποιήσῃ ἀνδύρματα νηπιέησιν  
 ἀψ' αὐτοῖς σιωήχων πρὸς ἴν καὶ χερσὶν ἀνύρῳ  
 ὥς ῥ' αὖ σὺ ἔϊε φοῖβε πολὺν κάματον καὶ οἶζον,  
 σὺν χεῖρας ἀργείων, αὐτοῖσι δ' φύζαν ἐν ὠρεῖσιν.  
 ὥς οἱ μὲν παρὰ νηυσὶν ἐρητύοντο μένοντες.  
 ἀλλ' ὅλῳσι τέ κ' ἐκλόμβησι καὶ πᾶσι θείοισι  
 χεῖρας ἀνίσχοντο μέγαλ' ὀυχιπόωντο ἱεσσι,  
 νέσθ' αὖτε μάλιστ' ἀργήνιος ὕρδος ἀχαιῶν,  
 εὔχθ' οὐ χεῖρ ὀρέγων εἰς οὐρανὸν ἀστερόεντα.  
 Ζεὺ πάτερ, ἵπποτέ τις τοι ἐν ἀργείοις πολυπύρρῳ,  
 ἠβόος ἢ οἶος, καταπίονα μηρία κείων  
 εὔχθ' οὐ νοσήσας, σὺ δ' ὑπέλατο καὶ κατίνυθας,  
 τῶν μνησάμεν καὶ ἀμύμον ὀλύμπιε νηλεὲς ἦμαρ.  
 μὴ δ' οὕτω βῶεσσι τὰ δάμνασθαι ἀχαιούς.  
 Ως ἔφατ' εὐχόμενός, μέγα δ' ἔκτυπε μητίετα ἴδρι,  
 ἀράων αἰῶν νηληϊάδαο γέροντός,  
 ῥῶϊς δ' ὥς ἐπύθοντο δῖος νόον αἰγιοχοιο.  
 μᾶλλον ἐπ' ἀργείοισι θόρον, μνησάμεν δ' ἡ χάρμης,  
 οἷδ' ὥς τε μέγα κύμα θαλάσσης ἐρύποροιο  
 νηὸς ὑπὲρ τοίχων καταβύσεται ὁππότε ἱππὶ δ'  
 ἰσ' ἀέμεν, ἢ γάρ τι μάλιστ' ἡ κύματ' ὀφείλη,  
 Ως ῥῶϊς

ὅττι δὲ καὶ κλονίσαι μελαίνης νυκτὸς ἀμολγῶ  
 ἔλθον τ' ἐξαπίνης σημάτωρ οὐ παρόντων.  
 ὡς ἐφόβηθαι ἀχαιοὶ ἀνάγκιδες, ἐν γὰρ ἀπώλων  
 ἦκε φόβος, φασὶ δ' καὶ ἔκτοει κῦδος ὅπαίον.  
 ἐνθάδ' ἀνὴρ ἔλκει ἀνδρὰ κειραδείσης ὕσμίνης.  
 ἔκτωρ μὲν εἰ χίον τε καὶ ἀρκισίλαον ἔπιφνι.  
 τὸν μὲν βοιωτῶν ὑγῆτορα χαλκῷ χιτώνων.  
 τὸν δ' ἠμμεδῆος μεγαθύμου πιστὸν ἱταῖον.  
 ἄνδρας δ' ἐμίδοντα καὶ ἴασον ἱξονάειν.  
 ὅττοι δ' μὲν νόθος ἦος δῖλῆος θείοιο,  
 ἔσκει μείδων, αἶσάντων ἀδελφεὸς, αὐτὰρ ἔναιον  
 ἐν φυλάκῃ γαίης ἀποπαρίδ' ἀνδρὰ κατ' ἐκτάτῃ.  
 γυναικὸν μωρυϊῆς εἰώπιδ' ἦν ἔχ' οἰλοῦν.  
 ἴασσος αὐτ' ἀρχὸς μὲν ἀθωαίων ἐτίτυκτο.  
 ἦος δ' σφῆλσι καλίσκῳ βυκαλίδαι.  
 μνηστῆρ δ' ἔλε πηλυδάμας, ἐχίον δ' πολίτης  
 πρώτη ἐν ὕσμίνῃ, κλονίον δ' ἔλε δῖος ἀγῆτορ.  
 δῆϊοχον δ' πάρος βάλε νείατορ ὄμορ ὀπιδι,  
 φούγον τ' ἐν προμάχοισι, σὺν δ' ἐχέοντα ἔλασσε  
 ὄφρ' οἱ τὺς ἱνάειον ἀπ' ἐντα τόφρα δ' ἀχαιοὶ  
 τάφρῳ καὶ σκαλόπασιν ἐνιπλήξαντο δρυκτῇ.  
 ἐνθα καὶ ἐνθα φόβοισι, δύοντο δ' ἐτῆρος ἀνάγκῃ.  
 ἔκτωρ δ' ῥῶεσιν ἐκέκλετο μακρὸν αὐαῖς.  
 νηυσὶν ἐπισυνέδαι, ἔα δ' ἔναρα βροτόντα.  
 ὅρ δ' ἄρ' ἐγὼν ἀπᾶν νηυσὶν ἐτέρωθεν νοήσομαι,  
 αὐτῶ δ' ὁ θάνατον μητίσσομαι, οὐ δ' ἐν τῷ γὰρ  
 γυνωτοί τε γυναικαί τε πυρὸς λιλάχουσι θανόντα.  
 ἀλλὰ κύνας ἱρύνει προῦς αἵματος ὑμειτέρου.  
 ὣς ἐπὶ ῥῆμασι καταμαδὸν ἔλασεν ἵππους.  
 κελόμην δ' ῥῶεσιν κατὰ εἰχας, οἱ δ' ἐν σὺν αὐτῇ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔλλ' ἄγε τίς ἄρ' ἐγὼ εἶπω παθώμεθα πάππου.  
 πληθὺν μὲν ποτὶ νῆας ἀνώξομεν ἀπονείδαι.  
 αὐτοὶ δ' ὅσσοι ἄεσσι νηὶ στρατῷ ἐν χόμῃ εἴη,  
 εἴομεν, εἴκου πρῶτον ἐρύξομεν ἀντιάσιντο.  
 δούρατ' ἀναχόμενοι, τὸν δ' οἶω καὶ μιμαῶτα  
 θυμῷ δέσειν καὶ δάναων καταδύναι ὀμίλην.  
 ὧς ἔφαθ' οἱ δ' ἄρα τῷ μάλα μὲν κλύορον ἦδ' ἐπίθοντο.  
 εἰ μὲν ἄρ' ἀμφ' αἶσαντα, καὶ ἰδομένοισι ἀνακτα-  
 τούκρον, μηριόων τε μέγ' ἦντ' ἀτάλαντον ἄρηι.  
 ὕσμίνῃ ἤρτωρον αἰεσῆας καλίσσαντο.  
 ἔκτοε καὶ τῷ αἶσαν ἰναυτίον, αὐτὰρ ἐπίσσω  
 ἢ πληθὺς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν ἀπονείοντο.  
 τῷες δ' προύτυψαν ἀολλέες ἤρχετο ἄρ' ἔκτοε  
 μακρὰ βιβιάς, προέθεν δ' κί' αὐτῷ φοῖβος ἀπόλλων.  
 εὐμένος ὤμοιόν τε φίλῃ, ἔχε δ' αὖ γ' ἰδέσθαι.  
 θανήν' ἀμφιδέσσαν αἰετρεπὶ, ἦν ἄρα χαλκὸς  
 ὄφρατος δ' ἰδῶκε φορέμενοι εἰς φόβον ἀνδρῶν.  
 τήν ἄρ' ὅτ' ἐν χείρεσιν ἔχον, ἐγχεῖτο λαῶν.  
 ἀργεῖοι δ' ὑπέμψαν ἀολλέες, ὥρτο δ' αὐτὴ  
 ὄξυ' ἀμφοτέρωθεν, ἀπὸ κυρῆφι δ' οἶσοι,  
 θρῶσκον, πολλὰ δ' ὅτ' ἔρα θρασυάων ἀπὸ χερῶν,  
 ἀλλὰ μὲν ἐν χροὶ πήγνυτ' ἀρηιθῶν αἰήων.  
 πολλὰ δ' καὶ μισσηγὺ πάρος χρόα καλὸν ἱπασρεῖν  
 ἐν γαίῃ ἵστατο, λιλαόμενα χροὸς ἄσαι.  
 ὄφρα μὲν αὖ γ' ἰδέε χερσὶν ἔχ' ἀέμεα φοῖβος ἀπόλλων.  
 τόφρα μάλ' ἀμφοτέρων βέλε' ἤπ' ἔσο. πίπτε δ' λαός.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατενῶπα ἰδῶν δάναων ταχυπώλων  
 σείσ' ἐπὶ δ' αὐτὸς αὔσε μάλα μέγα, τοῖσι δ' οὐμὸν  
 ἐν σήθειαν ἔθελον λάθοντο δ' οὐραϊδὸς ἀλκῆς.  
 οἱ δ' ὧς τ' ἔβωον ἀγέλην ἢ πῶν μίγ' ἦεν

θισμὸν ἀπορρήξας θύη πιδίοιο κραίνων  
 ἔωθ' ὡς λυγέσθαι ἐϋρρήϊος ποταμοῖο  
 κυδιόων, ὅτε ἔ' κάρη ἔχειτ', ἀμφὶ δ' ἔχειται  
 ὡμοῖς ἀΐσσονται ὅ δ' ἀγλαΐῃφι πεποιθώς,  
 ῥίμφα ἔ' γ' ὕνα φέρει μετὰ τ' ὕθια καὶ νομὸν ἱππῶν  
 ὡς ἐκτωρ λαυφῆρὰ πόδας καὶ γούνατ' ἐνώμα.  
 ὀρύνων ἱππῆας ἐπὶ θεῷ ἐκλυσε αὐδ' ἦν.  
 οἷδ' ὡς τ' ἡ ἑλαφον κερὰ δ' ἡ ἀγριοῖον αἶγα  
 ἐσδύοντο κύνας τε καὶ ὀφείρες ἀγροῖῳται,  
 τὸν μὲν τ' ἠλίβατ' ἐπὶ τῇ καὶ δάσκιος ὕλη  
 ἔρυσσεν οὐδ' ἄρα τέσφι κιχέμεναι αἰσιμονῆσσι,  
 τῶν δ' ἔ' ὕπαι ἰαχῇ ἱφάνη λῆς ἠύγινεσσι  
 ἔς δ' ὀδὸν, αἶψα δ' ἐπάντα ἀπέραπε καὶ μεμαῶτας  
 ὡς δ' αὖτοι· εἴως μὲν ὁμιλαδὸν αὖτ' ἐποίησεν.  
 ἠύσαντο δ' ἐξίφασιν τε καὶ ἐγχεσιν ἀμφιγυνοῖσιν,  
 αὐτὰρ ἐπὶ ἰδὸν ἐκτορ' ἐποικόμενον εἰχας ἀνδρῶν.  
 τάρβησάν· πᾶσι δ' ἐπαρὰ ποσσὶ κάππεσε θυμός,  
 τοῖσι δ' ἐπετ' ἀγρόν· ὅσας ἀνδραΐμον' ἔ' ἦδε  
 αὐτῶν ὅχ' ἄριστος ἐπιστάμενος μὲν ἄκοντι,  
 ἐδλὸς γ' ἐν πεδίῳ, ἀγορῇ δ' ἐπαῦροι ἀχαιῶν  
 νίκων, ὅπποτε κῆροι ἐρίσασάν περὶ μύθων  
 ὄσφιρ' ἐϋφρονέων ἀγορεύοντο καὶ μετίεπον.  
 ὦ πόποι ἡ μέγα θαῦμα τὸ δ' ὀφθαλμοῖσιν δρῶμεν  
 οἷοι δ' αὖτ' ἐξ αὐτῶν ἀνέστη κῆρας ὀλήξας  
 ἐκτωρ, ἡ θῆρ' ἡ μιν μόλα ἔλπετο θυμὸς ἐκάεσθαι.  
 χερσὶν ὑπ' αἰῶντ' ἑλάνθη τελαμωνιῶν δαΐδα,  
 ἢ πῶς αὖτε θεῶν ἐρρύδατο καὶ ἐσάσσειεν  
 ἐκτορ' ὅ δ' ἡ πολλῶν δεινῶν ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν.  
 ὡς καὶ νῦν ἐσέσθι δότομαι, οὐ μὲν ἄτερ γὰρ  
 ἦνός ἐλγδούπη πρόμος ἵσταται ὡς μὲν ἰοῦντων.

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Ξ.

κίθων δ' αὐτὸς ἐγὼ φράσμαι ἔργον τι ἔπος τε  
 δε καὶ καὶ αὐτὸς ἀχαιοὶ ἀναπνεύσωσι πόνοιο,  
 Ως ἔφατ', οὐδ' ἄρα παρὸς ἀνηκυύσῃσιν ἀπόλλων,  
 βῆ δ' κατ' ἰδαιῶν ὀρέων ἱρηκί τοικῶς  
 ὠκίῃ φαυοφόνῳ, ὅς τ' ὠκίστος πετεινῶν,  
 εἴρ' ἤδ' ὀρ' πριάμοιο δαΐφρονος ἔκτορα δῖον,  
 ὕμνορον οὐδέ τι κίβ', νέονδ' ἐχέειρα θυμόν,  
 ἀμφὶ ἑ γινώσκων ἑτάρευς, ἀτὰρ ἄδμα καὶ ἰδρώς  
 παύειτ' ἐπεὶ μιν ἔγχετ' δῖος νόος ἀγχιόχοιο.  
 ἀγχι δ' ἰσάμεν σ' προσέφη ἑκάεργος ἀπόλλων,  
 ἔκτορ' ἤε πριάμοιο τῆν δ' ἐσὺ νόσφιν ἀπ' ἄλλων  
 εἶσ' ὀλιγηπείλων, ἦ πῃ τί σε κῆδος ἰκάνει;  
 Τόν δ' ὀλιγοδρανέων προσέφη κερυθαίολες ἔκτορα  
 τίς δ' ἐσὺ ἴσσι φέεισε θιῶν ὅς μ' εἴρειαι ἄντιν,  
 οὐκ αἴεις ὅμηνυσιν ἐπὶ πρυμνήσιν ἀχαιῶν  
 οὗτε ἑτάρευς ὀλέκοντα βοήν' ἀγαθὸς βάλεν αἴας  
 χερμαδίῳ πρὸς σῆθος, ἔπαυσεν δ' ἐθούριδος ἀλκῆς,  
 καὶ δ' ἡ ἔχων ἐφάμην νέκυας καὶ δ' ὦμ' αἰδέο  
 ἦμαρ τῷ δ' ὄφειδαι ἐπὶ φίλῃν αἶον ἦτορ.  
 Τὸν δ' αὐτὴ προσέειπεν ἀναξ ἑκάεργος ἀπόλλων,  
 θάρσσε νῦν, τοιόν τοι ἀοαγητῆρα κρονίων  
 ἐξ ἰδῆς προΐηκε παρεσάμεναι καὶ ἀμύνειν  
 φοῖβον ἀπόλλωνα χρυσάορον, ὅς σε πάρος περ  
 ῥύομ' ὁμῶς αὐτόν τε καὶ αἰπυνόρ' ἠολίθρον.  
 ἀλλ' ἄγε νῦν ἱπποῦσιν ἐπὶ βῶρον πολέεσσι.  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἑλαυνέμεν ὠκίαι ἵππυς,  
 αὐτὰρ ἐγὼ προπάροιθεν κιδν, ἵπποισι κίλδουθον  
 πᾶσων ληαίῳ, βίψω δ' ἥρωας ἀχαιοὺς,  
 Ως ἐπών, ἔμπνευσε μένος μέγα ποιμίνι λαῶν,  
 ὧς δ' ὅτε τις σκτὸς ἵππος ἀκρυσέως ἐπὶ φάτιν

δισμὸν



οἷδ' ὅς τις πρὶς δουτέροισιν ἰεανύεις ἀλὴν ἵπονται.

Τὸν δ' αὖτις προσέειπε προσεδέκον ἱννοσίχθων.

ἔειθε μάλα τῦτό ἱπποκατὰ μοῖραν ἔειπες.

ἰδὼλόν κ' αὖ τὸ τέτυκται, ὅτ' ἀγγελος αἰσίμα ἐδῆ.

ἄλλὰ τόδ' αὖθ' ἄχος κραδίω κ' θυμὸν ἰκάνει,

ὁππότεν ἰσομορον κ' ὁμῇ πεπρωμένον αἶσθη

νεκείην ἐθέλῃσι χολωτοῖσιν ἐπέειπεν.

ἄλλ' ἤτοι νῦν μὲν κε νεμεσηθεὶς ὑποείξω.

ἄλλο δ' ἐπὶ ἐρίῳ κ' ἀπ' ἀλῆσιν τὸ γὰρ θυμῷ.

αἶκεν ἄνευ ἱμέθου κ' ἀθλων αἴης ἀγλαίης.

ἔρως, ἱρμείωτε, κ' ἡφαιστοιο ἄνακτος.

ἰλίῳ ἀπηνῆς πεφιδῆσεται, οὐδ' ἰθιλήσῃ

ἐκπέρσαι, δύναι δ' ἴμεγα κράτος ἀργείοισιν.

ἴσω τῦθ' ὅτι νῶϊν ἀνέγκιστος χόλος ἔσται.

Ὡς ἐπὶ νῦν, λίπε λαὸν ἀχαιῶν ἱννοσίχθων.

δύναι δ' ἴμεγα κράτος ἀργείοισιν.

κ' αὖ τὸ γὰρ ἀπόλλωνά προσέφη νεφεληγερέτα (δοῖ).

ἔρχεο νῦν φίλε φοῖβε μεθ' ἑκτόρα χαλκὸν ἐρυσίν.

ἔδῃ μὲν γάρ τοι γαίης ὅχος ἱννοσίχθωνος.

οἴχεσθαι ἐς ἄλλα δῖ' ἴω, ἀλινά μιν χόλῳ ἐπὶ νῦν

ἔμετρεον, μάλα γάρ κε μάχης, ἱπυθονὸς κ' ἄλλοι.

οἵ περ νέρτεροί ἐσσι θεοί, χρόνον ἄμφω ἐόντες.

ἄλλὰ τόδ' ἢ μὲν ἱμοὶ πολὺν κέρδιον ἢ δ' ἐπὶ αὐτῷ

ἔπλησο, ὅτ' ἰπάρῃσι νεμεσηθεὶς, ὑπέρβη

χρῖρας ἐμάς, ἐπὶ οὐκ ἐν ἀνδρωτί γ' ἰτελίω.

ἄλλὰ συγ' ἐν χεῖρασι λάβ' αἰγίδα θυσαμένησιν.

τὴν μάλ' ἱπασίων, φοβέην ἔρως ἀχαιεύς.

σοι δ' αὐτῷ μελέτω ἱασηβόλε φαίδιμος ἑκτωρ.

τόφρα γάρ σὺν δὲ ἔχρη μὲν ὅτ' ἴμεγα, ὅφρ' ἄρ' ἀχαιῶι

φόνοντες νῆας τε κ' ἐλθέσθαι τὸν ἱκάνται.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἡγήλιν τινά τοι γαῖο χυκανοχαῖτα.

ἤλθορ δ' ὕρο φέρου παρὰ διὸς ἀγχιόχοιο.

παυσάμενοι σ' ἐκέλευσε μάχης ἢ δ' ἐπὶ οὐλίμοιο.

ἔρχω' ἢ μετὰ φῦλα θιῶν ἢ εἰς ἄλα δ' ἴαν.

εἰ δ' οἱ οὐκ ἐπέειπ' ἐπιπέσειαι ἀλλ' ἄλγος ἔσθαι.

ἠπείλει κ' ἐκκλίνου ἐναντίσιον πῶλιν μίջων.

ἰθὺς δ' ἐλδύσεσθαι, σέ δ' ὑπεξάλειψαι ἀνώγει.

χεῖρας, ἐπὶ σέο φησὶ βίη πολυφύετερ' εἶναι.

καὶ γυνὴ πρότερος, σὸν δ' οὐκ ὅθιται φίλον ἦτορ.

ἴσον οἱ φάσθαι, τὸν τε συγέισσι καὶ ἄλλοι.

Τὸν δ' ἐμὶ γ' ὀχθήσας προσέφη κλυτὸς ἐννοσίγαιος.

ὦ πόποι, ἦ ῥ' ἀγαθὸς περ ἰδὼν ὑπέροπλον ἔειπεν,

εἴ μ' ἐμὸς τί μοι ἰόντα, βίη ἄικοντα καθεῖξαι.

τεῖς γάρ τ' ἐκ χρόνῳ ἐμῶν ἀδελφοί, οὗς τέκε δ' ἦν.

ἴδους καὶ ἐγὼ, ρίταται δ' αἰΐδης ἐνέροισιν ἀνάσσειν.

ῥιχθὰ δ' ὅ πάντα δ' ἐδιδασκί, ἕσπεος δ' ἔμμορε τιμῆς.

ὅ τοι ἐγὼν ἔλαχον πολὴν ἄλα ναίεμεν ἀπὶ

παλλομένων, αἰΐδης δ' ἔλαχον ἴοφον ἠερόντα.

ἴδους δ' ἔλαχ' οὐρανὸν ὑψύην, αἰθέρι καὶ νιφίλεισι.

γαῖα δ' ἐπὶ ξυῖν πάντων καὶ μακρὸς Ὀλυμπος.

ὦ δ' ἴα καὶ οὐτὶ διὸς βίεμαι φρεσίν, ἀλλὰ ἔκλεισε

καὶ κρατερὸς περ ἰδὼν, μανέντω ριπτάτῃ ἐνὶ μοίρῃ.

χεῖρσιν δ' ἐμὸν μετὰ γ' ἔλαχον ὥς δ' ἐδιδασκί.

θυγατέρισι γάρ τε καὶ ἡάσιν κίεσθ' ἴον ἐῖναι.

ἐκπάγλως ἐπέεσσιν ἐνισάμεν οὗς τέκεν ὦν πόσι.

οἱ ἔθου δ' ὀρύνοντος ἀναρῶνται καὶ ἀνάγκῃ.

Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα παρθένεμος ὠκεία ἴεος.

οὐτὼ γὰρ δ' ἦ τοι γαῖο χυκανοχαῖτα.

τὸν δ' ἐφίρω δ' ἰὶ μῦθον ἀπλώατε, κρατερόν τε,

ἢ τι μετὰ σφ' ἔσθαι, σφ' ἡ καὶ μὲν τε φρίνεις ἐδιδάσκω.

Ἰωνθ. ἦν θεοῖσι μεταγγελας ἀθανάτοισι,  
 καὶ σφίας φωνήσας· ἔπια πῆριέντα προσηύδα,  
 ἔθες σφω εἰς ἰδῶν κέλετ' ἐλθὲ μιν ὅτ' ἰτάχισα,  
 αὐτὰρ ἐπὴν ἔλθῃσι δῖός τ' εἰς ὧπα ἰδῆσθαι,  
 ἔρδῃσιν ὅ, τῆκε κείνος ἰποβύνη καὶ ἀνώγῃ·  
 ἢ μὲν ἄρ' ὧς ἐπύσσα, πέλιν κίε πότνια ἔρη-  
 νίσο δ' ἐνὶ θρόνῳ, τῷ δ' αἰξάντε πετέδωλ·  
 ἰδῶν δ' ἱκάνον πολυπίδασα μητέρα θηρῶν,  
 ἤρρον δ' εὐρύοπα κροῖδῶν οὐκ ἀγαργάρεω ἄνθρω-  
 πῶν· ἀμφὶ δ' ἐμιν θυόων νέφος ἐσεφάτωτο,  
 τῷ δ' ἐπέροιθ' ἐλθόντι δῖος νεφελή γάρταο  
 σήτω, οὐ δ' ἐσφῶϊν ἰδῶν ἐχολώσῃτο θυμῷ·  
 ὅτ' ἰοὶ εἰς ὧκ' ἐπείεσσι φίλης ἀλόχοιο πιδέδωλ·  
 Ἰωνθ' ἐπρότέρῳ ἔπια πῆριέντα προσηύδα·  
 Βασκ' ἴθι ἰεταχίῃα ποσφύδωνι ἄνακτι  
 πάντα τά δ' ἀγγεῖλαι, μὴ δ' ἐφουδάγγελας εἶναι,  
 παυσάμενός μιν ἄνωχθι μάχης ἢ δ' ἐπὶ πολέμοιο  
 ἐρχομαι μετὰ φύλα θεῶν· ἢ εἰς ἄλλα δῖων·  
 ὧ δ' ἐμοὶ οὐκ ἐπείεσσι πεπείσινται ἀλλ' ἀλεγρήσθ·  
 φραζέσθω δ' ὑπὲρ τα κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,  
 μή μ' οὐ δ' κρατερός περ ἰῶν ἐπιόντα ταλάσῃ  
 μεῖναι, ἐπὶ ἴο φημὶ βίη πολλὴ φέρτερος εἶναι,  
 καὶ γὰρ ἦ πρότερος· τῷ δ' οὐκ ὅθεται φίλῳ ἕτορ  
 ἴσον ἐμοὶ φάσθαι, τὸν τε συγέυσσι καὶ ἄλλοι·  
 Ως ἔφατ', οὐ δ' ἀπίθῃσι ποσφύνητος ὠκεία ἴεσι,  
 βῆ δ' ἐκ αὐτῶν ἰδαιῶν ὀρίων εἰς ἱλίον ἱρὸν·  
 ὧς δ' ὅττω ἐκ νεφείων πῆται νιφάε, ἢ ἐχάλασεν  
 ψυχὴν ὑπὸ ῥίπῃς αὐθην γένεος βορέαο,  
 ὧς κραιπνῶς μεμαυῖα δῖε πῆλα ὠκεία ἴεσι·  
 ἀρχὴ δ' ἰσταμένη, πρὸς σέφῃ κλυτὸν ἱεροσύγατον,

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ .

Χερσὶ καταπρηνέας, ὅλσφυρόμηνος δ' ἐπὶ πρὸς ἑνὶ  
 Μῆνυρ μοι νεμιαγέσσετ' ὀλύμπια δώματ' ἔχοντός,  
 τίθ' ἔδαι φόνον υἱὸς ἰόντ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν  
 εἴπερ μοι καὶ μοῖρα δ' ἰὸς πληγὴν κεραινεῖ  
 κτεῖναι ὁμῶς νεκύνεσσι μετ' αἵματι καὶ κοινήσῃ.

Ὡς φάτο· καὶ ῥ' ἵππυς κέκλετο, δὴ μὲν τε, φόβον τε  
 (δρυγύνειν, αὐτὸς δ' ἐντὶ ἐδύσσο παμφανέωντα·  
 ἔθα κέπεσ μείζων τε καὶ ἀργαλιώτερος ἄλλος  
 πὰρ δ' ἰὸς ἀθανάτοισι χόλος καὶ μῆνεις ἱτυχθῆ·  
 εἰμὴ ἀθρήνῃ πᾶσι πεισθ' εἰδέσσαι θεοῖσιν,  
 ὦρθε δ' ἔκ προθύρου, λίπε δ' ἐξ ὀνόρου ἐνθα θάασαι.  
 τοῖδ' ἀπὸ μὲν κεφαλῆς κόρυθ' εἴλετο· καὶ σάκος ὤμας.  
 ἔχχετο δ' ἔειπε· σβαρῆς ἔκ χειρὸς ἔλυσαι  
 χαλκίον, ὃ δ' ἐπέεσσιν ἀθάπτετο θῦρον ἄρκε.

Μαιόμενε, φρένας ἡλίου, δ' ἐφθορας ἡ νύτοιαύτας  
 οὐατ' ἀκύνεμιν ἐς νόος ἀπόλωλε καὶ αἰδώς  
 οὐκ αἶψα ἄτε φησὶ θεὰ Λοκώλειον ἦρ·  
 ἢ δ' ἡ νῦν πὰρ (ἡνὸς ὀλυμπίης ἐλύλαθεν.  
 ἦε θέλεις αὐτὸς μὲν ἀναπλήσας κακὰ πολλὰ,  
 ἔκ τ' ἱμῶν οὐλύμπιον δὲ καὶ ἀχνύμενός περ ἀνάρκῃ;  
 αὐτὰρ ὁ τοῖς ἄλλοισι κακὸν μέγα πᾶσι φυτεύσαι.  
 αὐτίκα γάρ τ' ὤας μὲν ὑπερθύμους καὶ Ἀχαιοὺς  
 λείπε· ὃ δ' ἡμίας ἔσι κνέδοι μύσῳ ἐς ὀλυμπον.  
 μάρτεσ δ' ἐξείης ὅς τ' αἴτιος, ὅς τε καὶ οὐκί.  
 ἔπειδ' ὁ νῦν κέλεμαι μεθέμην χόλον υἱὸς υἱός.  
 ὕδ' ἡ γάρ τις τῶδε βίω καὶ χυῖρας ἀμείνων;  
 ἢ πέφατ' ἢ καὶ ἔπειτα πεφύσεται· ἀργαλίον δ' ἐ  
 πάντων ἀνθρώπων ῥῦσθαι, γυνήν τε πόρην τε.

Ὡς ἐπὶ σ' ἔειπεν ἄρ' ὅν' ἐν θῦρον ἄρκε.  
 ἔπειδ' ἀπόλλωνος καλίστατο δώματ' ἔκτοσ,  
 ἔπειδ' ἔπειτα

ἦχος δ' ἀπὲρ ὕλμπον, ὁμηγερέων δ' ἐπὶ λῶν  
 ἀθανάτοισι θεοῖσι διὸς δόμῳ· δι' ἵδοντες,  
 πάντες ἀνὴ ἱέων, καὶ δαιμονόωντο δέπασιν.  
 ὃ δ' ἄλλες μὲν ἔασιν, θέμιστ' ὅ κε λυπαρὺν  
 δέκτο δέπας, πρώτη γὰρ ἐναυτὶν ἦλθε θέεσσα·  
 καὶ μιν φωνήσας ἔπια πειρόμεντα προσήειπεν·  
 ἦρκα τί πη βέβηκας ἀτυφόμεν' ὅ γε κίπας;  
 ἢ μάλα δ' ἡ σε φρέσιν κρόνον πάϊς, ὅς τοι ἀκροίτης;  
 Τὴν δ' ἠμείβεται ἔπειτα θεὰ Λοκώλων ὅτ' ἦρκα·  
 μή με θεὰ θέμι ταῦτα διεύριο, οἶδ' αὖ καὶ αὐτὴ·  
 οἷός κε ἐν θυμὸς ὑπερφίαλος καὶ ἀπλωής·  
 ἀλλὰ σὺ γ' ἄρχε θεοῖσι δόμοις ἐνὶ δαυτός· εἴσῃς  
 ταῦτα ὅ καὶ μετὰ πᾶσιν ἀκρόσσειαι ἀθανάτοισιν,  
 οἷα βύς κεικὰ ἔργα πιφανέσκειται, οὐδ' ἐτι φημί  
 πᾶσιν ὁμῶς θυμὸν κεχαρησέμεν, οὔτε βροτοῖσιν  
 οὔτε θεοῖς, εἴ περ τις νῦν δαίνυται εὐφρων·  
 ἢ μὲν ἄρ' ὥς ἐπέεσσιν, καθεῖστο πότνια ἦρκα·  
 ὥχθησεν δ' ἀνὰ δῶμα διὸς θεοῖσιν, ἠδ' ἐγέλασεν  
 χέλιον, οὐδ' ἐμείωπον ἐπ' ὀφρύσι κυανέην  
 ἰάνθη, πᾶσιν ὅ γε νιμασθεῖσιν μετ' ἡύδα.  
 Νῆπιοι δ' ἰσὶ μὲν καίνοντο μὲν ἀφρονέοντες,  
 ἢ ἔτι μιν μέγα μὲν καταπαυσέμεν ἄτορον ἰόντες,  
 ἢ ἔπειτα, ἢε βίη, ὃ δ' ἀφ' ἡμῶν ὅτ' οὐκ ἀλιγίστη  
 οὐδ' ὀδυται, φησὶν γὰρ ἐν ἀθανάτοισι θεοῖσι  
 κάρτεϊ τε δεινῇ τε διακρίδ' ὅρ' εἶν' αἴετος·  
 τοῦδ' ἔχει· ὅτ' ἵκεν ὕμμι κακὸν πέμπησιν ἑκάσθ'·  
 ὅθι γὰρ νῦν ἔλπομ' ἄρ' ἡ γὰρ πῆμα τετύχθαι,  
 ἡδὲ γὰρ δι' ὅλωι μάχῃ ἐνὶ φίλτατ' ὅτ' ἀνδρῶν  
 ἀσκάλαφος, τὸν φησὶν ὅρ' ἐμμεναι ὄβριμος ἄρ' ἡ  
 ὧς ἔρατ', αὐτὲρ ἄρης θαλερῶ πιπλύνετο μῆρ' αἰ.



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ.

ἔρχο νῦν μετὰ φύλα θινῶν καὶ διῦρο κάλει σπον  
 δειν τ' ἰλθίμεναι καὶ ἀπολλῶνα κλιπτότοξον,  
 ὅφρ' ἡ μῦν μετὰ λαὸν Ἀχαιῶν χαλκῶ χιτῶνων  
 ἔλθῃ, καὶ ἵπῃσι ποσειδάωνι ἄνακτι,  
 παυσάμενον πολέμοιο, τὰ δὲ πρὸς δῶμαθ' ἰκέσθαι.  
 ἔκτορα δ' ὀρύνησι μάχῃ ἐς φοῖβος ἀπολλων  
 εἰ πῆσ' ἐμπνύσῃσι μὲν ὅ, λελάσθῃ δ' ὀδυσῶν.  
 αἱ νῦν μιν τείρῃσι κατὰ φρένας, αὐτὰρ Ἀχαιοὺς  
 εὖ πῆσ' ἀποσφίτῃσιν, ἀνάγκιδ' αὖ φύζω ἐν ὄρεσσιν.  
 φεδύγοντο δ' ἐν νηυσὶ πολυκλήσιν πῆσσαι  
 πηλείδῃ ἀχιλλῆος, ὃ δ' ὤνείσῃ ἐν ἱεῶν.  
 πάρολον, τὸν ᾧ κτῶνι ἔρχετ' ἑαίδιμ' ἔκτορα,  
 ἰλίῳ προπάρῃσι πολλοῖς ὀλίσσωντ' ὤϊονες  
 τοὺς ἄλλους, μετὰ δ' ἡδὲν ἰμὲρ ἄρπησθ' ἀδίων.  
 τῷ ᾧ χροῶσά μιν ὅ κτῶνι ἔκτορα δῖος ἀχιλλεύς.  
 ἐκ τῶ δ' ἄντοι ἔπειτα παλῖωξιν παρὰ νηῶν,  
 αὖτις ἔγ' ὠ τδύχοιμι διαμπερές, ἐσὸς ἄχαιοι  
 ἴλιον αὖτ' ἔλθω, ἀθλῶαίης σφ' ἐβλάσ.  
 τὸ πρῖν δ' οὐτ' ἄρ' ἔγ' ὠ παύσω χόλον, οὐτ' ἐπὶ τῇ ἄλλῃ  
 ἀθανάτων, δῖαν ἀοῖσιν ἀμυνέμεν ἰνθάδ' ἐσσο.  
 πρῖν γὰρ τὸ πηλείδῃσι τι λυτῇ θῆναι ἐλπίσιν.  
 εἰς δὲ ὑπέρβω πρῶτον, ἐμῷ δ' ἐπένιυσαι κάρησιν  
 ἔμπασι βῶ, ὅτ' ἐμῷ θινὰ θέτις ἦτορ χυόνων.  
 λισσομένην τιμῆσαι ἀχιλλεῖα πηολίπορθον.  
 Ὡς ἔφατ' οὐ δ' ἀπίθῃσι θινὰ λούκῳ λον ἦρη.  
 βῆ δ' κατ' ἰδαιῶν ὀρέων ἐς μακρὸν ὄλυμπον.  
 ὧς δ' ὅτ' ἀναΐξῃ νέος ἀνέρος, ὅς τ' ἐπὶ πελλῆσιν  
 γαῶν ἔλθῃσθ' ὡς φρεσὶ πινυκαλίμῃσι νοήσῃ  
 ἐνδ' ἑνῇ, ἢ ἐνθα μνησιν ἡσθεῖτε πολλὰ,  
 οἱ κραπυῖς μεμαυῖα δῖε κτῆσιν πότνια ἕρη.

ἦν δ' ὀλιγηπείλων· ἐμὶ δ' οὐδ' ὧς θυμὸς ἀνίσταται  
 ἄλγος δ' οὐδ' ὕπνῳ ἡρακλῆϊ θεόιο.

τὸν σὺ ξυρὲ βορέη ἀνέμῳ πεπιθῆσαι θυέλλῃ  
 πέμψας ἐπ' ἀρπύγην πόντον καὶ κάμιν·  
 καὶ μιν ἔπειτα κόων δ' εὐνοομένην ἀπέειπε·  
 τὸν μὲν ἐγὼν ἐνθεν ῥυσάμεν καὶ ἀνέγκωμεν ἄντι  
 ἄργος ἐς ἱππόβοτον καὶ πολλά περ ἀθλήσασθαι·  
 τῶν δ' ἄντι μιν ἔσθ' ἡ ἀπολήξῃς ἀπατοῶν,  
 ὅφρ' εἴδῃς ἦντοι χαρίσμεν φιλότις τε καὶ εὐνός,  
 ἦν ἐμὶ γὰρ ἐλθόντι θεῶν ἄπο, καὶ μὴ ἀπάτηται

Ως φάτο, ῥίγησεν δ' ἐβοῶπις πότνια Ἥρη.

καὶ μιν φωνήσας ἔπειτα πῆροῦντα προσκύνει·  
 ἴσῳ νῦν τόδ' ἐγὼ καὶ οὐρανὸς· εὐρὺς ὕπερθεν  
 καὶ εἰς κατὰ βόμβρον συγὸς ὕδωρ, ὅς τε μέγιστος  
 ὄρεος, δεινότατός τε μέλει μακάρεσσι θεοῖσι.  
 σὴ δ' ἱερὴ κεφαλὴ, καὶ τοῖσιν ἄλλοις αὐτῶν  
 κυρίδιον, εἰ μὲν οὐκ ἄν ἐγὼ ποτε μάτ' ὁμόσασμι  
 μὴ δ' ἐμὴν ἰότητα προσφθάρῃ νοστήσας,  
 πημαίνεις ῥῶάς τε καὶ ἔκτορα, τοῖσι δ' ἀρήγῃ·  
 ἀλλὰ πῃ αὐτὸν θυμὸς ἐπορύνει καὶ ἀνώγει.  
 τέρομεν δ' ἐπὶ νηυσὶν ἰδὼν ἐλέησεν ἀχαιούς·  
 αὐτὰρ τοὶ κακύνοντες ἐγὼ παραμυθισάμεν,  
 πῇ ἴμεν, ἥ κε δὴ σὺ κελαινὴ φῆς ἡγεμονεύοις.

Ως φάτο, μέδισεν δ' πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε  
 καὶ μιν ἀμειβόμενος ἔπειτα πῆροῦντα προσκύνει·  
 εἰ μὲν δὴ σὺν ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρη,  
 ἴσῳν ἐμοὶ φρονέουσα μετ' ἀθανάτοισι καθίλοισ·  
 τοῖσιν καὶ προσφθάρῃ γε, καὶ εἰ μάλα βούλεται ἄλλῃ,  
 αἶψα μεταστρέψε νόον μετὰ σὸν, καὶ ἐμὸν κῆρ·  
 ἀλλ' εἰ δὴ εἴς τινος γέ γε ἀφικέως ἀγορεύουσιν

ΙΛΙΔΟΣ Ο ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ο Χρονίδης κι χόλωτ' ποσά δ' άδωνι κτά' ήρη.

Υπέρ' επεί διά τε σκόλοπας κτά' τάς  
φρονέουσας  
φεύγοντες, πολλοί δ' έ διά μιν δάκ  
ρυάων υπό χρσίην.

οι μιν δ' ή παρ' έχισφιν έρητύοντο μένοντες,  
χλωροί υπαί δάϊς πεφοβημένοι. ήρτο δ' ήρτο  
Ιδης εν κορυφήσι παρ' άχρυθρόνυ ήρης  
εή δ' άρ' άναΐξας Ιδ' ή τ' άσας κτά' άχαιούς.  
φύς μιν όεινόμενους, όύς δ' έ κλονέοντας όπιπτον  
εργήτας. μετ' ές φη ποσά δ' άδωνά' άνακτα,  
έκτορα δ' εν πιδίω Ιδ' έ κέκμηον, άμφι δ' έταϊροι  
εΐαθ' όδ' άργαλίω έχρητ' άσθηματι κήρ άπινύσσοντες  
αίμ' έμίων, επεί ού μιν άφασρότατος έάλ' άχαιών  
τόν δ' έδών έλίησι πατήρ άνδρών τε θιών τε.  
θηνάδ' υπό φρα Ιδών ήρω προς μύθον έβαν.  
ή μωλα δ' ή ακότι χυθ' άμήχανε σός δ' όλος ήρης  
έκτορα δ' ίοι έπασσε μάχης έφοβήσε δ' έ λαούς.  
εμάν οϊδ' έ άυτε, κακέρ' έφίης άλιγενής  
πρώτη επεύρηαι, καί σε πληγήσιν ήμάσσω,  
εμ' έ μέμνη ότε τ' έχρίμω ύπό θανέκ' ή ποδούρην  
έκμονας ήκα δ' ύω περι χρσί δ' έ δισμόν ήλθε  
χρύσειον άρ' έρηκην. σν δ' εν αθήει κτά' νεφέλησιν  
έχρίμω, ήλίαςίον δ' έ θεοί κατ' ά μακρόν όλυμπον.  
λυσσε δ' ήκ' έδύναντο. παρ' άσταδόν, έν δ' έ λαοβοίμω  
ή ήλ' έκασιν τεταγθι από έηλόν. ήρ' άν ήκηται

ἄνδρ' ἰφίθ' ἐλθόντι γαίνυσθαι ὁπότε καὶ δὴ  
 ἔκβοις, σὺν ἰηυσὶ νεώμεθα κυροὶ ἀχαιῶν.  
 Ως φάτο. θεὸς δ' ἄρα πάντας ὑπὸ χλωρόν δι' οὐκ ἔλπει  
 πολέησεν ὃ ἕσπερ, ὅσοι φύγοι αἰπὴν ὀλιβορῶν.  
 Ἔσπερ νῦν μοι μέσαι ὀλύμπια δώματ' ἔχουσιν,  
 ὅς τις δὴ πρῶτος βροτόεντ' ἀνδράχρ' ἀχαιῶν  
 ἔρατ', ἐπεὶ ἔκλινε μολχῶ κλυτὰς ἰννοσίγαια.  
 αἶας ῥ' ἀπρῶτος τελαμώνιος ὕρπιον οὔτα.  
 γυρτιάδῳ μυσῶν ἡγήτορα καρτιροθύμων.  
 φάληκῳ δ' ἀντίλοχῳ καὶ μίρμιρον ἔξονάεξιρ.  
 μηειόνης ὃ μύρωτι, καὶ ἰπποτίῳ κατ' ἰκτα.  
 τεύχεος δὲ προθόωνάτ' ἐνήραρ καὶ πειφῆτῳ.  
 ἀρεΐδῃ δ' ἄρ' ἐπ' ἔθ', ὑπερβύρορα ποιεμένα λαῶν,  
 οὔτα κατὰ λαπύρῳ, διὰ δ' ἐντιρα χαλκὸς ἄφυσιν  
 δηώσας, ψυχὴν ὃ κατ' ἔταμένῳ ὠπλήρ,  
 ἔσπερ ἐπιγεγομένη, τὸν δὲ σκότος ὅσ' ἐκάλυψε.  
 πλείους δ' αἶας ἔλπει ὀϊλῆος τὰ χυρὴ ἡός.  
 ὃ γὰρ οἱ πρὸς ὁμοῖος ἐπισπείδου περὶν ἦεν  
 ἀνδρῶν φεαλόντων, ὅτε τε ξένος ἐν φέρον ὥρσῃ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ο. ΟΜΗ-  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ἦς ἐγρῶντες καὶ θεασάμενοι θεὸς ῥῶας νικαμένους,  
 ἔραον ἐπιπλήσει, καὶ ἵεν μεταπίμπει πρὸς πο-  
 σιδῶνα κελεύων ἀφίστασθαι τῷ πολέμῳ, ἀπολλοῖα δ' ὃ  
 ἔπειτα ἀναρρῶσθαι πρὸς ἑκαστὰ. ὁ δὲ ἀναλαβὼν αὐρίδα, θεὸς ἐλ-  
 λωας εἰς φυγὴν ῥίπει. καὶ μέχρι τῶν ἰδῶν σωδιωχέων  
 των. αἶας δὲ τελαμώνιος πολλὰς ἀναιρῶν τῶν πολυμήνων,  
 θεὸς τὰς ναυσὶ πῦρ ἐπιφέρειντα.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἢ πᾶσι αὖτε γὰρ γενή· ἀρχισαῖώκῃ.  
 ἦ ῥ' εὖ γινώσκων βῶκε δ' ἄχος ἱλαβὲ θυμῷ.  
 εἶδ' ἀκάμας πρόμαχον βοιώπον οὗτασι δ' ἄρ' ἰ,  
 ἀμφὶ κασιγνήτῳ βεβῶκε, ὃ δ' ὑφίλκε ποδοῖν.  
 ἔειδ' δ' ἀκάμας ἐκπαγλὸν ἐπνύξατο μακρὸν αἶψαι·  
 ἀργεῖοι ἰόμωροι ἀπὸ φλάων ἀκόρητοι.  
 οὐδ' ἴλω οἰοισὶν γε πόνος τ' εἴσεται καὶ οἵζυς  
 ἡμῖν, ἀλλὰ ποθ' ὦλε κατὰ κτανείδι καὶ ὕμμοις,  
 φρουρεῖδ' ὡς ὕμῖν πρόμαχος δειδυμμένος· εἴωδ'  
 ἐγχαίμῳ, ἵνα μὴ πεκασιγνήτοιο γε ποινή,  
 δῆρ' ὃν αὐτὸς εἶη, ἔειδ' ἑπὶ κίπῃς ὕχεται ἀνὴρ,  
 γνητὸν ἐνὶ μεγάροις ἄριστος ἀλκτῆρα λιπίδα.  
 ὣς ἔρατ'· ἀργεῖοισι δ' ἄχος γένετ' οὐξ ἀμείνοιο.  
 πλώϊλιω δ' ἔμολλετο δαΐφρωνι θυμὸν δεινῇ.  
 ὠρμήθη δ' ἀκαμῶντος ὃ δ' ὕχ' ὑπέμεινεν ἔρατ'  
 πλώϊλεοιο ἀνακτ'· ὃ δ' οὗτασεν ἰλιονῆα,  
 εἶδ' ὃν φόρβοντος πολυμήλῃ· τόν ῥα μέλισσαι  
 ἱρμύας βῶων ἐφίλῃ, καὶ κτῆσιν ὅπασαον.  
 ἔειδ' δ' ἄρ' ὑπομήτηρ μῦθον τέκεν ἰλιονῆα,  
 ἦν τόθ' ὑπ' ὀφρύσιν οὗτα κατ' ὀφθαλμοῖο θέμεθλα,  
 ἐκ δ' ὥστε γλῆνῳ δόρυ δ' ὀφθαλμοῖο διαπρὸ  
 καὶ στήϊν ἦλθεν, ὃ δ' εἶσο χεῖρε πετάσσας  
 ἀμφω, πλώϊλεως δ' ἱρυσάμενος ξίφος ὀξύ,  
 αὐχένῃα μέσσην ἔλασεν, ἀπήραξεν δ' χαμαὶ ἔει,  
 αὐτῇ σὺν πύλῃκι, ἐπὶ δ' ὀβριμον ἐγχαίρει.  
 ἦεν ἐν ὀφθαλμῷ, ὃ δ' ἦ κῶδ' ἴδαν ἀναχῶρ.  
 πέφραδ' ἔτε βῶεσσι, καὶ δόχ' ὀμνυτο ἔπος ὕνδα.  
 ἐπὶ μέγαί μοι βῶδ' ἀγαυὴ ἰλιονῆα,  
 πατρὶ φίλῳ καὶ μητρὶ γοήμῃσιν ἐν μεγάροισιν.  
 οἷον γὰρ ὃ προμάχιο δόλωμαρ ἀλιγλωρίδατο,



ἔνδοσι δ' ἔκ' ὅν ἄρα νόμῳ τίκτε νηὶς ἀμύμονος.  
 ἔνδοσι βυβλίεσσι παρ' ὀχθίας ἀτνιόσιντο.  
 τὸν μὲν οἴλοισι δ' ἔκ' ἐκλυθεῖς ἐγγύθεν ἔλθων.  
 οὕτω κατὰ λαπαρῶν. ὅδ' ὀνείδων, ἀμφὶ δ' ἔρ' αὐτῶ  
 τῶς καὶ δάναοι συναγρον κρατερὴν ὑσμίνων.  
 ἔκ' δ' ὅτ' ἐπελυσθ' ἀμασ' ἐγχεσθ' αὐτὸς ἦλθεν ἀμύντορ  
 πανθοίδης, βάλε δ' προδοήνορα διεξὶν ὤμων  
 ἦν ἄρηιλύκειο. δὴ ὤμῳ δ' ὄβριμον ἐγχεσθ'  
 ἔχων. ὅδ' ἐν κονίῃσι πεισῶν, ἔλε γαῶσαν ἄροσθ',  
 πελυσθ' ἀμασ' δ' ἐκπαρσεν ἐπεύξας μακρὸν αἴψας  
 ὅ μιν ἄντ' οἶω μεγαθύμῳ πανθοίδῳ  
 χερὸς ἀπὸ εἰαρή, ἄλιον περὶ ἥσασαι ἄκνεντα,  
 ἀλλὰ περ ἄρ' ἔσαν κόμισι χροί. καί μιν οἶω  
 αὐτῶ σκηπτόμῳ κατὰ μῆνι δόμοις ἵκθης εἶσθαι.  
 ὅς ἐφ' ἄρ' ἄρ' αἰοισι δ' ἄχος γένετ' ὀδύμειοιο,  
 αἴαντι δ' ἡ μάλιστα δαΐφρονι θυμὸν ὄνει,  
 ἔκ' τελαμωνιάδῃ. τὸ γὰρ πείσεν ἄρ' ἡ μάλιστα.  
 παρπαλίμως δ' ἀπιδόντος ἀκόντισε δ' ἐρὶ φασγῶ.  
 πελυσθ' ἀμασ' δ' αὐτὸς μὲν, ἀλὺα κῆρα μέλαινα,  
 ληριφίς αἴψας, κόμισεν δ' ἀντήνορ' ἔκ' ἦος  
 ἀρχιλοχος, ἔκ' γὰρ ῥ' ἀθροὶ βούλευον ὀλεθρον.  
 τὸν ῥ' ἐβαλον κεφαλῆς τε καὶ ὤχινος ἐν σωτοχμῶ.  
 νείκεν ἀσράζαλον, ἀπὸ δ' ἀμφὶ κέρσι τίνοντι  
 τὸ δ' ἐπὶ πολὺ πρότερον κεφαλῇ, σόματι, ῥῖνις τε.  
 οὐδέ τι πλὴν ἔπ' ἐκ κνήμα καὶ γούνα πείσονται.  
 αἴας δ' αὐτὲ γέγονεν ἀμύμονι πελυσθ' ὀμμαντι.  
 φράζο πελυσθ' ἀμα, καί μοι νημερτὲς ἐνισπῶ.  
 ἔρ' ὅτ' ἔχουσιν ἀνὴρ προδοήνορ' ἀντιφασγῶ  
 ἄξιος, ὅ μιν μοι πακὸς εἶδεται ὅ δ' ἐκ πακῶν ἔξ.  
 ἀλλὰ πρὸς γνητὸς ἀντήνορ' ἐπελυσθ' ἀμῳιο.

## 2000

သို့သော်လည်း

βάν ῥ' ἰμῶ, ἔρχετ' ἄρα σφι ποταδάων ἰνασίχθωρ.  
 δφνὸν ἄορ ταυυήκοις ἔχων ἐν χειρὶ παχείῃ.  
 ἵκελθον ἀεεφοπῇ, ἰσθ' δ' ὕθ' ἐμὸς ἐς ἰμῶνα,  
 ἐν δαί λινυγαλίῃ, ἀλλὰ δέος ἰσχωρὶς ἀνδρας.  
 τῶας δ' αὐθ' ἐτέρωθεν ἰκόσμε φαιδίμος ἔκτωρ.  
 δὴ ῥα τότ' αὐνοτατῶν ἔειδε πολλέμοιο τάνυσσας  
 κυανοχοῦτα ποσσίδων κ' φαιδίμος ἔκτωρ.  
 ἦρι δ' μ' ῥῶεσιν, ὅδ' ἀργείοισιν ἀρύγων.  
 ἐκλινῶν ὃ θάλασσα ποτὶ κλισίας τε νείας τε  
 ἀργείων. οἱ δ' ἔνυσσαν μέγαλ' ἀλαλητῶ.  
 οὔτε θαλάσσης κύμα τέθ' βοάα προτὶ χεῖρ' ὄν  
 πόντοθ' ὀρνύμηνον πνοιῇ βορίῳ ἀλεγεινῇ,  
 οὔτε πυρὸς τόσος τε ποτὶ βρόμος αἰθομένοιο,  
 οὔρεος ἐν βύσσης ὅτε τ' ὤρσο καί μιν ὕλλω.  
 ἔτ' ἄνεμος τόσος γε ποτὶ θυσὶν ὑψικόμοισιν  
 ἦπύε. ὅστε μωλίσσας μέγα βρίμεται χαλιπαίνων,  
 τόσῃ ἄρα τῶων καὶ αἰχμαδῶν ἐπλῆσθ' ὦν  
 δανὸν αὐπαλων, ὅτ' ἐπ' ἀμλήσοισιν ὄρυσαν.  
 αἶαντος δ' ἡρώτος ἀκόντισε φαιδίμος ἔκτωρ  
 ἔρχε. ἐπὶ τέτραπ' ὁ πρὸς ἰθὺ οἱ ὕδ' ἀφάμαρτι.  
 τῇ ῥα δ' ὤ τελαμῶν περὶ εἴθ' ἐσι πετάδιω.  
 ἦρι δ' μὲν σάκε' ὅ, δ' ὃ φασγῶνα ἀργυροήλη.  
 τῶ δ' ἰρυσάδιω τέρινα χροά χῶατο δ' ἔκτωρ.  
 ὅτ' ἰρῶ δ' ἐβίβας ὠκὺ ἰτώσιον ἐκφυγε χεῖρος.  
 ἀφ' δ' ἔταρσαν ἐς ἔθνος ἰχωρὶς κῆρ' ἀλείνων.  
 τὸν μὲν ἐπ' ἔτ' ἀπιοῦτα μέγας τελαμώνιος αἶας,  
 χρῆμαδ' ὦ, τὰ ῥα πολλὰ θεάων ἔχματα νηῶν  
 πᾶρ ποσσὶ μαρναμένον ἐκυλίνδ' ὄ. τῶν ἐν αἶρας,  
 εἴθ' ὅς βεβλήκει ὑπὲρ ἀντ' ὅς ἀρχοῖ δ' ἰδρῆς.  
 πρόμβον δ' αἶας ἐκρυβε βαλὼν, περὶ δ' ἐφ' ἀριπλωντῇ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

Εἰς θίαν ὤντας ἀχαιῶν νηδύμος ὕπνῳ.

ἀγγελίῳ ἱρίων γαιήχῳ ἰννοσιγαίῳ.

ἀρχὸν δ' ἰσάμεν ὅτι πια πῆροεντα προσυῖδα.

Πρόφρων νῦν δαναοῖσι ποσὶ δάων ἐπάμωρον,  
καὶ σφιν κῦδος ὅπαρ μίνωθ' ἀπ' ὅρ' ἐπὶ νῦθ  
ἴνῃς. ἐπὶ αὐτῷ ἐγὼ μαλακὸν περὶ κῶμα κάλυψα.  
ἔρη δ' ἐν φιλότῃ παρήπαφον δύνῃθῃναι.

Ὡς ἐπών, ὁ μὲν ὥχῃ δ' κλυτὰ φύλ' ἀνερῶπαρ.  
τόν δ' ἐπὶ μάλλον ἀνῆκον ἀμώμῳ δαναοῖσιν.  
αὐτίκα δ' ἐν πρώρῃσι μέγα προθερὼν ἐκίλυσαν.

Ἀρχεῖοι καὶ δ' αὐτε μεθέμῃ ἐκτοεινίκῳ  
πριαμίδῃ, ἵνα νῆας ἔλῃ καὶ κῦδος ἀρήται;  
ἀλλ' ὁ μὲν οὕτω φησὶ καὶ εὐχεται οὐκ ἀχιλλεύς  
πηνσὶν δ' γλαφυρῇσι μίνε κεχλωμένῳ ἦτορ.  
κείνῃ δ' οὐ πλίῳ πωθῇ ἱεῖται, ἔκον δὲ ἄλλοι  
ὁμῆς ὄρωσιν ἀμώμῳ ἀλλήλοισιν.  
ἀλλ' ἀρεθὺς ὡς ἂν ἐγὼ ἵπῳ πεθώμῃ παλντό.  
ἀσπίδας θάσσειν ἀεῖσαι ἐνὶ στρατῷ ἡδ' ἐμίσσαι  
ἱεσάμενοι. κεφαλὰς δὲ παναίθῃσιν κερύθειαι  
κρυψάντο. χερσὶν τε τὲ μακρότατ' ἐγχεῖλοντό.  
ἴομῃ. αὐτὰρ ἐγὼν ἠγέσθαι, ἔδ' ἐπὶ φημί  
ἐκπρα πριαμίδῃ μῆριν μάλα πρὸ μιμαῶτα.  
ἔδ' ἐκ' ἀνὴρ μῆρι χαρμος ἐχέδ' ὀλίγον σάκας ὥμῳ  
χείρῃσι φατὶ δότω. ἔδ' ἐν ἀσπίδι μέγιστον δῶτω.

Ὡς ἱφάθ. οἱ δ' ἄρα τὸ μάλα μ' κλύον. ἡδ' ἐπὶ θόν.  
ἴνῃς δ' αὐτοὶ ἐκσιλῆς ἐκόςμιον, ἐτάμῃσι πρὸ.  
τολίδῃς ὀδυσσεύς τε, καὶ ἀρεῖδῃς ἀραμέμενον.  
οἰχόμενοι δ' ὅς παλντας, ἀρήϊα τινέχ' ἀμειβορ.  
ἔδ' ἀλλὰ μὲν ἔδλῃν ἔδλῃν. χέρῃσι δ' ἔδλῃν δόσκον.  
αὐτὰρ ἐπὶ δ' ἱεσάει περὶ χροὶ γάρωπα χαλκόν.

Εἰς θ

ἦρ' ἱρκαλῆα κρατερόφρονα γένετο παῖδι·  
 ἦδ' ἐδίωνυθον σεμίλην τέκε χάριμα βροτοῖσιν·  
 ἦδ' ὅτε δ' ἡμῆρος παλιπλοκαμοιο ἀνώγει·  
 ἦδ' ὅποτε λητοῦς εἰκυδέος· ἦδ' ἐσὺ αὐτῆς  
 ὡς σ' εἰο νῦν ἔραμαι· καί με γλυκὺς ἱμῆρος αἰρεῖ·

Τὸν δ' ὀδλοφρονέουσα προσήνδα πότνια ἕρη·  
 ἀνότατε χρονίῳ ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες·  
 εἰ νῦν ἐν φιλοτῇτι λιλαίῃα δυνήσῃαι  
 ἴδῃς ἐν κρυφῇσι τὰ δ' ὑποπείφονται ἄποινα  
 πῶς κ' εἶσι· εἰ πῆς νῶϊ θεῶν ἀσχευντάων  
 εὐδοντ' ἀσχεύσει θεοῖσι δ' ἐπᾶσι μετιθῶν  
 πεφρωσθῇ· ἔκ' ἂν ἔγωγε τιὸν πρὸς δῶμα νιοίμην  
 ἐξ δύνῃς ἀνᾶσσε· νεμεσσηδὲν δ' ἔκων εἶην·  
 ἀλλ' εἰ δ' ἕρ' ἐθέλεις καί ρι φίλον ἔπλετο θυμῷ·  
 ἔστι ριθάλαμος, τὸν βί φίλος ἦδ' ἐτυξεν  
 ὄφρατος· πυκινὰς δ' οὐράς σταμοῖσιν ἐπῆρσαν·  
 ἐνθ' ἰομῶ κείοντες, ἐπεὶ νῦν ρι εὐάδῃσι δύνῃ·

Τὴν δ' ἀπαμειβόμενη προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·  
 ἕρη μή τε θεῶν τό γε δίδοιθι μητέ πν' ἀνδρῶν  
 ὄφραδαι· βίῳ τοι ἐγδ' νέφος ἀμφικαλύψω  
 χρύσειον· ἦδ' ἂν νῶϊ διασφάκῃ ἥελιός περ,  
 οὐτε καὶ ὀξυτάτων πέλεται φάος ἐθραάδαι·  
 ἦ δ' ἂν καὶ ἀγκὰς ἑμαρπῇ χρόνῳ παῖς σὺν πατρίσιν·  
 βίῳ δ' ὕπερθε δὴ φῶς φῶς νιοθηλὲς ὀπίσω,  
 λωτόνδ' ἐρσηντα ἰδ' ἐκρόνῳ ἦδ' ὑάκινθοιο  
 πυκνὸν καὶ μαλακὸν, ὅς ἀπὸ χθονὸς ὑψόσ' ἔργῳ  
 βῶϊ ἐν λιξάδῳ, ὅς δ' ἐν φίλῳ ἔσαν·  
 καλὴν χρυσείῳ, σιληναὶ δ' ἀπέπιπτον ἔρσαι·  
 ὅς δ' ὡν ἀφ' ἑμας εὐδ' πατήρ ἀνὰ γαργάρε' ὤρεθ·  
 ὅπῃ καὶ φιλοτῇτι δαίμεις· ἔχιδ' ἀγκὰς ἀκροπῆρ·



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὧς δ' Ἴλιον ὧς μιν ἔρωε πυκινὰς φρένας ἀμφικάλυψεν  
 οἶον ὅτε πρῶτισεν ἐμὲ γέλω φιλότητι,  
 εἰς δὲ νῆα φοιτῶντες φίλους λήθοντες ὅκῃα.  
 καὶ δ' αὐτῆς προπάρειθον, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκτ' ὀνόμαζον  
 ἦρ. ἡ μὲν μαυῖα κατ' ἐλὺμπυ τόδ' ἰκάνης,  
 ἵπποι δ' ὃ παρῆασι καὶ ἄρματα τῶν κ' ἐπιβάνης.  
 Τὸν δ' ὀδυσφερόνευσσε προσκῆυδα πότνια ἦρ,  
 ἔρχομαι ὀλομένη πολυφόρβη πέρατα γαίης.  
 ὠκιστὸν τι θεῶν γένεσιν, καὶ μητέρα τηθύρ.  
 διμ' ἐν σφοῖσι δόμοισιν εὐρεφον ἦδ' ἀτίταλλον,  
 βῆς εἴμ' ὀλομένη καὶ σφ' ἄκαιτα νέκεια λῶσω,  
 ὅδ' ἡ γὰρ δῆρ' ὄν χρονον ὠμύλων ἀπείχονται  
 δυνῆς καὶ φιλότης ἐπὶ χόλῳ ἐμπίσθε θυμῷ.  
 ἵπποι δ' ἐν πρυμναρῇ πολυπύδατος Ἰδης  
 εἰσᾶσ', οἴμ' οἴθυσιν ὧς φαφειρήντες καὶ ἠρόν.  
 ὅνδε σὺ νῆεσσι δειῦρο κατ' ἐλὺμπυ τόδ' ἰκάνης,  
 μύπως μοι μετέπρτα χολώσεται αἴκε σιδῶ  
 οἴχωμαι πρὸς δῶμα βαθυρῖος ὠκιστοῖο.  
 Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νηφεληγέρετα Ζεύς,  
 ἦρ καῖσ' ἐμὲν ἐσσι καὶ ὕπερον δρμηθῆναι,  
 νῆα δ' ἄγ' ἐν φιλότῃ φαπείομυ δύναντες.  
 ὃ γὰρ πῶπότε μ' ὦδε θεῶς ἔρος ἔει γυναικὸς  
 θυμὸν ἐνὶ σῦθεισι περὶ προχυθείς ἰδάμασσι,  
 ἔειδ' ὅπότε ἠρασάμην ἱξιονίης ἀλόχοιο  
 ἣ τέκε παρ' ἱερὸν θεόφιν μῆσος ἀτάλαντον.  
 ἔειδ' ὅτε περ Δανάης καλλισφύρης ἀκρισιώνης  
 ἣ τέκε περ σῆα πωλντῶν ἀειδείκτον ὀνδρῶν.  
 ἔειδ' ὅτε φοῖνιξ καὶ ὕρην τηλεκλήποιο,  
 ἣ τέκε μοι μίνωτι καὶ ὀντίθειον ῥαδάμαντω.  
 ἔειδ' ὅτε περ σιμέλῃ, ἔειδ' ἀλκμήνης ἐνὶ θύβῃ,

ἔπειτα τὴν δὲ σὺ ταῦτα μεταφράσι μνησιν  
 ἢ φησὶς ὡς φάσαν ἀρηγέμεν δὲ ῥύοπα ἦν,  
 ὡς ἡρακλῆος πίει χῶτατο παιδὸς τοῦτο.  
 ἀλλ' ἴθι ἐγὼ δὲ καὶ τοὶ χαρίτων μίαν ὀπλοτεράων  
 δῶσω ὅπυι μὲν καὶ σὴν κενεῖσθαι ἀκρίτην  
 πασιθίω, ἥς αὖν ἰμέριαι ἡματα πάντα.

Ὡς φάτο, χήρατο δ' ὕπνῳ, ἀμειβόμενος δὲ προσήύδα.  
 ἄρξιν νῦν μοι ὅμοσεν ἄκτον συγὸς ὕδαρ.  
 χαρὶ δὲ τῇ ἐτέρῃ μὲν ἔλα χθόνα πελυβοτόφραν.  
 τῇ δ' ἐτέρῃ ἄλα μαρμαρίω, ἵνα νῶν ἄπαντόν  
 μάρτυροι ὦσ' οἱ ἐνθάδε θεοὶ χρόνον ἀμφὶς ἱόντες,  
 ἢ μὲν ἐμοὶ δῶσιν χαρίτων μίαν ὀπλοτεράων  
 πασιθίω. ἥς τ' αὖτις ἐέλδομαι ἡματα πάντα.

Ὡς ἔφατ'· ὅδ' ἀπίθουσι θιά λευκῶλιν ἦρ.  
 ὦμνυε δ' ὡς ἐκίλευ· θεοὺς δ' ὀνομίωσιν ἅπαντας,  
 τοὺς ὕπνοταρταρίης, οἱ πτηνὸν καλίσονται.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ὅμοσέν τε, τελευτήσέν τε ἐν ὄρεσσιν,  
 τῷ βήτην λύμεν τε καὶ ἱμέρεν ἄστυ λιπόντι,  
 ἦ ῥα ἱεραμένω ῥίμφα πρήσαντε κέλευθορ.  
 ἴδω δ' ἰκίεω, πολυπίδαχα μητέρα θηρῶν,  
 λικεὺν ὅππῃ πρῶτον λιπέτω ἄλλα· τῷ δ' ὤ χέρσιν  
 βήτην, ἐκροτάτη δὲ ποδῶν ὑπεσείσο ὕλη.  
 ἐνθ' ὕπνος μὲν, ἔμενε πάλῳ διδὸς ὅαντι δέδιαι,  
 ὡς ἰλοῦτῳ ἀναδῆς περιμήκρον, ἢ τότ' ἐν ἴδῳ  
 μαυροτάτη πιφυῦια δὲ ἦρ' αὐθιρ' ἵσαντο.  
 ἐνθ' ἦς ὅλοισιν πεπνευσμένῳ ἐλατίνοισιν,  
 ὄρνιθι λιγυρῇ ἐναλίγκιος, ἦντ' ἐν ὄρεσσιν  
 χαλκίδα κιχλήσκεισι θεοὶ, ἀνδροῦ δὲ κύμινδιν.  
 ἦρ' ὅ κραιπνῶς προσεδύσσο γάρχαρον ἄκρον,  
 ἴδης ὕψι καὶ ἴδῃ νιφίλι χερίτε ἴνυς.

Ἰ μὲν δ' ὅτ' ἐμὸν ἔπος ἐκλυθεῖν ἤδ' ἐπὶ καὶ νῦν  
 πέθων· ἐγὼ δ' καί τοι ἐδίδωμι χολὸν ἤματα πάντα,  
 κρίμηςόν μοι βυθὸς ὑπ' ὀφρύσιν ὄσση φαεινὰ  
 αὐτὴν ἐπέεικ' ἐγὼ παραλίσσομαι ἐν φιλοότητι·  
 δῶρα δέ τοι δώσω, καλὸν βροχὸν ἀφθιτον αἶνι,  
 χρύσειον, ἥφαιστος δέ κ' ἐμὸς πάϊς ἀμφιγυῖα  
 τυξέτ' ἀσκήσεις· ὑπὸ δ' ἔσθ' ἦναι πρὸς ἡσέ·  
 ἔσθ' κεν ἐπιχόης λιπαροῦς πόδας εἰλαπινάζωρ.  
 Τὸν δ' ἀπαμείβετο προσιφώνων νηδύμῳ ὕπνῳ·  
 ἦ ῥη πρὶς θαθὰ θυγάτηρ μεγαλοιο κρόνοιο·  
 ἄλλον μὲν κεν ἔγωγε θίων αἰεγνέτωρ  
 φηῖα κατινῆσαι, καὶ ἂν πεταμοῖο ῥέεθρα  
 ὠκτανῶ, ὅς περ γένεσις πάντεσσι τέτυκται·  
 βυθὸς δ' ἔκ' ἂν ἔγωγε κρονίον' ἔαγον ἐκείμην,  
 ὃ δέ κατινῆσαι μὲν ὅτε μὴ αὐτὸς γὰρ κελύει·  
 ἦ δ' ἡ γὰρ με καὶ ἄλλο τέτ' ἐπίνυσσεν ἐφιδμή·  
 ἦματι ἔσθ', ὅτ' ἐκείνος ὑπέρθυμος διὸς Ἡός·  
 ἐπλεονίλιόθεν τῶν πόλιν ἐξαλαπώξας·  
 ὅ τοι ἐγὼ μὲν ἔθελξα διὸς νόον ἀγχιόχοιο·  
 νηδύμῳ ἀμφιχυθείς· σὺ δέ οἱ κακὰ μήσαις θυμῷ·  
 ὄρθας ἄρχαλίων ἀνέμων ὧς πόντον αἴτας·  
 καί μιν ἔπειτα κόων δ' εὐνοιομένην ἀπείδεας·  
 νόσφι φίλων πάντων, ὃ δ' ἐπεγρόμηνος χαλὴ παῖνα  
 φηῖα ὡς κατὰ δῶμα θεοῦ· ἐμὲ δ' ἐξοχα πάντων  
 βύθει, καί κε μ' αἶσον ἀπὶ αὐθέρως ἐμβαλεῖ πόντος·  
 ὦ μὲν νῆς δ' ἐμὴ τέτρα θεῶν ἰσάωσε καὶ ἀνδρῶν,  
 τήν ἐκόμην φεύγων· ὃ δ' ἐπαύετο χαλὴ μῆος περ  
 αἶψα γὰρ μὴ νυκτὶ βοῇ ἀποθύμια ἔρδοι·  
 νῦν αὖ βουτόμ' ἀνώγας ἀμήχανον ἄλλο τελίσσαι·  
 Τόν δ' αὖτε προσέειπε, βροτῶν περὶ πηγάς ἦ ῥα·

γαίης νέρθε παύσει καὶ ἀρυγέτοιο θαλάσσης.  
 οὐδ' ἴμ' ὀφρμένη καὶ σφ' ἀκείτα νέκεια λύσω.  
 ὅδ' ἂν γὰρ δὴρὸν χρόνον ἀλλήλων ἀπέχοντα  
 δύνῃς καὶ φιλοότητος. ἐπὶ χόλως ἔμπεσε θυμῷ.  
 οὐ κείνων' ἐπίεσσι παραιπιπύσασα φίλον κῆρ.  
 οὐδ' δύνῃς ὀνέσαιμι δ' ὡσθῆναι φιλοότητι;  
 οὐκ ἔσ' ἐσφί φίλητε καὶ αἰδοίην καλοῖμίω.  
 Τὸν δ' ἔαυτε προσέειπε φιλομειδῆς ἀφροδίτη.  
 οὐκ ἔσ' ὅ δ' ἔοικε τιὸν ἔπος ἀρνήσασθαι.  
 ἦνός γὰρ τοῦ ἀρίστου ἐν ἀγκυρῇσιν ἰαύεις.  
 οὐ καὶ ἀπὸ σήθισφιν ἐλύσας κισὸν ἱμάλιντα,  
 ποικίλιν, ἐνθα δ' ἐοὶ θελκτῆρας πάντα τέτυκτο.  
 ἐνθ' ἐνὶ μῶν φιλότης ἐν δ' ἱμῶς ἐν δ' ὀρεινῇ  
 πάρφρασι. ἥτ' ἐκλιψένοον πύκα πρ' φρονεόντων.  
 τὸν δ' αὖ οἱ ἐμβαλε χερσὶν ἔπος τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε.  
 τῇ νῦν τοῦτον ἱμάλιντα, τεῖ δ' ἐγκάτθις κόλπῳ  
 ποικίλιν, ὧν ἐνὶ πάλιντα τετεύχεται. οὐδ' ἐσφί φημι  
 ἀπρηκνὴν γένεσθαι δὲ φρεσὶ σῆσι πρὸν δύνει.  
 Ὡς φωνῶ. μέδισσας δ' ἐβόωπις πότνια ἔρη.  
 μεδύσασα δ' ἐπείτα ἐμ' ἐγκάτθις κόλπῳ.  
 ἢ μὴν ἔβη πρὸς δῶμα διὸς θυγάτηρ ἀφροδίτη.  
 ἔρη δ' αἰξάλα λίπον ῥίον ἐνλύμωτοιο,  
 περὶ κ' ἐπὶ ἐπὶ ἔσασα καὶ ἡμαθίῳ ἐρατὴν ἔρη.  
 σέυατ' ἐφ' ἱπποπόλων βρηκῶν ὄρεα νιφόοντα,  
 ἀκροτάτας κερυφὰς, οὐδ' ἐχθόνα μέρητι παδοίῃ.  
 ἐξ ἀθόω δ' ὅσοντον ἐβόωτο κυμαίνοντα.  
 λήμνον δ' ἐσπεφίκεν πόλιν θείοιο θόαντ' ὅ.  
 ἐνθ' ὕπνω ἱμβλήτο κασιγνήτῳ θανάτοιο.  
 ἐντ' ἄρ' αὖ οἱ φῶ χερσὶν ἔπος τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε.  
 Ὑπὲρ ἀναξ λάντων τε θείων πάλιντα τ' ὀνέσας ὅπως.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἔμπης ἰς γαῖαν τε καὶ ὕραν ἵκντ' αὐτμό,  
 τῷ δ' ἔγχε χροά παλὸν ἀλφάμειν ἰδέε χαίτα,  
 πιξάμειν, χρυσὴ πλοκάμυς ἐπλεξε φαεινούς.  
 παλούς ἀμβροσίους ἐκ κρωατοῦ ἀθανάτοιο.  
 ἄμφι δ' ἄρα ἀμβρόσιον ἱανὸν ἔσταθ'· ὃν οἱ ᾤθην  
 ἔξουσ' ἀσκήσασθαι· τίθῃ δ' ἐνὶ δαΐδαλα πολλῶ.  
 χρυσείῃς δ' ἐνετῆσι κατὰ σῆθος πρὸν ἄρ,  
 ἴωσταιτο δ' ἐῖς ὥνῳ ἱκάνθ' οὐσανοῖς ἀραρυῖαν,  
 ἐν δ' ἄρα ἱρμάτα ἔκκευ ἑὺρήρισι λαβοῖσι.  
 φίγλῃνα μορύνετα· χάεις δ' ἀπιλάμψου πολλῶ.  
 κρηδύμεν δ' ἐφύπρθε καλύφατο δ' ἴα θιάωρ,  
 καλῶ νηγατίω· λιυκόν δ' ἦν ἥλιος εἰς,  
 ποσσὶ ὕπαι λιπαροῖσιν ἰδὴ ἔα καλὰ πίδαλα,  
 ποτὲρ ἐπιδέῃ πάντῃ περὶ χροὶ θέκερ κόσμον  
 εἴη δ' ἱμῶν ἐκ θαλάμοιο, καλισσαμένη δ' ἀφροδίτῃ.  
 τῶν ἄλλων ἀπὸ νευθεθίων, πρὸς μῦθον ἔειπεν·  
 εἴ ῥα νύ μοι τί πίθοιο φίλον τέκος ὅττι κευ εἴπω,  
 ἢ κεν ἀρνύσαιο κατεσσεμένη τόλῃ θυμῷ,  
 θυμὸν ἐγὼ δάναοισι· σὺ δὲ φῶσιν ἀρήγῃς.  
**Τὸν δ' ἠμείβετ'** ἔπειτα δῖος θυγάτηρ ἀφροδίτη·  
 ἦρῃ πρὶ σβαθὶά θύγατρός μεγάλειο κρόνοιο.  
 αὔδα δ' ὅ, π φρονέας τελίσσαι δ' ἐμὲ θυμὸς ἀκωγόν.  
 ἢ δυνάμει τελίσσαι γὰ καὶ ἐτιτελισμένον ἐσὶ.  
**Τὴν δ' εὖ δολοφρονέσθαι προσσηύδα πότνια ἦρ·**  
 δὸς νῦν μοι φιλότῃ καὶ ἱμῶν, ὥτε σὺ πῶντας  
 δαμνᾷ ἀθανάτους ἠδ' ἐθνητὲς ἀνθρώπους,  
 εἴ μιν γὰρ ὀφείμην πολυφύρβη πέρι κατὰ γαίης·  
 ὠκτανόντι θεῶν γένεσιν καὶ μητέρα τηθύρ,  
 οἷ μ' ἐν σφοδρῇ δόμοισιν ἑὺφρον ἠδ' ἀτίταλθον,  
 δῖά μιν οἶον ῥέειν ὅτι, τι κρόνον δῖον ἔσπεα γένε

γαίης



ἀλλ' ἐν ποντῶν ἡγήτορος ἡδὲ μέδοντος,  
 οὐρὸν κενίσσασιν πεδίοιο, σὺ δ' ἐπὶ φέει αὐτὸς  
 φύγοντας προτὶ ἄστυ, κέων ἄπο καὶ κλισιάων.  
 οὐδ' εἰπὼν, μέγ' αὖσσαν ἐπισυμῆμος πεδίοιο.  
 ἔαροντ' ἱννέα χιλοῖ ἐπ' ἰάχον, ἢ δικά χιλοῖ  
 ὠνέροντ' ἐν πολέμῳ ἔειδα ξυμάχοντος ἄρη<sup>9</sup>  
 τόσσῳ ἐκ σήθεσφιν ὅπτα, κρείων ἐνοσίχθων  
 ἔκταν, ἀχαιοῖσιν δ' ἄλκιον δέν<sup>9</sup> ἐμβαλ' ἐκασφ<sup>9</sup>  
 καρδίῃ, ἄλκιον πολυμήθευ ἡδὲ μάχιδαι.  
 ἔρη δ' εἰσέειλε χρυσόθρονον<sup>9</sup> ὀφθαλμοῖσι,  
 εἰς<sup>9</sup> ἐξ ὅλῳ μῶριον ἀπὸ ρίγ' αὐτῆς δ' ἔγνω,  
 τὸν μῶριον πομπύοντα μάχῳ ἀνὰ κυδιάνφρα  
 αὐτοκασίγῃον καὶ δαίρα, χαῖρε δ' θυμῷ.  
 ἦν δ' ἐπ' ἀκροτάτης κερυρῆς πολυπύδατος ἰδὼς,  
 ἔμμενον εἰσέειλε, συγχερὸς δ' ἐοικὼς θυμῷ.  
 μὲν μῆειξε δ' ἐπ' ἔτα βοῶπις πότνια ἔρη,  
 ἔππῳς ἐξ ἀπορροῖα διὸς νόον ἀγχιόχοιο.  
 ἦ δ' ἐοικὼς θυμὸν ἀρίστη φαίνετο βυλῷ  
 ἰλθεῖν εἰς ἰδὼν αὖ ἐν τῷ νάσαν ἰαωτήρ<sup>9</sup>  
 εἰπὼς ἱμέροισιν παρὰ δαίμονι φιλότῃ  
 ἔχρη<sup>9</sup>, ἔειπε δ' ὕπνον ἀπῆμονώ τε, λιαρόν τε  
 χυμῷ<sup>9</sup> βλεφάροισιν, ἰδὲ φρεσὶ πενκαλίμησι.  
 βῆ δ' ἔμμενος εἰς θαλάμῳ, τὸν δ' ἐφίλει ἡδὲ ἔτευξε  
 ἔφρατος, πυκινὰς δ' οὐράς σταθμοῖσιν ἐπῆρε  
 κληῖδι κρυπῇ, τήν δ' ἐθιὸς ἄλλος ὠνέσσει.  
 ἔειπε δ' ἐπ' ἐλθέσθαι θύρας ἐπ' ἐθιὸς φαεινὰς.  
 ἐμμερόσιν μῶριον πρῶτον ἀπὸ χρῶς ἱμερόων<sup>9</sup>,  
 λύματα πᾶντα κάθηραι, ἀλείψαι δ' λίπ' ἱλαίῳ.  
 ἐμμερόσιν ἰδὼν αὖ. τότ' ἔειπε θυομένον ἦσαν.  
 οὐ καὶ κινυμένοιο δίδω<sup>9</sup> ποτὶ χαλκεβατὲς δ' ἔειπε

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

τυδ' ἐϋ, ὃν θήκησι χυτὴ κατὰ γαῖα κάλυψε.  
 πορθεῖ γάρ τρις παῖδ' οὐδ' ἑμύμονοις ἐξίγινοντο.  
 ὤκειον δ' ἐν πλευρῶνι καὶ ἀπὸ νῆα λυδ' ὦνι.  
 ὄχριος ἡδ' ἐμέλας, τρίτατος δ' ἦν ἱππότα οἰνέου.  
 πατρὸς ἐμοῖο πατὴρ. ἀριτῇ δ' ἦν ἕξοχος αὐτῶν.  
 ἀλλ' ὁ μὲν αὐτοῦ μῆνε, πατὴρ δ' ἐμὸς ἄργυρονόμος  
 πλαγχθεῖς, ὡς γὰρ πονεῖν ἤθελε καὶ θεοὶ ἄλλοι.  
 ἀδρήσοιο δ' ἐγχευθαρῶν, νοῦν δ' ὅσμιμα  
 ἀφνειὸν δίοιο. ἄλλισ δ' οἱ ἦσαν ἄρυσσας  
 πυροφόροι, πολλοὶ δ' φυτῶν ἦσαν ὄρχατοι ἀμφίς.  
 πολλὰ δ' οἱ προσβὰτ' ἔσκε, κίεσσον δ' πάντας ἀχαιοὺς  
 ἐγχεῖν, τὰ δ' ἐμέλειτ' ἀκούεμιν ὡς ἔτεόν περ.  
 τοῖ δ' ἔκ' ἄν με γένετο κακὸν καὶ ἀνάγκη δὴ φάντο  
 μῦθεν ἀπὸ μῆστη πιφασμένον, ὅκων εὐεῖπω.  
 δ' αὖτ' ἰομυρὸν πόλεμόν τε, καὶ ἔτα μιν οἱ περ ὀνείκεον.  
 ἔπειθ' ἐπεθ' αὐτοὶ μὲν ἐχώμεθα δ' ἠϊόκητ' ὅτ'  
 ἐκ βελίον, μή που τις ἐφ' ἑλκὶν ἔλκεος ἄρηται.  
 ἄλλος δ' ὀφθαλμοὺς ἐνὶ θυμῷ, οἱ τὸ πάρος περ  
 θυμῷ ἦρα φέροντο δὲ ἀφισσάσθαι, ὅδ' ἐμάχοντα.  
 ὦς ἔφαθ' οἳ δ' ἄρα τῷ μάλα μὲν κλύον ἡδ' ἐπὶ θοόν,  
 εἰ δ' ἴμην, ἦρχε δ' ἄρα σφιν ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ὅδ' ὀλοσσομένην εἶχον κλυτὰς ἐννεσίγαι' ὅτ'.  
 ἀλλὰ μετ' αὐτοῖς ἦλθε παλαῶν φωτὶς οἰκῶς.  
 Λεξιόδρην δ' ἔλεγε γὰρ ἀγαμέμνον' ὅτ' ἀρεῖδ' αἶσα.  
 καί μιν φωνήσας, ἔπειτα πηρόεντα προσεηύδα.  
 Ἀρεῖδ' ἦ, νῦν δ' ἡστυ ἀχιλλῆος ὄλεσθ' ὅκων κῆρ.  
 γήθησιν ἐνὶ στήθεσσι φόνου καὶ φύσιν ἀχαιῶν  
 Λερναίης. ἐπὶ δ' οἱ ἐνὶ φρέσιν ὅδ' ἠέσσαι.  
 ἀλλ' ὁ μὲν ὡς ἀπόλαον. θεὸς δ' ἐσιφλώσσει.  
 τοῖ δ' οὐπὼ μάλ' ἀπ' ἀρχῇ θεοὶ μάχεσθ' ἐπὶ νηυσὶ.  
 ἄλλ'

ὁ γὰρ λόγος· αἶψ' ὄφρα λλοῖσ' ἀφ' ἑκλίσ' ἔρατ' ἄλλων  
 σῆμαίνεν, μὴ δ' ἄμμιν ἀναστέλλῃ οἷσιν ἄρα ἴδῃ  
 ἐκ νεότητος ἴδωκε, καὶ ἐς γῆρας πολυπύδῃ  
 ἀρχαλὲς πολλέμεν. ὄφρα φθιομένης ἔκαστος  
 οὕτω δὴ μέμονας φῶν πόλιν δόρυ καὶ γυῖον  
 καλλήτεν ἢς ἵν' αἶ' οἷζυμον κακὰ πολλά,  
 σίγα, μή τις ἄλλος ἀχαιῶν ἔσθ' ἀκούσῃ  
 μῦθον. ὃν οὐκ οὐδ' ἀνὴρ γὰρ σιγῇ σόμα πάμπαν ἔχοιτο,  
 ὅς τις ἐπίσταιτο ἥσι φρεσὶν ἄρπα βάϊεν.  
 σκηπτοχρὸς τ' εἴη καὶ δὲ πεθοίῃ λαοί,  
 τόσῃ δ' ὄσσοισιν σύ μιντ' ἀρχέοισιν ἀνάσσεις,  
 νῦν δ' ἐσὺ ὦνοσάμῃ πολυχὺ φρένας, οἷον ἔαπες,  
 ἢς κέλευα πολλέμοιο σωεσάστος καὶ αὐτῆς,  
 νῆας εὐσέλμους ἄλα δ' ἑλκόμεν. ὄφρ' ἐπὶ μάλλον  
 ῥωσὶ μῆν δοκτε γίνηται, ἐπικρατέουσ' ἰβ' ἑμης.  
 ἡμῖν δ' αὖ πὺς ὀλιβρος ἐπιρρεῖη, ὃ γὰρ ἀχαιοὶ  
 χυθούσιν πόλεμον. νῆων ἄλα δ' ἑλκόμενων  
 ἀλλ' ἀποπλάευσεν, ἑρωήθουσι δ' ἐχέμεν.  
 ἔνθα κε σὴ βυλὴ δ' ἡλῆσεται ὄρχαμι λαῶν.  
 Τόσδ' ἡμέτε' ἔπειτα ἀναξ' οὐδ' ὦν ἀγαμέμνων,  
 ὃ δ' οὐδ' αὖ· μολλα πέρ με καθίκεο θυμὸν ἐνιπῇ  
 ἀρχαλὲς, ὅτερ θ' μ' ἐγὼν ἀέκοντα σ' ἀνδρα  
 νῆας εὐσέλμους ἄλα δ' ἑλκόμεν ὕλας ἀχαιῶν,  
 νῦν δ' εἴη ὅς τις δ' ἐγ' ἀμένονα μῆτιν ἐνίσποι,  
 ἢ νέος, ἢ παλαιός, ἐμοὶ δ' ἐκασμένῳ εἴη.  
 Τόσι δ' ἐκ μετέφπε, βόην ἀγαθὸς διομήδης·  
 ἐγγὺς αἰὲρ θ' εἰδὼς ματεύθμεν αἶκ' ἐθέλητε  
 πέθεισθαι, καὶ μή τι κότῳ ἀτάσθαλι ἔκασθ'·  
 οὐνεκα δ' ἡ γυνὴ φη νεώτατος εἰμι μεθ' ὑμῖν  
 παρὸς δ' ἐξ ἀρχαῶν καὶ ἐγὼ γένος ἐνδοχέου εἴη.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Ἰδὺς ὑψιβριμέτης αὐτὸς παρατικτῆναίῳ.  
 τεῖχος μὲν γάρ δ' ἡ κατ' ἑρέπην ὧ ἐπέπιθ' ὡς  
 ἄρ' ῥηκτορ νηῶν τε καὶ αὐτῶν ἱλάρ' ἐσιδαί  
 οἶδ' ἐπὶ νηυσὶ θοῇσι μάχῃω ἀλίαςον' ἔχουσι  
 νωλεμέες, οὐδ' ἄρ' ἐπὶ γνοίης μάλα περ σκαπιάζοντες  
 ὅπποτέρῳθεν ἀχαιοὶ δεινόμυροι κλονέονται,  
 ὡς ἐπιμῖξ κτείνονται. αὐτὴ δ' οὐρανὸν ἴκεθ.  
 ἡμῖν δ' ἐφραζώμεθ' ὅπως ἔσται τάδε ἔργα·  
 εἴπ' νῆος ῥέξῃς, πόλεμον δ' οὐκ ἄμμι κελύβω  
 θύμῳ καὶ οὐ γάρ πως βιβλημένον' ἐς μάχεσθαι.  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων·  
 νέεσθ', ἐπεὶ δ' ἡ νηυσὶν ἐπὶ πρύμνεσσι μέχονται,  
 τεῖχος δ' οὐκ ἔχρασμε τιτυγμένον οὐδέ τι τάφροσσι  
 ἢ ἐπὶ πόλιν ἐπαθον δῖ' ἄναοι, ἔλποντο δ' ὅθ' ὅθ' ὅθ'  
 ἄρ' ῥηκτορ νηῶν τε καὶ αὐτῶν ἱλάρ' ἐσιδαί,  
 οὐτω περ δ' ἰὶ μέλλῃ ὑπερμυθεῖ φίλον εἶναι,  
 νανύμνους ἀπολείδαι ἀπ' ἄργος ἐνθάδ' ἀχαιοὺς  
 ἥδε καὶ μὲν γάρ, ὅτε πρόσφρον δαυκαοῖσιν ἀμυνον,  
 οἷδ' αὖ δ' ἐν νῦν ὅτι τὸς μὲν ὁμῶς μακάριον θιόισι  
 κυδάνει, ἡμέτερον δ' ἐμείνῃ καὶ χεῖρας ἐδήσαν·  
 ἀλλ' ἄγεθ' ὡς ἄρ' ἐγὼ εἶπω, πρῶτα μὲν παλιντόν  
 νῆας ὅσαι πρῶται ἐρύονται ἀρχὶ θαλάσσης,  
 ἔλκωμεν, πάσας δ' ἐρύσομεν εἰς ἄλλα δῖ' ὀϊῶ.  
 ὕψι δ' ἐπὶ ξυνάδην δρμήθωμεν, εἰσόκεν ἔλθῃ  
 νῆς ἄβροτῆ, ἢ καὶ τῇ ἀπόχονται πολέμοιο  
 ῥῶες, ἔπειτα δ' ἐκεν ἐρυσαίμεθα νῆας ἀπὸ λῶσας.  
 οὐ γάρ τις νέμεσις φυγῆεν κακὸν, οὐδ' ἀνὰ νύκτ' αἶ  
 βέλτερον, ὅς φ' οὐ γὰρ προφύγῃ κακόν, ἢ ἐλῶν,  
 Τὸν δ' ἄρ' ὑπόβραιδ' ὦν προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς·  
 ἀρεῖ δ' ἡ πόλιν σὺν ἱπποσὺν φύγον' ἔργος δ' ὀδόντων

βῆναι ἐπ' ἀφείδω, οἷδ' ἀλλήλους ἐν αἵετον  
μαρνάμενοι, λάκε δ' ἐσφι περὶ χροῖ χαλκὸς ἀτρυγέ.  
νυαομένων ξίφισιν τε, καὶ ἐγχεσιν ἀμφηγούσιν.  
ἴσκει ὃ ξυμβλῶθ' διοριφίης βασιλῆης.

πάρ νηῶν αὐτιόντος, ὅθι βεβλήαθ' χαλκῷ.  
τυδείδης δ' Ὀδυσσεύς τε καὶ ἀφείδης ἀγαμέμνων.  
πολλὸν γὰρ ἀπάνδουθε μάχης εἰρύαθ' νῆες.

θῖν' ἐφ' αἰὸς πολιῆς τὰς γὰρ πρῶτας πεδίονδε  
εἵρυσαν, αὐτὰρ τιῆχος ἐπὶ πρύμνησιν ἰδύμεαν.  
οὐ δ' ἐ γὰρ οὐ δ' Ὀδυσσεύς περ ἰὼν ἰδωθῆσθαι πάσας  
αἰγυαλὸς νῆας χασείειν, σείνονθ' ὃ λαοί.

ἔω δ' ἔα προκρούσας ἔρυσαν καὶ πληῖσαν ἀπάσῃς  
ἡϊόνας σόμα μακρὸν, ὅθρ' ὀσσηνέριον ἀκραι.

ἔω δ' οἷγ' ὁφείοντος αὐτῆς καὶ πολέμοιο.

ἐγχεῖ ἐρδόμενοι κίον ἀεθόοι, ἀχνυθ' ἐσφιν  
θυμὸς ἐνὶ σῆθεσιν, ὃ δ' ἐξυμβλῶθ' γραιὸς  
νέστωρ, πῆξ' ὃ θυμὸν ἐνὶ σῆθεσιν ἀχαιῶν.

τὸν καὶ φωνήσας προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.

Ω νέστορ νηληϊάδῃ μέγα κῦδος ἀχαιῶν.

τίπτε λιπὼν πόλεμον φθισήνορα δῦρ' ἀφικάνεις;

δεῖδω, μὴ δ' ἡ μοι τιλίσῃ ἔπος ὄβριμ' ἔκταρ.

ὅς ποτ' ἐπηπύλῃσεν ἐνὶ τῷατ' ἀγορῶν.

μὴ πρὶν παρ νηῶν προπὶ ἴλιον ἀπονέειναι.

πρὶν πυρὶ νῆας ἐνιπρῆσαι, κτεῖναι ὃ καὶ αὐτοῖς.

κτεῖν' ὃ θ' ὡς ἀγρόνι, τὰ δ' ἡ νῦν πάντα τελεῖται.

ὃ πόποι, ἦ ἔα καὶ ἄλλοι ἐυκνήμιδες ἀχαιοί.

ἐν θυμῷ βάλλονται ἱμοὶ χόλον, ὅς περ ἀχιλλεύς,

οὐ δ' ἐθέλῃσι μάχεσθαι ἐπὶ πρύμνησιν ἴνασι.

Τὸν δ' ἀμείβειτ' ἐπὶ τα γέρωνι' ἰππότα νέστωρ.

ἦ δ' ἡ ταυτὰ γ' ἐτοῖμα τετιόχεται οὐ δ' ἐκον ἄλλως,



ΙΛΙΑΔΟΣ .Ξ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ξῖ χρονίδῳ ὕπνω λεχέεσσι τ' ὕπαφεν ὕρη.

Ἔσφα δ' οὐκ ἔλαθον ἰαχὴ πίνοντι  
τὰ περ' ἔμπης·  
ἀλλ' ἀσκληπιάδῳ ἔπια πῆρόσφης  
προσσηΐσα.

φράζο δ' ἴε μαχᾶρ ὅπως ἔσαι τάδε ἔργα·  
μείζων δ' ἢ παρὰ νηυσὶ βοή θαλιρῶν αἰήτων.  
ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν πῖνε καθήμενος αἶθοπα οἶνον·  
εἰσὸς κε θερμὰ λυγρὰ ὑπλόομαι καμύδῃ  
θερμὴν καὶ λυγρὴν ἀπὸ βρότον αἵματόσφαι·  
οὐτάρ ἐγὼν ἔλθωρ τέχα ἰθὺμαι ἐς πειρωπὴν·  
ὧς ἑπών, σάκους ἔλε τετυγμένον ὕϊος ἰοῖο.  
κείμενον ἐν κλισίῃ θρασυμήδεος ἱποδάμοιο,  
χαλκῷ παμφᾶνον, ὃ δ' ἐχ' ἀσπίδα παρὸς ἰοῖο.  
εἴλθο δ' ἄλκιμον ἔγχεσ' ἀσχαμένον ὀξείῃ χαλκῷ.  
εἴδ' ἐκτὸς κλισίης, τάχα δ' ἴσθιεν ἔργον ἀεκέε·  
τὸς μὲν δεινομένους, τοὺς δὲ κλονέοντας ὀπιθεῖν.  
τῶας ὑπερθύμους, εἰρείη τοι τείχεσ' ἀχαιῶν.  
ὥς δ' ὅτε πορφύρῃ πέλαγος μέγα κύματι κωφῷ·  
θάσος μῆλον λιγέων ἀνέμων λαιψήρὰ κίλδουθα  
αὐτῶς, οὐδ' ἄρα τι προκυλίνδεται, οὐδ' ἐτίρωσε  
πρὶν πῖνα κικριμένον καταβῆμῃμαι ἐκ δῖος ὕρον.  
ὥς ὁ γέρον ἄρμυαν, δαΐζόμενος κατὰ θυμόν  
διχθᾶδι, ἢ καὶ ὅμιλον ἴοι δ' αἰῶν ταχυπόλων,  
ἦε μετ' ἀρείδῳ ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν.  
ὦ δὲ δὲ οἱ φρονέοντι δόσαστο κέρδιον εἶν,

ῥῦνα ἴπ'

ὣς ἄρα φωνήσας ἤχθησάτο τοῖς δ' ἄμ' ἐπὶ  
 ἤχῃ θεῶν σίη, ὃ δ' ἰαχέλαος ὄπιθεν.  
 ἄρ' εἴοι δ' ἐτέρωθεν ἰπίαχον, οὐδ' ἐλάθοντο  
 ἄλλῃς, ἀλλ' ἔμμενον ἔωρον ἐπιόντας ἀρίστους.  
 ἤχῃ δ' ἀμφοτέρωρ ἵκητ' αἰθέρα καὶ διὸς αὐγὰς.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ. Ξ. ΟΜΗ.  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Γαμέωνδρ συμπαραλαβὼν τὸς βραυματίας καὶ νῆα  
 ἅσπερα σὺν αὐτοῖς, ἔξισιν ἐπὶ τὸν πόλεμον, ἦρα  
 δὲ τὸν κειρὸν λαβύσαι παρὰ τῆς ἀφροδίτης κατέρ-  
 χετ', καὶ τὸν ὕπνον κρατήσασα κειμίζει τὸν δία. ποσει-  
 δῶν δ' ἐ, τοῖς ἔλλησι βοηθεῖ, καὶ πολὺς φόνος γίνεταί τ'  
 ἔωων. αἴας δ' ἐ λίθῳ βαλὼν ἔκτορα πλύτῃς, ὃ δ' ἐ ἀγαγὼν  
 αἶμα λαποφύχει.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

πρὶν αὖτις πρὸ ἔθου δ' ἔχων ἀπὸ δὴ πάντες ἴσαν,  
 φινεῖσιν πυκινόν. πολλός δ' ἐπὶ λυγρὰ χαλκός.  
 ἀμφὶ δ' εἰς οἱ κροτάφοισι φανή σείσο πύλην.  
 πάντῃ δ' ἀμφὶ φάλαγγας ἐπερᾶτο προποδίσαν  
 αἶψως οἱ εἴξουσιν ὑπὸ ἀπὸ δὴ προβιβῶντι.  
 ἀλλ' οὐ σύγχυθ' θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι ἀχαιῶν.  
 αἶας δ' ἐπὶ πρῶτος προκάλυπτο μακρὰ βιβάδων.

**Δ**αυμόνιε χεῖρ' ὀνίλθι, τὴν δὴ δίσσαι οὗτος  
 ἀργεῖν, οὗτοί τι μάχης ἀδύμονες ἐμὴν.  
 ἡλὰ δ' ἰὸς μάστιγι κακῇ ἰδ' ἀμνημὴν ἀχαιοί.  
 ἢ θύρ' περ τοὶ θυμὸς ἐλπίεται ἐξαλαπάξεν  
 νῆας, ἄφαρ δ' ἐτε χεῖρας ἀμύνειν ἐσὶ καὶ ἐμὴν  
 ἢ καὶ πολλὴ φθαίῃ ἐν νοομένη πόλιν ἡμῶν,  
 χερσὶν ὑφ' ὑμῖν ἔρησιν, ἀλλ' οὐσά τε περ θομένη τε.  
 σοὶ δ' αὐτῷ φημι χεῖρ' ὀνίλθι μῆναι, ὅππότε φούρου  
 ἀρήσῃ δ' ἰὸν παρὶ, καὶ ἄλλοις ἀθανάτοισι,  
 θάσσοντας ἱρήκων ἔμηναι καλλίτερας ἱππας.  
 οἷ σι πόλιν δ' οἷσιν κανίοντες πεδίον.  
 ὡς ἄρα οἱ ἐπόντι ἐπὶ πᾶσι Διὸς ὄρνις.  
 αἰτὸς ὑψιπέτης ἐπὶ δ' ἰαχέλαος ἀχαιῶν.  
 θαρσυνος οἶωνός. ὃ δ' ἀμείβεται φαίδιμος ἱκτωρ.

**Δ**ῖον ἄμαρ τοῖς πῆς βυβάϊς, ποῖον ἔσπες;  
 αἰ γὰρ ἐγὼ οὗτω γὰρ δ' ἰὸς πάϊς ἀγχιόχοιο  
 αἶψα ὑμᾶς πάντα, τίκοι δ' ἐμὴν πόντιαν ἥρη.  
 τοῖ μιν δ' ὡς τίει Ἀθηναίη καὶ ἀπόλλων.  
 ὡς νῦν ἡμῖν ἦδ' ἐκαστὸν φέρει ἀργείοισι  
 πᾶσι μάλ'. ἐν δ' ἐσὶ τοῖσι πεφύστω, αἶψα ταλάωντες,  
 μεῖναι ἐμὸν δόρυ μακρόν, ὃ τοι χροά ληθείοντα  
 δάφει. ἀπὲρ φῶν καρὶ σπῆς κύας ἦδ' οἰωνούς,  
 δὴ μὲν καὶ σαρκεσσι πεισθῆναι ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.

Ως ἄρα

ὅρ' ὑρακλήα κρατέροφρονά γενέσθαι παῖδι·  
 ὅδ' ἐδιδάσκον σεμίλῃ τέκε χάριμα βροτοῖσιν·  
 ὅδ' ὅτε δ' ἡμῆρος καλλιπλοκάμοιο ἀνδραγῆς·  
 ὅδ' ὅποτε λητούς ἐεικυδύος· ὅδ' ἐσὺ αὐτῆς  
 ὡς σέο νῦν ἔραμαι· καί με γλυκὺς ἱμῆρος αἰρήϊ·

Τὸν δ' ὁδολοφρονέουσα προσήνδα πότνια Ἕρη·  
 ἀνότατε κρονίδη ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;  
 εἰ νῦν ἐν φιλοῦντι λιλαίεαι δυνήθῃσαι  
 ἴδως ἐν κρυφῇσι τὰ δ' ἐπρόφραται ἅπαντα  
 πῶς κ' εἶσι· εἰ τις νῶϊ θεῶν ἄσχευντάσιν  
 εὖδοντ' ἀσκήσσει θιοῖσι δ' ἐπᾶσι μετιθῶν  
 πεφροσδι· ἔκ' ἂν ἐργαζέμεν πρὸς δῶμα νειόμην  
 ἐξ δυνῆς ἀνσᾶσαι· νεμεσσηδὲν δ' ἔκων εἶη·  
 ἀλλ' εἰ δ' ἄρ' ἐθέλεις καὶ φίλον ἐπλῶσθαι θυμῷ·  
 ἔστι φίθαλαμος, τὸν θεὸς φίλος ἦδ' ἐταῖρος  
 ἔφρασε· πυκινὰς δ' οὐράς σταθμοῖσιν ἐπῆρσεν·  
 ἐνθ' ἴομεν κείοντες, ἐπεὶ νῦν ἐὺαῖον δύνῃ·

Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·  
 Ἕρη μή τε θεῶν τό γε δίδιδι μητέ πιν' ἀμειβῶ  
 ὄφειδαι· θεῖόν τοι ἐγδ' νέφος ἀμφικαλύψω  
 χρύσεον· ὅδ' ἂν νῶϊ διαφράσῃ ἥελιός περ,  
 οὔτε καὶ ὀξύτατον πέλειται φάος ἐθραάσθαι·  
 ἦ ῥά, καὶ ἀγκὰς ἐμαρπῇ χρόνῳ παῖς ἐν πατρίσιν·  
 θεῖσι δ' ὕπερθε δῖα φῶς νιοθηλεία ποίηται,  
 λωτόνδ' ἐρσύνοντα ἰδὲ χρόνον ἦδ' ὑάκινθον  
 πυκνὸν καὶ μαλακόν, ὃς ἀπὸ χθονὸς ὑπόσ' ἔργα  
 θεῶν ἐκλεξάσθω, ὃ δ' ἐν φίλῳ ἔσταν·  
 καλὴν χρυσείην, σιληναὶ δ' ἀπέπιπτον ἔρσαι·  
 ὡς δ' αὖ μὴν ἀρέμας εὖδε πατήρ ἀνὰ γαργάρε' ὤρεθ·  
 ἔπειτα καὶ φιλοῦντι δαίμεις· ἔχιδ' ἀγκὰς ἀκροπῆν·

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὧς δ' ἴδων ὧς μιν ἔρωσ πυκινὰς φρένας ἀμφικάλυψεν·  
 οἶον ὅτε πρῶτισιν ἐμὲ γέει' ὦ φίλοτ' ἦτι,  
 εἰς δύνῃν φοιτῶντι φίλος λήθοντε θεῆας·  
 σὴ δ' αὖτ' ἡς προπάρειθον, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκτ' ὀνόμαζον·  
 ὕρην· πῇ μεμαυῖα κατ' ἐλύμπυ τόδ' ἱκάνης;  
 ἵπποι δ' ὅ παρίασι καὶ ἄρματα τῶν κ' ἐπιβαίης;  
 Τὸν δ' ὀδυσφρονέυσσε προσήνδρα πότνια Ἑρην,  
 ἔρχομαι δ' ὀφείμην πολυφύρβη πέριπα γαίης·  
 ὦκιστ' ἄν' ἐστιν θεῶν γένεσιν, καὶ μητέρα τηθύρην.  
 διμ' ἐν σφοδρῇ δόμοισιν ἔβριφον ἡδ' ἀτίταλλον·  
 βῆς ἡμ' ὀφείμην καὶ σφ' ἄκατα νέκεια λῦσω,  
 ὕδ' ἡ γὰρ δ' ἡρὸν χρόνον ἀλλήλων ἀπέχοντα  
 δυνῆς καὶ φιλότ' ἦτι ἐπὶ χόλῳ ἐμπίσ' ἐθυμῶ.  
 ἵπποι δ' ἐν πυρμοναίῃ πολυπύδαυς ἴδης  
 ἰεῖσ' ὅϊμ' οἴθυσιν ὧς φαφ' ἡνέτε καὶ ἡρῶν.  
 ὅν δ' ἐγὼ ἰνέεια δειρὸν κατ' ἐλύμπυ τόδ' ἱκάνης,  
 μύπως μοι μετέπ' ἔτα χολώσεται αἴκε σιωπῇ  
 οἴχωμαι πρὸς δ' ὦμα βαθυρρῶς ὦκιστοιο.  
 Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νηφεληγέρετα Ζεύς·  
 ἥρην κεῖσε μὲν ἔσι καὶ ὕστερον δρμηθῆναι,  
 νῆα δ' ἄγ' ἐν φιλότ' ἦτι φαφ' ὅμῳ δύνῃν τε.  
 ὅ γὰρ πῶποτ' ἐμ' ὦδε θεῶς ἔρος εἶδ' ἐγὼ καὶ κῆρ  
 θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι πρὶ προχυθείς ἰδ' ἄμασσι,  
 εἶδ' ὅποτ' ἦρασά μιν ἰξιογίης ἀλόχοιο  
 ἥ τέκε παρ' ἰδῶον θεόφιν μῆσος ἀτάλαστον.  
 εἶδ' ὅτε πρὸ Δανάης καλλισφύρης ἀχρυσίωνης  
 ἥ τέκε πρὸς ἡα πολυτῶν ἀειδείκτον ὀνδρῶν.  
 εἶδ' ὅτε φοῖνικας καὶ ῥῆς τηλεκλήτοιο,  
 ἥ τέκε μοι μίνωτε καὶ ὀντίθεον φαφ' ἄμαστων.  
 εἶδ' ὅτε πρὸ σιμῆλης, εἶδ' ἀλκμήνης ἐνὶ θύβῃ,



χαίρειν ἐρθε παῖδες καὶ ἀργέτοιο θαλάσσης.  
 οὐκ ἔτι δ' ἐφομένη καὶ σφ' ἄκευτα νέκτα λύσω.  
 ὅδ' ἡ γὰρ δ' ἡρὸν χρόνον ἀλλήλων ἀπέχονται  
 δυνῆς καὶ φιλοότητος. ἐπὶ χόλῳς ἐμπεσε θυμῷ.  
 αἰ κείνων; ἐπεί γε παρὰ πείθεισιν φίλον κῆρ.  
 αἷς δυνῆς ἀνίσταμαι δ' ἠμωθῆναι φιλοότητι;  
 αἰ κ' ἐσφί φίλητε καὶ αἰδοίην καλλιόμῳ.  
 Τὺν δ' αὖτε προσέειπε φιλομήδης ἀφροδίτη,  
 οὐκ ἔστι δ' εἰοικε τινὲν ἔπος ἀργήσασθαι.  
 ἦν δ' ἔπειτα γὰρ ἄριστος ἐν ἀγκύρῃσιν ἰαύεις.  
 ἦ. καὶ ἀπὸ σήθι σφιν ἐλύσας κισὸν ἱμῶντα,  
 ποικίλῳ, ἐνθα δ' εἰ θελκτῆρα πάντα τέτυκτο.  
 ἐνθ' ἐνὶ μῶν φιλότης ἐν δ' ἱμῶς ἐν δ' ὀκείνῃς  
 πέρφρασι. ἥ τ' ἐκλεῖψεν νόον πύκα πρ' φρονεόντων.  
 τὸν δ' αὖ οἱ ἐμβαλε χερσὶν ἔπος τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε.  
 τῇ νῦν ἔϋτον ἱμῶντα, τεῦ δ' ἐγκάθευ κόλῳ  
 ποικίλῳ, ὡς ἐνὶ πῶντα τετεύχεται. οὐδ' ἐσφί φημι  
 ἀπρηκτὴν γενέσθαι δ' αὖ φρεσὶ σῆσι πρὸς ἡμῶν.  
 Ὡς φωνῶ. μέιδ' ἔσσαν δ' ἐβόῳσις πότνια ἕρη,  
 μέδ' ἔδρασε δ' ἔπειτα ἐπ' ἐγκάθευ κόλῳ.  
 ἡ μὲν ἔβη πρὸς δ' ὦμα διὸς θυγάτηρ ἀφροδίτη.  
 ἕρη δ' αἶψα ἄλῃσι λείπον ῥίον ἑλύμωτοιο,  
 περὶ κῶ δ' ἐπιβᾶσε καὶ ἡμαθίῳ ἐρατὴν ἡμῶν.  
 σὺν αὖτ' ἐφ' ἱπποπόλων θρησκῶν ὄρεα νιφώοντα,  
 ἀκροτάτας κερυφαῖς, οὐδ' ἐχθόνα μάρπηε παρ' οἴῳ.  
 ἐξ ἀθώῳ δ' ὅς πόντον ἐβόητο κυμαίνοντα.  
 λιμνον δ' ἐσπερίαν πόλιν θείοιο θόαντ' ὄρεα.  
 ἐνθ' ὕπνῳ ἱμβλῆτο πασιγνήτῳ θανάτοιο.  
 ἐντ' ἄρ' αὖ οἱ φῶ χερσὶν ἔπος τ' ἔφατ' ἐκτ' ὀνόμαζε.  
 Ὑπνὸς ἀνάξ πάντων τε θείων πάντων τ' ἀνθρώπων.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἔμπευς γὰρ αὖτις καὶ ἔβραν ἰκίτ' αὐτμῶ,  
 τῷ δ' ἔγχευ' ἡρώα παλὸν ἀλυσάμεν' ἰδὲ χαίτας  
 περὶ ἀμύνειν, χερσὶ πλοκάμους ἐπλεξε φαεινούς.  
 παλὸν ἀμβροσίους ἐκ κρωατοῦ ἀθανάτοιο.  
 ἀμφὶ δ' ἄρα ἀμβρόσιον ἱανὸν ἔσταθ'. ἐν οἷ ἀθήνη  
 ἔξυσ' ἀσκήσατο. τίθει δ' ἐνὶ δαΐδαλα πολλὰ.  
 χρυσέης δ' ἐνετῆσι κατὰ σῆθος πρὸν ἄρ',  
 ὥσπερ δὲ ὥνῳ ἵππῳ θυσαύνοισι ἀραρυῖαν,  
 ἐν δ' ἄρα ἱρμάτα ἔκκευ ἰὺρήρισι λαβοῖσι.  
 φίλῃνα μορῶντα. χάεις δ' ἀπικλμπῆτο πολλῶ.  
 κρηδῆμεν δ' ἐφύπρθε παλὺ φάτο δ' ἴα θείων,  
 κελῶ νηγατίω. λιυκόν δ' ἦν ἡέλιος ὅς,  
 ποσσὶ ὑπαὶ λιπαροῖσιν ἐδῆτο καλὰ κίεθλα,  
 εὐωπὲρ ἐπιδὴ πάντ' ἀπὲρ χρεὶ θέων κόσμον  
 ἔκ' ἱμῶν ἐκ θαλάμοιο, κλισιαμένη δ' ἀφροδίτη.  
 τῶν ἄλλων ἀπώλυνθε θεῶν, πρὸς μῦθον ἔειπον.  
 εἴ ῥ' ἀνύμοι τί πίθοιο φίλον τέκος ὅτ' ἵκεν ἱπῶς,  
 ἢ κεν ἀρνήσαιο κατεσπαμένη τόλῃ θυμῶ,  
 ὅσων ἐγὼ δαίνοισι. σὺ δὲ φώωνιν ἀρήγεις.  
 Τὴν δ' ἡμέβει' ἔπειτα δίδες θυγάτηρ ἀφροδίτη.  
 ἔρη πρὶς βαθιά θύγατρ' ἐμγάλοιο χρόνοιο.  
 αἴδ' αὖ δ' ὅ, π' φρονέεις τελίσσαι δ' ἐμὲ θυμὸς ἀνώγει.  
 ὅ δ' ὕναμ' αὖτε λίσσαι γὰρ καὶ εἰ τετελισμένον ἐσὶ.  
 Τὴν δὲ δολεφρονέει καὶ προσνήδα πότνια ἔρη.  
 δίδες νῦν μοι φιλότητα καὶ ἱμῶν, ὥτε σὺ πώνται  
 διαμνᾷ ἀθανάτους ἡδὲ θνητοὺς ἀνθρώπους,  
 εἴ μιν γὰρ ὁμομένη πολυφύρβη πέριρα γαίης.  
 ὡκισσόντι θεῶν γένεσιν καὶ μητέρ' ἀπὸ θυῖν,  
 οἱ μ' ἐν σφοδρῶσι δόμοισιν ἰὺριφον ἡδ' ἀπὶ ταλάρ',  
 διξάμενοι ῥέειν ὅτι, τι χρόνον δ' ὀρύεσθαι βίης

ἀλλ' ἐν πρῶν ἡγήτορος ἡδὲ μίδοντος,  
 δὺρ' ἐκρίνασιν πιδίον, σὺ δ' ἐπόφαι αὐτῶν  
 φύγοντας προτὶ ἄστυ, κείν' ἄστυ καὶ κλισιάων.  
 ὣς εἰπὼν, μέγ' αὖ σον ἐπεισύνεμος πιδίσιον.  
 ἴαοντ' ἐννεάχιλοι ἐπὶ ἄστυ, ἢ δὲκάχιλοι  
 ἀνέρον ἐν πολέμῳ εἰδὼ ξυνάγοντος ἄρητο·  
 τῶσλιν ἐκ σήθεσφιν ὅππα, κρείων ἐνοσίχθων  
 ἔκκευ, ἀχαιοῖσιν ὃ μέγα δένοντο· ἔμβαλ' ἐκαστὸν  
 καρδίῃ, ἄλληκεν πολυμήϊν ἡδὲ μάχιδαι.  
 ἔρη δ' ἐσθλὴ χρυσόθρονον ὀφθαλμοῖσι,  
 πᾶσ' ἐξ ὕλμασσι ἀπὸ ῥίγ' αὐτίκα δ' ἔγνω,  
 τὸν μὲν πομπύοντα μέχλιν ἀνὰ κυδιάνφρα  
 αὐτοκασίγνητον καὶ δαίρα, χαῖρε ὃ θυμῷ.  
 ἦν δ' ἐπ' ἀπρωτάτης κερυρῆς πολυπίδακος ἰδμε·  
 ἔμμενον ἐσθλῇ, συχερός δ' οἱ ἔπλετο θυμῷ.  
 ἔμμελ' ἐξείδε· ἔπειτα βοῶπις πότνια ἦρ',  
 ἔππ' ὡς ἐξαπαρτοῖα διὸς νόον αἰγίοχοιο.  
 ἦ δὲ δὲ δὲ κατὰ θυμὸν ἀρίστη φαίνετο βυλὸς  
 ἐλθεῖν εἰς ἰδμεν εὖ ἐντύνασσιν ἰαωτήρ  
 εἴπως ἰμέραα παρασφραθῆν φιλοότητι  
 ἔχρησεν, ἔω δ' ὕπνον ἀπήμενον τε, λικρόν τε  
 χυμὸν ὃς ἐλεφάροισιν, ἰδὲ φρεσὶ πενταλίμησι.  
 βῆ δ' ἴμεν εἰς θαλάμῳ, τὸν δὲ φίλος ἦος ἐτευξεν  
 ἔφρατος, πυκινὰς δ' οὐρας σταθμοῖσιν ἐπῆρας  
 κληῖδι κρυπῇ, τήν δ' ὕθιός ἄλλος ἀνῶγει.  
 ἐνθ' ἔγ' εἰσελθὼσα θύρας ἐπέθηκε φανίας.  
 ἔμβροσιν μὲν πρῶτον ἀπὸ χρὸς ἰμείροντο,  
 λύματα παλντα κάθηρον, ἀλέψαντο δ' ἰλίπ' ἱλαίῃ.  
 ἔμβροσίῳ ἰδμεν· τόξα δὲ τιθυομένον ἦσαν.  
 ἔτι καὶ κινεμένοι διὸς ποτὶ χαλκεβατὶς δ' ὦ

ΤΑΥΤΑ ΟΥ

τυδ' ἐϑ', ὃν θήκησι χυτὴ κατὰ γαῖα κάλυψι.  
 πορθεῖ γὰρ βρεῖς πατρίδος ἀμύμονος ἐξήγνοντο.  
 ὤκειον δ' ἐν πλευρῶνι καὶ ἀπὸ νῆα καλυδῶνι.  
 ὀχρὸς ἦδ' ἐμέλας, φίτατος δ' ἦν ἱππότεα οἰνέου  
 παρὸς ἑμοῖο πατὴρ. ἀρετῇ δ' ἦν ἕξοχος αὐτῶν.  
 ἀλλ' ὁ μὲν αὐτοῖσι μένει, πατὴρ δ' ἑμὸς ἀργυροκόπος  
 πλαγχθὼς, ὡς γὰρ πονεῖν. ἤθελε καὶ θεοὶ ἄλλοι.  
 ἀδρήσιοι δ' ἐγήμε θυγατρῶν, νῶϊ δ' ὀδῶμα  
 ἀφνεὸν βίοσιον. ἄλλισδ' ἐοῖσι πρὸς ἄρματα  
 πυροφόροι. πολλοὶ δ' ἐφυγῶν ἦσαν ἄρχαυοὶ ἀμφί.  
 πολλὰ δ' ἐοῖσι προσβῆται, κέκαστο δ' ἀντὶ πάντας ἀχαιῶν  
 ἐγχείη, τὰ δ' ἐμέλειτ' ἀκούεμην ὡς ἔτεόν περ.  
 τοῦτο δ' ἐκ ἂν με γένετο κακὸν καὶ ἀνάλκιδα φάντος  
 μῦθεν ἀπὸ μῆστις πεφασμένον, ὅκεν εὖ εἶπω.  
 δευτ' ἰομῶν πέλεμόνδε, καὶ ἔταυμι, οἱ περ ὀνείκευ.  
 εἴθε δ' ἐπετ' αὐτοὶ μὲν ἐχώμεθα δῆϊοτῆτ',  
 ἐκ βελίων, μή που τις ἐφ' ἑλκὶν ἔλκεος ἀρητὰ.  
 ἄλλος δ' ὀφθαλμοῖσι τὴν ἠὲ μῆνιν, οἳ τὸ πάρος περ  
 θυμῷ ἡρὰ φέροντο δὲ ἀφισσῶν, ἐδ' ἐμάχοντο.  
 οὐδ' ἐφ' αὖτ' οἳ δ' ἄρα τὸ μάλα μῆνιν κλύον ἦδ' ἐπίθοντο,  
 βῆν δ' ἰμῶν, ἡρξε δ' ἄρα σφιν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων  
 ἐδ' ἀλαοσχεπὶν ἐῖχον κλυτὰς ἐννοσίγαιας.  
 ἀλλὰ μετ' αὐτοῖσι ἦλθε παλαῶν φωτὶ ἰοικώς.  
 διεξιδρὴν δ' ἔλε χθρ' ἀγαμέμνονα ἀρεῖδαν.  
 καὶ μιν φωνήσας, ἔπεα πτερόεντα προσηύδα.  
 ἀρεῖδην, νῦν δ' ἡπύου ἀχιλλῆος ὄλοσεν κῆρ  
 γῆθησιν ἐνὶ στήθεσσι φόνον καὶ φύζων ἀχαιῶν  
 διερχομένων. ἐπεὶ οὖν οἳ ἐνὶ φρέσιν ἐδ' ἠβόαι.  
 ἀλλ' ὁ μὲν ὡς ἀπόλοισι. θεὸς δ' ἐῖσι φιλώσσει.  
 οὐδ' οὐκ ἔστι μολακὰ πάγχυ θεοὶ μάχεσθαι κατέειπον.  
 ἄλλ'

ὁ γὰρ ὁ μὲν . αἶψ' ὄφρα μὲν ἀφικαίην στρατὸς ἄλλου  
 σημαίνειν, μὴ δ' ἄμυν ἀναστέλλειν οἷσιν ἄρα ἴδω  
 ἐκ νεότητος ἴδωκε, καὶ ἐς γῆρας πολυπύδην  
 ἀρχαλὴν ἐπὶ πύλῃς . ὄφρα φθιόμεθα ἱερούς,  
 οὕτω δ' ἡ μέμονας τῶν πόλιν δόρυ καὶ ἔγχος  
 καλλείψεν ὅς ἐνέκ' οἰζύομαι κακὰ πολλὰ,  
 σίγα, μή τις ἄλλος ἀχαιῶν βῆτον ἀκούσῃ  
 μῦθον . ἐν οὐκ ἂν ἀνὴρ γὰρ σὺν σόμα πάμπαν ἄροισι,  
 ὅς τις ἐπίσταιτο ὅσι φρεσὶν ἄρτια βάλῃεν .  
 σκηπτοχρὸς τ' εἴη καὶ δὲ παθοῖα λαοῖ,  
 τόσῳ δ' ὅσσοισιν σύ μιντ' ἀργείοισιν ἀνάσσεις,  
 νῦν δ' ἐσὺ ὠνοσάμεν πολυχὺ φρένας, οἷον ἔαβες,  
 ὅς κέ τί τοι πολέμοιο σωεσάτοιο καὶ αὐτῆς,  
 νῆας εὐσέλμους ἄλλα δ' ἑλκόμεν . ὄφρ' ἐπὶ μάλλον  
 τῶσσι μὲν δοκτεῖ γίνηται, ἐπικρατέουσιν περ ἑμῆς,  
 ἡμῖν δ' ἀπὸς ὀλιβροῦ ἐπιρρήσει, ὃ γὰρ ἀχαιοὶ  
 ἐχέουσιν πόλεμον . νῆων ἄλλα δ' ἑλκόμεν ἁπάντων  
 ἀλλ' ἀποπλάνευσον, ἱερὴ ἔσθ' οὐδ' ἐχέμεν,  
 ἔνθα κε σὴ βυλὴ δηλύσεται ὄρχαμε λαῶν .  
 Τὸν δ' ἡμέτερος ἔπειτα ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 ὃ δ' ὀδυσσεύς . μολα πέρ με παθίκεο θυμὸν ἐνιπῆ  
 ἀρχαλὴν, ἅτερ σὺ μ' ἐγὼν ἀέκοντα σ' ἀνώγα  
 νῆας εὐσέλμους ἄλλα δ' ἑλκόμεν ὕπαις ἀχαιῶν,  
 νῦν δ' εἴη ὅς τις δέ γ' ἀμείνονα μῆτιν ἐνίσποι,  
 ἢ νέος, ἢ παλαιός, ἐμοὶ δ' ἐκὼν ἀσμένει εἴη .  
 Τῷσι δ' ἐκὼν μετέφπε, βόην ἀγαθὴν διομήδεος .  
 ἐγγὺς ἀνὴρ σὺ δ' ἠθὰ ματεύθμεν αἶψ' ἐθέλητε  
 πέθεσθαι, καὶ μή τι κότῳ ἀγασσάμεν ἱερούς .  
 οὐνεκα δ' ἡ γυνὴ νειώτατος ἐμὶ μεθ' ὅμιν  
 παρὸς δ' ἐξ ἀρχαῶν καὶ ἐγὼ γένος ἐνδοχέμεν



Ἰδὺς ὑψιφριμένης αὐτὸς παρακτείνουτο.  
 Τείχεσ' μὲν γὰρ δὴ κατέρησεν ὡς ἐπὶ πύργῳ  
 ἄρρηκτον νηῶν τε καὶ αὐτῶν ἱλάρ' ἰσίδαι.  
 οἷδ' ἐπὶ νηυσὶ θοῇσι μάχῃσ' ἄλϊασεν ἔχουσι  
 νωλεμῆς, οὐδ' ἄν' ἐπὶ γνοίης μάλα περ σκαπιάζοντι  
 ὅππότερ' ὠθεν ἄχαιοι δεινόμυθοι κλονιόντο,  
 ὡς ἐπιμῖξ' κτείνοντο. αὐτὴ δ' οὐρανὸν ἴκε·  
 ἡμῖν δ' ἐφραζόμεθ' ὅπως ἔσται τάδε ἔργα·  
 εἴ τι νόος ῥέξῃ, πόλεμον δ' οὐκ ἄμμι κελόυσθαι.  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων·  
 νέεσθ', ἐπεὶ δὴ νηυσὶν ἐπὶ πρυμνήσι μάχονται,  
 τείχεσ' δ' οὐκ ἔχρασμαι τιτυγμένον οὐδέ τι τάφροισι  
 ἢ ἐπὶ πόλλ' ἔπαθον δαίκαοι, ἔλποντο δ' ὅθ' ὅμῳ  
 ἄρρηκτον νηῶν τε καὶ αὐτῶν ἱλάρ' ἰσίδαι.  
 οὗτω περ δὴ μῆλα ὑπερμυῖ' ἔφλεον εἴην,  
 νωνύμηνες ἀπολίδαι ἀπ' ἀργεὺς ἐνθάδ' ἀχαιοὺς  
 ἥδεα μὲν γὰρ, ὅτε πρόφρων δαίκαοισιν ἄμωσεν,  
 οἷδ' αὖ δ' ἐν νῦν ὅππότερ' μὲν ὁμῶς μακάριαι θεοῖσι  
 κυδάνε, ἡμίτερον δ' ἐμὲν ὄν καὶ χεῖρας ἔδ' ἦσαν·  
 ἀλλ' ἄγεθ' ὡς ἄν' ἐγὼ εἴπω, πείθωμ' ἢ παύοντο  
 νῆας ὅσαι πρῶται ἐρύσσονται ἀγχι θαλάσσης,  
 ἔλκωμεν, πάσας δ' ἐρύσσομεν εἰς ἄλλα δῖ' ὦν.  
 ὕψι δ' ἐπὶ ἑνὶ ἄρ' ὀρμήθωμεν, ἐσόκευ' ἔλθῃ  
 νῆξ' ἄβροτῇ, ἥν καὶ τῇ ἀπόχοντα πολέμοιο  
 ῥῶτες, ἔπειτα δ' ἐκεν ἐρυσσάμεθα νῆας ἀπώσας·  
 οὐ γὰρ περ νέμεσις φυγίην κακόν, οὐδ' ἄν' ἀνὰ νύκτα  
 βέλτερον, ὅς φούραρ προφύγῃ κακόν, ἢ ἑλῶν.  
 Τὸν δ' ἄρ' ὑπόφραδῖδ' ἰδὼν προσέφη πολυμήτης Ὀδυσσεύς·  
 ἀπείδῃ ποτὶ ὅν σ' ἔπος φύργῳ ἕρκυς ὀδόντων

βῆναι ἐπ' ἀφείδω, οἷδ' ἀλλήλους ἐνάεισον  
μαρνάμενοι, λάκε δὲ σφι περὶ χροῖ χαλκὸς ἀτρυγέ.  
νυαγομένωνν ξίφισιν τε, καὶ ἔγχεσιν ἀμφιγυίοσιν.  
ἴσσοι ᾧ ξυμβληθὲ διοτρίφεις βασιλῆες.

πάρ νηῶν ἀνιόντες, ὅθι βιβλήθε χαλκῷ.  
τυδείδης ὀδυσσεύς τε καὶ ἀφείδης ἀγαμέμνων.  
πολλὸν γὰρ ἀπάνδουθε μάχης ἐρύαθ' νῆες.  
θῖν' ἐφ' ἀλὸς πολλῆς τὰς γὰρ πρῶτας πεδίονδε  
ἔρυσσαν, αὐτὰρ τιῖχος ἐπὶ πρυμνήσιν ἔδμεν.  
οὐ δὲ γὰρ οὐδ' ὀβρυὲς περ ἰὼν ἔδωθ' ἅπασας  
αἰγιαλὸς νῆας χασείειν, σείνοντο δ' λαοί.

τῷ ῥα προκρότας ἔρυσσαν καὶ πλῆσσαν ἀπᾶσιν  
ἡϊόνος σόμα μακρὸν, ὅθρ' στωίεργαθον ἄκρα.  
τῷ ῥ' οἷγ' ὀφείοντο αὐτῆς καὶ πολέμοιο.  
ἔγχε' ἐφ' ὀδύμημοι κίον ἀβροί, ἀχνυθὲ δέ σφιν  
θυμὸς ἐνὶ σῆθεσιν, ὃ δὲ ξυμβληθὲ γκραιὸς  
νέστωρ, πῆξεν δ' θυμὸν ἐνὶ σῆθεσιν ἀχαιῶν.  
τὸν καὶ φωνήσας προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.  
ὦ νέστορ νηληϊάδῃ μέγα κῦδος ἀχαιῶν.

τίπῃ λιπῶν πόλεμον φθισήνορα δειρ' ἀφικάνεις;  
δείδω, μὴ δὴ μοι τελίσῃ ἔπος ὄβριμ' ἔκτωρ.  
ὅς ποτ' ἐκηπῆλυσεν ἐνὶ φῶϊα' ἀγορῶν.  
μὴ πρὶν παρ νηῶν προτὶ ἴλιον ἀπονείδαι.  
πρὶν πυρὶ νῆας ἐνιπρῆσαι, κτεῖναι δ' καὶ αὐτούς.  
κτεῖν' ὅθ' ὡς ἀχόρυνε, τὰ δὲ νῦν πάντα τελεῖται.  
ὅ πόποι, ἦ ῥα καὶ ἄλλοι ἐν κνήμιδις ἀχαιοί  
ἐν θυμῷ βάλλονται ἑμοὶ χόλον, ὅς περ ἀχιλλεύς.  
οὐδ' ἐθέλεις μάχεσθαι ἐπὶ πρυμνήσιν ἐνέαι.

τόν δ' ἀμείβει ἑπτά γερῆνι' ἰππότες νέστωρ.  
ἦ δὴ ταῦτά γ' ἱστοῖμα τεύχεσσι οὐδ' ἐκὼν ἄλλως,

ΙΛΙΑΔΟΣ. Ε. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ξι χρονίδω ὕπνῳ λειχέωσιν τ' ἥπαρ ὄρη.

Ἔσορα δ' οὐκ ἔλαθον ἰαχὴ πίνον·  
τά περ ἔμπευ.

ἀλλ' ἀσκληπιάδω ἔπεια πῆρ' ὄντα  
προσηύδα.

φράζο δ' ἔμεμαχ' ὅπως ἔσαι τάδε ἔργα·  
μείζων δ' ἢ παρὰ νηυσὶ βοὴ θαλιρῶν αἰήων.  
ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν πῖνε καθ' ἡμῶν· αἶθοπα οἶνον·  
εἰσόκε θερμὰ λυγρὰ ὑπλόισμα· ἱκαμένη  
θερμὴν καὶ λυγρὴν ἀπὸ βρότον αἵματόεντα·  
αὐτὰρ ἐγὼν ἔλθωρ τάχα εἴθ' ἔμειναις περὶ πύλιν·  
ὣς ἔπών, σάκευς ἔλε τετυγμένον υἱὸς ἰοῖο.  
κείμηνον ἐν κλισίῃ θρασυμήδεσσι ἵπποδάμοιο,  
χαλκῷ παμφαῖνον, ὃ δ' ἔχ' ἀσπίδα παρὸς ἰοῖο.  
εἶλθ' ὅδ' ἄλκιμον ἔγχευ ἀεχμέων ὀξείῃ χαλκῷ.  
εἴη δ' ἐκτὸς κλισίης, τάχα δ' ἴσιδεν ἔργον ἀεκής.  
τὸς μὲν δεινόμενος, τοὺς δὲ κλονέοντας ὀπίσθην.  
τῶας ὑπερθύμεις, εἰρείη τοι τείχεος ἀχαιῶν.  
ὥς δ' ὅτε πορφύρῃ πέλαγος μέγα κύματι κωφῷ·  
θάσ' ὁ μὲν λιγέων ἀνέμων λαυτήρ' ἐκλόβθα  
αὐτῶς, οὐδ' ἄρα τι προκυλίνδεται, οὐδ' ἔτι ῥωσσε  
πρὶν πῖνα κυρμένον καταβήμῃ καὶ ἐκ δ' ἰὸς ὄντα.  
ὥς δ' ὅτ' ἐρῶν ὄρμαινε, δαΐζ' ὁ μὲν κατὰ θυμόν  
διχθ' ἀδίδ' ἢ κατ' ὁμίλον ἴοι δ' ὄναρ ταχυπόλων,  
ἦε μετ' ἀπείδω ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν.  
ὣς δὲ δὶ φρονέοντι δ' ὀάσασατο κέρδιον εἶναι,

βῦνα ἔπ'.

Ὡς ἄρα φωνήσας ἤγχεσσι τοῖς δ' ἄμ' ἔποντο  
 ἤχῃ θειασσίῃ, πρὶν δ' ἰαχέλαος ὀπιθεῖν.  
 ἀργεῖοι δ' ἐτέρωθεν ἐπιάχον, οὐδ' ἐλάθοντο  
 ἀλκῆς, ἀλλ' ἔμμενον βῶρον ἐπιόντας ἀρίστους.  
 ἤχῃ δ' ἀμφοτέρωθεν ἴκετ' ἀθέρεα καὶ διὸς αὐγὰς.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ. Ξ. ΟΜΗ-  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Γαμίμωνρ συμπαραλαβὼν τὸς βραυματίας καὶ νύ-  
 α σора σὺν αὐτοῖς, ἔξισιν ἐπὶ τὸν πόλεμον, ἦρα  
 δὲ τὸν κτεδὸν λαβῶσα παρὰ τῆς ἀφροδίτης κατέρ-  
 χη, καὶ τὸν ὕπνον κρατήσασα κρημίσῃ τὸν δία. ποσει-  
 δῶν δὲ, τοῖς ἑλλησι βοηθεῖ, καὶ πολὺς φόνος γίνεται τῶν  
 βῶων. αἶας δὲ λίθῳ βαλὼν ἔκτορα πλῆτῃς, ὃ δὲ ἀγαμέμ-  
 νειμα ληποφυχῇ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

πριαμίδης· πρὸ ἔθεν δ' ἔχων ἀπώδιδε πάντοσε ἴσθι,  
 ῥινοῖσιν πυκινὴν· πολλὸς δ' ἐπὶ λυγρὰτο χαλκός·  
 ἀμφὶ δ' ἐοὶ κροτάφοισι, φανήν σείσσο πύληξ·  
 πάντῃ δ' ἀμφὶ φάλαγγας ἱεραῶ πρόποδίζων  
 εἴπως οἱ εἴξωαι ὑπαπώδιδε προβιβῶντι·  
 ἀλλ' οὐ σύγχε θυμὸν ἐνὶ σέθεντι ἀχαιῶν·  
 αἶας δ' ἐπὶ πρῶτος προκαλέσας μακρὰ βιβιάδων.

Δαμόνιε χερδὸν ἱλθεῖ, τὴν δ' ἐδιδασκαι οὕτως  
 ἀργεῖς, οὗτοί τι μάχης ἀδελφόνους ἐμὴν·  
 ἀλλὰ δῖος μάστιγι κακῇ ἰδάμηνδ' ἀχαιοί·  
 ἢ θύρ' περ τοι θυμὸς ἐέλπεται ἐξαλαπάξεν  
 νῆας, ἄφαρ δ' ἐτε χεῖρες ἀμύνειν ἐσὶ καὶ ἡμῖν  
 ἢ καὶ πολὺ φθαίῃ· εἴ νομομένη πόλις ἡμῶ,  
 χερσὶν ὑφ' ὑμετέρῃσιν, ἀλῶσά τε περθόμενῃ τε·  
 σοὶ δ' αὐτῷ φημι χερδὸν ἱμῶνδ' ἐμῶν, ὅπποτε φούργων  
 ἀρήσῃ δ' ἰὶ παρὶ, καὶ ἄλλοις ἀθανάτοισι,  
 θάσσοντας ἱρήκων ἱμῶν καλλίτερας ἱππας·  
 οἷ σὲ πόλιν δ' οἷσαςσι κενίοντος πεδίοιο·  
 ὥς ἄρά οἱ ἐπὶ πόντι ἐπέπλετο Διξὶος ὄρνις·  
 αἰετὸς ὑψιπέτης· ἐπὶ δ' ἰαχε λαὸς ἀχαιῶν·  
 θαρσυνος οἶωνῶ· ὃ δ' ἀμείψο φαίδιμος ἱκτάρ.

Δῖον ἀμαρτοεπὶς βυγαῖν, ποτὶ ῥ' ἔειπες·  
 αἰ γὰρ ἐγὼν οὕτω γ' ἐδὶς πάϊς ἀγχιόχοιο  
 εἴλω ἡμῶντα πάντα, τίκοι δ' ἐμὴ πόντια ἦρ·  
 τιοίμην δ' ὥς τίτ' ἀθηναίῃ καὶ ἀπόλλωνι,  
 ὥς νῦν ἡμῖν ἔδ' ἐ, κακὸν φέρει ἀργείοισι  
 πᾶσι μάλ' ἐν δ' ἐσὺ τοῖσι πεφύσικα, αἴ κε ταλάσῃς,  
 μῖναι ἡμὸν δόρυ μακρὸν, ὃ τοι χροά λαιεούοντα  
 δάψαι· ἀτὰρ τῶν καὶ κέρσεαι κύνας ἡδ' οἰωνούς,  
 δημῶ καὶ σαρκεῖσι πεισθὲν ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.

Ως ἄρα



ἥλιος ἀπηνύ, νῦν τοι σῶς ἀπὺς ὀλίβρος.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ὀλίξων δρος θεοσδύης.

ἔκτορ ἐπεί τοι θυμὸς ἀναίτιον ἀπώλαδα.

ἄλλο γε δὴ ποτε μάλλον ἱρωῆσαι πόλεμοιο

μίμω, ἵπεί ἔδ' ἐμὲ πάμπαν ἀνάλκιδα γένεα μήτηρ.

ἔξῃ γάρ περὰ νηυσὶ μάχῃ ἤγερας ἱταίρων,

ἔκ τ' ἔδ' ἐνθάδ' ἐόντος ὀμιλήομην δαυαοῖσι

νωλεμίως, ἱταροὶ δ' ἐκτέκταθεν οὐς σὺ μεταλλάξ.

οἷω δ' ἡφόβος τε βίηθ' ἐλένοιο ἀνακτ'.

οἷχεδον μακρῇσι τετυμμένω ἐγχείησιν.

ἄμφοτέρω κατὰ χεῖρα, φόνον δ' ἡμῶν χρόνιων.

νῦν δ' ἔρχ' ὅππῃ σε κραδίη θυμὸς τε κελούει.

ἡμεῖς δ' ἐμμεμαῶτοβ' ἄμ' ἐφ' ὁμείβ' οὐ δέ τε φημί

ἀλκῆς δίδυήσιν εἶδαι, ὅση δ' ὕναμὶς γε πάρεσται.

ἢ πᾶρ δ' ὕναμιν δ' οὐκ ἔστι καὶ ἐσύνδμορον πόλεμι' ἔην.

Ὡς ἐπὶ πᾶρ παρέπαισεν ἀδελφεὺς φρίνας ἥρας.

βᾶν δ' ἴμεν, ἐνθα μάλιστα μάχη καὶ φύλπις ἦεν.

ἄμφι τε κειβειόνῃ καὶ ἀμύμονα πελιδάμουτα.

φάλλῃ δ' ὀρθαῖόν τε, καὶ ἀντήθειον πολυφοίτῃ.

πάλλμωτ', ἄσκανιόν τε, μόρωθ' ὕπαι ἱποπείων.

οἱ δ' ἐξ ἀσκανίης ἐειβόλας ἤλθορον ἀμοιβοί.

ἡοὶ τῇ προτέρῃ, τότε δ' ἰδὺς ὤρσε μάχιδαι.

οἱ δ' ἴσσαν ἀργαλίων ἀνέμων ἀτάλωντο ἀέλλῃ.

ἔξ' ἄθ' ὑπὸ βροντῆς πατρὸς διὸς ἱστοὶ πίδονδε,

θεσπισίῳ δ' ὁμάδῳ ἀλλ' ἐμίσγεται, ἐν δέ τε πολλὰ

κύματα παφλάζοντα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης

κυρτὰ φαλαιοόντα, πρὸ μὲν τ' ἄλλ' αὐτὰρ ἐπ' ἄλλα,

ὡς φῶς πρὸ μὲν ἄλλοι ἀρηρότες, αὐτὰρ ἐπ' ἄλλοι

χαλκῷ μαρμαίροντες ἄμ' ἡγεμόνεσιν ἔποντο.

ἔκτορ δ' ἡγήτο βροτολοῖτ' ἰσὺς ἀρήϊ.

9. 3

1718

οὐ γὰρ σφι σκεδὶν ὑσμίνῃ μίμνε φίλον κῆρ.  
 οὐ γὰρ ἔχον κόρυθας χαλκῆρας ἱποδασείας.  
 ἢ δ' ἔχον ἀσπίδας ἐκκύκλους, καὶ μέλινα δ' ἔρα.  
 ἀλλ' ἄρα τόξοισιν καὶ ὑσπρόφθοις ὤωτο,  
 ἴλιον ἐς ἅμ' ἐποντο πεποιοτότοιοι σιμ' ἔπειτα  
 ταρφέα βάλλοντο, φῶων ῥήγνυντο φάλαγγας,  
 φῆ ῥα τόθ' οἱ μῦθον πρόθεν σὺν ἔντισι διαδελίοισι,  
 μάρναντο φωσίν τε καὶ ἔκτορι χαλκῷ κυρυσῇ.  
 οἱ δ' ὀπίθεν βάλλοντο ἐλάνθανον, οὐδ' ἐπὶ χάρμῃ  
 φῶες μιν ἠσκήοντο, σωκυκλόντο γὰρ οἵ τοι.  
 ἐνθά κε λούγαλῶς νηῶν ἀπο καὶ κλισιάων,  
 φῶες ἐχώρησαν προτὶ ἴλιον ἠνιμύεσσαν,  
 ἐμὴ πελυιδέας θρασὺν ἔκπρα ἐπὶ παραστάς,  
 ἔκτορ ἀμύχανός ἐστι παρὰ ῥητοῖσι πιθιδῶα.  
 οὐνικά τοι πῖρι δῶκε θεὸς πολυμήϊα ἔργα,  
 τοῦνικα καὶ βελῇ ἐθέλεις περιῖδ' ἄλλων.  
 10 ἀλλ' οὐ πως ἅμα πάντα διωήσῃαι αὐτὸς ἐλῆσθαι.  
 11 ἀλλὰ μῦθον γὰρ ἐδῶκε θεὸς πολυμήϊα ἔργα.  
 12 ἀλλὰ δ' ὄρχησύν, ἐτέρω κίθαριν καὶ αἰολίην,  
 13 ἀλλὰ δ' ἐν σήθεισι τίθει νόον ὑρὺσπα ἴδους  
 14 ἰδλόν, τῷ δ' ἐτε πολλοὶ ἱπωρίσκοντ' ἀνδραποί,  
 15 καὶ τι πόλεις ἰσάωσεν, μάλιστ' αὖ ἐκ αὐτῶν ὀνείγων.  
 αὐτὰρ ἱγῶν ἱρίωδες μοι δοκεῖ εἶν' αἰετα.  
 πῶντ' ἡ γὰρ σε περὶ σέφοντο πολέμοιο δ' ἐδῆ.  
 φῶες ἡ μιν ἄθυμοι ἐπὶ κατὰ τιῆχος ἔβησαν  
 οἱ μὲν ἀφισσῶσιν σὺν τούχοισιν, οἱ δ' ἡ μολχονται  
 παυρότεροι πλείονισι κιδάδ' ἐντόθ' κατὰ νῆας.  
 ἀλλ' ἀναχασσάμενοι καλῇ ἐνθόθεν πάντας ἀρίστους.  
 ἐνθεν δ' ἄρ' ἐμάλ' αἰσῶσιν ἱπποφραγαίμιν' αἰ βελήν,  
 ἔκον ἐνὶ νύεσι πολυκλήϊσι πείσομεν,

Ι Λ Ι Δ' Δ Ο Σ.

τῆς ἰσθμῆς ἰσθμῆς χθαμαλωτάτον, ἔνθα μάλιστα  
 λαοὶ γίνονται μάχη, αὐτοὶ τε καὶ ἵπποι·  
 ἔνθα δὲ βοιωτοὶ καὶ ἰάοντες ἑλκεχίτωνες,  
 λυκροὶ καὶ φθίοι, καὶ φαιδίμωντες ἱππεῖς,  
 ἀνδρῶν ἐπαΐοντα νέων ἔχον· οὐδ' ἰδύναντο  
 ἔσσαι ἀπὸ σφείων φλογὶ ἵκελθον ἑκπρασδίον.  
 οἱ μὲν Ἀθηναίων προλιλεγμένοι, ἔνδ' ἄρα τοῖσιν,  
 ἦρχ' ἡδὲ πίτεω μακροδύς· οἳ δ' ἅμα ἱπποῖ  
 φείδαστε, εἰχίος τε, βίας τ' ἐνὶ αὐτὰρ ἱππῶν  
 φυλείδης τε, μέγης, ἀμφίον τε, θρῶκίος τε.  
 προφθίων τε, μέδων τε, μενεπτόλιμος τε, ποδάρκης  
 ὅτοι δ' μὲν νόθος ἡδὲ δῖλῆος θείοιο.  
 ἔσκε μέδων αἶψαντ' ἀδελφίος· αὐτὰρ ἔπειτα  
 ἐν φυλακῇ γαίης ἀπὸ πατρίδος ἄνδρα κατακτάς,  
 γυνῆν μηρῆος ἐμώπιδος· ἦν ἔχ' οἴλοβος.  
 αὐτὰρ δ' ἰφίκλοιο πάϊς τῷ φιλακίδαο.  
 οἱ μὲν προφθίων μεγαθύμων θορηχθέντες,  
 ναῦφιν ἀμυρόμυροι μετὰ βοιωτῶν ἐμαλχοντο.  
 αἶας δ' οὐκέτι πάμπαν οἴλῆος ταχὺς ἡδὲ  
 ἵστατ' ἀπ' αἴου τ' ἐλαμῶνις οὐδ' ἠερόν.  
 ἀλλ' ὅς τ' ἐν νηῶ βοῖ οἶνοπι πικρὴν ἄρορον  
 ἴσoron θυμὸν ἔχοντι, λταίνοντο, ἀμφὶ δ' ἄρα σφιν  
 πρυμνοῖσιν κερῶσι πολὺς ἀνακηκίει ἰθρῶς,  
 τῷ μὲν τε ἱγρόν οἶον ὑψέρον ἀμφὶς ἔειρε,  
 ἱεμένω κατὰ ὄλῃα, τέμνῃ δ' ἐπὶ τέλῃ ἀρούρης,  
 ὡς τῷ παρβεβαῶτε μάλ' ἔστασαν ἀλλήλοισιν.  
 ἀλλ' ἦτοι τελαμῶνιάδῃ πολλοὶ τε, καὶ ἰωλῶι,  
 λαοὶ ἔπονθ' ἑτάροι, οἳ δὲ σωκὲς ἐξεδίδεχοντο,  
 ὅππότε μιν κωμαπὸς τε, καὶ ἰθρῶς γούναθ' ἵκητο.  
 οὐδ' ἄρ' οἴλιάδῃ μεγαλήτορι λυκροὶ ἔποντο

ἰόμῳ θ' ὅ κατ' αὐτοφίλων ἐν χερσὶν ἵταίρων,  
 θυμὸν ἀποπνείων, ὥς τε σκώληξ ἐπὶ γαίῃ.  
 κτεῖο ταθεῖς, ἐκ δ' αἷμα μέλαινα ῥέει δ' ὅτε ὅ γ' αἶσαν.  
 τὸν μὲν παφλαχόνδε μεγαλήτορος ἀμφιπέπονθε.  
 ἴς δὲ φροῦρ δ' ἀνίσταντο δ' ἄγορ' προτὶ ἱλίον ἱρήν.  
 ἄχνη μῆροι, μετὰ δ' ἐσφι πατὴρ κίε δ' ἄκρυα λείβων.  
 ποινὴ δ' οὐ πῖς παιδὸς ἐγ' ἴνθο τεθνεῶτ' ὅ.  
 τῷ ὅ πάεις, μάλα θυμὸν ἀποκταμένοιο χολώθη.  
 ξιῖνος γάρ οἱ ἔλω πολέσιρ' μετὰ παφλαχόνεσσιν.  
 τῷ ὅ γ' ἡρώμῳ προΐη χαλκήρεϊ δ' ὀϊόν.  
 ἦν δ' ἐπὶ δὲ χήνων πολυΐδ' ἡ μάνη ὅς.  
 ἀφνεός τ' ἀγαθός τε, κενεθόθι οἰκία ναίων.  
 ὅς ῥ' ἔμειδ' ὥς κἠρ' ὀλοήν ἐπὶ νηὸς ἔβαινε.  
 πολυάκι γάρ οἱ ἔηπε γέρον ἀγαθὸς πολυΐδ' ὅς.  
 νούσῳ ὑπ' ἀργαλὴ φθίδι αἶς ἐν μεγάροισιν.  
 ἢ μετ' ἀχαιῶν νηυσὶν ὑπὸ φάεσσι διαμῆναι.  
 ἴσθ' ῥ' ἅματ' ἀργαλὴν θωὴν ἀλίηναι ἀχαιῶν.  
 νῆσόν τε συγερήν, ἵνα μὴ πάθοι ἄλγιστα θυμῷ.  
 τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὐατ' ὅ, ὥκα ὅ θυμὸς.  
 ὥχετ' ἀπὸ μελίων, συγερὸς δ' ἄρα μιν σκοτ' ὅ κ' ἔλεν.  
 ὥς οἱ μὲν μάρναντο δέμας πυρὸς αἰθομένοιο.  
 ἔκτορ δ' οὐκ ἐπὶ πνευ δ' ἡ φίλως, οὐ δ' ἐτι ἦδ' ἔθ.  
 ὅ π' ἰφά οἱ νηῶν ἐπ' ἀεσιερά δ' ἡϊόωντο.  
 λαοὶ ὑπ' ἀργείων, τάχα δ' ἄρ' καὶ κῦδος ἀχαιῶν.  
 ἔπλετο, τοῖος γάρ γαίης ὅχος ἐννοσίγαιος.  
 ὥρ' ἄρ' αἶψα, πρὸς ὃ δ' ἴναι αὐτὸς ἄμωον,  
 ἀλλ' ἔχων ἦ τὰ πρῶτα πύλας καὶ τεῖχος ἰσάλλο.  
 ῥηξά μῳ δ' ἀναῶν πυκινὰς σίχας ἀσπίσων.  
 ἔθ' ἔσαν αἰσώτος τινέας καὶ πρῶτεσι λαόν.  
 οἷν' ἰφ' ἄλλος πολέης ἐρυμίνου, αὐτὰρ ὑπερβῶ.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔρ' ἐμὲ λωβήσεται κακὰ κύνες· οὐ δ' ἐπὶ θυμῷ  
 ἔλωρ' εὐερεμίτω χαλιπὴρ ἐδίδείχετο μῆνιν  
 ἔξιν' ὅς τε πόθ' ὕμμι διαφθέρσῃ πόλιν ἀπύν,  
 οἷμιν κενεδίῳ ἄλῃον, καὶ κτύματα πολλὰ  
 μάτ' οἷχ' αὖ ἀμολγόντες, ἐπὶ φιλέεσσι παρ' αὐτῇ.  
 νῦν αὖτ' ἐν νηυσὶν μῆκαινετε ποντοπόροι σι·  
 πῦρ ὀλοὸν βαλεῖν, κτεῖναι δ' ἥρωας ἀχαιούς.  
 ἀλλὰ ποπλήσειε καὶ ἐσὺ μῆμοί περ ἄρηθ'.  
 ἴδ' ὅν πάτερ, ἢ τί σε φασὶ περὶ φρένας ἐμῆμαι ἄλλω;  
 ἀνδρῶν ἠδ' ἐθῶν, σέο δ' ἐκ τολοῖ πόντα πέλονται.  
 οἷον δ' ἠ' ἀνδρῶσι, χαρίσσαι ὕβρισι  
 ἔωπ' ἔν, τῶν μὲν αὖτ' ἀτολοῖσιν, οὐ δ' ἐδύναται  
 φυλόπιδ' ἔχρεσθαι ὁμοίῃς πολέμοιο.  
 πᾶντων μὲν κόρος ἐστὶ καὶ ὕπνῃ καὶ φιλοτῇ.  
 μολπῆς τε γλυκερῆς, καὶ ἀμύμονος ὄρχημοιο,  
 τῶν περ τις καὶ μάλλον εἰλδίεται ἔξ' ἔρον ἔιν,  
 ἢ πολέμου, ἔδωκε δ' ὁ μολχῆς ἀκόρητοι ἴασιν.  
 ὣς ἐπών, τὰ μὲν ἔντα ἀπὸ χροὸς αἵματόεντα  
 σπλήνους· ἰταροῖσι δὲ δὴ μενέλαος ἀμύμων.  
 αὐτὸς δ' αὖτ' ἐξαῦτις ἰδὼν προμολχοισιν ἐμίχθη·  
 ἔνθα οἱ ἦδ' ἐπ' αὖτ' πυλαμένεος βασιλῆος.  
 ἀρπαλίων, ὃ ῥα παρὶ φίλῳ ἐπ' ὅθι πῆολε μίσγων  
 ἐς τοίῳ, οὐ δ' αὖτις ἀρίκτος παρὶδ' ἄρ' αὖσιν,  
 ὅς ῥα, τότ' ἀβείδω μέσορ' σάκας οὐτασε διυρὶ  
 ἐγγύθεν, οὐ δ' ἐσχ' ἀπὸ δ' ἰωὺς χαλκὸν ἱλάσσαι·  
 ἀτ' δ' ἐτάρων ἐς ἔθνος ἐχάρις κῆρ' ἀλείψων  
 πάντοσε πατρίων, μή τις χροὸς χαλκῷ ἐπαύρη.  
 μηιόνης δ' ἀπλέοντ' ἴει χαλκῆρ' ὀϊόν.  
 καί ῥ' ἐβλεψε γλυτὸν κατὰ δ' ἐξίον, αὐτὰρ ὀϊός.  
 αὐτὸν κ' αὖτ' ἐκείνῳ ὕπ' ὀϊόν ἐξέπρησεν.  
 ἐξ' ὀμῶν

ἀρείδης δ' ἄρα χεῖρα βοήην ἀγαθὸς μονέλας  
 τὴν βάλεν, ἣρ' ἔχε τόξον εὐξοον, ἐν δ' ἄρα τόξῳ,  
 αὐτὸν στήθεος χερὸς ἐλήλατο χάλκεον ἔγχος.  
 ἂψ δ' ἐταρώων εἰς ἔθνος ἐχάρξο κῆρ Ἀλκίωνα  
 χεῖρα παρακρημάσας. τόδ' ἐφίλκξο χάλκεον ἔγχος  
 καὶ σμῦν ἐκ χερὸς ἔρυσεν μέγα θυμος ἀγένηρ.  
 αὐτὴν δ' ἐξωέδισεν εὐστροφῶ οἷος ἄνθρωπος  
 σφουδρόν, ἣν ἄρα διθιρώπων ἔχε ποτιμένι λαῶν.  
 πείσανδρος δ' ἰθὺς μονέλας κυδαλίμοιο,  
 ἦϊε· τὸν δ' ἄγε μοῖρα κακὴ, θανάτοιο τέλεος δὲ  
 σοὶ μονέλας δαμῆναι ἐν ἀνῇ δῆϊοτῇ.  
 οἶδ' ὅτι δὴ χεῖδ' ὅρ' ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες.  
 ἀρείδης μὲν ἀμαρτε, παρὰ δ' ἐοῖβ' ἀπ' ἔγχος.  
 πείσανδρος δ' ἐσάκως μονέλας κυδαλίμοιο  
 οὔτασεν, οὐ δ' ἐσθλὸν πρὸ δωήσας χάλκεον ἔλασσε.  
 ἔγχος γὰρ σάκως δέρυ', ἐπεκλάδῃ δ' ἐνὶ καυλῷ  
 ἔγχος· ὃ δ' ἐφρίσιν ἦσι χάρη καὶ ἐέλπξο νίκην.  
 ἀρείδης δ' ἔρυσσεν μιν ἔξω ἀργυρόηλον,  
 ἦλτ' ὅς πεσάειδεν· ὃ δ' ὑπ' ἀσπίδος ἐέλξο καλῇ  
 ἀξίνῃ ἐν χάλκῳ ἐλαίνῳ ἀμφιπελὲκκα.  
 μακρῷ ἐϋξέσθω· ἅμα δ' ἀλλήλων ἐφίχοντο.  
 ὅτοι δ' μὲν κόρυθος φάλαρ' ἤλασαν ἱπποδάσειης,  
 ἄκρον ὑπὲρ λόφον αὐτὸν ὃ δ' ἐπροσιόντα μέτωπον,  
 ῥινὸς ὑπὲρ πυμάτης· λάκεδ' ὅς ἐα, τῷ δ' οἱ ὄσσε.  
 πᾶρ ποσσὶν αἰματόντι χαμαὶ πίθῃ ἐν κενήσιν·  
 ἰδνώθη δ' πρὸς ὧν· ὃ δ' ἐλάξεν ἐν σήθεσι βαίνων,  
 τόλμα τ' ἐξενάειξε, καὶ οἱ χόμιεν ἔπος ἥνδρα,  
 λείπετ' ὅλω οὕτω γένεας δ' ἀναῶντα χυπῶλων.  
 ῥῶϊς ὑπερφιάλῳ δ' ἐνῆς ἀκόρητο· αὐτῆς.  
 ἄλλης μὲν λώβης τε καὶ αἵχης· οὐκ ἐπίδουις.

# Ι Λ Ι Δ Ο Σ.

κυανοχῆτα ποσὶ δάκρυ βιότοιο μιγῆρας.  
 καὶ τὸ μὴ αὐτῷ μεῖν' ὥς τι σκῶλος πυρίαντος.  
 ἐν σάκεσσι ἀνυλόχοιο, δ' ἔμῃσιν κείτ' ἐπὶ γαίης  
 ἄψ' δ' ἐτάρων ἐς ἔθνος ἐχάριζο κῆρ' ἀλιένων,  
 μηειόνης δ' ἀπιόντο μεταπομῖν' βάλε δ' ὕρῃ  
 αὐδ' εἰδόντε μεταγῆν', καὶ ὁμφαλῶν, ἔθα μάλα  
 γίνετ' ἄρης ἀλιγ' ἐνός δι' ἱεροῖσι βροτοῖσιν.  
 ἐνθα δ' ἔγχετο ἔπηξον, δ' ἔσπομον' περὶ δ' ὕρῃ  
 ἔσπαρ', ὥς ὅτι βῆς, τὸν τ' οὐρεσι βυκόλοι ἀνδρόθε  
 ἰλλάσιν οὐκ ἐθέλουντο βίη δ' ἤσαντο δὲ ἄγασιν.  
 ὥς ὅτ' ὑπὲρ ἔσπαρε μίνωθ' ἀπερ οὐπὶ μάλα δ' ἔην.  
 ὄφρα δ' ἐκ χροὸς ἔγχετο ἀνιστάσας ἔγγυθον ἑλθὼν  
 ὄφρα μηειόνης, τὸν δ' σκοτόν' ὄσ' ἐκάλυψε.  
 δ' ἡίπυρρον δ' ἔλκονος ξίφει χιθῶν ἔλασε κόρσιν.  
 θεήκιον μετὰ λῶ, ἀπὸ δ' ἔρυφάλασιν ἄραξαν.  
 ὁ μὴ ἀποπλεῖ χθιῖται χαμαὶ πέσει, καί τις ἀχαιῶν  
 μαρναμένων μετὰ πρῶτ' κυλινδομένῳ ἐκόμισατο.  
 τὸν δ' ἐκατ' ὀφθαλμῶν ἐριβονή νύξ ἐκάλυψον.  
 ἀφ' ἑδῶ δ' ἄχος ἔλκετο βεβῆν' ἀγαθὸν μιν ἔλαον.  
 βῆ δ' ἐπαπλήσας ἑλίνω ἥρωϊ ἀνακτε  
 ὄξυν δόρυ κραδίαν, ὃ δ' ἐτόξεν πῆχυν ἀνέλλετο.  
 τῷ δ' ἄρ' ὁ μαρτυρήτω, ὃ μὴ ἔγχετο δ' ἐξούων.  
 ἴτε ἀκοντίσας, δ' ἀπὸ νυρῆφιν ὀϊσῶ.  
 πρὶαμίδης μὴ ἐπείτα κατὰ σῆθος βάλεν ἰδὲ  
 θώρηκος γύαλον, ἀπὸ δ' ἐπείτα πικρὸς ὀϊσός.  
 ὥς δ' ὅτ' ἀπὸ πλατέος πηόφιν μετὰ λῶ κατ' ἄλκων  
 θρώσκεισι κύαμοι μελανόχροες ἢ ἐρίβινθοι,  
 πνοιῇ ὑπὸ ληνυρῇ καὶ λικμητῆρ' ἔρωϊ,  
 ὥς ἀπὸ θώρηκος μενελάου κυδάλιμοιο  
 πολλὸν ἀποπλεῖ χθιῖται, ἐκὰς ἐπείτα πικρὸς ὀϊσός.  
 ἀφ' ἑδῶ



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἀλλ' ὃ μὲν ἄντα ἰδὼν, ἠλθὺς ἄλκιον ἔγχε-  
 σσάμεν δ' αὖτί τοι κραδαιομένην κατὰ γαίης,  
 ὥχνη· περὶ δ' ἄλιον σιβαρῆς ἀπὸ χερσὶ ὄρυσαν.  
 ἰδομένοισι δ' ἄρα οἰνόμαον βάλε γαστέρα μέλαινα.  
 ῥῆξι δ' εἰσι θώρηκος γυάλοισι στήθεσσι δ' ἔντερά χαλκῶς  
 ἔφυσ', ὅδ' ἐν κενήσι πεσών, ἔλε γούαν ἄγροῳ.  
 ἰδομένοισι δ' ἐκ μὲν νέκυος δολιχόσκιον ἔγχε-  
 σσάσασα, οὐδ' ἄρ' ἐπ' ἄλλα δωρήσασθαι τόλμα κατὰ  
 ὤμοισιν ἀφιλέεσθαι, ἐπεί τοι γὰρ βιβλίεσθαι.  
 οὐ γὰρ ἔτι ἐμπέδω γούνα ποδῶν ἦν ὀρμηθέντι.  
 οὐτ' ἄρ' ἐπαΐξαι μεθ' ἑὸν βίβλος, οὐτ' ἀλέεσθαι.  
 ἴδω δ' ἄρ' ἐν σαρδίῃ μὲν ἀμύνεσθαι νηλεὲς ἦμαρ.  
 φέσσαι δ' οὐκί τι ῥίμφοι πόδες φέρον ἐκ πολέμοιο.  
 τῷ δ' ἐβάρυν ἀπιόντι· ἀκόντισε δ' ἄρ' ἐφ' ἑσθλῷ  
 ἐκίφοιο. δὴ γὰρ οἱ ἔχον κότον ἐμμελὲς αἰεὶ.  
 ἀλλ' ὅ γε καὶ τόθ' ἄμαρτεν, ὅδ' ἀσκάλαφον βάλε δ' ἄρ' ἐπ' ἑὸν  
 ἐνναλίοιοι δ' ὤμῳ δ' ὄβριμον ἔγχε-  
 σσάν, ὅδ' ἐν κενήσι πεσών, ἔλε γούαν ἄγροῳ.  
 οὐδ' ἄρ' ἀπὸ πῶπι πέπυστο, βελήπυθ' ὄβριμος ἄρ' ἐπ' ἑὸν  
 ὕιος ἐοῖο πεισόντι· ἐνὶ κρατερῇ ὕσμινι.  
 ἀλλ' ὅ γε ἄρ' ἄνδρα δολύμπερ' ὑπὸ χυρσίοισι νέφισσιν  
 ἔστο δ' ἴος βυλῆσιν ἐλμέντι· ἐνθά περ ἄλλοι  
 ἀθάνατοι θεοὶ ἦσαν ἐργάζεσθαι πολέμοιο.  
 οἱ δ' ἄμφ' ἀσκαλάφῳ αὐτοχέδον ὥρμηθησαν.  
 ἐκίφοιο μὲν ἀπ' ἀσκαλάφῳ πύλην φαφνίην  
 ἔρπασε, κλειόνης δ' ἐπ' ἑσθλῷ ἀτάλῳ τ' ἄρ' ἐπ' ἑσθλῷ  
 δ' ἄρ' ἐπ' ἑσθλῷ βραχίονα τύψεν ἐπὶ λῆμνι· ἐκ δ' ἄρ' ἄρα χερσὶ  
 αὐλῶπις τυφάληα χαμαὶ βόμβησε πεισῶσα.  
 κλειόνης δ' ἐξαῦτις ἐπὶ λῆμνι· αὐγυπὶος δ' ἐπ' ἑσθλῷ  
 ἐξέρυσσε πρυμνοῖο βραχίον· ὄβριμον ἔγχε-



χῶρσ' ἰν' οἷο πόλιν, φρίσσει δ' ἐτενώτορον ὑπὲρ θῆν.  
 ὀφθαλμῶ δ' ἄρα οἱ πυρὶ λάμπρον· αὐτὰρ ὀδόντας  
 θήγαι ἀλέξασθαι μιμαῶς κύνας ἥδ' ἐκὼν ἀνδρας.  
 ὣς μένων ἰδομνίδης δ' ἔσχε κλυτὸς, οὐδ' ὑπὲρ χῶρσ'  
 ἀνείσσει ἐπιόντα βοῇ θοδὸν· αὖτις δ' ἐταίρους  
 ἀσκάλαφόντ' ἐθρῶν ἀφαρῆατ' ἐκίπυρόν τι·  
 μηειόνων τε καὶ ἀντίλοχον μέσσωρας αὐτῆς.  
 τὺς δ' ἔπορύνων ἔπεικ' ἡρώεσσαν προσήυδα·  
 δειυτε φίλοι καὶ μὲν οἷον ἀμύνετε· δειδύια δ' αὖτις  
 ἀνείσσει ἐπιόντα πόδας ταχύν, ὅς μοι ἔπεισιν  
 ὅς μάλα κάρτερός ἐστι μάχη ἐνὶ φῶτας ἐναίρειν.  
 καὶ δ' ἐχθρὸς ἔβησ' ἀνθος, ὅτε κράτος ἐσὶ μέγιστον.  
 εἰ γὰρ ὁμηλικὴ γελνοίμεθα τῷ δ' ἐνὶ θυμῷ,  
 αὐτὰρ κεν ἦε φέροιτο μέγα κρᾶτ'· ἦε φεροίμην.  
 ὣς ἔφατ'· οἳ δ' ἄρα πάντες ἔνα φρεσὶ θυμὸν ἔχοντες  
 πληστοὶ ἔσθουσ' ἀκὲς ὥμοισι κλυιάντοσιν.  
 ἀνείσσει δ' ἐτέρωθεν ἐκὼν κλῆρ, οἷς ἐτάροισι.  
 ἐκίπυρόν τε, πάειν δ' ἐθρῶν καὶ ἀγένορα δ' ἴον·  
 οἳ δ' αἶψ' ἤγεμόνους φῶρ' ἔσαν, αὐτὰρ ἔπειτα  
 λαοὶ ἔπονθ', ὥσείτε μετὰ κτήλην ἔσσωσ' ὅμιλον  
 πτόμῳ ἐκ βοτάνης, γάνυται δ' ἄρατι φρένα ποίμην·  
 ὣς ἀνείσσει θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι γελήθεις.  
 ὣς ἰδὲ λαῶν ἔθνος ἐπὶ σπόμενων ἰοῖ αὐτῷ.  
 οἳ δ' ἀμφὶ Ἀλκιδόω αὐτοσχιδὸν ὤρμηθησαν·  
 μακροῖσι ξυστοῖσι, περὶ στήθεσσι δ' ἐχαικός.  
 σμυρδάλιον καὶ ἀβίζι τιτυσκαμένον καὶ ὀμιλῶ  
 ἀλλήλων, δ' ὅς δ' ἀνδρὸς ἀρήϊοι ἔξοχον ἄλλων,  
 ἀνείσσει τε καὶ ἰδομνίδης ἀτάλαστοι ἀρήϊοι,  
 ἰοῦντ' ἀλλήλων ταμίην χροά νηλεὲς χαλκῷ·  
 ἀνείσσει δ' ἐπ' αὐτῷ ἀκόντισσιν ἰδομνίδην.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἦρά δ' ἀπαίρυσσα, καὶ ἑρίαχον πελὶ μίξιν  
 ἔγχεος, ἔνθα δ' ἔπατ' ἀφ' ἱέ μίνος ἔβριμος ἄρης.  
 ἰδομνεύς δ' ἔκπαλιν ἐπ' ὤξασα μακρὸν αἴσας.  
 Διήφοβ' ἢ ἄρα δ' ὕψ' ἵσχεσθαι ἄξιον εἶναι,  
 φεῖς ἔνδ' ὠππιβᾶσθαι, ἐπεὶ σὺ πρὶ ὕχεαι αὐτῶς  
 δαίμονι, ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ἐναντίος ἴσασ' ἑμοῖο,  
 ἔφρα ἰδῆς, ὅιος ἦνδ' ὅνος ἔνθα δ' ἰκάνω.  
 ὅς περ ὦπ' ἰδὼν μίνωα τί κε κρήτη ἰπίερον.  
 μίνωας δ' ἄν τέ κ' ὕδ' ἀμύμονα Δευκαλίωνα,  
 Δευκαλίον δ' ἔμει τί κ' ἐστ', πολέεσ' ἄνδρασιν ἀνακταί,  
 κρήτη ἐν δ' ὕφ' ἔνθα δ' ἐνθάδε νῆες ἔνεκον  
 ὅτι κακὸν, καὶ παρὶ, καὶ ἄλλοισι φῶσιν.  
 Ως φωνοῖ. Διήφοβος δ' ἐδιδάνει χαμῆ μίξιν  
 ἣ ἵνα πρὸς τῶν ἐταρίσαστο μεθ' ὅμων,  
 ἄψ' ἀναχωρήσας, ἢ περήσας καὶ οἶσ'.  
 ὦ δ' ἐδ' οἱ φρονέοντι, δ' ὁσάσαστο κέρδιον εἶναι  
 εἶναι ἐπ' αὐτίαν, τόνδ' ὕστατον εὔρεν ὁμίλῃ  
 ἰσάστ'. αἰεὶ γὰρ πρὶ ἄμω ἐπεμύνην δ' ἴω.  
 οὐκ ἄρ' ἐδὸν ἰόντα μετ' ἀνδράσιν οὐπὶ τίς σκη.  
 ἄρχου δ' ἰσάμην' ἔπειτα πῆρόντα προσήνδα.  
 αὐτίαν τῶν βυλῆφορε, νῦν σὲ μόλα χρεῖ,  
 γαμβρῶ ἀμυῖ μῆμα εἴ περ τί σ' κῦδος ἰκάνει.  
 ἀλλ' ἔπειτα ἀλκασθὼ ἐπαμύνομεν, ὅς σ' ἐπάρ' ὅσον  
 γαμβρὸς ἔδω, ἔσθ' ἐπ' ὅμοις ἐνι, τυτθὸν ἰόντα,  
 πρὶ δ' ὅσον δ' ἰδομνεύς δ' ἐκλυτὸς ἐξενάειξεν.  
 Ως φωνοῖ. ὦ δ' ἄρα θυμὸν, ἐνὶ στήθεσιν ὄειν.  
 εἴ μ' ἐμὲτ' ἰδομνεύς μέγα πῶλε μοιο μιμηλῶς.  
 ἀλλ' ἔκ' ἰδομνεύς φόβος λαοῖσι τηλὺ γὰρ ἔς,  
 ἀλλ' ἔμει ὥς ὅτις σὺς οὔρεσιν ἀλκὴ πεποιθὼς,  
 ὅς τι μιν κ' ἐλθόντων ἐπ' ἔχοντα πολλὸν ἀνδρῶν

Διήφοβος δ' ἐκπαλιν ἐπεύξατο μακρὸν αὔραι·  
 ἢ μὲν αὐτ' ἀπὸς κῆται ἄσι· ἀλλ' αἰφνιδίᾳ,  
 εἰς αἰδὸς πρὶόντα πυλωρταοκρατεροῖο  
 γηθήσαν κατὰ θυμόν· ἐπεὶ ῥα οἱ ὥπασατο πομπήν.  
 ὧς ἔφατ' ἀργείοισι δ' ἄχες γένετ' ὀβριμένοιο·  
 οὐκ ἐπὶ λόχῳ δ' ἡ μάστις ἀνὰ φρονι θυμὸν δεινῇ·  
 ἀλλ' ἔθ' ἀχνυμένοσ' πρὶ εἴου ἀμείλῃσιν ἰταῖρε·  
 ἀλλὰ θεῶν περίβη καὶ οἱ σάκχες ἀμφικαλύφει·  
 πρὶν μὲν ἐπεὶ ὑποδύντε δ' ὕω ἐρήρεται ἰταῖροι·  
 μηκιστὸν ἐχίοιο πάϊς καὶ δῖος Ἀλκίνοος·  
 νῆας δ' ἡ γλαφυρὰς φερέτω βαρὴα σινελχόντα·  
 ἰδομνέως δ' ἔλθῃ μίτ' ἡμίονο· ἴδω δ' αἰή·  
 ἢ ἔνα βῶων ἐριδεννῇ νυκτὶ καλύφει·  
 ἢ αὐτὸς δ' ἐπὶ πῆσαι ἀμύνων λαγόν ἀχαιοῖς·  
 ἐνθ' αἰσυνήταο δῖοι φέρος φίλον ἦδ' ὄν·  
 ἔρω δ' ἀλκᾶθοον γαμβρὸς δ' ἦν ἀρχίστοιο·  
 πρὶς βυτάτῳ δ' ὠπύει θυγατρὸν ἱπποδάμειαν·  
 πῶν περὶ κῆρ φέλλῃσι πάτῃρ καὶ πότνια μήτηρ·  
 ἐν μετάρῳ, πᾶσαν γὰρ ὀμηλικίῳ ἐκέκαστο,  
 κάλλιπ' ἐργασίῃ, ἰδὲ φρεσὶ, τ' οὐν καὶ καί μιν  
 γῆμιν ἀνὴρ ὥρεος ἐνὶ τροίῃ δὴ βέβη·  
 πρὶν τότε ὑπ' ἰδομνέῃ ποσὶ δάων ἰδὲ μάστιγι,  
 θέλξας ὅσῃ φαίνω, πέδῃσι δ' ἐφ' αἰδῇ μαγνῆα·  
 οὗτ' ἐξ ὀπίσσω φυγέειν δύναντ' οὗτ' ἀνέξασθαι·  
 ἀλλ' ὥς τε σῆλιν, ἢ δ' ἐνδρὸν ὑπὲρ ἱππότηλον·  
 ἀφ' ἑμας ἰσχυρότα, σῆθος μίθ' οὐτ' αὖτις δ' ὑρί·  
 ἔρω δ' ἰδομνέως, ῥῆξεν δ' οἱ ἀμφὶ χιτῶνα  
 χαλκίον, ὅς οἱ πρόσθεν ἀπὸ χροῶς ἤρκεε ὀλεθρον·  
 δὴ τότε γ' αὖτον αὔσαν ἐρεκόμηνος περὶ δ' ὑρί,  
 ὀδύνησαν δ' ἐπιστῶν, δ' ὄρω δ' ἐν κραδίῃ ἐπὶ πύργῳ·

# ΙΛΙΑΔΟΣ

Ως ἔπειδ' ὅς εἴλκε κατὰ κρατερὴν ὕσμίνῳ  
 ἦρας ἰδομνεύς, τοῖ δ' ἄσιος ἦλθεν ἀμύντορ,  
 πείρος πρόδ' ἵππων, τῷ δ' πνείοντε κατ' ὤμων  
 αἶν' ἐχ' ἠνίοχος θειρωπῶν, ὅδ' ἴφρο θυμῷ,  
 ἰδομνῆα βαλεῖν, ὅδ' εἰ μιν φθάμην βώλι θυρή.  
 λαμὸν ὑπ' ἀνθιρέων, διαπρὸ δ' χαλκὸν ἔλασεν.  
 ἔπει δ' ὥς ὅτε τις θρῦς ἦεν περ. ἡ ἀχρῶς.  
 ἢε πίτυς βλωθρὴ, τήν τ' οὔρεσι τέκνονός ἀνδρὸς  
 ἐξέταμον πελίκια νεήκισι νήιον εἶν.  
 ὥς δ' ἐπρόδ' ἵππων καὶ δίφρου κείῳ ταυνωδῆς  
 βιβρυχῶς κόνιος δεδραγμένῳ αἵματοισι.  
 ἔκ δ' οἱ ἠνίοχος πλήγῃ φρένας, ἄς πάρῳ εἶχεν.  
 ἔδ' ὅ γε τόλμησεν δηῖον ὑπὸ χθρας ἀλύξας  
 ἀφ' ἵππουσ' ἐρέτω τόν δ' ἀντίλοχος μνηχάρμης  
 θυρή μέθην περόνησε τυχῶν, ἔδ' ἤρκεσε θώρηξ  
 χάλκεῳ, ὃν φορέεσκε, μέσῃ δ' ἐνὶ γαστέρι πῆξεν.  
 αὐτὰρ ὅ γ' ἀδμαίνων δούργεος ἔκπιπε δίφρου.  
 ἵππουσ' δ' ἀντίλοχος μεραυθὺς νέετορ ἦος  
 ἐξέλασε βῶων μετ' ἐϋκνήμιδες ἀχαιοὺς.  
 δηῖφοβος δ' ἐμολλα χερσὶν ἔλυσεν ἰδομνῆος  
 ἄσις ἀχνυμένη καὶ ἀκόντισι θυρή φασγῶ.  
 ἀλλ' ὁ μὲν ἀνταΐδων, ἠλεύατο χάλκεον ἐγχεῖ  
 ἰδομνεύς, κρύφθη γὰρ ὑπ' ἀσπίδι πῶν τοσέτ' ἴσῃ  
 τήν, ἧρ δ' ἐν ῥινοῖσι βῶων καὶ νώροπι χαλκῶ.  
 δηῖω τὴν φορέεσκε, δῖω κανόνια ἀραρυῖαν.  
 τῇ ὕπο πᾶς ἐόλη, τόδ' ὑπὲρ πῆατο χάλκεον ἐγχεῖ.  
 καρφαλῆον δ' ἐοῖσσι ἐπιθρῆξαντος αἵσιν  
 ἐγχεος ἔδ' ἄλιόν ῥα βαρέης χερὸς ἀφῆκεν.  
 ἀλλ' ἐβέλ' ἵπποσ' ἰδὼν ὑφ' ἠνόφα τοιμένα λαῶν.  
 ἔπαρ ὑπὸ πρᾶπίδων, εἰδάρ δ' ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν.  
 δηῖφοβος

θροσὶν δαμναμένους, διὸ ὃ κρατερῶς ἐνέμεινα.  
 ἢ μὲν, ἀμφοτέροισιν ὁμὸν γένος ἦδ' ἰα πάρε  
 ἀλλὰ βίως πρότερος γελόνει καὶ πλείονα ἔδῃ.  
 ἴωδ' ῥὰ κ' ἀμφαδίλω μὲν ἀλεξόμενα ἀλίσινε.  
 λάβρη δ' αὖν ἐγφρε κατὰ στρατὸν, ἀνδρὶ ἱοικώς.  
 τώδ' ἔειδος κρατερῆς καὶ ὁμοίῃς πολλέμοιο,  
 πείραν ἱπαλλοξάντες, ἐπ' ἀμφοτέροισι τάλυνταρ,  
 ἄρρηκτὸν τ' ἀλυτόν τε. τὸ πολλῶν γούνατ' ἔλυσιν.  
 ἔνθα μετασπόλιός περ ἐὼν δαναοῖσι κελεύσας,  
 ἰδομενεὺς βῶισιν ἱπάλωμ' ἔν, ἐν φόβον ὤρσι  
 πέφνε γὰρ ὄβρυον ἥα καθεσώθων ἔνδον ἐόντα.  
 ὅς ῥα νέον πολέμοιο μετὰ κλέος ἔλυθυσθε.  
 ἦτις ὃ πριάμοιο θυγατρῶν ἔιδος ἀρίστω.  
 κεραιάνδρῳ ἀνάνιδνον, ὑπείχσο ὃ μέγα ἔργον  
 ἐκ βροίης ἀέκωντας ἀπασέμῃ ὕιας ἀχαῶν.  
 ἴωδ' δ' ὃ γέρον πριάμος ὑπείχσο, καὶ κατένευσθε  
 δασέμοναι, ὃ ὃ μάρνασθ' ὑποχισίσῃσι πιθήσας.  
 ἰδομανὺς δ' αὖτ' ὁ γυτὸς κέσσο δ' ἐρὶ φαίνῃ.  
 καὶ ἔαλεν ὑπὶ βιβλῶντα τυχῶν, ἔδ' ἔρκεισι θώρηξ  
 χάλκιος, ὃν φορέεσκε, μέση δ' ἐν γαστέρι πῆξε.  
 δούπησε ὃ πεισῶν, ὃδ' ἐπύξατο φώνησέν τε.  
 ὄβρυον ἔν, πείει δ' ἡ σὶ βροτῶν ἀνίσοι ἀπάλων.  
 ἢ ἵτεον δ' ἡ πάντα τελυτήσας ὅς ὃ ὑπέσας  
 διαρδανίδῃ πριάμῳ ὃδ' ὑπείχσο θυγατέρα ἦν,  
 καί κ' ἐρι ἡμῶς ταυτὰ γ' ὑποχόμενοι τελίσσασμεν.  
 δοίμεν γ' ἀρείδῃο θυγατρῶν ἔιδος ἀρίστω,  
 ἄρχος ἔξαγαγόντας ὀπιέμεν, εἴ κ' ἐκὼν ὁμῶς  
 ἰλίε ἐκπέρσας δύναιόμενον πολλίεθρον.  
 ἀλλ' ἔπει, ὅφρ' ὅς κ' ἡνυσὶ σωώμεθα ποντοπόροισιν  
 ἀμφὶ γάμῳ, ἐπὶ οὐκ ἐπιδυνάται κακὸς ἐμῖν.



χαλκῷ τε φηκτὸς, μιγάλοισί τε χυμαδίοισιν.

ὅδ' ἂν ἀχιλλῆϊ φηξήνοει χορήσσειν.

ἔν γ' αὐτοσάδ' ἴη, ποσσὶ δ' οὐτως ἐσὶν ἐρίβην  
νῶϊν ὧ δέ δ' ἐπ' αἰεὶ ἔχει στρατοῦ, ὅφρα τάχιστα  
ἰδομεν, ἢ ἔτι εὖχος ὀρέξομεν, ἢ ἔτι ἡμῖν.

Ὡς φάτο, μνηστήρης δ' ἐθὺς ἀτάλαντος ἄρην  
ἦρχ' ἴμεν ὅφρ' ἀφίκεντο κατὰ στρατὸν, ἡμῖν ἀνώγει,  
οἷδ' ὥς ἰδομεν ἢ ἴδον φλογὶ ἐκίλον ἀλκήν  
αὐτὸν ἢ θιράωντα σὺν ἔντισι δουδαλίοισι  
κυκλούμενοι καθ' ὁμίλιν, ἐπ' αὐτῷ πάντες ἐβόησαν.  
τῶν δ' ὁ μὲν ἵστατο νῆκας, ὅς πρὺμνησι νέεσθιν.  
ὡς δ' ὅθ' ὑπὸ λιγίων ἀπέρχουσιν ἄελλαι,  
ἔματι τῷ . ὅτι τι πλείη κόνις ἀμφὶ κυλιούσας,  
οἷτ' ἀμυδὸς κνήμης μιγάλλω ἵστασιν ὁμίχλῳ,  
ὡς ἄρα τῶν ὁμός' ἦλθε μῶλχῃ, μέμασαν δ' ἐνὶ θυμῷ,  
ἀλλήλους καθ' ὁμίλιν ἱναρέμεν ὅξ' ἔχ' χαλκῷ.  
ἔφειξαν δ' ἐμῶλχῃ φθισίμβροτος ἐγχείησι  
μακρῆς, ἅς ἔχον ταμίσίχρους, ὅσας δ' ἀμερδὲν  
αὐτῇ χαλκείῃ κερύθων ἀπὸ λαμτωμένων ἀνδρῶν  
θαρήκων τε νιοσμήκων . σάκων τε φαειῶν .  
ἐρχόμενοι ἀμυδὸς, μάλα κεν θρασυκάρδι' οἶη,  
ὡς τό τε γηθήσθαι ἰδῶν πόνον, ὅδ' ἀκαχοίτο  
τῷ δ' ἀμφὶς φρονέοντες δ' ὅτ' κρῶν ὕπ' ἡφαιστῶ  
αὐτράσιν ἤρώεσσι τετυύχαρ' ἀλγέα λυγρῶ .  
ζεὺς μὲν ἄρα βῶεσσι καὶ ἔκτοει βούλῃσι νίκῃς  
κυδαίνων ἀχιλλῆα πόδας ταχύν, ὅδ' ὅ γε πάμπαν  
ἤθελε λαὸν ὀλέσσειν ἀχαιῶν ἰλίοθι πρό .  
ἀλλὰ θέτην κύδαντι . καὶ ἦ ἔα καρτερόθυμον .  
ἀργεῖς δ' ἐπὶ ποσσὶ δάων ὀρόθωε μετελθῶν .  
λαθρῇ ὑπὲρ ἀναδύς ποταμὸς ἁλός, ἢ χυθῶ γάρ ῥα

ἑσθότις, μή που ὡς ὑπὲρ φιάλῃς νημισύσῃ.

ἀλλὰ σύ γε κλισίῳ δὲ κιῶν ἔλκευ ὄβριμον ἐγχεῖ.

Ὡς φάσ· μνηστήρης ὃ θεῶν ἀτάλαντος ἄρηι

καρπαλίμως κλισίῃθεν ἀνείλκω χαλκκεον ἐγχεῖ.

βῆ ὃ μὲν ἰδομένου ἡ μέγα πόλεμοιο μεμνηώς.

οἷος δ' ἐβροτολοιοῦς ἄρης πόλεμόν δὲ μέτρεσι.

Ἰδὼν δ' ὃ φόβος φίλος ἦδ' ὅς ἅμα κρατερὸς καὶ ἀπαρβῆς

ἴσαστο, ὅς τ' ἐφόβησε ταλάφρονά πρ' πολέμισιν.

τῷ μὲν ἄρ' ἐκ θρήνης ἐφύρυσ μετὰ θωρήσειαδον,

ἦε μετὰ φλέγους μεγαλήτορας· ἔδ' ἄρ' ἄ τῶ γε

ἔκλυον ἀμφοτέρων, ἑτέρωσι δ' ὃ κῦδος ἔδωκεν.

ὅιοι μνηστήρης τε καὶ ἰδομενεὺς ἀχρὶ ἀνδρῶν,

ἦσαν ἐς πόλεμον κενεορυσμένοι αἰθοπι χαλκῷ.

τὸν καὶ μνηστήρης πρότερος πρὸς μῦθον ἔειπε·

Διευκαλίδη, πῇ τ' ἄρ' μέμονας καταδύναι ὁμίλῳ.

ἢ δ' Δεξιόφιν πατρὸς στρατῷ ἢ ἀνὰ μέσσοι,

ἢ ἐπ' αἰετοφίῳ, ἐπὶ οὐ ποθὶ ἔλπομαι οὐτὼ

δυνάδαι πολέμοιο κερκαυμόντας ἀχαιούς.

Τόν δ' αὐτ' ἰδομενεὺς κρητὼν ἀγὸς, ἀντίον ἤνυσεν.

νηυσὶ μ' ἐν μέσσοισιν ἀμύνειν εἰσὶ καὶ ἄλλοι,

αἰῶντες τι δύνω, τι ὕκρος θ' ὅς ἄετος ἀχαιῶν

ὄξοσύνῃ, ἀγαθὸς δ' καὶ ἐν σταδίῃ ὑσμίνῃ.

οἳ μιν ἀδύω ἑλὼσσι καὶ ἐσσύμενον πολέμοιο.

ἔκθρα προακμίδω, καὶ ἐ μάλα κάρτερός ἐστιν.

ὡπύ δ' ἐσσύται μολα πρ' μιμαῶπι μολχεῖα

κρήων νικήσαντι μένθ' καὶ χάρας ἀπῆλυσ.

εἴης ἐνιπρῆσαι, ὅτε μὴ αὐτὸς γε κρονίῳ

ἑμβολοῖ αὐθόμενον δαλὸν νήεσι θοῇσιν.

ἀνδρὶ δ' ἐκ' ὅκ' ἐῖξαι μέγας τιλαμώνιος αἴας,

ὅς θνητὸς τ' εἴη, καὶ ἑδ' οἱ δὴ μῆτερ' ἀκτῆρ.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὦν δ' ὦν δυσμύμων ἱκὰς ἰσάμενος πολεμίσαν·  
 ἔω μοι δούρατ' ἐσὶ καὶ ἀσπίδος ὀμφαλόεσσαι·  
 καὶ κέρυθες καὶ θώρηκες λαμπρὸν γαυρόαντοσ·  
 Τὸν δ' ἄν' μινεόνης πεπνυμένος ἀντίον ἦυδα·  
 καὶ ῥιέ μοι παρὰ τὴ κλισίῃ καὶ νηὶ μελαίνῃ,  
 πόλλ' ἔναρα βῶων, ἀλλ' ἔρχεσθ' ἔστιν ἰλίδαι·  
 ἔδ' ἔγ' ἔδ' ἐμὲ φημι λελασμένον ἔμμεναι ἀλκῆς·  
 ἀλλὰ μετὲ πρῶρισι μολχῶ ἀνὰ κυδιόθηραν  
 ἵσταμαι· ὁππότε νειῶς ὀρώρηται πόλεμοιο·  
 ἄλλον πονεῖν ἢ μάλλον ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνων·  
 λήθω μαρναμένοσ, σὲ δ' ἴδμεναι αὖτ' ὅτ' αἰ  
 Τὸν δ' αὖτ' ἰδομένοσ κρητῶν ἀγὼς, ἀντίον ἦυδα·  
 οἷδ' ἀρετὴν οἷός ἐσσι· τί σε χρὴ ταῦτα λίσσασθαι;  
 εἰ γάρ νῦν παρὰ νηυσὶ λυγρομένοσ πάντοσ ἄεστοι  
 ἐσ λόχον· ἔνθα μάλισ' ἀρετὴ διαέσεται ἀνδρῶν·  
 ἐνθ' ὅ, τι δόλῳσ ἀνὴρ, ὅς τ' ἄλκιμος ἐξεφάνθη·  
 τῷ μὲν γάρ τε κακῷ βέπεται χρῶς ἀλλυδὶς ἄλλῃ  
 ἔδ' ἐδ' ἀρέμεας ἔσθαι· ἐρητύετ' ἐν φρεσὶ θυμός·  
 ἀλλὰ μετοκλήσθαι, καὶ ἐπ' ἀμφοτέρωσ πόδας ἵσθαι·  
 ἐν δ' ἐτὶ δὲ κραδίη μεγάλη σέρνοισι παταλάσθαι  
 κῆρας δίομένοσ· πάταγος δ' ἐτε γίνετ' ὀδόντων·  
 ἔω δ' ἀγαθῷ, οὗτ' ἄρ' βέπεται χρῶς εὐτὶ τετελίωσ  
 παρβείη, ἐπὶ δ' ἄν' πρῶων ἐοίσηται λόχον ἀνδρῶν  
 ἀρετῶν δ' ἐτάχισα μιν ἡμῶν ἐν δαὶ λυγρῇ·  
 ἔδ' ἐδ' ἐκὼν ἔνθα τέον γε μένος καὶ χῆρας ὄνοισ·  
 ἐπὶ γάρ κεβλιτο πονεόμενος, ἢ τυπέης,  
 οὐκ ἂν ἐν αὐχέν' ὀπίωσ πίθι βίλωσ ἔδ' ἐνὶ ἰώτῃ·  
 ἀλλά κεὼν ἢ σέρνων, ἢ νηδύος ἀνὴρ σφει  
 πρόσθω ἰεμένοιο μετὰ προμάχων ὀαεσύν·  
 ἀλλ' ὅ, τι μιν κίττι ταῦτα λεγόμεθα νηπύποισι  
 ἰσπότησ,

ἐκ τοῖσιν, ἀλλ' αὐτοὶ κωῶν μέληθησαν γένοιτο.

ὅς τις ἐπ' ἡμαρ τῷ ἱερῷ ἐκὼν μεθήσεται μάχεσθαι.

ἀλλ' ἄγε τῷ χεῖρα δέωρο λαβὼν ἴθι. ταῦτα δ' ἅμα χεῖρ  
αὐτοῦ δὴν, αἰὲν ὄφελός τι γινώμεθα καὶ δὴν ἴοντε.

συμπεριτὴ δ' ἀρετὴ πέλει ἀνδρῶν, καὶ μάλα λυγρῶν.  
νῶϊ δ' καὶ κ' ἀγαθοῖσιν ἐπισωμείδα μάχεσθαι.

Ὡς εἰπὼν, ὃ μὲν αὐτοὶ ἐβη θεὸς ἀμπόνον ἀνδρῶν.

ἰδομενὺς δ' ὅτι δὴ κλισίῳ ἐϋτυκτὴν ἴκασιν,

δύστρος τεύχεα καλὰ περὶ χροῖ, γέντο δ' ἐδδῶρε,

βῆ δ' ἴμεν ἀεεροπῆ ἱναλίζκιος, ἦν τε χρονίῳ

χερὶ λαβὼν ἐτίναξεν ἀπ' αὐγλήεντος ὀλύμπτου,

δῖκνὺς σῆμα βροτοῖσιν, ἀρίζησι δ' οἰαυγαί.

ὣς τῷ χαλκὸς ἔλαμπε περὶ σῆθισι θέοντι.

μειρόνης δ' ἄρα οἱ θεράπων ἐὺς ἀντεβόλησεν,

ἱγνὺς ἐπὶ κλισίῃς, μετὰ γὰρ δόρυ χάλκειον ἔει

δοιόμενος, ἐν δ' προσέφη δένει ἰδομενῇ.

Μειρόνη μόλις ἦ ἐπὶ πόδας ταχὺ φίλτατ' ἐπαίρων.

τί πῃ ἔλθεις πόλεμόν τε λιπὼν καὶ δηιοτῆτα;

ἔπει βίβληαι, βέλεις δ' ἐσέ τέρει ἀκακῇ.

ἦέ τι ἀγγελίης μετ' ἐμὲ ἔλθεις, ὅδ' ἐπὶ αὐτῷ

ἔδωκενὶ κλισίῃσι λίλαίωμα, ἀλλὰ μάχεσθαι.

Τόν δ' αὖ μειρόνης πεπνυμένος, ἀντίον ἦνδρα,

ἰδομενῷ κρητῶν βυλῆφόρῃ χαλκῷ χιτῶναι,

ἔρχομαι εἰπὶ καὶ ἐχρὸς ἐνὶ κλισίῃσι λίλαίῃσι,

δοιόμενος τόνου γὰρ κατεσέχμεν ὅ πρὶν ἐχισσῆν.

ἄσπίδα δ' ἡφ' ὀβοιο βαλὼν ὑπὲρ ἡνέοντος.

Τόν δ' αὖτ' ἰδομενὺς κρητῶν ἀγρός, ἀντίον ἦνδρα.

δούρατά γ' αἰὲν ἔθιλλε καὶ καὶ ἐν καὶ ἱκῶσι δ' ἄνδρας,

ἱερότ' ἐν κλισίῃ πρὸς ἐνώπια παμφανόοντα

φάϊα, τὰ κταμένων ἀποκίονμα, ὃ γὰρ οἶω

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

κέλευσεν οἰλιάδης κεχλωμένον ἀμφιμολχοῖσιν,  
 ἔκκε δὲ μιν σφαιρηδὸν ἐλξάμενον· δι' ὁμίλῃν.  
 ἔκρει δ' ὑποπείροισι ποδῶν πίεσεν ἐν κενήσιν·  
 καὶ τότε δ' ἡ πρὶ κῆρι ποσειδάων ἐχλάσθη,  
 ἡ γὰρ τοῦ πεσόντος ἐν ἀνῇ θηοτῆτι.  
 βῆ δ' ἰέναι παρὰ τε κλισίας καὶ νῆας ἀχαιῶν,  
 ὄρωϊων δαγκούσας, βῶεσι δ' κήδ' ἐτίναχεν.  
 ἰδομνεύς δ' ἄρα οἱ θυε κλυτὰς ἀντιβόλησεν,  
 ἐρχόμενος παρ' ἱταίρῃς, ὃ οἱ νέον ἐκ πολέμοιο  
 ἦλθε κατ' ἰγνύῳ βεβλημένος ὄξει χαλκῷ.  
 τὸν μὲν ἱταῖροι ἔνθεον, ὃ δ' ἱηροῖς ἐπιτείλατο  
 ἦεν ἐκ κλισίης, ἐπὶ γὰρ πολέμοιο μνησιν  
 εὐπιάσας, τὸν δ' προσέφη κρείων ἱνοσίχθων,  
 εἰσώμενον φθογῆν ἀνδραίμονα ὅτι θόσσητι.  
 ὅς πάσῃ πλυνρῶνι καὶ ἀπαιῇ καλυδῶνι,  
 αὐτολαῖσιν ἀνασσεῖ, θεὸς δ' ὧς τίετο δῆμος.  
 ἰδομνεῦ χρητῶν βυληφόρῃ, πύθρι ἀπαλαί  
 οἴχονται, τὰς βῶσιν ἀπείλειον ἦτορ ἀχαιῶν·  
 τὸν δ' αὖτ' ἰδομνεύς χρητῶν ἀγὼς ἀντίον ἤυδα.  
 ὦ θόσση, οὐ τις ἀνὴρ νῦν γὰρ αἶψος θάρον ἐγὼ γὰρ  
 γινώσκω, πῶντες γὰρ ἐπισάμεθα πολυμήθεον.  
 οὐτ' ἐγὼ δ' ἴσως ἴσχει ἀκέρειον, οὐτ' ἐγὼ δ' ἴσως  
 εἴκων, ἀνδύεται πόλεμον κακόν· ἀλλὰ πῃ οὐτὰ  
 μέλλει δ' ἡ φρίξον εἶναι ὑπερμένει χρόνῳ,  
 νουμένους ἀπολείδαι ἀπὸ ἀργεὺς ἐνθαλδ' ἀχαιούς.  
 ἀλλὰ θόσση καὶ γὰρ ὁπαρὸς μενέδ' ἵος ἤυδα.  
 ὄρωϊος δ' ἐκ καὶ ἄλλον ὄθι μεθίεντα ἴδῃαι,  
 τοῦ νῦν μὴτ' ἀπὸ ληγε, κέλῳ τε φωτὶ ἐκάσθῃ.  
 τὸν δ' ἡμείβετ' ἐπὶ ταῖς ποσειδάων ἱνοσίχθων.  
 ἰδομνεῦ· μὴ κἄνος ἀνὴρ ἐπὶ νοσήθεον

ἐκ βροίης.



κούρῳ ὃ πριάμοιο νόθῳ ἔχε μηδισικάσῳ.  
 ὧτάρ ἐπεὶ δαναῶν νόσθ' ἔλυσθον ἀμφιέλισσαι.  
 ἅτ' εἰς ἱλίον ἦλθε μετέπριπε ὃ βῶτασι.  
 ναῖε ὃ παρ' πριωμῷ ὅδ' ἐμιν τίον ἴσα τέκισι.  
 τόν ῥ' ἦος τιλαμῶνος ὑπ' οὔαρος ἔρχεῖ μακρῷ  
 νύξ' ἴκδ' ἔσπασεν ἔρχεσθ', ἔδ' αὐτ' ἐπισσεν μελὴν δς.  
 ἔτ' ὄριος κερυφῇ ἔκασθον πειφαινομένοιο  
 χαλκῷ τιμονομένη τέρενα χθονὶ φύλλα πιλάσῃ,  
 ὡς πείσῃ, ἀμφὶ ὃ οἱ βράχε τινύχῃα ποικίλα χαλκῷ.  
 τιτῆρος δ' ὠρμήθη μιμαῶς ἀπὸ τινύχῃα δύσσαι.  
 ἔκτωρ δ' ὄρμηθέντες ἀκόντισε δ' ὑρὶ φαεινῷ.  
 ἀλλ' ὁ μὲν αἶψα ἰδὼν, ἠλυῖα χαλκίον ἔρχεσθ'  
 τυτθόν, ὅδ' ἀμφίμαχον κτεάτης υἱ' ἀκτορίωνσ',  
 νιατόμῃον πόλεμόνδε κατὰ σῆθος βολὴ δ' ὑρὶ,  
 οδυνησεν ὃ πείσῃ, ἀράβησε ὃ τινύχ' ἐπ' ὦτα.  
 ἔκτωρ δ' ὠρμήθη κόρυθα προτάφοις ἀραρυῖαν.  
 κρᾶς ἀφαρπάξαι μεγαλήτερος ἀμφιμάχοιο.  
 αἴας δ' ὄρμηθέντες, ἀκόντισε δ' ὑρὶ φαεινῷ  
 ἔκτορος, ἀλλ' οὔπῃ χρὸς εἴσαιτο, πᾶς δ' ἄρα χαλκῷ  
 σμυδελίῳ κικάλυφθ'. ὅδ' ἄρ' ἀσπίδος ὀμφαλὸν οὔτα.  
 ὧσι δ' ἐμιν δένει μεγάλῳ, ὃ δ' ἐχάσατο ὀπίσσω.  
 νικῶν ἀμφοτέρων, βύς δ' ἐξέρυσαν ἀχαιοὶ  
 ἀμφίμαχον μὲν ἄρα σίχιος δ' ἴος τε μνηιδεύς.  
 ἀρχοὶ ἀθωαίων κόμισαν μετὰ λαὸν ἀχαιῶν.  
 ἱμβειον αὐτ' αἰῶντι μιμαῶτι θοῦειδος ἀλκῆς,  
 δς τε δ' ἄϊγα λείοντι κωῶν ὑπὸ κερχεροδόντων  
 ἀρπάξαντε φέρην ὀνὰ ῥωπήϊα πυκνά.  
 ὑφ' οὗ ὑπὲρ γαίης μετὰ γαμφηλῆσιν ἔχοντι.  
 ὡς ῥ' αὖ τόν, ὑφ' οὗ ἔχοντι δ' ἄϊωντι κερυσα  
 τινύχῃα συνλύτω, κίφαλήν δ' ἀπαλῆς ἀπὸ δ' ἡρῆς

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ὧς ἐκτὸρ εἶως μὴν ἀπείληε μέχρι θαλάσσης,  
 φίτ᾽ αὖ ἐλεύσεσθαι κλισίας καὶ νῆας ἀχαιῶν  
 κτείων, ἀλλ' ὅτε δ' ἠ πυκινῆς ἐνέκυρσε φάλαγξι,  
 εἴ ῥ' ἂ μάλ' ἐγχειμφθεῖς, οἳ δ' αὐτίοι ὕκεις ἀχαιῶν,  
 νύσφοντες ξίφεσίν τε καὶ ἐγχεσιν ἀμφιγυίοισιν,  
 ὥσαν ἀπὸ σφείων, ὅδ' ἐχαστάμμος πελεμίχθη,  
 ὕψαν ᾗ διαπρύσιον τρώεσσι γερωνῶς.

Τρώες καὶ λυκιοί, καὶ δ' ἄρδανοι ἀρχιμαχηταὶ  
 παρμένετ', οὐτι δ' ἡρὸν ἐμὲ χυθυσὶν ἀχαιοί,  
 καὶ μολλα πυργηδὸν σφείας αὐτὸς ἀρτύνωντο  
 ἀλλ' οἶω χαλῶνται ὑπ' ἐγχεῖ, εἴ τί τιν' ἐμὲ  
 ὄρσε θεῶν ὥεσος ἐρίγδ' ὅπως πόσις ἦρως.

Ὡς εἰπὼν. ἄρ' ἔτι μὲν ἐστὶ καὶ θυμὸν ἐκάσσει.

Διήφορος δ' ἐν βῆσι μέγα φρονέων ἱβελύκει  
 πηλαμίδης, πρόθεν δ' ἔχων ἀσπίδα πάντ' ὅσ' ἴστω,  
 καὶ ὤφρα ποσὶ προβιάς, καὶ ὕπασπίδι προποδίζων.  
 μηρόν ῥ' αὐτῷ ὑπὸ σκεῖθ' ὀβριφάει.

καὶ βόλλων, ὅδ' ἀφωμάρτε κατ' ἀσπίδα πάντ' ὅσ' ἴστω  
 ταυρείῳ, τ' δ' οὐτι διήλασεν ἀλλὰ πολὺ πρὶν  
 ἐν καυλῷ ἐάγει δολιχὸν δόρυ, διήφοβ' ὅδ' ἐ  
 ἀσπίδα ταυρείῳ χέει ἀπὸ τοῦ, διῖσε δ' ἐθυμῶ  
 ἐγχεος μηρόν ῥ' ἀνέφρον', αὐτὰρ ὁ γ' ἦρως  
 ἀπ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἀχάϊον, χῶσται δ' αὐτῶς  
 ἀμφοτέρων, νίκησ τε καὶ ἐγχεος ὁ ξυνίαξι.

βῆ δ' εἶναι παρά τ' κλισίας καὶ νῆας ἀχαιῶν  
 οἰσόμενος δόρυ μακρὸν, ὅδ' ἐκ κλισίῃ σφι λίλεσθαι.  
 οἳ δ' ἄλλοι μάρναντο, βόη δ' ἄσβεστος ὀρώρε.  
 τεύκρος δ' πρῶτος τελαμώνιος ἀνδρὰ κατ' ἔκτα  
 ἱμβριον ἀχιμνήν ποσειδάωνος μίενρ' ἔχον.  
 ἦεν δ' ἐπὶ πύλαιον πρὶν ἰλθεῖν ὕβριος ἀχαιῶν.

καὶ ὕρην δ'

ὅσων κ' ἀπῆλτίμηνε ποδῶν κίκα πελείονα,  
 ἤμέας γ' οὐπὼς ἐς ἡμετέμενον πολέμοιο,  
 ἀλλ' ἀκινώμεθα θάλασσαν, ἀκισαί τοι φρένοβ' ἐδὴ λῶν.  
 ὑμεῖς δ' ἔκεί τι καλὰ μεθίεντε θούριδος ἀλκῆς,  
 πᾶντοδ' ἄεισοι ξόντες ἀνὰ στρατῶν, ὅ δ' ἐὼν ἐγὼ γὰρ  
 ἀνδρὶ μαχεσασίμῳ, ὅς τις πολέμοιο μεθίει  
 λυγρὸς ἐὼν. ὑμῖν δ' ἐνεμισῶμαι περὶ κῆε.  
 ὅ πεπρονόβ, τάχα δ' ἡ τι κακὸν ποιήσεται μέγιστον,  
 τῇ δ' ἐμνημοσύνη, ἀλλ' ἐν φρεσὶ θέει τις αἶσθε  
 αἰδῶ καὶ νέμεσιν, δὴ γὰρ μέγα νεῖκος ὄρωρην.  
 ἔκτωρ δ' ἡ παρὰ νηυσὶ βόην ἀγαθὸς, πολέμιόν τε  
 καρτερός, ἔρρηξε δ' ἐπύλας καὶ μακρὸν ὄρηα.  
 ὅς ῥα κελεντιόων, γαιήοχος ὤρσεν ἀχαιούς.  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' αἰῶντας διοιοὺς ἵσαντο φάλαγγος  
 καρτεραί. ἄς οὐτ' ἂν κεν ἄρης ὄνείσαιο μετιλθῶν.  
 οὐτ' ἐκ' ἀθηναίῃ λαοσφόος. οἱ γὰρ ἄεισοι  
 κριθέντοβ, βῶας τε καὶ ἔκτορα δ' ἴον ἱμιμνον.  
 φράξοντες δ' ὄρου δ' ἄρ' ἑρ, σάκας σάκι' προθελύμνω,  
 ἀσπίς ἄρ' ἀσπίδ' ἐρρῆξε, κόρυς κόρῳ, ἀνέρα δ' ἀνδρ.  
 φαῦον δ' ἰπποκόμοι κόρυθες, λαμπροῖσι φάλαγγισι  
 νευόντων, ὡς πυκνοὶ ἐφ' ἐστῶσαν ἀλλήλοισιν,  
 ἐγχεαδ' ἐπ' ἵππων βασιλῶν ἀπὸ χειρῶν  
 σπείοντες ὅι δ' ἰθὺς φρένεον, μέμασαν δ' ἐμολχιδαι.  
 βῶβ' δ' ἐπ' προὔτυψαν ἀολλείς, ἦρχε δ' ἄρ' ἔκτωρ  
 ἀντικρὺ μεμαῶς ὀλοοίβοχος ὡς ἀπὸ πέτρης,  
 ὅν τε κατὰ σιφώνης ποταμὸς χεμολῖξεν ὥσιν.  
 ῥήξας ἀσπίτ' ὁ μὲν δ' ἀναιδέος ἐχμαται πέτρης  
 ὕψι' ἀναβρώσκων πέτεται, κτυπέει δ' ἐπ' αὐτῷ  
 ὕλην, ὅ δ' ἀσφαλῆως θέει, ἐμπιέει δ' ὄφρ' ἂν ἵκηται  
 ἰσόπεδον, τότε δ' οὐτι κυλίνδεται ἐσόμενός περ,

ἡ δ' ὅτ' ὀλυσώδης φλογὶ ἱκέλως ἤγαμονεύει  
 ἔκτορ, ὅς διός ἐϋχίτ' ἐπεινέος πάϊς εἴν.  
 σφῶϊν δ' ὦδε θεῶν πῖς ἐνὶ φρεσὶ ποιήσσειν,  
 οὐτῶθ' ἐσάμηναι κρατερῶς, καὶ ἄνωγέ μιν ἄλλας.  
 ἴδ' κε καὶ ἐσάμηνον πρὶ ἐρωήσαιτ' ἀπὸ νηῶν  
 ὠκυπόρων, εἰ καὶ μιν ὀλύμπι' αὐτὸς ἐγείρει  
 ἦ, καὶ σκηπτοῖνι γαίης ὄχλος ἐννοσίχαι.  
 ἀμφοτέρω κεκρυπὼς πλῆσεν μένεος κρατεροῖο.  
 γυῖα δ' ἐθηκεν ἑλαφρὰ πόδας καὶ χεῖρας ὑπερθεῖν.  
 αὐτὸς δ' ὦς τ' ἱρῆς ὠκυπῆρος ὥρτο πέτεσθαι  
 ὅς ῥά τ' ἀπ' ἀγίλιπος πέτρης περὶ μῆκος ἀρθείς  
 ὄρμήσῃ πεδίῳ διώκεν ὄρνειον ἄλλο.  
 ὥς ἀπὸ τῶν ἦξε ποσσὶ δάων ἐνοσίχθων.  
 ἴδ' ἴν δ' ἐγὼ πρόθευ οἴλῃος ταχὺς αἴας.  
 αἶψα δ' ἄρ' αἶαντα προσέφη τελαμώνιον ἦορ.  
**Αἶαν**, ἐπεί πῖς νῶϊ θεῶν οἱ ὀλυμπῶν ἐχέσσι  
 μάντι' ἰδόμεν' κέλεται παρὰ νηυσὶ μάχεσθαι,  
 εἴδ' ὅτ' ἐγὼ κάλχας ἐσὶ θεοπροπῶς, ἰωσιπῆς  
 ἰχνα γὰρ μετοπίδαι ποσσὶν ἡδ' ἐκνημάων  
 ῥεῖ' ἐγὼν ἀπιόντ', ἀρίγνωρι δ' θεοὶ πρὶ.  
 καὶ δ' ἐμοὶ αὐτῷ θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι φίλοισι  
 μάλλον ἐφορμάται πολυμήδην ἡδ' ἐμὰ χεῖρα.  
 μαμῶσι δ' ἐνερθε, πόδες καὶ χεῖρες ὑπερθεῖν.  
**Τόν δ'** ἀπαμειβόμεν' προσέφη τελαμώνιος αἴας.  
 οὕτω νῦν καὶ ἐμοὶ πρὶ δούρατι χεῖρόν' ἀπῆλοι  
 μαμῶσιν, καὶ μοι μένος ὥρορε, νέρθε δ' ὑπὸ στήθεσσι  
 ἐστυμα ἀμφοτέροισι, μενοινῶ δ' καὶ οἶθ',  
 ἔκτορ πρὶ αἰμὴν ἄμοτον μεμαῶτι μάχεσθαι.  
**Ὡς** οἱ μὲν θιαῶντα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον.  
 χάρμῃ γηθόσσωσι, τὴν σφῖν θεὸς ἐμδαλε θυμῷ.

# ΙΑΙΔΔΟΣ.

ἐνθ' ἰλθὼν, ὑπ' ὀχισφί πτύσκειο χαλκὸν ποδ' ἵππου  
 ὠκυπέτα χρυσέησιν ἐθέρησιν κερμαίνοντι.  
 χρυσὸν δ' αὐτὸς ἴδωμι πρὶ χροῖ, γένε δ' ἰμάδα κω  
 χρυσείῳ εὐτυχῶν, ἰοῦ δ' ἐπεβήσατο δ' ἴφρε.  
 βῆ δ' ἐλάαν ὡς κύματ'. ἀταλλι' ὃ κήτι' ὑπ' αὐτῆ  
 πάντοθεν ἐκ κινθῶν, ὅδ' ἠγνοήσαν ἀνακτα.  
 γηθοσύνη ὃ θάλασσα δ' ἴσταρ, εἶδ' ἐπέτορ  
 ῥίμφα μάλ' ὅδ' ὑπέρβη διαίνεο χαλκὸν ἄξωρ  
 τόνδ' ἐς ἀχαιῶν νῆας εὐσκαρῆμοι φερονίπποι.  
 ἔστι δέ τι πάσιος οὐρὸν βαθείης βένθεσι λίμνης.  
 μεσηγυῖς τινέσθιο καὶ ἱμβρὰ παυπαλαίης.  
 ἐνθ' ἵππυς ἔησε ποσὶ δ' ἄων ἱνοσίχθων,  
 λύσας ἐξ ὀχέων παρῶν δ' ἀμφορόσιον βάλεν ἰδάρ.  
 ἰδμεῖται, ἀμφὶ ὃ ποσσὶ, πίδαξ ἔβαλε χρυσείας  
 ἀρρήκτους ἀλύτους, ὅφρ' ἐμπεδὸν ἀνθι μένοιν  
 νοσήσαντα ἀνακτα, ὅδ' ἐς σραπὴν ὤχετ' ἀχαιῶν.  
 φῶδ' ὃ φλαγὶ ἴθι ἀολλέως ἢ ἐθύλη,  
 ἰκθεὶ πριαμίδῃ ἄμοτον μεμαῶτ' ἔτορ,  
 ἄβροχοι, ἀνιάχοι, ἔλποντο ὃ νῆας ἀχαιῶν  
 αἰρήσαν, κτινέειν ὃ παρ' αὐτόφι πᾶντας ἀχαιούς.  
 ἀλλὰ ποσὶ δ' ἄων γαῖᾳ ὅχος ἱνοσίγαιος,  
 ἀργεῖος ὥπλων βαθείης ἐξ ἀλὸς ἰλθὼν.  
 εὐσάμῃος κάλχαν' ἦ, δέμας καὶ ἀτερὴς φανήν.  
 αἶαντε πρῶτω προσέφη μεμαῶτε καὶ αὐτῷ.  
 Δῖαντε σφῶ μέν κε σώσετε λαὸν ἀχαιῶν.  
 ἀλκῆς μνηστειμένω μὴ δ' ἐκρυερότο φόβοιο.  
 ἄλλῃ μὲν γὰρ ἔγωγ' ἔδιδίκα χεῖρας ἀάπτους  
 φῶν, οἳ μέγα τέχος ὑπὲρ ἀτίεσαν ὀμίλη.  
 ἔξωσιν γὰρ οἳ πᾶντας εὐκνήμιδες ἀχαιοί.  
 τῆδε δ' ἡ ἀνόταρ' ἐπεδίδίκα μὴ πῖ πᾶσιν ἄνδρ'



ΙΛΙΑΔΟΣ · Ν · ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Νῦν δὲ πρὸς δῖον Δαναοῖς κρῶτος ὠπασε λαβερή·

Εὖς δ' ἐπεὶ οὖν ῥῶας τε, καὶ ἑκτορα  
νῆυσί πελάσεν,

ὅς μιν ἔειπε πρὸς τῆσι πόσι· ἔχ' ἔχ'·  
μὴν καὶ οἷζ' ἔν·

νολεμείως, αὖτις δ' ἐπὶ πολλὴν ῥέπειν  
ᾧσιν φαεινῷ,

ὅσφιν ἐφ' ἱπποπόλων βρηκῶν καθορώμεν· αἶαν  
μυσῶντ' ἀρχιμάχων, καὶ ἀγαυῶν ἱππημολῶν·  
γλακτοφωλῶν ἀβίαντε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων·

ἔς τοίω δ' ἔπειτα μὲν ἐπὶ ῥέπειν ᾧσιν φαεινῷ·

ἔπειτα δ' ὅτ' ἀθανάτων τιν' ἐέλπσο, ὅν κατὰ θυμὸν  
ἔλθοντ' ἢ ῥώεσιν ἀρηγέμεν ἢ Δαναοῖσιν·

ἔπειτα δ' ἀλασκαπιὴν ἔχει κρείων ἐνοσίχθων·

καὶ γὰρ ὁ θαυμαλῶν ἦτο· ἥϊό λυμόν τε μάχῃ τε,

ἔπειτα δ' ἐπὶ ἀκροτάτης κερυφῆς σάμεν ὕλησιν

βρηκίης· ἐνθεν γὰρ ἐφαίνετο πᾶσαι μῖδ' ἦ·

φαίνειτο δ' ἐπὶ πρῶτοιο πόλιν καὶ νῆος ἀχαιῶν·

ἐνθ' ἄρ' ὅτ' ἐξ ἀλὸς ἔϊτ' ἰών, ἐλίσσει δ' ἀχαιούς

ῥωσὶν δαμναμένους, διὸ καὶ κρατερῶς ἐνέμεσα·

αὐτίκα δ' ἐξ ὄρεος κατεβήσατο παμπάλοντ'·

κροακὴν ὑπὲρ προβίβας, ῥέμιδ' οὖρεα μακρὰ καὶ ὕλην,

πρῶτον ὑπὲρ ἀθανάτοισι πρὸς δῖον ἰόντας·

ῥέμι μὲν ὀρέξατ' ἰών· τὸ δ' ἐπὶ τέτραν, ἴκτο τέκμωρ

αἶσας, ἐνθα καὶ οἱ κλυτὰ δώματα βινθεσι λίμνη

χρύσια μαρμαίροντα τιτυχάται ἀφθιτα αἶψ'·

# ΥΛΙΑΔΟΣ.

ὥς δ' ὅτε ποιμήν ῥεῖα φέροι πόκον ἄρσαντο οἱ ἄν  
 χερὶ λαβῶν ἑτέρη, δλίχον δ' ἐμιν ἄχθος ἐπέηθε  
 ὥς ἔκτωρ ἰθὺς στανίδων φέρι λαῶν αἰήρας,  
 αἰῖα πόδας ἱρῶν πύκα σβαρῶς ἀραρυίας,  
 δικλίδας ὑψηλὰς, διοιοί δ' ἐντοδὼν ὀχῆς  
 εἶχον ἐπημοιβοί, μία δ' κληῖς ἐπαρήρει.

καὶ δ' ἄλλ' ἱγρὺς ἰὼν καὶ ἐρεσάμηντο βάλε μέσας  
 εἴθ' διαβάς, ἵνα μὴ οἱ, ἀφαιρότερον βέλους ἦν.  
 ῥῆξι δ' ἀπ' ἀμφοτέρων θαυρούς, πῖσε δ' ἐλίσθος εἶσω  
 βελθοσύνη, μέγα δ' ἀμφὶ πύλα μύκων, οὐδ' ἄρ' ὀχῆς  
 ἐχέθει τῶ, στανίδες δ' ἐπ' ἐτμαγνὸν ἀλλυδὶς ἄλλη,  
 λαῶς ὑπαὶ ῥίπῃς, οὐδ' ἄρ' ἐδορε φαίδιμοι ἔκτωρ,  
 νυκτὶ θοῇ ἀτάλῳ τ' ὑπώπια, λάμπει δ' ἐχαικῶ  
 σμυρδαλίῳ, τὸν, ἔσο περὶ χροῖ, διοῖα δ' ἐχέρσι  
 δ' ἄρ' ἔχων, οὐκ ἄν τις μιν ἐρυκὰ καὶ ἀνελόλυσας  
 νόσφι θειῶν, ὅτ' ἐσάλλε πύλας, πυρίδ' ὅσπερ διδύχα  
 κίχλη δ' ὅτ' ὥσπερ ἐλὶξ ἀμύνει καὶ ὁμίλον,  
 τεῖχος ὑπερβαίνειν, τοὶ δ' ὀβύνοντι πίθοντο.  
 αὐτὰρ καὶ οἱ μὲν τεῖχος ὑπερβασσαν, οἱ δ' ἐκτ' αὐτὰς  
 ποιεῖν τὰς ἐσέχωντο πύλας, δ' αὖτε οἱ ἐφ' ὀβήθην,  
 νῆας ἀνὰ γλαφυράς, ὁμαδὸς δ' ἀλίαντος ἐτύχθη.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ν. ΟΜΗ.

ΡΟΥΡΑΥΩΔΙΑΣ.

✠ Οσοι δ' ἔνν νικημένους ἐλθὼν τὴν ἑλληνικὴν, ὁμοῦται  
 καὶ κάλχων, καὶ ἀμφοτέρων τὴν αἰώναν παρορμῶ,  
 ἐπ' ἴτα δ' καὶ τὴν ἄλλαν, μετὰ ταῦτα ἰδομένης ἀεισύνῃς, καὶ  
 ἀναρτῶν ὀφρυονέας, καὶ πινὰς ἄλλαν, πολλοὶ δ' αὐτ' ἀνερῶνται,  
 τὴν ὄσωνται δ' ἐπ' ἰφροβος, καὶ ἑλῶνος, τὴν δ' ὑπὸ κούρας σπασ  
 γαγῶν, ἔκτωρ ἐπ' ἄρ' τοῖς πωλεμίοις, καὶ μεγάλῃ ἀμφοτέρ  
 ροδὸν ἀνερῶνται.

ΙΛΙΑ

τήχους αὐτῶν ὡς αὐτοὶ, ἐπὶ τὰ πρῶτα πίλασεν·  
 ἀλλ' οὐκ ἔτι ἀμφ' οὐροισὶ δὴν ἄνερει δὴ εὐαλαστον  
 μέγ' ἐν χερσὶν ἔχοντός ἐπιβύνων ἀρούρη·  
 ὅτ' ὀλίγῳ ἐνὶ χώρῳ ἐρίστητον περὶ ἴσους,  
 ὡς ἄρα τοὺς, δίδειργον ἐπὶ πάλαις, οἳ δ' ὑπὲρ αὐτῶν  
 δὴ ἴκον ἀλλήλων ἀμφὶ σήθειαι βοείας.  
 ἀσπίδας δὲ κύκλους, λαοσὴϊά τε πηρόντα·  
 πολλοὶ δ' οὐτάζοντο κατὰ χροῶν νηλεῖ χαλκῷ·  
 ἢ μὲν ὅτ' ἐν σφίθεσιν μετὰ φρενα γυμνωθεῖν  
 μαρναμένων, πολλοὶ δ' διαμπερεῖς ἀσπίδος αὐτῆς·  
 πάντῃ δ' ἢ πύργοι καὶ ἐπάλξεις, αἵματι φωτῶν  
 ἱερῶν ἀντ' ἀμφοτέρωθεν ἀπὸ βῶων καὶ ἀχαιῶν.  
 ἀλλ' οὐδ' ὡς ἐδύναντο φόβον ποιῆσαι ἀχαιῶν.  
 ἀλλ' ἔχον ὡς τε τάλαντα γυνὴ χερσὶν ἀλκῆς.  
 ἢ τε σταθμὸν ἔχον καὶ ἐρίον ἀμφὶς ἀνέλικε.  
 ἰσάμενος ἵνα παυσὶν ἀσκήϊα μισθὸν ἄρῃται·  
 ὡς μὲν τῶν ἐπὶ ἴσα μολχῇ τίτατό, πόλεμος τε.  
 στήνῃ γ' ὅτε δὴ δὴς κύδιος ὑπὲρ τειρορ ἔκτοε δ' ὡκε  
 σπριαμίδῃ, ὅς πρῶτος ἐσθλὰ τὸ τεῖχος ἀχαιῶν.  
 ἦ ὕσεν δ' διαπρύσιον βῶσι γαγώνως.  
 ἔρηνδ' ἰπποδῖμοι βῶσι, ῥήγνυσι δ' ἐπὶ τείχεσσι  
 ἀργείων καὶ νηυσὶν ἐνὶ τε θρασυδίαις πῦρ·  
 ὡς φετ' ἐποφύνων· οἳ δ' οὐκ αὖτε πάλιν ὅς ἄκων  
 ἴθυσαν δ' ἐπὶ τείχεσσι ὁλλέεις, οἳ μὲν ἔπειτα  
 κροσσῶν ἐπὶ βῶων ἀπαχμῖνα δούρατ' ἔχοντός·  
 ἔκτορ δ' ἀρπάζας λαῶν φέρων ὅς ῥα πυλῶν  
 ἐσθλὴ πρὸ αὐτῶν πρυμνὸς παχὺς, αὐτὰρ ὑπὲρ βῶν,  
 ὁξὺς ἔλω, τὸν δ' οὐκ ἔτι ἄνερει δὴ μὲν ἀρίστῳ  
 στήνῃ δὴς ἐπ' ἁμαξῶν ἀπ' οὐδὲος ὀχλίσσων,  
 οἳ οἱ νῦν βροτοὶ εἰς, ὅδ' ἐμιν ῥέειά πολλὰ καὶ οἶος·  
 τὸν δ' ἐλαφρόν ἐθηκε μρόντα πᾶσι ἀγκυλομήτεσσι.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἦ ῥ' ἴδε γυμνωθέντα βραχίονα, παῦσε ἧ χαλμῆς,  
 ἅψ' δ' ἀπὸ τείχεος ἔλτο λαθὼν, ἵνα μή τις ἀχαιῶν  
 βλύμῃσιν ἀθρήσκει καὶ ἀνιπτόσ' ἵπτεται.  
 σαρπηδόνα π' δ' ἄχορ' ἔνθο. γλαυκὸν ἀπίοντο.  
 αὐτὴν ἱκέτ' ἐνόησεν ὅμως δ' οὐ λήθ' οὐ χαλμῆς.  
 ἀλλ' ὅγε θεορίδῳ ἀλκμαίονα δ' ὕρι τυχεύσας.  
 νύξ', ἱκ' δ' ἱσπασσὼν ἔγχεος. ὅδ' ἱσπασμῷ πῖσι δ' ὕρι  
 πρῶτης, ἀμφὶ δ' οἱ βρῶχε τδύχεια ποικίλα χαλκῶ.  
 σαρπηδόνα δ' ἄρ' ἱππὸν ἱλῶν χερσὶν ἐβαρῆσεν.  
 ἱλ' ἔδ' ἱσπασσὼν παῖδα διαμπερὶς, αὐτὰρ ὕπερθε  
 τεύχεος ἐγυμνώθη, πολέεσσι ἧ θῆκε κέλευθον.  
 τὸν δ' αἶας καὶ τδύκρος ὁμαρτήσαντο. ὁ μὲν ἰθὺ  
 βιβλύκει τελαμῶνα περὶ στήθεσφι φαειόν  
 ἀσπίδος ἀμφιβρότης, ἀλλὰ ἴδ' οὐ κῆρας ἄμμι  
 παρδὸς ἔδ', μὴ νηυσὶν ἐπὶ πρῶμνῃσι δαμῆναι  
 αἶας δ' ἀσπίδα νύξων ἱπάλμῃσιν ἠδ' ἐδιαπρό,  
 ἔλυσεν ἔγχεϊν, σφίλιξε δ' ἐμὴν μιμαῶτα.  
 χώρησεν δ' ἄρα τυτθὸν ἱπάλξιτο, οὐ δ' ὅγε πάμπαν  
 χάρϊτ' ἱπεί οἱ θυμὸς ἐέλεπτο κῦδος ἀρίστων.  
 κέκλετο δ' ἀντιθέοισιν ἱλιξάμῃσι λυκίοισιν.  
 ὦ λυκίοι, τί τ' ἄρ' ὦδε μεθίετε θούριδος ἀλκῆς.  
 ἀργαλίων δ' ἐμοὶ ἔστι καὶ ἰφύμῳ περ ἰόντι.  
 μούνα ῥῆξαμ' ἐνὶ θέσσει παρὰ νηυσὶ κέλευθον.  
 ἄλλ' ἴφομορτεῖτον, πλεόνων δ' ἐτοὶ ἔργον ἄμεινον.  
 ὦ ἴφασθ, οἱ ἧ ἀνακτοῦ ὑποδ' ἐίσαντο δὲ δομοκλῆν,  
 μάλαρον ἐπέβεισαν βελιφόρῳ ἀμφὶ ἀνακτα.  
 ἀργεῖοι δ' ἐτέρωθεν ἐκαρτύνοντο φάλαγγας.  
 τείχεσ' ἐντοδαν, μέγα δ' ἐσπρῖσι φαίν' οὐροσ.  
 οὔτε γὰρ ἴφθιμοι λυκίοι δ' ἀναῶν ἐδύσαντο  
 τεύχος ῥῆξ' ἐμῶν θέσσει παρὰ νηυσὶ κέλευθον.  
 οὔτε πούτ' αἰχμηταὶ δ' ἀναῶν λυκίους ἐδύσαντο

ἔτι, ἐπὶ τὰ χακίθη τι τούξεται ὅλητος.  
 ὦλε γὰρ ἔβρισαν λυκίῳ ἄροί, οἱ τὸ πάρος περ  
 ἰαχρηῖς τελέθουσι κατὰ κρατερὰς ὁμίνας.  
 εἰ δ' ἔτι καὶ ἐνθά δ' ἐπερ πόλιμ' ἔτι καὶ νῆκος ὄρωρον  
 ἀλλὰ περ οἷος ἴτω τελαμώνι' ἄλκιμ' αἶας.  
 καὶ οἱ τούκρος ἄμ' ἰσπεδὼ τούξου ἐν ἐδῶς.  
 Ως ἴφραθ, οὐδ' ἀπίθουσι μέγας τελαμώνι' αἶας.  
 αὐτὴν δ' οἰλιάδῳ ἔπειτα πῆρόντα προσήδα.  
 αἶαν, σφῶϊ μὴ θυθὶ σὺ καὶ ὁ κρατερός λυγρὸς μῦθος,  
 ἰσαότεις δ' αὐτὸς ὄρνυται ἴφι μάχιδαι.  
 αὐτὰρ ἐγὼ καὶ σ' εἶμι καὶ ἀντιόω πολέμοιο.  
 αἶψα δ' ἰλδύθουαι ἄντις ἐπ' ἐν τοῖς ἰπαμύνω.  
 Ως ἄρα φωνήσας ἀπὲρ τελαμώνι' αἶας,  
 καὶ οἱ τούκρος ἄμ' ἦτε κασίγνητος καὶ ὁ πατρ'  
 τοῖς δ' ἅμα παυδίων τούκρος φέρι καμπύλα τούξα,  
 ἔτι μὴ μεδῆος μεγαθύμου πύργου ἵκοντο.  
 τείχεος ἐντὸς ἰόντες, ἐπερσμένοισι δ' ἵκοντο.  
 οἷδ' ἐπ' ἐπὶ πάλῃς βοῶντο ἱερὴν μὴ λαίλαπι ἴσοις,  
 ἴφθιμοι λυκίῳ ἡγήτορις ἦδ' ἐμείδοντες.  
 σὺν δ' ἰβάλων μάχιδαι ἐνωπύον, ὦρτο δ' αὐτὴ.  
 αἶας δ' ἐπὶ τῶν τελαμώνι' ἀνδρα γαστέκτα,  
 σαρπηδόντ' ἐταῦρον ἐπικληῖα μεγαθύμον  
 μαρμάρῳ ὀκρυόοντι βαλὼν, ὅρα τείχε' ἐντὸς,  
 καὶ το μέγας παρ' ἐπαλξιν ὑπέρτατ' οὐδ' ἐκ μὴν ῥίε  
 χερσὶν ἐπ' ἀμφοτέρῃς ἔχοι ἄνθρωπος οὐδ' ἐκ μὴν ἔβαν.  
 οἱ οἱ νῦν βροτοὶ ἐσ', οὐδ' ἄρ' ὑπόθεν ἐμβαλ' αἰέρας.  
 θλάσας δ' ἐπερσάμενος κωέλω, σὺν δ' ὅς ἐ' ἄραξε.  
 πάντ' ἀμυδρὸς κεφαλῆς, ὅδ' ἄρ' ἐκρυβύτῃσι σκοπῶς.  
 κάππ' ἄφ' ὑψηλῆς πύργου, λίπε δ' ὅς ἐ' αὖθις.  
 τούκρος δ' ἡλαῦτον κρατερὸν παῖδ' ἱππολόχοιο,  
 ἰὼ ἐπὶ σπυγμῶν βαλεῖ τείχεος ὑψηλοῦ.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

μυρία· ἄς οὐκ ἔσι φυγίην βροτὸν οὐδ' ὑπαλύξαι  
 ἰομυ, ἢ τῷ κῦδος ὀρέξομαι, ἢ τις ἡμῖν.

**Ως** ἔφατ', οὐδ' ἐλαυνὼς ἀπεβράπετ' οὐδ' ἀπίθασε.

τῷ δ' ἰὺς βύτιω λυκίῳν μέγα ἔθνος ἄγοντε.

τοὺς δὲ ἰδὼν, ῥίγησ' ἦος πιτιῶα μνησθέντες.

τῷ γάρ δ' ἡ πρὸς πύργον ἴσων κακότητα φέροντόβ.

πάπηνεν δ' ἀνὰ πύργον ἄχαιῶν, ἵπν' ἰδοῖθ

ἡγεμόνων, ὅς τις οἱ ἀρήν' ἐτάροισιν ἀμύναι.

ἔς δ' ἐνόησ' αὐάντε δύω πολέμῃ ἀκρόνυτῳ

ἰσκότας, τδὺκρόν τε νῆον κλισίῃσιν ἰόντα.

ἱγνύθεν, ἀλλ' οὐπὼς οἱ ἔλω βώσαντι γελανεῖν.

τόσος γὰρ κτύπος ἦεν αὐτῇ δ' οὐρανὸν ἴκε.

βαλομένωνν (ἀκείων τε καὶ ἱπποκόμων) βυφαλίδων,

καὶ πυλίων. πάντες γὰρ ἐπώχθο, τοῖς ὅ κατ' αὐτὰς

ἰσάμενοι περὶνθὶ βίῃ ῥήξαντόβ' ἰσελθεῖν.

αὐτὰρ ἐπ' αἰώοντα προΐει κήρυκα θοώτιω.

ἔρχο δ' ἴε θοῶτα, θέων αἰώοντε καλλεστον,

ἀμφοτέρω μὴ μάλλον, ὃ γὰρ κ' ὄχ' ἄεισον ἀπάντων

εἴη, ἐπὶ τέχα τῇδε τετόβίζεται οἰνὸς ὀλεθροσ.

ὥδε γὰρ ἔβρισαν λυκίῳν ἀγροί, οἳ τ' πάρος περ

ἱαχρηῖς, τελίεθσι κατὰ κρατερὰς ὑσμίνας.

εἰδ' ἐσφι καὶ κείθι πόνοσ καὶ νείκεσ ὄρωσαν.

ἀλλὰ περ δῖος Ἴτω τελαμώνιος ἀλκιμος αἴας

καὶ οἱ τδὺκρος ἄμ' ἐσπείδω τόξων ἐϋ εἰδώς.

**Ως** ἔφατ', οὐδ' ἄρα οἱ κήρυξ ἀπίθασεν ἀκρόστας.

βῆ δ' ἐπὶ παρὰ τεῖχος ἄχαιῶν χαλκῷ χιτῶνων.

σῆ δ' ἐπὶ παρ' αἰάντασι κίων, εἴθαρ δ' ἐπὶ προσηύδα.

**Δ**ῖοντ' ἀργείων ἡγήτορι χαλκῷ χιτῶνων.

ἡνώγει πιτιῶο διοτρεφίος φίλος ἦος.

κεῖσ' ἴμεν, ὄφρα πόνοιο μίνωθ' ἀπερ ἀντιάσῃν

ἀμφοτέρω μὴ μάλλον, ὃ γὰρ κ' ὄχ' ἄεισον ἀπέντα

ἔλασσε ἵπποισι ὃ βοείας ῥά τ' ἐθαμνάσας.

χρυσείοις ῥά ἐδίοισι δῖλιν κίσι περικύκλον.

τὴν ἄρ' ὅ γε πρόειε χόρῳ μῦθον· οὐδ' οὐδ' ἔριζαν ἀγαν,

βῆ δ' ἵππῳ δὲ τελέων ὀρεσίφορος, ὅς τ' ἐπιδόουκ'.

δὴρ' ὅν ἐν κρηῶν, κίλεται δ' ἐν θυμὸς ἀγὴν ἄνθρωπον,

μῦλῳ περὶ θύοντα, καὶ ἐς πυκινὸν δόμον ἐλθόντι.

εἴπερ γὰρ χ' ἔνερσι παρ' αὐτόφιν βώτορας ἀνδρας

σὺν κυσὶ καὶ δούρεσι φυλάσσοντας περὶ μῆλα.

οὐδ' ῥά τ' ἀπείρητ' ἐμείμονε σταθμοῖο δίδωαι.

ἀλλ' ὅ γ' ἄρ' ἠὲ ἔρπαζε μετ' ἀλλήμῳ· ἦ καὶ αὐτὸς

ἔβλητ' ἐν πρώτοισι θοῆς ἀπὸ χαρὸς ἀκνύν,

ὅς ῥά τ' ἀντίθιον σαρπηδόνα θυμὸς ἀνῆκε

τῷ χροῖ παῖξι, διὰ τε ῥῆξαι αὐτὸν ἐπάλξεαι.

αὐτίκα δ' ἄλκυον προσίφη πᾶσι ἱποπόλοισιν.

Ἐλάυκε, τὴν δ' ἠνέει τι μῦθον·

ἴδμεν τε, κρείσσιν τε, ἴδμεν πλείοις δὴ πάλαν.

ἐν λυκίῃ· πάντες δ' ἔθις ὡς ἐθροόοισιν.

καὶ τέ μιν· ἐν νόμῳ μὲν γὰρ ἐλθόντο παρ' ὀχθας,

καλὸν φυταλῆς καὶ ἀρούρης πυροφόροισιν.

τῷ νῦν χρεὶ λυκίοισιν μετὰ πρώτοισιν ἔοντας,

ἔσθ' ἄλλῳ, ἢ δ' ἐμὲ καὶ καυσερῆς ἀνέβλησσαι,

ὅφρα τις ὦσ' εἴπῃ λυκίων πύκα θωρηκτάων.

οὐ μὰρ ἀκλειῆς λυκίῳ κατακείραι ἔσθ'.

ἡμέτεροι βασιλῆες, ἔδ' ἐσὶ τίς πίνα μῆλα.

οἶνον δ' ἔξουτον μιλιδόκας· ἀλλ' ἄρα καὶ ἴσ'.

ἔσθ' ἄλλῳ, ἐπὶ λυκίοισιν μετὰ πρώτοισιν μάχονται.

ὦ πίπον, ἐμὲ γὰρ πόλεμον περὶ τὸν δὲ φερόντες,

αὐτὸν δ' ἡμῶν γὰρ πόλεμον περὶ τὸν δὲ φερόντες.

ἴσθ' αὖτις, οὐδέ κε αὐτὸς ἐν πρώτοισιν μάχεται.

οὐδέ κε σισύλλοι μὲν μάχῃ ἐς κυδίστασαν.

νῦν δ' ἐμὲ γὰρ κῆρυς ἐφείσεται θοῶτα.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἀμφοτέρω δ' αἶαντε κελυβίζοντ' ἐπὶ πύργῳ  
 πέντοσε, φοιτῆτ' ἄν' ὀρνυντο δὲ ἀχαιῶν.  
 ἄλλον μελιχίοις, ἄλλον σαρκοῖς ἐπίεσι  
 νείκον, ὃν πινά παρχυ μάχης μεθίοντα ἰδδίων.  
 ὦ φίλοι ἀργείων, ὅς τ' ἔξοχος, ὅς τε μεσῆς,  
 ὅς τε χερσότηρ' ἐπὶ οὐπὼ πάντοδ' ὁμοῖοι  
 ἀνέρις ἐν πολέμῳ, νῦν ἔπλετο ἔργον ἅπασι.  
 καὶ δ' αὐτοὶ τόδ' ἐπεὶ γινώσκετε, μή τις ὀπίσσω  
 τετράφθω ποτὶ νῆας ὁμοκλητῆρ' ἀκνέων.  
 ἀλλὰ πρόσω ἴαθε, καὶ ἀλλύλοισι κέλεσθε,  
 αἶκον ἴδ' ἐδῶσιρ' Ὀλύμπιος ἀστεροπητής.  
 νύχθ' ἀποσσεμένους δ' ἡῖς προτὶ ἄστυ δίδωται.  
 ὅς τ' ἄρ' ἐπὶ προδόντι μάχῃ ὤρωρον ἀχαιῶν.  
 τῶν δ' ὅς τε κ' ἐφάδ' ἐχέοντ' ἐπὶ πῆυσσι θαμναί.  
 ἔματι χαμερίφ', ὅτε τ' ὤρσο μῆτιντα ἴδ' ἐ  
 νιφίμῳ ἀνδράποισι πιφασκόμηντ' ἐπὶ δὲ κῆλα,  
 κρημύσας δ' ἀνέμους χέει ἔμπεδον ὄφρα καλύψῃ,  
 ὕψιλῳ ὀρέων κερυφάει· καὶ πρόνοας ἀκρῆς,  
 καὶ πεδία λωτδύντα, καὶ ἀνδρῶν πύονα ἔργα,  
 καὶ τ' ἐφ' αἶας πολέας κέχυνται λιμέσι τε καὶ ἀκταῖς,  
 κῆμα δ' ἐμὴν πρὸς πλάζον ἐρύκεται, ἄλλα τε πάντα  
 ἐλύαται καὶ ὑπερβ' ὅτ' ἐπιβρίση δίδ' ὁμβρος,  
 ὡς τῶν ἀμφοτέρωσι λίθοι πατῶντο θαμναί.  
 αἶ μιν ἄρ' ἐς βῶας, αἶ δ' ἐκ βῶων ἐς ἀχαιούς  
 βαλλομένον, τὸ δ' ἐπὶ τείχεσσι ὑπὲρ πᾶν δ' ἄσπος ὀρώρε,  
 οὐδ' ἂν ποτὶ τότε γὰρ βῶας καὶ φαίδιμ' ἐκτῶρ,  
 τῶν χέει ἔρ' ἔξωσαντο πύλας καὶ μακρὸν ὄχημα,  
 εἰ μὴ ἄρ' ἦν ὁρ' ἐν σαρπηδόνα μῆτιντα ἴδ' ἐ.  
 ὤρσαν ἐπὶ ἀργείοισι· λείονθ' ὡς βυσὶν ἱλιξίν.  
 οὐκ ἔστι δ' ἀσπίδα μὴν πρὸ δ' ἔχ' ὅσον πάντοσε ἴσω,  
 κελὴν χαλκείαν ἐξέλατον· ἢ ἄρα χαλκίδ' ἐ

ἔξ' ἄρα δ' ἡ τοὶ ἔπειτα θεοὶ φρένας ὤλεσαν αὐτοῖ·  
 δ' κέλεαι ἦν δὲ μὲν ἐλγιδούποιο λαθίδαι  
 βυλίων· ἄς τέ μοι αὐτὸς ὑπέχθον καὶ κτείνουσι·  
 τὴν δ' οἶωνοῖσι τανυπτερόν γε καὶ κελύβης  
 πέθειδαι, τῶν οὐ π' μεταφύπομ' οὐδ' ἀλεγίφω.  
 εἴτ' ἐπιδέξιν ἴωσι πρὸς ἠῶ τ' ἠελίον τε·  
 εἴτ' ἐπ' ἀεισερω, τοί γε ποτὶ ἴορον ἠιρόντα·  
 ἡμεῖς δ' ἐμεγάλω διὸς πεθώμεθα βυλῇ,  
 οἷ πασι θνητοῖσιν καὶ ἀθανάτοισιν ἀνάσσει.  
 εἰς οἶωνὸς ἀεισος ἀμύνεσθαι περὶ πολέως.  
 τί πη σὺ δειδόμενος πόλεμον καὶ δειδιότῃα·  
 εἴπιδ' ἄλλοι γε περικτενόμεθα πῶντο  
 νηυσὶν ἐπ' ἀργείων, σοὶ δ' οὐδέ τίς ἐσ' ἀπολίδαι·  
 οὐ γάρ τοι κραδίη μεταδ' ἦτο· οὐδ' ἐμαχέμων.  
 εἰδὲ σὺ δειδιότῃα ἀφίξαι, ἢ τίς ἄλλος  
 παρφάμεντο ἐπ' ἑσπέρην ἀποβίψας πολέμοιο,  
 αὐτὴν ἐμῷ ὑπὸ δουρὶ τυπεῖς ἀπὸ θυμὸν ὀλέσσει.  
 ὦς ἄρα φωνήσας ἤγήσατο, τοῖ δ' ἄμ' ἔποντο,  
 ἡ χῆ θιαισισίη, ἐπὶ δ' ἴδους τερπικέραντο·  
 ὠρσαν ἀπ' ἰδαιῶν ὀρέων ἀνέμοιο θυέλλων,  
 ἡ δ' ἴδους νηῶν κενίω φέρον. αὐτὰρ ἀχαιῶν  
 θέλγε νόον· ῥωσὶ δ' καὶ ἐκβεί κῦδος ὅπασιν·  
 τῶ περ δ' ἡ τερώεσσι πεποιθότες, ἡ δ' ἐβίβη  
 ῥήγνυθαι μέγα τεῖχος ἀχαιῶν πέρησιζον.  
 κρούσας μὲν πύργων ἔρυον, καὶ ἔρηπον ἐπ' ἀλγας,  
 σήλας τε προβλήτας ἐμόχλιον· ἄς ἄρ' ἀχαιοὶ  
 πρῶτας ἐν γαίῃ θέσαν ἐμῶναι ἔχματα πύργων,  
 τὰς οἱ γ' αὖ ἔρυον, ἔλποντο δ' ἐτεῖχος ἀχαιῶν  
 ῥήξεν· οὐδ' ἐνύπω δ' αὐτοὶ χάζοντο κελύβη.  
 ἀλλ' οἷ γ' ἐβίβοισι βοῶν φράξωντο ἐπ' ὀλέσσει·  
 βέλλον ἀπ' αὐτῶν δ' ἡνὺς ὑπὸ τεῖχος ἰόντας.

Ως ἴφατ', οὐδ' εἰ δίδως πείθειν φρίνα κατ' ἀγορεύων.  
 ἴκτοει γάρ δι, θυμὸς ἐβούλῃς κῦδος ὀρίξαι.  
 ἄλλοι δ' ἄμφ' ἄλλησι μάχῃ ἐμάχοντο πύλῃσιν.  
 ἄρ' αἰὲρ δ' ἐμὶ ταῦτα θεὸν ὥς πάντ' ἀγορεύσαι.  
 πάντῃ γάρ περὶ τῷχος ὀρώρει θεασιδάϊς πῦρ  
 λαῖνον. ἀργεῖοι δ' καὶ ἀχνύμῃοι περ' ἀάγκῃ,  
 πῦρ ἡμύνοντο. θεοὶ δ' ἀκασχέατο θυμὸν  
 πάντῃ, ὅσοι δ' ὠκασίσι μάχης ἐπιτάγροθοι ἦσαν.  
 σὺν δ' ἔβαλον λαπίθαι πόλεμον καὶ δεισιπῆτα.  
 ἐνθ' αὖ περὶ τοῦ ἐὸς κρατερὸς πολυποίτης,  
 θυρὶ βάλλον δέμασιν κυνέης σῆξ' χαλκῷ παρὺν.  
 οὐ δ' ἄρα χαλκὴν κόρυς ἐχέθω. ἀλλὰ σῆξ' πρὸ  
 αἰχμῇ χαλκῇ ῥῆξ' ὀσέον. ἐγκέφαλος δ'  
 ἐνδον ἅπας πεπάλακτο, δέμασι δ' ἐμὴν μεμαῶτα.  
 αὐτὰρ ἔπειτα πύλωνα καὶ ὄρμηον ἐξανείξων  
 ἐὸς δ' ἀνυμάχοιο. λεοντοῦς ὅς τοι ἄρκος,  
 ἰππόμαχον βάλε θυρὶ κατὰ ἴωσῃρα τυχύσας.  
 αὐπὲς δ' ἐκ καλεοῖτο ἱρυσάμην. ὅξ' ἴφρος ὄξυ,  
 ἀνυφάτῳ μὲν πρῶτον ἐπαΐξας δ' ὁμίλῃ,  
 πληῖς αὐτοσχεδίῳ. ὃ δ' ἄρ' ὕπῃος οὐδ' ἐκείδῃ.  
 αὐτὰρ ἔπειτα μένων καὶ ἰαμῶν καὶ ὀρίσῳ,  
 πάντας ἐπαυτέρως πέλασεν χθονὶ πηλυδοτείρῃ.  
 ὅφρ' εἰ τὸς ἐνάειρον ἀπ' ἐντα μαρμαίροντα,  
 τόφρ' εἰ πηλυδάμου καὶ ἴκτοει κῦροι ἱπονέ,  
 οἱ πλῆῖστοι καὶ αἰετοὶ ἴσαν. μέμασάν δ' ἐμάλισται  
 τῷχος τε ῥῆξαι, καὶ ἐνιπρῆσαι πυρὶ νῆας.  
 οἱ δ' ἐτι μερμύειρον ἐφεισάτοσσι παρὰ τάφρῳ.  
 ὄρνις γάρ σφιν ἐπῆλθε πειρησέμεναι μεμαῶσιν,  
 αἰετὸς ὕψιπέτης ἐπ' αἰετὶρὰ λαὸν ἱέρον,  
 φειδόντα φάκοντα φέρον δυνάσας πύλων,



βῶας, ἀτὰρ δαναῶν γένετ' ἰαχὴ τε φόβος τε,  
 ἐκ δ' ἔτ' αἶψα νηὶ πυλάων προδιμαχίδω,  
 ἄρ' ὅτ' ἐροισι σύεσιν ἰοικότες. τῷ τ' ἰν ὄρεσιν,  
 ὠδρῶν ἡδ' ἐκωῶν διχαταὶ κελυσσὺν τὸν ἰόντα,  
 δοχμῷ τ' αἴωσιν περὶ σφίσιν, ἄγνυτον ὅλῳ  
 πυρμνὴν ἐκτάμνοντες, ὅπαι δ' τε κόμπος ὀδόντων  
 γίνεταί ἐσόνε πρὸ βαλῶν ἐκ θυμὸν ἵληται.  
 ὥς τῶν κόμπι χαλκὸς ἐπὶ σῶθι σφι φανός.  
 ἄντ' ὧν βαλλομένων, μάλα γὰρ κρατερὸς ἐμάχοντο  
 λαοῖσι καθύπερθε πεποιθότες, ἡδ' ἐβίηφι.  
 οἳ δ' ἄρα χερμαδίοισιν ἐὺδμήτων ἀπὸ πύργων,  
 βάλλον ἀμυνόμενοι σφῶν τ' ὠντῶν καὶ κλισιάων,  
 νηῶν τ' ὠκυπόρων, νιφάδεσσι δ' ὥς πίπῃν ἱεραῖς,  
 ἄς τ' ἀνεμῶ ἱαὴς νίφια σκίοεντα δονήσας,  
 ταρφέας κατέχευον ἐπὶ χθονὶ πελυβοτείρῃ,  
 ὥς τῶν ἐκ χερῶν βίβει' ἔρρεον ἢ μῆν' ἀχαιῶν,  
 ἡδ' ἐκ καὶ ἐκ βῶων. κόρυθες δ' ἀμφ' ἄνορ' αὐτέων,  
 βαλλόμεναι μυλᾶκισι, καὶ ἀπιδίς ὀμφαλόισιναι.  
 οἳ δ' ἔα τὸ τ' ὠμῶς ἐρ τε, καὶ ὦ πεπλήγ' ἔσο μῆρῳ,  
 ἄσιος ὕρτακίδης, καὶ ἀλασθήσας ἔπος ἠΐδ' αἶ.  
 Ζεὺς πᾶτες ἢ ῥά νυ καὶ σὺ φιλοφροσύνῃς ἐτέτυξο  
 πᾶν χυμάλ', οὐ γὰρ ἔγω γ' ἐφάμην ἥρωας ἀχαιῶν  
 εὐχέσθην ἡμίτερόν γε μίν' ὃ καὶ χεῖρας ἀάπῃς.  
 οἳ δ' ὥς τε σφῆκας μέθρ' αἰῶλαι ἡδ' ἐμὴ λίσσας,  
 οἴκια ποιήσονται ὀδῶν ἐπὶ παυπαλείῃσιν,  
 εὐδ' ἀπολείπῃσι κελύτρ' ὀδόν, ἀλλὰ μένοντες  
 ἄνδρας θρηπύρας ἀμύνονται περὶ τέκνων,  
 ὥς οἳ γ' οὐκ ἐθίλυσσι πυλάων καὶ δ' ὦ ἰόντε  
 χάσασθαι, πρὶν γ' ἢ ἐκτακτά μιν ἢ ἐλῶναι.

ἵπποισιν καὶ ὄχισφιν ἀγαλλόμεν' παρὰ νηῶν,  
 ἅτ' ἀπονοσήσῃν ποτὶ ἴλιον ἠνιμοῖσάν.  
 πρόσθεν γάρ μιν μοῖρα δυσώνυμ' ἀμφικάλυψεν.  
 ἔρχετο δ' Ὀδυσσεύς ἀγαυὸς δολιχαλίδας.  
 εἶβ' ἄρ' νηῶν ἐπ' ἀεισερὰ τῇ περ ἄχαιοί  
 ἐκ πεδίου νίσσαντο σὺν ἵπποισι καὶ ὄχισφιν.  
 τῇ δ' ἵππυς τε καὶ ἄρμα διέθλασαν. οὐδ' ἐπύλησεν  
 εἴρ' ἐπικυκλιμέναις στανίδας καὶ μακρόν ὄχῃα.  
 ἀλλ' ἀναπεπλημέναις ἔχον ἄνδρες εἴπιν ἱταῖρον  
 ἐκ πολλέμης φύγοντα βῶσσαν μετὰ νῆας.  
 τῇ δ' ἰθὺς φρονέων ἵππυς ἔχε, τοῖδ' ἅμ' ἔποντο  
 ὄξεια κυκλιγέτοσ. ἔφοντο γὰρ οὐκ ἐτ' ἄχαιὺς  
 οὐδέ τις· ἀλλ' ἐν νηυσὶ μιλαίνῃσιν πισέειδαι  
 νῆπιον· ἐν δ' πύλῃσι δὴ ἄνδρας ἔβρον ἀεισούς,  
 ὕψας ὑπερθύμους λαπιθάων ἀχμητῶν.  
 τὸν μὲν περὶ θόον ὕψα κρατερὸν πολυποίτῳ.  
 τὸν δ' ἐλιοντῆα βροβόλαι· ἴσον ἄρην.  
 τῷ μὲν ἄρα προπάροιθε πυλάων ὑψηλῶν  
 ἔστασαν, ὥς ὅτε τι θρυῖες εὐρεσίην ὑψικωρυχοί·  
 αἷτ' ἄνεμον μίμνυσσι καὶ ὑετὸν ἤματα πάντα,  
 ῥίψουσιν μέγα λησι δ' ἠννεκίαν ἄρα ρῦϊα,  
 ὥς ἄρα τῷ χεῖρισι πεποθότοσ ἦδ' ἐβίηφι.  
 μίμνον ἐπερχόμενον μέγαν ἄσιον οὐδ' ἐφίβοντο.  
 οἷδ' ἰθὺς πρὸς τεῖχος ἐϋδμήτην βόας αὔαν  
 ὑψόσ' ἀναχόμενοι, ἔκιοι μέγα λῶ ἀλαλητῶ,  
 ἄσιον ἀμφὶ ἀνακτα καὶ ἱαμῶν καὶ ὀρίσῳ,  
 ἀσιάδῳ τ' ἀκάμαντα, θόωνά τε, οἶνόμαόν τε.  
 οἷδ' ἦτοι εἰὼς μὲν ἐϋκνήμιδας ἄχαιὺς  
 ὄφρυον, ἐνδον ἰόντοσ ἀμύνειν περὶ νηῶν.  
 αὐτὰρ ἱππὶ δ' ἐπὶ τεῖχος ἐπιαυμένους ἐγρόσαν

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἡνίοχος μὲν ἐπὶ ταῖς ἐπὶ τεύχεσσι  
 ἵππους εὖ κατὰ κόσμον ἐρυκίμην ἄνθ' ἐπὶ τὰ φρέσιν.  
 οἱ δ' ὅς τ' ὄψεσθαι πάντες σφίεας αὐτὸς ἀρτύνωντός,  
 πάντα χαρσμηθέντός, ἅμ' ἐγχεμόνεσιν ἵποντο.  
 οἱ μὲν ἅμ' ἔκτορ' ἴσαν, καὶ ἀμύμονι περὶ λυδῆμοντι  
 οἱ περὶ τοῖς καὶ ἄριστοι ἴσαν· μέμασσαν δὲ μάλιστα  
 τυῖχος ῥηξάμενοι καί τις ἐπὶ νηυσὶ μάχεσθαι.  
 καὶ σφιν κειβερόνους ῥίτος ἔπειθε· παρ δ' ἄρ' ὄχι σφιν  
 ἄλλον κειβερόναο χερίονα κάλλιπεν ἔκτορ.  
 τῶν δ' ἐτέρων, πάντες ἦρχε, καὶ ἀλκάθοος καὶ ἀγένορος  
 τῶν δ' ῥίτων, ἔλεοντο καὶ δῆϊφοβος θιοσηδής,  
 οἱ δ' ὅσ' ὀφείλοιο· ῥίτος δ' ἦν ἄσιος ἦρωος.  
 ἄσιος ὕρτακίδης, ὃν ἀρίσθηθεν φέρον ἵπποι,  
 αἰθωνες μεγάλαι ποταμῷ ἀπο σιλήοντι.  
 τῶν δ' τεταρτῶν ἦρχεν οἷς πάντες ἀγχιέου  
 αὐνείας· ἅμα τοῖς γε, δ' ὅσ' αὐτήνορος οἱ  
 ἀρχέλοχος τ' ἀκάμας τε μάχης εὖ ἐσδότε πάσης  
 σαρπηδόων δ' ἠγέοντο ἀγακλήτων ἐπικυύρων.  
 πρὸς δ' ἔλθοι γλαυκῶν, καὶ ἀρήϊον ἀστεροπαῖον.  
 οἱ γάρ οἱ εἶδοντο διακείδον ἐν ἄριστοι  
 τῶν ἄλλων, μετὰ γ' αὐτόν· ὅς δ' ἔπριπε καὶ ὄψεσθαι πάντων.  
 οἱ δ' ἐπὶ ἀλλήλους ἀραρον τυκτῆσι βοῖσι,  
 βάρρ' ἰθὺς δ' ἀναῶν λελημένοι· οὐδ' ἐφ' αὐτοῖς  
 οὐχ ὅσ' ἄλλ' ἐν νηυσὶ μελαίνῃσι πείσσεισθαι.  
 ἐν δ' ἄλλοι ῥῶες τηλέκλητοί τ' ἐπὶ κρητοί,  
 βελῆ περὶ λυδῆμοντι ἀμωμήτοιο πύθοντο.  
 ἀλλ' οὐκ ὕρτακίδης ἔθελ' ἄσιος ὄρχαμ' ἀνδρῶν  
 ἔνθ' ἡμιπύρ' ἵππους τε, καὶ ἡνίοχον θειράποντα.  
 ἀλλὰ σὺν αὐτοῖσι πελάσσει νήεσι θοῇσι  
 ἐν πύρ'· οὐδ' ἄρ' ἐμείλει κακὰς ὑπὸ κῆρας ἀλύξας,  
 ἵπποισιν

ῥῆιδ' ἰδὼν κρημνοὶ γὰρ ἱππεφίεις περὶ πάσας,  
 ἔσασσάν ἀμφοτέρωθεν, ὑπερβῶν ὃ σκολόπιον  
 θξείσιν ἠρῆρε· τὸς ἔσασσαν ὕιες ἀχαιῶν,  
 πυκνὸς καὶ μεγάλους· δ' ἡῶν αὐτῶν ἀλλωρύν·  
 ἐνθ' οὐκ οὐρῖα ἵππος ἐντροχὸν ἄρμα βταίνων  
 ἰσθαίη, περὶ δὲ ὃ μῦθον ἴον ἔτελει·  
 δ' ἡ τότε πηλυδάμας βραχὺν ἔκτορα ἔπει παρκατῆ·  
 ἔκτορ τ' ἠδ' ἄλλοι βῶν ἀγροὶ ἠδ' ἐπιχεύρων,  
 ἀφραδίως σφ' ἐκταφρον ἱλαύνοντο ὥκας ἵππους·  
 ἔδ' ἡ μάλ' ἀργαλὴν περάσων, σκόλεπες γὰρ ἐν αὐτῇ  
 θξείες ἔσασιν, ποτὶ δ' αὐτὸς τεῖχος ἀχαιῶν,  
 ἐνθ' οὐκ ὡς ἐπὶ καταβήμεσσι οὐδ' ἐμὰ χεῖρας  
 ἱπποῦσι, σῆνος γὰρ ὅθι βῶσι· οἶον·  
 ἔδ' ἡ μὲν γὰρ δ' ἡ πύργῳ κατὰ φρονέων ἀλαπάξῃ  
 (δύ· ὑφ' ἑβρεμείτης, βῶσι δ' ἐβούλ' ἀρήγαν·  
 ἔτ' ἄν ἐγὼ· ἐθέλωμι καὶ αὐτίκα τῷ γονέει·  
 νουμένους ἀπολίσσασθαι ἀργεὺς ἐνθαδ' ἀχαρούς·  
 ἔδ' ἡ χ' ὑπὸ σφ' ἔσασιν, πάλιν ἔξ' ὃ γίνεσθαι  
 ἐκ νῆων, καὶ τὰ φρῶνι πληξέμεντο ὀρυκτῇ·  
 οὐκ ἔτ' ἐπ' ἔτ' οἶον, οὐδ' ἀγγέλων ἀπονεύει·  
 ἀφ' ὁρῶν ποτὶ ἄστυ, ἐλὶ χθίντων ὑπ' ἀχαιῶν·  
 ἀλλ' ἀγὰρ ὡς ἄν ἐγὼ ἔπω παθώμεθα πάντες,  
 ἵππους μὲν θεράποντες ἐρυκόντων ἐπὶ τὰ φρῶν,  
 αὐτοὶ δ' ἐπὶ πρυλὲς σὺν τοῦ χισὶ θῶρη χθίντες,  
 ἔκτορα πάντες ἐπ' ὡς ἀλλήεις, αὐτὰρ ἀχαιῶν  
 οὐ μὲν ἐσ', ἐδ' ἡ σφιν ὀλίγη πείρατ' ἐφ' ἡπῆα·  
 ὡς φάτο πηλυδάμας· ἔδ' ἡ ἔκτορα μῦθος ἀπύμων·  
 αὐτίκα δ' ἐξ ὀχέων σὺν τοῦ χισὶν ἄλτο χαμᾶς·  
 οὐδ' ἐμὲν ἄλλοι βῶν ἐφ' ἵππων ἠγέρθησαν,  
 ἀλλ' ἀπεβήντες ὄρεσσαν, ἐπὶ ἴδ' ὅρ' ἔκτορα δῖον·

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

τῶν πάντων ὁμόσι σόματ' ἔραπι φοῖβος ἀπόλλων,  
 ἱνῆμαρ δ' ἐς τεῖχος ἰεῖ ῥόον. οὐ δ' ἄρα ἴδους  
 σιωχέας, ὄφρα κε θάαγον ἀλίπληα τέχια θέη.  
 αὐτὸς δ' ἱννοσίγαιος ἔχων χείρασι βίανουσιν  
 ἠγλῖτ' ἔκ δ' ἄρα πάντα θεμέλια κύμασι πέμπε  
 φιβῶν καὶ λάων, τὰ θέσσω μογέοντο δ' ἀχαιοί.  
 λιῖα δ' ἐποίησεν παρ' ἀγάρῃοον ἰλλήπωντον.  
 αὐπὶς δ' ἠιόνα μεγάλλω φάμαθιοισι κάλυψι.  
 τεῖχος ἀμαλδύνανσ' ὠπταμούς δ' ἔριψεν ἐπὶ  
 κατ' ῥόον ἔπειρ πρόωκ' ἴον καλλίῃ ῥόον ὕδαρ.  
 ὣς ἄρ' ἐμειλλον ὀπιθεῖν ὠπασθῶν καὶ ἀπόλλων  
 θεσέμεναι· τότε δ' ἀμφὶ μέγχι νηοῦ τε διδύχῃ  
 τεῖχος ἐνδύμηνον κανάχιζ' ἢ δούρατα πύργων  
 βαλλόμεν' ἀργεῖοι ἢ δῖος μάστιγι δαμέντο δ',  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐέλμενοι ἰχθυόοντο,  
 ἔκτορα δ' ἐδιδότο κραιπρὸν μῆσσορα φόβοιο.  
 αὐτὰρ ὃ γ' ὅς τὸ πρὸ ὄναι μάρνατο ἴσος ἀέλλῃ·  
 ὣς δ' ἄτ' ἐν τε κύνεασι καὶ ἀνδράσι θηρὺσιν ἴσιν  
 κάπριος ἢ ἑλὼν σρέφεται δένει βλεμμαίνων.  
 οἱ δ' ἐπεὶ πυργηδὲρ σφίεας αὐτὸς ἀρτύνοντο δ',  
 ἀντίοι ἴσονται καὶ ἀκοντήσιν θαμναῖς  
 αἰχμαῖς ἐκ χερῶν, τῷ δ' οὐ ποτε κυδάλιμον κῆρ  
 ταρβέει, οὐδέ φοβεῖται, ἀγλωρήν ἢ μιν ἔκτα.  
 ταρφέα τε σρέφεται σίχας ἀνδρῶν περὶ πύλων.  
 ὁππῇ τ' ἰθύσῃ τῇ τ' ἔκασσι σίχας ἀνδρῶν.  
 ὣς ἔκτορ ἀν' ὁμίλῳ ἴον ἰλίσσεται αἶψας,  
 τάφρον ἐποφύων διαβαινέμεν· οὐδ' οἱ ἵπποι  
 τόλμων ὠκύποδες· μάλα ἢ χρεμύζον ἐπ' αὐφῷ  
 χέλει φρεσὶ σὸτόν· ἀπὸ γὰρ δ' ἐδίδασσο τάφρος  
 δούρι· οὐ γὰρ ἄρ' ὑπερθεοῖεν χυδόν· οὐτ' ἀπὶ πηρῇσαν

ῥηθὶν.



ΙΛΙΑΔΟΣ Μ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

μὺν ῥώων παλάμῃσι· κατ' ἔειπε τείχος Ἀχαιῶν.

Σ ὁ μὲν ἐν κλισίῃσι μῦμοι τίς ἄλλ'  
κιμῶ ἦς.

ἰᾶτ' εὐρύπυλον βεβλημένον· οἱ δ'  
ἑμάχοντο

ἄργεῖοι καὶ ῥῶες ὁμιλαδὸν· οὐ δ' ἄρ' ἑμελλε  
τάφρος ἐπ' ἄψιν δ' ὠαῶν καὶ τείχος ὑπὲρ θῆναι  
εὐρύ· καὶ ποιήσαντο νεῶν ὑπὲρ· ἀμφὶ δ' ἐτάφρον  
ἦλθασαν· οὐδ' ἐθεοῖσι δόσαν κλισίας ἐκαστόμβας,  
ὅφρα σφιν νῆας τε θοὰς καὶ ληΐδα πολλὰν  
ἐνὲς ἔχον ῥύοιτο· θεῶν δ' ἀέκητι τέτυκτο  
ἄθωάτων· τῶν καὶ οὐ πὶ πολὺν χρόνον ἑμπεδον ἦσαν·  
ὅφρα μὲν ἔκτωρ Ἰωὸς ἔειν καὶ μὲν Ἀχιλλεύς·  
καὶ πριάμοιο ἄνακτ' ἀπόρθητ' πόλις ἔπλε,  
τόφρα δ' καὶ μέγα τείχος Ἀχαιῶν ἑμπεδον ἦσαν·  
ὧν τὰρ ἐπὶ κατὰ μὲν ῥώων θάναον ὅσσοι ἄριστοι,  
πολλοὶ δ' ἄργεῖων οἱ μὲν δαμνύοντες, οἱ δ' ἐλίποντο,  
πύρρ' οὐδ' ὅτ' πριάμοιο πόλις δικοῦτο ἐνὶ αὐτῷ,  
ἄργεῖοι δ' ἐν νηυσὶ φίλῳ ἐς παρὶς ἐβησαν,  
οἳ τότε μῆτιόνοντο· πρὸς δ' ἄλλων καὶ ἀπόλων,  
τείχος ἀμαλδύνου πρὸς αὐτῶν μέν' ἐπ' ἐπ' ἀγρόντο,  
ὅσσοι ἀπ' ἰδαιῶν ὄρεων ἄλλαδε προρέουσι,  
ῥῆθ' ἐπ' ἀπορός τε, κάρησός τε, ῥοδιός τε,  
ῥήνικος τε καὶ ἄσσηπος, διός τε σκάμωδρος,  
καὶ σιμόεις, ὅθι πολλὰ βοάχρια καὶ θυφάλααι  
καὶ πᾶσι ἐν κονίῃσι, καὶ ἡμιθέων γένος ἀνδρῶν·

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

χρηίζοντα καὶ οὐκ ἄμύμον· ἰητῆρ·  
 χειῶσαι, ὅδ' ἐν πιδίῳ φῶων μινδ' ὀξύν ἄρηα·  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπε μνηοιγίς Ἀλκιμος υἱός·  
 πῶς τ' ἄρ' εἰσι τὰδε ἔργα, τί ρίξομεν δούρυπυλ' ἦρας;  
 ἔρχομαι ἔφρ' ἀχιλῆϊ διαίφρονι μῦθον ἐνίσσω,  
 ὅν, νῆσφι ἐπὶ τιλλῇ γερήνιος οὖρ· Ἀχαιῶν·  
 ἀλλ' ἔδ' ὅσπρ' σιῖο μισθήσω τερομένοιο·  
 ἦ· καὶ ὑπὸ σέργοιο λαβὼν ἄγε περμένει λαῶν  
 ἐς κλισίῳ, θεράπων δ' ἐίδων, ὑπέχενε βοείας·  
 ἔνθα μιν ἐκτανύσας ἐκ μηρῶ τάμνει μαχαίρῃ,  
 ὅξυ βέλους περριπυκίς· ἀπ' οὐτῷ δ' αἶμα κίλαιον·  
 νῖς ὅδ' ἀπὸ λιαρῶν, δὲ ρίξον βώλε πικρήν  
 χυτοῖ διατρίψας ὀδυνώφαρν, ἣ οἱ ἀπάσας  
 ἔχ' ὀδύνας, καὶ μὲν ἔλκεος ἐτέρπετ, παύσεται δ' αἶμα·

## ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Μ. ΟΜΗ- ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Προβάντες οἱ φῶδες τῶν ἱππῶν, διαβαίνουσι  
 αὖ πάλιν τὰ φρον· καὶ περ ἀπαισίς αὐρῆς φάνηται  
 οἶωνος, καὶ ἐς πέντε τάξεις διακριθέντος,  
 προσβάλλουσι τῷ τείχεσσι τῶν ἑλλήνων, ἔνθα σαρπηδὼν  
 ἱππαλξιν κατὰ πᾶσα, ἔκτορ δ' ἐλπίθω βαλὼν τὰς πύλας,  
 ἐπέβη ταῖς γασσίν, καὶ οἱ σὺν αὐτῷ πάντες φῶδες·

ΙΛΙΑΔΟΣ

βῆ δ' ὅτε παρὰ νῆας ἐπ' αἰακίδῳ ἀχιλλῆα.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ κατὰ νῆας ὀδυσσεὺς θέοιο  
 ἴξε θέων παῖδοκλος, ἵνα σφ' ἀγορή τι θέμιστι  
 ἔλῃ, τῇ δ' ἡ καὶ σφι θεῶν ἐτετεύχαστο βωμοί.  
 ἐνθάδ' οἱ δὺρὺ πυλὸς βεβλημένος ἀντιβόλησε,  
 διογενὲς δὺαμονίδης κατὰ μηρὸν οἶσε,  
 σκαλῶν ἐκ πολέμου, κατὰ δ' νόπος ῥέων ἰφθῶς.  
 ὦμων κ' κεφαλῆς, ἀπὸ δ' ἔλκε' ἀρχαλίοιο  
 αἶμα μέλαιον κελάφυσε νόος γέμον ἔμπεδος ἦεν.  
 τὸν δ' ἰδὼν ὥκτεφε μοχοιτίχ' ἄλκιμος ἦος.  
 καί ῥ' ὀλοφύρομεν' ἔπεια πηρόεντα προσηύδα.  
 ἅ δ' εὐθὺς δάναων ἡγήετο ἠδ' ἐμείδοντες.  
 ὧς ἄρ' ἐμείλλετε τῆλε φίλων καὶ πατρίδ' αἴης,  
 ἄσφ' ἐν βροίῃ ταχέας κύνας ἀργίῃ δημῶ.  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ διοτρεφὲς δὺρὺ πυλ' ἦρας,  
 ἦ ῥ' ἐν πονοχέουσι πελώριον ἔκτορ' ἀχαιοί.  
 ἢ ὅδ' ἔθιθ' ὄνται ὑπ' αὐτῷ δ' ἄρ' ὀδυσσεὺς  
 τὸν δ' αὖτ' ὀδυσσεὺς πεπνυμέν' ἀντίον ἔσδα.  
 ἔκ' ἐπὶ διογενὲς παρόκλης ἄλκιρ' ἀχαιῶν  
 ἔσεται. ἀλλ' ἐν νηυσὶ μελαιίνῃσι πείσονται.  
 οἱ μὲν γάρ δ' ἡ πάντοτε ὄθι πάρ' ἥσαν ἄριστοι  
 ἐν νηυσὶ κίεσθαι βεβλημένοι, ἔταμενοί τε  
 χερσὶν ὑπὸ βῶων, τῶν δ' ἀνέειν' ὄρνυται αἶν.  
 ἀλλ' ἐμὲ μ' σὺ ἐὺ σάωθ' ἄγων ὧς νῆα μέλαιναν.  
 μηρὸν δ' ἔκτα μ' οἶσόν, ἀπ' αὐτῷ δ' αἶμα μελαινὸν  
 νίξ' ὄδ' ἀπὸ λιαρῶ. ἐπὶ δ' ἥπια φάρμακα πάσι  
 ἐδιδά. τά, σε προτὶ φασὶν ἀχιλλῆ' ὅς δ' ἰδὼ χθονα.  
 ὃν χείρων ἰδὶδ' ἔξε δίκαι' ὅταρ' κενταύρων.  
 ἡτοὶ μὲν γάρ ποδαλείει, ἠδ' ἐμαχάων.  
 τὴν μὲν ἐνὶ κλισίῃσιν ὀϊόμα' ἔλκε' ἔχοντα,

ΙΔΙΔΟΣ

[illegible]

८५३०६४

ἔρισαν ἄλλους ἄλλος, ἐπὶ ἴσδον ἄνδρα πισόντα  
 ἔγχεμόν' ἱππῶν, ὅς αἰετιύσκε μολχιδαι.  
 αὐτὰρ ἔγδον ἐνόρησαι κίλαυνῃ λαίλαπι ἴθις,  
 πωτὴν κεντα δ' ἔλθον δ' ἴφρως, δύο δ' ἄμφος ἔκαστος  
 φῶτόδ' ὀδ' ἔλθον, οὐδ' αὖτε ἐμῶ ὑπὸ δ' ἔνρ' ὀδ' αἰντόν.  
 καὶ νύ κεν ἀκρρίωνε μολίονε πατὶδ' ἄλωπαξα,  
 εἰ μὴ σφωε πατὴρ δ' ἔνρ' κρείων ἐνοσίχθων,  
 ἔκ πωλῆμεν ἐσάωσε καλύφας ἦει πωλῆ,  
 ἔνθα βύς πυλίοισι μέγα κράτος ἔγγυαλίξεν  
 τόφρα γὰρ δ' ὡν ἐπόμειδα δ' ἄσπιδ' ἔκ' πεδίον.  
 κτείνοντες τ' αὐτὺς, ἀνὰ τ' ἔντα καλὰ λέγοντόν,  
 ὄφρ' ὅς ἐν πρᾶσίῃ πολυπύρρ' ἐήσαι μῆν ἱππες,  
 πέφης τ' ὀλινίης καὶ ἄλυσίς, ἔνθα καλῶν  
 κέκληται, ὅθεν αὐτὶς ἀπ' ἔραπε λαὸν ἀθήνη,  
 ἔνθ' ἄνδρα κτείνας πύμασεν λίτων. αὐτὰρ ἄχαιοί·  
 ἔκ' ἀπ' ἐν πρᾶσίῃ πύλιν δ' ἔχον ὀκείας ἱππες.  
 πᾶντες δ' ὄνχετόωντο θιῶν δι', ἐνέου τ' ὀνδρῶν.  
 ὡς ἔον ἔϊποντ' ἔνθα γὰρ μετ' ὀνδράσιν, αὐτὰρ ἄχιλλεύς,  
 οἷος τ' ἀρετῆς ἀπὸνῆσεται, ἢ τέμιν οἶω,  
 πολλὰ μετακλαύσειδαι, ἐπεί κ' ἀπὸ λαὸς ὀληται.  
 ὦ πέπων· ἢ μ' ὅ γ' ἐμφοίπος ὦδ' ἐπὶ τελλου  
 ἔμαπ' ὦδ', ὅτε σ' ἐκ φθίης ἀγαμέμνονι πέμπε.  
 ἔνθ' ὀδ' ἔλθον ἐόντόν, ἔγδ' καὶ δ' ἴος ὀδ' αἰνός,  
 πᾶντα μάλ' ἐν μετάρσις ἠκνύομην ὡς ἐπὶ τελλου  
 πηλῆος δ' ἐκόμεναι δ' ὀμνυς ἐὺ ναιετῶντας,  
 λαὸν ἀγείραντόν κατ' ἄχαιῶν πενυβότθων.  
 ἔνθ' ὀδ' ἔπειθ' ἔρωα μῆροίπιν ἐύρομην ἔνθ' ὀδ' ἔλθον,  
 ἔνθ' ὀδ' ἔλθον, πᾶρ δ' ἄχιλλῆα, γέρον δ' ἱππῆλῶτα πηλεῦς.  
 πῶνα μερὶ ἔκκε βοὸς δι' ἑρπικεράνῳ,  
 ὀλῆς ἐν χορτῶ. ἔκ' ὅ γ' χρυσέον ἔλαβον.



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἔγγυλός ἦλθε θείης, ἀπὶ δ' οὐλύμῳ θωρήσασθαι  
 ἔννευρος, ὅδ' αἶχοντα πύλον κατὰ λαὸν ἄγχιον.  
 ἀλλὰ μολλ' ἐστυμένους πολυμίξιν, ὅδ' ἐμὴ νηλεὺς.  
 εἴα θωρήσασθαι, ἀπὶ κρυφείῃ μοι ἵππυς.  
 ὅ γάρ πω τί μ' ἐφ' ἰδμῷ πολυμήϊα ἔργα,  
 ἀλλὰ καὶ ὡς ἵππῳσι μετέπρωτον ἡμετέροισι.  
 καὶ πρὶός περ ἰδὼν ἐπὶ ὡς ἄγε νεῖκος ἀθήνη.  
 εἴα δ' ἐπὶς ποταμὸς μινυῖος εἰς ἄλα βολλῶν.  
 ἐγγύθεν ἀρήνης, ὅθι μέγα μῦν ἦν δ' ἴαν,  
 ἵππῃς πυλίων, τάδ' ἐπ' ἔρρεον ἔθνη πύλων,  
 εἴθω πεπασυδίη σὺν τεύχεσι θωρηχθῆντο,  
 ἔνδοι ἰκόμιν ἰδὼν ῥόον ἀλφειοῦ.  
 εἴθω δι' ῥέξοντο ὑπὲρ μιν ἰδὼν καλὰ.  
 ταῦρον δ' ἀλφειῶ, ταῦρον δ' ποσειδάωνι,  
 αὐτὰρ ἀθωαίῃ γλαυκώπιδι βῆν ἀγέλιω,  
 δόρυων ἐπ' ἰλόμεδα κατὰ στρατὸν ἐν τιλίσαι.  
 καὶ κατακτείνῃ μῆθημιν ἐν ἑντασιν οἷσιν ἔκαστος,  
 ἀμφὶ ῥόας ποταμοῦ. αὐτὰρ μεγάθυμοι ἵπποι,  
 ἀμφίσταντο δ' ἡ, ἄστυ διαπραθείην μεμαῶτος,  
 ἀλλὰ σφιν προπάροιτο φωνὴ μέγα ἔργον ἄρ' ἔσθ.  
 εἴτε γὰρ ἡίλωσ φάιδαν ὑπερέαχτε γαίης,  
 συμπερόμεδα μάχη δ' ἴτ' ἐν χεῖρσιν ἡ ἀθήνη.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ πυλίων καὶ ἐπ' αἶν' ἐπ' ἔλθο νεῖκος,  
 πρῶτος ἰδὼν ἔλθ' ἀνδρα, κόμιν δ' ἡ μώνυχας ἵππυς,  
 μούλιον ἀχμητὴν, γαμβρὸς δ' ἦν αὐγείας.  
 πρὶ στυγερῶν δ' οὐ γὰρ ἐξέσθην ἀγαμέδων.  
 ἡ τότ' ἀφάρμακα ἦν, ὅσα φέφ' ἐν δ' ἰδ' ἡ χθονί.  
 τὸν μὲν ἐγὼ προσιόντα, βάλων χαλκὸν ἰδ' ἡ δ' ἰδ' ἡ.  
 ἡ ἐπ' ἰδ' ἡ ἐν κενήσιν, ἐγὼ δ' ἐς δ' ἰδ' ἡ δ' ἰδ' ἡ.  
 σὺν ῥα μετὰ προμηχεῖσιν, αὐτὰρ μεγάθυμοι ἵπποι,  
 ἔφισαν

κήρυκός δ' ἐλίγανον ἄμ' ἡοῖ φανομένηφι.  
 ἄνδρες ἴδμε οἷσι χρεὸς ὠφείλειτ' ἐν ἥλιδι δ' ἴη.  
 οἱ δ' ἐσσωαγρόμενοι πυλίων ἡγ' ἤπερ δὲ ἄνδρες,  
 δαίφινον, πολέσιν γὰρ ἐπεί τοι χρεῖος ὄφελον.  
 ὥς ἡμᾶς παῦροι κικακωμένοι ἐν πύλῳ ἡμῶ.  
 ἔλθων γὰρ ἐκάκωσεν βίην ἡρακληεῖν,  
 τῶν προτέρων ἐτέων, κατὰ δ' ἐκταθον, ὅσοι ἄετοι.  
 δῶδ' αἶψα γὰρ νηλεὺς ἀμύμονος ἤϊός ἡμῶ.  
 τῶν, οἷος λιπόμην, οἷδ' ἄλλοι πάντοδ' ὄλοντο.  
 ταῦθ' ὑπερηφανέοντοδ' ἵπποι χαλκῷ χίτωνες  
 ἡμέας ὑβρίζοντες ἀταλθαλά μηχανόωντο.  
 ἐκ δ' ὁ γέρον ἀγέλωτε βοῶν καὶ πῶῦ μέγ' οἶῶν  
 εἴλθο κρινάμην· ὦ φίλκοσι, ἡδ' ἐ νομήας.  
 καὶ γὰρ τοῖ χρεῖος μέγ' ὀφείλειτ' ἐν ἥλιδι δ' ἴη  
 τέταρτος ἀθλοφόροι ἵπποι αὐτοῖσιν ὄχεσφι  
 ἔλθόντες μετ' ἀέθλα. περὶ τρίποδος γὰρ ἐμελλοῦ  
 θύσεισθαι. ἄνδρες δ' αὖτις ἀναξ ἀνδρῶν αὐγείας,  
 καλὰ χεῖρ. τόν δ' ἐλατῆρ' ἀφείδ' ἀσπασίην ἵππων.  
 τῶν ὁ γέρον ἐπέων κικακωμένον· ἡδ' ἐ καὶ ἔργων,  
 ἐξέλειτ' ἄπειτα πολλά, τὰ δ' ἄλλ' ἐς δ' ἡμῶν ἐδ' ἔκει  
 δαυρεῖαν. μή τις οἱ ἀθεμβόμην· κίοι ἴσως.  
 ἡμᾶς μὲν τὰ ἔκαστα διείπωμεν, ἀμφὶ γὰρ ἄστυ  
 ἱεροδμεν ἱρὰ θεοῖς. οἱ δ' ὅτι τῷ ἡματι πάντοδ'  
 ἔλθον. ὁ μὲν αὐτοῖ τε πολέας καὶ μόνυχος ἵπποι  
 παυσυδ' ἴη. μετὰ δ' ὅσφι μολίονε θαρήσονται,  
 παῖδ' ἔτ' ἐόντ' οὐ μάλ' αἰδέομαι θούλειδος ἀλκῆς.  
 ἔσθ' ἂν τις θρυόεσσι πόλιν ἀπεία καλῶνῃ,  
 τηλοῦ ἐπ' ἀλφειῷ, νεώτη πύλιν ἡμαθούοντ'·  
 νῦν, ἀμφισρατόων διαρρῶσαι μεμαῶτοδ'.  
 ἀλλ' ὅτε πᾶν πεδίον μετεκίεθον, ἄμμι δ' ἀθήνη,

# ΙΛΙΑΔΟΣ

Τὸν δ' ἡμείβετ' ἑπτά γερήνιος ἱππότης νέστωρ·  
 τίπτετ' ἄρ' ὦδ' Ἀχιλλεύς ὀλοφύρεται ὕιας Ἀχαιῶν·  
 ὅσσοι δ' ἠβελίεσσι βεβλήκαται· ὅδ' εἰ καὶ οἶδε  
 πένθει· ὅσων ὄρωρ κατὰ στρατὸν· οἱ γὰρ ἄεστοι  
 ἐν νηυσὶν κέκταται βεβλημένοι, ἑτάμενοί τε·  
 βεβλήκαται μὲν δ' τυδείδης κρατερὸς Διομήδης·  
 οὐτάσασαι ὀδυσαῖνός δ' νεεικλυτὸς, ἠδ' Ἀγαμέμνων·  
 βεβλήκαται δ' καὶ Δυρὺπυλος κατὰ μηρὸν οἶσθε·  
 Εὐπὸν δ' ἄλλον ἐγὼ νέον ἦραρον ἐκ πολέμοιο,  
 ἰὼ Ἀπαῖνευρῆς βεβλημένον· αὐτὰρ Ἀχιλλεύς  
 ἔσθλός ἐδὼν δάναων, ὃ κῆδεταί μιν ἱλκαίρη·  
 ἠὲ μένει, εἰσόκει δ' ἠνέσθ' ὁσάϊ ἄρχι θαλάσσης  
 Ἀργείων Αἰκῆτι πυρὸς διήοιο θέρωνται,  
 αὐτοὶ τε κτεινώμεθ' ἐπὶ ἰαχρῶ, ὃ γὰρ ἐμὴ ἴς,  
 ἔσθ' οἷη πάρος ἔσκειν ἐνὶ γναμπῆϊσι μέλισσιν·  
 εἶθ' ὥς ἡβώοιμι, βίη δ' ἐμοὶ ἔμπεδος εἴη,  
 ὥς ὅπότε ἡλείοισι καὶ ἡμῖν νεῖκος ἐτύχθη·  
 ἄμφι Βωηλασίῳ· ὅτ' ἐγὼ κτάνον ἰτυμονίῃ  
 ἔσθλὸν ὑπέρροχίδῳ, ὅς ἐν ἡλιδὶ ναιετάασκειν·  
 φῦσ' ἱλαυνόμεν· ὅδ' Ἀμύνων ἦσι βόεσσιν·  
 ἔβλητ' ἐν πρώτοισιν ἐμῆς ἀπὸ χερὸς Ἀκηνει·  
 παρδ' ἔπεσον, λαοὶ δ' ἐπερίβησαν ἀγροῖσσι·  
 ληϊδὰ δ' ἐκ πεδίου σσηλωσάμεν ἡλιδά πολλήν·  
 πεντήκοντα βοῶν ἀγέλας τόσσα πάσια οἶον·  
 τόσσα σὺν σὺν βοόσια, τόσ' αἰπόλια πλατὶ Ἀργῶν·  
 ἵππους δ' ἑξακτῆρας, ἑκατὸν καὶ πεντήκοντα  
 πάσσας θηλείας, πολλῇσι δ' ἑπὶ πῶλοι ἐπῆσαν·  
 καὶ τὰ μὲν ἡλαστάμεθα πύλον νηληϊὸν ἔσω,  
 ἐννύχιοι προτὶ ἄστυ, γαγῆθαι δ' ὀφρένα νηλεὺς·  
 θῆνικὰ μοι τύχῃ πολλὰ γέφυ πόλεμόνδε κίοντι·

κέρκυρα

πλὴν ἄριτ' ἐκ τινίδοιο γέρων· ὅτι πέρσαν ἀχιλλεύῳ  
 θυγατὶ ῥ' ἄρσινόῳ μεγαλήτορ· ἦν οἱ ἀχαιοὶ  
 ἔξιλον εὐνὴν βαλὴν ἀεισύνεσκον ἀπάντων·  
 ἢ σφωὶν πρῶτον μῦθον, ἐπιπροΐηλε βολπιῶν,  
 καλὴν κυανόπεϊον, εὐξοον· αὐτὰρ ἐπ' αὐτῇ·  
 χαλκίδον κάνοον· ὣς ὃ, κρόμμον ποτὶ δ' ὄφρα·  
 ἦ δ' ἐμὲλι χλωρόν· πάρα δ' ἀλφύτης ἰστὸν ἀκτῆρ·  
 πὰρ δ' ἐ, δέπας περικαλλὲς ὁ οἷκθον ἔγ' ὁ γεραιὸς  
 χρυσέοις ἤλοισι πεπταρμένον· οὐκ αὖτ' αὐτῷ,  
 τέσσαρ' ἴσται, δίοιαι ὃ πηλὸν ἀμφὶς ἔκαστον  
 χρύσειαι νεμέθοντο· δύω δ' ὑποπυθμένον ἴσται·  
 ἄλλ' ὃ μῦθον μογέων ἀποκινῆσαι σκιφαίης,  
 πλεῖον ἰόν, νέσσο δ' ὁ γέρον ἀμογητὶ ἄερα·  
 ἦν δ' ἔφ' ἄσφικύκησε γυνὴ ἑκκῆια θεῆσιν,  
 εἶν' ὡς πρᾶμνέω, ὣς δ' αἶγρον κυνὴ τυρόν  
 κνίσσι χαλκείῃ· ὣς δ' ἄλφριτα λιυκὰ πάλῳ·  
 πινέμεσθαι δ' ἐκέλευσεν, ἐπὶ ῥ' ὅπλισε κυκασθ·  
 τῷ δ' ἐπὶ οὖν πίνοντ' ἀφ' ἑτέρῳ πολυκαρκία δίφταν·  
 μῦθοισιν τέρωτον πρὸς ἀλλήλους ἐνέποντο·  
 πάροκλος δ' ἐ, θύρησιν ἐφίστατο ἰσόθε' ὄφρα·  
 τὸν δ' ἐίδων ὁ γεραιὸς ἀπὸ θρόνου ὤρε φαίνε·  
 ἐς δ' ἄγε χερσὶ ἐλὼν, κατὰ δ' ἐσθλιάσθαι ἀνδραγῶ  
 πάροκλος δ' ἐτέρωθεν ἀνείνυτο εἰπέ τε μῦθον·  
 ἔχ' ἔσθ' ἐστὶ γεραιὴ διοφειφίς, ὅδ' ἐμὲ πείσας  
 αὐδ' οἷος νεμεσσητὸς, ὃ, μὲν προΐηκε πνθ' ἐλθαι,  
 ὅν πιν' ἔσθ' ἄγας βιβλημένον ἀλλὰ καὶ αὐτὸς  
 γινώσκω· ὁρῶ δ' ἐμαχάονα ποιεμένα λαῶν·  
 νῦν δ' ἐ, ἔπος ἐρέων πολλὴν ἀγγαλὴν ἢ μ' ἀχιλλεῖ·  
 εὐδ' ἐσθ' οἷα γεραιὴ διοφειφίς, οἷος ἐκείν' ὃ  
 εἰσιὸς ἀνὴρ, τάχα κε καὶ ἀνείπον ἀπὸ ὁδοῦ·

# ΙΛΙΑΔΟΣ

σῆ δ' ἐμπαυροφθεις, ἐπεὶ ἴκτο ἔθνος ἱταίρων.  
 ὧς οἱ μὲν μωρῶν δέμας πυρὸς αὐθομένουςιο.  
 νίσσρα δ' ἐκ πολέμοιο φέρον νηλήϊαι ἵπποι  
 ἰδρῶσαι, ἦγον δὲ μαχολόνα ποιμένα λαῶν.  
 τὸν δ' ἐῖδ' ὧν, ἐνέησε ποδῶρκης δ' ἴος ἀχιλλεύς.  
 ἰσέηκε γὰρ ὧς πρὺμνῃ μεγακλήτει νηί,  
 εἰθρόων πόνον αἰπὺν ἰῶκά τε δακρυόεσσαν.  
 αἶψα δ' ἱταίρον ἔον παροκλήα προσέειπεν,  
 φθεγγόμενος παρὰ νηός. ὃ δ' ἐκλίσθηθεν ἀκούσας,  
 ἔκμολεν ἴθις ἄρηι, κακῶ δ' ἄρα διπύλεω ἀρχή.  
 τὸν πρότερόν προσέειπε μῆριτίη ἄλκιμος υἱός,  
 πηλὴ με κικλῆσκες ἀχιλλεῦ, τί δέ σε χριῶ ἑμῖο.  
 Τόν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς.  
 δῖτε μνοίπιάδῃ τῶμῶ κ' ἐχαισμένῃ θυμῷ,  
 νῦν ὅτῳ περὶ γούνατ' ἑμὲ σήσεσθαι ἀχαιούς  
 λιασμένους, χριῶ γ' ἰκάνετε ἕκ' ἐτ' ἀνέκτος.  
 ἀλλ' ἴθι νῦν πάροκλε δῖ' ἠφίλινέσθ' ἐρεῖτο,  
 ὃν πινὰ βῦρ' ἄγχι βεβλημένον ἐκ πολέμοιο.  
 ἦτοι μὲν τὰ γ' ὀπίωι μαχολόνοι πάντα ἔοικε  
 ἰὼν ἀσκληπιάδῃ. ἀτὰρ ἕκ' ἴδον ὄμματα φωτός,  
 ἵπποι γὰρ με πᾶρῆϊξαν πρόσσω μεμαυῖα.  
 Ὡς φάτο, πάροκλος δ' ἐφίλω ἐπιπείθεθ' ἱταίρῳ.  
 βῆ δ' ἔπειτα παρὰ τε κλισίας, καὶ νῆας ἀχαιῶν.  
 οἶδ' ὅτε δ' ἠκλίσιν νηληϊολέω ἀφίκοντο,  
 αὐτοὶ μὲν δ' ἀπέβησαν ὧς χθόνα πηλυδοθήσων.  
 ἵππους δ' οὐρυμέλιον θιράπων λυγρὸν χέρσεντο,  
 ἐξ ὀχλῶν. οἶδ' ἰδρῶ ἀπεψύχοντο χιτῶνων,  
 σάντε ποτὶ πνοιήν παρὰ θῖν' αἰλός. αὐτὲρ ἔπειτα  
 ἐς κλισίῳ ἐλθόντες. ὧς κλισμοῖσι καθίστην.  
 ἔϊσι δ' ἐνὶ χεῖρσι κυκλώϊ ὑπλόκαμος ἱσμυδῆ.

τὴν ἄρτι



νύσποντος ξυστοῖσι μέθην σάκκος αἶν' ἔποντο.  
 αἴας δ' ἄλλοτε μὲν μνησασκευθὸς θοοῦ βίος ἀλκῆς,  
 αὐτίς ὑποστρεφθεὶς, καὶ ἐρητύσσασκε φάλαγγας  
 βῶων ἱπποδάμων, ὅτε ἡ βωπάσκειο φεύγειν,  
 πάντας ἡ προέρχεται θοὰς ἥδ' ἡπας ὀδύειν.  
 αὐτὸς ἡ βῶων καὶ ἀχαιῶν θυὸν μισηγὺ  
 ἱσάμεν· τὰ δ' ὀδυρα θεασσάων ἀπὸ χειρῶν,  
 ἀλλὰ μὲν ἦν σάκεϊ μετ' ἄλλω πάλῳ ὄρμημα πρόσθε.  
 πολλὰ δ' ἡ καὶ μισηγὺ, πόρ' ὅθ' ἡ χροά λυκὸν ἱππαυρεῖν.  
 ἦν γαῖ' ἡ ἴσαντο λιλαϊόμενα χροὸς ἄσαι.  
 τό δ' ὥς δ' ὡς ἐνόησ' ὀυαίμονος ἀγλαὸς ἦος  
 δῖον πυλὸς πυκνοῖσι βιαζόμενον βιβέεισι.  
 εἴη ῥα παρ' αὐτῶν ἰών, καὶ ἀκόντισε δ' ὀφρὶ φαίνῃ.  
 καὶ βόλλε φαυσιώδ' ἡ ἀπιστάονα ποτιμένα λαῶν.  
 ἡ παρ' ὑπὸ πρᾶπίδων, εἴθαρ δ' ὑπὸ γούνατ' ἔλυσαν.  
 δῖον πυλὸς δ' ἡ πόρυσσε καὶ αἶνυσε τένχι' ἀπ' ὤμων.  
 τὸν δ' ὥς δ' ὡς ἐνόησεν ἀλέξονδρος θεοφειδῆς  
 τένχι' ἀπαινύμενον ἀπιστᾶον· αὐτίκα τόξον  
 εἴλκεν ἐπ' ὀδυρπύλῳ καὶ μιν βόλλε μηρὸν οἰσᾷ  
 δειξιόν· ἐκλάδῃ δ' ὀνόαξ ἐβάρυνε ἡ μηρόν.  
 ἀπ' δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάριζο κῆρ' ἀλεείνων.  
 ἦσαν δ' ἡ διαπρύσιον δῖναοῖσι γυγανῶς.  
 Ω φίλοι ἀργείων ἡγήεστε, ἡ δ' ἐμείδοντες.  
 εἴητ' ἡ λιλιχθίντες, καὶ ἀμύνετε πολλὰς ἡμᾶρ  
 αἴαντος βιβέεισι βιολίεται· ἡ δ' ἐφ' ἡ φημὴ  
 φεύξει δ' ἐκ πολέμοιο δυσχερὲς, ἀλλὰ μάλ' ἂν τῷ  
 ἴσασθ' ἂμφ' αἴαντα μέγαν τελαμώνιον ἦόν.  
 Ως ἔφατ' ὀδυρπύλῳ βιβλημένῳ· οἱ δ' ἡ παρ' αὐτῶν  
 πλησίον ἔσασσαν σάκεϊ ὥμοισι κλίνωντες.  
 ὀδυρατ' ἀναχόμενοι· τῶν δ' αὐτῶς ἦλυναν αἴας.

εἶδ' ἄν' πῶ χαλσοντο κελύβη δῖοι ἄχαιοί,  
 εἴ μὴ ἄλκιον ἄνδρα ἱλίνης πόσις ἠῦκόμοιο,  
 παῦσσαι ἀεικνύοντα μαχάονα ποιμένα λαῶν,  
 ἰδὲ φηγλώχιν βαλὼν κατὰ δειρὸν ὤμοιο.  
 Τῷ δ' ἄρα περίδ' ἔειπεν μίνα πνέοντος ἄχαιοί.  
 μή πως μιν πολέμοιο μετὰ κλινθέετος ἔλαιοιο.  
 αὐτίκα δ' ἰδὼ μνηστῆρας προσεφώνεε νέστορα δῖοιο.

Ως νέστορ νηληϊάδῃ μέγα κῦδος ἄχαιῶν.  
 ἄρ' οἱ σὼν ὀχέων ἐπιβήσαιο, παρ δ' εἰ, μάχ' ἄν  
 βαινέτω, εἰς νῆας ἧ τολχίς ἔχει μώνυχας ἵππους.  
 ἰπρὸς γὰρ ἀνὴρ πολλῶν ἀντάξιός ἑλλον,  
 ἰοῦσ' ἑκτάμην ἐπὶ τ' ἔπια φάρμακα πάσῃ.  
 Ως ἔφαθ'· εἶδ' ἀπίθασε γερῆτος ἱππότης νέστωρ.  
 αὐτίκα δ' ὦν ὀχέων ἐπιβήσαιο, παρ δ' εἰ μάχ' ἄν  
 βαινέτω ἀσκληπιοῦ υἱὸς ἀμύμονος ἱππῆρος.  
 μάστιγ' οὖν ἵππους, τῷ δ' ἔκ' ἄκοντε πιτέειω  
 νῆας ὧ γλαφυράς. τῇ γὰρ φίλον ἔπλετο θυμῷ.  
 κειβέρησιν δ' ἔπεισε δεινομένους ἐνόησεν  
 ἔκτορ παρβεβῶς, καὶ μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν.  
 ἔκτορ νῶϊ μὲν ἐνθάδ' ὁμιλίῳ μιν δαναοῖσιν,  
 ἔχραπ' ἡ πολέμοιο δυσσυχέος. οἱ δ' εἰ δὴ ἄλλοι  
 βῶες ὀρίνοντα ἐπιμῖξι ἵπποι τε, καὶ αὐτοί.  
 αἶας δ' εἰ κλονέει τελαμώνιος. εὖ δ' εἰ μιν ἔγνωρ.  
 οὐρὸν γὰρ ἀμφ' ὤμοισιν ἔχει σάκος. ἀλλὰ καὶ ἑμὶς  
 καὶ σ' ἵππους τε καὶ ἄρμα ἰθύνομεν, ἐνθα μάλιστα  
 ἵππῃς, πεζοῖσι, κακὴν εἰδὲ προβαλόντες  
 ἀμύμονος ὀλέκυσσι. βούδ' ἄσβεστος ὄρωρσεν.

Ως ἄρα φωνήσας ἵμασι καλλίφριχας ἵππους  
 μάλιστι ληυρῇ, τοῖ δ' εἰ πληγῆς αἰοντόν,  
 εἰ μὴ ἔφερον θοὸν ἄρμα μετὰ βῶας καὶ ἄχαιούς.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ῥῶϊς ἔπειθ' ὠσεῖτε διαφοροὶ θῶδ' ὄρισφιν,  
 ἄμφ' ἑλαφον κεραὸν βιβλημένον, ὃν τ' ἑβὰλ' ἀνὴρ  
 ἰὼ ἀπὸ νευρῆς, πν μέντ' ἔλυξε πόδεσσι  
 φνύων ἔφρ' αἶμα λιαρὸν καὶ γούνατ' ὀρώρῃ,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ τόν γε διαμωσεται ὠκὺς οἶσος,  
 ὠμοφάγοι μιν θῶδ' ἐν οὔρεσι διαρδολήσουσιν.  
 ἐν νέμῳ σκιερῷ ἐπὶ τε λῖν ἦρα γε δαίμων  
 σίντῳ, θῶδ' ἐν τῇ δίετρίαν, αὐτὰρ ὁ δολπῆς,  
 ὡς ῥά τ' ὅτ' ἄμφ' ὀδυσσεὺς δαίφρονα τοικιλαμῆτιν,  
 ῥῶδ' ἔπειθ' πολλοί τε καὶ ἄλκιμοι, αὐτὰρ ὅγ' ἕρως  
 αἰσῶν ὡς ἔγχε, ἀμύνει νηλεὺς ἥμαρ.  
 αἶας δ' ἰγυρῶν ἦλθε φέρων σολυγὸς ἥντε πύργου.  
 εἴη δ' ἡ παρὶξ. ῥῶϊς δ' ἐδίεβρεσαν ἄλλυδις ἄλλῃ.  
 ἦσαν πν μῆμ' ἐλατ' ἀρήϊος ἔξατ' ὁμίλῳ  
 χάρης ἔχον. εἴως θεράπων γε δὸν ἤλασεν ἵππυς.  
 αἶας δ' ῥῶϊσιν ἐπαλμῶν ἔλκε δόρυ κλον  
 πριαμίδῳ νόθον ἔχον ἔπητα δ' ἄνδρ' οὐτ' αἶ.  
 οὔτα δ' ἐλύσανδρον, καὶ πύραθρον, ἥδ' ἐ πυλωρτίῳ.  
 ὥς δ' ὁπότε πλήθων ποταμὸς πεδίονδε κἀτάσσει  
 χιμάρρεος κατ' ὄρισφιν ὁπαζόμενῳ δ' ἰὸς ὁμβρῶ.  
 πολλὰς δ' ἐφύς ἀβελίας, πολλὰς δ' ἐτε πνύκας  
 ἐσφίρειτ' ἡ, πολλὸν δ' ἐτ' ἀφυσγε πν ἐς ἄλλα βάλλει.  
 ὥς ἐφίπε κλονέων πεδίον τό τε φαίδιμος αἶας,  
 διαῖξον ἵππυς τε, καὶ αὐέρας, ἔδ' ἐπ' ἔκτορ  
 πνύθειτ', ἐπεί ῥα μάχης ἐπ' αἰετὶρὰ μωρνατο πάσσης.  
 ὄχθας παρ ποταμοῖο σκαμνέων, τῇ ῥα μάλιστα  
 ἐν φῶν πίπτε κάρῳα, βοή δ' ἄσβεστος ὀρώρει,  
 νίσσά τ' ἄμφ' ἐμύχαν, καὶ ἀρήϊον ἠδ' οὐμῶν.  
 ἔκτορ μ' ἐμὲ τῶν ὁμίλει μέρμερα ῥέζων,  
 ἔγχεϊ δ' ἰπποσύνη τε, νύων δ' ἀλάπαξ φάλαγγας.  
ἔδ' ἔσθ



# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ

ὣς δ' ὅτε κάπριον ἀμφὶ κύνεσσιν ἀλοομένοισι αἰετοῖς  
 σκάνονται· ὁ δ' ἐπ' αἰετοῖς βαθείης ἐκ ξυλόχοιο  
 θήρων λυκὸν ὀδόντα μετὰ γναμπῆσιν ἔειπεν,  
 ἀμφὶ δ' ἐπ' αἰετοῖς· ὑπαὶ δ' ἐπεὶ κόμπους ὀδόντα  
 γίνετα· οἱ δ' ἐμὲν σὺν ἄφαρ δ' ἄνόν περ ἔειπεν,  
 ὦ ῥά τ' ὅτ' ἀμφ' ὀδυσῆα δι' φίλων ἐστυόντων  
 ῥῶϊς, ὃ δ' ἐπὶ πρῶτον μὲν ἀμύμονα δ' ἡιοπίτην,  
 οὐτάσων ὧμον ὑπὲρθε μετὰ λυκῶν ὅξιν δ' ἐρί·  
 αὐτὰρ ἔπειτα δ' ὄωνα, καὶ ἔννομον ἔξενάειξεν·  
 χερσὶ δ' ἄμαντα δ' ἔπειτα κατ' ἵππων αἶξαντα,  
 δ' ἐρί κατὰ πρότμησιν ὑπ' ἀσπίδος ὀμφαλόεσσης  
 νύξεν, ὃ δ' ἐν κενήσιν πεσὼν, ἔλεγε δ' αὖ ἄλλος ὦ·  
 ἐνὶ μ' ἔασ'· ὃ δ' ὅρ' ἵππασίδην χάροπ' οὐτάσιν δ' ἐρί·  
 αὐκασίγνην δ' ἡγήνεσθ' σῶχαι·  
 ἔω δ' ἐπαλεξήσων σῶχας κίον ἰσόθεος φῶς,  
 σὴ δ' ἐμὲν μάλ' ἐγγὺς ἴδων, καί μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν·  
 Ωδ' ὀδυσσεύς τε λυκάων δ' ὅλων δ' ἐπ' ἡδ' ἐπὶ νόοιο,  
 σήμερον ἢ ὀδίοισιν ἐπεύξεαι ἵππασίδῃσι,  
 βρώδ' ἀνδρὶ κατακτείνας καὶ τεύχε' ἀπὸ ὕρας,  
 ἢ κεν ἐμῷ ὑπὸ δ' ἐρί τυπὴς ἀπὸ θυμὸν ὀλέσῃς·  
 Ως εἰπὼν, οὕτως κατ' ἀσπίδα πάντοσε ἴσθην·  
 στήθε' μὲν ἀσπίδος ἦλθε φαιήης ὀβριμονὸν ἔγχος,  
 καὶ στήθε' ὀβριμῶς πολυδαίδαλον ἠρήρετο·  
 πάντα δ' ἀπὸ πλευρῶν χροῖα ἔρραθεν, ὅδ' ἐπ' ἔασε  
 παλλὰς ἀθλοαῖν μιχθήμεναι ἐκασίφωτος,  
 γινῶ δ' ὀδυσσεύς, ὃ δ' ἐπ' ἐβίβας κατακτείνειν ἤλθε·  
 ἀπ' δ' ἀναχάρησας σῶχον πρὸς μῦθον ἔειπεν·  
 ἄδιδ' ἢ μολα δ' ἔσσε κίχωνται αἰπὺς ὀλεθρῶ·  
 ὅτ' ἐμὲν ἐμ' ἐπαυσας ὡς ῥῶϊσι μολχεῖναι,  
 οἱ δ' ἐγὼ ἐπ' ἀσπίδι φημι φόνον καὶ κῆρα μέλαιναν,  
 ὅτ' ἐμ' ἐπ' ἀσπίδι φημι φόνον καὶ κῆρα μέλαιναν,





ἔκτωρ δ' ὦκ' ἀπέλιθρον ἀνέδραμε, μίκε δ' ὁμίλῳ.  
 σῆ δ' ἔγνυξ ἐειπὼν, καὶ εἰρίσας χερὶ παχείῃ  
 γαίης ἀμφὶ δ' ὅσπερ κελαινὴ νύξ ἐκάλυψεν.  
 ὄφρα δ' τυδείδης μετὰ δούρατ' ὦχιτ' ἱρωήν,  
 τῆλε στήθεσσι προμάχων, ὅθι οἱ καταίσας γαίης,  
 τόφρ' ἔκτωρ ἀμπνυθ, καὶ ἄψ' ἐς δίφρον ὀρούσας.  
 ἱξέλασ' ἐς πληθύν, καὶ ἀλδύας κῆρα μέλαιναν.  
 δαρὶδ' ἱπαῖσων προσέφη κρατερὸς διομήδης.  
 Ἔξ' ἄν νῦν ἔφυγας θάνατον κύον, ἢ τί τοι ἄγχι  
 ἦλθε κακὸν, νῦν ἄν τί σ' ἐρύσας φοῖβος ἀπόλλων,  
 ὦ μέλλεις εὐχεσθαι ἰών, ἐς δῖον ἀκόντων.  
 ἦ θήρ σ' ἔξανύω γε καὶ ὕστερον ἀνελδοθήσας,  
 αἶψα πρὶ καὶ ἔμοιγε θειῶν ἐπιτάγῃ οὐδὲν ἔστι.  
 νῦν ἄν τὸς ἄλλους ἐπιείθῃμαι ὅρκε κίχιδά,  
 ἦ καὶ παιονίδῳ δυνεικλυτὸν ἱξανάειξεν.  
 οὐτάρ ἀλείξω δρος ἑλένης πόσις ἠὲ κόμοιο,  
 τυδείδῃ ἐπὶ τόξῳ πταίνῃσιν ποιεῖν λαῶν,  
 σῆλῃ κυκλιμένος ἀνδροκμήτῳ ἐπὶ τύμβῳ,  
 ἴλλῃ δαρδανίδαο, παλαιῶν δημογέροντ' ὅς.  
 ὦ τοι ὁ μῦθ' ὠρήσας ἀγασσέμεν ἰφθίμοιο,  
 αἶνυτ' ἀπὸ σῆθισφι ποικαίολεν. ἀσπίδα τ' ὦμων  
 καὶ κόρυθα βειαρὴν. ὁ δ' ἐπὶ τόξῳ πῆχυν ὤνεϊλκε  
 καὶ βάλεσθ. οὐδ' ἄρα μιν ἄλιον βέλος ἐκφυγε χαρόεις,  
 παρσὸν διξίτεροιο ποσὶς. στήθεσσι δ' ἀμπνέει ἰὸς  
 ἐν γαίῃ κατέπηκτο, ὁ δ' ἐμάλ' αἰδὼν γέλασας,  
 ἐκ λόχῳ ἀμπήδησε, καὶ εὐχόμενος ἔπος ἔνδρα.  
 Βέβληται οὐδ' ἄλιον βέλος ἐκφυγεν, ὥς ὄφελόν τοι  
 νείατόν ἐς κενεῶνα βαλὼν ἐκ θυμὸν ἑλιδαι.  
 οὕτω κεν καὶ ῥῶϊς ἀνέπνυσσεν κακότητ' ὅς.  
 οἳ τί σι πεφρίσασι, λίποιθ' ὡς μηκρότερος αἴτης.

[illegible]

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔς ἐπ' ἀχαιοῖσι σόλῃ φῶκε μεγαθύμῃ  
 ἔκτορ πριαμίδης, βροτοῖσι γὰρ ἴσος ἄρῃ.  
 αὐτὸς δ' ἐν πρῶτοις μέγα φρονέων ἐβόηκε.  
 ἔνδ' ἔπι σ' ὑσμίνῃ ὑπεραίῳ ἴσος ἄλλῃ,  
 ὃ τι καθαλλομένη ἰοσσεία πόντον ὀρίνη.  
 ἔνθα τίνα προῶτον, τίνα δ' ὕστατον ἔξω ἀείξω  
 ἔκτορ πριαμίδης, ὅτι οἱ ἰδὺς κῦδος ἰδῶκαυ.  
 ἀσπίτον μὲν πρῶτα, καὶ αὐτόνοον, καὶ ὀπίτῳ,  
 καὶ δόλῃπα κλυτὰ δῖω, καὶ ὀφίλιπον, ἥ δ' ἀγέλαον,  
 αἴσσυτον ῥ' ἄρορτι, καὶ ἰπκόνοον μῆμε χάρμῳ.  
 τοὺς, ἄρ' ὅγ' ἤγαμόνας δῖαν ἄν' ἔλαυ. αὐτὰρ ἔπειτα  
 πληθύν, ὥς ὁπότε ζῆφυρος νέφια σφελίξῃ,  
 ἀργέεσσι τότοιο βαθείῃ λαίλαπι τυπῶν,  
 πολλὸν γ' ὀφεικῦμα κυλίνδεται, ὑψόσῃ δ' ἄχνη  
 σκιδναται ἐξ ἀνέμοιο πολυπλάγκτοιο ἰωῆς.  
 ὥς ἄρα πυκνὰ καρήαθ', ὅφ' ἔκτορ δάμνατο λαῶν.  
 ἔνθα κε λοιγὸς ἔλω, καὶ ἀμήχανα ἔργα γένοντο.  
 καὶ νύκων ἐρνήσας πέτρῃ φύγοντο δὲ ἀχαιοί,  
 εἰ μὴ τυδείδῃ διομήδῃ κέκλετ' ὀδυσαδύς.  
 Τυδείδῃ τὴ παθόντι λελάσμεθα θούριδος ἀλκῆς.  
 ἀλλ' ἄγε δούρο πέπον, παρ' ἐμ' ἵστατο δὴ γὰρ ἔλιγχε  
 ἔσεται ἔκον νῆας ἔλη κερυθαίοις ἔκτορ.  
 Τόρ δ' ἀπαμειβόμενος, προσέφη κρατερὸς διομήδης.  
 ἧτοι γὰρ μῆνῳ καὶ τλήθῃμαι. ἀλλὰ μίνωθα  
 ἢ μίωρ ἔσεται ἦδος, ἐπὶ νιφελιγερταῖς ἰούσι.  
 φῶσίῃ δὴ ἐθέλει δύναι κράτ' ἢ ἑπὶ ἡμῖν.  
 ἢ καὶ θυμὸν ἄσπετον μὲν ἄφ' ἰππῶν ὥσε χαμᾶϊ,  
 δαυρὶ βαλὼν κατὰ μαῖον ἀειπερόν. αὐτὰρ ὀδυσαδύς,  
 αὐτόθιον θεράποντα μολίονα τοῖο ἀνακτ' ὄν.  
 τὺς μὲν ἔπειτ' ἵκσσαν, ἐπὶ πολέμῳ ἀπὶ πᾶσσαν.

αὐτὰρ δ' ἔπειτα ἄλλων ἐπιπρωϊῶ εἴχας ἀνδρῶν  
 ἔρχεϊτ' ἀορί τι, μυχάλοισί τι χερμαδοίοισιν,  
 ὄφρ' αὖ δ' αἰὲς ἐπὶ θέρμδον ἀνύνοθον ἔξ ὠτ' ἄλῃς.  
 αὐτὰρ ἐπὶ τὸ μῆν' ἔλκας ἐτέρσας, παύσασθαι δ' αἶμα,  
 ὄξειαι δ' δύναι δύνον μὲν ὄφρ' αἰείδαο.  
 ὥς δ' ὅττω δ' ὀδύνησσαν ἔχῃ βέλος ὄξυ γυαλῖκα  
 ἔριμύ, τό, τι προΐεϊσι μογροσέοις ἐλθέθῃαι  
 ἔρης θυγατέρις πικρὰς ὠδ' ἴνας ἔχουσαι,  
 ὥς ὄξει' ὠδ' ἴνας δύνον μὲν ὄφρ' αἰείδαο.  
 ἐς δὲ φροῖν δ' ἀνόρυσσε καὶ ἠνίοχῳ ἐπέτελλε,  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἱλαυνέμεν. ἤχθ' ὅτ' ἄρ' κῆρ  
 ἦύσε δὲ διαπύσιον δ' ὀσσοῖσι γυζωνῶς.

**Ω** φίλοι ἀργαίων ἡγ' ἡέρετε, ἡδ' ἐμείδοντες.  
 ἡμεῖς μὲν νῦν νηυσὶν ἀμύνετε ποντοπόροισι  
 φύλακιν ἀργαλῆων, ἐπὶ οὐκ ἐμὲ μητίετα βούε  
 ἴασε φάσαι παυνημείον πτολιμίσιν.  
**Ω**ς ἔφαθ' ἠνίοχος δ' ἵμασε καλλιτέχας ἵππας,  
 νῆας δ' ἡ γλαφυράς. τῷ δ' οὐκ ἄκοντε πέτεσθαι.  
 ἀφροῖν δ' εὐθεία. φαίνοντο δ' ἐνέριθε κενίη,  
 τεύρομυρον βασιλῆα μάχῃς ἀπάνδουθε φέροντες.  
 ἔκτωρ δ' ὥς ἐνόησ' ἀγαμέμνονα νόσφι κιόντα,  
 φασί τι καὶ λυκίοισιν ἐκείκλ' ὅτ' μακρὸν αὖσας.

**Τ**ρῶες καὶ λυκίοις καὶ δολιχότατοι ἀρχιμαχηταί,  
 ἄνδρες ἐς ἐφίλοι. μνησθῆτε δ' ἐθούειδος ἀλκῆς.  
 οἷχ' ἄνῃρ ἄετος, ἐμοὶ δ' ἐμὲν εὖχος ἐδ' ὅκε  
 βούε κρονίδης, ἀλλ' ἰθὺς ἱλαυνέτε μώνυχας ἵππας  
 ἰφθίμων δ' ὀσσοῦν, ἵν' ὑπέρτερον εὖχος ἀρῇαι.

**Ω**ς ἐπών, ὥρῃαι μὲν ὄφρ' καὶ θυμὸν ἐκώσσει.  
 ὥς δ' ὅτε τῷ πῖς θῆρητῆρ κύνας ἀργιόδοντας  
 σὺν ἡπ' ἀργότερα σὺν κἀκέρῳ, ἡ δὲ λείοντι.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἱφιδάμας δ' ἐκατὰ ῥώνω. θάρηκας ἐνερθε  
 νύξ' ἐπὶ δ' αὖτος ἔρρισε βαρεῖη χερὶ πιθήσας.  
 οὐδ' ἔτορε ῥωσῆρα ποταίολεν· ἀλλὰ πολὺ πρὶν  
 ἄρ' ὕρω ἀνθ' ἑμὲν μολοῖτο· ὥς ἔραπ' αὖ χυμῷ.  
 καὶ τὴν χερὶ λαβὼν δὶρυκρείων ἀγαμέμνων  
 ἔλκε' ὅτ' ἰμμεαὶς δ' τε λῖς· ἐκ δ' ἄρα χερὸς  
 ἀπάσσετο· τόν δ' ἄορα πληγῇ αὖ χ' ἵνα· λῦσε δ' ἐγὺν.  
 ὥς δ' ὅ μιν δυνθὶ πισῶν, κρημύσσετο χάλκεον ὕπνον,  
 οἰκτρός, ἀπο μνηστῆς ἀλόχ' ἀποτῆρ' ἀρήγων  
 κτειδῆς, ἧς οὐδ' ἔχειν ἴδω. πολλὰ δ' ἔδωκε.  
 πρὸ δ' ἐκατόν βοῦς δῶκεν, ἔπειτα δ' ἐχίλ' ὑπέρθε  
 αἶας ὅ μιν καὶ ὅς, τὰ δ' ἄσπυτα ποτιμαίνοντο.  
 δὴ τότε γ' ἀρείδης ἀγαμέμνων ἐξωάειξε.  
 βῆ δ' ἐφ' ἑρῶν αὖ· ὁμιλον ἀχαιῶν τοῖς χ' ἀκαλῶ.  
 τόν δ' ὥς δ' ἴω ἐνόησε κόων ἀειδείκτος ἀνδρῶν,  
 πρὸς ἐν γ' ἀνδρῶν ἀνδρῶν, κρατερὸν ῥά· ἐπὶ πένθος  
 ὀφθαλμοῖς ἐκάλυψε, κασιγνήτοιο πισόντ'·  
 σῆδ' ὀβριὰς σὺν δ' ἐρὶ λαθῶν ἀγαμέμνονα δῖον.  
 νύξ' δ' ἐμιν κατὰ χεῖρα μίστω, ἀγκῶνος ἐνερθεν.  
 ἀνδρῶν δ' ἐδῖχε φασγάν' ὀβριὰς ἀκακῆ.  
 ῥίγησεν δ' ἄρ' ἔπειτα ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἀλλ' οὐδ' ὥς ἀπέληγε μάχης, ἦ δ' ἐπὶ πολέμοιο.  
 ἔλλ' ἐπὶ ῥωσῆς κόωνι ἔχων ἀνιμῶν φῆς ἔχου.  
 ἦ τοι ὅτ' ἱφιδάμασσι κασιγνήτῳ, καὶ ὀπαρῶν,  
 ἔλκε ποδὸς μεμαῶς, καὶ αὐτὴ πάντας ἀρίστους.  
 τόν δ' ἔλκεν τ' ἀν' ὁμιλον ὑπ' ἀσπίδ'· ὁμφαλῶς αἶμα  
 οὐτῆσε ξυστῶ χελκῆρῃ, λῦσε δ' ἐγὺν.  
 τοιοῦτον δ' ἐπ' ἱφιδάμασιν, κάρη ἀπέκτεψε παραστάς.  
 ἐνθ' ἀντήνορ· ὅς ἐκ ὑπ' ἀρείδῃ βασιλῆϊ  
 πότμον ἀπαπλῶσεν αὐτόν, ἔδυν δὲ μοῖρα αὐτῷ· ἴστω.

πῶς ὅς ὑπόσκει μάχης, τὸν δ' ἄλλον λαὸν ἐνδύχθι  
μάρνασθαι δ' ἡίοισι κατὰ κρατερὴν ὕσμι' ἴω.

αὐτὰρ ἐπὶ κ' ἢ δὴρὶ τυπῆς, ἢ βλήμῃσι δ' ἴδω.

εἰς ἵππους ἄλεται τότε τοι κράτ' ἐγγυαλίξῃ

κτείνεσθαι ἐσὸς κενὴς εὐαρίλμυς ἀφίκηται.

δύητ' ἡέλιος καὶ ἐπὶ κνέφας ἱερόν' ἔλθοι.

μῦν ἄρ' ὡς εἰπῶς, ἀπέβη πόδας ὠκεία ἵεσι.

ἔκτορ δ' ἐξ ὀχέων σὺν τούχισιν ἄλτο χαμᾶϊ.

πάλλων δ' ὄξια δ' ἔρα κατὰ στρατὸν ὥχθη πάντῃ

ῥήνων μαχίσσασθαι ἐγχεῖν ὃ φύλασιν αἰνῆν.

οἷδ' ἐλαλίχθησαν καὶ ἰναυτίει ἔσαν ἀχαιῶν.

ἄργεῖοι δ' ἐτίρωθεν ἱερτύνοιο φοδλαγγας.

ἄρτύνθη ὃ μάχῃ· σᾶνδ' ὀντίοι· ἰνδ' ἀγαμέμνων.

πρῶτ' ὅρυσ' ἐθίλον ὃ πολὺ προμάχεσθαι ἀπάντῳ.

ἴσασθε νῦν μοι μέσσαι ὀλύμπια δώματ' ἐχυσσαι.

ὅς τις δ' ἡ πρῶτ' ἀγαμέμνον' ὠντίος ἦλθεν.

ἢ αὐτῶν βῶων ἢ κλέτῳ ἐπικεύρωι.

ἱφιδάμας ἀντιωορίδης ἡέ τις μέγας τις.

ὅς τ' ἀφ' ἑνὲς ἐλάκῃ ἐελώλακι μῆτιρ μήλων.

κισθὺς τόρ' ἔθρεψ' ὀύμοις ἐνι τυτθῶν ἰόντας.

μυροπάτωρ ὅς τίκτη θιανῶ καλλιπάρηον.

αὐτὰρ ἐπὶ ῥ' ἔβης ἐρικυδέ' ἰκθυσ μέρον.

αὐτῇ μιν κατέρυκε· δίδυ δ' ὄγα θυγατέρα ἦν.

γῆμας δ' ἐκ θαλάμοιο μετὰ κλῆος ἵκει ἀχαιῶν.

συνδνοχαίδια νηυσὶ κερωνίσιν, αἳ οἱ ἵποντο.

πῶς μῦν, ἴπῃτ' ἐν περκώπῃ, λίπε νῆας ἱίστα.

αὐτὰρ ὃ πέσος ἰών, εἰς Ἴλιον ἤληθ' ὕθη.

ὅς ῥα τὸτ' ἀφείδω ἀγαμέμνον' ὠντίος ἦλθεν.

οἷδ' ὅτε δὴ ὀχέδον ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες.

ἄφρίδης μῦν ἀμαρτε παρσὶ δ' εἰ ἐφάπτετ' ἐγχο.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

πᾶσαι· τῇ δ' ἔ' ἦ ἀαφαίνεται αἶψός· ὀλίβρις,  
 τῆς δ' ἔξ' αὐχὲν ἔαξ· λαβὼν κρατεροῖσιν ὀδυσσῆ  
 πρῶτον· ἐπὶ τα δ' εἴματα, καὶ ἔλατα πάντα λαφύσας,  
 οἷς τοὺς ἀφείδης ἔφιπε κρείων ἀγαμέμνων,  
 αἶψα ἀποκτείνων τὸν ὀπίσσω, οἷδ' ἐφίβοιτο.  
 πολλοὶ δ' ἤρωες τε καὶ ὀπῆιοι ἔκπεθον ἵππων  
 ἀφείδω ὑπὸ χερσὶ· περὶ πρὸ γὰρ ἔγχεϊ θυῶν.  
 ἀλλ' ὅτι δ' ἡ τὰ χ' ἔμμελλαν ὑπὸ πτόλιν αἶψυ τε τιλχε  
 ἵξειναι, τότε δ' ἡ ῥα πατὴρ ἀνδρῶν τε θιῶν τε  
 ἴδης ἐν κρυφῇσι καθ' ἴφρο πιδήσσης,  
 οὐρανόθεν καταβάς· ἔχε δ' εἰροπῆν μετὰ χερσίν·  
 ἵεν δ' ὥρων χρυσόπτερον ἀγγελίσσαν.  
 Βάσκι' ἴθ' ἴει ταχιῖα· τὸν ἔκτοε μῦθον ἔνισσι.  
 ὅφρ' ἄρ' ἔμιν καὶ ὄρᾳ ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν,  
 θυῖον τ' ἐν προμέχοισιν ἐναίροντα εἴχας ἀνδρῶν,  
 τόφρ' ἀναχωρεῖσθαι, τὸν δ' ἄλλον λαὸν ἀπώχθαι,  
 μάρνασθαι δ' ἡίοισι κατὰ κρατερὴν ὕσμίνην.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ἢ δ' ὕρ' τυπείε ἢ βλήμην· ἴφρ.  
 οἷς ἵππευ ἀλλοι, τότε δ' ἡ κρείτος ἐγγυαλίξθαι,  
 κτείνων εἰσέκε νῆας ἐὺσέλμυς ἀφίκηται,  
 δ' ὕμ' ἡ ἑλίοι, καὶ ἐπὶ κνέφας ἱερὸν ἔλθοι.  
 Ως ἔφατ'· οὐδ' ἀπίθυσσε ποδὶν ἐν μ' ὥκεια ἵεναι.  
 βῆ δ' ἔκαστ' ἰδαιῶν ὀρέων οἷς ἴλιον ἱρήν.  
 εὐρ' ἡδὲν πριάμοιο δαΐφρονος ἔκτορα δῖον,  
 ἔσχετο δ' ἐνδ' ἵπποισι καὶ ἄρμασι καλλητοῖσιν·  
 ἀρχοῦ δ' ἰσταμένη, προσέφη πόδας ὥκεια ἵεναι.  
 ἔκτορ' ἡδὲ πριάμοιο δ' ἡ μὴ πρὸν ἀτάλαντε,  
 ἴδους μὲν πατὴρ προέηκε τείν' τάδε μὲν ἔειπεν·  
 ὅφρ' ἄρ' ἔμιν καὶ ὄρᾳ ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν,  
 θύοντ' ἐν προμέχοισιν ἐναίροντα εἴχας ἀνδρῶν,

ἔκρυπτο βαλὼν πρὸς σῆθος, ὅδ' ὕπνιος οὐδὲν ἰρεῖσθαι.  
 ἰππολόχως δ' ἀπόρυσσε, τόν, ἄν χαμαὶ ἐξουάειξαι  
 χεῖρας ἀπὸ ξίφει τμήξας, ἀπὸ τ' αὖ χεῖνα κόπας.  
 ὅλμονδ' ὡς, ἔαυτε κυλίνδεσθαι δ' ὁμίλῃ.  
 τοὺς μὲν, ἑὰς· ὅδ' ὅθι πλεῖσκε κλοῖον ὄφρα λαγγαίῃ  
 τῇ ῥ' ἐνόρησ', ἅμα δ' ἄλλοι δύνῃμιδες ἀχαιοί.  
 περὶοὶ μὲν περὶ οὐρανὸν φέροντας ἀνὰ κρητὴν,  
 ἰππῆας δ' ἰππῆας· ὑπὸ δ' ἐσφισίῃ ὥρῃ κενὴν  
 ἐκ πεδίου, τὴν ὥρσων ἐρί-δυσποι πόδες ἰππων  
 χαλκῷ δ' ἰοῦντο. ἀτὰρ κρείων ἀγαμέμνων,  
 αἰὲν ἀποκτείνων ἐπεὶ ἀργείοισι κλοῦσαν.  
 ὥς δ' ὅτε πῦρ αἰὲν ἔδηλ' ἐν ἀξύνω ἐμπέσῃ ὕλη,  
 πάντῃ τ' ἐλυφώων ἀνέμῳ φέρεται, οἳ δ' ἐτεθάμνε  
 πρόρρηθ' ἐπὶ πῆυσιν ἐπερὶ μῆνοι πυρὸς ὁρμῇ,  
 ὥς ἄρ' ὑπ' ἀρείδῃ ἀγαμέμνονι πύλῃ κωρύκῃ  
 φάων φερόντων, πολλοὶ δ' ἐλευχέων ἰπποί,  
 κενὴ δ' ὅχια κροτάλῃσιν ἀνὰ πτολίεθρον γυφύρας,  
 ἠνιόχως ποθέοντες ἀμύμονας· οἳ δ' ἐπὶ γαίῃ  
 κείῳ, γυπασίῃ πολυφίλῃ, ἢ ἀλόχοισιν.  
 ἐκθρα δ' ἐκ βελίων ὕπαγμα ἴδους, ἐκ τε κενῆς  
 ἐκ τ' ἀνδροκτασίης, ἐκ τ' αἵματός, ἐκ τε κυδοιμῶ.  
 ἀρείδης δ' ἐπὶ σφιδανὸν δ' αὐαοῖσι κλοῦσαν.  
 οἳ δ' ἐπ' ἴλῃ σῆμα παλαιὸν δαερδανίδεο,  
 μέσσην καπιδίον παρ' εἰνεὸν ἐσθλόν.  
 ἰεῖμνοι πόλεως ὅδ' ἐκεκληγὼς ἐπεὶ αἰὲν  
 ἀρείδης, λυθρὰ δ' ἐπαλάσσει χεῖρας ἀσπῆς.  
 ἀλλ' ὅτι δ' ἡ σκαυὰς τε πύλας καὶ φηγὸν ἴκοντο,  
 ἐνθα ἄρα δ' ἡ ἵστατο καὶ ἀλλήλους ἀνέμιμονον.  
 οἳ δ' ἐπὶ καμμέθρ' ἐπιδίον φερόντες βόας ὄσας  
 ἄς τε λίαν ἐφόβησε μολῶν ἐν νυκτὶ ἀμολγῶ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ρηϊδίως ξωίᾳξε λαβῶν κρατιροῖσιν ὀδῆσιν  
 ἰλθῶν ἐς δύνῃν, ἀπαλόν τε σφ' ἦτορ ἀπύρρα.  
 ὣδ' εἰπὲρ τε τύχῃσι μάλα χεῖδ' οὐ δύναται σφῆ  
 χραυσμῆιν, αὐτὴν γάρ μιν ὑπὸ βέμῃ σάνος ἰκάνει  
 καρπαλίμως δ' ἦξι σῆξ' ἀνυμὰ πυκνὰ καὶ ὕλῃ  
 ἀνδύδυσ' ἰδρῶστα κραταῦς θηρὸς ὕφ' ὀρμῆς,  
 ὡς ἄρα τοῖς, οὐ πῖς δύνατο χραυσμῆσαι ὄλιθρον  
 βῶων, ἀλλὰ καὶ αὐτὸ ὑπ' ἀργείοισι φέβοντο.  
 αὐτὰρ ὃ, πείσσαι θέρντε, καὶ ἰππολόχοι μῆνι χάρμῃ,  
 ἦέας ἀνυμῶχοιο δαΐφρονος, ὅς ῥα μάλισα  
 χρυσὸν ἀλεξάνδροιο διδρυμένον ἀγλαὰ δῶρα  
 οὐκ ἴαχ' ἐλέγῃ δὲ μῆραι ξανθῶ μῆνι λῶω,  
 τῷ περ δ' ἡ δῦο παῖδε λάβε κρείων ἀγαμέμνων,  
 εἰρ' ἐνὶ δίφρῳ ἰόντας, ὁ μὲν δ' ἔχον ὠκίαι ἵππους.  
 ἐκ γάρ σφιν χερῶν φύρον ἡνία σιγαλόωσα.  
 τῷ δ' ἐκκυκλήτην. ὃ δ' ἰνὸν πόρῳ ὤρτο λῆων ὡς  
 ἀρείδης, τῷ δ' αὐτ' ἐκ δίφρου γναΐδῃ.  
 ἰώρῃ ἀρείος ἦε σὺ δ' ἄξια δέξαι ἀποινα,  
 πολλὰ δ' ἐν ἀφνειῷ πατρὸς κειμήλια κίτται,  
 χαλκὸς τε χρυσὸς τε, πολὺ κμῆτος τε σίδηρος,  
 τῶν κέρτοι χαρίσασθαι πατὴρ ἀπερείσι ἀποιναῖ  
 εἰ νῶϊ ἴωδς πιπύθοιτ' ἐπὶ νηυσὶν ἀχραῶν.

Ως τῷ γὰρ κλαίοντε, προσανδύητ' ἑὸν βασιλῆα  
 μελιχίοις ἐπέεσσιν, ἀμείλικτον δ' ὅπ' ἀκυσσά,  
 εἰ μὴ δ' ἡ ἀνυμῶχοιο δαΐφρονος ἦέας ἐσόν,  
 ὅς ποτ' ἐνὶ βῶων ἀγορῇ μῆνι λαὸν ἀνῶρα  
 ἀγγιγίῃ ἰλθόντα σὺν ἀντιθίῳ ὀδύσσει  
 ἀνθίστασθαι, μὴ δ' ἐξέμῃ ἀφ' ἑσέως ἀχαιούς.  
 νῦν μὴ δ' ἡ τῷ πατρὸς ἀεκία τίσεται λῶβῃ.  
 ἦ καὶ πείσσαι θέρν μὴ ἀφ' ἡπύων ὥς χαμάζει,



ὄφρα μὲν ὡς ἦν καὶ αἰέξοιτο ἱερὴν ἡμᾶρ,  
 τόφρα μάλ' ἀμφοτέρων βίλῃ ἤπλητο· πίπῃ δ' ἡλαίς.  
 ἦμος δ' ἀφ' ὧτό μ' ἄνθρωπος ἐπὶ πλάσιον ὄδον,  
 οὐρεῖτο ἐν βύσσινον ἐπὶ τ' ἐκορίσας χεῖρας  
 τὰ μιν δ' ἐνδρα πακρά, ἥδος τέ μιν ἴκειτο θυμόν,  
 σίτη τε γλυκεροῖο περὶ φρένας ἱμῖρος αἰρεῖ,  
 τῇ μ' ὅσῃ ἀρετῇ δ' ὁμοῖοι ῥήξαντο φάλαγγας  
 κικλόμενοι ὑπὲρ τοῖσι κατὰ σίχας ἐκ δ' ἀγαμέμνων  
 σπῆτος ὕρυσ'· ἔλεδ' ἄνδρα βιήτορα ποιεμένα λαῶν  
 αὐτόν· ἐπειτα δ' ἰταῖρον οἴληα πλῆξιππον.  
 ἦτοι ὅγ' ἐξ ἵππων κατιπάλμῳ ὥπτος ἔσθ.  
 τὸν δ' ἰθὺς μεμαῶτα μετώπιον ὄξεϊ θυρῇ  
 νύξου δ' ἐφάνη δόρυ δι' ἄλγεα χαλκοβάρεα.  
 ἀλλὰ δ' ἰαυτῆς ἦλθε καὶ ὅς τιν' ἐγκέφαλός δέ,  
 ἄνδρ' ἄπας πεπάλαιτο, δάμασσε δέ μιν μεμαῶτα.  
 καὶ τὸς μὲν λίπεν ἀνθὶ ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 εὐθείσι παμφαίνοντας, ἐπὶ περὶ δ' οὐς χιτῶνας.  
 αὐτὰρ ὁ βῆ ῥ' ἰσόρ τε, καὶ ἀντιφονεῖναρ ἰξων,  
 ὅτε δ' ὡς πριάμοιο νόθον καὶ γυνήσιον ἄμφω,  
 εἴν' ἐνὶ δίφρῳ ἰόντας· ὁ μὲν νόθος ἡνιόχευεν.  
 ἀντιφονεῖνα, παρίεσσε περικλυτὸς ὕποτ' ἀχιλλεύς  
 ἰδὼς ἐν κνημοῖσι δίδῃ μόχοισι λυγροῖσι  
 ποιμαίνοντ', ἐπ' οἷσι λαδῶν καὶ ἔλυσσιν ἀποίνων,  
 δὴ τότ' ἀρετῆς δὲ θυρεῶν ἀγαμέμνων,  
 τὸν μὲν ὑπὲρ μαζοῖο κατὰ σῆθος βάλε θυρῇ.  
 ἀντιφονεῖνα παρὰ δ' οὐς ἔλασε ξίφει, ἐκ δ' ἔβαλ' ἵππον.  
 περὶ χόμῳ δ' ἀπὸ τοῖν, ἐσύλατο βύχια καλὰ  
 γινώσκων, καὶ γάρ σφι πάρος παρὰ νηυσὶ θεῶσιν  
 ἰδὼν, ὅτ' ἐξ ἰδὼς ἀγαγὼν πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς.  
 οἱ δ' ἰδὼν ἰλάφοισι ταχέως νύπια τέκνα

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

αἶματι μιν δαλίας ἐξ ὀστέων, οὐκ ἔμελλεν  
 πολλὰς ἰφθίμους κεφαλὰς, αἵ δ' ἰθὺς προΐαψεν.  
 Τρῶες δ' αὖθ' ἰτέρωθεν ἐπὶ θροσμοῦ πεδίον,  
 ἔκθρα τ' ἀμφὶ μέγαν, καὶ ἀμύματα πολυδίδαμῶντα,  
 εὐνείωνθ', ὅς τ' ὦσι θεὸς ὡς τίς ποδὶ δῖον.  
 Ζεὺς τ' ἀντηγορίδας, πόλυβον, καὶ ἀγήμερον δῖον.  
 ἦ ἰθὺς τ' ἀκάμωγ', ἐπεὶ κίκελον ἀθανάτοισιν.  
 ἔκτωρ δ' ἐν πρῶτοισι φέρε' ἀπὸ δαπάνθ' ἐκ ἰσῶν.  
 οἷος δ' ἐκ νεφέων εὐαφάνιται οὐλῖος ἀσὴρ,  
 παμφαίνων, ὅτε δ' αὖτις ἔδω νέφια σκίοεντα,  
 ὡς ἔκτωρ δὲ μὲν τε μετὰ πρῶτοισι φάνεσκον,  
 ἄλλοτε δ' ἐν πυμάτοισι κελύων. πᾶς δ' ἄρα χαλκῷ  
 λάμψ', ὡς τε σieroπὴ πᾶρδὸς δῖος αἰγίοχοιο.  
 οἱ δ' ὡς τ' ἀμνηστέρων ἰνῶπιόι ἀλλήλοισιν,  
 ὄγμοι λαύνουσιν ἀνδρὸς μάχεσθ' κατ' ἄρεσιν.  
 πυρρῶν ἢ κριθῶν, τὰ δ' ὀφθαλμοῖσιν ἀπὸ πίπῃς,  
 ὡς τρῶες καὶ ἀχαιοὶ ἐπ' ἀλλήλοισι βορῶντο,  
 δῖον. οὐδ' ἔτεροι μνῶντ' ὀλοοῖτο φόβοιο.  
 ἴσας δ' ὕσμίνῃ κεφαλὰς ἔχον. οἱ δ' ἄλυσιν ὡς  
 θύον. ἔως δ' ἄρ' ἔχαιεν πολύσπονθ' ἐθρόωα,  
 οἷον γὰρ ῥά θιῶν παρετύγχανε μαρτυμένοισιν.  
 οἱ δ' ἄλλοι, οὐσφιν πᾶρισσαν θεοί, ἀλλὰ ἔκλει  
 οἷσιν ἐνὶ μεγάροισι καθήμεναι, ἢ χι ἔκαστος  
 δῶματα καλὰ τέτυκτο, κατὰ πῆλ' ἔχας οὐλύμποιο.  
 πάντοτε δ' ἠτιόωντο κλισίῃσιν ἀφρονίῳ  
 οὐκ ἄρα φάσιν ἰδούλῃσιν κῦδος ὀρέξαι.  
 τῶν μὲν ἄρ' οὐκ ἀλέγξει πατήρ. δδ' ἐν νόσφι λιαδίῃς,  
 τῶν ἄλλων ἀπάνδουθι καθεῖς κύδι' ἰγείων,  
 ἐθρόων τῶν τε πόλιν καὶ νῆας ἀχαιῶν,  
 χαλκῷ τε σieroπῇ, ὀλλύντας τ' ὀλλυμένους τε.

τῷ δ' ἦϊο δέκα οἶμοι ἴσαν μέλαν' κυάνοιο,  
 δώδεκα δ' ἐχρύθιο, καὶ εἴκοσι κασιγέροιο.  
 κυάνοιο δ' ὁρακόντος ὁραρέχας ποτὶ θάρην  
 φῖς, ἐκάτερθ' Ἰεαριν ἐοικότους, ἄς τε κρονίων  
 ἐν νέφει σέειξε τέρας μερόπων ἀνθρώπων.  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' ὅμοισιν βάλετο ξίφος, ἐν δ' οἱ ἦλθον  
 χρύσειοι πύμφανον, ἅτερ περὶ κυλῖον ἦεν  
 ἀργύρεον χρυσοῖσιν ἀορτήρεα γιν ἄρηρος.  
 αὐδ' ἔλετ' ἀμφιβρατῶν πολυδαίδαλα γιν ἀσπίδα θούρην  
 καλὴν, ἣν περὶ μῦν κύκλοι δέκα χάλκιοι ἦσαν.  
 ἐν δ' οἱ ὀμφαλοὶ ἦσαν εἴκοσι κασιγέροιο  
 λουκί, ἐν δ' οἱ μέγιστον ἔλω μέλαν' κυάνοιο.  
 τῇ δ' ἐπὶ μῦν, γοργὼ βλοσυρῶπις ἐσιφάνωτο  
 θανόν διερχόμεν, περὶ δ' οἱ δαίμονες τι φόβος τε.  
 τῆς δ' ἔξ ἀργύρε' ὅτε λαμὼν ἦν, αὐτὰρ ἐπ' αὐτῷ  
 κυάνε' ἠέλικ' ὁράκων, κεφαλαὶ δ' οἱ ἦσαν  
 φῖς ἀμφισφίτες, ἐνὸς αὐχέν' ἐκπεφυῖσαι.  
 κρατὶ δ' ἐπ' ἀμφίφατον κωίῳ θέτο, τετραφάλῃ γιν  
 ἵππεν, θανόνδε λόφος καθύπερθεν ἔννε.  
 ἦλθον δ' ἄλκιμα δ' ὕρι δ' ὕα, κενερωμένα χάλκῳ  
 ὄξεια, τῇ δ' οἱ χάλκος ἀπ' αὐτόφιν οὐρανὸν εἶσθε  
 λάμπ', ἐπιδ' ἐγδούπησαν ἀθλαίῃ τε καὶ ἔρῃ.  
 τιμῶσαι βασιλῆα, πολυχρῦθιο μυκύνῃσιν  
 ἡνιόχῳ μῦν ἐπατα ἔω, ἐπέτιλλον ἔκαστος,  
 ἵππεν εὖ κατὰ κόσμον ἱρυκίμῳ αὐθ' ἐπὶ τάφρῳ.  
 αὐτοὶ δ' ἡρυλῆες σὺν τούχεσι θωρηχθέντες,  
 ῥῶοντ', ἄσβεστος δ' οἱ βοή γένετ' ἥωθι πρό.  
 φθάνονδε μεθ' ἱππῶν ἐπὶ τάφρῳ κοσμηθέντες  
 ἵππῆες δ' ὀλίγον μετ' ἐκίαθον, ἐν δ' οἱ κυδοιμόν,  
 ὄρεσιν κακὸν κρονίδης· κατὰ δ' οἱ ὑφ' ὅθον ἦσαν ἔρσιν.

ΙΛΙΑΔΟΣ .Λ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

λαμβάνει δ' ἄρ' ἑκαστος δ' ὀφθαλμοῖς βόλῃσιν ἐκτορθεῖν ἄνθρωπος.

ἢ

ὧς δ' ἐκ λείων παρ' ἄγαν τις

θωνοῖτο,

ὥρυσθ' ἴν' ἀθροάτοισι φόως φέροι,

ἢ δ' ἐβροτοῖσι.

ἴδους δ' εἰδὼς προΐαμε θοὰς ἐπὶ νῆας ἄχαιων  
ἀργαλείω, πολέμοιο τέρας μετὰ χερσὶν ἔχουσιν.  
εἴδ' ἐπ' ὀδυσῆϊ μὲν ἀκὴν τεῖ νηὶ μελαίνῃ  
ἢ δ' ἐν μεσάτῳ ἔσκει γελανίμῳ ἀμφοτέρωσιν,  
ἢ μὲν ἐπ' ὤμων κλισίας τελαμωνιάδας,  
ἢ δ' ἐπ' ἀχιλλῆος, τοί δ' ἔχοντα νῆας εἴσας  
εἴρυσσάν, ἥνορέη πίσωσι καὶ κάρτεϊ χερῶν.  
ἐνθα σᾶς ἦυσε θεά, μέγα τε δεινόν τε  
ἔρβ' ἄχαιοισιν, μέγα δ' ἐδίνος ἔμβαλ' ἐκάστω  
κασδίῃ, ἄλληκτορ πολέμῳ, ἢ δ' ἐμάχεσθαι.  
τοῖσι δ' ἄφαρ πόλεμ' ἔλκετο γένετ' ἢ νείκεα  
ἐν νηυσὶ γλαφυρῇσι, φίλῳ ἐς παρὶδ' αἰῶν.  
ἄρ' εἴδης δ' ἐβόησεν, ἰδὲ ἴωννυθαι ἄνδρα  
ἄργεῖν, ἐν δ' αὐτὸς ἐδύνατο νώροπα χαλκόν.  
κνημίδας μὲν πρῶτα, περὶ κνήμησιν ἔθηκε  
καλὰς, ἀργυρέοισιν ἐπισφυγίοις ἀραρυῖας.  
δούτερον δ' αὖ, θώρηκα περὶ στήθεσιν ἐδύσε,  
τόν, ὅτε οἱ κινύρης δῶκε ξιφῆϊός τε εἶν.  
πρόθεος γὰρ κύπρον δὲ μέγα κλῆος, οὐνικ' ἄχαιοί  
ἐς τοῖόν νῆασιρ ἀναπλούσιωδαι ἔμελλον,  
τοῦν καὶ οἱ εἶν δῶκε χερσὶν βασιλῆϊ.

τῷ δ' ἔτι

ἔς ῥ' ἄβυμίνους βάντοῦ ἰυξίσσας λούσαντο.  
 τῷ ᾧ λυαγαμίνω, καὶ ὀλθαγαμίνω λίπ' ἱλαίῳ.  
 Πρίπνῳ ἐφίσανέτλω ἀπὸ ᾧ κρητῆρος ἀθῆνη  
 σπλίς ἀφυσάμνηοι λιτῆρος μιλιτῆς κ οἶνον.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Α. ΟΜΗ.  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Γαμίμνωρ αὐτὸς τε ὀπλισάμνητο, καὶ τὺς ἄλ  
 λους καθοπλίσασ' ἑλλωας. ἱξάγ' ἐπὶ τὸν πόλιν  
 μον. ἱκτωρ ᾧ δῖος κελύσσαντο, ἀναχωρεῖ τῆς  
 μάχης, ὡς ἀγαμίμνωρ ἐπὶ τὸν ναύσταθμον διασώζει.  
 μετὰ ταῦτα ὀδυσσεὺς κυκλωγμένωρ αὐτὸν τῶν  
 ἀμύνεται αὐτούς, αἰῶντος καὶ μονελάς βοηθησάντων αὐ  
 τῷ, πρῶσθονται μίντοι τῶν ἑλλήνων οἱ ἄριστοι. ἀγαμίμ  
 νωρ μὲν, ὑπὸ κόωντο. ὀδυσσεὺς δ', ὑπὸ σώκκ. ὑπὸ ᾧ ἄλλοι  
 ξάνδρος τοξενόιται διομήδης καὶ δῖρυνπυλος, καὶ μαχά  
 ρων, ὅν ἐπονώοντα, σὺν νέστοι θεασάμνητο ἄχιλλεύς.  
 διαπέμπεται πάροχλον μαθησοόμενον, πῶς εἴη ὁ τερω  
 μέντο. ὃ δ' ἐφικόμεντο καὶ μαθὼν μαχάονα εἶναι.  
 παρὰ τῶν νέστορος, προῖεπιται ἡ τὸν ἄχιλλεῖα πεῖσαι  
 συμμαχεῖσθαι τοῖς ἑλλήσιν, ἢ αὐτὸς γὰρ λαβὼν τῆν παρ  
 τευχίαν τῶν ἄχιλλεως, ἱξελθεῖν εἰς μάχην. ἐπὶ αὐτοῦ  
 μνητο ᾧ περιτυχῶν δῖρυνπύλῳ, καμίθε εἰς τὰς ναῦς  
 θηραπύει.



ῥάων· ἢ τίς σφάει πόρῳ θεὸς ἀνελόλθε,  
 αὐτῶς ἀκτίνεσσιν ἰοικόδοι ἡελίοιο.  
 αὐτὸ μὲν ῥάεισ' ἐπιμίσσομαι, οὐ δ' ἐπὶ φημί  
 μιμνάξερν παρὰ νηυσὶ χέρων περ ἰὼν πολυμήθεος·  
 ἀλλ' οὐπὼ τοῖσιν ἵππων ἴδον, οὐδ' ἐνόηθα.  
 ὡλάτῃν ὕμῃ δῖῳ δόμῳαι θεὸν αἰνιάαντα,  
 ἀμφοτέρω γὰρ σφῶϊ φιλεῖ νεφελή γέρετα ἰούσας.  
 κούρητ' ἀγιοχοῖα δῖος χλαυκῶπις ἀθήνη.

Τὸν δ' ἀπαμείβομαι ὅτ', προσέφη, πολυμήνης δόρυ αὐτός·  
 ὦ νέστορ νηληϊάδῃ μέγα κῦδος ἀχαιῶν,  
 ῥέϊα θεός γ' ἐθέλωρ καὶ ἀμείνονας ἦε περ οἶδαι,  
 ἵππων δωρήσασαί· ἐπεὶ πολὺ φέρτεροί εἰσιν.  
 ἵπποι δ' οἶδαι γέρας νεύλυδις οὐς ἐρεΐντας,  
 εὐρηκίαι· τὸν δ' ἐσφιν ἀνακτ' ἀγαθὸς διομήδης  
 ἔκτανε, παρ δ' ἐπαίρης δυοκαίδεκα πάντας ἀρίστους·  
 τὸν ῥισκαδ' ἐκείνῳ σκεπὸν, εἰλεμὸν ἱγυῖθι νηῶν·  
 τὸν ῥα διοπῆρα στρατῷ ἐμμελῶαι ἡμῖν τέροιο,  
 ἔκτωρ τε πρόεικε, καὶ ἄλλοι ῥῶϊς ἀγαυοί.

Ὡς εἰπὼν, τέφροιο δ' ἤλασέ μῶνυχας ἵππους  
 καρχαλίων· ἅμα δ' ἄλλοι ἴσαν χαίροντες ἀχαιῶν  
 οἶδ' ὅτε τυδείδῳ κλισίῳ εὐτυκτορ ἴκοντο,  
 ἵππους μὲν κατέδησαν εὐτμήτοισιν ἱμάσιν  
 φάτῃν ἐφ' ἱππικῇ, ὅθι περ διομήδης ἵπποι  
 ἔστασαν ὠκύποδις μελινδία πυρὸν ἰδοντόν·  
 νηῖ δ' ἐνὶ πρῆμνῃ, ἵναρα βροτόεντα δόλωντο  
 θῆκε δόρυ αὐτός, ὅφρ' ἰρὸν ἰδμεσθαί· ἀθήνη  
 αὐτοῖ δ' ἰδῶ πολλὸν ἀπανίσχοντα θαλάσῃ  
 ἔσθάντο, κνήμας τε, ἰδὲ λώφον, ἀμφί τε μηρούς·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ σφιν κῦμα θαλάσσης ἰδῶ πολλὸν  
 νίψαν ἀπὸ χροτὸς, καὶ ἀνέψυχον φίλον ἦτορ,

ὣς ἰδὼ ἀθηναίῳ μετὰ τυδῖ· Θ' ὑῖον ἔπυσσεν,  
 τῆς κατέων, φῶων κατεδύσσο πυλὺν ὄμιλον.  
 ὠρσεν ὃ θρηκῶν βυληφόρον ἱπποκόωντα,  
 ῥήσας ἀντιδὸν ἐδλόν· ὃ δ' ἐξ ὕπνου ἀνορούσας  
 ὡς ἰδε χῶρων ἔρημον ὅθ' ἔστασαν ὡκίαι ἵπποι,  
 ἀνδρας τ' ἀσπαίροντας ἐν ἀργαλῆσι φονῆσιν,  
 ὡμῶς τ' ἄρ' ἐπῆτα, φίλῶντ' ὀνόμηνον ἱταῖρον·  
 φῶων δ' ἐκλαγγήτε, καὶ ἀσπεῖς ὦρθε κυδοιμὸς  
 θωόντων ἀμυνδισ· θηδύντο δ' ἐμέρμερα ἔργα,  
 ὅσ' ἀνδρες ῥέξαντο δ' ἔβαν καίλας ἐπὶ νῆας·  
 οἳ δ' ὅτι δὴ ῥ' ἴκανον ὀθισκῶν ἑκτορος ἑκτοῶν,  
 ἐνθ' ὀδυσβύς μῦν ἔρυξε δ' ἰὶ φίλῶς ὡκίαι ἵππας,  
 τυδείδης δ' ἐχαμᾶζε θορῶν, ἑναρα βροτόντα  
 ἐν χεῖρας ὀδυαῖ· ἥ τις ἐπεβήσας δ' ἵππων·  
 μολισξεν δ' ἵππας τῶδ' οὐκ ἄκοντε πετέδιω  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, τῆς γὰρ φίλῶν ἐπλῆτο θυμῷ·  
 νῆσας ὃ πρῶτος κτύπον αἶε φωνήσεν τε.

Φίλοι ἀργείων ἡγήτορες ἦ δ' ἐμείδοντο δ'·  
 ψόθυμα ἢ ἔτυμον ἐρέω· κέλιται δ' ἐμὲ θυμός,  
 ἵππων μ' ὠκυπόδων ἀμφικτύπος οὐατα βάλλει·  
 αἳ γὰρ δὴ ὀδυσβύς τε, καὶ ὁ κρατερὸς διομήδης  
 ὦδ' ἀφαρ ἐκ φῶων ἐλασείατο μώνυχας ἵππας·  
 ἀλλ' αἰνῶς δ' ἐδίοικα κατὰ φρένα μή τι πάθωσιν  
 ἀργείων εἰ αἰετοί, ὑπὸ φῶων ὀρυμαγδῷ·  
 οὐπω παρ' εἴρηλ' ἔπος, ὅτ' ἄρ' ἦλυθον αὐτοί·  
 καί γ' εἰ μὲν κατέβησαν ἐπὶ χθονά, τοῖς δ' ἐχαρίντο  
 διεξιῆς ἠσάφοντο ἐπεσῖτε μελιχίοισι.

Πρῶτ' ὃ δ' ἐξέριεν γερήν· ἵπποτα νῆσας·  
 ἐπ' ἄγε μ' ὦ πολύαν' ὀδυαδύ, μέγα κῦδος ἀχαιῶν,  
 ὅπως τοὺς δ' ἵππας λάβῃς κατὰ δύντο ὄμιλον.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

κίχλσιν ἢ οἷσιν καὶ φρονέων ἀνδρῶν σφί·  
 ὧς μὲν θρηήκας ἀνδρας ἐπώχθο τυδείῳ ἦος,  
 ὄφρα δ' υἷος ἐπεφίεν· ἅπαρ πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 οὐ πνεα τυδείδης, ἄοι πλήξτε παρὰ σῶς,  
 τὸν δ' ὀδυσσεύς μετόπισθε λαβὼν ποδὸς ἐξερέσσει,  
 πρὸ φρονέων κατὰ θυμὸν, ὅπως καμύριχός ἴπποι  
 φρεσὶ δ' ἐλθοῖεν μὴ ὅτ' ἐφοίκοιεν θυμῷ  
 νεκροῖς ἀμειβόμενοι· ἀθήσκον γὰρ ἔτ' αὐτῶν.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ βασιλῆα κίχλσιν ἐπώχθο τυδείῳ ἦος,  
 τὸν τρισκαίδεκα μελινδεία θυμὸν ἀπύρρα,  
 ἀμειβόμενοι, πακὸν γὰρ ὄναρ κεφαλῇ φιν ἐπίσῃ  
 τὴν νύκτ', οἶνείδαο πάϊς σφί· μῆτιν ἀθήνης,  
 τόφρα δ' ἄρ' ὁ τλήμων ὀδυσσεύς, λυέ μώνυχας ἵππους,  
 σὺν δ' ἦεν ἰμάσι, καὶ ἐξήλαυνεν ὁμίλῃ  
 τόξω ἀπιπλήσων, ἐπὶ δ' ἐμολίγα φαεινῇ  
 ποικίλῃ ἐκ δ' ἴφροιο νούβῳ χρυσὸν ἐλίσσει,  
 φροῖσσαν δ' ἄρα, πιφανύσκων διομήδεϊ δ' ἴφ·  
 αὐτὰρ ὁ μὲν ἐλθὼν μένων δ' ἐκύντι φρονέουσι,  
 ἢ ὁ γὰρ δ' ἴφρον ἐλθὼν ὅθι ποικίλα τινύχῃ ἐκείτο,  
 φουδὸς ἐξερούοι, ἢ ἐκφέροι ὑψόσ' αἰέρας,  
 ἢ ἐκ τῶν πλειόνων θεηκῶν ἀπὸ θυμὸν ἐλαίτο·  
 ὣς δ' ταυτὶ ὄρμαινε κατὰ φρένα, τόφρα δ' ἀθήνη  
 ἱγγύθει ἰσταμένη, προσέφη διομήδεϊ δ' ἴφ·  
 νόσου δ' ἢ μνησάμεγαθύμῃ τυδείῳ ἦε,  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, μὴ καὶ πεφοβημένῃ ἐλθῇ,  
 μὴ πευπτε καὶ πῶας ἐγείρῃσι θεὸς ἄλλῃ.  
 ὣς φασὶ, ὁ δ' ἐξωήκε θεῶς ὅππῃ φωνησάσῃ·  
 καρπαλίμως δ' ἵππων ἐπεβήσατο· κόπῃ δ' ὀδυσσεύς  
 τόξω, βίβῃ ἐπέτοντο θεῶς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν.  
 ὅθ' ἀλαροχρηπίῳ εἶχον ἀργυρέῃ ἀπόλλων·

ὣς ἰδὼ ἀθηναίῳ μετὰ τυδείῳ ἦδ' ἰὸν ἵπυσσαν,  
 τῆς κατ' ἑὸν, φῶν κατεδύατο πύλιν ὄμιλον.  
 ὦρσεν ὃ θρηκῶν βυληφόρον ἱπποκόωντα,  
 ῥῆσεν ἀντιὸν ἐδλόν· ὃ δ' ἐξ ὕπνου ἀνορούσας  
 ὡς ἰδὼ χῶρων ἐρημον ὅθ' ἔστασαν ὡκίεσσι ἵπποι,  
 ἀνδρας τ' ἀσπαίροντας ἐν ἀργαλίσσι φονῆσιν,  
 ὠμῶς τ' ἄρ' ἐπῆτα, φίλῳ τ' ὀνόμηνον ἱταῖρον·  
 φῶν δ' ἐκλαγγήτε, καὶ ἀσπεύς ὦρθε κυδοιμὸς  
 θωόντων ἀμυνδισ· θηδύντο δ' ἐμ' ἐρμερα ἔργα,  
 ὅσ' ἀνδρες ῥέξωντο βέον καίλας ἐπὶ νῆας.  
 οἱ δ' ὅτι δὴ ῥ' ἴκανον ὀθισκῶπὸν ἑκτορος ἑκταῶν,  
 ἐνθ' ὀδυσδύς μῦν ἔρυσεν δὴ φίλῳ ὡκίεσσι ἵππυς,  
 τυδείδης δ' ἐχάμαξεν θορῶν, ἑναρα βροτῶντα  
 ἐν χείρεσσι δ' ὀδυαῖτ' ἥθη ἐπεβήσας δ' ἵππων·  
 μολισθεν δ' ἵππυς τῷ δ' οὐκ ἄκοντι πέτεώλω  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, τῆς γὰρ φίλῳ ἐπλῶσθον μῦ.  
 νέσθω ὃ πρῶτος κτύπον αἶε φῶνσ' ἐν τε.

Ὡ φίλοι ἀργείων ἡγήτορες ἠδ' ἐμ' ἐδοντοῖς,  
 ψεύθεμαι ἢ ἐτυμοῖς ἐρέω· κέλιται δ' ἐμ' ἐθυμός,  
 ἵππων μ' ὠκυπόδων ἀμφικτύπος οὐατα βάλλει·  
 αἱ γὰρ δὴ ὀδυσδύς τε, καὶ ὁ κρατερὸς διομήδης  
 ὡς δ' ἀφ' ἑκ φῶν ἐλασκαίαν μώνυχας ἵππυς.  
 ἀλλ' αἰνῶς δ' ἐδίοικα κατὰ φρένα μή τι πάθωσιν  
 ἀργείων εἰ ἀεῖσι, ὑπὸ φῶν ὀρυμαγδῶ.  
 οὐπω πᾶν εἴρηθ' ἔπος, ὅτ' ἄρ' ἤλυθον αὐτοί·  
 καί γ' εἰ μὴ κατέβησαν ἐπὶ χθονά, τοί, δ' ἐχαρίντο  
 διεξίης ἠσπάρονθ' ἐπεσσίτε μελιχίοισι.

Πρῶτ' ὁ δ' ἐξέρειν γέρηνι ἵπποτα νέσθω.  
 εἴπ' ἄγε μ' ὦ πολύαν' ὀδυσδύ, μέγα κῦδος ἀχαιῶν,  
 ὅπως τούς δ' ἵππυς λάβῃς καταδύντο ὄμιλον.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

κίχασιν ἢ οἴεσιν κακὰ φρονέων ἀνδρῶν σφίγῃ,  
 ὥς μιν βρήκας ἀνδρας ἐπὶ ὄχθῳ τυδείῳ ἦος,  
 ὅφρα δυνώδιν ἐπιφρον· ἀτὰρ πολὺ μῆτις ὀδυσαίνε,  
 ὃν πινε τυδείδης, ἄοι πλήξτε παρασάς,  
 τὸν δ' ὀδυσαίνε μετόπισθε λαβὼν ποδὸς ἐξερύττασκε,  
 πρὶ φρονέων κατὰ θυμόν, ὅπως καλὶ ῥιχθὲς ἵπποι  
 ῥίπα δ' ἰλθοιοι μὴ ᾗ τρομεοῖα θυμῷ  
 νεκροῖς ἀμείνοντες· ἀθήσκον γὰρ ἔγ' αὐτῶν.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ βασιλῆα κινήσας τυδείος ἦος,  
 τὸν ῥισκοδίνεσσαν μελινθεῖα θυμὸν ἀπύρα,  
 ἀδμαίνοντα, ἰακὸν γὰρ ὄναρ κεφαλῇ φιν ἐπίσῃ  
 τὴν νύκτ', οἶνείδαο πάϊς σφίγῃ μῆτιν ἀθήνης,  
 τόφρα δ' ἄρ' ὁ τλήμων ὀδυσαίνε, λυεῖ μῶνυχας ἵππους,  
 σὺν δ' ἦενον ἱμάσι, καὶ ἐξήλαυνον ὁμίλῃ  
 τόξω ἀπιπλήστων, ἐπὶ ᾗ μολιστὰ φαεινὴν  
 ποικίλιν ἐκ δ' ἴφροιο νοῦθετο χρυσὴν ἰλίδαν,  
 ῥοίησσαν δ' ἄρα, πιφανύσκων διομήδεϊ δ' ἴω·  
 αὐτὰρ ὁ μὲ μῆρι μίνων δ', ἐκύντερον ἔρδι,  
 ἢ ὁ γὰρ δ' ἴφρον ἔλδων ὅθι ποικίλα τινύχῃ ἔκειτο,  
 ῥυμοῦ ἐξερύοι, ἢ ἐκφέροι ὑψόσ' αἰέρας,  
 ἢ ἐκ τῶν πλεόνων βρηκῶν ἀπὸ θυμὸν ἔλαιο·  
 ἵως δ' ταῦθ' ἔρμαινε κατὰ φρένα, τόφρα δ' ἀθήνη  
 ἰγγύθου ἰσταμένη, προσέφη διομήδεα δ' ἴον·  
 νόσον δὴ μνησσαι μεγαθύμῃ τυδείος ἦε,  
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, μὴ κῆ πεφοβημένῃ ἔλθης,  
 μὴ πρὸς τις καὶ ῥῶας ἐγείρῃσι θεὸς ἄλλος.  
 ὧς φασθ', ὁ δ' ἐξωίηκε θεῶς ὅππῃ φωνησάσης·  
 καρπαλίμως δ' ἵππων ἐπεβήσας· κούρη δ' ὀδυσαίνε  
 τόξω. ῥίπῃ ἐπὶ τοντο θοὰς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν·  
 ἦ δ' ἄλλας οὐκ ἐπὶ ἔχον ἀργυρέας ἀπόλλων,  
ἦ δ' ἴδ' ἴδ'



φασγάνῳ αἶξας· ἀπὸ δ' ἄμφω κέρσι τένοντι·  
 φθειγγομένη δ' ἄρα τῷ γε, κάρη κενήσῃσι ἰμίχθον·  
 βῆ δ' ἀπὸ μῆν κινδύλῳ κυέην κεφαλῇφι ἔλθον,  
 καὶ λυκίῳ, καὶ τοῖσιν παλίντονα, καὶ δόρυ μακρόν·  
 καὶ τὰ γ' ἄθλωαίη ληϊπιδί διῖος ὀδυσσεύς,  
 ὑπόσ' ἀνέχευε χερσὶ, καὶ δὲ χόμενθ' ἔπειθε ἦνδρα·  
 Χῶρε θεὰ θεῖς δέσσι, σὲ γὰρ πρῶτῳ ἐν δλύμπῳ  
 πονταν ἀθανάτων ἐπιβασόμην· ἀλλὰ καὶ ἄντις  
 πέμφοι δὲ θεῶν ἀνδρῶν, ἵππας τε, καὶ δύναντες·  
 ὧς ἄρ' ἐφώνησεν· καὶ ἀπὸ ἔθεν ὑπόσ' αἶρας,  
 θῆκεν ἄνὰ μυρικήν· δῖε δ' ἔπειθε σῆματ' ἔθηκεν,  
 συμμαρτὰς δόνακας, μυρικής τ' εἰσθηλίας ὄξες,  
 μὴ λάθοι ἄντις ἰόντε θοὴν στήν νύκτα μέλαιναν,  
 τῷ δ' ἑὸν βάτῳ προτέρῳ διὰ τ' ἔντια καὶ μέλαινα  
 αἶματ' ἐπὶ θεῶν ἀνδρῶν τέλεις ἵξον ἰόντο·  
 οἱ δ' ἔπειθε καμάτῳ ἀδ' ἀνδρόκοι· ἔντια δ' ἐσφιν  
 καλὰ παρ' αὐτοῖσιν χθονὶ κέκλιτο, ἔπειθε κόσμον  
 τῖσοι χεῖ· παρὰ δ' ἐσφιν ἐκάσῳ δ' ἵπποισι·  
 ῥῆθ' δ' ἐν μίσῳ ἔπειθε παρ' αὐτῷ δ' ὠκείοι ἵπποι·  
 ἔξ' ἐπιδιφραδάδες πυμάτης ἱμάσι δ' ἔδιντο·  
 τόν δ' ὀδυσσεύς προπαύροισιν ἰδὼν διόμῃδι δῖξεν·  
 οὗτός περ διόμῃδης ἀνὴρ· εὖ περ δ' ἐπὶ ἵπποι,  
 οὗς νῶϊν πίψαυσκε δόλων, ὃν ἐπέφνομον ἡμῖς·  
 ἀλλ' ἄγε δὴ πρόφρε· κρατρὸν μὲνθ'· ἔπειθε πῖσι χεῖ  
 ἐσώμεναι μέλειον σὺν τεύχεσιν, ἀλλὰ λυ' ἵππας·  
 ἢ σὺ γ' ἀνδρας ἔναυρε, μελήθουσι δ' ἐμοὶ ἵπποι·  
 ὧς φάτο, βῆ δ' ἔπειθε μὲνθ' ὑλαυκῶπις ἀθήνη·  
 κτείνει δ' ἐπιστροφάδῳ, τῶν δ' ἐσόνος ὤρνυτ' ἀεχμῆς,  
 ἀοειθενομένων, ἐρυθαίνον δ' αἶματι γαῖαν  
 ὧς δ' ἔπειθε μῆλυσιν ἀσημῶν χερσὶν ἐπ' ἰλθόντες·

Τόνδ' ἡμεῖς ἐπὶ τα δόλων δὴ μὲν ἔσθ' ἦρος·

Θι γὰρ ἔγωγε καὶ ταῦτα μάλ' ἀνικέως καταλίξω·

πρὸς μὲν ἄλλος κἄρτος καὶ παῖοντες ἀγκυλόρρφοι,

καὶ λίλιγες, καὶ καὶ κωνόδοι τοῖσι πελασγοῖ.

πρὸς θυμῶν δ' ἔλαχον λυκιοὶ, μυθὶτ' ἀγέροχοι,

καὶ φρύγες ἵπποδάμοι, καὶ μήονες ἵπποκλυδαί.

ἀλλὰ τὴν ἐμὲ ταῦτα διεξέριεω ἔκαστα;

ἢ γὰρ δὴ μέμαρν βῶων καταδύναι ὄμιλον,

θρησκὸς οἶδ' ἀπάνευθε νεήλυδος ἔξατο ἄλλων.

ἐν δ' ἐσφιν, ῥῆθ' ἐκ βασιλεὺς, πάϊς ἦιον ἦτο.

τὸ δ' ἦ, καλλίστους ἵππους ἶδον, ἦ δ' ἐμείς τε,

λυκότεροι χιόνῳ, θέειν δ' ἀνέμοισιν ὁμοῖοι.

ἄρμα δ' ἐοικέν τε χρυσῷ, καὶ ἀργύρῳ ἔῃ ἤσκηται.

τύχεα δ' ὅχρυσον πελώρια, θαῦμα ἰδέσθαι,

ἤλυθ' ἔχων. τὰ μὲν οὐπὶ καταθνητοῖσιν ἔοικον

ἀνθρώποι φορέειν, ἀλλ' ἀθανάτοισι θεοῖσιν.

ἀλλ' ἐμὲ νῦν ἵπποισι πελώριον ὠκυπόροισιν.

ἦ ἐμὲ δύσαντο δὲ, λίπετ' αὐτόθι νηλεὲς Διὸς μῶ,

ὄφρα κεν ἔλθῃτον, καὶ πῆρθῃεν ἐμεῖο.

ἦε κατ' αἴσαν ἔσπον ἐν ὑμῖν, ἦε καὶ ἔκί.

Τόν δ' ἄρ' ὑπόφραϊδ' ὦν, προσέφη κρατερὸς Διομήδης.

μὴ δ' ἡ μοι φύξιν γε δόλων ἐμβάλλω θυμῷ,

ἔωλάν περ ἀγγείλας ἐπὶ ἴκιο χεῖρας ἐς ἅμας.

εἰ μὲν γὰρ κί σε νῦν ἀπολύθωμαι, ἦε μὲν ὦμαι,

ἦ τε καὶ ὕστερον εἶδα θοὰς ἢ νῆας ἀχαιῶν

ἦε Διοπλεύσαν, ἦε ἑναντίβιον πολεμίζων,

εἰ δ' ἐκ' ἐμῆς ὑπὸ χερσὶ διαμείς, ἀπὸ θυμὸν ὀλέσσης,

οὐκ ἔτ' ἐπὶ τα σὺ πῆμά ποτ' ἔσται ἀργείοισιν.

ἦ, καὶ ὁ μὲν μιν ἐμὲ μελλε γενεῖν χερσὶ παχέῃ

ἀτάμῳ λίσσεται. ὅδ' αὖ χεῖνα μῆσιν ἔλασσε,

φασγάνῳ

ἢ φυλασσονται νῆες θακὶ ὡς ἑπάρους πρῶ,  
<sup>21</sup> ἢ ἡδὴ χιρίσιν ὑπὸ ὑμετέρῃσι δαμέντις,  
 φύξιν βυλινύσιτε μετὰ σφίσιν, ὅδ' ἐθέλωσι  
 νύκτα φυλασσέμεναι καμάτῳ ἀδ' ἡκούτες ἀνδρῶν.

Τὸν ἐπιμηδύσας προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς·  
 ἦ ῥα νῦν περιμυώλων δώρων ἐπεμαίεσθαι θυμὸς,  
 ἵππων ὠακίδαο δαΐφρονος· ὅδ' ὠλεθροῖ  
 ἀνδράσι γε θνητοῖσι δαμήμεναι· ἡδ' ὀχίεσθαι  
 ἄλω γ', ἢ Ἀχιλλῆϊ, ἐν ἀθανάτῃ τέκε μήτηρ.  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ, καὶ ἄρκεως καταλέξω.  
 ποῦ νῦν δειρὸ κιῶν λίπες ἔκτορα ποιμένα λαῶν;  
 ποῦ δ' οἱ ἐντὶ κακῷται ἀρήϊα· ποῦ δ' οἱ ἵπποι;  
 πῶς δ' αἱ τῶν ἄλλων βῶων φυλακαί τε, καὶ δύναις  
 ἄσπετα μητιώσι μετὰ σφίσιν, ἢ μεμώσιν  
 αὖθι μένων παρὰ νηυσὶν ἀπὸ προθι, ἢ πόλιν δε  
 ἄτ' ἀναχαρῆσυσιν· ἐπεὶ δαμολέοντό γ' ἀχαιούς.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπε δόλων διμήδεος Ἥδος·  
 οἶ γάρ ἐγώ περ γαῦτα μάλ' ἄρκεως καταλέξω.  
 ἔκτορ μὲν μετὰ τοῖσιν, ὅθι βυληφόροι εἰσὶν,  
 βυλὰς βυλινύθει' παρὰ σήματι ἴλα  
 νόσφι ἀπὸ φλαίσβη· φυλακάς δ' ἄε εἵρεα ἦρως,  
 οὐ πλε κεκρίμενη ῥύεται στρατόν, ὅδ' ἐφυλάσσει.  
 ὅσσαι γάρ βῶων πυρὸς ἐχέουσι οἷσιν ἀνώγει,  
 ὅδ' ἐρηγέσθασιν, φυλασσέμεναι τε κέλευται  
 ἀλλήλοισι ἀτὰρ αὖτε πολυκλήτοισι κίοντοισι  
 ἠδ' ἄνδρσι· βῶσί γάρ ἐπιβρέουσιν φυλάσσειν  
 ὅ γάρ σφι πάϊδες χαλκὸν εἴεται, ὅδ' ἐγὼ καὶ ἐγώ.

Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς·  
 πῶς τ' ἄρ' νῦν βῶεσσι μεμιγμένοι ἵπποδῆμοισιν  
 ἠδ' ἄνδρσι, ὅδ' ἀπ' ἀνυθὶ δ' εἰπέ μοι, ὅφρα δαίω.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

φινύδων ἐς νῆας, τότε δ' ἤ μιν ἔμβαλ' ἀθήνη  
 τυδείδῃ, ἵνα μὴ πῖς ἀχαιῶν χαλκῶ χιτώνων  
 φθαίῃ ἐπιυξάμεν' ἑταίρων, ὅδ' ἰδύτερος ἔλθῃ  
 δ' ἄρ' ἰδ' ἐπαΐων προσέφη κρατερὸς διομήδης·  
 ἦε μὲν, ἦε σὺ δ' ἄρ' ἐκίχθ' ἔμμεν· ὅδ' ἰδ' ἐκίχθ' ἔμμεν  
 δ' ἄρ' ἰδ' ἐκίχθ' ἔμμεν· ὅδ' ἰδ' ἐκίχθ' ἔμμεν·  
 ἦ ῥά, καὶ ἐγὼς ἀρῆκον· ἐκὼν δ' ἡμῶρτανε φάτος·  
 διξίτιρον δ' ὑπὲρ ὧμον ἔυξος δ' ἄρ' ἔμμεν  
 ἐν γαίῃ ἐπάγῃ· ὅδ' ἄρ' ἔμμεν τῶρ βῆσιν τε  
 βαμβαίον· ἄραβος ὃ σῆξ' ἐσώματος γένετ' ὀδόντων  
 χλωρὸς ὑπαὶ δαίς· τῶ δ' ἄρ' ἔμμεν τε κίχθ' ἔμμεν,  
 χαρῶν δ' ἄρ' ἔμμεν· ὅ δ' ἔμμεν, δακρύσας, ἔπος ἤνυδα·  
 Ζωρηίτ', αὐτὰρ ἐγὼν ἐμὲ λυθῆμαι, ἔσθ' ἄρ' ἔμμεν  
 χαλκός τε, χρυσός τε, πολὺ κμητός τε σίδηρ' ἔμμεν  
 τῶν κ' ἔμμεν χαρίσας πατὴρ ἀπερείσι' ἀποινα·  
 εἴκων ἐμὲ ἴδων πεπύθοιτ' ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν·  
 Τὸν δ' ἀπαμείβετό μιν προσέφη πολὺ μῆτις ὀδυνεύς·  
 θάρσῃ, μὴ δ' ἐπὶ τοι θάνατος κατὰ θυμὸς ἔσθ',  
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ, κ' ἄρ' ἐκίχθ' ἔμμεν  
 πῇ δ' οὕτως ἔμμεν νῆας ἀπὸ στρατῷ ἔρχεται οἷος  
 νύκτα δ' ὀρφνύσας, ὅτ' ἐκίχθ' ἔμμεν ἄλλοι·  
 ἢ τίνα συλήσων νικύων κατὰ τεθνηδόνων;  
 ἢ σ' ἔκτωρ πρόεικε διασπείααδαι ἔκτωρ  
 νῆας ἔμμεν γλαφυράς, ἢ σ' αὖτις θυμὸς ἀνῆκε;  
 Τὸν δ' ἡμείβετ' ἐπὶ φάτος ὀδών, ὑπὸ δ' ἔμμεν γυῖα·  
 πολλῇσι μ' ἀτρησὶ παρικνούον ἢ γὰρ ἐκίχθ' ἔμμεν,  
 ὅς μοι πηλείων' ἔμμεν μῶνυ χας ἴππους  
 δ' ὡς ἐμὲ κατ' ἐννυσε, καὶ ἄρματα ποικίλα χαλκῶ·  
 ἡνώγῃ δ' ἐμ' ἴοντα θοὴν σῆξ' ἐκίχθ' ἔμμεν μέλαινα,  
 ἀνδρῶν δυσμενέων σῆξ' ἐκίχθ' ἔμμεν ἐλθέμεν,  
 ἢ ἐφύλασσιν τε

βῆδ' ἵνα ποτὶ νῆας ἀπὸ στρατοῦ . ὅδ' ἄρ' ἐμῖλλον  
 ἐλθὼν ἐκ νηῶν ἄψ' ἵκρε μῦθον ἀπορίσσειν .  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ ῥ' ἵππων τε , καὶ ἀνδρῶν κάλλιφ' ὄμιλον .  
 βῆ ῥ' αὖ ὁδὸν μεμαώς . τὸν δ' , φρεσὶ το προσιόντα  
 διοχμῆς ὀδυσύνε , διομήδεα δ' προσέειπεν ,  
 οὗτός τοι διομήδεσ , ἀπὸ στρατοῦ ἔρχεται ἀνὴρ .  
 οἷός τοι ἢ νῆαριν ἐπίσχευες ἡμντέρησιν ,  
 ἢ ἵνα συλήσων νεκύων κρατεθενηώτων .  
 ἀλλ' ἐώμειν μιν πρῶτα παρεξιλθὶν πεδίοιο  
 τυτθόν . ἔπειτα δ' ἐκ αὐτῶν ἐπαίξωτό σε ἑλθὶ μὲν  
 καρπαλίμως , εἰ δ' ἄμμι παραφθαίησι πείδιωιν ,  
 αἰείμην ποτὶ νῆας ἀπὸ στρατοῦ προσιφλῆν  
 ἔρχεσθαι ἐπαίγων , μήπως ποτὶ ἄστυ ἀλύξῃ .

Ως ἄρα φανήσαντε , παρέξ ὁδοῦ ἐν νεκύεσσιν  
 κληνθῆναι . ὅδ' ἄρ' ὧσα παρέδραμῃ ἀφραδίῃσιν .  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ ῥ' ἀπὲρ δαγόντ' ἐπίερα πέλονται  
 ἡμιόνων , αἱ γὰρ τε βοῶν προφέρεις ἐραὶ εἰσι  
 ἐλκόμεναι νεοῖο βαθείης πηκτὴν ἄροτρον ,  
 τῷ μὲν ἐπεδραμέτω , ὅδ' ἄρ' ἐστὶ δ' ἔστων ἀκρούσας .  
 ἔλπετο γὰρ κατὰ θυμὸν ἀποσφύζοντας ἐταίρους ,  
 ἐκ βῶων ἵνα πολλὴν ἵκρε δ' ὀρύσσοντο .  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ ῥ' ἀπείσαν δ' ἑρμηνεῖς , ἢ καὶ ἑλαστον .  
 γνῶ ῥ' ἀνδρας δ' ἡμῖν . λατρεῖ δ' ὅ γ' οὐνατ' ἐνώμα  
 φωνέμενοι . βίδο' αἵψα δ' ἰώκην ὥρμηθησαν .  
 ὡς δ' ὅτε κερχάροντε δ' ὡς κύνε εἰδότε θήρης δ'  
 ἢ κμαδ' , ἢ λαγῶν ἐπείχετον ἐμμενὲς αἰεὶ  
 χῶρον αὖ ὑλήενθ' , ἢ δ' ἐτε προθέησι μιμηκῶς .  
 ὡς τὸν , τυδείδης , ἢ δ' ἐπὶ οὐλίπορθο ὀδυαίνε ,  
 λαῶ ἀποτμήξωτε , δ' ἰώκην ἐμμενὲς αἰεὶ .  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ τῶ χ' ἐμῖλλε μιγῆσι δα φυλάκισαι



νύκτε δὲ ὀρφναίῳ, ἀλλὰ κλέγξαντες ἄκυστα·  
 χᾶρε ἣ θεῶν ὄρνιθ' ὀλυαίνης, ἥρᾳ δ' ἀθήνῃ,  
 κλυθί μοι αἰχόχοιο δίδος τέχης, ἥ τέ μοι αἰὲν  
 ἐν πάντεσσι πένοισι παρίσσει, ὅ δ' ἐσέ λήθω·  
 κινύμεν ὅ νῦν αὐτὴ μάλισσά με φίλῃ ἀθήνῃ·  
 δίδος δὲ πάλιν ὧ νῆας εὐκλείας ἀφικέσθαι  
 ῥέξαντας μέγα ἔργον, ὃ καὶ ῥώεσσι μελήσῃ·  
 δυνίτερ ὅ αὐτ' ἥρᾳ βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης,

**Κ**ί κλυθὶ νῦν καὶ ἑμοῖο δίδος τέχης ἀρυτάνῃ,  
 αἰετοῖ μοι ὥς ὅτε παρὶ ἅμ' ἴσσω το τυδείῃ δίδω  
 ἐς θήβας, ὅ τί τε πρὸ ἀχαιῶν ἀγγελεῖς ἔφ·  
 θεὸς δ' ἄρ' ἐπ' ἀσπαῶ λίπε χαλκῆ χίτωνας ἀχαιούς·  
 ὡν τέρ' ὁ μελίχιον μῦθον φέρε καδ' μείοισι  
 κείτ' ἀπὲρ ἀπ' ἀπιδὼν μάλα μέγιστα μέγα ἔργα  
 σὺν θεῖ δῖα θιά, ὅ τί οἱ πρόφρασσα παρίσσει·  
 ὥς νῦν μοι ἐθέλῃ παρίσσει, καί με φύλασσε·  
 θεὸς δ' αὖ ἐγὼ ῥέξω βουὴν ἥνιν δῖον μέτωπον  
 ἀδμήτῳ, ἦν οὐπω ὑπὸ Ἰφιδὸν ἤγαγεσιν ἀνὴρ,  
 τήν κ' ἐγὼ ῥέξω χρυσὸν κίρασιν περὶ χεῖρας·

**Ω**ς ἔφον δὲ χρομῆμοι, τῶν δ' ἔκλυε παλλὰς ἀθήνη·  
 οἷδ' ἐπεὶ ἠρήσαντο δίδος κούρη μεγάλην,  
 βάλν' ῥ' ἱμῶν ἔς τε λείοντε δύνω σὺν νύκτε μέλαινα  
 ἀμφόνον, ἀνέκυας δ' ἰάτ' ἔντα, καὶ μέλαινα αἵμα·  
 ὅ δ' ἐμὴν ἔφ' ἥ ῥῶας ἀγένορας εἶασσαν ἔκτορ  
 εὐδέν, ἀλλ' ἄμυδρις κικλυσκῆτο πῶντας ἀρίστους,  
 ὅσσοι ἔσαν ῥώων ἡγήτορες, ἥ δ' ἐμείδοντο δό,  
 θεὸς, ὅ γε συγκαλίσσας, πυκινὴν ἥρτύνετο βελύχην·  
 τίς κέν μοι τόδ' ἔργον ὑποχόμην ὅ τι λίσσῃ  
 δῶρ' ὧς μεγάλα, μιν δὲ δὲ οἱ ἄρκιος εἶσαι·  
 δῶσθω γὰρ δίδροντε, δύω δ' ἑκαύχνας ἱππῶν

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Ζεύς τ' οὐδ' ἑπομένοιο, καὶ ἐκ πυρὸς αὐθιγόνειον  
ἄμφω νοσήσαιμην, ἵππιδ' ἐπερίοιδ' νοήσας.

Τὸν δ' ἄντε προσέειπε πολὺτλας Διὸς ὀδυσσεύς.

τυδείδῃ, μήτ' ἄρμ' ἑμὸν αἶνε, μήτε μιν εἴκη.

εἰδότες γὰρ οἱ ταῦτα μέτ' ἀργείοις ἀγορεύσας.

ἀλλ' ἴομεν. μολα γὰρ νύξ' ἀνιταί, ἐγγυδίδ' ἥως.

ἄσρα δ' ἡ προέβηκε, παρώχνη δ' ἐπὶ πλέων νύξ.

τῶν δ' ὅ μοιραίων, τεύατ' ἡ δ' ἐπὶ μοῖρα λείπειται.

Ως ἐπὶ νύξ, ὅπλοισιν ἐνὶ δαιμόσιον ἰδύτω.

τυδείδῃ μὲν δῶκε μιν πῶλεμος θρασυμήδης.

φάσχανον ἄμφηκοι, τὸ δ' ἐὼν παρὰ νηυσὶ λείπειται.

καὶ σάκκος. ἀμφὶ δ' οἱ κωίῳ κεφαλῇφιν ἔθηκε.

παυρίῳ, ἀφαιλόν τε, καὶ ἄλσπον, ἥτε κατὰ τυξ.

κίχληται. ῥύεται δ' ἐκ κάρη θαλιρῶν αὐτῶν.

μειλόνης δ' ὀδυσσεὺς δίδωσι βίον, ἡ δ' ἐφ' αἰφύλῳ,

καὶ ξίφος. ἀμφὶ δ' οἱ κωίῳ κεφαλῇφιν ἔθηκε.

ῥινεὺ ποιετήν. πολέσι δ' ἐν πῶλε ἰμῶσι.

ἐν γένετατο σεριῶς, ἐκ πῶλε δ' ἐλκύνοντες.

ἀργεῖοντος ὅς θαμείον ἐχόν' ἐνθα, καὶ ἐνθα.

εἴ καὶ ἐπιστάνων, μέσση δ' ἐνὶ πῶλε ἀρήρ.

τὴν ῥά ποτ' ἐξ ἑλκύνοντος ἀμύντορ. ὁρμηλίδας.

ἐξέλειτ' αὐτόλκως πυκινὸν δόμον ἀντιπύρῳ.

σκαλνδύσαν δ' ἄρα δῶκε κυθηρίῳ ἀμφιδάμοντι,

ἀμφιδάμας δ' ἐμὸν δῶκε ξενύιον εἶν.

αὐτὰρ ὁ, μιν δῶκεν ὅπλοισιν ἐφ' αἰφύλῳ.

τὴν τοῦ ὀδυσσεὺς πύκνους κάρη ἀμφιτεθεῖσιν.

τῶν δ' ἐπὶ οὖν ὅπλοισιν ἐνὶ δαιμόσιον ἰδύτω,

εἴ καὶ ῥ' ἵνα. λιπέτω δ' ἐκτ' αὐτόθι πάντας ἀρίστους.

Ζῆσι δ' ἐξέειπεν ἑκὼν ἑρωδίον ἐγγυδίδ' ὁδοῖο.

παλλὰς ἀθηναίη. Ζῆσι δ' ἐκ ἰδὼν ὀφθαλμοῖσι.

νύκτε

ὅλως ὑποβρίων. τῇ δὲ κτίσας ὅθεν ὁμοῖον.

αὐεῖδ' ἐν δαίτησιν καὶ ἐλαπίνῃσι παρέσσε.

Ως ἐφ' αὐτῷ, οἱ δ' ἄρα πάντες ἀκὴν ἐγένοντο σιωπῇ.

Θῶσιν ὃ καὶ μετέειπε βονὴν ἀγαθὸς Διομήδης

νέσορ, ἐμ' ὀρύνει καρδίη καὶ θυμὸς ἀγῆνωρ,

οὐδὲν δὲ συμμετέωρον εἶναι φασὶν ἑγγύς ἐόντα

• • ῥῶον· ἀλλ' εἴπερ μοι ἀνὴρ ἅμ' ἐποίητο καὶ ἄλλοι,

• • μάλλον θαλπωρή, καὶ θαρσαλεώτερον εἶσαι,

• • σύν τε δύ' ἔρχομένα, καί τε πρὸς αὐτῷ ἐνόησαν,

ὅπως κέρους ἐν . μούνος δ' εἴπρ' τενοήσῃ ,

ἀλλά τε οἱ βράσων τε νόϑ· λεπὴ δ' ἐτε μή τις·

Ω: ἔραθ· οἶδ' ἔθειλον διόμηναι παλαιᾷ ἐπειθεῖα.

ἡ δὲ λέξις αἴαντος δύω θρᾶσσοντες ἄρηθ.

ἤθελε μαιόνης· μάλα δ' ἤθελε νέεστος υἱός.

ἦθ' ἔλεθ' ἀρείδῃς δι' ἐκλυρὸς μενέλαος.

ὁ θελὺς δ' ὁ πλῆμων ὁ δύσμενος καταδύναι ὁμιλῶν

δῶν, αὐτὶ γάρ οἱ ἐνὶ φρεσὶ θυμὸς ἐπόλμα.

οἱ σὶ ᾧ, καὶ μετέπειτα ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.

Τυδείδῃ Διόμνῳ ἐμῷ κίχασιμένε θυμῷ.

τὸν μὲν δ' ἡ' ἑταρόν γ' αἰρήσεται. ὃν κ' ἐθέλησθε

φαινομένων τὴν ἄετιν, ἐπεὶ μεμολασί γε πολλοί.

μή ὅ σὺ γ' αἰσθόμεθα σῆσι φρεσὶ τὸν μὲν ἀρεῖα

καλείπην, σὺ δ' χείρον' ὀπάσσεις αἰδοῦνός κεν.

εις γενεήν ὀρθάν, μή δ' ἐμβασιλεύτερός ἴσιν.

Ως ἔφατ'· ἰδοὺ σοὺ περὶ ξαυθῶ μέμεινάω.

ὅτις δ' ἔστι μετ' ἐπεβοήνῃ ἀγαθὸς δι' οὐμήδης.

αὐτὸν δὲ ἵστασθαι ἐπὶ τὸν ἄλκιμον υἱόν σου·

πῶς ἂν ἔπειτ' Ὀδυσῆος ἐγὼ θείοιο λαθοίμην.

οὐ περί με πρόφρων καρδίη, καὶ θυμὸς ἀγνῶν.

ἐν παντί ἐπιπείθει, φιλεῖ δ' ἐς πολλὰς ἡμέρας

# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἄνδρῶν, ἠδὲ κωῶν, ἀπὸ τῆς σφίσις ὑπνος ἔλαλλον.  
 οἱ τῶν νηδύμος ὑπνος ἀπὸ βλιφάροισιν ὀλώλει  
 νύκτα φυλαατομένοισι κακὴν, πεδίονδε γὰρ αἰεὶ  
 τρέφαθ', ὁππότε ᾤδων αἰοιοιεν ἰόντων.  
 θεὸς δ' ὁ γέρον γέθησεν ἰδὼν, θάρσυνέ τε θυμῷ.  
 καὶ σφίτας φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα.  
 οὐτῶ νῦν φίλα τέκνα φυλάσσετε, μὴ δὲ πνὺν ὑπνῷ  
 αἰρήτω. μὴ χάρμα γνώμεθα δυσμηδέεσσιν.  
 Ως ἐπών, τάφροισι δέσσιν, ἴδ' ἅμ' ἔσσιν.  
 ἀργείων βασιλῆες, ὅθι κεκλήσθω βαλὴν.  
 θεὸς δ' ἅμα μηχανόητος, καὶ νέερος ἀγλαὸς υἱός.  
 ἦισα. αὐτὶ γὰρ κάλιον συμηπιάκωδι,  
 τάφρον δ' ἐκδιβώντο δρυκτὴν, ἐδρίοντο  
 ἐν κατὰρ. ὅθι δὴ νύκτι διεφαίνετο χῶρ' ὅ  
 πιπλόντων. ὅθεν αὐτὶς ἀπετρέπετ' ὄβριμ' ἔκτορ.  
 ὅλυνε ἀργεῖς, ὅτε δὴ περὶ νύξ ἐκάλυψεν.  
 ἔνθα καθεζόμενοι, ἐπὶ ἀλλήλοισι πίφαντο.  
 Τοῖσι δ' ἐμύθων ἦρχε γερήνιος ἱππότης νέεω.  
 ὦ φίλοι, ἔκ' ἂν δὴ τίς ἀνὴρ πεπίθοιτο ὅτ' αὐτῷ  
 θυμῷ ὀλύνουσι μετὰ βῶας μηχανόητος  
 ἔλθοι, εἴ πινά τοι δῖῳ ἐλθὶ ἔχαστόντα,  
 εἴ τινα που καὶ φέμεν ἐν τῷσι πύθοισι,  
 ἅσθ' αὖτε μηχανόησι μετὰ σφίσις ἢ μεμιάσιν  
 αὐτοὶ μὲν παρὰ νηυσὶν ἀπὸ προῦ, ἢ πόλινδε  
 ἄψ' ἀναχωρήθουσιν, ἐπεὶ διαμύσσειτο γ' ἀχαιούς.  
 ταῦτά κε πάντα πύθοισι, καὶ ἄψ' ἐς ὑμῖας ἔλθοι  
 ἀσκηθῆς, μέγα κέν οἱ ὑπεράνιον κλέος εἴη,  
 πάντας ἐπ' ὀνείδωτους, καὶ οἱ δ' ὅσις ἔσται ἐδλή.  
 ὅσοι γὰρ νήεσσιν ἐπηφάτ' ἐσσιν ἄριστοι,  
 τῶν πάντων οἱ ἔκτος οἶν δ' ὄντοσι μέλαινα.

αὐτὴρ ὑπὸ κροῖτισφι τάπης τιτάνυστο φάινός·  
τόν, πὰρ εἰς ἀνέγχευε γερήνιοσι πότα νέωρ,  
λαῖς ποδὶ κινήσας, ὄρωί τε, νέκεις τ' ἀντλῶ.  
ἱγριο τυδῆος ἦέ· τί πωλνιχὸν ὕπνον ἄωτις;  
ἔκ αἶψας ὥς ῥῶδ' ἐπὶ θρωσμέῳ πεδίῳιο

εἴταται ἄγχι νινῶν, ὀλίγος δὲ πρὸς χῶρ' ἱρύνει;  
Ὡς φάθ', ὅδ' ἐξ ὕπνοιο μάλ' ἀκραπινῶς ἀνόρυσσε·  
καί μιν φωνήσας, ἔπεια πηρόντα προσηύδα·  
ἀχίτλι' ἔασι γεραιέ· σὺ μὲν πόνυ οὐ ποτε λήγεις  
οἶνον, καὶ ἄλλοι ἔασιν πεώτεροι ὕμεις ἀχαιῶν,  
οἷκεν ἔπειτα ἔκαστον ἐγείρειν βασιλήωρ  
πάντη ἐπιχώμιοι, σὺ δ' ἀμύχανός ἔσι γεραιέ·

Τόν δ' αὖτε προσέειπε γερήνιος ἱππότης νέωρ·  
καὶ δὴ ταῦτά γε πώντα φίλος κατὰ μοῖραν ἔειπες.  
εἰσὶ μὲν μοι παῖδός ἀμύμονος, εἰσὶ δὲ λαοὶ  
καὶ πρότερος· τῶν, κέν τις ἐπιχώμιον, καλίσσεν,  
ἀλλὰ μάλ' ἀμύμονος χρεὼ βεβήκεν ἀχαιούς·  
νῦν γὰρ δὴ πώντασιν ὧς ξηρὰ ἵσταται ἀκμῆς·  
ἢ μάλ' ἀνιχνὸς ἔλεβρος ἀχαιοῖς, ἢ ἐβίωναι,  
ἀλλ' ἴθι νῦν αἶσαντα τὰ χεῖρ, καὶ τυδῆος ἦδ' ὄν  
ἀνέστην· σὺ γὰρ ἔσιν νεώτερος, εἴ μ' ἔλαϊρες·

Ὡς φάθ' ὅδ' ἀμφ' ὧμοισιν ἔεσπετο δῖος Ἑρμῆς·  
αἶθωνος, μετὰ λαιῶ, ποδὶ νηκίης, εἰλθοδ' ἔρχομαι,  
εἴη δ' ἵεναι, βύς δ' ἐνθεν ἀνασκήσας ἄγειν ἥρας·  
οἶδ' ὅτε δὴ φυλάκισιν ἐν ἀρρομένοισι γένοντο  
ἃ δ' μὲν εὐδόντας φυλακῶν ἡγέτορας ἔειπον,  
ἀλλ' ἱγρηγορτὶ σὺν τεύχεσιν εἴαρ πώντορος·  
ὥς δὲ κύνες περὶ μῆλα δυσσώρηνται ἐν αὐλῇ  
θηρὸς ἀκούσαντο κρατερόφρον', ὅς τι καθ' ὕλιν  
ἔρχεται δὴ ὄρεσφι, πωλὺς δ' ὀρνυγμάδ' ἐπ' αὐτῷ



# ΙΛΙΑΔΟΣ

ἀλλ' ἰομῆρ, κένυς ὃ κιχασόμεθα πρὸ πυλῶν  
 ἐν φυλακῇ· ἵνα γὰρ σφιν ἐπὶ φραδὸν ἡγήρειται.  
 Τόν δ' ἡμείβετ' ἑπτά γερήνιος ἱππότης ἄναρ  
 οὕτως οὕτως οἱ νεμεσήσεται, ὅδ' ἀπιθῇ  
 ἀργείων ὅτε κέν τιν' ἱπποῦνῃ, καὶ ἀνώγῃ.

Ως ἐπὼν, ἐνδύει περὶ σῆθεσι χιτῶνα·  
 ποσὶ δ' ὑπαίλιπαροῖσιν ἐδύσατο καλὰ πέδιλα,  
 ἀμφὶ δ' ἄρα χλοῦναν προνήσαν φοινικίαν,  
 διπλὴν ἐκταδίην, οὐλὴ δ' ἐπενήονθε λάχνη,  
 ἑλκὸς δ' ἄλκιμον ἔγχεος ἀκασχμένον ὀξεί χαλκῷ.  
 βῆ δ' ἵνα κατὰ νῆας ἀχαιῶν χαλκοχιτῶνων  
 πρῶτον, ἐπεί τ' ὀδυσῆα δι' ἡμῖν ἀτάλαυν  
 ἐξ ὕπνου ἀνέγρε γερήνιος ἱππότης ἄναρ,  
 φθεγξάμενος, τόν δ' αἶψα περὶ φρένας ἤλυθ' ἰώθ  
 ἐκ δ' ἦλθε κλισίης, καὶ σφίεσσι πρὸς μῦθον ἔειπε.

Τί φθ' οὕτω κατὰ νῆας ἀνὰ στρατὸν οἷοι ἄλῃαι,  
 νύκτα δὲ ἄμβροσίῳ, ὅτι δὴ χρεὼ τόθον ἴκη;

Τόν δ' ἡμείβετ' ἑπτά γερήνιος ἱππότης ἄναρ.  
 διογενὲς λαβπάδῃ πολυμήχαν' ὀδυσσεύ,  
 μὴ νιμίει· ζῶν γὰρ ἄχος βεβήκειν ἀχαιούς.  
 ἀλλ' εἶπευ, ὄφρα, καὶ ἄλλον ἐγείρομεν, ὅν' ἐπίοικε  
 βυλὰς βυλῶν ἢ φινυγέμεν, ἥε μάχεσθαι.

Ως φάθ', ὁ δ' εἰ, κλισίῳ δὲ κίων πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 ποικίλιν ἀμφ' ὥμοισι σάκκος θέσθαι δὲ μετ' αὐτοῖς.  
 εἴαν δ' ἐπιτυθείδῃ διομήδεα, τόν δ' ἐκίχανον  
 ἐκπρὸς ἀπὸ κλισίης σὺν τεύχεσιν· ἀμφὶ δ' ἐταῖροι  
 ἦσαν· ὑπὸ κρασὶν δ' ἔχον ἀσπίδας· ἔγχεα δ' ἐσφιν  
 ὄρεθ' ὅθι θουρωτῆρ' ἐλήλατο· πῆλε δ' χαλκός  
 λάμψ' ὥς ἀετοπὴ παρὸς διός· αὐτὰρ ὁ γ' ἦρθε  
 ἦδ' ἐπὶ πρῶτον ἐρωτο ῥινὸν ἐοὺς ἀργαυλοῖο.

αὐτὰρ

ἀλλ' εἴπ' ὁραίνεις, ἐπεὶ εἴδ' ἐσέγ' ὕπνος ἰκάνει·  
 Διὲρ ἐς ζυῖς φυλακῆς καταβείομαι, ὄφρα ἴδωμαι  
 μὴ θεῖ μὴ καμολῶ ἀδ' ὁκτότου, ἢ ᾧ καὶ ὕπνω  
 κρημύσωντ'· ἀτὰρ φυλακῆς ἐπιπάγχυ λάθωνται,  
 δυσμυρίοι δ' ἄνδρες χιρδὸν εἴαται εἴδ' ἐπὶ δ' αὖτις  
 μήπως καὶ σέξ' νύκτα μνησιν ἴδωσι μολυβδαί·

Τὸν δ' ἠμείβετ' ἐπείτα γερήνιος ἱππότα νέεωρ·  
 ἀρεῖδ' ἡ κύδιζε ἀναξ ἄνδρῶν ἀγαμέμνονι,  
 οὐθ' ὧν ἐκρεῖ πάντα νοήματα μητιέτα βίης  
 ἐκτελέσθ', ὅσα πονυρὴν εἰλπεται, ἀλλὰ μιν οἶδ'  
 κείδεσι μόχθεσεν καὶ πλείοσιν, εἴκον ἀχιλλεύς  
 ἐκ χόλῳ ἀρχαλίοιο μεταστρέψῃ φίλον ἦτορ·  
 θεὸς δ' μάλ' ἐφομ' ἐγώ· ποτὶ δ' αὖ, καὶ ἐγέρωμαι ἄλλων,  
 ἢ μ' τυδείδῳ δευκακλυτὸν, ἢ δ' ὀδυσῆα·  
 ἢ δ' αἰάντα παχύν, καὶ φυλῆος ἄλκιμον ἦδ' ὄρ·  
 ἀλλ' εἴπ' καὶ ζυῖς δεῖ μετοιχώμεν ὅ· καλέσθων·  
 ἐντίθειόντ' αἰῶντα, καὶ ἴδωμαι ἢ ἀνακτα·  
 τῶν γὰρ νῆες ἔασιν ἑσάκτω, εἴ μ' ἄλ' ἐγγύς·  
 ἀλλὰ φίλον πρὶόντα, καὶ αὐτοῖσι μνηστῆρας,  
 νηκεία· εἴπερ μοι νεμισύσῃ, εἴδ' ἐπικυῖσθαι,  
 ὡς εὔδ'· θεὸς δ' οἶω ἐπὶ βίβ' ἐπὶ νείεσθαι·

νῦν ὄφελον κατὰ πωλῆτας ἀεισῆας πονέεσθαι  
 λισσόμεν'· χρῆδ' γὰρ ἰκάνεται ἐκείτ' ὀνεκτός·

Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἀναξ ἄνδρῶν ἀγαμέμνων·  
 ὦ γέρον, ἄλλο τι μέν σε καὶ αἰπὰ ἀδαι ἀνδρα·  
 πολλὰ γὰρ μεθίδτε, καὶ ἐκ ἐθέλει πονέεσθαι,  
 οὐτ' ὅκνῳ εἴκων, οὐτ' ἀφραδίῃσι νόοιο,  
 ἀλλ' ἐμέτ' ἐθρόων, καὶ ἐμὴν ποτὶ δ' ἐγμῆρος ὄρμην  
 νῦν δ' ἐμὲ προτέρ' ὅ· μάλ' ἐπὶ γέρον, καί μοι ἐπὶ σῇ  
 τὸν μὲν ἐγὼ προέειπα καλὴ μνησθῆναι, οὐδ' σὺ μεταλλῆσαι·

ἔρχομένω . πολλοὶ γὰρ ἀνὰ στρατὸν ἔσι κίλευθοι ,  
 φθιγγο δ' ἔκεν Ἰηδά , καὶ ἔρρηροθαι ἀνωχοί ,  
 παφόου ἐκ γνηῆς ὀνομαζών ἀνδρα ἱκασον ,  
 πάντας κυδαίνων . μὴ δ' μεγαλίηο θυμῷ .  
 ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ περ πονέωμεθα . ὧ δ' εἰ που ἄμμι  
 ζῆς ἐπιγεομένοισιν ἴη κακότητα βαρεῖαν .

Ως ἐπὼν , ἀπὶ πεμπεν ἀδελφεόν , εἴ ἐπιτείλας .

αὐτὰρ ὁ βῆ ῥ' ἵνα μετὰ νέεσσι παρμένεα λαῶν .  
 τόνδ' εὖρον παρά τε κλισίῃ , καὶ νηὶ μελαίνῃ  
 δυνῆ ἱνὲ μαλακῇ , παρὰ δ' ἔντεα ποικίλ' ἐκτό ,  
 ἅπας , καὶ δύο δούρε , φαεινότε τρυφάλεια .  
 πᾶρ δ' ἰωσήρ κείτο παναίολες ὧ ῥ' ὁ γεραιὸς  
 ζῶντο δ' ἔτ' ἐς πολέμον φθισήνορα θαρήσαντο ,  
 λαὸν ἄγων . ἐπεὶ οὐ μὲν ἐπίβριπι γήραϊ λυγρῷ .  
 ὀρθωθεὶς δ' ἄρ' ἐπ' ἀγκῶν , κεφαλὴν ἐπαίρει ,  
 ἀρεΐδῳ προσέειπε , καὶ ξερεϊένεο μύθῳ .

τίς δ' οὕτω κατὰ νῆας ἀνὰ στρατὸν ἔρχεται οἷον ,  
 νύκτα δ' ὀρφναίῳ , ὅτις εὐδυσσι βροτοὶ ἄλλοις  
 ἢ ἐν ἑρῶν διζήμενον , ἢ ἐπὶ ἱταίρων ,  
 φθιγγο , μὴ δ' ἀκέων ἐπ' ἱμ' ἔρχο . τί πη δέ σε χρίω ;

Τόνδ' ἠμείβετ' ἐπείτα ἀναξάνδρων ἀγαμέμνων ,  
 ὧ νέεσσιν ἠληϊάδῃ μέγα κῦδος ἄχαιῶν .

γνώσαιο ἀρεΐδῳ ἀγαμέμνονα , τόν περὶ ποντῶν  
 ζῆς ἐνέκε πόνοισι διαμπερές , ἐσὸς κ' αὐτῇ  
 ἐν σήθεσι μίνη , καὶ μοι φίλα ρεύνατ' ὀρώρῃ .

πλάζομαι ὧδ' , ἐπεὶ οὐ μοι ἐπ' ὄμμασι νήδυμος ὕπνος  
 ἰζάνη , ἀλλὰ μέλ' πόλεμος , καὶ κῆδ' ἄχαιῶν .

ἀνδρῶς γὰρ δαναῶν πίει δειδίδα , ἔδ' εἰ μοι ἦρπ  
 ἔμπεδον , ἀλλ' ἀλύκτῃμαι , κραδίη δ' εἰ μοι ἔξω  
 σθεῖων ἐκβρώσκει . ρομίδ' ὅτ' ὕπο φαίδιμα γυῖα .

ἀλλ'

Τόν, πρότερος προσέειπε βοὴν ἀγαθὸς μινέλαος·  
 Τίφθ' οὕτως ἦεν ἱερύσσεια; ἦ ἔν' ἱταίρων  
 ὀρύνης βῶσται ἐπίσχετον, ἀλλὰ μάλ' αὖτις  
 Δίδω, μὴ οὔ τις βί' ὑπόχεται τόδε ἔργον,  
 ἄνδρας δυσμνέας σκηπιαζέμεν, οἷος ἱπελθὼν,  
 νῦν καὶ δ' ἄμβροσίῳ· μάλα ἔς θρασυκαρδίου ἔστα·  
 Τόνδ' ἀπαμβόμηντο προσέφη κρείων ἀγαμέμνων·  
 χρεὼ βρληῖς ἐμὲ, καὶ σέ, διοτρεφεῖς ὦ μνηστῆρες,  
 κίρδ' αἰεὶς· ἦ ἔς κεν ἱρύσσει, ἦ δ' ἐσάωσται  
 ἀργείης, καὶ νῆας, ἐπὶ δ' ἰδὸς ἑρᾶπτο φρήν,  
 ἱκτορείοις ἄρα μάλλον, ἐπὶ φρένα θῆχ' ἰροῖσιν·  
 ἦ γὰρ πω ἰδόμεν, οὐδ' ἔκλυον αὐδ' ἤεντο·  
 ἄνδρ' ἵνα θάσσε μέρμερ' ἐπ' ἥματι μητίσασθαι,  
 ὅσσ' ἔκτορ' ἑρῶξεν δι' φίλος ἦτας ἀχαιῶν  
 αὐτῶς, οὔτε θιᾶς ἦος φίλος, οὔτε θεοῖο·  
 ἔργα δ' ἔρεξ', ὅσα φημι μελησέμεν ἀργείοισι,  
 δ'ηθάτε, καὶ δολιχόν· τότ' αὖ γὰρ κακὰ μέγατ' ἀχαιούε·  
 ἀλλ' ἴθι νῦν αἶαντα, καὶ ἰδδ' ἄρ' ἡ καλίστοισιν,  
 ῥίμφοι λίων ἐπὶ νῆας· ἐγὼ δ' ὅς νύ τοι εἶπον  
 ἔϊμι, καὶ ὀρυῖω αὖτις μῆσαι, σὺ δ' ἐθέλῃσιν  
 ἔλθειν ἐς φυλάκων ἱερὸν τέλεος, ἦ δ' ἐπιτείλαι·  
 κείν' αὖ γὰρ κε μάλιστ' αὖτις πυθοίαν, βίτο γὰρ ἦος  
 σημαίνει φυλάκας, καὶ ἰδδ' ἄρ' ἡ καλίστοισιν  
 μηριόνης· βίτοισιν γὰρ ἐπεβάλλον γὰρ μάλιστ' αὖτις·  
 Τόνδ' ἠμείβετ' ἔπειτα βοὴν ἀγαθὸς μνηστῆρας·  
 πῶς γὰρ μοι μῦθος ἐπιτέλλεται, ἦ δ' ἐκελεύεις·  
 ἄνθι μὲν μετὰ βίτοισιν δειδυγμένος εἰσέκου' ἐλθέης,  
 ἦε θίω μετὰ σ' αὖτις, ἐπὶ νῦν βίτοισιν ἐπιτείλει·  
 Τόνδ' αὖτε προσέφητο ἀναξὺς ὦ δρῶν ἀγαμέμνων,  
 ἄνθι μὲν, μὴ πῶς ἀβροταξομένη ἀλλήλοισιν

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

τοῦ χάρη ἢ πολὺν ὄμβρον ἀθίσφατον, ἢ χαλάσσει,  
 ἢ νιφιδόν· ὅτι πέρι χιῶν ἐπέλωσεν ἄρουρας,  
 ἢ πῶθι πηλὲ μοιο μέγα σόμα πδουκιδανοῖο,  
 ὡς πυκὴν ἐν σήθεισιν ἀνεσπνάχιζ' ἀγαμέμνων  
 νεόθου ἐκ κραδῆς, προμείοντο δ' οἱ φρένες ἐν τῷ.  
 οὔτοι ὅτ' ἐς πιδίον τὸ βωϊκὸν ἀβρύσει,  
 θαύμαζι πυρὰ πολλὰ, τὰ καί τ' ἰλιόθι πρὸ  
 αὐλῶν, συρίγγωντ' ἐνοπῆν, ὁμαδόντ' ἀνθρώπων.  
 αὐτὰρ ὅτ' ἐς νῆας τε ἴδοι, καὶ λαὸν ἀχαιῶν  
 πολλὰς ἐκ κεφαλῆς προθελύνοντας ἑλκεὺς χαίτας  
 ὑψόθ' ἰόντι διί· μέγα δ' ἔστιν κυδάλιμον κῆρ.  
 οὐδ' οἱ κατὰ θυμὸν ἀρίστη φαίνετο βελύχ,  
 νίσσορ ἐπὶ πρῶτον νηληϊῶν ἐλθέμεν ἀνδρῶν,  
 εἴ τινα οἱ σὺν μῆτιρ ἀμύμονα τακτῆνατο,  
 ὅστις ἀλιξίνακτος πᾶσι δῶναοῖσι γένοιτο.  
 ὁρθωθείς δ' ἐνδῶν περὶ σήθεισι χιτῶνα.  
 ποσσὶ δ' ὑπαὶ λιπαροῖσιν ἐδήσατο καλὰ πέδιλα,  
 ἀμφὶ δ' ἔπασσε διαφοινδὸν ἱστατὸ δέρμα λείοντα  
 αἰθωνος, μέγαλοιο, πωδῶν κίε· ἔλθο δ' ἔρχεσθ.  
 ὡς δ' αὐτῶς μονέλαον ἔχ' ἑρόμος· οὐδ' ἐγὼ αὐτῷ  
 ἔπνος ἐπὶ βλεφάροισιν ἐφίζανε μήτι πάθοισιν  
 ἀργεῖοι· τοί δ' ἠΐθεον ἔννεπα πάλυν ἐφ' ὕρην  
 ἔλυθον ἐς ῥοίῳ πόλεμον θρασὺν ὁρμαίνοντο.  
 παρδάλειν μὲν πρῶτα μετὰ φρεσὶν ὄβρυ κάλυψαι  
 ποικίλῃ, αὐτὰρ ἐπὶ σιφῶνιν κεφαλῇφιν αἶερας  
 θύεσθαι χαλκείῳ ὄβρυδ' ἔλθο χειρὶ παχείῃ.  
 οἷ δ' ἴμεν ἀνέσσαν, ὅρ' ἀδελφεόν, ὅς μέγα πῶντων  
 ἀργείων ἦνασι θιόε δ' ὡς τίς ποδὶ μῶ.  
 τὸν δ' εὖρ' ἀμφ' ὥμοισι πηδύμενον ἔννεπα καλὰ  
 νηὶ παρὰ πρὶν μνη, ἔπει δ' ἀπαάσις γένητ' ἰλθόν.



παρκαλίμους πρὸ νεῶν ἔχέμεν λαόν τε, καὶ ἵππους  
 ἔρυνδον, καὶ δ' αὖτὸς ἐνὶ πρῶτασι μάχεσθαι.  
 ὦς ἔφαθ', οἳ δ' ἄρα πάντες ἐπήνεσαν βασιλῆες,  
 μῦθον ἀγαυάμηνον διομήδεος ἱπποδάμοιο.  
 καὶ τότε δ' ἠσπίδων τοὺς ἔβαν κλισίῳ δὲ ἔστασαν  
 ἔνθα δ' ἐκείμεθ' ὤμων, καὶ ὕπνῳ δ' ὤρεον ἔλπιον.

ΥΦΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Κ. ΟΜΗ-  
 ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

2 Γαμίμενον ἀργυπνήσας, ἀνίστησι τοὺς ἀρίστους τῶν ἑλλή-  
 νων, αὐτὸς τε, καὶ μὲνέλαος. καὶ ἐπὶ τῆς τάφρου βελί-  
 στάμηνον, πέμπουσι κατὰ σκέπας εἰς τὸ τ' ἔρωτον στρατοπέδον,  
 ἑδυσάεα, καὶ διομήδεω. οἳ, δὴ δὶ δὴνα μὲν σιωπῶντες ὄντες,  
 ἀναρῶσι. πυθόμενοι δὲ παρ' αὐτ' ῥῆσόν τινα, καὶ θρόνον πα-  
 ρεῖναι ἐνθα ἐστράτευσαντες, ἀπελθόντες δολοφρονέουσι. καὶ  
 τοὺς ἵππους ἀπελάσσαντες εἰς τὸν ναύσταθμον παραγίνονται.

ΙΛΙΑΔΟΣ Κ. ΟΜΗΡΟΥ  
 ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Κάπαδ' ἄρ' ἀμφοτέρωθεν σκοπιάζετε ὕλυσθον ἄνδρες.

2 Αἰεὶ μὲν παρὰ νηυσὶν ἀειπῶ  
 παναχαῶν,  
 εὐδὸν παννύχιοι μαλακῶ δ' ἰδὲ μὲν  
 μένοι ὕπνῳ.

ἀλλ' οὐκ ἄρ' εἰδὼ ἀγαμίμενον αἰσιμένον λαόν  
 ὕπνος ἔχει γλυκερός. πολλὰ φρεσὶν ὀρμαίνοντες  
 οἳ δ' ὅτ' ἄρ' ἀσπράττει πόσις ὕψης ὑψόμοιοι

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

κείνῳ δ' οὐκ ἐθέλει σβῆσαι χόλον, ἀλλ' ἔτι μάλλον  
 συμπλάνηται μιν ἑσέ. σὲ δ' ἀναινέται, ἥ δ' ἐσὰ δ' ὄρα  
 αὐτόν σε φράζειν ἅμα ἀργείοισιν ἀνώγει,  
 ὅπως κεν νῆας τε σόοις, καὶ λαὸν ἄχαιων.  
 αὐτὸς δ' ἠπιήσων ἅμ' ἠοῖ φανομένηφι  
 νῆας ὑπ' αἰλμυς ἄλας, ἐλκείμην ἀμφιελίσσας·  
 καὶ δ' ἄρ' τοῖς ἄλλοισιν ἔφη παραμυθεσάμενος  
 οἷκαδ' ἀποπλείειν, ἐπεὶ οὐκ ἐδίδεκε τέκμορ  
 ἱλίσσασθαι νῆας· μάλα γὰρ ἔθεν ὑρὺς οὐρα βύθῳ  
 χεῖρα ἡν ὑπὲρ ἔχει, τεταρσύνεσσι δ' ἰλαοί.  
 ὣς ἔφατ', εἰσὶ καὶ οἶδ' ἅπαντες ἐπὶ μῆν', οἷμοι ἱπποῖ.  
 αἶας, καὶ κήρυκα δῖον πεπνυμένω ἄμφω.  
 φοῖνιξ δ' αὖθ' ὃ γέρον κατεκίετο, ὡς γὰρ ἀνώγει,  
 ὅφρα οἱ ἐρνήσας φίλῳ ἐς παρὶδ' ἔπηται  
 αὖτις ἦν ἐθέλῃσιν ἀνάγκη δ' οὐ π μιν ἄξει.  
 ὣς ἔραβ', οἶδ' ἄρα πάντες ἀκὴρ ἐγένοντο σιωπῇ,  
 μῦθον ἀγαυὰ μῆνοι· μάλα γὰρ κρατερῶς ἀγρόευσεν  
 δῆρ δ' ἀνὰ ἥσσαν τετιηότο ὕψις Ἀχαιῶν.  
 ὅτε δ' ἡ μετίεπε βοήν ἀγαθὸς Διομήδης·  
 Δρυῖδ' ἡ κύνεισε ἀναξ ἀνδρῶν ἀγάμεμνον,  
 μὴ ὄφελος λίσσασθαι ἀμύμονα πηλείωνα,  
 μυρία δ' ὦρα δειδούς, ὃ δ' ἀγένην ἔσι καὶ ἄλλων  
 νῦν δυνμιν πολὺ μάλλον ἀγλωρόησιν ἐν νῆας.  
 ὅλλ' ὅτοι κείνορ μῆν' ἐάθ' ὡς, ἢ κεν ἴησιν,  
 ὅκε μιν· τότε δ' αὖτε μαχέσεται ὁπότε κέρ μιν  
 θυμὸς ἐνὶ στήθεσιν ἀνώγει καὶ θεὸς ὄρσῃ.  
 ἀλλ' ἄγεθ' ὡς ἄρ' ἐγὼ ἵπῳ, παθώμεθα πάντες  
 νῦν μῆν' καί μιν σάδ' ἐτιταρπόμενοι φίλον ἦτορ,  
 σίτη, καὶ οἶνοιο· τὸ γὰρ μιν ἑσέσι καὶ ἀλκή.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ καὶ φανή καλὴν ἔροτο δακτύλῳ ὕψι

ἀφ' ἧς ἐστὶν ἀτήμητον μετόπισθε.  
 ἀλλ' ὑμεῖς ἔρχεσθε, καὶ ἀγγελίῳ ἀποφασί.  
 οὐ γὰρ πρὶν πολέμοιο μεδ' ἔθμοα αἵματόωτ.  
 πρὶν γ' ἡδὲ πριάμοιο διαίφρονος ἑκθραδίον  
 μυρμιδόνων ἐπίτῃ κλισίας, καὶ νῆας ἰκίωθι  
 κτήνοντ' ἀργείας, κατὰ τῇ σμύξαι πυρὶ νῆας.  
 ἀμφὶ δ' ἐτοίτῃ μῆ κλισίῃ, καὶ νηὶ μελαίνῃ  
 ἑκθρα καὶ μεμαῶτα μάχης ὀφείδῃ οἴω-  
 νος ἑφ' αἱ, οἱ γ' ἕκαστος ἑλὼν δ' ἐπ' αἱ ἀμφικύπελλον,  
 ἀπείσωντό, παρὰ νῆας ἴσων πάλιν, ἔρχεσθ' ὀδυσαδύς.  
 πάροκλος δ' ἰτάροισιν, ἰδὲ δ' ἡμῶσι κέλευσε  
 φοίνικι σφρίσσαι πυκινὸν λείχεσθ' ὅ, τ' ἰτάρους.  
 αἰδ' ἐπιπεθόμηναι, σφρίσσαι λείχεσθ' ὅ, κέλευσε,  
 κώϊα τε, ῥῆγος τε, λίνιοι τε λειπὼν ἄωτον.  
 ἐνθ' ὁ γέρων κατέλεικε καὶ ἡδ' ὅ, ὅ, ἑμιμνον.  
 αὐτὰρ ἀχιλλεύς, ὅ, μυχῷ κλισίης δ' ὑπὸ κτε.  
 ἑλὼν δ' ἄρα παρκατέλεικε γυνή, τ' ἑλίσσεται ἡγε-  
 φόρβωτ' ὅ, θυγάτηρ διομήδῃ καλλιπάρῃ.  
 πάροκλος δ' ἰτέρωθεν ἑλίσσεται, παρ δ' ἄρα καὶ ἑλὼν.  
 ἴφρις ἐν ἴωνος, τῆρ οἱ πόρε δ' ἴος ἀχιλλεύς,  
 σκῆρον ἑλὼν ἀπὸ πύργου ἐν νῆος πηλοίβρον.  
 οἷδ' ὅ, τῃ κλισίῃσιν ἐν ἀφείδω γένοντο,  
 τὸς, μὲν ἄρα χρυσίοισι κυπέλλοις οἷς ἀχαιῶν  
 διαδέχεται ἄλλοθεν ἄλλος ἀνασταδόν, ἑκτ' ἐρίοντο.  
 ἡρώτος δ' ἐξέρχοντο ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἡπ' ἀγέμ' ὅ, πολύσαν' ὀδυσαδύ, μέγα κῦδος ἀχαιῶν.  
 ἡ δ' ἐθέλει νῆας ἰν' ἀμυνέμεναι δ' ἡττον πύρ,  
 ἡ ἀπείπει, χόλος δ' ἐτ' ἔχει μεγαλήθρα θυμόν.  
 ἡ δ' ἄντι προσέειπε πολύτλας δ' ἴος ὀδυσαδύς.  
 ἡ δ' ἰδὲ κῦδ' ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὄντ' ἐνὶ μελακῇ, ἅμα δ' ἡοῖ φανομένηρι,  
φραστόμεθ' ὅ κ' ἐνὶ νῆαίς ἐφ' ὤμιτις, ὅ κε μιν ὠρεῖται  
καὶ παρὸν κλῶ δ' ἐπ' ὀφρύσι νύσσει σιδηρῇ  
φοίνικι σπρίσαι πυκινὸν λίχος, ὅφρα τὰ χιῖτα  
ἐκ κλισίης νόστοιο μιν δ' ἰάβ', τοῖσι δ' ἄρ' αἶα  
εὐπύθιος τελαμωνιάδης μετὰ μῦθον ἔειπε.

Διογενὲς λαερπώδην πολυμήχαν' ὀδυνάδ',  
ἴομαι. οὐ γάρ μοι δοκίει μῦθοιο τελευτῇ.  
τῇ δ' ἐγὼ δ' ὀφ' κροαίεσσι, ἀπαγγίλλαι δ' ἐτάχισα  
χρὴ μῦθον δ' αὐναοῖσι καὶ οὐκ ἀγαθὸν περ ἰόντα  
οἷ' περ νῦν ἱατὴ πονεῖν ἔμμενοι, αὐτὰρ ἀχιλλεύς,  
ἄριστον ἐν σῆθεσι θείῳ μεγαλήτορα θυμόν,  
ἐχέτλιος, οὐδ' ἐμεταβίπεται φιλότμος ἱταίραν,  
τῆς, ἣ μιν παρὰ νηυσὶν ἐπόμειν' ἔξοχον ἄλλων.  
νηλὺς καὶ μῦν τίς τε πασηνῆτοιο φθόιοιο  
πρηνὴν, ἢ οὐ παιδὸς ἐδ' ἐξέχ' ἔχθρα δ' ἔσται.  
καί ῥ' ὁ μῦν, ἐν δ' ἡμῶν μέν' αὐτῇ πόλ' ἀποτίσας.  
τῷ δ' ἐγὼ ἱερητύττα κραδίη, καὶ θυμὸς ἀγῆνωρ,  
πρηνὴρ διεξαμένε, θίδ' ἄλληκτόν τε, πακὸν τε  
θυμὸν ἐνὶ σῆθεσι θεοὶ θέσσαν εἴνεκα καύρης  
οἷης, νῦν δ' ἐτοί' ἐπὶ ἀπαρίχομην ἔξοχ' ἀρίσται,  
ἀλλὰ τε πόλ' ἐπὶ τῇσι· σὺ δ' ἱλαορ' ἐνθεο θυμόν.  
αἰδέσασαι ὃ μέλαθρον, ὅπως ῥοφῶσι δ' ἐτοί' ἐμῶν  
πληθύς ἐκ δ' ὡσάων μέμαμην δ' ἐτοί' ἔξοχον ἄλλων  
κῆδισοί δ' ἐμῶν, καὶ φίλτατοι, ὅσσοι ἀχαιοί.  
Τόν δ' ἀπαμειβόμενον, προσέφη πόδας ὠκύν' ἀχιλλεύς.  
εἴσω Διογενὲς, τελαμώνιη, καίραν λαῶν,  
πάντα τί μοι κατὰ θυμὸν εἴσω μυθήσασθαι.  
ἀλλὰ μοι οἰδάνετα κραδίη χόλῳ, ὅππῃ τ' ἐκένω  
μνέσμεναι, ὅς μ' ἀσφύνητον ἐν ἀργείοισιν ἔριξον  
ἀργείῃ.

πρὶν γ' ὅτι δ' ἡ θάλαμος πύκα βάλλετο, τοῖδ' ἐπὶ πύρρῳ  
βαῖον κερήτοβ· καὶ ἐνέπρηθον μέγα ἄστυ. (χωί

καὶ τότε δ' ἡ μελίσσρον εὐζωντο παρὰ κρηπίς,  
λίαντ' ὀδυρομένη, καὶ οἱ κατέλιξον ἅπαντα  
κῆδε, ὅσ' ὀνυξώποισι πέλει, τῶν ἄστυ ἀλῶν.  
ἄνδρας μὲν κτείνεσι, πόλιν δ' ἐτε πῦρ ἀμαθύνει,  
τίκνα δ' ἐτ' ἄλλοι ἄγασσι, βαθυζώνες τε γυναικας.

τῷ δ' ὀρίνθω θυμὸς ἀκρόοντο κακὰ ἔργα.  
βῆ δ' ἰέναι· χροῖδ' ἐντὶ ἰδύσατο παμφανόωντα.  
ὅς δ' μὲν αὐτῶν σὺν ἀπύμῳ κακὸν ἦμαρ,  
εἶξας ὦ θυμῷ, βρῶ δ' οὐκ ἐν δ' ὦρ' ἐτίλειαν  
πολλάττε καὶ χαρίαντα· κακὸν δ' ἔμμεν καὶ αὐτῶς.  
ἀλλὰ σὺ μή μοι ταῦτα νόσφι φρεσὶ· μή γ' σε δαίμων  
ἐνταῦθα φέψῃ φίλος· κάκιον δ' ἐκὼν εἶη  
νῆυσί· καί μοι ἐν σὺν ἀμυνέμεν, ἀλλ' ἐπὶ δ' ὥροις  
ἔρχο· ἴσον γάρ σε θεῶν ἴσους σὺν ἀχαιοί.  
ἔδ' ἐκ' ἀτρεδῶρων πόλεμον φθισέμεν δ' ὕμης.  
οὐκ ἐδ' ὁμῶς ὑμῆς ἔστω· πόλεμόν περ ἀλαλκῶν.

Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος, προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·

φοῖνιξ ἄτ' ἀγχαί, διοφίεις, οὐδ' ἐμὲ ταύτης  
χρῶ ὑμῆς· φρονέω γ' τιμῆσθαι δῖος Ἄστυ,  
ἔμ' ἔξω παρὰ νηυσὶ κερωνίσιν, εἰς ὅκ' αὐτὸς  
ἐν εἴθεσι μίνη· καί μοι φίλα γούνατ' ὀρώρη.  
ἄλλο δ' ἐτ' ἐρίω, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλετο σῆσι.  
μή μοι σύγχε θυμὸν ὀδυρόμενος, καὶ ἀχλύων,  
ἄφραδ' ἢ ἤρωι φέρων χάριν, οὐ δ' ἐπεὶ σε χρεῖ  
τὸν φίλιν, ἵνα μή μοι ἀπέχθηναι φίλιον.  
καλὸν τοι σὺν ἐμοὶ τὸν κῆδον, ὅς κε με κῆδε.  
ἴσον ἐμοὶ βασιλῆος, καὶ ἔμισον μεῖριο ὑμῆς.  
οἳ τοῖδ' ἀγγλίσσιν, σὺ δ' αὐτόθι λίσσιν μίμνηται.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Πλάδ' ὅς κ' ἄρ' ἔστος ἐπιχθονίῳ γένει' ἀνδρῶν,  
 τῶν τότε καὶ ῥ' ἀνακτὸς ἐναντίον εἴλωτο τόξον  
 φοῖβε ἀπόλλων' ὅ, καλίσφύρε' ἐννεα νύμφης.  
 τήν, ὅ τ' ἐν μεγάροισι πατήρ, καὶ πότνια μήτηρ,  
 ἄλκυνόν τε καλίσκον ἐπώνυμον· οὐνεκ' ἄρ' αὐτῆς  
 μήτηρ ἄλκυνόν' ὅ πολυπαθέος οἴῳ ἔχουσα  
 ἡλαί', ὅτε μιν ἐκάεργος ἀνὴρ πασὶ φοῖβος ἀπόλλωνι,  
 ὅ γε παρκατέλεκε, χόλην θυμολογία πίεσσαν  
 ἐξ ἄριων μὴδὸς κεχολωμένῃ· ἣ ῥα θεοῖσι  
 πόλλ' ἀχέουσ', ἥρ' αὖτε κασιγνήτιο φόνειο,  
 πολλὰ δ' καὶ γαῖαν πολυφόρβω χερσὶν ἄλσ' ἴα  
 κινηήσκουσ' αἰῶνι, καὶ ἐπ' αὐτῇ περσιφόνειαν.  
 πρόχυνε καθύομένη δούοντο δ' ἄκρυσσι κόλποι,  
 παιδὶ δούμῳ θάνατον· τῆς δ' ἠεροφοῖτος εἰνυῖς  
 ἔκλυον ἐξ ἐνέδουσφιν, ἀμείλιχον ἦτορ ἔχουσα.  
 τῶνδε τὰχ' ἀμφὶ πύλας ὁμαδ' ὅ, καὶ δ' ἄπο δ' ὀρώρεα,  
 σύρρων βαλλομένων· τόνδ' ἐλίσσοντο γέροντες  
 αὐτωλῶν, πέμπον δ' ἑωῖν ἱερῆας ἀρίστους  
 ἐξελθεῖν, καὶ ἀμύναι ὑποχόμῃ μοι μέγα δῖον.  
 ὁπποῖθι πίοτατόν πεδίοι καλυδῶνος ἐραυνῆς·  
 ἐνθάμιν ἦτορ γορτίμην ὅ περικαλλεῖς ἐλίδου  
 πεπτηχεν τόγῃον· τὸ μὲν ἡμισὸ οἶνοπέδιο,  
 ἥμισυν δ' ἑφίλην ἄροσιν πεδίοιο ταμίειαι.  
 πολλὰ δ' ἐμιν λιπάνευε γέρον· ἱππῆλτα οἶνοπέδιο,  
 εὐδ' ἔπεμβε δ' αὖτε ὑφ' ἡρεφίος θαλάμοιο,  
 σείων καλλητὰς στανίδας, γυνούμην ὅ ἦον.  
 πολλὰ δ' ἐτόν γε πασίγνηται, καὶ πότνια μήτηρ,  
 ἐλίσσοντο δ' ἐπ' αὖτε, μᾶλλον ἀναίνετο, πολλὰ δ' ἱταῖροι,  
 οἳ δὲ κινητότατοι, καὶ φίλτατοι ἦσαν ἀπάντων.  
 ἀλλ' οὐδ' ὅς τ' ἐν θυμῷ ἐνὶ στήθεσιν ἔπειθεν.

ὅς ἦν· ἔνθ' ὁ μῆν' ἔρ' ἐω πάντας φιλῶσι·  
 κυρῆτόδ' ἔμαχοντο, καὶ αὐτοῖσι μὲν χάρμης  
 ἀμφὶ πόλιν καλυδῶνα, καὶ ἀλλήλους ἐνέειπον·  
 αὐτοῖσι μὲν ἀμωμόμοι καλυδῶν' ἔρανοντες,  
 κυρῆτες δ' ἐδιαπραβέον μεμαῶτόδ' ἀρήν·  
 καὶ γὰρ τοῖσι κακὸν χρυσόβροντο ἄρτιμιν ὄρσε  
 χλωμέην· ὃ οἱ οὔτι θαλύσια γοῶντο ἄλωής·  
 οἰνῶς ῥέξ', ἄλλοι δ' ἐθεοὶ δαίνυντο ἱεσσύμενας·  
 οἷον δ' οὐκ ἔρρεξε δῖος κούρη μέγ' αἰετο·  
 ἢ λωβήν, ἢ οὐκ ἐνόησεν, ἀάλα δ' ἐμείγα θυμῷ·  
 ἠδ' ἐχλωμέην δῖον γένος ἰοχέαιρα,  
 ὅρσεν ἐπὶ χλούνῳ σὺν ἄγχιον ἀγριοδόντα,  
 ὅς κακὰ πολλὰ ἔρδεσκον ἔθον οἰνῆος ἀλωῦ·  
 πολλὰ δ' ὄγε προθέλυμνα χαμαὶ βάλε δῖν' ὄφρα μακρῇ  
 αὐτῆσιν ῥίψῃσι, καὶ αὐτοῖς ἀνθεσι μέλαν·  
 τόνδ' ἦος οἰνῆος ἀπέκτενον μελίσσας  
 πολλῶν ἐκ πολλῶν θηρήτορας ἀνδρας ἀγέρας,  
 καὶ κύνας, οὐ μὲν γὰρ κ' ἰδὲ μὴ παύροισι βροβύσιν  
 τόπος ἔσω· πολλοὺς δ' πυρρῆς ἐπέβησ' ἀλεγεινῆς·  
 ἦ δ' ἀμφ' αὐτῷ θῆκε πολὺν κίλαδον, καὶ αὐτῷ  
 ἀμφὶ σὺν δὲ κεφαλῇ, καὶ δ' ἐρματι λαχύνοντι,  
 κυρῆτορ τε μισσηγύ, καὶ αὐτοῶν μαγαθύμοι·  
 ὄφρα μὲν δῶν μελίσσας ἀρήφιλος πολέμιζε,  
 τόφρα δ' ἐκρῆτεσι κακῶς ἦν· οὐδ' ἰδύναντο  
 τέχνης ἐκτοδὲ μίμνην, πολέεις περ ἰόντο·  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠ' μελίσσας ἰδὺν χόλως· ὅς τε καὶ ἄλλων  
 οἰδάνη ἐνὶ σήθεισι νόον πύκα περ φρονέοντων,  
 ἦτοι ὁ, μὴτ' ἐφίλη ἀλθαίῃ χροόμενον κῆρ,  
 κείτ' ἀπὸ μνηστῆ ἀλόχῳ καλῇ κλισίῳ παρῇ,  
 κούρη μαρπίσας καλλισφύρον ἐνὶ γήϊνῃ,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

11 τῶν, περ καὶ μέγιστον ἄριτον, πρῶτον, βίαι·  
 καὶ μὴν τοὺς, θυίεσσι, καὶ δὲ χολῆς ἀγανῆσι,  
 τοῖσδε τε, κνίωσσι, παραρῶπ' ἄνθρωποι  
 λισσόμενοι, ὅτε κέρη τις ὑπερβῇ, καὶ ἀμάρτυ·  
 καὶ γὰρ τε λιταί εἰσι διὸς κῆρυ μάλασι,  
 χαλαί τε, ῥυθίει, παραβλῶπες τ' ὀφθαλμοί,  
 αἱ ῥά τε καὶ μετόπι' ἄτης ἀλέγυσσι κίεσαι·  
 ἥ δ' ἄτη, διευαρήτι, καὶ ἀρτίποις, οὐνεκα πάσαι  
 πολλοὶν ὑπεκκηροῖσι, φθάνει δέ τε πάσων ἐπ' αἰῶνα  
 βλάπῃσ' ἄνθρωπος, αἰδ' ἔξακίοντα ὀπίσσω·  
 ὅς μιν τ' αἰδῆσεται κούρας διὸς ἑσπερος ἰούσας,  
 τύχῃ μιν ὠνησάσθαι, καὶ τ' ἑκλυον διζαμένους·  
 ὅς δ' ἐκ' ἀνήνηται, καὶ τε σερπ' ἀποείπῃ,  
 λίπονται δ' ἄρα ταίγε διακρονίονα κίεσαι,  
 τοῖσδε, ἄτῳ ἄμ' ἐπιδαί, ἵνα βλαφθεῖσι ἀποτίσῃ·  
 ἀλλ' ἄχι λυθ', πόρῃ καὶ σὺ διὸς κούρησιν ἐπιδαί,  
 τιμῇ, ἥ τ' ἄλλων περ ἐπιγνώμῃσι νόον ἐδιδῶν·  
 ἢ μὴν γὰρ μὴ δ' ὦρα φέροι, τάδ' ὅπιδ' ὀνομάζοι  
 ἀφείδης, ἀλλ' αἶν' ἐπιφειδ' χαλιπαῖνοι  
 οὐκ ἄρ' ἐγὼ γέ σε μῆνιν ἀπορρήψωτα, κελσίμω  
 ἀργείοισιν ἀμυῖμω κατ' ἐνσί περ ἑμῆς·  
 νῦν δ' ἄματ' ἀντήκα πολλὰ διδῶν, τάδ' ὅπιδ' ὑπὲρ  
 ἀνδρας δέ λίσσεται ἐπιπυθίηκεν ἀρίστους,  
 κρινάμεν' κατὰ λαὸν ἀχρεῖς κόνει' τοῖσδε αὐτῶν  
 φίλτατοι ἀργείων, τῶν μὴ σύγ' αὖ μῦθον ἐλέγξῃς,  
 μὴ δέ πόδες, πρὶν δ' οὔτι νειωσῆτον κεχολῶν·  
 οὔτω καὶ τῶν πρόθεν ἐπυθόμεθα κλῆα ἀνδρῶν  
 ἡρώων, ὅτε κέρη πῦν ἐπιφάφιδος χόλος ἵκησι,  
 δρωετοί τε πέλας, παραρρητοί τ' ἐπείασι·  
 μέμνημαι τόγ' ἐργον ἐγὼ πάλα, οὔτι νειωσῆ

αἰσώμενοι, πένοντο σχε φλογὸς ἑφαίσιοι.

πολλὸν δ' ἐκ κειράμων μέθυ πίνοντο τοῖσι γέροντι.

εἰνάνυχον δ' ἐμοὶ ἀμφ' αὐτῷ παρὰ νύκτας ἴαμον.

οἱ μὲν ἀμνησόμενοι φυλακὰς ἔχον, οὐ δ' ἐπὶ τ' ἔσβη

πῦρ, ἵτερον μὲν ὑπ' αἰθούσῃ δύνεικε, αὐλῆς,

ἀλλ' ὅ δ' ἐνὶ προσόμῳ, προσόθεν θαλάμοιο θυράων,

ἀλλ' ὅτε δὴ δικάτη μοι ἐπέλυθεν ὕξ ἱεβεῖν ἡ,

καὶ τότε γὰρ θαλάμοιο θύρας πυκινῶς ἀραρυίας

ῥύξας, ἱξήλθον, καὶ ὑπερθορὸν ἔρκιον αὐλῆς

ῥῆτα, λαβῶν φύλακὰς τ' ἀνδρας, δ' ὡς αὖτε γυναικας

φούρον, ἔπειτ' ἀπάνδυνον δ' ἑλλάδος δύνυχόροιο,

φθίω δ' ἐξικόμην ἐλβώλαια μητέρα μήλων.

ἔς πηλῆα ἀναχθ', ὅ δ' ἐμὲ πρόσφρων ὑπέδεκε,

καὶ με φίλησ', ὥς αἶτε πατήρ ὅν ποῦδε φιλέσῃ

μῆνον, τηλὺν φρον πολλοῖσιν ἐπὶ κτιάταισι.

καὶ μ' ἀφνειὸν ἔθηκε, πολὺν δ' ἐμοὶ ὥπασε λαόν,

ἰαῖνον δ' ἔχατιν φθῆς, δολοπίαν ἀνδρῶν.

καὶ σε τοσούτῳ ἔθηκε θεοῖς ἐπικέκλ' ἀχιλλεύ

ἐκ θυμῷ φιλέων, ἐπὶ οὐκ ἐθέλει σκῆπτρ' ἄλλω

οὐτ' ἐς δαῖτ' ἵνα, οὐτ' ἐν μεγάροισι πάσαισι,

πρίν γ' ὅτε δ' ἦσ' ἐπ' ἑμοῖσιν ἰγὼ γούνασι καθίσαι

ἔπειτ' ἄσσυμι προταμῶν, καὶ οἶνον ἐπιχώρ.

πολλάκι μοι κατ' ἐδύσας ἐπὶ εἴθεσι χιτῶνα

ἔγχε ἀποβλύζον ἐν νηπίῳ ἀλιγεῖν ἡ

ῶς ἐπὶ σοὶ μάλα πόλλ' ἔπαθον, καὶ πόλλ' ἐμὸν ἦτο

τὰ φρονέων, ὅ μοι οὐτ' οἱ θεοὶ χέρον ἐξέτελλον

ἐξ' ἐμὸν, ἀλλὰ σε παῖδα θεοῖς ἐπικέκλ' ἀχιλλεύ

πυλὸν μὲν, ἵνα μοι ποτ' ἀγκία λαιχὸν ἀμύνῃς.

ἀλλ' ἀχιλλεύ, δάμασσαν θυμὸν μέγαν, οὐδ' ἐπίσε χεῖρ

ἡλῆς ὑπὲρ ἔχεν, φρεσὶ δ' ἐπεὶ καὶ θεοὶ αὐτοί.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Ἔμην δ' ἔντορ γε μετὰ φρεσὶ φαίδιμ' ἀχιλλεύῳ  
 βάλλειαι οὐδ' ἐτι πάμπαν ἀμύνειν νηυσὶ θεῶσι  
 πῦρ ἰθείας αἰδ' ἔλθον· ἐπὶ χολῶς ἔμπεσεν θυμῷ.  
 πῶς ἄρ' ἔπειτ' ἀπὸ σείτο φίλον τέκος ἄνθι λιποῖμ' αἶ  
 εἶος· σοὶ δ' ἔμ' ἐπεμπε γέρον ἱππηλάτα πηλόυς  
 θυμασπ' ἔειπε· ὅτις ἐκ φθίης ἀγαμέμνονι πέμπε  
 νύπιον, οὐπω ἐσθλὸν ὁμοίην ὑπὲρ μοιο,  
 οὐδ' ἀγοράων, ἵνατ' ἀνδρῶν ἀειπρεπέες τελέθουσιν  
 τῶν κ' ἀμ' ἐπρόηκε, διδάσκει μῦθαι τὰ δὲ πάντα,  
 μύθων τε ῥητῆρ' ἔμμεναι· πρηνὴ κ' ἤρα τε ἔργων.  
 πῶς ἄρ' ἔπειτ' ἀπὸ σείτο φίλον τέκος· οὐκ ἰθείρην  
 λείπειτ'· οὐδ' εἶχον μοι ὑποστάειν θεὸς οὐτός  
 κῦρας ἀποξέσας, θήσῃν νέον ἠδ' ὥοντα,  
 εἶον ὅτι πρῶτον λίπον ἑλλάδα καλλιγύναικα.  
 φόβῳ νίκη πατρὸς ἀμύντρος ὄρμυρ ἰδία.  
 ὅς μοι παλλακίδος περιχώσατο καλλικόμοιο·  
 τήν αὐτὸς φιλείσκειν· ἀνιμάζεις δ' ἀχαιῶν,  
 μητίε' ἐμὴν· ἥ δ' αἶν' ἐμὲ λιαίσκει γούναν  
 παλλακίδι προμιγῆναι, ἵν' ἐχθύρην γέροντα  
 τῇ πιθόμην κ' ἔριξαι· πατήρ δ' ἐμὸς αὐτὴν ὀϊδίης  
 πολλὰ κατηράτο· συγχεράς δ' ἐπικέκλητ' εἰνὺς  
 μήποτε γούνασιν οἷσιν ἐφίεσθαι φίλον ἱόν.  
 ἐξ ἐμείθεν γέγοντα· θεοὶ δ' ἐτέλεον ἱπάρας,  
 ξείνους τε καταχθόνιος· καὶ ἱπαινὴ πύρρ' ἐφύοντο.  
 ἔνθα μοι οὐκ ἐν πάμπαν ἔρητύειτ' ἐν φρεσὶ θυμῷ  
 πατρὸς χρομένοιο κατὰ μέγαρον ἐρωφάδα·  
 ἔμην πολλὰ ἔτ' αὖ ἀνέφιοι ἀμφὶς ἵόντες.  
 αὐτὰρ λιαρόμυροι κατ' ἐρήτυον ἐν μεγάροισι·  
 πολλὰ δ' ἴφια μῆλα καὶ ἰλίποδας ἕλκεα βῆς  
 ἔσφαζον, πολλοὶ δ' ὄντες θαλίθοντες ἀλκιφῶν



- οὐδ' ὅσα λάϊνος οὐδ' ἄς ἀφύττορας ἐντὸς ἱέρῃ  
 φοῖβ' ἀπόλλωνος πυθοῖ ἐνὶ πετρῇισα.
- ” ληισοὶ μὲν γάρ τε βόας, καὶ ἵφιες μῆλα,  
 ” κτητοὶ δ' ἔριποδ' ἐς τε, καὶ ἵππων ξανθὰ κωρηνα.  
 ” ἀνδρὸς δ' ἐψυχὴν πάλιν ἱλθειν οὔτε ληΐεῖ,  
 ” οὐδ' ἱλότη' ἐπεὶ ἄρκων ἀμείψεται ἱρκὸς ὀδόντων.  
 μήτηρ γάρ τε μέφῃσι θιὰ θέτις ἀργυρόπιζα  
 δίχθα διὰς κῆρας φερέμην θανάτοιο τέλ' ἐς δι.  
 εἰ μὲν κ' αὖθι μένων τῶον πόλιν ἀμφὶ μάχομαι,  
 ὅλ' ὅ μοι νόστος ἀτὰρ κλέος ἀφθιτοῦ ἔσται.  
 εἰ δ' ἐκκοιῖκαδ' ἴκωμαι φίλῳ ἐς πατρίδα γαῖαν,  
 ὅλ' ἐτό μοι κλέος ἐδιδόν, ἐπὶ δ' ἄρ' ὅρ' οὐδ' ἐμοὶ αἶψα  
 ἔσσεται, οὐδέ κε μ' ὅππ' ἐλθ' ἰθὺς θανάτοιο κίχην.  
 καὶ δ' ἄρ' ὅς τ' ἄλλοισιν ἐγὼ παραμυθηαίμεν  
 οἷσδ' ἀποπλέων· ἐπεὶ οὐκ ἐπὶ δύνει τέκμων  
 ἰλὶς ἀπηνῆς· μάλα γάρ ἐθον δούροπα βούε  
 χεῖρα ἡνὲρ ὑπὲρ ἰαχ' ἐταρσύνεσσι δ' ἐλαοί.  
 ἀλλ' ὑμῖς μὲν ἰόντες ἀειδέσασιν Ἀχαιῶν,  
 ἀγγελίῳ ἀπόφαδι, τὸ γὰρ γέρας ἐσὶ γερσίτων.  
 ὅφρ' ἄλλῳ φράζονται ἐνὶ φρεσὶ μήτηρ ἀμείνω,  
 ἢ κ' ἐσφιν νῆας τε σόη, καὶ λαὸν Ἀχαιῶν  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇς, ἐπεὶ οὐ σφισὶν ἔσθ' ἐτόίμη.  
 ἦν νῦν ἐφράσαντο, ἐμδὺ ἀπὸ μνηίσαντο.  
 φοῖνιξ δ' αὖτε παρ' ἄμμι μένων, κατακρημνίστα,  
 ὄφρα μοι ἐν νῆασι φίλῳ ἐς πατρίδ' ἔλπεται  
 αὔειον, ἦν ἱθὺς ἱλυσιν ἀνάγκη δ' οὔτε μὲν ἄξω.  
 Ως ἱφάθ, οἷδ' ἄρα πάντες ἀκὴν ἐγίνοντο σιωπῇ,  
 μῦθον ἀγασσάμενοι· μάλα γὰρ κρατερῶς ἀπίσπα.  
 εἰ δ' ἐπὶ δὴ μνῆσσι γέρον ἱππηλάτα φοῖνιξ,  
 δῖα κ' οὐδ' ἀπρηθῆς· πῶς γὰρ δ' ἦ νηυσὶν Ἀχαιῶν.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὅτι οἱ βυλὰς συμφράσσομαι, οὐδ' ἐμὲν ἔργον.  
 ἔκ γὰρ δ' ἡ μὲν ἀπέστησεν καὶ ἔλιπον οὐδ' ἄρ' ἐπ' αὐτῆς  
 ἔξαπτόφειτ' ἐπὶ ἐσθλῇ ἄλλῃ δ' οἱ, ἀλλὰ ἔκ κηλῶ  
 ἔρριπτο. ἔκ γὰρ ἔφρινας εἴλωτο μητίετα βόης.  
 ἔχου δ' ἐμοὶ τῷ δ' ὦρα, τίω δ' ἐμὲν ἐν καρὸς αἴσθ.  
 οὐδ' ἐγὼ μοι δικάκισ τε, καὶ ἐκασάκισ τόσσα δ' οἴη,  
 ὅσα τέ οἱ νῦν ἔστι, καὶ εἴ ποθεν ἄλλα γένοιτο.  
 οὐδ' ὅσ' ἐς ὄρχομυθὸν προσηνέσεται, οὐδ' ὅτ' αὖθις  
 αὐγυπῆας, ὅθι πλεῖστα δόμοις ἐν κτήματα κείται,  
 αἰὲς ἔκαστόν μιν ἐσσι, διδύκοισι δ' ἄρ' ἐκάσῃ  
 ἀνέρις ἐξοιχέουσι σὺν ἱπποῖσι, καὶ ὄχεσφιν,  
 οὐδ' ἐγὼ μοι τότ' αὖθις ὅσα ψαλμαθὸς τε, κόνις τε  
 εὐδ' ἐκὼν ὡς ἐπὶ θυμὸν ἐμὸν πέσσει ἀγαμέμνων.  
 πρὶν δ' ἀπὸ πᾶσάν ἐμοὶ δόμῃσιν θυμὰ λῶε.  
 κούρω δ' οὐ γαμῖω ἀγαμέμνονος ἀγρίδαο.  
 οὐδ' ἐγὼ χρυσείῃ ἀφροδίτῃ κάλλος ἐρίσοι,  
 ἔργα δ' ἀθηναίῃ γλαυκῶπιδι ἰφθαρίσοι,  
 οὐδ' ἐμὲν ὡς γαμῖω, ὅδ' ἀχαιῶν ἄλλον ἐλπίσω,  
 ὅς τις οἶτ' ἐπὶ οἴκῳ, καὶ ὅς βασιλὺς τερός ἐστι.  
 ἦν γὰρ δ' ἡμὲν σόωσι θεοί, καὶ οἴκαδ' ἵκωμαι,  
 πηλὸν θῆρ μοι ἐπέτα γυνώσκω γαμῖσται αὐτῶν.  
 πολλαὶ δ' ἀχαιῶδες ἐσὶν ἀν' ἑλλάδι, φθίνοντες,  
 κούρω ἀεισέων, οἵ τε πῶλ' ἔθρα ῥύονται.  
 τῶν δ' ἔτι ἐθέλωμι φίλῳ παῖδι μὲν ἀκρίτην  
 ἔνθα δ' ἐμοὶ μάλα πολλὸν ἐπέσσυτο θυμὸς ἀγένηρος  
 γέμουσιν μνηστῆρ' ἀλῶν, ἐκὼν ἀκρίτην,  
 κτήμασι τέρεσσι, τὰ γέρον ἐκτὴν πηλὸν.  
 οὐ γὰρ ἐμοὶ ψυχῆς ἀντάξιον, οὐδ' ὅσα φασὶν  
 ἴλιον ἐκτῆναι εὐναιόμηνον πῶλ' ἔθρα,  
 ποτὶν ἐπ' ἐρύνης, ποτὶν ἐλθεῖν ἔκαστος ἀχαιῶν,  
 οὐδ' ἔτι

ἦν δ' ἐπὶ ἐκ χερῶν γέρας ἔλθοι καὶ μὴ ἀπάτησε,  
 μή μιν παρὰ τῷ ἐν εἶδότη. οὐδ' ἐμὲ πείσσει.  
 ἀλλ' ὁδυσσεύς σὺν θίτῃ, καὶ ἄλλοισι βασιλεύσιν,  
 φρασίδω νήπιον ἀλεξιμῆμα δ' ἦτορ πῦρ.  
 ἦ μιν δ' ἡ μάλα πολλὰ πονήσατο νόσφιρ ἐμῆς.  
 καὶ δ' ἡ γείχως ἔβη με, καὶ ἤλασε τάρφρον ἐπ' αὐτῷ,  
 εὐρεῖσά μιν ἄλλω, ἐν δ' σκόλοπας κατέπιπεν.  
 ἀλλ' οὐδ' ὥς δύναται δίνος ἕκτορ ὁ ἀνδροφόνου  
 ἴχθυον ὄφρα δ' ἐγὼ μετ' ἀχαιοῖσι πολέμιον,  
 οὐκ ἐθέλεισκει μάχην ἐποτείχεσθ' ὀρθῶν ἕκτορ.  
 ἀλλ' ὅσπον ἔς σκαῖς τε πύλας, καὶ φυγὸν ἵκτανον.  
 ἐνθά ποτ' οἶον ἐμίμνε, μόγις δ' ἐμὸν ἔκφυγεν ὀρμήν.  
 ἦν δ' ἐπὶ οὐκ ἐθέλω πολέμιον ἐκθεῖν οἶον.  
 πύον ἰρὰ δ' ἡ ῥέξας καὶ πᾶσι θεοῖσι  
 νηήσας ἐν νῆας, ἐπὶ ἡν ἄλαδ' ἠρσεύσασθαι,  
 ἦ καὶ ἡν ἐθέλησθαι, καὶ αἶκων τοι τὰ μεμῶτα,  
 εἰ μάλ' ἐλλήσποντον ἐπ' ἰχθυόεντα πλεύσας  
 νῆας ἱμάς, ἐν δ' ἀνδρας ἱρσάμεναι μεμαῶτα.  
 ἦ δ' ἐκεῖ οὐκ ἐπλοῖω δώηκλυτος ἐννοσίγαιος,  
 ἦ ματὶ κεν βριτὰτ' ἐφίλω ἐρίβωλον ἱκσίμην.  
 ἦ δ' ἐμοὶ μάλα πολλὰ, τὰ κάλλιπον ἐνθάδ' ἐρῶντι.  
 ἄλλον δ' ἐνθένδε χρυσὸν, καὶ χαλκὸν ἱρσέον,  
 ὅδ' ἐγὼ αἶψα ἐϋφώνως, πολλοῖον τι σίδηρον  
 ἔξομαι. ἄσ' ἐλαχὸν γέρας δ' ἐμοὶ ὅς περ ἰδὲ σκαῖ,  
 ἔνθα ἐφουβρίσων ἔλθοι κρείων ἀγαμέμνων  
 ἀφ' ἰδὲ σκαῖ. τῷ δ' πάντ' ἀγορεύεμεν ὥς ἐπιτέλω  
 ἀμφαδὸν ὄφρα καὶ ἄλλοι ἐπισκύνονται ἀχαιοί.  
 οἳ ἂν ἀπὸν δ' ὠαῶν ἐπ' ἐλπίται ἐξαπατήσονται,  
 αὐτὸν ἀναιδέως ἐπιθύνει, οὐδ' ἂν ἐμοὶ γέρας  
 τιτλαίη κύνεός περ ἰδὲ, ὅς ὅπ' ἐπ' ἰδὲ σκαῖ.

# Ι Λ Ι Δ Ο Σ.

οὐτάρ ἐγὼ ἱρίω, ὅς μοι δοκεῖ ἵνα ἄριστα  
 οὔτε μὲν ἄρεϊδ' ἄγαμέμνονα πρὸς ἡμῖν οἶσ',  
 οὔτ' ἄλλους δ' οὐκ ἄρα τις χάρις ἔσται,  
 μάρνασθ' ὁπόσοι μετ' ἀνδράσι νολεμὲς αἰεὶ,  
 ἴση μοῖρα μένοντι, καὶ ἐὺ μάλα πρὸς πολέμοισι.  
 ἐν δ' ἴῃ ἡμῇ ἢ μὲν κακὸς ἦδ' ἢ καὶ ἰσθλός  
 καὶ τὸ αὖθις ὅ, τ' ἀργὸς ἀνὴρ ὅ, τ' ἐπὶ πολλὰ ἰσχυρός.  
 οὐδ' ἐγὼ μοι περικέεται ἐπὶ πάθον ἄλγεα θυμῷ,  
 αἰεὶ ἐμὴν ψυχὴν παραβαλλόμεν' ὅπως ἔστι.  
 ὥς δ' ὄρνις ἀπὸ νηυσὶ νεοσσὶσι προφέρῃσι  
 μάστακ' ἐπείκε λάβησι, κακῶς δ' ὄρα οἱ πέλει αὐτῇ.  
 ὥς καὶ ἐγὼ, πολλὰς μὲν αὐπνυες νύκτας ἴαον,  
 ὕματα δ' αἵματόεντα δ' ἐπρησσον πολέμοισιν,  
 ἀνδράσι μαρνήμεν' ὅραρον ἵνα σφ' ἐτιράν-  
 ῃ δ' ἄλγεα δ' ἢ σὺν νηυσὶ πόλεις ἀλάπαξ ἀνθρώπων.  
 πρὸς δ' ἵπποισιν ἐκκλήμηναι κατὰ τοῖσιν ἐρίβωλον.  
 τάων ἐκ πασσών, καὶ μήλια πολλὰ, καὶ ἰσθλὰ  
 ἐξελόμεναι, καὶ πάντα φέρων ἄγαμέμνονι δοσόντων  
 ἀρεῖδ' ἢ δ' ὅππῃ μὲν ἄνθρωποι παρὰ νηυσὶ θεῶσιν,  
 δαξάμεν' ὅσ' ὅσ' ἀπ' αὐτῶν δαδάσκειτο, πολλὰ δ' ἔχουσιν,  
 ἄλλα δ' αἰετῆται δίδυ γέρεα, καὶ βασιλοῦσι.  
 τοῖσι μὲν ἐμπιπὲ κεῖται ἐμὸν δ' ἀπὸ μούνης ἀχαιῶν,  
 εἴλιν', ἔχουσιν ἄλστρον θυμαρία, τῇ παλαιῶν,  
 ἡρπείδων, τῇ δ' ἐπὶ πολέμοισιν ἡμῶν φάειν  
 ἀργείους; τῇ δ' ἐλαόν ἀνέγκλην ἰσθλὰ δ' ἀνέγκλην  
 ἀρεῖδ' ἢ οὐχ' ἐλπίς ἵνα ἡνέκ' ἡνέκ' ὁμοιοι;  
 ἢ μὲν φιλέουσιν ἄλστρον μερόπων ἀνθρώπων  
 ἀρεῖδ' ἢ ἐπὶ ὅς πρὸς ἀγαθὸς καὶ ἐχέφρων,  
 τῇ δ' αὖτ' ἐλπίς, καὶ κήδετα ὥς καὶ ἐγὼ τὸν  
 ἐκ θυμῷ φίλον, δ' ἐκ κτητῶν περ ἵππων.

γαμβρός κ' ἐν οἷ τοιαῦτα δ' ἔσθ' ἰδὼν ὀρίετ',  
 οἷ οἱ γὰρ γὰρ φέρεται θαλίῃ ἐνὶ πολλῇ·  
 φῆς δ' ἐπὶ ἐσὶ θυγάτηρ ἐνὶ μεγάρῳ ἐπύκτω,  
 χρυσόθιμις, καὶ λαοδίκη, καὶ ἰφίανδρα·  
 τῶν, ἣν κ' ἐθέλησθα φίλῳ ἀνὰ δ' ἴον ἀγῶνι  
 πρὸς οἶκον πολλῆος, ὅδ' αὖτ' ἐπιμέλεια δ' ὥσθ'  
 πολλὰ μάλ', ὅσ' οὐ πῶ τις ἢ ἐπέδωκε θυγάτηρ  
 ἐπὶ δ' ἐπὶ δ' ὥσθ' ὅσον αὐτῷ πηλὶς ἔσθ',  
 καρδίῃ μίλῳ, ἐν ὅπῳ τε, καὶ ἰρήν παύσασθαι,  
 φηράς τε ἰαθείας, ἡ δ' ἀνθεῶν βαθυλήμον,  
 καλὴν τ' αἵπην, καὶ πῆδ' ἄρ' ἀμπελοῖσιν  
 πᾶσαι δ' ἐγγὺς ἀλὸς νείαται πύλῃ ἡμαθόοντ',  
 ἐν δ' ἀνδρὲς καί σι πολυῖν ἔρην, πολυβύτα,  
 οἱ κ' ἐπὶ δ' ὅπῳσι θεῶν ὥς τιμήσασιν,  
 καὶ τοι ὑπὸ σκῆπτρῳ λιπαρὰς τελέεσι θέμιστας·  
 ταῦτα κ' ἐπὶ τελέεσσι μεταλλήξω π' ἰχθυό·  
 ἐπὶ δ' ἐπὶ ἀφείδης μῆν' ἀπύχθ' ὅθ' ἡ μάλοισιν  
 αὐτὸς, καὶ τῷ δ' ὥρα, σὺ δ' ἄλλες περ ποταχάου  
 τ' ἰρὸς μιν ἐλίσσει κατὰ στρατὸν, οἱ σ' ἐπὶ δ' ὥς,  
 πῆσ' σ' ἢ γὰρ κ' ἐσφί μάλ' αὖτ' ἐπὶ δ' ὥς ἀροῖο·  
 εὖν γὰρ χ' ἔκτορ' ἔλθεις, ἐπὶ δ' ἄρ' ἡ μάλ' αὖτ' ἐπὶ δ' ὥς  
 λυαῶν ἐχθρὸν ὄλθ' ἡν, ἐπὶ δ' οὐ πινά φησιν ὁμοῖον  
 οἱ ἐμῶν δ' ὡσθ' ὡς, οὐδ' ἐνθάδ' ἐν ἡν, ἐν ἡν.  
 Τὸν δ' ἀπαμειβόμεν' ὅθ' προσέφη πῶδας ὡκὺς ἀχιλλεύς,  
 διογενὲς λαερτιάδην, πολυμήχαν' ὀδυσσεύς,  
 χρὴ μὲν δ' ἡ τὸν μῦθον ἀπηλεγέως ἀποφθεῖν·  
 ἢ περ δ' ἡ φρονέω τε, καὶ ὥς τ' ἐτελισμένον ἔσθ',  
 ὥς μῆ μοι ῥύηται παρήμιοι ἄλλοθεν ἄλλ' ὅθ'·  
 οἱ, ἐχθρὸς γὰρ μοι κεῖνος ὁ μῶς αἰῶν πύλῃσιν,  
 οἱ, ὅθ' ἔτιρον μῆν' ἐπὶ δ' ὡς ἐπὶ δ' ὡς, ἄλλ' αὖτ' ἐπὶ δ' ὡς



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἵκνοντο μὲν κάρφες γὰρ Ἀθηναίη τε, καὶ ἕρη  
 δῶσεν, ὡς ἐθέλωσι, σὺ δ' ἐμεγαλήφρα θυμὸν  
 ἴαχεν ἐν σήθεσι, φιλοφροσύνῃ γὰρ ἀμείνων,  
 ληγέμεθα δ' ἐκείδεις κακομηχάνος, ὅφρα σε μολλοῖ  
 τίδωσ' ἀργείων ἢ μὴ νέοι. ἡ δ' ἐγέροντο  
 ὧς ἐπέτιλλ' ὁ γέρον, σὺ δ' ἐλήθεαι. ἀλλ' ἐπὶ καὶ νῦν  
 παῦν, ἵα δ' ἐχόλῃ θυμαλγία, θί δ' ἀγαμέμνων.  
 ἄξια δῶρα δίδωσι μεταμύξαντι χόλῳ,  
 εἰ δ' ἐσὺ μὲν μὲν ἄκουθον, ἐγὼ δ' ἐκεί τοι καταλέξω,  
 ὅσα τοι ἐν κλισίῃσιν ἐπέχθω δῶρ' ἀγαμέμνων  
 ἐπὶ ἀπύργου φιδώδας, δ' ἵα δ' ἐχέτω τοῖσιν ἅπαντα,  
 αἰθώνας ὃ λιβήτας ἐνέχουσι, δῶδεκα δ' ἵππους  
 πηγυροῦ ἀθροφόρους, οἳ ἄεθλια πρῶτον ἄρον.  
 οὐκ ἐν ἀλγίῳς ἐν ἀνῆρ, ὅτ' ὅσα γένοιτο,  
 ὃ δ' ἐκεῖ ἀκτῆμον ἐειπίμοιο χρυσοῖο,  
 ὅσ' ἀγαμέμνων ἵπποι ἄεθλια πρῶτον ἄρον.  
 δώσει δ' ἐπὶ γυναικῶν ἀμύμονας, ἔργ' ἐδύας,  
 λισβίδας, ἅς ὅτε λίσβον ἐν κτιμένῳ ἔλδ' αὐτῶν,  
 ἐξελθὺν, αἰ τότε κάλλει ἐνέκων φύλα γυναικῶν.  
 τὰς μὲν τοι δώσει, μετὰ δ' ἔσεται, ἢν τὸτ' ἀπύργῳ  
 κούρῳ βραχέῃ, καὶ μὲν ὄρνον ὀμιῖτε  
 μήποτε τ' οὐνῆς ἐπιβήμεναι, ἡ δ' ἐμὴν  
 ἢ θέμις ἐστὶν ἀνάξ, ἢ τ' ἀνδρῶν, ἢ γυναικῶν.  
 ταῦτα μὴ αὐτίκα πῶντα παρέσεται, εἰ δ' ἐκὼν ἔντι  
 ἄστυ μέγα πρῶτοιο θεοὶ δώσωσ' ἀλαπάξαι,  
 γῆρας ἄλλος χρυσοῦ, καὶ χαλκοῦ νηήσας  
 εἰσελθόν, ὅτε καὶ δατεώμεθα ληϊδ' ἀχαιοί.  
 πρῶτόν τις δ' ἐγυναικῶν ἐνέχουσιν αὐτῶν ἐλπίδι.  
 αἶψα μετ' ἀργείῳ ἐλένῳ κολλήσας ἑωσιν,  
 ὡς ἐκεῖ ἀργὸς ἐνέμεθ' ἀχαιὸν οὐδὲρ ἀρούρης.

γαμβρὸς

πλησάμην θ' οἶνοιο δ' ἑπας, δίδεκτ' ἀχιλῆα  
 χαῖρ' ἀχιλῆυ, δαΰς μῦν εἴσης ἔκ ἐπιδύνας  
 ἢ μῦν ἐνὶ κλισίῃ ἀγαμέμνονι θ' ἀφείδαιο,  
 ἢ δ' ἐκὼν ἐνθάδε νῦν. πόρρα γάρ μοι οἰκία πολλά  
 δαίνυδ'· ἀλλ' ὅ δαυτὸς ἐπηρεάζει ἔργα μέμνηλον.  
 ἀλλὰ λίω μέγα πῆμα διοτρεφές, εἰθρόωντος,  
 δειδύμεν. ἐνδοιῇ δ' ἐκωσέμεν, ἢ ἀπολίσσασθαι  
 νῆας εὐσέλμους, εἴμῃ σύγχε δύσσειαι ἄλκῃ.  
 ἱγῆς γάρ νηῶν, καὶ τέχε' ἄνλιν ἔθουρ  
 πῶδ' ὑπέρθυμοι, τηλεκλητοίτ' ἐπίκυροι,  
 κηάμενοι πυρὰ πολλὰ κατὰ στρατόν. ὅ δ' ἔπ' φασίην  
 εἰσέειδ', ἀλλ' ἐνὶ νηυσὶ μελαίνῃσι πεισέειδαι.  
 ζυὸς δ' ἐσφιν κρονίδης ἰνδ' ἔξια σήματα φαίνωρ  
 ἀσράπῃσι. ἔκτορ δ' ἐμὲ γὰρ δεινὴ βλεμναίνωρ,  
 μαίνεται ἐκπύγλως πίσσῃ θ' οἷ. ὅ δ' ἐπὶ τίς  
 αὐτίρας ὅ δ' ἐθιούς, κρατὴρ δ' ἐλύσασθαι δ' ἔδυναν.  
 ἀρᾶται δ' ἐτάχιστα φανήμεναι ἢ ὡς δῖον.  
 στυτα γὰρ νηῶν ἀποκόψαν ἀνὰ κόρυμβας,  
 αὐτάς τ' ἐμπρήσθην μαλινεῦ πυρός. αὐτὰρ ἀχαιοὶ  
 δ' ἠώσθην παρὰ τῇσιν ὀλοομένους ὑπὸ καπνοῦ.  
 ταῦτ' ἄνῳς δειδόμενα κατὰ φρένα μὴ οἱ ἀπειλὰς  
 ἐκτελίσσωσι θεοὶ, ἡμῖν δ' ἐπὶ αἴσιμον εἶναι  
 φθίειν ἐνὶ τροίῃ ἐκὰς ἄργεος ἱποβοότοιο.  
 ἀλλ' ἄνα, εἰ μέμονά γε, καὶ ὅτ' ἐπὶ ὕβριος ἀχαιῶν  
 τέρομένους ἐρύειναι ὑπὸ βῶων ὀρυγμασθῶ.  
 αὐτὰρ εἰ μετόπισθ' ἄχος ἔσσεται, ὅ δ' ἐπὶ μῆχ' ὅ  
 ῥι χέεντος κακῶς ἐς ἄχος ἔσσειν. ἀλλὰ πολὺ πρὶς  
 φράζω, ὅπως δ' ἀναοῖσιν ἀλεξήσθης κακὸν ἡμᾶρ.  
 οἷ πέπον. ἢ μῦν θίγῃ πατὴρ ἐπιτέλλετο πηλὸν  
 ὅματι βῶν, ὅτις ἐκ φθίης ἀγαμέμνονι πέμπε.

# ΙΛΙΑΔΟΣ

αὐτῇ σὺν φόρμυγι λιπὼν ἔειπεν, ἔνθα θάα' αὖθις.  
 ὣς δ' αὐτὸς πάροκλος, ἐπεὶ ἴδεν φῶτας, ἀνέστη.  
 τῷ καὶ δακνύμενός, προσέφη πόδας ὠκύς Ἀχιλλεύς.  
 Χαίρειν, ἦ φίλοι ἄνδρες ἱκάνετον. ἦ πῶς μάλα χρεώ,  
 οἵ μοι σκυζομένοι πόρ, ἀχαιῶν φίλτατοι ἐσὲν.  
 Ὡς ὅρα φωνήσας, προτέρω ἄγε δῖος Ἀχιλλεύς.  
 εἶπεν δ' ἐν κλισμοῖσι, τάπησ' ἑταίρων ἐρύσσιν.  
 αἶψα δ' ὅτε πάροκλον προσεφώνεον ἱγνὺς ἐόντα.  
 μείζονα δ' ἢ κρηττέρα μνηοσίγῃς ἔειπες,  
 ἴσθ' ὅτ' ἔδον ὅ κ' ἐφαρτε. δέπας δ' ἐν τῶν ἐκάσθω.  
 οἱ γὰρ φίλτατοι ἄνδρες ἐμῷ ὑπέασιν μελάρθω.  
 Ὡς φάτο. πάροκλος δ' ἐφίλω ἐπιπέθε' ἑταίρω.  
 αὐτὰρ ὅγε κρητὸν μέγα κάβαλον ἐν πυρὸς αὐγῇ,  
 εἰ δ' ἄρα νῶν ἐθικ' ὄϊος, καὶ πῖονός αὐγὺς  
 ἐν δ' ἐσθλὸς σιάλαιο ῥάχιν τεθαλῦσαν ἄλσιφῃ.  
 τῷ δ' ἔχον αὐκμήδων. τάμνον δ' ἄρα δῖος Ἀχιλλεύς.  
 καὶ τὰ μὲν εὖ μίσυλλε, καὶ ἀμφ' ὀβελῶσιν ἐπέφρε  
 πῦρ δ' ἐμνηοπιάδης δ' αὖθις μέγα ἰστέος φῶς.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατὰ πῦρ ἐκάη, καὶ φλόξ ἐμαράνθη,  
 αὐθρακίην σπρίσας, ὀβελῶν ἐφύπρθε τάνυσσε.  
 πάσας δ' ἄλως θείοιο κρατενυτάων ἐπαείρας.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ὥπλησε, καὶ εἰν ἐλαιοῖσιν ἔχινε.  
 πάροκλος μὲν σῆπ' ἐλῶν, ἐπένεμε παπὶς  
 καλῶς ἐν κανέοισιν. αὐτὰρ κρέα νεῖμεν Ἀχιλλεύς.  
 αὐτὸς δ' αὐτίον ἴσθω ὀδυσσεὺς θείοιο  
 εἶχε τῷ ἐτέρωιο. θεοῖσι δ' ὅθυσσε ἀνὼ γῆ  
 πάροκλον ἐν ἑταῖρον, ὅδ' ἐν πυρὶ βάλλε θυηλάς.  
 εἶδ' ἐπ' ὀνείαθ' ἱπῆμα προκείμενα χάρτας ἱαλλοῖν.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιός, καὶ ἰδὴ τὸς ἐξέτρον ἔσθω,  
 εἵσ' αἶψα φοῖνικι, νόησε δ' ἐπὶ τοῦ ὀδυσσεύς.

πλησάμενος

ὁ δὲ φῶς μὴ ἔκ' ἐτ' ὄνομα διδοῖς ἀχιλῆϊ ἄνακτι·  
 ἀλλ' ἄγετε κληρὺς ὀφύνομυ, οἳ κε τάχιστα  
 ἔλθωσ' ἐς κλισίῳ πηληϊάδεω ἀχιλῆϊ·  
 ὃ δ' ἄγε θεὸς, ἄν' ἐγὼν ἐπιόφομα, οἳ δ' εἰ, παρθένω  
 φοῖνιξ μὲν πρῶτα διὰ φίλῳς ἡγήσάμεθα·  
 αὐτὰρ ἔπειτ' αἶας τε μέγας, καὶ δῖος Ὀδυσσεύς·  
 κηρύκων δ' ὁ δῖός τε, καὶ βέρυβιολης ἄμ' ἐπέμεν·  
 φέρετε δ' ἐχρυσὶν ὕδωρ, βύφημῃσιν τε κέλευθε,  
 ὄφρα διὰ χρόνισι ἄρησόμεθ', αἴ κ' ἐλεήσῃ·  
 ὧς φωνῶ, θεῖσι δ' ἄσιν ἐαδ' ὅτ' αὖ μῦθον ἔειπεν·  
 αὐτίκα κήρυκοι μὴ ὕδωρ δ' αἰχρῶς ἔχουσιν·  
 κούροι δ' κρητῆρας ἐπεσέφοντο πορτο·  
 νῶμυσαν δ' ἄρα πασσιν ἐπαρξάμενοι διπλοεσθιν·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ ἀπέσαντ', ἔπιον θ' ὄθον ὕπελε θυμὸς·  
 ὠρμῶντ' ἐκ κλισίης ἀγαμέμνονα ἄρνιδ' αἶο·  
 θεῖσι δ' ἄσιν ἐπέτελλε γερήνιος ἱππότης ἄναξ,  
 Διὶ δ' ἰλίων ἐς ἔκαστον, ὁδυσσῆϊ δ' ἐμύλιε  
 παρὰ νῆας πεπύθιοι αὐμύμονα πηλείωνα·  
 τῷ δ' ἐβότῳ παρὰ θῖνα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης·  
 πολλὰ μολλ' ἐβόηον ἄνδρες ἰννοσιγὰς·  
 φηιδίως πεπύθιν μεγάλας φρένας αἰακίδ' αἶο·  
 μυρμιδόνων δ' ἐπὶ τε κλισίῳ, καὶ νῆας ἰκέστω·  
 ἦν δ' αὖτε φρένα τέρπόμενον φόρμιγγι λιγέῃ·  
 καλῇ, διαδ' ἀλκίῃ, ἐπὶ δ' ἀργύρε' ἱστῶς ἦεν·  
 τῷ δ' ἄρ' ἐτ' ἐξ' ἐν ἄρδων πτόλιν ἠετίων ὀλέσας·  
 τῇ ὅρ' ἐθ' ἐπὶ πῶν, ἀφ' ὅδ' ἄρ' αὖτε κλέα ὠκυμένη·  
 πώρην κ' αὖτε οἳ οἶος ἐν ὀνείῳ ἦεν σιδεῖν,  
 δ' ἐγμύμοις αἰακίδ' αἶο ὅπότε λήξειεν αἰεσίῳ·  
 τῷ δ' ἐβότῳ προτέρω, ἦν γὰρ δ' ἐπὶ δῖος Ὀδυσσεύς·  
 ἐκ δ' ἄρ' ἄσιν αὐτῶν· τὰρ ὧν δ' αὖτε ὄφρα ἀχιλῆϊ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἢ θέμις ἀνθρώπων πέλει ἀνδρῶν, ἡδ' ἐγωνακῶν.  
 ταῦτα μ' αὐτίκα πόντα παρέσεται. εἰ δέ κεν αὐτὸς  
 ἄστυ μίγῃ πριάμοιο θεοὶ δώσω ἄλαπώξαι.  
 νῆα ἄλκις, χαλκῷ, κῆ χυθῶν νηυσάδω  
 εἰσελθῶν, ὅτε κεν δευτέρωμιθα ληϊδ' ἀχαιοί.  
 τρωαδῆες δ' ἐγωνακας ἐνέκυσιν αὐτὸς ἐλπίδω.  
 αἴ κε μιν ἄργαίῳ ἐλίνῳ κολλίῃσιν ἴωσιν.  
 εἰ δέ κεν ἄρτος ἰκθίμιθ' ἀχαικὸν οὐθαρ ἀρούρης  
 ραμβρὸς κέν μοι ἴοι, τί σ' ὀδ' ἐμιν ἴδω ὀρέσῃ.  
 ὅς μοι τηλυγέας ῥέφεται θαλίῃ ἐνὶ πολλῇ.  
 τῆς δέ μοι εἰσὶ θυγάτρ' ἐνὶ μεγάρῳ ἐυπύκτω.  
 χρυσόθεμις, καὶ λαοδίκη, καὶ ἰφιάνασσα.  
 τάων, ἣν κ' ἐθέλῃσι φίλῳ ἀνάλιδνον ἀγέδω  
 σπρὸς οἶκον πηληϊός. ἐγὼ δ' ἐπιμείλια δώσω  
 πολλὰ μάλ', ὅσσ' οὐπὼ πρὸς ἐμὴν ἐπέδωκε θυγάτρί.  
 ἐπὶ δ' εἰ οἱ δώσω εὐναόμην πηολίεθρα,  
 κερδῆ μύλῳ, ἐνόπην τε, καὶ ἱρὴν ποιήναισιν.  
 φηράς τε ζαθέας, ἡδ' ἀνθειῶν βαθυλειμορ.  
 καλὴν γ' αἶπειον, κῆ πῆδαθ' ἀμπελόεσσαν.  
 πᾶσαι δ' ἐγγυὲς ἄλός νεάται πύλῃ ἡμαθούντ'.  
 ἐν δ' ἀνδρὸς ναῖεσσι πολυῖρ' ἔλῃς πολυβοῦται.  
 οἳ κ' ἐδωτίνῃσι θεὸν ὥς ἡμῶσιν.  
 καὶ οἳ ὑπὸ σκῆπτρῳ λιπαρὰς τιλῆεσσι θέμιστας.  
 ταῦτα κ' οἳ τιλῆσαιμι μεταλήξαντο χόλοισι.  
 δαμνύτ' αἰδῆς Πριάμοιο χόλοισι, ἡδ' ἀδωμάσας.  
 οὐνεκα καί τε βροτῶσι θεῶν ἐχθιστος ἀπάντων.  
 καὶ μοι ὑπὸ σκῆπτρῳ βασιλεύειν ὅσσ' ἐμὴ,  
 ἡδ' ὅσσ' ἐμὴν γένεσιν προγενέσιν εὐχομαι εἶναι.  
 Ἦν δ' ἡμῖν βίη ἐπειτα γερήνιος ἱππότες νέεσθαι  
 ἀρεΐδῃ κυδίσει ἀναξ ἀνδρῶν ἀγάμινον.



ὅ γ' ἄρ' ἥς νόον ἄλλος ἀμείνονα βούλει νόησθαι  
 οἶον ἐγὼ νοῶν ἢ μὴ πολλοῖα, ἰδὲ ἔτι καὶ νῦν.  
 ἔξιπ' τῷ· ὅτε διογῶντες βεσηνίδα καυρὴν  
 χλωμέναν ἀχιλῆος, ἔδης κλισίῃσιν ἀπούρας,  
 οὔτι καὶ ἡμέτερόν γε νόον· μάλα γὰρ τοὶ ἔρωγα  
 πόλλ' ἀπειμυθόμην, σὺ δ' ὅ σ' ὦ μεγαλήτορι θυμῷ  
 εἴξας, ἄνδρα φείσων ὃν ἀθάνατ' ἔπειθ' ἄν  
 ἡτίμωσας· ἑλὼν γὰρ ἔχες γέρας· ἀλλ' ἔπ' καὶ νῦν  
 φραζώμεσθ' ὥς κέν μιν ἀρετὰ μὲν οἰεπείθοιμεν  
 δώροισιν τ' ἀγανοῖσιν, ἔπεισ' ἰτι μὲν χίοισιν.

Τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν ἀρχαίμενων·  
 ὦ γέρον, οὔτι φεύδεις ἐμὰς ἄτας κατέλεξας·  
 ἀσάμην· ὅδ' αὖτ' ὅς σε ἀνείνομαι· ἀντί νυ πολλῶν  
 λαῶν ἐσὶν ἀνὴρ, ὃν τε εἴς κ' ἡ φιλήσῃ.  
 ὥς νῦν βούπην ἔπιδε, δώμασθε δ' ἀλὸν ἀχαιῶν.  
 ἀλλ' ἐπεὶ ἀσάμην, φρεσὶ λυγρὰ λήσιν πιθήσας·  
 ἄψ' ἐθέλω ἄρ' εἰσαι, δόμῳ καὶ τ' ἀπερείσι' ὄσπινα·  
 ἡμῖν δ' ἐν πάντεσσι περικλυτὰ δῶρ' ὀνομήνω.  
 εἴπ' ἀπύρην φέροντας, δέκα δ' ἔχοντο πολλὰ ταῦτα·  
 αἰθῶνας δ' ἐλβήτας εἰκασί, δῶδε δ' ἵπκας  
 πηλῶν, ἀθλοφόρους· οἳ αἰθλία ποσσὶν ἄροντο·  
 οὐκ ἔστιν ἀλγίος εἴη ἀνὴρ, ὃς τόσσα γένοιτο.  
 ὅ δ' ἔκ' ἀκτῆμων ἐειπίμοιο χυθῶτο  
 ὅστω μοι ἡνέκων ἀέθλια μώνυχος ἵπποι·  
 δῶσω δ' ἐπὶ ἀγῶνας ἀμύμονας εἰδύτας·  
 λισβίδας, ὅς ὅτε λίσσον ἐυκπήμεν' ἔλυν αὐτόν,  
 ἐξελόμην, αἱ κάλλι' ἐνίκων φύλα γυναικῶν.  
 τὰς μὲν οἱ δῶσω, μετὰ δ' ἔσται, ἣν τότ' ἀπήνυσεν  
 καυρὴν βεσηνός, ἣ ἐπὶ μέγαν ὄρκον ὁμοῦμαι·  
 μή ποτε τ' οὐγὰς ἐπιβήμεναι· ἡ δ' ἐμὴ νῆα,

# ΙΛΙΑΔΟΣ

πολλῶν δ' ἀγρομένων, τοῦ πίστευαι, ὅς κεν ἀρίστω  
 βυλὴν βυλώσῃ· μάλα γ' χρεὼ πάντας ἀχαιοὺς  
 ἰδωλῆς, καὶ πυκινῆς, ὅππῃ δ' ἦοι ἐγγυῖθι νηῶν  
 καίεσι πυρὰ πολλὰ· τίς αἶ τὰδε γηθήσκει;  
 νύξ δ' ἦδ', ἥε διαρραΐσει στρατὸν, ἥε σαώσῃ.  
 Ως ἔφαθ', οἷδ' ἄρα τὸ μῶλα μὴν κλύον· ἦδ' ἐπίθοντο  
 ἐκ γ' φυλακτῆρός σὺν τεύχεσιν ἐστυόντο,  
 ἀμφίτε νεοσρίδω θρασυμήδεια ποιμένα λαῶν,  
 ἦδ' ἀμφ' ἀσκάλαφον, καὶ ἰάλμυρον, ὕιας ἄρητο·  
 ἀμφίτε μνησύνω, ἀφαρῆά τε, δ' ἡίπυρόν τε.  
 ἦδ' ἀμφὶ κρείονος Ἥϊον· λυκαμήδεια δ' ἴον.  
 ἐπὶ ἔδον ἠγεμόνις φυλάκων, ἱερὰν γ' ἐκάσθι  
 κούροι ἅμ' ἔσχεον· οὐλίχ' ἔρχεα χερσὶν ἔχοντο.  
 καὶ δ' ἐμὶν τὰφρα, καὶ τείχεος ἰόνιόντες.  
 ἔνθα γ' πῦρ κήσυντο, τίθεντο γ' δόρυπον ἱερὰς.  
 ἀφείδης γ' γέροντας ἀολλείας ἦγον ἀχαιῶν  
 εἰς κλισίῳ, παρὰ δ' ἐσφι τίθει μνησύνειά δ' αἶγαν.  
 οἷδ' ἐπ' ὀνείαθ' ἐποῖμα προκέμνη χιτῆρας ἱαλμοῦ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιτο, καὶ ἰδ' ἡτύος ἐξ ἔρον ἔντο,  
 τοῖς δ' ἰερῶν πάμπρωτος ὑφαίνετο ἤρχετο μῆτιν  
 νέεω· οὐ καὶ πρὸ δ' ἐν ἀρίσῃ φαίνετο βελή.  
 ὅσφιν ἐϋφρονέων ἀρογῆσατο, καὶ μετέειπον·  
 Ἀφείδῃ κύνεισε ἀναξ ἀνδρῶν ἀγάμεμνον·  
 ἐν τοῖ μὴν λήξω· σείο δ' ἄρξομαι, οὐνεκα πολλῶν  
 λαῶν ἱερὰ ἀναξ, καὶ τοῖ ζεύς ἐγγυάλιξε  
 σκηπτήρόν τ', ἦδ' ἐθέμισας, ἵνα σφίσι βυλευνῇα.  
 τῶ, σὺν χεῖρ' ἔπει μὴν φολῶναι ἔπος, ἦδ' ἐπακροῦσαι·  
 κρηῖναι γ' καὶ ἄλλω, ὅταν ἵνα θυμὸς ἀνώγῃ  
 εἰπεῖν ἐς ἀγαθόν, σείο δ' ἔξετασθαι κεν ἄρχῃ.  
 αὐτὰρ ἰγὼν ἔριδ'· ὅς μοι δοκεῖ εἶν' αἶψα.

ἔσῃσ'· αἱ γὰρ ἐπὶ τὸ μνησθήσθαι μάλα πολλαί·  
 ἄλλ' ἄλλοι μιν ἐκσι κερκασμόντες ἀχαιοί·  
 εἰσόκεπ' ἔροίω διαπέρθωμι· εἰ δ' ἐκὼν αὐτοί  
 φευγόντων σὺν νηυσὶ φίλῳ ἐς πατρίδα γαίῃ·  
 νῶϊ δ' ἐγὼ, δένελός τε, μαχισόμεθ' εἰσόκει' ἵκμαρ  
 ἱλίσ' εὐρωμην· σὺν γὰρ θεῶ ἐλήλησθωμι.

ὣς ἔφαθ' οἱ δ' ἄρα πάντες ἐπίαχον ὅπως ἀχαιῶν,  
 μῦθον ἀγασσάμενοι διομήδεος ἱπποδάμοιο·  
 βῆσι δ' ὤνισσάμεντο, μετεφώνεον ἱπποτάνας οἶον·

Τυδείδης πρὶν μὲν πολέμῳ ἐνὶ κερτερός ἐστι·  
 καὶ βελῇ μετὰ πάντας ὁμήλικας ἔπλεν ἄριστος·  
 οὐ γὰρ βῆ τὸν μῦθον ὀνόσασται, ὅσοι ἀχαιοί·  
 οὐ δ' ἐπ' ἄλιν ἐρέει· ἀτὰρ ὅτε λῆθ' ἴκεο μύθῳ·  
 ἦ μὲν καὶ νέος ἐστὶ, ἐμὸς δ' ἐκὼν καὶ πάλῃς ἔειπε  
 ὅτι πλεονέκτης γένεσθαι, ἀτὰρ πιπνυμένα βάλῃς  
 ἀργαίων βασιλῆας, ἐπὶ κατὰ μοῖραν ἔειπες·  
 ἀλλ' ἄν' ἐγὼν, ὅς σε ἴοι γηραίτερος εὐχομαι εἶναι  
 ἐξείπω, καὶ πάντα διίξομαι· ὅ δ' ἐκὼν τίς μοι  
 μῦθον ἀπμήσσει, ὅ δ' ἐκὼν ἀγαμέμνων·

· ἄφρητάρ, ἀθέμιστος, ἀνέσιός ἐστιν ἐκείνῳ·  
 · ὅς πολέμῳ ἐραταὶ ἐπιδημίῃς ὀκρυόεντ'·  
 ἀλλ' ὅτι νῦν μὲν πρὸς μέγα νυκτὶ μελαίνῃ,  
 δόρυ πατ' ἐφοπλισόμεθα, φυλακτῆρες ὅς ἐκαστοί  
 λευγάδων παρὰ τ' ἀφρονὸν ὀρυκτὴν τέχεος ἱκτός·  
 καθύροισιν μὲν ταῦτ' ἐπιτέλλομαι, αὐτὰρ ἐπεὶ  
 ἄρ' εἰδὴ, σὺ μὲν ἄρχε, σὺ γὰρ βασιλεύτατός ἐστι·  
 δαῖτα δαῖτα γέραςιν· εἰσὶν οἱ τοῖς οὐκ ἀφίκε·  
 πλεῖαί τοι οἶνον κλισίῃ, τὸν νῆες ἀχαιῶν  
 ἡμῶνται βρῆκθαι ἐπ' ὀβρία πόντον ἄρυσιν·  
 πᾶσιν γὰρ ἐστὶν ὅπως δέξῃ, πολέεσσι δ' ὀνέσας.

ἴσατο δακρυχέων· ὣς τε κρήνη μελαινυφῆς,  
 ἥ τε κατ' ἀργίλῳτος πέτρης δνοφρὸν χέει ὕδωρ·  
 ὡς δ' βαρυνενάχωρις ἐπε' ἀργείοισι μετῴδεται·  
 Ω φίλοι, ἀργείων ἡγήτορες, ἡ δὲ μέδοντες,  
 Ζεὺς μὲ μέγα κρονίδης ἄτη ἐνέδωκε βαρείῃ  
 εὐέλπιδος, ὅς πρηνὲς μὲν μοι ὑπέσχετο, καὶ κατένευσεν  
 Ἴλιον ἐκπέρσαιντ' οὐ γαίχιον, ἄπο νέεσθαι·  
 νῦν δὲ κακὴν ἀπάτῃ βυλεύσασθε, καί με κελύθε  
 δυσκλῆα ἄργος ἰκέσθαι, ἐπεὶ πολλὴν ὤλεθ' ἀλὸν·  
 οὐτῶ που δι' ἡμέλει ὑπερβύβει φίλον εἶν',  
 ὥς δ' ἡ πολλὰν πολίων κατέλυσεν κολομένη·  
 ἡ δ' ἐπὶ καὶ λύσσει· τῷ γὰρ κράτος ἐσὶ μέγιστον·  
 ἀλλ' ἄγεθ' ὥς ἂν ἐγὼ εἴπω περὶ ὧμαιθα πωλντόν·  
 φεύγω μὲν σὺν νηυσὶ φίλῳ ἐς πατρίδα γαίῳ·  
 σὺ γὰρ ἐπὶ τροίῳ αἰρήθω μὲν οὐρυγχεῖαν·  
 Ως ἔφαθ'· οἳ δ' ἄρα πάντοτε ἀκὴν ἐγένοντο σιωπῇ,  
 δὴν δ' ἄνεω ὕσαν τετιηότις ὕις ἀχαιῶν·  
 ὅφρ' ὃ δ' ἡ μετέφπε βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης·  
 ἄβριδ' ἡ· ὅτ' πρῶτα μαχέθωμαι ἀφραδ' ἐοντι·  
 ἢ θέμις ἐστὶν ἀναξ' ἀγορῇ, σὺ δ' ἐμὴ τι χολωθῆς·  
 ἀλκὴν μὲν μοι πρῶτος ὀνειδίσσεις ἐν δαναοῖσι,  
 φῶς ἔμμεν' ἀπὸ λῆμον, καὶ ἀνάλκιδες· ταῦτα δ' ὃ πωλντας  
 ἴδασ' ἀργείων ἡ μὲν νέοι, ἡ δ' ἐγέροντες·  
 ὅτ' ὃ διάνδιχα δῶκε χρόνον παῖς ἀγκυλομήτην·  
 σκῆπτρῳ μὲν τοι δῶκε τετιμῆσθαι πῆρ' ὀλντων·  
 ἀλκὴν δ' οὐπὶ δῶκεν, ὅ, τε κράτος ἐσὶ μέγιστον·  
 Δαμόνι, οὐτῶ περ μολα' ἔλπειαι ὕις ἀχαιῶν  
 ἀπὸ λῆμν' ἔμμεναι, καὶ ἀνάλκιδες ὥς ἀγορεύεις·  
 εἴδ' ἐρι αὐτῷ θυμὸς ἐπέστυται ὥς τε νέεσθαι·  
 ἔρχο, πάρ' ἐρι δόδ' ὅς, νῆες δ' ἐρι ἄρχι θαλάσῃ ἡ

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ι. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Γαμέμονος συμβλεύσαντος ὅτις ἑλλησι φυγεῖν,  
ἴσονται, τῶν ἐναντίων ἀποφανόμενοι γινώμειν  
Διομήδης καὶ νέεωρ, συμβλεύσαντος ᾧ νέεω-  
ρος, πρὸς Ἀχιλλεῖα πέμπονται πρίσβης. καὶ Διὸς ἱστορίᾳ  
αὐτοῖς, ἀντιῖπεν Ἀχιλλεύς. οἱ δὲ ἀπαγγέλλουσι. καὶ  
μετὰ ταῦτα ἐς ὕπνον ῥέπουσιν.

ΙΔΙΑΔΟΣ. Ι. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ἐξισίη δ' Ἀχιλλεύς ἀπεθείος ἐσιν ἰῶτα.

Σ οἱ μὲν ῥῶϊς φυλακὰς ἔχον. αὖ,  
τὰρ Ἀχαιοὺς  
θεοῖσιν ἔχε φύλα, φέβει κρυόωντος  
ἱταίρῃ.  
πένθει δ' ἀτλήτω βιβολύατο πάντοτε  
ἄεσσι.

ἄς δ' ἄνθρωποι δύο πόντον ὀρίνευον ἰθυχύνοντα.  
ἑορέης καὶ Ἰφιδάμανος, τῶν τε θρησκῶν ἀντορ  
ἐλθόντ' ἐξαπίνης. ἄμυνδρος δὲ τε κύμα κελαινὸν  
κρηθύνεται. πολλὰν δ' παρὲξ ἄλλα φύκος ἔχουσα.  
ὡς ἰδαίῃς θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι Ἀχαιῶν.  
ἄρβυδος δ' Ἀχιλῆϊ μιν ἀλάω βιβολύατο ἡτορ  
φοίτα κηρύκας λιγυφθόγγοισι κελαινῶν  
κλήδων εἰς ἀγορὴν κικλήσκων ἄνδρα ἑκαστον,  
μὴ δ' ἑοῶν. αὐτὸς δὲ μετὰ πρῶτοισι τῶν ἰῶτα.  
ἴδον δ' ἄν ἀγορῇ τετιηόσθαι. ἀνδ' ἀγαμέμνων



# ΙΑΙΛΔΟΣ.

παρ νηῶν πρὸς τειχος ἰπώσεται, ἢ κεν ἐγὼ τεί  
χαλκῷ δηώσας, ἕναρ βροτόοντα φέρωμαι.  
αὔριον ἦν ἀρετῶν δικάσεται. εἴκ' ἐμὸν ἐγχα-  
μνίη ἱπρ' χόμηνον. ἀλλ' ἐν πρώρισιν οἶω  
κέϊσεται ὑτηθείς, πολέες δ' ἀμφ' αὐτὸν ἰταῦροι  
ἠελίῳ ὀνιόντος ἰς αὔριον. αἱ γὰρ ἐγὼν εἰς  
εἴλω ἀθάνατ', καὶ ἀγέρας ἤματα πώντα,  
εὐσίμῳ δ' ὥς τίτ' ἀθωαίη, καὶ ἀπόλλων,  
ὥς νῦν ἡμέρη ἤδε κακὸν φέρει ἀργείοισιν.

Ὡς ἔκτωρ ἀγέρων, ὥς ὃ πῶς κτεάδ' ἔστιν.  
οἷδ' ἱππες μὲν λῦσαν ὑπὸ ζυγοῦ ἰδρώοντας,  
δῆσαν δ' ἱμάντας παρ' ἄρμασιν οἷσιν ἑασσας.  
ἐκ πόλιος δ' ἄεξαν βόας, καὶ ἱφια μῆλα  
καρπαλίμως. οἶνον δ' μελίφρονα οἰνίζοντα,  
σῆτόν τ' ἐκ μεγάρων, ἐπὶ δ' ξύλα πολλὰ λέγοντα,  
κνίσαν δ' ἐκ πεδίου ἄνεμοι φέρον ἕρπυλλον εἴσω.  
οἱ δ' μέγα φρονέοντες, ὥς πῆλ' ἐμοιο γαφύρῃ  
εἶαν παννύχιοι. πυράδ' ἐσφισι καίετο πολλά.  
ὥς δ' ὅτ' ἐν ἕρπυλλ' ἄσρα φαεινὴν ἀμφὶ σελήνῃ  
φαίνεται ἀειπριπία, ὅτε τ' ἐπλῆον ἡνέμεος αἰθέρ,  
ἐκ τ' ἔφανον πᾶσαι σκοπιαί, καὶ πρόωνός τε ἄνθρωποι,  
καὶ νάπαι, ἕρπυλλον δ' ἄρ' ὑπερῖρά γ' ἄσπετος αἰθέρ,  
πώντα δ' ἐπ' εἶδεται ἄσρα, γέγηθε δ' τε φρίνα ποιμήν,  
τόσσα μεσηγυῖν ἐν, ἠδ' ἐξάνθοιο ῥοαῶν  
πῶν καόντων, πυρὰ φαίνετο ἰλιέθι πρό.  
χίλ' ἄρ' ἐν πεδίῳ πυρὰ καίετο. παρ' ὃ ἑκάσθ' ἑκάσθ'  
εἶατο πευθήκοντα, σέλας πυρὸς αἰθομένοιο.  
ἵπποι δ' κρῖ λυκὸν ἐρεπτόμενοι, καὶ ὀλῦρα  
ἰσκαοτὶς παρ' ὀχισφιν, ἐϋθρονον ἢ μίμνον.

δ' ὀρέσσετ' ἐφοπλιζόμεθα . αὐτὰρ καλλιτέχεσσι πῦρ  
 λύσασθ' ὑπ' ἐξ ὀχέων, παρὰ δ' ἐσφισι βάλλετ' ἐδωδ' ἥρ'.  
 ἐκ πόλιος δ' ἄξεσθε βόας, καὶ Ἴφια μῆλα  
 κερππαλίμως, ὅνινον ᾧ μελίφρονα δινίξεαι.  
 σιτόν τ' ἐκ μιγάρων, ἐπὶ δ' ἐξύλα πολλὰ λήγεαί.  
 ὥς κεν παννύχιοι μέσφ' ἠοῦς ἤελγενίης.  
 καίωμιν πυρὰ πολλὰ, σέλας δ' εἰς ἕρπανδον ἴκη.  
 μήπως καὶ σέξ' νύκτα κερηκρομόωντες ἀχαιοί  
 φεύγην ὀρμήσωνται ἐπ' οὐρία νῶτα θαλάσσης.  
 μή μὲν ἄσπευδείγανέων ἐπιβῶν ἐκκηλοι,  
 ἀλλ' ὅς τις θύτων γε βίβας καὶ οἴκηθι πέσῃ.  
 βλήμενος ἢ ἰῶ, ἢ ἐγχέϊ ὀξυόωντι,  
 νηὸς ἐπιθρόσκων, ἵνα τις συγέησι καὶ ἄλλοι  
 φῶσιν ἐφ' ἵπποδάμοισι φέρην πολυδάκρυον ἄρμα.  
 κύρυκας δ' ἂν ἄσπευ δι' οἴκῳ ἀγγιλλόντων.  
 παῖδας πρῶθ' ἤβας, πολιορκιτάφους τε γέροντας  
 λήξεσθε περὶ ἄσπευ, θεοδμήτων ἐπὶ πύργῳ.  
 θύλτραι δ' ἡγεῖσθ' ἐνὶ μιγάροισιν ἐκώσῃ.  
 πῦρ μέγα κακόντων, φυλακὴ δ' ἐτις ἔμπεδος ἔσθ'.  
 μή λόχος εἰσέλθῃσι πόλιν, λαῶν ἀπεόντων.  
 ὥδ' ἔσθ' ὥς βῶες μεγαλήκροισι, ὥς ἀγορεύω.  
 μῦθος δ' ὅς μιν νῦν ὕγιης, ἐρημένῳ ἔσθ'.  
 τόν δ' ἠοῦς φάσσι μεθ' ἵπποδάμοις ἀγορεύσω.  
 εὐχομαι ἱλπομήνους διίτ', ἄλλοισιν τε θεοῖσιν  
 ἕξελάαν ἐνθένδ' ἐκύνεας κηρεσιφορήτους.  
 οὓς κῆροισι φορέεσσι μελαινώων ἐπὶ νηῶν.  
 ἀλλ' ἥτοι ἐπὶ νυκτὶ φυλοξομένη ἡμέας αὐρούς.  
 πρῶτ' ὅτ' ὑπ' ἠοῖ σὺν τεύχεσι θωρηχθέντοισι.  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐγείρομεν ὀξύν ἄρμα.  
 αἰθμα αἶκι μὲν ὁ τυδείδης κρατερὸς διομήδης

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔλαρ πρὶν πολέμῳ ἀποπαύσεται ὄβριμ' ἔκταρ  
 πρὶν ὠρθαι παρὰ ναῦφι ποδῶκεα πηλείωνα  
 ἔμαπ' ὦλ', ὅτ' ἂν οἱ μ' ἐπὶ πρύμνησι μάχονται,  
 εἴναι ἐν ὀνοτάτῳ, περὶ παρόκλοιο πέσοντ'.  
 ὥς γὰρ θέσφατόν ἐστι· σέθεν δ' ἐγὼ ἔκ ἀλεγρίῃ  
 χρομένης, ἔδ' ἔκε τὰ νείατα πείραθ' ἵκηαι  
 χαίης καὶ πόνηιο, ἵν' ἰαπυτός τε, χρόνος τε  
 ἡμεῖοι, οὗτ' αὖ γ' ἡς ὑπερίοντ' ἡελίοιο  
 τέρπωντ' οὗτ' ἀνέμοισι· βαθύς ἢ τάρταρος ἀμφί·  
 ἔδ' ἦν ἐνθ' ἀφίκηαι ἀλωμένη, οὐ σεν ἐγὼ γε  
 σκυζομένης ἀλέγῳ, ἵπεί ἔσ' εὖ κύντερον ἄλλο.  
 Ως φάτο, τὸν δ' οὐπὶ προσέφη λευκώλεοντ' ἦρ·  
 ἐν δ' ἔπεισ' ὥκεανῶ λαμπρὸς φάος ἡελίοιο·  
 ἔλθον νύκτα μέλαιναν ἐπὶ λείδωρον ἄρβραν·  
 ῥωσὶν μὲν ῥ' ἀέκυσσιν ἔδν φάος, αὐτὰρ ἀχαιοῖς  
 ἀσπασίη φρίλλισος ἐπήλυθε νύξ' ἐριβωνή·  
 ῥῶαν δ' ἔντ' ἀγορὴν ποιεῖτο φαίδιμ' ἔκταρ·  
 νόσφι νεῶν ἀγαγὼν ποταμῶ ἐνὶ δινήειπ·  
 ἐν καθαρῶ, ὅθι δ' ἡ νεκῶν διαφαίνετο χῶρ'.  
 ἔξ' ἵππων δ' ἀποβάντοσ' ὧς χθόνα μῦθον ἀκυσσοῖ  
 τὸν ῥ' ἔκταρ ἀγόρευε δ' ἰὶ φίλ', ἐν δ' ἄρα χερσὶ  
 ἐγχεσ' ἐχ' ἐνδ' ἐκάπηχυν, πάροιθε ἢ λαμπρὸς δ' υρὸς  
 αἰχμή χαλκείη, περὶ ἣ χυύσεος θείης πόρκης.  
 ὦλ' ὅτ' ἐρδσάμενος ἔπια πῆρόοντα προσήνυδα·  
 Κίκλυτέ μεν ῥῶες, καὶ δ' αἰρῶνοι, ἦ δ' ἐπὶ κερροί·  
 νῦν ἱφάμῳ νῆας τ' ὀλέεας, καὶ πάντας ἀχαιούς·  
 ἀπ' ἀπονόσῃσιν ποτὶ Ἴλιον ἠνεμόεσσαν·  
 ἀλλὰ πρὶν κνέφας ἦλθε· ῥ' νῦν ἱσώσωε μάλιστα  
 ἀργείης, καὶ νῆας ὧς ῥ' ἡμιῖν θαλάσσης·  
 ἀλλ' ἔτοι νῦν μὲν πεθώμεθα νυκτὶ μελαίνῃ·  
 δόρυπατ'

ἔϊξο, θεὸς δ' ὑπὸ πρῶτῃ μέγας πηλὸν ἔλκετο  
 αἶψ' οἷα διὸς ἀμφί, ἀθωαίητε, καὶ ἦρῃ,  
 ἦδ' ὡς ἐπὶ μιν προσφώνιον, εἰδ' ἐρέοντο·  
 οὐτάρ θ' ἔγνω ἔστιν ἐνὶ φρεσὶ, φώνησέν τε·  
 τίφθ' οὕτω τετρήθον ἀθωαίητε, καὶ ἦρῃ;  
 εἰ μὲν θωὴ κάμειτόν γε μάχῃ ἐνὶ κυδῖαντίρῃ·  
 ἔλυσσας φῶας· τοῖσιν κέρην αὐτὸν ἔθευε  
 πάντως οἷον ἐμόν γε μὲν ὅ, καὶ χεῖρόν τ' ἀπῆλοι;  
 εἰκ' ἂν μερῖψαι ὄθι θεοὶ εἰσὶ ἐν ὀλόμῳ.  
 σφῶν δ' ἐπὶ πρὶν πρὶν ῥόμος ἔλαβε φαίδιμα γυῖα,  
 σφῶν πόλιν ὀνύχ' ἰδέειν; πολέμοιό τε μέρμυρα ἔργα·  
 οὐδὲ γὰρ ἐξέρω· τόδ' ἐκ τετελισμένον ἔσαι·  
 εἰκ' ἂν ἐφ' ὑμετέρων ὀχέων πληγύνει κῆρυγ'·  
 ἔλ' ἐς ἔλκετον ἴκισθον, ἵν' ἀθανάτων ἔσθ' ἐσὶ·  
 ὧς ἔφαθ', αἶψ' ἐπέμυσσεν, ἀθωαίητε, καὶ ἦρῃ·  
 πλησίαι αἶγ' ἦδ' ὡς, κατὰ τὸ φῶας μεδέειν·  
 ὅτοι ἀθωαίη ἀκίων ἦν, εἰ δ' ἐτι εἶπε,  
 σκυζομένη δ' ἴππαρ· χόλος δ' ἐμιν ἀργίος ἦρῃ,  
 ἦρῃ δ' εἰκ' ἐχάδε σῆθος χόλον, ἀλλὰ προσήυδα·  
 ἸΔυότατε κρονίδῃ, ποῖον ἔν μῦθον ἔειπες;  
 εἴ νυν καὶ ἡμῖς ἰδὲ μῦθον ὅρι δένῃ· εἰκ' ἐπιφκτόν,  
 ἀλλ' ἐμης, δαναῶν ὀλοφυρόμεν ἀχμητῶν,  
 οἶκεν δ' ἡ κακὸν οἶτον ἀναπλήσαντο, ὄλωνται·  
 ἀλλ' ἦρι πολέμῳ μῦθον ἀφ' ἐξόμοιο, εἰ σὺ κελεύεις·  
 βελὴν δ' ἀργείοις ὑποθησόμεν, ἥ τις ὀνήσῃ,  
 ὧς μὴ πάντοτε ὄλωνται, ὀδυσαμένοιο θεοῖο·  
 Τὴν δ' ἀπαμειβόμενον, προσέφη νεφελήρετα (ἴνυ·  
 ἡοῦς δ' ἡ καὶ μάλλον ὑπὲρ μῦθον κρονίωνος  
 ὅφρα, αἶκ' ἐθέληθα, βωπὶς πότνια ἦρῃ,  
 ἔλκοντ' ἀργείων δουλὴν στρατὸν ἀχμητῶν·

πῇ μέμαρν· τί σφῶν ἐνὶ φρεσὶ μαίνεται ἔρως  
 οὐκ ἔαα χρονίδης ἐπαμυνέμεν ἀρχαίοισι·  
 ὦδ' ἔγερ' ἠπέλησε κράνυ ποῦς, εἰ τελέειπρ,  
 γυώσσει μὲν σφῶν· ὑφ' ἄρμασιν ὠκίας ἵππυς,  
 αὐτὰς δ' ἐκ δ' ἴφρυ βαλέειν, κατὰ θ' ἄρματα ὄξρη·  
 οὐδ' ἐκὼν ἐς δικάτυς πεδίτελλομένους ἐνικυρὺς  
 ἔλκε' ἀπαλθούσιων, ἄκων μαλρπῆσι κραυγός·  
 ὅφρ' εἰδῆς γλαυκῶπι, ὅτ' ἂν σῶ πατρὶ μάχηα,  
 ἔρη δ' οὔ τι τόθ' ἐν νειεσίζετα, ὅτ' ἔχρηται·  
 αἰὲν γὰρ οἱ ἔωθεν ἐνικλάνθ', τῇ νοήσῃ·  
 ἀλλὰ σύ γ' αὐνοτάτη κύον ἀδ' δίδεις, εἰ ἐτεόν γε  
 ἐλμήσεις, διὸς ἄντα πελώριον ἔγχος ἄερα·  
 ἢ μὲν, ἄρ' ὥς ἐπ' αὖτ' ὅς, ἀπέβη πόδας ὠκία ἵε·  
 αὐτὰρ ἄθλωαίω ἦρη πρὸς μῦθον ἔειπεν·  
 ὦ πόρρωι ἀχιόχοιο διὸς τέκνυς, ἐκείτ' ἔγω γε  
 νῶν ἐῶ διὸς ἄντα ἐρώτων ἱεκευ πολυμήθερ·  
 τῶν ἄλλος μὲν ἀποφθίδω, ἄλλος δ' ἐβιώτω,  
 ὅς κε τύχη· κείνος δ' ἐτὰ, ἄφρονέων ἐνὶ θυμῷ,  
 φασίτε, καὶ δ' ἀναοῖσι δ' ἰκαίτω, ὥς ἱπιακίς·  
 Ω· ἄρα φωνήσασα, πάλιν ἔειπε μώνυχας ἵππυς·  
 τῇσιν δ' ὦραι μὲν λῦσαν καλὴν ἵππυς·  
 καὶ βύς, μὲν κατέδησαν ἐπ' ἀμβροσίῃσι κάπησιν·  
 ἄρματα δ' ἐκλινῶν πρὸς ἐνώπια παμφανόωντα,  
 αὐταὶ δ' ἔχρυσέοισιν ἐπὶ κλισμοῖσι κάθισον,  
 μίγδ' ἄλλοισι θεοῖσι φίλον τετιημένον ἥτορ·  
 ζυγὸς δ' πατήρ ἴδ' ἦθεν ἐύροχον ἄρμα καὶ ἵππυς,  
 οὐλυμπόν δ' ἐδίδωκε θεῶν δ' ἐξίκετο θώκας·  
 τοῖ δ' ἐκὼν ἵππυς μ' ἔλυσεν κλυτὰς ἐννοσίγαιος,  
 ἄρματα δ' ἀμφωμοῖσι τίθη, κατὰ λῖτα πετάσας·  
 αὐτὰς δ' ἔχρυσόν τε θρόνον δ' ἐρύσσει ζυγὸς



ἦρῃ, πρὶς δ' αὖθις, θυγάτηρ μεγάλοιο κρόνιοι·  
 αὐτὰρ ἄθλωαίη κούρη διὸς αἰγιόχοιο·  
 πέπλον μὲν κατέχυνεν ἰανὸν πατρὸς ἐπ' οὐδὶ,  
 ποικίλῃ, ὃν ῥ' αὐτὴ ποίηται, καὶ κάμει χερσίν·  
 ἢ δ' ἑ χιτῶν' ἐνδύει διὸς νεφεληγρέταο,  
 τεύχεσιν ἑς πόλεμον θωρήσας διακρύπτει·  
 ἑς δ' ὄρεα, φλόγα ποσὶ βήσας, λαύζον δ' ἔγχετο  
 βειθὺν, μέγα σιβαρὸν, βῆ δ' ἀμνησι σίχας ἀνδρῶν  
 ἠρώων, βῆσιν τε κατέσεται ὀβριμοπάτρη·  
 ἦρῃ δ' ἡ μολογὴ θοῶς ἐπ' ἱμαίετ' ἄρ' ἵππας,  
 αὐτόματα δ' ἐπύλαι μύκον ἕρανθ', ἃς ἔχον ὦραι,  
 τῆς ἐπιτέτραπται μέγας ἕρανός, ἑλύμπός τε,  
 ἢ μὲν ἀνακλῖναι πυκινὸν νέφεος, ἢ δ' ἐπιθῆναι·  
 τῇ ῥαδὶ αὐτῶν κινῆσθαι ἔχον ἵππας·  
 ζεὺς δ' πατὴρ ἰδὲ θεὸς ἐπὶ ἰδὲ χῶσάτ' ἄρ' αἰνῶς·  
 ἴεν δ' ὄρωε χρυσόπτερον ἀγγελῆσθαι·  
 βωσὴν ἴθι ἴθι ταχὺ ἅμα πολλὴν βέπει μήδ' ἵα ἀντίω  
 ἔρχεσθ', ὃ γὰρ καλὰ σωοισόμεθα πτόλεμόνδε·  
 ὠδὲ γὰρ ἐξέρω, τόδε κ' ἡ τετελεσμένον ἔσθαι·  
 γυῖώσω μὲν σφῶν ὑφ' ἄρμασιν ὠκείας ἵππας·  
 αὐτὰς δ' ἐκ δίφρου βαλῶ, καταβ' ἄρματα ἄξω·  
 ὃ δ' ἐκεῖ ἐς δικάτῃς πειτελομένους ἵναυτοὺς  
 ἔλκε ἀπαλθῆσθαι, ἅκου μάρπησι κεραινοῖς,  
 ἔφρ' εἰδὴ γλαυκῶπις ὅτ' ἀνὴρ παρὶ μάχεται·  
 ἦρῃ δ' οὐπ' τόθ' ἐνιμισίφομαι, ὃ δ' ἐχρυσῶμαι·  
 αἰὶ γὰρ μοι ἔωθεν ἐνικλῶν ὅ, τ' ἰνοήσω·  
 ὧς ἔφατ' ὦρ' ὃ ἴεις ἀελλόπος ἀγγελῆσθαι·  
 βῆ δ' ἐκαστ' ἰδαιῶν ὄρειων ἐς μακρὸν ὄλυμπον,  
 πρῶτῃσι δ' ἐπύλῃσι πολυπύχῃ ἑλύμπωιο  
 αὐτομένη κατέρυκε, διὸς δ' ἐσφ' ἔγγυι μῦθον·

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὄλυν μένων δ' αὖ αἶψ' ἐκ κλισίης ὅμιλ' ὑπὸ πύρρον περ  
 οἴκῳ δ' ἢ κακὸν οἶτον ἀναπλήσσαντο βεῖ, ὅλωνται  
 ἀνδρὸς ἐνὸς ῥίπῃ· ὃ δ' ἐμείνεται οὐκ ἔτ' ἀνικτῶς  
 ἔκτωρ πρὶαμίδης καὶ δ' ἢ κακὰ πολλὰ ἔοργε.

Τὺν δ' αὖτε προσέειπε θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη·  
 καὶ λίω οὗτός γε μένος, θυμὸν τ' ὀλίσειε,  
 χερσὶν ὑπ' ἀργείῳ φθίμῳ· ὅτ' ἐν παρὶδί γαίῃ·  
 ἀλλὰ πατήρ ὃν μὸς φρὶσὶ μαίνεται οὐκ ἀγαθῆσι  
 χέετ' ἴλιος, αἶεν ἀλγὺς, ἱμῶν μῦνέων ἀπερωγύς·  
 οὐδ' ἐπὶ τῶν μέμνηται, ὃ οἱ μάλα πολλάκις ἦόν  
 τ' ἐφρόμηνον σώεσθαι ὑπ' Ὀδυσσεύος αἰθλῶν.  
 ὅττοι ὃ μῦν, κλαίεισκε πρὸς οὐρανόν· αὖ τ' ἄρ' ἐμὶ [δύ]  
 Τῶν, ἱπαλεξήσασα ἅπ' οὐρανόθεν προΐαλλον.  
 εἰ γὰρ ἐγὼ τάδε ὕδ' ἐνὶ φρὶσὶ πδουκαλίμῃσιν,  
 ἵπτε μιν ἔς αἰδέο πυλάρταο προὔπεμψον  
 ἐξ ἱρίβους, ἄξοντα κύνα συγερῶ αἰδέο,  
 οὐκ ἄν ὑπεξέφυγε συγὸς ὕδατος αἰπὰ ῥέεθρα.  
 νῦν δ' ἐμὶ μῦν συγίει θέπιδος δ' ἐξήνυσε βελάτα  
 ἢ οἱ γούνατ' ἔκυσσε, καὶ ἔλλαβε χερὶ γυνίον·  
 λισσομένη τιμήσαι ἀχιλλῆα πηολίπορθον.  
 ἔσαι μάρ ὅτ' ἄν αὖτε φίλῳ γλαυκῶπιδι εἴπῃ·  
 ἀλλὰ σὺ μῦν νῦν νῶϊν ἐπέντωε μώνυχας ἵππους,  
 ὅφρ' ἄν ἐγὼ καταδύω δῖος δόμον αὐγιοχοιο,  
 τόβ' χερσιν ἐς πόλιν μοι θωρήξομαι, ὅφρα ἰδῶμαι,  
 εἰ νῶϊν πρὶαμοιο πᾶϊς κορυθαίολες ἔκτωρ  
 γηθήσει, προφάνεντι ἀνὰ πηολέμοιο γυφύρας.  
 ἥ τις καὶ βῶων κέρει κύναις, ἦ δ' οἶωνοὺς  
 δημῶ, καὶ σάρκισι, πῖσων ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.  
 Ως ἔφατ'· οὐδ' ἀλίθῃσι θεὰ λδοκῶλων ὅτ' ἦρ'·  
 ἢ μῦν ἐποιομένη· χρυσάμπυλας ἔντυον ἵππων

ὅττοι δ' ἄλλοι φάρ' ἔκ' ἐξήλθο πικρὸν οἶσιν,  
 θῆκε δ' ἐπὶ νύρῃ· τότ' οἱ δ' ἄν' ἑρυσθαίοντες ἔκτωρ  
 αὖ ἐρύοντα, παρ' ὧμον, ὅτι κληῖς ἀποέρχεται  
 ἀνχίνα τε, σῆθος τε, μάλιστα δ' ἐκείον' ἔσται,  
 τῇ δ' ἐπὶ οἱ μεμαῶτα βάλε λίθω δρυόεντι.  
 ῥῆξεν δ' ἐπὶ οἱ νύρῃ· νάρκησε δ' ἡ χεὶρ ἐπὶ καρπῷ.  
 σῆ δ' ἡ γνύξει πῶν, τόξον δ' ἐπὶ οἱ ἐκπῖσε χερσός.  
 κί' αὖ δ' οὐκ ἀμείλῃσι κασιγνήτοις πεσόντες,  
 ἀλλὰ θείων περίβη, καὶ οἱ σάκας ἀμφεκάλυψεν  
 τὸν, μῆν' ἐπεθ' ὑποδύντε δ' ὡς ἐρήρης ἑταῖροισιν  
 μηκιστὸς ἐχίοιο πάϊς, καὶ δῖος ἀλάστωρ,  
 ἦεν ἐπὶ γλαφυρὰς φερίτῳ βαρὶα σινάχοντα.  
 αὖ δ' αὖτις ῥώεσιν ὀλύμπιος ἐν μένος ὤρσεν.  
 οἶδ' ἰθὺς τάφροιο βαθείης ὧσαν ἀχαούς.  
 ἔκτωρ δ' ἐν πρῶτοισι κίε, δένει βλεμναίνων.  
 ὧς δ' ὅτε πῆτε κύων σὺς ἀγρίη, ἠὲ λείοντες,  
 ἀπῆλται κατόπιω, πρὸς ἑταίρους πεποιθώς,  
 ἰαχία τε, γλαστὸς τε ἑλισσόμενος τε δοκούσῃ,  
 ὧς ἔκτωρ ὠπάζει κερκασμόντας ἀχαιούς.  
 αἶεν ἀποκτείνων τὸν ὀπίσθῃ, οἶδ' ἐφίβοντο.  
 αὐτὰρ ἐπὶ δία τε σκόλοπας, καὶ τάφρον' ἔδυσσε  
 φόβοντο δέ, πολλοὶ δ' ἄλλοι μὲν ὧν ὑπὸ χερσίν,  
 οἱ μὲν δ' ἡ παρὰ νηυσὶν ἐρητύοντο μένοντες,  
 ἀλλήλοισι τε κικλόμενοι· καὶ πᾶσι θεοῖσι  
 χιτῶας ἀνίσχοντες, μεγάλ' οὐ χιτόωντο ἑκαστος.  
 ἔκτωρ δ' ἀμφιπερὶ σῶφ' ἀλλήλοισι ἵππεσ,  
 γοργῶς ὁμμάτ' ἔχων, ἠδ' ἐβροβλῆτο ἄρῃ.  
 τὺς δ' ἐπὶ δ' ὧς ἑλῆεν· θεὰ δ' οὐκ ἔλυντο ἔρῃ.  
 αὖ δ' ἀθλαίῳ ἵππῃ πλερόντα πρὸς σῆμα

ὦ πόποι ἄριστοισι δῖος τέκος, οὐκ ἔτι νῦν

τοῖσι δ' ἐπ' ἰδομένοισι, καὶ ὁπάρῃ ἰδομένη  
 μελόνῃς, ἀτάλῃσι ἐνυαλύει ἀνδρῶν φόντα.  
 τοῖσι δ' ἐπ' οὐρύπυλῳ δὴαίμονι ἀγλαὸς ἦός.  
 τῶν κρος δ' εἴνατος ἦλθε παλίντονα τόξα πταίνων.  
 εἴδ' ἄρ' ὑπ' αἴουσι σάκεϊ τελαμωνιάδαο.  
 ἐνθ' αἴας μὲν ὑπεξέφειρον σάκας· αὐτὰρ ὅγ' ἦρως  
 παπλήνας, ἐπεὶ ἄρπιν οἰσούσας ἐν δμίῳ  
 βελύχας, ὁ μὲν, ἀνθιπιδόν, ἀπὸ θυμὸν ὄλεσεν.  
 αὐτὰρ ὁ, αὐτὸς ἰὼν πάντας ὧς ὑπὸ μητέρα δῦσκει  
 εἰς αἴανθ'· ὁ δ' ἐμὴν σάκεϊ κρύπτει φασγάνῳ  
 ἐνθαπὶνα πρῶτον βῶων· εἰς τῶν κρος ἀμύμων,  
 ὄρσιλοχον μὲν πρῶτα, καὶ ὄρμιμον, ἦ δ' ὀφίλεισιν,  
 δαίτορά τε, χρομίον τε, καὶ ἀντίθορον λυκαφόντιν,  
 καὶ πτολυσμονίδην ἀμοπαίονα, καὶ μελάνιππον,  
 πάντας ἐπαυτίνας πέλασε χθονὶ πελυδοτέρῃ.  
 τὸν δ' ἰδὼν, γήθησαν ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 τόξον ἀπὸ κρατερῶν πῶν ὄλεοντα φαλαγγας  
 εἴ δ' ἐπ' αὐτὸν ἰὼν, καί μιν πρὸς μῦθον ἔειπε.  
 τῶν κρος φίλη κεφαλὴ τελαμώνι κείρανι λαῶν,  
 βῆλ' οὕτως, αἰκέντι φόως δ' ἀναοῖσι γένηται  
 παρὶ τὴν σῶν τελαμῶνι, ὅς' ἐφίφει τυτθὸν ἰόντα,  
 καί σε νόθον περ ἰόντα, καμίσανθ' ὧς ἐνὶ οἴκῳ.  
 τὸν καὶ τηλὶθ' ἰόντα· δὴ κλέης ἐπίβηθον.  
 οἱ δ' ἐπ' ἐξέρχον ὡς καὶ τετελισμένοι· ἔσαν.  
 αἰκὴν μοι δῶκεν Ζεὺς ἀγίοχος, καὶ ἀθήνη,  
 ἰλίῳ ἐξαλαπάξαι δὴ κτίμῃον πτολίεθρον,  
 πρῶτον τοι μὲν ἐμὲ προσβήτορ ἐν χερσὶ θήσῃ  
 ἢ φίποδ', ἢ δ' ὕω ἵππας αὐτοῖσιν ὄχι σφιν.  
 ἢ γ' αὖχ', ἢ κινέει δ' ὁ μὲν λῆχος εἰσωναδαῖνοι.  
 τὸν δ' ἀπαμειβόμενος, προσφώνει τῶν κρος ἀμύμων.

ΙΛΙΔΟΣ.

Ἰωάν, οὐθ' ἕκαστον δι' ἡμετέραν τε ἕκαστος  
ἐποίησεν ἐν παλιμῶν· οὐθ' ἐνὸς ἄξιον ἐμὴν  
ἕκαστον· οὐδ' ὡς ἡμετέρας ἐν ἡμετέροις περὶ κηλῶ.

**Ζ**ὸν πολτόρ, ἢ ῥα ἔν' ἡδὴ ὑπερμυμένω βασιλῆαν  
 τῇ δ' ἄτῃ ἄσπας, ἐσίμιν μέγα κῦδος ἀπῆνυρας ;  
 εὖ μὲν δ' ὅς ποτίφμημι τέον περιπαλλία βωμόν  
 νηὶ πολυκλήϊδι παριλθέμεν ἐνθαδὲ ἱέρων.  
 ὅλ' ὃ πᾶσι βοῶν δῆμόν, καὶ μηρί' ἔκηα,  
 ἱέμεν θ' ῥοίω δὴ τέχεον ἑξαλαποῦσα.  
 ἀλλὰ ζῶν, τόδε πέρ μοι ἱπικρὴννον ἑλδωρ,  
 αὐτὸς δ' ὅς περ ἔαθ' ὑπικρυγείη, καὶ ἀλύξαι,  
 μύδ' οὐτ' αὖ φώεσιν ἔα δ' ὀλμναδαὶ ἀχαιούς.

Ως φωνή τοῦ ᾧ πατήρ ὁλοφύρατο διακρύχοντα.  
 οὐδ' οἱ λαὸν σόον ἐμύθησε, οὐδ' ἀπολύειν  
 αὐτίκα δ' αἶετόν ἤκε τελέστατον πετιηνῶν.  
 νεβρόν ἔχοντ' ὀνύχασιν τέκετο ἱλάφοισι ταχέως.  
 παρ' ᾧ διὸς βωμῷ περικαλῆϊ, κάββαλε νεβρόν.  
 ἔνθα πανομφαίῳ ἡνὶ ρίεσσον ἀχαιοί.  
 οἶδ' ὧς ὅω ἐΐδιον ὅτ' ἄρ' ἐκ διὸς ἤλυθεν ὄρνις,  
 μαῖλλον ᾧ βῶσαι θόρον μνήσασθαι ᾧ χάλυμπος.  
 ἐνθ' οὐτ' ἔσπευον πρότερον δαυαῶν πολλῶν περ ἰόντων,  
 εὖξάτο τυδείδῃσιν πόλιν ὅλβην ὠκίαν ἱππας  
 τάφρυν τ' ἐξελασσαι, καὶ ἵναντήσιν μαχίσασθαι,  
 ἀλλὰ πολὺν πρότ' ᾧ βῶρον ἔλκεν ἀνδρῶν κερυεῖν  
 φραδμονίδῃσιν ἀγέλαον· ὃ μῆν, φύγαδ' ἔραπον ἱππας.  
 ἔπειθ' ᾧ μεταστρεφόμενι, μεταφρίνῳ ἐν δόρυ πῆξεν,  
 ὥμων μεσσηγύς, σφῆς τ' ἐσθῆσφιρ ἔλασεν.  
 ἔπειθ' ᾧ ὀρχέων ἀρχέησε ᾧ τοῦ χιτ' ἑπ' αὐτῷ.  
 πόρ, ᾧ μετ' ἀφειδίῃσιν ἀγαμέμνων, καὶ μενέλαος.  
 τοῖσι δ' ἐπ' αἰῶνός, οὐδ' ἐπιδέμενοι ἄλκην.



οἱ δ' ἐπὶ οὐρανὸν ἰλίκην τε, καὶ αἶθρα, δ' ὦρ' ἀνὰ γαῖαν,  
 πολλὰ δ' αἶψα, καὶ χαρίεντα· σὺν δ' ἐσφισὶ βούλειο νίκην,  
 εἴπερ γὰρ κ' ἐθέλοιμι, ὅσοι δαυαοῖσιν ἄρωροι  
 γῶας ἀπώσασθαι, καὶ ἱερὴν ἐμὴν οὐρὸν περὶ  
 ἔμπεδον ἐνδοκάχοιτο καθήμενον· οἷος ἐν ἰδμῇ.  
 Τὴν δ' ἐμὴν ὀχθήσας προσέφη κρείων ἱνοσίχθων,  
 ἦ ῥα ἀπὸ πέποις, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;  
 οὐκ ἄρ' ἐγὼ γ' ἐθέλοιμι Διὶ κρονίῳ νικᾶσθαι  
 ἢ μέας τὸς ἄλλους, εἰπὴν πολὺ φέρτατός ἐστιν.  
 ὧς οἱ μῦθον τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀλόφουν.  
 τῶν δ' ὅσους ἐκ νηῶν ἀπὸ πύργου τέφρος ἔειργε,  
 πλῆθον ὁμῶς ἵππων τε, καὶ ἀνδρῶν ἀσπίσων  
 εἰλαμένων, εἶλεν ὃ θεὸς ἀτάλαντος Ὀρῆϊ  
 ἔκτωρ πριαμίδης, ὅτι οἱ ἴδους κῦδος ἔδωκε,  
 καὶ νῦν κεν ἔρησεν πυρὶ κηλὶ νῆας εἴσας,  
 ἢ μὴ ἐπὶ φρεσὶ θῆκ' ἀγαμέμνονι πότνια Ἥρη.  
 οὐτῷ πομπύσαντι θοῶς ὀρύναι ἀχαιούς.  
 βῆ δ' ἵνα παρὰ τε κλισίας, καὶ νῆας ἀχαιῶν,  
 πορφύρεον μέγα φάρος ἔχον ἐν χερσὶ παχείῃ.  
 σῆ δ' ἐπ' ὀδυσῆος μεγακλήτεϊ νηὶ μελαίνῃ.  
 ἦ ῥ' ἐν μεσάτῳ ἔσκε, γέγωνέ μιν ἀμφοτέρωθεν,  
 ἢ μὴ ἐπ' αἰάνθους κλισίας τελαμωνιάδας,  
 ἢ δ' ἐπ' ἀχιλλῆϊ, τοί, ῥ' ἔχατοι νῆας εἴσας  
 εἴρυσσαν, ἠνορέη πίσσωσι, καὶ κάρτεϊ χερσίν.  
 ἦ ὕσεν ὃ δ' ἰατρύσιον· δαυαοῖσι γέγωνός.  
 αἰδώς ἀργεῖοι, κάκ' ἐλέγχια, εἴδους ἀρητοί,  
 πῇ ἔβασθ' οὐχολαί, ὅτι δὴ φάμιν εἶναι αἰετοί,  
 ἃς ὁππῶτ' ἐν λήμνῳ κεναιαχέας ἡγοράσθαι  
 ἔδοντο δὲ κρία πολλὰ βοῶν ὀρθοκραιφάνων,  
 πίνοντο δὲ κρητῆρας ἐπισφίρας οἶνοιο,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Τρωες, καὶ λυκιοι, καὶ δαρδάνοι ἀρχιμαχηταί,  
 οἵ κ' εἰς φίλοι-μνήσασθαι ὃ θούεδος Ἀλκίης.  
 γινώσκω δ' ὅπ' μοι πρόσφρων κατ' ἐνδύσει χρόνιον  
 νίκηω, καὶ μέγα κῦδος, ἀτὰρ δ' ἀναοῖσι γ' ἐπὶ μαλ-  
 ὐνυιοι, οἳ ἄρα δὴ τάδε τέλεια μηχανέωντο.  
 ἄβληχρ', οὐδ' ὃ νόσφρα, τάδ' οὐ μένος ἀμὸν ἱεῖς.  
 ἵπποι δ' ῥ' ἔκτα φρονὺν περ θοοῖνται ὀρυκτὴν.  
 ἀλλ' ὅτε κεν δὴ νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσι γέωμαι,  
 μνημοσύνητις ἔπειτα πυρὸς δ' ἡίοιο γένεω,  
 ὡς πυρὶ νῆας ἐνι πρῆσώ-κτιν' οὐδ' ὃ καὶ αὐτοῖς  
 ἄρ' ἔκτα παρὰ νηυσὶν, αὐτοῖς μένος ὑπὸ κειπνῶ.

Ως εἰπὼν, ἵπποισιν ἐκέκλετο, φώνησέν τε.  
 ξάνθω τ' ἐκ, καὶ σὺ πόδας γυν, καὶ αἰθῶν, λάμπετε δ' ἴσθι,  
 νῦν μοι τὴν κομιδὴν ἀποτίψον, ἥν' μάλα πολλὴν  
 ἀνδρομάχη θυγάτηρ μεγαλήτορ' ἠετ' ἔπειτα,  
 εἰ μὴν παρ' προτέροισι μελίφρονε πυρὸν ἔθηκεν.  
 εἰνὸν τ' ἐγκεράσασα πιεῖν, ὅτε θυμὸς ἀνώγει,  
 ἢ ἐμοί, ὅς περ οἱ θαλερὸς πόσις εὐχόμεαι εἶναι.  
 ἀλλ' ἐφομαρτίζω, καὶ σπύδ' ἔδωκα, ὅφρα λάβωμαι  
 ἀσπίδα νεορέω, τῆς, νῦν κλέος οὐρανὸν ἵκει,  
 πᾶσιν χρυσείῳ ἐμῶν, κανόνος τε καὶ αὐτῆς.  
 αὐτὰρ ἀπ' ὧμοιῖν διομήδεος ἵπποδάμοιο,  
 διαδάλοισι θάρηκα, τὸν, ὕφαιτος κάμι τόνυχον.  
 οἱ τούτω κε λάβοιμι, ἐλποίμην κεν ἀχαιούς  
 αὐτὸν χεὶ νηῶν ἐπιβησέμεν ὠκεῖαν.

Ως ἔφατ' ἐλχόμεν' οὐκ ἐμῶν, καὶ πόντιον ἦρ-  
 σεῖσθαι δ' ἐνὶ θρόνῳ, ἐλέλιξε δ' ὃ μακρὸν ὄλυμπον.  
 καὶ ῥ' ἔκτα σπείδονα μέγα, θεὸν, ἀντίον κῦδα-  
 ῖ πόποι ἐννοσίγαι, δέρυθ' αὖτις, οὐδ' ἐν σοί περ  
 θηλυμῖνον δ' ἀνὰ ὄρεσιν ἐφ' ἑσπέρῃ θυμῷ

- „ δῶσα. ἀνὴρ δ' ἐκὼν οὐδὲ Διὸς νόον ἐρύσασθ.  
 „ οὐδ' ἐμὰλ' ἴφθιμ' ἔπειν πολὺ φέρτατός ἐστι.  
 Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης.  
 καὶ δὴ ταῦτόν γε πάντα γέρον κατὰ μοῖραν ἔειπε.  
 ἀλλὰ τόδ' αἰνὸν ἄχος κραδίῳ, καὶ θυμὸν ἱκάνει.  
 Ἴκτωρ γάρ ποτε φῆσθ' ἐνὶ φῶϊ ἀγορεύων,  
 τυδείδης ὑπ' ἐμῷ φοβούμην' ἴκσο νῆας,  
 ὥς ποτ' ἀπειλήσθ', τότε μοι χάνοι δῦρι τὰ χθῶν.  
 Τὸν δ' ἠμείβετ' ἔπειτα γερῆνιος ἱππότης Ἴστωρ.  
 ὦ μοι τυδεῖ' ἢ δαΐφρον' οἶον ἔειπες.  
 ἵπτερ γάρ σ' Ἴκτωρ γε κακόν, καὶ ἀνάλκιδα φῆσθ'.  
 ἀλλ' οὐ πείθονται βῶϊς, καὶ δαρδανίανός τε,  
 καὶ φῶων ἄλσχοι μεγαθύμων ἀσπιστάων,  
 τῶν, ἐν κενήσιν βωλόθ' θαλὶρὸς παρακρίτας.  
 Ως ἄρα φανήσας, φύγας δ' ἔραπε μῶνυχας ἵππους  
 αὐτοῖς ἀν' ἰωχμὸν. ἐπὶ δ' ἔβῳις τε, καὶ Ἴκτωρ,  
 ἥ χ' ἢ θεασσίσῃ βίλῃ συνόοντα χιόνθ'.  
 τῷ δ' ὣς μακρὰν αὔσιν μίγας κερυθαίολες Ἴκτωρ.  
 τυδείδῃ, πῆρ σι μέρσι πόρῃ δαυκοῖτα χύπῳλοι  
 ἴδρῃ τε, κρίασίρ τε, ἰδὲ πλείοις διπτάεσι.  
 νῦν δ' ἐσ' ἀπὸ μῆσσι γῶναι κὸς ἄρ' ὀντε τί τυξῷ  
 ἔρρε κακὴ γλήνη. ἐπὶ οὐκ ἵξωτος ἐμῷ,  
 πύργων ἢ μετίρων ἐπιβήσεται. οὐδ' ὃ γῶναι κῆρας  
 ἄξιός ἐν νῆεσσι πάρος τοι δαίμοινα δῶσθ'.  
 Ως φάθ'. τυδείδης δ' ἀνάνδιχα μερμήρησιν  
 ἵππους τε σρέψας, καὶ ἐναντίβιον μαχέσασθαι.  
 βῆς μὲν μερμήριξ κατὰ φρίνα, καὶ κατὰ θυμόν.  
 βῆς δ' ἀπ' ἰδαιῶν ὀρέων κτύπε μνῆτετα ἰόβις,  
 σῆμα πθεῖς βῶϊσι, μολχῆς ἱτιραλκία νίκῳ.  
 Ἴκτωρ δ' ἔβῳων ἐκίχλ' ὡς μακρὰν αὔσας.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

νεορίας μὲν ἐπὶ ἵππους θιράποντες κομείτω  
 ἵφθιμοι δ' ἐνὶ λῶσσι καὶ δὴρυμίδων ἀγαπήνων·  
 τῷ δ' ἐς ἀμφοτέρωθι οὐ μὲν δὴ ἄρματα βήτην.  
 νέωρ δ' ἐν χείρεσσι λάβ' ἡνία φοινικόεντα.  
 μάστιγι δ' ἵππους, τάχα δ' ἔκτορ' ἀγχιγίνοντο·  
 τῷ δ' ἰθὺς μεμαῶτ' ἀκούσσει τυδίδ' ἦός.  
 καὶ τῷ μὲν ῥ' ἀφάμαρτον· ὃ δ' ἡνίοχον θιράποντα  
 ἡδὺν ὑπερθύμην θηβαίῃς ἡνιοπῆα,  
 ἵππων ἡνί' ἔχοντα, βάλε σῆθος παρὰ μαζόν,  
 ἔπειθ' ἐξ ὀχίων, ὑπερώησσαν ᾧ οἱ ἵπποι  
 ὠκύπεδαι. τῷ δ' ἀνθι λυθὴ ψυχὴ τι, μένος τε.  
 ἔκτορα δ' αὖτ' ὄν' ἄχος πύλασι φρένας ἡνίοχοιο.  
 τὸν μὲν, ἔπειθ', ἔλασε, καὶ ἀχνυμένοσ περ ἱταίρῃ,  
 κείϊδαι· ὃ δ' ἡνίοχον μέθυ περ θρασύν, οὐδ' ἄρ' ἐκ δ' ὕψ'  
 ἵππῳ δυνάδῳ σημεῶντορ' αἵψα γὰρ ἔβρεν  
 ἱφίπιδῳ ἀρχιπέλειμον θρασύν, ὃν ῥα τόθ' ἵππων  
 ὠκυπόδων ἐπέβησε, διδύχ' οἱ ἡνία χερσίν.  
 ἐνθα κε λαιγρὸς ἔλιν, καὶ ἀμύχανα ἔργα γίνοντο.  
 καὶ νύκ' σήκεσθαι κατὰ ἴλιον ἡὔτε ἄρνες,  
 εἰ μὴ ἄρ' ὀξὺ νόησι πατὴρ ὠδρῶν τε, θιῶν τε.  
 βροντήσας δ' ἄρα δεινὸν, ἀφῆκ' ἀργῆτα κираυνόν.  
 καδ' οἱ προδ' ἵππων διομήδε' ἦκε χαμαῖ.  
 δεινὴ ᾧ φλόξ ὤρτο θεῖον καομένοιο·  
 τῷ δ' ἵππῳ δέσσαντε, καταπλήτῳ ὑπ' ὄχισφιν·  
 νέωρα δ' ἐκ χειρῶν φύγον ἡνία σιγαλόεντα.  
 δεισι δ' ὄγ' ἐν θυμῷ· διομήδεα ᾧ προσέειπε.  
 Τυδείδην, ἄγε δ' αὖτε φέτορ δ' ἔχει μώνυχας ἵππους·  
 ἢ οὐ γινώσκεις ὅτι ἐκ δ' ἰὸς οὐχ' ἐπείτ' ἀλκή;  
 εἴην μὲν γὰρ τούτῳ κρονίδης ἰδὺς κῦδος ὅπως  
 σήμερον· ὅς περ αὖτε καὶ ἡμῖν, αἶκ' ἰθὺς ἔλθοι,

ἄκρην κακωρυφήν, ὅθι τε πρῶτον ῥίχτι ἵππων  
 κρανίω ἔμπεφύασι, μάλιστ' ὅ καί εὐρον ἔστιν.  
 ἀλγύπαις δ' αὖτε παλῶ, βέλους δ' εἰς ἐγκέφαλον δ' ὤ.  
 σὺν δ' ἵππους ἐτάραξε, κυλινδόμεν' περὶ χαλκῷ.  
 ὅφρ' ὁ γέρον ἵπποιο παρηορίας ἀπέτεμε  
 φασγάνῳ αἵσων, τόφρ' ἐκθροος ὠκίης ἵπποι  
 ἔλθοι αὖ ἰώχμῳ θρασύν, ἐνίοχον φορέοντο  
 ἐκθροα· καὶ νῦ καὶ ἐνθ' ὁ γέρον ἀπὸ θυμὸν ὄλισσεν,  
 αἶ μὴ ἄρ' ὅξ' νόησε βοήην ἀγαθὸς διομήδης.  
 σμικρὰ δ' ἔλεον δ' ἐβόησαν, ἱποφύων ὁδυσῆα.

Διογενὲς λαίρπαδ' ἡ πολυμήχαν' ὁδυσσεύς,  
 πῇ φύγῃς μετὰ νῶτα βαλὼν χυκὸς ὡς ἐν δμίλῃ;  
 μή τις τοι φύγοντι μεταφρένῳ ἐν δόρυ πῆξῃ;  
 ὦλὰ μὲν, ὅφρα γέροντος ἀπώσομαι ἄγχιον ἄνδρα.  
 Ως ἔφατ' οὐδ' ἐσάκυσσε πολύτλας δῖος ὁδυσσεύς.

ὦλὰ παρήϊξεν κείλας ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν.  
 τυδείδης δ' αὐτὸς περὶ ὧν, προμάχοισιν ἐμίχθη.  
 σὴ δ' ἢ πρόδ' ἵππων νηληϊάδαο γέροντ' ὅ.  
 καί μιν φωνήσας ἔτεα πηρέοντα προσεΐδα·

Ω γέρον, ἢ μάλα δ' ὅ σε νίοι τέρεσι μαχηταί.  
 σὴ δ' ὅ βίη λείλυται, χαλεπὸν δ' εἰ σε γῆρας ὀπάσσει.  
 ἠπιδάνας δ' ὅ νύ τοι θιράπων, βραδείας δ' εἰ τοι ἵπποι.  
 ἀλλ' ἄγ' ἐμῶν ὀχέων ἐπιβύσσω, ὅφρα ἴδῃαι  
 εἴ τοι φῶτοιο ἵπποι, ἐπιστάμενοι πεδίοιο  
 κραιπνὰ μάλ' ἐνθα, καὶ ἐνθα διωκέμεν, ἠδ' ἐφίεσθαι  
 οὕς ποτ' ἀπ' ἀνέσταν ἱλόμην μήσφα φόβοιο.  
 τοῦτ' ὅ μιν θεράποντες κομέων· τῶ δ' ὅ νῶϊ  
 τῷ σὺν ἐφ' ἵπποδάμοισιν ἰθύνομεν, ὅφρα καὶ ἵκτωρ  
 εἴσεται, αἶ καὶ ἐμὸν δόρυ μαίνεται ἐν παλάμῃσιν.

Ως ἔφατ', οὐδ' ἐκίθησε γρήνι' ἵπποτάνας.



# Ι Λ Ι Δ Ο Σ.

οἷδ' ἄρα Διῖπνον ἰθὺς κερηκόμενοντος ἄχαιοι  
 ῥίμφα κατὰ κλισίας, ἀπὸ δ' αὐτῷ θωρήσαντο.  
 τῶς δ' ἔνι γέρωθεν ἀνὰ πτόλιρ ὠπλίζοντο  
 παυρότεροι· μέμασαν ὃ καὶ ὡς ὕσμινι μάχιδε  
 χροῖσι· ἀναγκαίη, πρὸ τοῦ παίδων, καὶ πρὸ γυναικῶν.  
 πᾶσαι δ' ὤϊγυνες πύλαι· ἐκ δ' ἑαυτοῖς λαῖς,  
 πελοῖσι, ἱππῆσι τε, πολὺς δ' ὀρυμαγδὸς ὀρώρει.  
 οἷδ' ὅτι δὴ ῥ' ἐς χῶρον ἵνα ξωιόντος ἵκοντο,  
 σὺν ῥ' ἔβαλον ῥιπῆς, σὺν δ' ἔγχεα, καὶ μίνοι ἀνδρῶν  
 χαλκιοθωρήκων· ἀτὰρ ἀπιδίε δμφολόισαται  
 ἱπλωτ' ἀλλήλοισι· πολὺς δ' ὀρυμαγδὸς ὀρώρει.  
 ἔνθα δ' ἅμ' οἰμωγήτι, καὶ δὴ χολῇ πέλον ἀνδρῶν  
 ἐλλύντων τε καὶ ὀλυνμένων ῥίε δ' αἵματι γῶα.  
 ὄφρα μὴν ἠὼς ἦν, καὶ αἰέξω ἱερὸν ἡμαρ,  
 πόφρα μάλ' ἀμφοτέρωρ βίβη ἥπτε· πίπτε δ' ἐλαόσι  
 ἕμος δ' ἡέλιος μέσον οὐρανὸν ἀμφιβεύκει,  
 καὶ τότε δ' ἡ χρύσεα πατήρ ἐτίτανε τάλαντα.  
 ἔνδ' ἐτίθει δ' ὅο κῆρ τε κηληγίος θωάβιο,  
 τῶρ δ' ἱπποδάμων, καὶ ἄχαιων χαλκαχιτώνων.  
 ἔλκε ὃ μέγα λαβὼν ῥίεπε δ' αἰσιμον ἡμαρ ἄχαιων  
 αἰ μὴν ἄχαιων κῆρες ἐπὶ χθονὶ πελυβοτείρῃ  
 ἰβιδω· τῶρ δ' ὃ πρὸς οὐρανὸν δὴ ῥ' αἶρεθαι.  
 αὐτὸς δ' ἐξ ἰδῆς μεγάλ' ἐκτυπῆ· δαδόμενον ὃ  
 ἔκε σέλας κατὰ λαὸν ἄχαιων· οἱ δ' ἰδύντο,  
 θάμβησαν, καὶ πάντας ὑπὸ χλωρὰν δέος εἶλαν  
 ἔνθ' οὗτ' ἰδόμενος τλῆ μίμνην, οὗτ' ἀγαμέμνων,  
 οὗτ' αἰὼν τοῦ μνηστῆρος, θειράποντος ἄρηθ.  
 νῆσορ δ' οἷος ἔμιμνε γερήνιθ', οὐρος ἄχαιων.  
 οὐδ' ἐκὼν, ἀλλ' ἱππος ἐτείρθη, τὸν βάλεν ἰφί  
 δῖος ἀλῆξωφρος ἰλίνης πόσις ἠΰκομοιο,

αὐτῇ κεν γαίῃ ἱρύνσαι· αὐτῇ τε θαλάσῃ.  
 σερρήν μιν κεν ἔπειτα περὶ ῥίον οὐλύμποιο  
 δησιμίλῳ· τά δ' ἐκ αὐτῆ μετ' ὅρα πλῶντα γένοιτο  
 τόσσον ἰγὰ πείρ' ἐμὶ θεῶν· πείρ' ἐμὲ ἀνθρώπων.

Ως ἔραθ'· οἳ δ' ἄρα πάντες ἀκὴρ ἐγείνοιο σιωπῇ,  
 μῦθον ἀγαπωμένοιο, μάλα γὰρ κρατερώς ἀγόρευσεν.  
 ὅφ' ἔθ' δ' ἡ μετίσπε θιὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη.

Ω πάτερ ἡμέτεροι κρονίδῃ ὕπατι κρόντων,  
 εἴ νυ καὶ ἡμῖς ἰδμεν ὅπ' δένει οὐκ ἐπιφκτόν.  
 ἀλλ' ἔμπης δαναῶν ὀλοφυρόμεθ' ὀχμητῶν,  
 οἷόν κ' ἐπὶ κακὸν οἶτον ἀναπλήσοιεν ὄλυνται.  
 ἀλλ' ἦτοι πολέμῳ μὲν ἀφειξόμεθ', εἰ σὺ κελύβεις,  
 βυλῆρ δ' ἀργείοις ὑποθισόμεθ', ἥ τις ὀνήσῃ.  
 ὥς μὴ πάντες ὄλυνται, ὀδυσαμένοιο τιοῖο.

Τὴν δ' ἐπιμειδύσας, προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·  
 θάρσει βίτο γένεα, φίλον τέκος· οὐ νύ τι θυμῷ  
 πρόφρονι μυθίομαι· ἐθέλω δέ τοι ἥπιον εἶναι.

Ως ἐπώννυπ' ὄχισφι λιτύσκειο χαλκόποδ' ἵππο  
 ὦκυπέτα, χρυσέῃσιν ἰθείρῃσιν καμόωντε  
 χρυσὸν δ' αὐρὸς ἔδωκε περὶ χροῖ· γένεθ' ἱμάδιον  
 χρυσεῖον, εὐτυκτορ· εἴ δ' ἐπιβήσαιο δίφρου.  
 μάστιγον δ' ἔλασσαν τώδ' οὐκ ἀκροντε πετίδιον  
 μισσηγὺς γαίης τε, καὶ οὐρανῷ ἀσερόαντο,  
 ἰδὼ δ' ἴκανε πολυπύδικα, μητέρα θεῶν  
 γάρ γ' αἶον ἐνθαδ' οἱ τέμνει, βωμός τε θυήεις.  
 ἐνθ' ἵππας ἔστησε πατήρ ἀνδρῶν τε, θεῶν τ' εἰς  
 λύσας ἐξ ὀχίων· κατὰ δ' ἠέρα πνύον ἔχουσιν.  
 αὐτὸς δ' ἐν κορυφῇσι καθέζετο κύδι' γαίῳ,  
 εὐρώων τῶων τε πόλιν, καὶ νῆας ἀχαιῶν.

ΙΛΙΑΔΟΣ. Θ. ΟΜΗΡΟΥ.  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Θῆτα, θειῶν ἀγορῇ, πῶον κρωτός, ἔκβροτο ἔλξει.

Ὡς μῦν κροκοπίπλος ἐκίδ' ἔατο πᾶσαν  
ἐπ' αἶσαν.

(ὅς τις δ' ἐθεῶν ἀγορῇν ποιήσας τερπικέ  
ρουντο

ἀκροτάτῃ κορυφῇ πολυδαίδαλ' οὐλύμποιο.  
αὐτὸς δ' ἐσφ' ἀλόρευε, θεοὶ δ' ἅμα πάντες ἄκρον.

Κ' ἐκλυτέ μιν πάντες τε θεοὶ, πᾶσαι τε θείαναι,  
ὄφρ' εἴπω τὰ μεθυμὸς ἐνὶ στήθεσι κιλούει.  
μήτε τις ὄω θήλεια θεὸς τόλῃ, μήτε τις ἄρσῳ,  
πρωτόω διακίρσαι ἐμὸν ἔπος· ἀλλ' ἅμα πάντες  
ἄνωγ' ὄφρα τάχιστα τελευτήσω τὰ δέ ἔργα.  
ὅρ' δ' ἄρ' ἐγὼν ἀπάνδθε θεῶν ἰθίλεντα νοῦσα  
ἔλθόντ', ἢ πῶσαιρ' ἀφηγέμεν, ἢ δ' αὖ κοῖσι,  
πληγῇς οὐ κατὰ κόσμον ἔλδυσσιν οὐλύμπορ' εἰ.  
ὅ μιν ἔλδων, εἴπω ἔς τάρταρον ἠιρόεσσαν.  
τῆλε μάλ', ἢ χι ἑάθισον ὑπὸ χθονὸς εἰς ἑριθρόν,  
ἔνθα σιδ' ἑρφαίτε πύλαι, καὶ χάλκεοι οἶδοι,  
τύσασθ' ἐνερθ' αἰδέω, ὅθρ' οὐρανὸς εἰς ἀπὸ γαίης·  
γνώσεται ἔπειτ' ὅθρ' ἐμὶ θεῶν κάρσιος ἀπάντων.  
εἴδ' ἄγε παρήσασθε θεοὶ ἵνα εἴδετε πάντες,  
σφ' ἔμην χρυσείῳ ἐξ οὐρανόθεν κρεμάσασσας,  
πάντες δ' ἐξωπῆιδε θεοὶ, πᾶσαι τε θείαναι.  
ἀλλ' οὐκ ἄρ' ἐρύσασθ' ἐξ οὐρανόθεν πεδίορ' εἰ  
ἦν ὑπατορμήσας, εὐδ' εἰ μάλλα πολλὰ κάμοιτο·  
ἀλλ' ὅτε δ' ἢ καὶ ἐγὼν προφφωρ' ἰθίλῃμι ἱρύσας,

ὥτ' ἔ

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Θ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Εὐς ἀπαγορεύσας τοῖς θεοῖς μηδ' ἑτέρῃ βοηθεῖν  
 τῶν στρατῶν, ἐπὶ τὴν ἰδίαν κατέρχεται. καὶ πρὸς  
 τερσιν ἴθην μαχομένους τὰ ἑλλήας, ἐλάπηντας τῶν  
 τρώων καθίστησιν ἦσαν ὅτι καὶ ἀθηνᾶν ἐπὶ βοήθειαν τοῖς ἑλλ  
 ἡσιν ἐξίσσας, ἐπέχυν ἴεις, δῖος κλυδίσαντο. ἰσάρεα  
 δ' ἐγνομένης, ἔκτωρ ἰδημνύρησεν ἐν τῷ πεδίῳ, δὲ το  
 πρὸς πεδύωδι, καὶ πῦρ δ' ὅλης νυκτὸς καίεν.

L 3

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἄλλοι δ' ῥ' ἰνὸς, ἄλλοι δ' αὖτ' ὅσι βόεσσιν,  
 ἄλλοι δ' ἀνδραπόδεσσιν. τίθου δ' ὃ δαῖτα θάλασσα  
 πᾶννύχιοι μὲν ἔπειτα κερκασμένων τὸν ἄχαιόν  
 δαίνωτο. ῥῶϊς δ' κατὰ πῆλιν ἦδ' ἐπίκυροι.  
 πᾶννύχιον δ' ἐσφιν κακὰ μὲν ἔσοι μῆτις τὰ ῥόδα,  
 σμυρδ' ἀλὶα κτυπέων. τὺς δ' ἡλωρὸν δέος ἔρε  
 εἴνορ δ' ἐκ λιπάρων χαμάδις χέρον. οὐδ' ὃ τις ἔτλη  
 πρὶν πίσει, πρὶν λείψαι ὑπερμυγῇ κρονίωνι.  
 κοιμήσκειτ' ἄρ' ἔπειτα, καὶ ὅππην δώροισιν ἔδοντο.

ΥΡΟ



θηδύνει μέγα ἔργον ἄχαιῶν χαλκῆχι τῶν  
 τοῖσι δ' ἔμυθον ἦρχε ποσειδάων ἱννοσίχθων·  
 Ζεὺς πώτερ' ἢ ῥά τις ἐσ βροτῶν ἐπ' ἀπύρωνα γαῖαν,  
 ὅς τις ἔτ' ἀθανάτοισι νοῦν καὶ μῆτιρ ἐνὶ φρεσὶ  
 οὐχ ὕψους δ' ὅπ' αὐτε κερκησμοῶντος ἄχαιοί  
 τιῆχος ἐτ' ἐχίσαντο νῶν ὕπερ, ἀμφὶ δ' ἐταφρόν  
 ἔλασαν, οὐδ' ἐθεοῖσι δούσαν κλήτας ἱκατόμβας·  
 τῷ δ' ἦτοικ' ἐσσεῖσθαι, ὅθρ' ἐπικίδνεται ἥως·  
 τῷ δ' ἐπιλήθεται, ὅτ' ἐγὼ καὶ φοῖβος ἀπόλλων  
 ἦρω λαομέδοντι πολίτας μὲν ἀθλήσαντε.

Τόν, δ' ἐμὲν ὀχθήσας, προσέφη νηφεληγέρετα Ζεὺς·  
 ὦ πόποι ἱννοσίγαι', οὐρυδένεις, οἷόν ἐστις.  
 ἄλλος κέρυς τῷ θεῶν δείσσει νόημα,  
 ὅς σέο πολλὸν ἀφαιρότερος χεῖρας τε, μένος τε  
 σὸν δῆτοι κλέος ἐσσεῖσθαι, ὅθρ' ἐπικίδνεται ἥως·  
 ἄρρη μάρ' ὅτ' ἂν αὐτε κερκησμοῶντος ἄχαιοί  
 εἴχωνται σὺν νηυσὶ φίλῳ ἐς παρὶς γαῖαν,  
 τιῆχος ἀναρρήξας, τὸ μὲν, εἰς ἄλλα πᾶν καταχρύσει,  
 αὐτὸς δ' ἠϊόνα μεγάλῳ φαιμάθοισι καλύψαι,  
 ὥς κέρν τοι μέγα τιῆχος ἀμαλδύνηται ἄχαιῶν.

Ως οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον.  
 Δύω δ' ἦελι θεοὶ τίλειτο δ' ἔργον ἄχαιῶν·  
 βυφόνεον δ' κατὰ κλισίας, καὶ δόρυπον ἔλθοντο.  
 νῆες δ' ἐκ λήμνοιο παρέστασαν οἶνον ἄρυσσαι,  
 πολλαί, τὰς πρόεικον ἱθονίδης ἑὴν ἑσθ.  
 τόν, δ' ἐτεχ' ὕψιπύλη ὑπ' ἱθονί τοιμένι λαῶν.  
 χαρίς δ' ἀφείδῃσ', ἀγαμέμνονι καὶ μενελάῳ  
 δῶκεν ἱθονίδης ἀγέμεν μέθυ χίλια μέτρα.  
 ἔνθων ἄρ' οἶνί γοντο κερκησμοῶντος ἄχαιοί,  
 ἄλλοι μὲν χαλκῷ, ἄλλοι δ' αἶθρῳ σιδέρεσσιν.

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ .

οἷδ' ἄτ' ἐν ἀγορῇ ῥῆδ' οὐκ, καὶ δαερδανίοντις,  
 πάντες ὁμηγερέας, ὡπτιδ' ἐγμυροὶ ὅπποτ' ἄρ' ἔλθαι  
 ἰδοῖτο, οἷδ' ἄρ' ἦλθε, καὶ ἀγγελίῳ ἀπόειπε,  
 εἰς ἐν μέσσοισιν, ἴδ' ὅπλιν οὐκ μάλ' ὤκτα  
 ἀμφοτέρων, νικύας τ' ἀγέμεν· ἔτεροι δ' ἐμὲ ὕλῳ·  
 ἀργαῖο ἰδ' ἔτεροθεν εὐστέλμων ἀπὸ νηῶν  
 ὤρωον νικύας τ' ἀγέμεν, ἔτεροι δ' ἐμὲ ὕλῳ·  
 ἦϊλιος μὲν ἔπειτα νέον προσέβαλλεν ἀρούρα  
 εἰς ἀκαλαρῆτάσ' βαθυρροῦσ' ὡκεανοῖο,  
 θραυὸν ἐσανιών, οἷδ' ἦντιον ἀλλήλοισιν,  
 ἔνθα διαγνῶναι χαλεπῶς ἦν ἀνδραΐστατον,  
 ἀλλ' ὕδατι νίζοντες ἀπὸ βρότον αἵματόεντα  
 δάκρυα θερμὰ χέοντες ἀμαξέων ἐπ' αἰετον  
 οἷδ' ἔα κλαίειν πρίαμ' ὀ μίγας· οἱ δ' αἶσι δαπνῇ  
 νικητὸς πυρκαϊῆς ἐπονήμεον ἀχνύμῃοι κῆρ,  
 ἐν δ' ἐν πυρὶ πρήσαντο, ἔβαν ποτὶ ἴλιον ἱρήν·  
 ὥς δ' αὐτὸς ἔτεροθεν εὐκνήμιδις ἀχαιοὶ  
 νικητὸς πυρκαϊῆς ἐπονήμεον ἀχνύμῃοι κῆρ  
 ἐν δ' ἐν πυρὶ, πρήσαντο, ἔβαν κούλας ἔκ νῆας·  
 ἦμος δ' οὐτ' ἀρπαῖς ἦν· ἐπὶ δ' ἀμφιλύκη νύξ,  
 τῆμος ἄρ' ἀμφὶ πυρὴν κριεὶς ἐγχετο λαὸς ἀχαιῶν  
 τύμβον δ' ἀμφ' αὐτῷ ἐνα ποίον ἐξαχαιρόντο  
 ἀκραιὸν ἐκ πεδίοις, ὡπτιδ' αὖτε τειχεὶς ἐδαιμον  
 πύργους ὑψηλοὺς, ἱλῆα νηῶντι, καὶ αὐτῶν·  
 ἐν δ' ἐν αὐτοῖσι πύλας ἐνιπείον ἐν ἀραρυῖας·  
 ὄφρα δ' ἰαυτάων ἱππῆλασιν ὁδὸς εἴη·  
 ἔκτοθεν δ' ἐπαθείον ἐπ' αὐτῷ τάλφρον ὄρυξαν  
 δῦρεϊσαν, μεγάλῳ· ἐν δ' ἐν σκόλοπας κατέπηξον,  
 ὥς οἱ μὲν πονέοντο κερκισμένον ἀχαιοὶ·  
 οἱ δ' ἐν θεοὶ πάρ' ἱνὶ καὶ ἡμῶροι ἀσιροπητῇ,

εὖς ἐν μέσσοισι, μεταφώνων ἡπύτα κήρυξ.  
 ἄρειδ' αἶτε, καὶ ἄλλοι δὲ κνήμιδες ἄχαιοί,  
 ἠνώγεθ' ἡριάμοσ τε, καὶ ἄλλοι βῆες ἀγανοί  
 ἐπείν, αἴ κ' ἐπεὶ ὕμμι φίλον, καὶ ἠδὲ γένοιτο,  
 μῦθον ἀλιξάνθοιο, τὸ εἶναι νεῖκος ὄρωρι,  
 κτήματα μῆν, ὅσ' ἀλιξάνθρος καί ληε' ἐνὶ νηυσὶν  
 ἠγάγετο βεῖλω δ', ὥς περὶν ὠφελ' ἀπολέσθαι,  
 πάντ' ἐθέλῃ δόμοισι. καὶ ἐπ' οἴκῳ ἀλλ' ἐπιθῆναι.  
 κνείδ' ἰλω δ' ἀλαχον μνηλεὲς κυδαλίμοιο  
 οὐφῆσιν δῶσθιν. ἢ μιν βῆες γὰρ κέλονται.  
 καὶ ὃ τόδ' ἠνώγεθ' ἐπιθῆναι ἔπος, αἴ κ' ἐθέλητε  
 παύσασθαι πολέμοιο δυσσυχίος, εἰσόκε νικροῦς  
 κήοισι, ὕσθον ἄντε μαχιστόμισθ', εἰσόκε δαίμων  
 ἄμμι διακρίνη, δῶν δ' ἐτίροισί γὰρ νίκῃ.

Ως ἔφαθ'· οἳ δ' ἄρα πάντες ἀκὴν ἐγείνοντο σιωπῇ.  
 ὅτε δ' ἡ μετέπει βοὴν ἀγαθὸς διομήδης.  
 μήτ' ἄρτις νῦν κτήματ' ἀλιξάνθοιο δειχέσθαι.  
 μήθ' ἔλινω. γυναικὸν δ' καὶ ὅς μάλ' ἀνὴρ ἰσὺς.  
 ὥς ἔδη βῶσαν ὀλίβησεν πείρατ' ἐφῆπται.

Ως ἔφαθ'· οἳ δ' ἄρα πάντες ἐπὶ ἄχον ἔνις ἀχαιῶν.  
 μῦθον ἀγαυάμνηοι διομήδης ἱποδάμοιο.  
 καὶ τότε ἄρ' ἰδὼν προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.  
 ἰδὼν ἦτοι μῦθον ἀχαιῶν ἄνδρες ἀκρόους  
 εἰς θεῖον ὑποκρίνονται. ἐμοὶ δ' ἐπιδιδάσκεις οὕτως.  
 ἀμφὶ δ' ἐν νηυσὶν κατακρήμνισθ' οὐκ ἐμγαίρω.  
 εἰ γάρ τις φείδῃ νικῶν κατακτείνῃ ἄνθρωπον  
 γένετ', ἐπεί κ' ἐθάνωσι πυρὸς μελίσσας μῆν ὤκα.  
 ὄρκια δ' εἰς ἱερὸν ἐρίγδυστος, πόσις ἕρης.

Ως ἐπών, τὸ σκῆπτρον ἀνέλαθε πασι θεοῖσιν.  
 ἀπορρῶν δ' ἰδὼς ἔβη παρὶ ἱλίον ἱερόν.

# ΙΔΙΑΔΟΣ.

ἦτοι δ' ὦς ἐπὼν, κατ' ἄρ' ἔϊξο. ἴτισι δ' ὀνείση

δίος ἀλῖξανδρος ἑλένης πόσις ἠὲ κόμοιο.

ὅς μιν ἀμειβόμενός, ἔπεα πτερόεντα προσηύδα.

**Αὐτῆτορ**, σὺ μὲν ἔκ' ἐτ' ἱμοὶ φίλα ταῦτ' ἀγορεύεις.

οἷδά κ' ἄλλον μῦθον ἀμείνονα τυδε νοήσαι.

εἰδ' ἐτιδὼν δ' ἢ τυτὸν ἀπὸ σπονδῆς ἀγορεύεις.

ἐξ' ἄρα δὴ καὶ ἔπειτα θεοὶ φρέσιν ὥλεσαν αὐτοί.

αὐτὰρ ἐγὼ φώεσσι μεθ' ἱπποδάμοις ἀγορεύσω

αὐπκρύδ' ἀπόφημι. γυνώσκω μ' ἔκ' ἀποδῶσω.

κτῆματά δ' ὅσσ' ἀγόμεω ἐξ' ἀργεος ἡμέτερον δ' ὄ

πλυντ' ἐθέλω δόμῳ, καὶ ἐτ' οἴκῳθεν ἄλλ' ἐπιθῆναι.

ἦτοι δ' ὦς ἐπὼν, κατ' ἄρ' ἔϊξο, ἴτισι δ' ὀνείση

διερδανίδης πρίαμος θεόφιν μῆσ' ὥς ἀτάσσοντός,

ὅσφιν εὐφρονέων, ἀγορεύετο, καὶ μετέειπε.

**Ἐκέλευε** μὲν γὰρ, καὶ δ' ἄρ' ἰδαντοί, ἦ δ' ἐπίκουροι.

ὄφρ' εἴπω τὰ μεθυμὸς ἐνὶ στήθεσσι κελεύει.

νῦν μὲν δ' ὀρώπων ἑλπίδι κατὰ πῶλιν ὥς ὑπάρους πρ'.

καὶ φυλακῆς μνήσθαι, καὶ ἐρηγόρηθε ἕσπετος.

ἦ ὦθεν δ' ἰδ' ὅσος ἴτω καίλας ἐπὶ νῆας

εἰπέ μιν ἀφείδης ἀγαμέμνονι, καὶ μενελάῳ

μῦθον ἀλῖξανδροιο, τὸ εἶναι καὶ νῆας ὄρωρε,

καὶ τὸ τόδ' εἰπέ μιν πυκινὸν ἔπος, αἴ κ' ἐθέλωσι

παύσαισθαι πολέμοιο δουσηχέος, εἰσόκε νικητοὺς

κῆροισι. ὕσρον αὖτε μαχρσομέθ, εἰσόκε διαίμαρ

ἄμμε διακρήνη. δῶκε δ' ἐτέροισί γε νίκην.

ὤς ἔφασκε οἱ δ' ἄρα, μάλα μὲν κλύον, ἦ δ' ἐπίθοντο.

δ' ὀρώπων ἐπεὶ θ' ἐβλήθη κατὰ σπῆν ἐν τελέεσσιν.

ἦ ὦθεν δ' ἰδ' ὅσος ἔβη καίλας ἐπὶ νῆας.

τύσδ' εὐρὺν ἀγορῇ δι' ἀνὰς θιράωντας ἄρην.

νῆι παρὰ πρυμνῇ ἀγαμέμνονος. αὐτὰρ ὁ ἴτισι

Θῆς, ὃ γέρων παμπηδὺς ὑφαίνεν ἤρχετο μήτιν  
νέεωρ, οὐ γὰρ πρόδωκεν ἀρίστη φαίνετο βελύ.  
ὃ σφιν ἐϋφρονέων, ἀγορήσατο, καὶ μετέηκον.

**Δ**ρείδῃτε, καὶ ἄλλοι ἀεισῆες παναχαῖδρ,  
πολλοὶ γὰρ τεθνῶσι κερηνομόντες ἀχαιοί.  
τῶν νῦν αἶμα κελαινὸν ἐϋρῆσον ἀμφὶ σκαλμοῦ δροῦ  
ἰσκήδασ' ὀξὺς ἄρης, ψυχαί δ' αἰδῶς δι' ἀκτῆλθορ.  
ἴδ' ὅτε χεὶ πόλεμον μὴν ἄμ' ἡοῖ παῦσαι ἀχαιοῖ.  
αὐτοὶ δ' ἀγρόμυθοι, κυκλήθην ἐνθάδε νεκρούς,  
βυσί, καὶ ἡμίονοισιν. ἀπὲρ κατακτόμευ αὐτοῖς  
τυτθὸν ἀπόπρο νεῖν, ὥς κ' ὀσεία ποισὶν ἔκαστος  
οἴκαδ' ἄγῃ, ὅταν αὐτὴ νεώμιθα παρίδω γαῖαν.  
τύμβον δ' ἀμφὶ πυρὴν ἵνα χυνομένοισι ξεναγρότοισι,  
ἄκρην ἐκ πεδίον. ποτὶ δ' αὖτις δέμοιο μὴν ὥκα  
πύργους ὑψηλοῦς, ἱλάρων τε, καὶ αὐτῶν.  
ἵν' αὖ τοῖσι πύλας ποιήθωμι ὑἱ ἄραρυῖα  
ὄφρα δι' αὐτῶν ἱππηλασίη ὁ δῖος εἴη.

ἔκρωθεν ὃ βαθεῖον δρυξομένοισι ἐγγυθὶ τάφροισι  
ἔχ' ἵππον, καὶ λαὸν ἱρυνκάκει ἀμφὶς ἔσθῃ  
μή ποτ' ἐπιβρίσῃ πόλιμαθ' ἔσθῃ ἀγριώχωρ.

**Ω**ς ἔραθ'. οἷδ' ἄρα πάντες ἐπὶ νηυσὶν ἐκαστοῖς.  
ἔσθῃ αὐτὸν ἀγορὴ γένετ' ἰλίῃ ἐν πόλει ἄκρῃ  
δινῇ, τετρηχὺα παρὰ πριάμοιο θυρήσιν.  
ἴδ' αὖ τοῖσι πεπνυμένοι, ἔρχ' ἀγορεύειν.

**Κ**έκλυτέ μιν ἔσθῃ, καὶ δῖα ἄρσενες, ἡδ' ἐπίκυροι,  
ὄφρ' ἵππωτά, με θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι κελύει.  
δινῇ ἄκρῃ ἀρχίῳ ἐλένῳ, καὶ κτήμαθ' ἄμ' αὐτῇ  
δῶκοι ἀρείδῃσιν ἄγειν, νῦν δ' ὄρκια πῖσά  
ψευδάμφοι, μαχόμεθα, ἴδ' οὐδὲν κέρδιον ἡμῖν  
ἔλπωμαι ἐκτελέειν, ἵνα μὴ ῥέξομεν ὄσθῃ.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ὣς σὺ τ' ἐϋφρήνης πάντας παρὰ νηυσὶν ἄχαιούς,  
 θύς τε μολισσάϊτας, καὶ ἱταίρους οἵ, πρὶ ἱάσιν  
 αὐτὰρ ἐγὼ, κατὰ ἄστυ μέγα πριάμοιο ἄνακτος  
 τῶας ἐϋφράνειω, καὶ τῶιδ' ἄστυ ἐλκεσι πέπλος,  
 αἵ τέ μοι δὴ χόρυμα, θεῶν δ' ὕδνται ἄλγ' ὦκα,  
 δῶρα δ' ἄγ' ἀλλήλοισι περικλυτὰ δώομ' ἄμφω,  
 ὅφρα πρὶ ὧδ' εἴπῃσιν ἄχαιῶν τε, τῶν τε.  
 ἦ μιν ἱμαρναδίῳ ἱερὸς πέρι θυμοβόροιο,  
 ἦ δ' αὖτ' ἐν φιλότῃ διέτμαγ' ἄρθμ' ἔσαντι.  
 Ὡς ἄρα φωνήσας, δῶκεν ξίφος ἄρχυρόληρον,  
 σὺν κελιδίῳ τε φέρον, καὶ ἐϋδμήτῳ τελαμῶνι.  
 αἶας δ' ἵωσ' ἤρα δίδυ φοίνικι φασγόνῳ,  
 τῷ, δ' διακρινθέντε, ὁ μὲν, μὲν λαὸν ἄχαιῶν  
 ἔτι, ὅδ' ἐς τῶν ὀμαδὸν κίε· βίβ' ἐχάρησεν  
 ὡς εἶδ' ὄντων, καὶ ἄρτεμ' ἀπροσίοντα,  
 αἶαντες προφυγόντα μέν' ὃ, καὶ χιτῶας ἀάπ' ἔλα.  
 καὶ ῥ' ἦρ' ὅτι ἄστυ, ἀέλιον τὸ σόον εἶν,  
 αἶαντ' αὖθ' ἐτέρωθεν ἐκνήμιδες ἄχαιοί  
 εἰς ἀγαμέμνονα δῖον ἄγον κεχαρηότα νίκη.  
 οἳ δ' ὅτε δὴ κλισίῃσιν ἐν ἀφείδω γέγονε,  
 βίβ' ὅτ' ἐβούλ' ἐρευσαν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 ἄρσεν' ἀπαντὰ ἔτηρον ὑπὲρ μὲν ἱ κρονίωνι.  
 ἐν δ' ἔρον, ἀμφίτ' ἔπον, καὶ μιν διέχουσαν ἄπαντα,  
 μίσυλόντ' ἄρ' ἐπιστάμενως, περὰν τ' ὀβελισσίν,  
 ὡπλησὼν τε περιφραδίδος, ἐρύσαντό τε πάντα,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ παύσαντο πόνυ, τιτύχοντο τε δαῖτα,  
 δαίνωντ', οὐδέ τι θυμὸς ἐδύξο δ' αὖτ' ἐῖσε,  
 νώρισι δ' αἰῶτα διηκίεσσι γέρας  
 ἦρας ἀφείδης δὴρυκρέων ἀγαμέμνων,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιος, καὶ ἰδὲ τῷ ἐξ ἔρον ἔν.

ἀλλ' ὄναχασά μινος λίθον ἰλθο χερὶ παχείῃ  
 κέκμητον ἐν πιδίῳ μέλανα, ῥηχύν τε, μέγαν τε.  
 τοῦ βάλου αἴωνος δ' ἔνδον σέως ἐπαβόησεν,  
 μέσσην ἐπομφαλίον· περιήχνησε δ' ἄρα χαλκός.  
 δεύτερ' αὖτ' αἴας, πολὺν μίθονα λαὸν αἰέρας,  
 ἥ κ' ἐπιδινύσας, ἐπέρσει ᾧ ἴν' ἀπέλιθον.  
 εἴσω δ' ἀσπίδ' ἔαξε βαλὼν μυλῶσθ' εἰ πέτρῳ.  
 ἐλωφε δ' οἱ φίλα γούναθ', ὅδ' ὕπλιος ἐξέτανυ δὴ,  
 ἀσπίδι ἐγχειμφοίς· τόν δ' αἶψ' ὤρθωσεν ἀπόλλων.  
 καὶ νύκ' εἰς ξιφείας αὐτοχαιδὸν ὑτάζοιτο  
 ἐμὴ κήρυκος διὸς ἄγγελος, ἡ δ' καὶ ἀνδρῶν.  
 ἔλθον· ὁ μὲν ῥῶν ὁ δ' ἀχαιῶν χαλκῶ χιτῶν.  
 ταλθύβιος τε, καὶ ἰδαῖος, πεπνυμένω ἄμφω.  
 μέσση δ' ἀμφοτέρων σκῆπτρα χεῖρον, εἰπέ τε μῦθον  
 κῆρυξ ἰδαῖος πεπνυμένα μῆδ' αἰεδώς.  
 μηκέτι παῖδι φίλῳ πολεμίζετε, μὴ δ' ὧ μολχεῖσθον.  
 ἀμφοτέρω γυνεφῶι φιλήϊ νεφελή γέρετα ζεύς,  
 ἄμφω δ' αὐχμητὰ· τό γε δὴ καὶ ἰδμῶ ἀπαντᾷ.  
 νῦξ δ' ἔσθ' ἐτελείθη, ἀγὰθὸν καὶ νυκτὶ πιθῆναι.  
 τόν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη τιλαμῶνιως αἴας.  
 ἰδαῖ'· ἔκτρα ταῦτα κέλευέ τε μυθήσασθαι.  
 αὖτος γὰρ χάρμῃ προκαλίσσαστο πῶντας ἄριστος.  
 ἀρχέτω· αὐτὰρ ἐγὼ μάλα πείθεμαι, εἴπρ' ἂν οὗτος.  
 τόν δ' αὖτε προσέειπε μέγας κροθυαίολος ἕκτωρ.  
 αἴω, εἰπέ τοι δῶκε θεὸς μέγισθός τε, βίω τε,  
 καὶ πινυτήν, πείσθ' ἐγχεί' ἀχαιῶν φέρτατός ἐσσι.  
 νῦν μὲν παυσώμεθα μάχης, καὶ δῖοιοτ' ἔσθ'  
 σήμερον, ὕσθ' οὖν αὖτε μαχυσόμεθ', εἴ σοκε δαίμων  
 ἄμμε διακρίνῃ, δῶν δ' ἐτέρωισί γε νίκῃ.  
 νῦξ δ' ἔσθ' ἐτελείθη, ἀγὰθὸν καὶ νυκτὶ πιθῆναι.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

αἰὲς διογάνεις, τελαμῶνι, κίρανε λαῶν,  
 μῦπ' μιν ἦντε παῖδ' ὅς ἀφανρῶ πέρηφι,  
 ἦ γ' αἰακὸς ἢ οὐκ οἶδε πολεμῆα ἔργα.  
 αὐτὰρ ἐγὼν οἶδα μάχας τ', ἀνδροκτασίαις τε.  
 οἶδ' ἐπὶ δεξιᾷ, οἶδ' ἐπ' ἀριστερᾷ νομῆσαι ἔω  
 ἀγὰλιν, τόμοις ἰσι ταλαύενον πολυμήϊον.  
 οἶδα δ' ἐπαΐξας μόθον ἵππων ὠκεῶν.  
 οἶδα δ' ἐνὶ σαρδίῳ δῆϊφ' ἐλπεῖσθαι ἄρηι.  
 ἀλλ' ἐγὰρ σ' ἐθέλω βαλὼν θοῖον ἰόντα,  
 λάβειν ὀπιπλεύσας, ἀλλ' ἀμφαδὼν αἶκε τύχοιμι.  
 ἦ ῥά. καὶ ἀμπεπαλῶν, προΐη δολιχόσκιον ἔρχεσθαι.  
 καὶ βάλλω αἰῶντος δεινὸν σάκκος ἐπὶ αἰσέον,  
 ἀκρότατον κατὰ χαλκόν, ὅς ὃνδ' ἦεν ἐπ' αὐτῷ.  
 ἔξ' ὃ στήθεσσι πύχας ἦλθε δαΐζων χαλκὸς ἀτερής.  
 ἐν τῇ δ' ἐβδόματι, ῥινῶ ἄλλοι δυνέτεσθαι  
 αἴας διογενὴς προΐη δολιχόσκιον ἔρχεσθαι.  
 καὶ βάλλω πριαμίδην κατ' ἀσπίδα πάλιν σέϊσω,  
 στήθεσσι κατὰ σπῆος ἦλθε φαεινὸς ὄβριμον ἔρχεσθαι.  
 καὶ στήθεσσι θώρηκος πολυδαδῶλιν ἠρήρσο.  
 ἀντιφύῃ παρὰ λαπάρῳ δαίμνησε χιτῶνα  
 ἔρχεσθαι. ὅδ' ἐκλίνθη, καὶ ἀλείων κῆρα μέλαιναν.  
 τῷ δ' ἐκασσασμένῳ δολίχ' ἔρχεσθαι χερσὶν ἅμ' ἀμφό.  
 σὺν ῥ' ἐπιθῶν, λείψιν ἰοικότις ὠμοφάγοισιν.  
 ἢ συσὶ κάπροισι, τῶν τε δεινῶν ἐκ ἀλαπαδνόν.  
 πριαμίδης μὲν ἐπείτα μέθ' ὅς σάκκος οὐτασε δεινῇ.  
 οὐδ' ἐρρήξει χαλκὸν, ἀνιγνάμφθαι δ' οἱ αὖχμη.  
 αἴας δ' ἀσπίδα νύξεν ἐπὶ αὐτῷ, ἡ δ' ἐπὶ στήθεσσι  
 ἔλυσαν ἔρχεσθαι. σφίλιξε δ' ἐμιν μεμαῶτα.  
 τμήδω δ' αὖχιν ἐπῆλθε. μέλαινα δ' ἀνέκκηκεν αἶμα.  
 ἀλλ' ἐπ' ὧς ἀπὸ ληγε μολχῆς κερυβαίοιο ἐκταρ.  
 ἄλλ'

εἰ δ' ἐκὼν ἔκρ' ἀπ' ἑρῶν, καὶ κήδεαι αὐτῆς,  
 ἴστω ἀμφοτέροισι βίῳ, καὶ κῆδος ὄψασθαι,  
 ὧς ἄρ' ἔφω, αἶας δ' ἑρῶν ὄψασθαι νόστοι χαλκῶ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δ' ἡ πάντα περὶ χροῖ' ἔσκατο τεύχεα,  
 σῶατ' ἔπειθ' οἷός τε πελώριον ἔρχεται ἄρης,  
 ὅς τ' εἴσιν πόλεμον δέ μετ' ἀνέρας, οὓς τε κροῖον  
 θυμοδόρ' ἐειδὼς μένιν ξυνέηκε μάχεσθαι,  
 βίος ἄρ' αἶας ὄψασθαι πελώριον, ἔρως ἀχαιῶν,  
 μετρίων βλασυροῖσι προσώπασσι, νέρθε δ' ὡσαῖον  
 ἔτε μακρὰ βιβάς, κραδῶν δολιχόσκιον ἔλχε·  
 τὸν δ' ἐκὼν ἄρ' ἔλκετο μέγ' ἐγρήθηον ἐβρόδωντος,  
 φῶας δ' ὄψασθαι αὐτὸς ὑπὸ λυθε γυῖα ἔσκατο,  
 ἔκτορ' ἄρ' αὐτὸς θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι πάλτασσαν.  
 ἀλλ' οὐπὼς ἔπ' εἶχε ὑπὸ φέρεσσι, ἔδ' ἀναδύναται  
 ἄρ' λαῶν ἐς ὄμιλον, ἐπὶ προκαλέσασθαι χολῆν,  
 αἶας δ' ἐγρήθηον ἦλθε φέρον σάκας ἠὲ τε πύργον,  
 χολκίον, ἐπὶ ἀβόειον, ὃ οἱ τοχίος κάμε τδύχον,  
 σκυρτόμων ὅχ' ἄεσος ὕλη ἐνὶ οἰκίᾳ ναίων,  
 ὅς οἱ ἐποίησεν σὺν ἄλλοις αἰτολῶν, ἐπὶ ἀβόειον  
 ταύρων ἰαφείων, ὃ δ' ὄρσθον ἔλασε χαλκόν.  
 φ', πρόσθεν εἰρνοιο φέρον τελαμώνιος αἶας,  
 σὴν ἔκ' μὲν ἔκτορ' ἐγγύς· ἀπελήστας δ' ἐπροσηύδα·  
 ἔκτορ', εὖν μὲν δ' ἡ σάφα εἴσιναι οἴσθαι οἴσθαι.  
 οἶοι καὶ δαναοῖσιν ἀεισῆς μετέασσι,  
 καὶ μετ' ἀχιλλῆα ρηξύνοντα, θυμολέοντα,  
 ἀλλ' ὃ μὲν ἐν νήεσσι κρονοῖσι πονηπόροισι  
 κίτ' ἀπομηνίως ἀγαμέμνονι ποτιμῖνι λαῶν.  
 ἡμῖν δ' ἐμὲν βίοι, οἳ ἂν σέθεν ἀνπάσαιμι,  
 καὶ πολέου· ἀλλ' ἄρ' ἐκ' μάχης, ἡδ' ἐπὶ πολέμοιο.  
 Τὸν δ' ἄντι προσέειπε μέγας κρονοῖος ἔκτορ',

- Διὶς ἐκ πολέμοιο, καὶ ἀνῆς δ' ἠϊότῃτ' ὄφρ',  
 ὣς ἔφαθ'· οἱ δ' εἰ, κληῖρον ἐσημύναντο ἔκαστος,  
 ἐν δ' ἔβαλον κυνέη ἀγαμέμνον' ὄφρ' εἰδίοιο.  
 λαοὶ δ' ἠρήσαντο, θιοῖσι δ' χεῖρας ἀνέχον,  
 ὥς δ' εἰς τις ἔπεισκεν ἰδὼν εἰς ἕρπυλόν δ' ἑρπύνην.  
 ἔϋ πωτρ', ἢ αἶαντα λαχεῖν, ἢ τυδείος ἱόν,  
 ἢ ὠμὸν βασιλῆα πολυχρύθιο μυκῆνης.  
 ὣς ἄρ' ἔφω· πολλοὺν δ' ἡγερένιος ἰππότην ἔειπε.  
 ἐκ δ' ἔθορε κληῖρος κυνέης, ὃν ἄρ' ἔθελον αὐτοί.  
 αἶαντος· κῆρυξ δ' φέρον ὧν ὄμιλον ἀπάντη  
 διῆξ' ἐνδείξια παῖσιν ἀειθέεσσιν ἀχαιῶν,  
 οἳ δ' ἔθ' γινώσκοντο, ἀπηνήσαντο ἔκαστος,  
 ἄλλ' ὅτε δ' ἦ πόν ἴκανε, φέρον ὧν ὄμιλον ἀπάντη,  
 ὅς μιν ἐπὶ ἡρώεσσι, κυνέη βάλε φαίδιμος αἴας,  
 ἔπει ὑπέρχευε χεῖρ'. ὅδ' ἄρ' ἐμβαλεν, ἄγχι παραστάς,  
 γυνὴ δ' κλήρυ σῆμα ἰδὼν, γήθησε δ' εὐθυμῶ.  
 τὸν μὲν πόδ' ἐὼν χαμάδις βόλλε, φώνησέν τε,  
 φίλοι, ἔπει κληῖρ' ἐμὸς, χαίρω δ' καὶ αὐτὸς  
 θυμῶ. ἐπεὶ οὐδέ κεν νικησέ μιν ἑκτορα δῖον,  
 ἀλλ' ἄγετ', ὅφρ' ἂν ἐγὼ πολυμήϊα τδύχαι δυνώ.  
 τόφρ' ὑμεῖς εὐχεσθε διὶ κρονίδι ἀνακτ'  
 σιγῇ ἔφ' ὑμέων, ἵνα μὴ φῶδες πιπύδωνται,  
 ἔκ' καὶ ἀμφαδίλω, ἐπεὶ οὐδέ κεν εἰδὶ μιν ἔμπης,  
 ἔγχετ' ἢ με βίη γέ κων ἀέκοντα δίηται,  
 ἢ δ' ἐτ' ἀϊφρή, ἐπεὶ ἔδ' ἐμὲ νῆϊ δ' ἄγ' οὕτως  
 ἔλπομαι ἐν σάλαμιν γένεσθαι, τετραφέμην τε.  
 ὣς ἔφαθ'· οἳ δ' εὖ χοντο διὶ κρονίδι ἀνακτ'  
 ὥς δ' εἰς τις ἔπεισκεν ἰδὼν εἰς ἕρπυλόν δ' ἑρπύνην.  
 ἔϋ πᾶτρ', ἴδ' ἠθὺς μεδέων, κύδιε, μέγιστε,  
 τίς νίκη αἶαντι, καὶ ἀγλαὸν εὖχος ἄρεσσι.



χρῶσμε σιδηρεῖν . πρὶν γὰρ λυκοόργος ὑποφθάς .  
 διὰρὶ μέθην πινόισαν . ὅδ' ὕπλιος οὐδ' αἰερίδην .  
 τεύχεα τ' ἱξινάειξε , τὰ οἱ πόρε χαλκὸν ἄρης .  
 καὶ τὰ μὲν αὐτὸς ἔπειτ' ἐφόρει μετὰ μῶλον ἄρηθ' .  
 αὐτὰρ ἐπεὶ λυκοόργος ἐνὶ μεγάροισιν ἐγήρα .  
 δῶκε δ' ἐρινυθαλίῳ φιλῶ θεράπωντι φορῆναι .  
 τῷ δ' γὰρ τεύχε' ἔχων , προκαλίσσας πῶντας ἄριστους .  
 οἱ δ' ἐμάλ' ἐφόμεον , καὶ ἐδιδόσαν , οὐδ' ἐπὶ ἔτλην .  
 ἀλλ' ἱμὲ θυμὸς ἀνῆκε πολυτλήμων πολυμήϊδην  
 θάρσεν δ' ὦ . γυνεῇ γ' νεώτατος ἴσκειν ἀπάνταρ .  
 καὶ μαχόμεναι οἱ ἐγὼ , δῶκεν δ' ἐμοὶ ἔγχος ἀθήνη .  
 τοῖσι δ' ἠμύκισον , καὶ κάρτισον κτάνον ἀνδρα .  
 πολλὸς γάρ τις ἐκείτο παρ' ἑορος ἐνθα , καὶ ἐνθα ,  
 εἴδ' ὡς ἠβώοιμι . εἶη δ' ἐμοὶ ἔμπροσθεν εἷη .  
 τοῖσι κε τάχ' ἀντήσσει μάχης κερυθαίοιο ἐκτορ .  
 ὑμῶν δ' οἵ περ' εἰσιν αἰετῶδες παναχαῶν ,  
 οὐδ' οἱ σφοδρονέως μέμαθ' ἔκρηθ' ἀντίον ἰλθειῖν .  
 ὧς νέκλειε δ' ἑρῶν . οἱ δ' ἐνέειν πάντοτε ἀνίσταν .  
 ὦρτο πολὺ πρῶτος μὲν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων .  
 τοῖσι δ' ὦ , τυδείδης ὦρτο κρατερὸς διομήδης .  
 τοῖσι δ' ἐπ' αἰσωντοῖς θῆεν ἐπιημίνοι ἀλκίρ ,  
 τοῖσι δ' ἐπ' ἰδομένης , καὶ δάων ἰδομένηθ' .  
 μηειόνης , ἀτάλαντος ἐνυαλίῳ ἀνδραφόντῃ .  
 τοῖσι δ' ἐπ' ἐυρύπυλτος δαΐμωνθ' ἀγλαὸς ἦρος .  
 ἀν' ἧ θόας ἀνδραμονίδης , καὶ δῖος Ὀδυσσεύς .  
 πῶντο δ' ἄρ' οἱ γ' ἐθελον πολεμίσσιν ἐκτορ εἰδῶ  
 τοῖσι δ' αὖτις μετίεπε γερήνιος ἱππότα νέστωρ .  
 ἑλὼν νῦν πεπῶλαχθε διαμπιρὲς , ὅς κε λαλῶχοισι  
 οὔτε γὰρ δὴ δὴν σφ' ἐκνήμιδας ἀχαιοὺς  
 καὶ δ' αὖτε δὴν θυμὸν δνῆσινται , αἴ κε φύγησι

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔρρη' ὀνηβολῆσαι, ὃ πρ' οἷο πολλὸν ἀμείνων,  
ἀλλὰ σὺ μὲν· ἵζυ ἰδὼν μετὰ ἱθὺς ἱταίρων·  
θύτῳ δ' ὃ πρόμον ἄλλον ἀνασέθουσιν ἀχαιοί·  
ἱπὲρ ἀδ' αὖτις γ' ἔστ', καὶ εἰ μὸς ἐς ἀκρόρης,  
φημί μιν ἀπασσίνως γονὺ κάμψεν· αἴ κε φύγησι  
δ' ἡὶς ἐκ πολέμοιο, καὶ ἀνῆς δ' ἡϊοτῆτος·

Ως εἰπὼν, παρὲπαισιν ἀδελφεῦ φρένας ἥρας  
αἴσιμα παρὰ πῶν· ὅδ' ἐπείθρο, τὸ μὲν ἔπειτα  
γ' ἠθόσωοι θιράσσοντο ἀπ' ὤμων τεύχε' ἔχον·  
νέωρ δ' ἀργείοισιν ἀνίσταν, καὶ μετίεπον·  
ὃ πόπποι· ἢ μίγα πένθος ἀχαΐδα γαῖαν ἰκάνει,  
ἔκε μίγ' οἱ μῶξτε γέρον ἱππλάτα πηλιεύς,  
ἔδ' ἄλως μυρμιδόνων βυληφόρος, ἡδ' ἀγορητής,  
ὅς ποτ' ἔμ' ἐρόμην, μίγ' ἐγύθειω ἐνὶ οἴκῳ  
πάντων ἀργείων ἐρέων γυνήν τε τόκον τε·  
ἔως, νῦν εἰ πῶσποντας ὑφ' ἑκρε πάντας ἀκῶσαι,  
πολλὰ κεῖν ἀθανάρισι φίλας ἀνὰ χεῖρας ἀήρας,  
θυμὸν ἀπὸ μελίων δύναι δόμον αἴδ' ος εἶσα·  
εἴ γὰρ ζῆυ τι πάτρ', καὶ ἀδ' αὖτις· καὶ ἀπολλοῦ,  
ἢ εἴ μ' ὥς ὅτ' ἐπ' ὠκυρόῳ κελάδοντι μολχοντο  
ἀγρόμενοι πύλιοί τε καὶ ἀρκάδεις ἐγχεσίμωροι,  
φειᾶς παρ' τείχεσιν, ἱερδ' ἀνὰ ἀμφὶ ῥίεθρα·  
ὅισι δ' ἐρωθαλίων πρόμος ἴσταν ἰσόθιος φώς·  
τεύχε' ἔχων ὥμοισιν ἀριθόοιο ἀνακτ',  
δῖος ἀριθόος, τὸν ἐπὶ κλησιν κερωνήτω  
ἀνδρὸς κίκλησκον, καλλίζωνοί τε γ' αὖτε,  
οὐνεκ' ἄρ' οὐ τόξοισι μαχέσκητο, δ' ἄρ' ἔτι μακρῶ,  
ἀλλὰ σιδ' ἡρμείῃ κερύνη ῥήγνυσκε φάλαγγας·  
τόν λυκούργος ἐπιφνε δόλω, οὐ π' κρᾶτεί γε,  
φανοπῶ ἐν ἐδ' ᾧ, ὅθ' ἄρ' οὐ κερύνη οἱ ἔλθον

Χρᾶσμα

τόν δὲ νέκυα ἐπὶ νῆας εὐσέλμους ἀποδῶσω,  
 ὄφρα ἔταρχύσῃσι κερκῆσι μόνωντός ἀχαιοί.  
 σῆμά τέ οἱ χόρυσσιν ἐπὶ πλατείῃ ἠλυσσόντες,  
 καὶ ποτὲ πρὸς εἴησι καὶ δῖον ὄντων ἀνθρώπων  
 νηὶ πολυκλήϊδι πλέων ἐπὶ οἴνοπα πόντον,  
 ἀνδρὸς μὲν τόδ' ἐσθλὸν πάλαι κατὰ τεύχεσσιν  
 ὄν ποτ' αἰετούοντα κατέκτανε φαίδιμος Ἴκτωρ,  
 ὡς ποτὲ πρὸς ἔρις, τόδ' ἐμὸν κλέος οὐ ποτ' ὀλεῖται.  
 Ως ἔφαθ'· οἷδ' ἄρα πάντες ἀκλῶς ἐγένοντο σιωπῇ,  
 αἰδέσθων μὲν ἀνὴρα δαΐδα· δεισάντων δ' ὑποδῆχθαι.  
 δῖε δ' ὅτ' ἠμώελατο ἀνίστατο, καὶ μετέειπε  
 νείκεσσι δὲ δῖον, μέγα δ' ὄνονα χίρσο θυμῷ,  
 ὦ μοι ἀπὸ ληϊτῆρός ἀχαιῖδος, ἔκ' ἐτ' ἀχαιοί,  
 εἴ μιν δὴ λώβη τάδ' ἐγ' ἔσται ἀνόθων ἀνδρῶν,  
 εἴ μὴ πρὸς δῖαν ἄνδρα ἔκρητο ἀντίος εἶσιν,  
 ἀλλ' ὑμεῖς μὲν πάντες ὕδαρ, καὶ γαῖα γένοιω,  
 ἢ μῆνοι αὖθ' ἔκαστοι ἀκύνεοι, ἀκλῆες αὐτῶς,  
 ἴδω δ' ἐγὼ ἐγὼν αὐτὰς θαρίξομαι, αὐτὰρ ὑπὲρ θῶν  
 νίκης πείρατ' ἔχοντα ἐν ἀθανάτοισι θεοῖσιν.  
 Ως ἄρα φωνήσας, κατιδύσας τὸ δόρυ καλῶ.  
 ἔνθα κέρι μανέλαε φάνη βιότοιο τελευτῇ  
 ἔκτορ' ἐν παλαιμῇσιν, ἐπεὶ πολὺ φέρτερος ἦεν,  
 εἴ μὴ ἀναιξάντες ἔσθ' βασιλῆος ἀχαιῶν,  
 αὐτός τ' ἀρείῃης δῖον κρείων ἀγαμέμνων,  
 δειγνύων ἔλε χερὸς ἔπος τ' ἔφατ', ἐκτ' ὀνόμαζεν  
 ἀφραίνεις μανέλαε διοτρεφές, οὐ δ' ἐπὶ σε χερὶ  
 ταύτης ἀφροσύνης, ἀνὰ δ' ἴαχε κηδόμενος περ,  
 μὴδ' ἔθελ' ἐξέειπες σεῦ ἀμείνονι πατὶ μάχῃσιν,  
 ἔκρε πρὶαμίδῃ, τόν τε συγέεσσιν καὶ ἄλλοις,  
 καὶ δ' ἀχιλλεύς τεύχεα μάχῃ ἐνὶ κυδίαντῃ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Ως ἔφαθ' ἑκτωρ δ' αὖτ' ἐχάρη μέγα, μῦθον ἀκούμενος,  
καὶ ῥ' ἐς μέσον ἰὼν βῶων, οὐκ ἔργα φάλαγγας  
μέσων δ' ἑρὸς ἰλῶν. τοῖς δ' ἰδρύνθησαν ἅπαντες  
καὶ δ' ἄρα μένων ἴσεν ὑπὸ κνήμιδας ἄχαιούς.  
καὶ δ' ἄρ' ἀθηναίητε, καὶ ἄρ' αὖ γυρότοξος ἀπόλλων  
ἰδέσθω. ὄρνισιν ἰοικότοιο δαρυπιοῖσι,  
φηγῶ ἔφ' ὑψηλῇ παρὸς διὸς ὤγιόχοιο,  
ὠδρᾶσι τρὶ πόμῃσιν. τῶν δ' εἰς χεῖρας ἑστ' πυκναί,  
ἄσπῃσι, καὶ κερύθεσσι, καὶ ἐγχεσὶ πεφεικῦλαι  
οἷη δ' ἐξ ἰφύροιο ἐχέουσιν πόνρον ἐπὶ φρίξ,  
ὄρνυμένιοιο νέον μιγάνει δέ τε πόντον ὑπ' αὐτῆς,  
ὄϊα ἄρα εἰς χεῖρας ἑστ' ἄχαιῶν τε, βῶων τε!  
ἐν πεδίῳ. ἑκτωρ δ' μετ' ἀμφοτέροισιν ἔειπεν.

Κέκλυτέ μῃ βῶεις, καὶ οὐκνήμιδας ἄχαιοί,  
ὅφρ' εἴπω τά με θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι κελεύει.  
ὄρκια μῃ χρόνῃ δ' ἡς ὑψίβυγος ἦκ' ἐτίλειπεν,  
ἀλλὰ κακὰ φρονέων τεκμαίρεται ἀμφοτέροισιν,  
ἔσσομαι ἢ ὑμεῖς τοίῳ ὑπυρρῶν ἔλητε,  
ἢ αὐτοὶ παρὰ νηυσὶ δαμείντε πονηπόροισιν,  
ὕμῃν μ' γὰρ ἔασιν ἀεισέδου παναχαιῶν,  
τῶν, νῦν ὄντινα θυμὸς ἐμοὶ μαχέσθαι ὀνείδην  
δωρ' ἴτω ἐκ πάντων προμήθε' ἔμμεναι ἑκτοὶ δ' ἴω  
ὅδε δ' ἔμμεναι, ζῆς δ' ἄμμ' ἐπιμάστρετο' ἔσω,  
εἰ μὲν κεν ἐμὲ κτεῖν' ἔλῃ τανακτεῖ χαλκῶ,  
τεύχεα συλήσεις, φερίτω κούρας ἐπὶ νῆας,  
σῶμα δ' οἷκαδ' ἐμὸν δ' ὀμῆμαι πάλιν, ὅφρα πυρὸς με  
βῶεις, καὶ βῶων ἄλοχοι λευκώσιν θανόντα,  
εἰ δέ κ' ἐγὼ κ' ἔλω, δώη δέ μοι ἔχρος ἀπόλλων,  
τεύχεα συλήσεις, οἷσ' ὅσ' ἴλιον ἱρήν,  
καὶ κριμόω ὅττι νῆεν ἀπόλλων' ἐκάλειο.

γίγῃ σὺ δ' ἄν με μαυῖα διὸς θυγάτηρ μεγάρου,  
 ἦλθες ἀπ' ἑλύμποιο, μέγας δ' ἐσὶ θυμὸς ἀνῆκεν,  
 ἢ ἵνα δῆ δαναοῖσι μάχῃς ἱεραλκία νίκῃ  
 δῶς· ἐπεὶ οὗτοι ῥῶας ἀπολλυμένους ἐλαΐρας.  
 ἀλλ' εἴ μοι τι πίθοιο, τόκεν πολὺ κέρδιον εἴη,  
 νῦν μὲν παύσωμαι πόλεμον, καὶ δ' ἡϊότητά  
 σήμερον. ὕστερον ἄντι μάχῃσιν, εἰσόκει τέκμαρ  
 ἱλίσσῃσιν, ἐπεὶ ὡς φίλον ἔπλετο θυμῷ  
 ὑμῖν ἀθανάτησι διαπραθίσιν τόδ' ἄστυ.

Τὸν δ' ἄνθις προσέειπε θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 ὦ δὴ ἔσω κἀόργε, τὰ γὰρ φρονέουσ' καὶ αὐτή.  
 ἦλθον ἀπ' ἑλύμποιο μετὰ ῥῶας, καὶ ἀχαιούς.  
 ἀλλ' ἄγε πῶς μέμονας πόλιν κατὰ παυσέμεν ἀνδρῶν;

Τὴν δ' ἄντι προσέειπεν ἄναξ διὸς Ἡὸς ἀπόλλων.  
 ἔκτρος ὤρσωμαι κρατερὸν μὲν ἔϊπποδ' ἄμοιο,  
 ἣν ἑνὰ πον δαναῶν προκάλεισται οἶόνθ' οἶος,  
 ἀντίβιον μάχεσθαι ἐν αὐτῇ δ' ἡϊότητι,  
 οἷ δ' ἐκ' ἀγαστάμοι χαλκὸν κνήμιδες ἀχαιοί,  
 οἷον ἐπόρσεον πολέμιζον ἐκτορε δίφ.

Ὡς ἔφατ'. οὐδ' ἀπίθουσι θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 τῶν δ' ἔλεντο πριάμοιο φίλος παῖς, σύνθετο θυμῷ  
 βελήν. ἥ ῥα θεοῖσιν ἐφ' ἡνδάνε μηπόωσι.  
 σὴ δ' πατρὶ ἐκτορῶν, καί μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν.  
 ἔκτορ' ἢ πριάμοιο, διὸ μήτιν ἀτάλῳτε,  
 ἥ ῥα νύ μοι τί πίθοιο. κασίγνητός δ' ἐσὶ εἰμί.  
 ἄλλος μὲν κάθειν ῥῶας, καὶ πῶντας ἀχαιούς.  
 αὐτὸς δ' ἐπροκάλεισται ἀχαιῶν ὅσος ἄριστος,  
 ἀντίβιον μάχεσθαι ἐν αὐτῇ δ' ἡϊότητι,  
 οὐ γὰρ πάθει μοῖρα θανέειν, καὶ πότμον ἐπισταίην.  
 ὡς γὰρ ἐγὼν ἔπ' ἀκονσάμεν ἀεθλὸν ἀεθλῶν.



ΙΛΙΑΔΟΣ . Η . ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΨΩΔΙΑΣ .

ἦτε δ' αἶας πολέμῳ μόνῳ μόνῳ ἔκπεσθ' ἰδίοι .

Σ ἑπών , πυλίων ἱξίσαντο  
ὣς φαίδιμος ἔκτωρ ,  
ὣδ' δ' ἄμ' ἀλέξανδρος κί'  
ἀδελφεός , ἐν δ' ἄρα θυμῷ  
ἀμφοτέροι μίμασιν πολεμίσαν , ἡδ' ἐμάχεσθαι .  
ὥς ὃ θεὸς ναύτησιν ἐλδομένοισιν ἔδωκεν  
οὖρον , ἐπὴν κεκάμωσιν ἐϋξέσθ' ἑλάτῃσι  
πόντον ἐλαύνοντο καμίντῳ δ' ὑπὸ γυνὴ λείλωται .  
ὥς ἄρα τῷ φώεσιν ἐλδομένοισι φανήτην .  
ἐνθ' ἐλέτω ὁ μῦθ' , ἔδον ἀρηϊθόοιο ἀνακτὸς  
ἄρην ἡνωτάοντα μέγιστον , ὃν κερυνήτης  
γλύνει ἀρηϊθόοι , καὶ φιλομέδοντα βοῶπις ,  
ἔκτωρ δ' ἡϊονῆα βαλ' ἐγχεῖ δ' ἐξουόντι  
αὐχέν' , ὑπὸ σελάνης ἐϋχάλκῃ . λῦσε δ' ἐ γυνὴν .  
γλαυκὸς δ' ἵππολόχοιο πάϊς , λυκίων ἀγρὸς ἀνδρῶν ,  
ἱφίσσον βάλε θύρῃ κατὰ κρατερὴν ὕσμίνῃν .  
διξιάδῃω ἵππων ἐπὶ ἀλμυρὸν ὠκεῖον ,  
ὦμον , ὅθ' ἱξίππων χαμάδις πέσι . λῦντο ὃ γ' ἔπειτα .  
Τοὺς δ' ὥς οὖν ἐνόησε θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη ,  
ἀργεῖες ὀλέκοντας ἐνὶ κρατερῇ ὕσμίνῃ ,  
εἴ ῥ' αὖ κατ' οὐλύμῳσι κερύνων ἀΐξασα  
ἴλιον ἐκίρην . τῇ δ' ὄντιος ὤρνυτ' ἀπόλλων  
πρὸ γάμου ἐκ καπιδῶν . φώεσι ὃ βούλῃσι νίκῃν .  
ἀλλήλοισι δ' ἐτῶς σωσώτερόν τι παρὰ φηγά .  
τὴν πρότερον προσέειπεν ἀναξείδης ἱὸς ἀπόλλων ,  
τίπτε

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ .Η. ΟΜΗ,  
ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Κτάρ σὺν ἀλεξάνδρῳ τῷ ἀδελφῷ κατὰ  
θῶν ἐς τὴν μάχην, ἐβόηθη τοῖς βασιλικῇ  
μηκόσιν ἦδη, καὶ σύμβουλεύαντος ἑλένης  
τῆς ἀδελφῆς μωντεος ὄντος, προσκαλιῖται αὐτὸς τίς αὐ  
τῷ βούλοιτο τῶν ἑλλήνων μονομαχήσαι. πολλῶν δὲ  
προαρυμένων, αἴας ὁ τελαμώνιος κληρωθεὶς, σωιστῆ,  
μαχομένους δι' αὐτοὺς, κήρυκός καταπαύεσσι. καὶ νῦν  
σχελὺς τὴν μάχην, καὶ οἱ μὲν ἀλλήλοις θῶρα διδόασιν -  
ἐπικηρυκούμενων ὃ βῶαν περὶ νεκρῶν ἀναρίσειως, καὶ  
αὐτὰ γίνετ' παρ' ἀμφοτέροις τοῖς στρατοῖς, οἷτε ἑλληνοὶ  
τάφον πολυάνδριον κατασκευάζουσιν, καὶ τεῖχος ἔναυσάθ  
μα, ἐφ' ᾧ ὁ ποσειδῶν ἠγανάκτησε. (ὅς τις αὐτοῖς σχε  
νυκτὸς σημῖα ἔκ αἰσία τῶν μελλόντων δάκνυσιν).

K

# Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ.

ἀλλ' ὅγ' ἐπεὶ κατέδυν κλυτὰ τεύχεα πακίλα χαλκῷ,  
 σόλυατ' ἔπειτ' ἀνὰ ἄστυ πρὸς κραιπνοῖσι πεποιθώς,  
 ὣς δ' ὅτε τις σάπης ἵππος ἀκροσέσσης ἐπὶ φωνῇ  
 δισμῶν ἀποφρῶξας, θείῃσι πιδίοιο προαίνων,  
 εἰδὼς λυγρὰ καὶ ὑβρῆϊος ποταμοῖο,  
 κυδίσων, ὅτ' ὅ κάρη ἔχῃ, ἀμφὶ δ' ἔχεται  
 ὤμοις ἀΐσσονται, ὃ δ' ἀγλαΐῃσι πεποιθώς.  
 ῥίμφα δ' ἔγνω φέρει μετὰ τ' ἦθια, καὶ νομὸν ἵππων,  
 ὡς ἢ δὲ πριάμοιο πάρις κατὰ περὶ ὅμῃς ἀκρῆς  
 τεύχεσι παμφαίνων, ὃς τ' ἠλέκτωρ ἐβελύκεσσι  
 κατὰ χαλόν, ταχέως δ' ἐπὶ πόδες φέρον, αἵ τε δ' ἔπειτα  
 ἔκτορα δῖον ἔτετμεν ἀδελφίδον, εὖτ' ἄρ' ἔμιλλαι  
 σφίτερι ἐκ χῶρης, ὅθι ἦ δόειε γυναικί.  
 Τὸν πρότερος προσέειπεν ἀλέξανδρος θιοσφύης  
 ἦθ' ἢ, ἢ μαλα δὴ σέ κεν καὶ ἀνύμνηον κατερέκω,  
 δῖον ὄντων, ὅθ' ἢ ἄλλοι ἐναΐσιμον, ὡς ἐκίλευς.  
 τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κερυθαΐολος ἔκτορος  
 Δαμόνι, οὐκ ἄρ' τις τοι ἄνθρωπος, ὃς ἐναΐσιμον εἴη,  
 ἔργον ἀτιμήσσει μάχης, ἐπεὶ ἄλκιμός ἐστι,  
 ἀλλὰ ἐκὼν μυθίης τε, καὶ οὐκ ἐθέλεις, ὅθ' ἢ ἐμὸν κῆρ  
 ἄχνηται ἐν θυμῷ, ὃς ὑπὲρ σέθεν ἄισχ' ἐκκούω  
 πρὸς βῶων, οἳ ἔχουσιν πολὺν πόνον εἴνεα σείω.  
 ἀλλ' ἴομεν, τίς δ' ὅπιδον ἀρεστέμεθ', αἵ κ' ἐπὶ τοῖς  
 δῶν ἵππεσσι θείοις ἀεγνέεσσιν  
 κρητῆρα σήσεσθαι ἐλπίθερον ἐν μάχῃ, ὡς  
 ἐκ τοῖς ἡλῶσαντες ἐκνύμεσθαι ἀχαιούς.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ

αὐτὰρ ὃν ὄρ φίλον ἦδ' ἐπὶ κῦσι πηλὶ τε χερσίν,  
εἶπεν· ἐπὶ βέλῳ μὲν ὁ δὴ τ', ἄλλοι σιτὶ θεοῖσι.

Ζεὺς ἄλλοι τε θεοί, οὐτε δὴ καὶ τόνδε γένεσθαι  
παῖδ' ἱμὸν· ὥς καὶ ἐγὼ περ, ἀειπρηπεία βῶσθην,  
οὐδὲ βίβω τ' ἀγαθὸν καὶ ἰλίψ' ἵφι ὠλώσθην,  
καί ποτ' ἔτις εἶπ' ἡσι παῖδες δ' ὅγε πολλὸν ἀμείναι,  
ἐκ πολέμου ἀνίοντα· φέροι δ' ἵναρα βροτόντα,  
κτείνας δ' ἡϊόρ' ἀνδρα, χαρεῖν δ' ὅφρ' ἵνα μῦθης.

Ὡς εἰπὼν, ἀλόχοιο φίλης ἐν χερσὶν ἔθηκε  
παῖδ' ἰόν· ἥ δ' ἄρα μιν κηῶδε δ' ἔξαθ' κόλπῳ,  
διακρύψειν γαλώσασα· πόσις δ' ἑλίνεσσι νοήσας·  
χαρὶ τέ μιν κατέρειξεν, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκτ' ὀνόμαζε,

Δαμονίην· μή μοι τὶ λίαν ἀκαχίξειο θυμῷ·  
οὐ γάρ τις μ' ὑπὲρ αἴσαν ἀνὴρ αἴδει προῖωψι.  
μοῖραν δ' οὕτω φημι πιφυγμένον ἱμειναι ἀνδρῶν,  
οὐ κακόν· οὐδ' ἐμὴ ἰδὼν ἐπὴρ ταπρῶτα γίνηται.  
ἀλλ' εἰς οἴκον ἵστα, τὰ σάουτ' ἔργα κόμιζε,  
ἴσοντ', ἥλα καὶ τῶ τε καὶ ἀμφιπόλοισι κίλινι  
ἔργον ἐποίχεται· πόλεμ' δ' ἀνδρῶσι μελέσθαι.  
πᾶσιν, ἐμοὶ δ' ἡ μάλιστα, τοὶ ἰλίῳ ἐγγυόασιν.

Ὡς ἄρα φωνήσας, κόρυθ' εἴλετο φαίδιμ' ἔκτορ  
ἵππευν· ἄλσχος δ' φίλην, οἴκον δὲ βεβήκει  
ἐντροπαλίζομένη· θαλερὸν κατὰ δάκρυ χέυσσιν·  
αὐτὰρ δ' ἐπείθ' ἴκανε δέμης ἐν ναετωόντας,  
ἔκτορος ἀνδροφόνιο· κιχῆσάθ' δ' ἐνδοθὶ πολλὰς  
ἀμφιπόλους· τῆσιν δ' ἰόον πασησιν ἐνὶ ῥσων.  
αἱ μὲν, ἔτι ἰδὼν ἰόον ἔκτορα ὦ ἐνὶ οἴκῳ  
οὐ γὰρ μιν ἔτ' ἔφανθ' ὑπὸ ῥοπον ἐκ πολέμοιο  
ἔξειναι, προφυγόντα μιν, καὶ χεῖρας ἀχαιῶν.  
οὐδ' ὅτε πάλαι δ' ἔθυσαν ἐν ὑψηλοῖσι δόμοισιν.

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

οὐδ' ἐμὶ θυμὸς ἀνῶγεν, ἐπὶ μάθορ' ἔμμενε ἰδλότης  
 αἰεὶ, καὶ πρῶτοισι μετὰ βῶσι μάχεσθαι.  
 ἀρνυμένο παρὸς τε μέγα κλῖος, καὶ ἐμὸν αὐτῷ.  
 εἴ μιν γὰρ τόδε οἶδα κατὰ φρένα, καὶ κατὰ θυμόν,  
 ἔσταιται ἡμᾶρ, ὅτ' ἄρ' ὥστ' ὀλώλῃ Ἴλιος ἱρή,  
 καὶ πριάμεθ', καὶ λαὸς ἱυμυλίῳ πριάμοιο.  
 ἀλλ' οὐμοὶ βῶων τόσῳ μίλει ἄλγος ὀπίσσω,  
 οὗτ' αὐτῆς ἐκάδης οὗτε πριάμοιο ἀνακτὸς  
 οὗτε κλισιγνήτων· οἳ κεν πολίεστε, καὶ ἰδλῶν,  
 ἐρηνήισι πείσοισι ὑπ' ἀνδράσι δυσμουσίαισιν,  
 ὄσῳ σεῖ', ὅτε κίρτις ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνῳ  
 διακρυόσασθαι ἄρῃται ἰλίουθερον ἡμᾶρ ἀπούρας·  
 καὶ κεν ἐρ' ἄρχει ἔσσετ' ἀλλῆς ἰσὺν ὕφαινοιο.  
 καὶ κεν ὕδωρ φορέοις μιστήριος, ἢ ὑπερείης  
 πόλιν ἀκασομένην· κρατερὴ δ' ἐπικέισιτ' ἀνὰ κρη.  
 καὶ πῶτί τις ἐῖπῃσιν ἰδῶν κατὰ δάκρυ χέουσαν;  
 ἔκθρος ἦδ' ἄγε γυνή τις ἀεικελίσκε μάχεσθαι  
 βῶων ἰπποδάμων, ὅτε Ἴλιον ἀμφὶ μάχῳ.  
 ὣς πῶτί τις ἐρέει, σοὶ δ' ἄν νείορ' ἔσταιται ἄλγος  
 χυτὴ βίῃ δ' ἀνδρὸς ἀμύνειν δούλιον ἡμᾶρ.  
 ἀλλὰ μετιθνήτω χυτὴ κατὰ γαῖαν καλὴν ἦτοι,  
 πρὶν δ' ἐτι σῆς τε βοῆς, σέθεν ἰλκῆμοιο πυθέσθαι.  
 Ως ἐπὶ δὲ, οὐ παιδὸς ὀρέξατο φαίδιμ' ἔκτωρ.  
 ἄψ δ' ὃ πολὺς πρὸς κόλπον ἱϋζώνοιο θεῆνης  
 ἐκλίνθη ἰωχῶν, παρὸς φίλῃ ὅττιν' ἀτυχεῖς,  
 ταρβήσας χαλκὸν τεύχε' ἰλοφονίῳ χιτῶνι  
 δφνόν, ἀπ' ἀκροσώτης κόρυθος νόοντα νοήσας.  
 ἐκ δ' ἐγέλασεν πατὴρ τε φίλος, καὶ πότνια μήτηρ.  
 αὐτίκ' ἀπὸ κρατὸς κόρυθ' εἴλετο φαίδιμ' ἔκτωρ.  
 καὶ τὴν μὲν κατέθηκεν ἐπὶ χθονὶ παμφανόωσαν.

αὐτῆς



ἔτοίμα' πατὴρ ἱμὲρ ἀπὶ κτανε δῖος Ἀχιλλεύς,  
 ἐκ δ' ὃ πόλιν πέρσων κιλίκων εὐνοετάρσων,  
 θόβῳ ὑφ' ἵπυλον, πατὰ δ' ἔκταναν ἡτίονα,  
 οὐδ' ἐμὲ ἔξωσάεξ, οὐδ' ἀσάτο γὰρ τό γε θυμῷ,  
 ἀλλ' ἄρα μιν κατ' ἴκηι σὺρ' ἔντεσι δουδαλίοισιν,  
 ἔδ' ἐπὶ σῆμ' ἔχων περὶ δ' ἡελίας ἐφύτδυσσων  
 νύμφαι ὀρεσιάδ' οὐ κῆρσά διός αὐγιοχόιο,  
 οἳ δ' ἐμοὶ ἐπὶ ἄκρ' ἰσσαν ἐν μεγάροισιν,  
 οἳ μὲν, πάντες ἰὼ κίον ἔμαλ' αἶδος εἶσω.  
 πάντας γὰρ πτόπεφνι ποδάρεκς δῖος Ἀχιλλεύς,  
 βυσὶν ἔπ' ἐλπίοδιαι καὶ ἀργενῆς οἴασι,  
 μητίεα δ' ἐβασίλδου ὑποπλάκῳ ὕλησσι,  
 τῆρ' ἐπὶ ἄρ' Διὶ ὕγαρ' ἅμ' ἄλλοισι κτιώτασιν,  
 ἐκ δ' ὅ γε τῆν' ἀπένυσσε, λαβὼν ἀπερείσι' ἀποινα.  
 παρὸς δ' ἐν μεγάροισι βάλ' ἄρτεμις ἰοχέαιρα.  
 ἵκτορ, ἅπῃρ σύ μοι ἐστὶ πατὴρ, καὶ πότνια μήτηρ,  
 ἔδ' ἐκ σίγῃντες, σὺ δ' ἐμοὶ θαλερὸς παρακλιῆης.  
 ἀλλ' ἄγε νῦν ἱλίσσεαι, καὶ αὐτὸ μίμν' ὧ πύργῳ,  
 μὴ παῖδ' ὀρφανικὴν θείης, χήρην τε γυναικα.  
 λαὸν δ' ἐπὶ σῆθρ' παρ' ἐρινδόν, ἐνθα μάλιστ' αἰ  
 ἄμβροτος ἐστὶ πόλις, καὶ ἐπίφομον ἔπλετο τοῖχοι.  
 φῖς γο' τῆν' ἔλθοντόν ἐπερῆσσαν οἳ ἄεστοι,  
 ἅμψ' αἶσαντι δ' ὕω, καὶ ἀγακλυτὸν ἰδομνῆα,  
 ἦ δ' ἅμψ' ἀφρίδας, καὶ τυδ' ἐϋαλκιμον ἱόν.  
 ἔπνυτ' ἐσφιρ' ἐνίσπεθ' ἰοπροπίων εὐεδ' ὄς,  
 ἔνν καὶ αὐτῶν θυμὸς ἐπορύνθη, καὶ ἀνώγει,  
 τῆρ' δ' αὐτὴ προσέειπε μέγας κερυθαίολος ἑκτορ.  
 ἔκ καὶ ἐμοὶ τάδε πάντα μέλει γύναι, ἀλλὰ μάλ' αὖτις  
 αἰδέομαι ῥῶας, καὶ ῥωάδας ἑλκισιπέπλους,  
 αἵ κε πρὸς ἐς γυῖσφιρ' ἀλυσκάζω πολέμοιο.

ἀλλ' ἄγε νῦν ἰσέλθῃ, καὶ ἴδω δ' ἐπὶ δίφρῳ  
 δ' ἄερ' ἐπὶ σὲ μάλιστα πόνοσ φρένας ἀμφιβέβηκον,  
 εἴνεκ' ἐμῆτο κωδός, καὶ ἀλεξάνδρῳ ἔνεκ' ἄτης.  
 οἷσιν ἐπὶ ζεύς θῆκε κακὸν μόρον, ὥς καὶ ὀπίσσω  
 ἀνθρώποισι πηλώμενδ' ἀοίδιμοι ἱστομένοισι.

Τόν δ' ἠμύβειτ' ἐπείτα μέγας κερυθαίολος ἱκτωρ  
 μέμει κάθιζ' ἱλέην φιλέσσαι περὶ οὐδ' ἐμπίσθης.  
 οὐδ' ἄρ' μοι θυμὸς ἐπίστυται ὄφρ' ἐπαμύνω  
 βῶας, οἳ μέγ' ἐμῆτο πτοθὴρ ἀπινύτ' ἐχέσιν.  
 ἀλλὰ σύγ' ὄρνυθι τῷδ' ἐπείγ' ἰδὼ ὃ καὶ αὐτός,  
 δὲ καὶ ἐνθάδ' ἀπόλιν καταμάρψῃ ἔοντα.  
 καὶ γὰρ ἱδὼρ οἴκενδ' ἰλδύθωμαι, ὄφρ' ἄρ' ἴδωμαι  
 οἰκῆας, ἄλοχόν τε φίλιν, καὶ νήπιον ἦόν.  
 οὐ γάρ ἐτ' οἷδ' ἐν σφιν ὑπόβοπος ἴξομαι ἄνους,  
 ἢ οὐδ' ἔμ' ὑπὸ χερσὶ θεοῖ δαμόωσιν ἄχουων.  
 αἷς ἄρα φωνήσας, ἀπέβη κερυθαίολος ἱκτωρ.  
 αὐτὰ δ' ἐπεί ἱκανὴ δόμους εὐ ναιετάοντας.  
 οὐδ' ἔμ' ἀνδρομάχῃ λυκώλεον ἐν μεγάροισιν,  
 ἀλλ' ἔμ' ἐν σὺν παιδὶ, καὶ ἀμφιπόλῳ ὑπὲρ πλῶ  
 πύργῳ ἐφείκευκε γούωσά τε μυρομένη τε.  
 ἱκτωρ δ' ὥς οὐκ ἐνδον ἀμύμονα τέτμη' ἀκρίαν,  
 ἔση ἐπ' οὐδ' ὄρν' ἰδὼν, μετὰ δ' ὁμωῆσιν ἔειπεν.  
 εἰδ' ἄγε μοι δῖμωαὶ νημερτέα μυθήσασθαι.  
 πῇ ἔβη ἀνδρομάχῃ λυκώλεον ἐκ μεγάροισιν,  
 ἢ ἐπὶ ἑσχαλῶν ἢ ἐνατίρων ὑπὲρ πλῶν,  
 ἢ ἐς ἀθηναίης ἐξοίχεται, ἐνθά περ ἄλλα  
 βῶαί ὑπλόκαμοι δ' ἀνὴρ θεὸν ἰλάσκοντα.  
 Τόν δ' αὖ ὀρρή ταμὴν πρὸς μῦθον ἔειπεν.  
 ἱκτωρ, ἐπεὶ μάλ' ἄνωγας ἀληθῆα μυθήσασθαι  
 οὐτέ πῃ ἐς γαλῶν, οὐτ' ἐνατίρων ὑπὲρ πλῶ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἔσθ'· καὶ ἀμριπτόισι περικλυτὰ ἔργα κίλινε.  
 Τόν δ' ἔκτορ νίκησας αἰδῶν αἰχροῖς ἱπείασι.  
 Δαμόνι, οὐ μὲν, καλὰ χόλον τὸν δ' ἔθιο θυμῷ.  
 λαοὶ μὲν φθινύουσι, περὶ πτόλιν, αὐπύτι τειχεῖ  
 μαρνάμενοι· σίε δ' εἴνκ' αὐτὴ τι, πτόλιμός τε,  
 ἔσθ' τὸν δ' ἀμφιδέδει, σὺν δ' ἄρ' μαχίσσαιο, κῆ' ἄλλῃ,  
 εἴ τινα πρὸς μεθίστατο ἴδοις ευχερὲς πολέμοιο.  
 ἀλλ' ἄνα· μὴ τάχα ἄσθ' πυρὸς δ' ἡίοιο θέρηται.  
 Τόν δ' αὐτὲ προσέειπεν ἀλέξανδρος θεοφθής·  
 ἔκτορ, ἱπεί μιν κατ' αἶσαν ἐνίκησας, οὐδ' ὑπὲρ αἶσαν.  
 ἔθνη κ' αἰεὶ ἱρίω, σὺν δ' σύνθεο, καί μιν ἄκυσθαι.  
 οὐτοὶ ἐγὼ βῶλον πόσων χόλῳ, οὐδ' ἔτι μέλεισιν  
 ἔμην ἐν θαλάμῳ, ἐνέλον δ' ἄχλ' προσάπιδαι·  
 εὐρ δ' ἐμὲ παρὰ πῦσ' ἄλσος μαλακῶϊς ἱπείασι  
 ἔρμην' ἐς πόλεμον· δοκίει δέ μοι ὦλε, καὶ αὐτῷ  
 λῶτόν ἐσθ' ἀνίκη· νίκη δ' ἐπαμείβεται ἀνδρα·  
 ἀλλ' ἄγε νῦν ἐπίμνησιν ἀρήϊα τέλ' ἔχ' αἰὲν.  
 ἢ ἴθι· ἐγὼ δ' ἔτι μέλει· κίχῃ σέθεν δέ σ' οἶσα.  
 Ως φάτο, τὸν δ' οὐδ' προσέφη κερυθαίοιοις ἔκτορ·  
 τὸν δ' ἱλὴν μύθοισι προσσύνει μελιχίοισι·  
 δαῖρ' ἱμῖο κωδὸς κακῶς μελῆος ἀκρυόσσης,  
 εἰς μὲ ὄφελ' ἔμαλ' ἔω, ὅτε μιν προὔβηται μήτηρ,  
 οἴχιδαι, προφίρηνται κακὴ ἀνέμοιο θυέλλα  
 εἰς ὄρος, ἢ εἰς κῦμα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης,  
 ἔνθα μιν κῦμα ἀπόρρησιν πάρος τάδε ἔργα γένεσθαι·  
 οὐκ ἔτι ἐπεὶ τάδε γ' ὦλε θεοὶ κακὰ τέκμεν' ὀνεί,  
 ἀνδρὸς ἔπειτ' ὠφύλλον ἀμείνον'· εἴν' ἄκρησι,  
 εἰς δ' ἢ ἡδὴ νέμισσιν τε, καὶ αἰχμὰ πολλὰ ἀνθρώπων·  
 οὕτω δ' οὐτ' ἄρ' νῦν φρένες ἐμπεδοί, οὐτ' ἄρ' ὀπίσσω  
 ἔσονται· ἔω κίρ' μιν ἱπασσύνεσθαι ὅτ' αἰ.

ἀλλ' ἄγε

ἔς κάλιστος ἔλω παρὶ κίλημασιν, ἠδ' ἐμείγρις Θ'.  
 ἄσῃρ δ' ὥς ἀπὲ λαιμπευ. ἔκαστο δ' ἐνείατο Θ' ἄλλω.  
 βῆ δ' ἔινου πολλαὶ ὃ μετεσπύοντο χερσὶ καί.  
 αἶδ' ὅτι νηὸρ ἱκανορ Ἀθήνης ἐν πόλει ἄνῃ,  
 τῆς σίθους ὡς ἔξω θεῶν ὡ καλλιπάρῃ Θ',  
 κισσῆς, ἄλχορ ἀντήνορ Θ' ἱπποδάμοιο.  
 τῆρ γὰρ τρῶες ἔθικαν Ἀθηναίης ἱεραυ.  
 αἶδ' ὅλῃ λυγρῇ πᾶσαι Ἀθῆνῃ χιτῶνας ἀνέχου.  
 ὅδ' ἄρα πέπλον ἔλῃσαι θεῶν ὡ καλλιπάρῃ Θ'.  
 θῆκαν Ἀθηναίης ἐπὶ γούνασιν ἠὲ κόμοιο.  
 εὐχομένη δ' ἠρᾶτο δῖος κούρη μεγάληο,  
 πόντι Ἀθηναίῃ ἐρυσίπλοιο δῖα θιάων,  
 ἄξορ δ' ἔγχορ δῖο μῦθε Θ', ἠδ' ἐκὼ ἀντὴν  
 πρηνέα δὸς πέσιον σκαυῶν προπύροιθι πυλάσιν,  
 ὄφρα τοὶ αὐτίκα νῦν δυοπαίδισα βῆς ἐνὶ νηῷ.  
 ὅνις ἠκίστως ἱερὸν ὄμιον, αἶν' ἐλεήσῃς  
 ἄστυ, καὶ πῶρ ἀλόχευ, καὶ νόπια τέκνα.  
 Ως ἔφατ' εὐχομένη Ἀνένων ὃ παλλὰς Ἀθῆνη.  
 ὥς αἰ μέρ' εὐχοντο δῖος κούρη μεγάληο.  
 ἔκτορ ὃ πρὸς δῶματ' Ἀλεξάνδροιο βεβῆκε  
 καλὰ τὰ ῥ' αὐτῆς ἔτινχε σὺν ἀνδράσιν, οἳ τῷ δ' ἄεσι  
 ἦσαν ἐνὶ τροίῃ ἐιβώλακι τέκτονι ἀνδρῶν,  
 οἳ οἳ ἔποίησαν θάλαμον, καὶ δῶμα καὶ αὐλὴν.  
 ἱγγυθί τε πρῖάμοιο, καὶ ἔκτορ Θ' ἐν πόλει ἄνῃ.  
 ἐνθ' ἔκτορ ἐσῆλθε δῖη φίλος· ἐν δ' ἄρα χερσὶ  
 ἔγχορ ἔχον δικάπηχυν· πᾶροιθι ὃ λάμπρο δ' εὐρὸς  
 αὐχμὴ χαλκίῃ· περὶ ὃ χυῦσι Θ' θεία πόρκης.  
 τὸν δ' εὖρ ἐν θαλάμῳ περικαλλέα τόλχῃ ἔπειτα,  
 ἀσπίδα, καὶ θώρηκα, καὶ ἀγκύλα τῷξ ἀφ' ὀνότα.  
 ἀργυρῇ δ' ἑλὴν μετ' ἄρα δ' ὠμῷσι γ' ὠμαξίῃ

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ῥήμοι δ' ἴνον ἄρ' ἐμὲ λίφρονά ποτ' νικᾷ μήτηρ,  
 μὲ μ' ἀπογνώσῃς, μέντος δ' ἄλκιῃς τι λάθωμαι  
 χερσὶ δ' ἀνιπτοῖσι δ' ἡ λείβειν αἰδοπα οἶνον,  
 ἔσομαι οὐδ' ἐπὶ ἐς κίλαυφίῃ κρονίωνι  
 αἵματι, καὶ λυβρῶ πιπυλαγμένον εὐχετάαδ' αἶμα.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν πρὸς νηὶν ἀθηναίης ἀγλῆϊς  
 ἔρχο σύν θύεσθιν, ἀολλίσσασθαι γαίρας.  
 πέπλος δ' ὅσιστοι χερσὶν αἶμα, ἡ δ' ἐμὲ χίρως  
 ἔσθ' ἐνὶ μίγανθ' αἶμα, τοὶ πολὺ φίλτατ' αἶμα τῇ,  
 ἐν θ' ἐς ἀθηναίης ἐπὶ γούνασιν ἡνκόμοιο,  
 καὶ οἱ ὑποχέαια δυοπαίδεα βῆς ἐνὶ νηϊ.  
 ὅνις ἡκέσας ἱερευσέμεν, αἶκ' ἐλπίσῃ  
 ἔσθ' αἶμα καὶ βῶν ἀλόχως, καὶ ἡνίκα τέκνα,  
 αἶκ' αἶμα τυδῆος ἡνὶ ἀπόχ' ἡλίου ἱρῆς,  
 ἔχθ' αἶμα αἶμα χιτῆρ, κρατερὸν μέσσωρα φόβοιο.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν πρὸς νηὶν ἀθηναίης ἀγλῆϊς  
 ἔρχου. ἐγὼ δ' ὅ πάειν μετιλθῶμαι, ὅφρα καλῆσθαι,  
 αἶκ' ἐλπίσ' ἐπὶ πόντος ἀκνέμεν. δὲ κέρ οἱ αὖθι  
 γαῖα χάνοι. μέγα γάρ μιν ἐλνύμπιος ἔρεφ' ἐπὶ πῆμα,  
 βῶσ' αἶμα, καὶ πριάμω μεγαλήτοσιν, τοῖσιν παυσίν.  
 ἔκκ' ἐνὶ νηϊ ἴδοιμι κατελθόντ' αἶδος ἔσθ' αἶμα,  
 φαίην καὶ φρέν' ἀτίρην οἷον ἐκ κίλαυφ' αἶμα.  
 ὦς ἔφασκε. ἡ δ' ἐμὲ, μολῶσαι ποτὶ μέγαρ' ἀμφιπόλοισι  
 κίλαυφ' αἶμα. αἶμα δ' ἄρ' ἀολλίσσασθαι γαίρας.  
 πῶτ' αἶμα δ' ἐς θάλαμον κατεβήσας ἐκ κίλαυφ' αἶμα.  
 ἐνθ' ἔσθ' αἶμα οἱ πέπλοι παμποίκισι, ἔργα γυναικῶν  
 σιδονίων, τὰς αὖτ' ἀλέξω δ' αἶμα θεοειδῆς  
 ἔργα σιδονίηθεν ἐπιπλῶς δ' ἔργα πόντον,  
 τῇ δ' ἔσθ' αἶμα ἡνὶ ἡλίου περ ἀνύγαν δ' ἔργα πατρίδ' αἶμα.  
 τῇ δ' ἔσθ' αἶμα ἀσραμένη ἐκ κίλαυφ' αἶμα, φέρε δ' ἔργον ἀνύγαν,  
 ὦς κίλαυφ' αἶμα



αὐτὰ γλαυκὰ κροῖδ' ἡ φρένας ἐξέλθο (εἰς,  
 πρὸς τυδείδῃ διομήδεα τόλ' ἔχ' ἀμείβων.  
 χρύσια χαλκίων ἱπποπόμοι ἰνναβοῶν.  
 ἔκτωρ δ' ὡς σκαίᾳς τε πύλαις, καὶ φηγὸν ἱκάνων,  
 ἀμφ' ἄρα μιν βῶων ἄλσχοι θέον, ἢ ὃ θυγάτρις  
 ἑρμόδωκε παῖδάς τε, κασιγνήτας τε, ἔτας τε,  
 καὶ πόσις. ὃ δ' ἔπειτα θεοῖς εὐχεσθαι ἀνώγει.  
 πάσας ἐξείης. πολλῇσι δ' ἐκὼς ἐφῆπ' ὅ.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ πριάμοιο δῶμον περικάλλε' ἴκων,  
 ξυστ' αἰθούσῃσι τετυγμένον, αὐτὰρ ἐν αὐτῷ  
 ποντήκεντ' ἔκταν θάλαμοι ξυστοῖο λίθοιο,  
 πλησίον ἀλλήλων δεδμημένοι, ἔνθα δ' ἐκαστὸς  
 κριμῶν πριάμοιο παρὰ μνηστῆς ἀλόχοισι.  
 κευράων δ' ἐτέρωθεν ἐναντίει ἐνδοθὼν αὐλῆς,  
 δῶκε' ἔκταν τέγχοι θάλαμοι ξυστοῖο λίθοιο,  
 πλησίον ἀλλήλων δεδμημένοι. ἔνθα δ' ἑταίροι  
 κριμῶν πριάμοιο παρ' αἰδοίης ἀλόχοισιν.  
 ἔνθα οἱ ἐπιόδωρος ἐναντίῃ ἤλυθε μήτηρ,  
 λαοδίηκεν ἱσάγασσε θυγατρῶν ἱδὸς ἄριστων.  
 ἐντ' ἄρα οἱ φῦ χειρὶ, ἔπος τ' ἔφατ', ἐκτ' ὀνόμαζε.  
**Τ**έκνον, τί πῃ λιπὼν πόλεμον βρασὺν ἐλήλυθας;  
 ὃ μάλα δ' ἡ τέρεσι δυσώνυμοι ὕμεις ἀχαιῶν  
 μαρνάμενοι περὶ ἄστυ σείδ' ἐνθάδε θυμὸς ἀνῆκον.  
 ἔλθοντ' ἐξ ἄφης πόλιος δ' ἰὶ χιτῆρας ἀναχεῖρ.  
 ἀλλὰ μὴ ὄφρα κί τοι μεληϊδία οἶνον ἐνὶ κῶ,  
 ὥς σπίνης δ' ἡ παρὶ, καὶ ἄλλοις ἀθανάτοισι  
 πρῶτον. ἔπειτα δ' ἐκ' αὐτὸς ὀνύσειαι, αἴ κε πίνῃται.  
 ἂν δ' ὅς κε κριμῶν μέγας μέγα οἶνος αἴξει.  
 ὥς τὴν κέκμηκεν ἀμύνων θῶσιν ἔτῃσι.  
**Τ**ὸν δ' ἡμίβιτ' ἔπειτα μέγας κερυθαίολος ἔκτορ,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

μαρναμένορ σολύμοισι κατὰ κτανε κυδαλίμοισι.  
 τήν ὃ χλωσαμένη χυσύνι<sup>Θ</sup> ἄρτεμις ἔκτα.  
 ἰππόλοχος δ' ἐμ' ἔλκετε, καὶ ἐκ τῷ, φημί γένεσθαι.  
 πίμπει δ' ἐμ' ἐς φοῖβον· καί μοι μάλα πόλλ' ἐπέτιλλε  
 αἶον αἰεσδύν, καὶ ὑπείροχον ἔμμεναι ἄλλων,  
 μὴ ὃ γένος πατέρων ἀσχευέμεν, οἳ μέγ' αἰετοί  
 ἔντ' ἐφύρη· ἐχένοισ<sup>Β</sup>, καὶ ἐν λυκίῃ δούρειῃ.  
 ταύτης τοι γένεσσι τε, καὶ εὐχομαι αἵματος εἶν<sup>Α</sup>.

Ὡς φάτο· γέθησεν ὃ βοήν ἀγαθὸς Διομήδης.  
 ἔγχετο μὲν κατέπηξεν ἐπὶ χθονὶ παλαιοτέρῃ.  
 αὐτὰρ ὃ μελιχίοισι προσηύδα πομπήν<sup>Α</sup> λαῶν.  
 ἦ ἔα νύ μοι ξείνος πατρώϊός ἐστι παλαιός.  
 οἶνός γε γάρ ποτε δῖος ἀμύμονα βελλεροφόντην  
 ξείνισ' ἐνὶ μεγάροισιν, εἰνέσθην ἡματ' ἐρύξας  
 οἱ ὃ, καὶ ἀλλήλοισι πόρον ξυνήϊα καλά  
 οἶνός μιν ἴωσεν ἥρα δίδυ φοῖνικι φασγόν,  
 βελλεροφόντης ὃ χυύσσειν δέπας ἀμφικύπελλον.  
 καί μιν ἐγὼ κατέλιπον ἰδὼν ἐν δώμασ' ἑμοῖσι.  
 τυδεία δ' οὐ μέμνημαι, ἐπεὶ μὲν ἐν τυτθὸν ἰόντα  
 κάλλιψ', ὅτ' ἐν θόβῃσιν ἀπώλθο λαὸς ἀχαιῶν.  
 τοῦ νῦν σοὶ μὲν ἐγὼ ξείνος φίλος ἄρ' ἤϊ μέσση  
 εἰμὶ· σὺ δ' ἐν λυκίῃ, ὅτε κεν τῶν δῆμον ἴκωμαι,  
 ἔγχεα δ' ἀλλήλων ἀλεώμεθα, καὶ δὶ ὁμίλῃ.  
 πολλοὶ μὲν γάρ ἐμοὶ τῶν τε, κλειστόν<sup>Α</sup> ἐπὶ κτεροι  
 κτένουν, ὅρκε θεός γε πόρῃ, καὶ ποσὶ κιχέω.  
 πολλοὶ δ' αὖ σοὶ ἀχαιοὶ ἐναυρέμεν, ὅνκε δύνῃσαι.  
 τοῦ χι καὶ δ' ἀλλήλοισι ἐπαμειψόμεν, ὅφρα καὶ οἳ δὲ  
 γυνῶσιν ὅν ξῖνοι πατρώϊοι δούχομεν<sup>Α</sup> εἶν<sup>Α</sup>.

Ὡς ἄρα φανήσαντε, καθ' ἵππων αἵξαντε,  
 χιτῶνάς τ' ἀλλήλων λαβέττω, καὶ πισώσασθω

ἐν αὐτοῖς

ἐνὶ μαρξίνισσι καὶ ἐν νείᾳ βύσι τέρυσσεν·  
 ἀλλ' ὅτε δὴ δεικνύτη ἰφάνη ῥοδὸς δακτυλοῖσιν,  
 καὶ τότε μιν ἐρέει, καὶ ἦτε σῆμα ἰδ' ἰδαι·  
 ὅ, τί φράσῃ γαμβροῖο παρὰ προίτοιο φέροισι,  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ σῆμα πακὸν παρὲδ' ἔξαθ' γαμβρῷ,  
 πρῶτον μὲν ῥά χιμαῖραν ἀμουμακίτῳ ἐκίλυσεν,  
 πεφνέμεν· ἦ δ' ἄρ' ἔκω θιῖον γένος, οὐδ' ἀνθρώπων·  
 πηρόδε λίων, ὅπιθον δ' ἀράκων, μίση δ' ἐχίμαρα  
 δ' ἐπὶ δὲ ἀποπνέουσα πυρὸς μένος αἰθομένοιο.  
 καὶ τῇρ' μὲν κατέπεφνε, θιῶν τεράεσσι πιθόσκει·  
 δυνήτερον δ' αὖ, θλύμοισι μαχίσσατο κυδαλίμοισι·  
 καρτίσιω δ' ἠτύνει μάχῳ φάτο δυνάμει ἀνδρῶν.  
 εἰρήτην, αὖ, κατέπεφνον ἀμαζόνες ἀνδραῖρας·  
 ἴω δ' ἄρ' ἀνιρχόμενα, πυκινὸν δόλον ἄλλοις ὄφρα κ·  
 κρίνας ἐκ λυκίης δὴρῆης φῶτας ἀρίστες,  
 εἰς ἐλὸχον τοῖδ' οὐδ' ἀπὸ λιν οἴκων δ' ἐνέοντο.  
 πάντας γὰρ κατέπεφνον ἀμύμων βιλλεροφόντης,  
 ἀλλ' ὅτε δὴ γίνωσκε θεῶν γόνον ἦν ἐόντα,  
 αὐτῷ μιν κατέφυκε διδῶ δ' ὅγ' αὖ θυγατὶρα ἦν·  
 δῶκε δ' ἐπὶ οἱ ἡμῆς βασιλῆϊδος ἤμισυ πόλιν·  
 καὶ μὲν οἱ λυκιοὶ τέμνῳ τὰ μὲν ἔξοχον ἄλλων  
 καλόν, φυταλῆς, καὶ ἀρούρης, ὄφρα νέμοισι.  
 ἦ δ' ἔτι κ' εἰς τὴν τέκνα δαΐφρονι βιλλεροφόντῃ,  
 ἴσων δρόν τε, καὶ ἰππόλοχον, καὶ λαοδάμῳ·  
 λαοδάμῳ μὲν, παρὲδ' ἔξαθ' μητίετα θυῖς·  
 ἦ δ' ἔτι κ' ἀντίθεον σαρπηδόνα χαλκωκυρῶν·  
 ἀλλ' ὅτε δὴ κἄκεῖνος ἀπὸ χροῖο πᾶσι θεοῖσιν  
 ἦτοί ὁ, καπνέειον εἰς ἀλβίον οἷος ἀλᾶτο,  
 εἰς θυμὸν κατέδων, πᾶτον ἀνθρώπων ἀλκίονα·  
 ἴσων δρόν δ' ἐπὶ ἡδὲ ἄρης ἔκτιστο πόλεμοιο,

# ΙΛΙΑΔΟΣ.

Τὸν δ' αὖθ' ἱππολόχοιο προσέειπε φαίδιμος υἱὸς  
 τυλίδῃ μιγάθυμῃ, τὴν γενεὴν ἱφεινέας·  
 "οἵη περ φύλλων γενεή, τοίηδε καὶ ἀνδρῶν,  
 "φύλλα τὰ μὲν τ' ἀνεμῷ χαμάδις χέει, ἅλλα δ' ἐβ' ὕλη  
 "τηλεθώσσι φύσι. ἔκρος δ' ἐπιγίνεταί ὄρη,  
 "ὥς ἀνδρῶν γενεή, ὃ μὲν φύσι θ' ἀπολύθει.  
 αἶδ' ἰθέλεις καὶ ταῦτα δαΐμνμαι. ὅφρ' εὖ εἰδῇς  
 ἡμετέρῳ γενεῇ, πολλοὶ δ' ἐμὲν ἀνδρῶν ἴσασιν,

Εἰ πόλις ἐφύρη μυχῷ ἄργεῖ ἱπποδότοιο,  
 ἔνθα δ' ἐσίσυφος ἔσκειν, ὃ κέρδιος γένετ' ἀνδρῶν,  
 σίσυφος αἰολίδης ὅδ' ἄρα γλαυκὴν τέκεθ' ἑλόν.  
 αὐτὰρ γλαυκὸς ἔτικτεν ἀμύμονα βελλεροφόντῳ.  
 τοῦ δ' ἐθεοὶ κάλλος τε, καὶ ἥνορέῳ ἱρατανὴν  
 ὥπασσαν. ἀτὰρ οἱ προῖτος καὶ ἐμήσας θυμῷ,  
 ὅς ῥ' ἐκ δ' ἔμυ ἔλασσαν, ἐπὶ πολὺ φέρτερον ἔσεν  
 ἄργεῖον, [εὖς γάρ οἱ ὑπὸ σκῆπτρῳ ἰδ' αἰμασι.  
 τοῦ δ' ἐγὼν προῖτε ἐπιμύναθ' ἴ' ἄντα  
 κρυπταδὴν φιλότῃ μιγέμεναι, ἀλλὰ σὺ οὐκ  
 κτεῖθ' ἀγαθὰ φρονέοντα δαΐφρονα βελλεροφόντῳ  
 ὃ δ' ἐψύσασμένῃ προῖτον βασιλῆα προσήνδα,  
 τιθαίης ὥ προῖτ' ἢ κάκτανε βελλεροφόντῳ  
 ὅς μ' ἔθελον φιλότῃ μιγέμεναι οὐκ ἐθελεύσῃ.  
 Ως φάτο, τὸν δ' ἀνάκτα χόλος λάβων, οἷον ἄκυσιν  
 τεῖναι μὲν ῥ' αἰεσσιν, σιβάσασθαι γὰρ τό γε θυμῷ.  
 πίμπει δ' ἐμὲν λυκίῳ δ' ἐπόρουδ' ὅ γε σέματα λυγρὰ,  
 κροῖται ἐν πίνακι πηκτῷ θυμοφθόρα πολλὰ.  
 Διῆσα δ' ἠνώγει ὥ πονθερῶ, ὅφρ' ἀπότῃ.  
 αὐτὰρ ὃ, βῆ λυκίῳ δ' ἐθεῶν ὑπ' ἀμύμονι πομπῇ·  
 ἀλλ' ὅτι δ' ὅ λυκίῳ ἴξαν, ξάνθοον τε ῥέοντα,  
 προφρονέας μὲν τῶν ἀνέξ λυκίης δούρικ·

ἐνὶ μέσῃ

ἐπὶ βασιλευσῶσι, καὶ ἡμετέρῃς ἀλόχοισιν  
 δαίμοσιν ἀρήσασθαι, ὑποχέσθαι δ' ὑπετόμβαι.  
 ὧς ἄρα φωνήσας, ἀπέβη κερυθαίολας ἔκτωρ  
 ἄμφι δ' ἐμὴν σφοδρὰ τύπῃ, καὶ αὖ χίνα δέσμα κίλυνον  
 ἀντυξίῃ πυμάτη θίου ἀσπίδος ὀμφαλόεσσης.  
 + ἑλαυνὼς δ' ἰππολόχοιο πάϊς, καὶ τυδείος ἱὸς  
 ἱς μέσσον ἀμφοτέρων σσηνίτω μιμαῶτε μάχεσθαι.  
 οἶδ' ὅτε δ' ἡ χιρὸν ἔσσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντο,  
 τὸν πρότερον προσέειπε βοὴν ἄγαθὸς Διομήδης.  
 τίς δέ σὺ ἐσσι φέεισε καταβητῶν ἀνδρῶπων;  
 οὐ μὲν γάρ ποτ' ὕπωπα μάχῃ ἐνὶ κυδιανείρῃ  
 ἔπριν· ἀτὰρ μὲν νῦν γε πολὺν προέβηκας ἀπάντων  
 σὺ δ' ἄρσας· ὅτ' ἐμὸν δολιχόσκιον ἔγχε· ἐμὲν δ' αὖ  
 θυεῖν δ' ἐτι παῖδες ἐμῶ μένεσ ἀνδρόωνιν  
 ἐ δ' ἐς ἀθανάτων γε κατ' οὐρανὸν ἐλήλυθας  
 οὐκ ἄρ' ἐγὼ γε θεοῖσιν ἐπυρραγίοισι μαχόμεν  
 οὐ δέ γάρ οὐ δ' ἐβρύοντο ἱὸς κρατερὸς λυκούργου  
 δ' ἦν ἦν· ὅς ῥ' ἀθεοῖσιν ἐπυρραγίοισιν ἔειπεν·  
 ὅς ποτε μαινομένοιο Διωνύσιω ἔθηνες  
 σβύε κατ' ἠγάθεον νυσσηῖον· αἶδ' ἄμα παῖσ' αἶ  
 θυόδλα χαμαὶ κατέχδυσαν ὑπ' ἀνδροφόνωιο λυκούργου,  
 θενόμωμαι βυπλήγι· Διωνυσσοῦν φρονηθεῖς,  
 δύνσεις ἀλὸς κατὰ κύμα· θέλεις δ' ὑπεδέξασθαι κόλπον  
 Διαιδία· κρατερὸς γὰρ ἔχει πρόμος ἀνδρὸς ὀμοκλή.  
 ἔσθ' μὲν ἔπειτ' ὀδύσωντο θεοὶ ῥέϊα ζῶντο,  
 καί μιν τυφλὸν ἔθηκε χρόνυ παῖς· οὐ δ' ἄρ' ἐν δ' ἦν  
 ἦν, ἐπεὶ ἀθανάτοισιν ἀπήχθετο πᾶσι θεοῖσιν.  
 οὐδ' ἄρ' ἐγὼ μακάρεσσι θεοῖς ἐθέλωμι μάχεσθαι.  
 ἐ δ' ἐς ἐσθ' ἐβροτῶν, οἱ ἀρούρης καρπὸν ἔδυσιν,  
 ἔσθ' ἰθὺς καὶ θᾶσσον ὀλίγον πείραθ' ἴκηται.



# ΙΛΙΑΔΟΣ.

ἢ μίτ' ἔτι δ' ἀναοῖσι μαχισμένοι αὖθι μένοντες,  
 καὶ μάλα θερόμενοι περ ἀνακταῖν γὰρ ἱπείγῃ.  
 ἔκτορ ἄτάρ σὺ πόλιν ᾗ μετέρχαιο ἐπὶ δ' ἔπατα  
 μῆτιρ εἰ σὴ καὶ ἱμῆ, ἢ ᾗ ξυάγῃσσι γεραιάς,  
 νηὶρ ἀθλααῖνς γλαυκῶπιδος ἐν πόλιν ἄκρη  
 εἴξασα κληῖδι θύρας ἱεροῖο δόμοιο,  
 πύλῳρ ὅς οἱ δοκίει χαιεῖστος ἦδ' ἑ μίγιστος  
 εἶν' ἐνὶ μεγάρω καὶ οἱ πολὺν φίλτατος αἰτῇ.  
 θείναι ἀθλααῖνς ἐπὶ γούνασι, ἦ ὑκόμοιοι,  
 καὶ οἱ ὑποχέσθαι δυοκαίδεκα βῆς ἐνὶ νηῖ  
 ἦνις ἠκίστας ἱερὸν σῖμα καὶ ἑλθέσθαι  
 αἶσιν τι καὶ βῶν ἀλόχους, καὶ νήπια τέκνα,  
 αἴκου τυδείος ἕδρ' ἀπόχῃ ἰλίῃ ἱρῆς,  
 ἄγχι ὅν αἰχμητὴν κρατερὸν μήσωρα φόβοιο,  
 ὃν δ' ἡ ἐγὼ κάρυστον ὀχυρὸν φημὶ γυνίδα.  
 οὐδ' ἀχιλλῆα πρὸς ὧδε γ' ἰδέειμι μὲν ὄρχαμον ἀνδρῶν,  
 ὃν πέρ φασι θεῶς ἐξ ἔμμεναι, ἀλλ' ὧδε λίλῳ  
 χαίνεται οὐδ' εἰ τις οἱ δύναται μιν ἴσοφάριζαι.  
 ὧς ἔφαθ' ἔκτορ δ' οὐκ ἐκσιγνήτῳ ἀπὸ θῆσιν.  
 αὐτίκα δ' ἐξ ὀχίων σὺν τεύχεσιν ἔλθ' χαμᾶϊ.  
 πάλῳρ δ' ὄξια δ' ἔρα, κατὰ στρατὸν ὧχθε πάντες,  
 ὁρύνων μαχίσσασθαι. ἔγχετ' ᾗ φύλῳ πιν ἀνῆι.  
 οἳ δ' ἱλιλίχθησαν, καὶ ἰνῶν τίοι ἔσαν ἀχαιῶν.  
 ἀργεῖοι δ' ὑπεχώρησαν, λῆξαν ᾗ φόνοιο.  
 φάρ δ' ἐνὶ ἀθῶν ἄτων ἐξ οὐρανῶ ἀπερόντ'  
 πρὸς ἴν' ἀλεξήσοντα κατελθόντων, ὧς ἱλιλίχθον.  
 ἔκτορ δ' ἐβόων ἱκίε κλέος μακρὸν αὐτοῖς.  
 Τρῶες ὑπέρθυμοι, τηλεκλήϊτ' ἱπῖκτροι,  
 αἰεὶς ἐνὶ φίλοι μνήσασθαι ᾗ θεοῦ εἶδος ἀλκῆς,  
 ὅφρ' ἔνι ἐγὼ βέβω πρὸ ἱλίου, καὶ γέρεσιν

οὐτός ἦλθε θέων, καὶ ὁμιλοῦσας, ἔπος οὖν οὔτι.

Ω πέπον, ὦ μὴν ἱλαστήη δέ σὺ κύδιμα οὐτοσ  
 ὠδῶν; ἢ οἱ ἄριστοι πιποίνται κατὰ οἴκον  
 ἠρὸς βῶων, τῶν, μύτις ὑπεκφύγοι ἄπὸν ὀλεσθῆναι,  
 χεῖρας θ' ἡμιτέρας, μὴδ' ὄνυχα γαστέρι μύτην  
 κῆρρον ἰόντα φέροι, μὴδ' ὅς φύγοι, ἀλλ' ἅμα πάντες  
 ἰλίχ' ἔξαπολίσσῃ ἀκρόδιστοι, καὶ ἀφαστοι.

Ως ἐπὶ δὲ, ἔρεψαν ἀδελφεὺς φρένας ἦρωες,  
 αἵσιμα παρὰ πῶνός δ' ἀπὸ ἔθου ὥσπερ χερσὶ  
 ἦρδ' ἀδρησεν, τὸν δ' κρείων ἀγαμέμνων  
 οὕτως κατὰ λαπέρῳ, ὅδ' ἀνέφωπετ' ἀφείδης δὲ  
 λάξ ἐν εὐθείῃσι βῆς, ἐξέσπασε μέλινοισιν ἔγχρσι.  
 ἦτορ δ' ἀργείοισιν ἐκέκλθε μακρόν ἄνυσαι,  
 ὄφρ' ἴσῃ ἦρωες δαίκαοι θεράποντος ἄρηθ',  
 μύτις νῦν ἐν ἄρῳ ἐπιβλαλόμην, μετόπισθεν  
 μιμέντω, δεῖκον πλεῖστα φέρον ἐπὶ νῆας ἵκνται.  
 ἀλλ' ἀνδρῶς κτείνω μιν, ἔπειτα δ' καὶ τὰ ἱκίλοισι,  
 νικητὸς ἀμπεδίον συλῆσετε τιθινῶτα.

Ως ἐπὶ δὲ, ὥρῳα μείνθ', καὶ θυμὸν ἐκάσεν,  
 ἔνθα κεν αὐτὲ πρῶτος ἀρηϊφίλοισιν ἐπὶ ἀχαιῶν  
 ἴλιον εἰστανέβησαν ἀναλκείῃσι δαμέντοσ,  
 εἰ μὴ ἄρ' ἀνείη τε, καὶ ἐκβεί εἴπει παρασκή  
 προῖα μίδης ἔλυνθ', οἶονοπόλοισιν ὄχ' ἄριστοι,  
 οὐνίκα τε, καὶ ἔκρη, ἐπὶ πόνος ὕμῳ μάλιστα  
 βῶων, καὶ λυκίων ἐγκέκλιται, οὐνεκ' ἄριστοι  
 πᾶσάν ἐπ' ἰθὺν ἐσεμμάχεσθαι τι φρονέοντο,  
 εἴη τ' αὐτῶ, καὶ λαὸν ἱρυκάκετε πρὸ πυλάων,  
 πᾶντ' ἐποιχόμενοι πρὶν αὐτ' ἐν χερσὶ γυναικῶν  
 φόβονοντας πείσῃν, δηίοισι δ' ἄρμα γένεσθαι,  
 οὐτάρ ἐπὶ κείνῃ φάλαγγος ἐπορύνῃσιν ἀπάσῃσι.

πρὶς δὲ τὰς γυνεῖς, σκοτίον δ' ἐκρίνατο μήτηρ.  
 ποιεαίνων δ' ἐπ' ὅταν μίγῃ φιλότῃ καὶ εὐνῇ.  
 ἥ δ' ὑποκυαμένη, διδυμῶνε γίνατο παῖδε.  
 καὶ μὲν τῶν ὑπέλυσε μὲν ὅτε καὶ φαίδιμα γυῖα,  
 μηκισιάδης κ' ἀπ' ὧμων τεύχε' ἰσύλαε,  
 αἰνύλον δ' ἄρ' ἔπεφνε μενεπτόλεμος πολιποίτης.  
 πιδύτῳ δ' ὀδυαίνε περκώσιον ἱξινάειον,  
 ἔρχετο χαλκίῳ, τεύχεος δ' ἀριτάτονα δῖον,  
 ῥυτίλοχος δ' ἀβληρον ἰνῆρατο δ' ἄρ' ἰφαιῶ  
 νεορίδης. ἔλαυν' ὃ ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ναῖε δ' ὃ σαρπηδόωρ σ' ἐὺρρήϊταο παρ' ἔχθας  
 πῆδαθ' αἰπηνῆρ. φύλακον δ' ἔλε λήϊτος ἕρως  
 φύνοντ' εὐρύπυλος δ' μελαινθίων ἱξινάειον.  
 ἀδρηστον δ' ἄρ' ἔπειτα βοὴν ἀγαθὸς μενέλαος  
 ἦν ὅν' ἐλ', ἴππῳ γὰρ οἱ αὐτοζόμενον πεδίῳ  
 ὄζω ἐνὶ βλαφθέντε μυεικίῳ, ἀγκύλον ἄρμα  
 ἄξαντ' ἐν πρώτῳ ῥυμῶ, αὐτῷ μὲν ἐδῆτ' ὅτε  
 πρὸς πόλιν, ἥ περ οἱ ἄλλοι αὐτοζόμενοι φοβέοντο.  
 αὐτὸς δ' ἐκ δῖο φροῖο παρὰ ῥοχὸν ἱξικυλίῳ  
 πρηνὲς ἐν κενήσιν ἐπὶ σόμῃ, παρ' ὃ δ' ἔση  
 ἀρεΐδης μενέλαος, ἔχων δολιχόσκιον ἔγχος,  
 ἀδρηστον δ' ἄρ' ἔπειτα λαβὼν ἑλίαςτο ρυῖων.  
 ἦν γὰρ ἀρεὸς ἡ ἐσὺ δ' ἄξια δέξαι ἄσπινα.  
 πολλὰ δ' ἐν ἀφνειῷ παρὸς κρήνια κεῖται,  
 χαλκός τε, χρυσός τε, πολέμῳ τε σίδηρ' ὅτε.  
 τῶν κένε χαρίσαιο πατὴρ ἀπειρίσι ἄσπινα,  
 εἴκεν ἐμὲ ἦν πεπύθοιτ' ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.  
 ὣς φωνεῖ. τοῦ δ' ἄρα θυμὸν ἐνὶ στήθεσιν ἔπειθε,  
 καὶ δ' ἡμῖν τὰ χ' ἐμελλε θοὰς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν  
 δῶσθ' ὡς θεράποντι καταξέμεν, ἀλλ' ἀγαμέμνων  
 ἀντί

ΙΛΙΑΔΟΣ. Ζ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ζῆτα δ' ἂν ἀφομάχῃς καὶ ἔκρηθ' ἐς ἄβυσσον.

Ρῶνον δ' οἰώθη καὶ ἀρχαῖν φύλα,  
πῆς αὖν ἡ.

πολλά δ' ἄρ' ἔνθα καὶ ἔφ' ἴθυσ  
μάχη πειρίοιο,  
ἀλλ' ἑλὼν ἰθυομένην χελκὺν  
ῥιὰ σδύρα.

μιανηγὺς σημόωντες ἰδίᾳ ξυνομοιοῦσιν αὐτῶν.  
 αἷας δὲ πρῶτος τελαμώνιος ἔρηκεν ἄχαυον,  
 πρῶτον ῥῆξε φάλαγγα. φόνος δὲ ἑταίροισιν ἐθηκεν  
 ἀνδρᾶ βαλὼν, ὅς ἄειπτος ἐνὶ βροχίῃσι τέτυκτο  
 ἢ δὲν ἐπὶ σῶμα ἀκάμωτον ἦν ἔντι μέγα ντι.  
 τόν ῥ' ἔβαλε πρῶτος κόρυθος φάλαγγος ἰπποδιδασκίης.  
 ἐν δὲ μετώπῳ πῆξε, πέρησε δὲ ἄρ' ὁ δέον εἶσθε  
 ὠχμητὴ χαλκείη. τὸν δὲ σκόρος ὅαν ἐκάλυψεν.  
 ἄξιον δὲ ἄρ' ἐπεφνε βοὴν ἀγαθὸς διομήδης  
 τρυβρανίδω, ὅς ἐναυὸν ἐπὶ κλισίῃ ἐν ἀρίσῃ  
 ἀφνεὸς βιόσσιο φίλως δὲ ἦν ἀμείβεσθαι σῆμα,  
 πάλυντας γὰρ φιλέεσκεν ὁ δὲ πρὶ οἰκίᾳ ναίων,  
 ἀλλὰ οἱ οὐ πῶς τῶν γε τοῦτ' ἔρκεσε λοχρὸν ὄλεθρον,  
 παρόντων ὑπαίτων σῆμα, ἀλλ' ἄμφοθ' ἐμὸν ἀπὸ νύκτα,  
 αὐτὸν καὶ θειράωντα χαλῆσιον, ὅς ῥα τύθ' ἰππῶν  
 ἔσκεν ὑφ' ἡνίοχον. τῷ δὲ ἄμφοθ' ἔδωκεν ἰδὺ τέκνον.  
 φησὶ δὲ δῖος ἑρμῆς ἄλλος καὶ ὀφειλὴν ἔρευνε βίαν.  
 ἢ δὲ μετ' αὐτῶν καὶ πύθιασιν, οὗς παρὰ νύκτα  
 νηὶς ἀβάρβαρον τέκ' ἀμύμονι βυχθλίδοντι,  
 βυχθλίδον δὲ ἦν ἢ δὲ ἀγαυὸν λαομέδοντα.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ. Ζ. ΟΜΗ,  
ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ὡν θεῶν ἀποσάντων τῆς μάχης, οἱ ἄλλοι  
 τ πολλοὶ ἀναιρήσι τῶν ῥώων. ἔλινε δ' ἔσσυμε  
 βυλόμενος, ἔκτωρ εἰς τὴν πόλιν ἀνέσι,  
 καὶ τῇ μηρὶ κελύει ἐκώβη ἔνθα δαίτη τῇ ἀθλῶν, καὶ ὅ  
 ποχέει αὐτῇ δῶδε βαβῶν θυσίῳ, ὅπως τὸν διομή  
 δῳ ἀποσῆσθε τῇ μάχης. τίς δ' ἔντων αὐτῶν ἐν τῷ  
 πεδίῳ, γλαυκὸς καὶ διομήδης ἀναγινώσκοντες πα  
 ῥῶον φίλιν, διαμύσσει τὰ ὅπλα ἀλλήλοισ. ἔκτωρ  
 δ' ἐδιδραχθεὶς τῇ μηρὶ ἐκάβη, καὶ τῇ γυναικὶ ἀνδρῶ  
 μάχη, σὺν τῷ ἀδελφῷ ἀλεξάνδρῳ εἰς τὸν πόλεμον  
 ἔεισι.



ἴδ' σ' οἶδ' κείνης· τάλδε πάχ' ἐν νηυσὶ ἦσιν.  
 ὦλ' ἔμωλν σ' ἔτι δ' ἡρὸν· ἀνέξομαι ἄλγ' ἔχοντα.  
 οἷο γὰρ ἔμεν γέν' ὅτ' ἐσσί· ἐμοὶ δ' ἐσσι γένεσσ' μήτηρ.  
 εἴ δ' ἐτὶ τοῦ ἐξ ἄλλου γε θεῶν γένεσσ' ὦλ' αἰδ' ἡλως.  
 καί κεν δ' ἡ πάλας ἦεν ἐνέρι τερπ' ἕραινιῶνδρ.  
 ὦλ' φάτο, καὶ παύων ὀδ' ὠνύφατα φάρμακα πάσσων,  
 ἠκίστατ' ἔμωλν γὰρ τι καταθνήσκ' ἔτι τυκτο.  
 ὥς δ' ὅτ' ὅπως γαλαλδύκον ἐπαγόμενος συνέπηξεν  
 ὑγρὸν ἰὸν, μάλ' αὖ δ' ὦκα πεισρὶ φέται κυκώοντι,  
 ὥς ἄρα καρπαλίμως ἰήσας θ' ἕρον ἄρῃα.  
 τόνδ' ἔβη λυῖσθαι χαρίντα δ' ἐν ἵματι ἔειπε.  
 πὰρ, ὃ δ' ἡ κρονίῳ καθίξω κύδ' ἔχαιων  
 αἰδ' ἄνθις πρὸς δ' ὦμα δ' ἰὸς μέγαλοιο νείοντ',  
 ἦρ' ἔ' ἀργεῖν, καὶ ἀλαλχομένης ἀθήνη  
 πνύσασθαι βροτολαγὸν ἄρ' ἔω ἀνδρὸς κασιγάνῃ.

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

οἷη δ' ἐκ νεφύων ἱρεβεννὴ φαίνεται ἄηρ  
 καὶ μαρς ἐξ ἀνέμοιο δυνάεος ὀρνυμένοιο  
 τοῖος τυδείδῃ διομήδεϊ χαλκίος ἄρης  
 φαίνεται ὁ μὲν νεφέων ἰδὼν, εἰς ἕραν δὲ δούρην.  
 κερπαλίμως δ' ἵκανε θιῶν ἐδ' αὖ πῦν Ὀλυμπον  
 παρ δ' ἐδ' ἰὶ κρονίωνι καθέζετο θυμὸν ἄχδυν.  
 Διῖξαι δ' ἄμβροτον αἶμα καταρρίον ἐξ ὤτελλης.  
 καὶ ῥ' ὀλοφυρόμεν, ἔπειτ' ἤβροντα προσήυδα.  
 Ζεῦ πάτερ, ἐνιμισίῃ ὄρων τάδε καρτὰ ἔργα;  
 αἰνέτο ῥίγισα θεοὶ τετληότος ἐμὴν  
 ἀλλήλων ἰότητι χολεῖν δ' ἀνδρασι φέροντός.  
 ὅτι πάντες μαχόμεδα σὺ γὰρ τέκεις ἄφρονα κούρην  
 οὐλομένην. ἥ τ' αἶν' αἴσουλα ἔργα μέμνηται.  
 ἄλλοι μὲν γὰρ πάντες ὅτι θεοὶ εἰσὶν Ὀλύμπῳ  
 ὅτι ἐπιπείθονται, καὶ διδόμεδα ἔκαστος.  
 ταύτῃ δ' οὐτ' ἐπεὶ προτιβόλλεαι, οὐτέ τι ἔργῳ,  
 ἀλλ' ἀνίεις, ἐπεὶ αὖτις ἐγλῖναο παῖδ' αἰδμήλην,  
 ἣ νῦν τυδείος ἱδὼν ὑπέρθυμον διομήδεα  
 μαρχαίνην ἀνέηκεν ἐπ' ἀθανάτοισι θεοῖσι.  
 κύπριδά μιν πρῶτον χερδὸν οὐτάσε χεῖρ' ἐπὶ καρπῷ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ αὐτῷ μοι ἐπίστυν δαίμονι ἴθις.  
 ἀλλὰ μ' ὑπὲρ ἤσαν ταχίεις πόδες. ἥ τέκε δ' ἡρόν  
 αὐτ' ἠέματ' ἐπαχρον ἰν' ἀνῆσιν ἐκκάδατον,  
 ἥκεν ὥς ἀμνηνὸς ἐκ χαλκοῖο τυπῆσι.  
 Τόν δ' ἄρ' ὑπόφρα ἰδὼν προσέφη νηφεληγρέτα Ζεύς.  
 μή τί μοι ἄλλο προσέειπε παρεξόμενός μιν εἰς.  
 ἔχθιστος ὃ μοι ἐσὶ θιῶν, οἳ Ὀλυμπον ἔχουσιν.  
 αἶν' γὰρ ρίεῖς τε φίλη, πόλε μοί τε, μάχεσθαι  
 μὴ ροσὶ μένος ἐσὶν ἀοχέτον, ἣν ἐπιεκτήον  
 ἕρης, τῶν μ' ἐγὼ παρδ' ἡ δ' ἀμνημ' ἐπίστυν.

νῦν δ' ἔμετ' ἀπώεσθαι δ' ἔμειλε τῶν δ' ἐλίσσασθαι.  
 Ως φασμένη, δίνετον μ' ἄρ' ἵππων ὥς τε χαμάζε  
 χειρὶ πάλιν ἐρύσας. ὅδ' ἄρ' ἐμπαπίως ἀπόρυσσε  
 ὅδ' ἐς δίφρον ἐβαινε παρὰ δ' ἰομήδεια δῖον  
 ἐμμιμαυῖα θεὰ, μέγα δ' ἐβραχε φήγινος ἄξον  
 βεῖθοσύνῃ. δεινὴν γάρ ἄγεσθαι ἄνδρα τ' ἄεισον.  
 λάβρο δ' ἐμάσιζα καὶ ἡνία παλλὰς ἀθήνη.  
 αὐτίκ' ἐπ' ἀρήϊ πρῶτῳ ἔχε μώνυχας ἵππους  
 ἦρι δ' μὲν πρίφαντα πηλώειον ἐξινάειον.  
 αὐτοῶν δ' ἄρ' ἄεισον ὀχισίῳ ἀγλαὸν ἦον.  
 Σὺ μὲν ἄρης ἐνάειζε μισαιφόνος. αὐτὰρ ἀθήνη  
 δ' ὦν ἄϊσος κυνέω, μῆνιν ἰδοι ὄβριμον ἄρης,  
 ὥς δ' ἴδε βροτολαίῃος ἄρης δ' ἰομήδεια δῖον  
 ἦρι δ' μὲν περίφαντα πηλώειον αὐτόθ' ἔασιν  
 κτεῖναι. ὅθι πρῶτον κτείνων ἐξαίνυν θυμόν.  
 αὐτὰρ δ' ἔπειτα δ' ἴδ' ἰδὺς δ' ἰομήδεια δ' ἵπποδάμοιο.  
 οἳ δ' ὅτε δ' ἡγεῖσθ' ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,  
 πρῶτον ἄρης ὠρέξαθ' ὑπὲρ βυγὸν ἡνίαθ' ἵππων  
 ἐγχεῖ χαλκείῳ, μεμαῶς ἀπὸ θυμὸν ὀλέσαι  
 καὶ τό γε χειρὶ λαβῶσαι θεὰ γλαυκῶπις ἀθήνη  
 ὥσων ὑπ' ἐκ δίφροιο ἐτώσιον αἰχθῆναι.  
 Διύτερ' αὖθ' ὤρματο βῶν ἀγαθὸς ἰομήδης  
 ἐγχεῖ χαλκείῳ, ἐπίρσει δ' παλλὰς ἀθήνη  
 βεῖατον ἐς κινῶνα, ὅθι βωνύσκετο μίβλω.  
 τῇ δ' ἄμιν ἔτα τυχῶν, σέχ' ὃ χροῶ καλὸν ἔδειξον.  
 ἐκ δ' ὁδὸν ἀπάσσω αὐτίς. ὅδ' ἐβραχε χάλκει' ἄρης,  
 ὅσων τ' ἐνιέχιλοι ἐπίσχεον, ἢ δικάχιλοι  
 εὐνέου ἐν πελῆμῳ, ἐξείδε σπώγοντις ἄρη.  
 βύς δ' ἄρ' ὑπορόμος εἶλον ἀχαιούς τε τρώας τε  
 δίδωντας, τῶν ἐβραχ' ἄρης ἔπειτα πολέμοιο.

Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ἄνθρωπος ἐς θύβας πολίτας μετὰ καδμήωνας,  
 παῖνυδιαί μιν ἄνδρῶν ἐνὶ μεγάροισιν ἔκλειον  
 αὐτὰρ δ' οὐ μὲν ἔχον ὅν κερτρὸν ὥς τὸ πάρος περ  
 κούρης καδμήων προκαλίσσο· πλυντα δ' ἐνὶ κτ  
 φηιδίως· οἷόν τοι ἐγὼ ἐπιτάρροθός εἰα.  
 οἷ δ' οὐ τοι μ' ἐγὼ παρὰ τὴν ἵσταμαι· ὅς γ' ἐφυλασσά  
 καί σε προφρονέως κίεμαι τρώεσσι μάχεσθαι,  
 ἀλλὰ σὺν ἡ κάματος πολυαῖξ γῆρα δίδουκον  
 οὐδ' οὐδ' ἐν δέος ἴαχ' ἀκῆειον, ὅς σὺ γ' ἐπείτα  
 τυδείας ἐκγονός ἐσσι δαΐφρονος οἰνείδαο.

Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κρατερὸς Διομήδης·  
 γινώσκω σε θεὰ θυγάτηρ Διὸς αἰγιόχοιο·  
 ἔσθ' ἔτι προφρονέως ἐρέω ἔπος, ὅς δ' ἐπικεύσῃ,  
 οὕτε τί με δέος ἴαχ' ἀκῆειον, ὅτι πῖς ὅκνη  
 ἀλλ' ἐπ' σὺν μέμνημαι ἐφιδμέων, ἅς ἐπ' ἐταλας·  
 οὐ μ' εἴς με μακωρεσσι θεοῖς ἀντιχρὺ μάχεσθαι  
 οἷς ἄλλοις· ἀτὰρ ἔγωγε Διὸς θυγάτηρ ἀφροδίτη  
 ἔλθῃς ἐς πόλεμον, τὴν γ' οὐτά μιν δέξεται χαλκῷ·  
 ἔσθ' ἔτι νῦν αὐτὸς ἀναχάσομαι, ἡ δ' ἐκὼν ἄλλῃ·  
 ἀργεῖος ἐκίλοντα ἀλήμηναι ἐνθάδ' ἐπλυντας  
 γινώσκω γὰρ ἄρ' ἔμελλεν ἀνακαίοντα.

Τὸν δ' ἡμεῖβ' ἐπείτα θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη  
 τυδείδῃ Διομήδῃ ἐμῷ κεχαισμένῃ θυμῷ·  
 μήτε σὺ γ' ἄρ' ἔμελλες τὸν Διδείδιον, μήτε πῖν ἄλλῃ  
 ἀθαιώτων· οἷόν τοι ἐγὼ ἐπιτάρροθός εἰμι.  
 ἀλλ' ἄγε ἐπ' ἄρ' ἔμελλες πρῶτον ἔχει μώνυχας ἵππους·  
 τῦφον γ' ὄχλῳ, μή δ' ἄλ' οὐ θύρον ἄρ' ἔμελλες  
 ἔσθ' ἔτι νῦν αὐτὸς ἀνακαίοντα ἄλλοι προσαλλοῖς·  
 οἷς πρῶτον μὲν ἐμοί τε καὶ ἡρῇ, σὺ γ' ἀγορεύων  
 τῶσδ' ἐμάχεσθαι, ἀτὰρ ἀργαίοισιν ἀρῆξην.

ἤχι ῥοὰς σιμόεις συμβόλλετορ ἠδ' ἐσκάμασθ' ἔφθ',  
 ἐνθ' ἵππυς ἔστησε θιά λδουκώλενος ἥρη  
 λήσας ἐξ ὀχέων· περὶ δ' ἠέρα πυλὺν ἔχων·  
 τοῖσι δ' ἀμβροσίῳ σιμόεις ἀνέτλε νέμεσθαι·  
 αἱ δ' ὠτῶν τῶν ῥῆρωσι πεληώσιν ἴθμαθ' ὁμοῖται,  
 ὧν ἔφασιν ἀργείοισιν ἀλεξιμῆσαι μιμαῖναι·  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἦρ' ἵκανον ὄθι πλεῖστοι καὶ ἄριστοι  
 ἔστασαν, ἀμφὶ βίῳ διομήδεϊ ἵπποδωμαιο  
 εἰλομῆμοι, λείυσιν ἰοικότοσ' ὠμοφάγοισιν,  
 ἢ συσὶ κωπροισιν, τῶν τε δένει καὶ ἀλαπαδῶν,  
 ἐνθα σᾶσ' ἤϋσε θιά λδουκώλενο ἥρη,  
 Σένρει ἐσαμένη μεγαλήτει χαλκιοφώνῳ,  
 ὃς τὸν αὐδ' ἤσας χ', ὅθ' ἄλλοι ποντήκωντα,  
 αὐδ' ὡς ἀργεῖοι, κακ' ἐλέχεια, εἶδος ἀγρητοί,  
 ὄφρα μὴ ἐς πολέμον πωλίσκητο δῖος Ἀχιλλεύς,  
 ἢ δ' ἐπὶ ποτε ῥῶδ' πρὸ πυλῶν διαρδανιδῶν  
 ὄλχισκον· κένε γὰρ ἐδέδισαν ὄβριμον ἔγχ'·  
 νῦν δ' ἔκασθον πόλιος καίλης ἐπὶ νηυσὶ μάχονται·  
 ὧς ἐπ' αὖτ' ὥρῳ μιν καὶ θυμὸν ἱκόνει  
 τυδείδῃ δ' ἐπὶ ῥυσσε θιά γλαυκῶπις Ἀθήνη·  
 εὖρε δ' ὅτ' ἄνακτα παρ' ἵπποισι καὶ ὄχισφι  
 ἔλκετο ἀναψύχοντα, τὸ μιν βάλε πάλιν ἄρ' ἰδὲ·  
 ἰδρὼς γάρ μιν ἔπεσον ὑπὸ πλατίος τιλαμῶνος  
 ἀσπίδος οὐκύνκλῃ ἰσθ' ἰείρω κομμενὲ καὶ χεῖρα,  
 ἀνδ' ἰσχῶν τιλαμῶνα, κελαινίφει αἰμ' ἀπιμόργην·  
 ἰππεῖς δ' ἐπὶ θιά (υγ' ἦ ἦ) φῶνσέν τε·  
 ἦ· ὀλίγον οἱ παῖδά ἰοικότα γέιναν τυδείης·  
 τυδείης περὶ μιν δὲ μὴ ἐν δέμας, ἀλλὰ μαχητής·  
 καί ῥ' ὅτε πέρ μιν ἐγὼ πτελέμιζον ἐκ ἰπποκῆρος  
 ἢ δ' ἐκ παφλασθῆν, ὅτι τ' ἔλυσθε νόσφιν ἀχαιῶν



Ο Μ Η Ρ Ο Υ

χρυσείῳ, ἑκάπην πόλειωρ πρυλείατ' ἀραρυῖαν.  
 ἔς δ' ὄχα φλόγα πασὶ θέσασα. λάβρο δ' ἔρχομαι,  
 βειθὺν, μέγα, σθεσρὸν, τοῦ δολμνησι δίχας ἀνδρῶν  
 ἡρώων, πῖσιν τε κατέχευται δόρυ μοπαῖν.  
 ἦρ' ἢ μάστιγι θεῶς ἱπμαίειτ' ἄρ' ἵππυς.  
 αὐτόμαται δ' πύλαι μύκρον ἔσαν, ὥς ἔχον ὥραι,  
 τῆς ἐπιτέβαπται μέγας ἔρανός οὐλυμπός τε,  
 ἢ μὲν ἀνακλίνου πυκινὸν νέφος, ἢ δ' ἐπιβύβου.  
 τῇ δ' αὖ δὴ αὐτάων κενυθηνέας ἔχον ἵππυς.  
 εὖρον δ' χρονίονα θινὴν ἄτ' ἡμῶν ἄλλων,  
 ἀφροατὴ κερυφῇ πολυδιδράδ' ἔλυσσεν.  
 ἐν δ' ἵππυς θέσασα θεὰ λουκώλεον ἦρ',  
 (ἦν ὕπαρην χρονίδω ἐξέρχου, καὶ προσέειπε·  
 Ζεῦ πάτερ, ἐνιμυσίῃ ἄρ' ἐτάδε καρτερὰ ἔργα;  
 ὅσων πόντος καὶ οἶον ἀπώλιν λαὸν ἀχαιῶν  
 μάτ'· ἀτὰρ ἔκαστ' ἀκόσμορ· ἐμοὶ δ' ἄχος· οἱ δ' ἐκκλῶσι  
 τέρπονται κύπρις τε, καὶ ἀργυρότοξος ἀπ' ἑλάνης,  
 ἀφρονα τῆτον ἀνέντολός, ὅς οὐτίνα οἶδε θέμις.  
 εἴ ποτε ἢ δ' αὖ τί μοι κηχλώσεια, αἴ κε ἀρῆα  
 λυγρῶς πεπληγυῖα μάχης ἔξαποδίσσωμαι;  
 Τὴν δ' ἀπαμειβόμενον προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς,  
 ἄρ' ἐμὴν οἱ ἔσποθ' ἀθηναίῳ ἀγλαίῃν,  
 ἢ ἑ μάλιστ' ἰώθι κακῆς δ' οὐνῆσι πελοπύρην.  
 ὣς ἔφατ', ἐν δ' ἀπίθου θεὰ λουκώλεον ἦρ',  
 μάστιγ' ἐν δ' ἵππυς, τοῦ δ' ἔκ' ἀκοντε πέτεώλω  
 μισσηγὺς γαίης τε καὶ ἔραν' ἀπερδένου,  
 ὅσων δ' ἡρώων ἀνὴρ ἴδεν ὀφθαλμοῖσιν  
 ἥμῃ δ' ἐν σκοπιῇ, λούσων ἐπὶ οἴνοπα πόντον,  
 τῶσων ἐπιθρῶσθευσι θινὴν ὑψυχέος ἵπποι.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἡ τοίῳ ἔξορ' ὠπταμῶν ῥέοντι,

ποταπὸν αἰγιόχοιο Διὸς τέκος ἀρυτάνη·  
 ἔρ' ἄλιον ἦν μῦθον ὑπέστη μιν μενιάω  
 ἴλιοντ' ἐκπέρσαντ' οὐτείχιον ἀπονείδαι,  
 εἰ οὐτ' αὖ μαινέωται ἰάθ' μιν ἔλθ' ἀφ' ἑκα·  
 ἀλλ' ἄγε δὴ καὶ νῶϊ μεδ' ὤμιθα θούριδος ἀλκῆς·  
 ὦς ἴφατ', εἴδ' ἀπίθῃσι θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη·  
 ἢ μὲν ἐπιχομένη χρυσάμπυκας ἔντυον ἵππους  
 ἦρ' ἡρῆσθα θεὰ θυγάτηρ μετ' ἄλλοιο χρόνιοι·  
 ἦ βῆ δ' ἀμφ' ὀχέεσσι θεῶς βάλε καμπύλα κύκλα  
 χάλκεια δ' ἐκτάκνημα σιδήρε' ὅξονι ἀμφίς·  
 τῶν ἦν χρυσὴ ἵπτος ἀφθιπτο· αὐτὰρ ὕπρθεον  
 χάλκι' ἐπίσσωρα προσσκηρότα θαῦμα ἰδέσθαι·  
 πλημναι δ' ἀργύρε' ἐσὶ περίδρομοι ἀμφοτέρωθεν,  
 δίφρος δ' χρυσεῖοισι, καὶ ἀργυρεῖοισιν ἱμάσι  
 ἐντίπεται· δ' οἰαὶ δ' ἐπρίδρομοι ἄντυγες ἔσσι,  
 τοὶ δ' ἐξ ἀργύρεος ῥυμὸς πέλον, αὐτὰρ ἐπ' ἄκρῳ  
 δῆσσε χρύσειον καλὸν ἱγρὸν, ἐν δ' ἐλπίδινα  
 κάλ' ἔβαλε χρύσει', ὑπὸ δ' ἱγρὸν ἔχ' αἶαν· ἦρ' ἦ  
 ἵππους ἐκὺπ' ὀδ' αὖ μεμαυῖ' ἔειδ' ὅς κ' αὐτῆς·  
 αὐτὰρ Ἀθηναίη Κούρη Διὸς αἰγιόχοιο  
 πέπλην μὲν κατέχουσαν ἱανὸν πατρὸς ἐπ' αὖδ' ἠ  
 ποικίλ' ἐν ῥ' αὐτῇ ποιήσασα, καὶ κάμει χόρσιν·  
 ἢ δ' ἐχίτων' ἐνδύσασα Διὸς νεφεληγερίταο,  
 τεύχεσιν ἐς πόλεμον θωρήσασα διακρυόεντα·  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' ὥμοισιν βάλετ' αἰγίδα θυσσάνοισα  
 δεινὸν ἦν περὶ μὲν πάντῃ φόβ' ἐσιφάνωται,  
 ἐν δ' ἔεις, ἐν δ' ἄλκῃ, ἐν δ' ἐκρυέεσσι ἰώκῃ,  
 ἐν δ' ἐπεὶ γοργυλὴν κεφαλὴν δεινοῖο πελώρου  
 δεινότης, σμυδνήτης Διὸς τέρας αἰγιόχοιο·  
 κραδί δ' ἐπ' ἀμφίφρατον κωέτω θύει τριφάληρον

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

πριαμίδη· μή δ' ἔμ' ἔλωρ δ' ἀναοῖσιν ἐλσῆσθαι  
 κτεῖσθαι· ἀλλ' ἐπαμυνον, ἐπεί τ' ἀμὲν καὶ λίπτοι αἰῶν  
 ἐν πόλει ὑμετέρῃ· ἐπὶ οὐκ ἄρ' ἐμῆλον ἐγὼ γε  
 νοσήσας οἰκόνδε φίλῳ ἐς παρὶδ' αἰῶν,  
 σύφρανε δὲν ἄλ' ἄχον τε φίλῳ, καὶ νῆπιον ἦόν.

Ως φασ· τὸν δ' οὐπὶ προσέφη κερυθαίοιοι· ἔκτορ,  
 ἀλλὰ παρήϊξεν λελιμμένον, ὄφρα τάχιστα  
 ὤσασθ' ἀργαίους· πολλὸν δ' ἀπὸ θυμὸν ἔλαττο  
 εἰ μὲν ἄρ' ἀντίθεον σαρπηθ' ὄνα δ' ἰοίεταί τοι  
 εἰσὼν ὑπ' αἰγίοχοιο δ' ἰδὸς πρὸς ἀλλεῖε φησὶ.  
 ἔκ δ' ἄρα δὲ μηρὺ δ' ὄρου μίλινον ὥς· θύραζε  
 ἴφθιμος πελάγον, ὅς οἱ φίλος ἦεν ἰταῖρος.  
 τὸν δ' ἔλιπε ψυχὴ· κατὰ δ' ὀρθαλμῶν κέχυτ' ἀχλὺς,  
 αὐτὸς δ' ἀμπνύετο πρὶ δ' ἐπνοίῃ βορέαα  
 ὥρῃσι· ἐπιπνύεσσα πακῶς κεικαφνότα θυμὸν.  
 ἀργαῖοι δ' ὑπ' ἄρῃ, καὶ ἔκτορ χαλκὸς κερυθαίοιοι  
 οὐτ' ἐπὶ ποτὶ προσέπωντο μελαυνάων ἐπὶ νῆσσι,  
 οὐτ' ἐπὶ ποτ' ἀντιφείροντο μολχῇ, ἀλλ' αὖν ὀπίσθε  
 χαλῶνθ' ὥς ἐπύθοντο μετὰ βῶεσσιν ἄρῃ.  
 ἔνθα τίνα πρῶτον, τίνα δ' ὕστατον ἐξῆνείεσθαι.  
 ἔκτορ γε πρὶ μούσῳ πώλῃς, καὶ χαλκίῳ ἀρῇ,  
 ἀντίθεον τοῦθ' ὄρωσθ', ἐπὶ δ' ἐπὶ πλῆξι πονορέεσσιν,  
 πῆχόντ', ἀχμητῶν, αὐτῶλιον οἶνόμαόν τε,  
 οἶνοπίδῃσθ' ἔλεον, καὶ ὀρίσβιον αἰολομήνῳ,  
 ὅς ῥ' ἐν ὕλῃ ναιέσκε· μέγα πλῆστος μεμνηλῶς,  
 λίμνῃ κελημένους κηφισίδι, πὰρ δ' ἐοῖ ἄλλοι  
 νοῦον βοιωτὶ μάλα πῖονα δ' ἡμῶν ἔχοντο.  
 τοὺς δ' ὥς ἔν ἐνόησε θιά λδουκόλεσσιν ἦρῃ  
 ἀργαίους ὀλέκοντας ἐνὶ κρατὶ ἡὺσμίην,  
 αὐτίκ' ἄθῃ, αἶψα ἔπια πῆφ' ἔφ' ἔντα προσέειπε,

Ω πόττι

εὔχος ἐμοὶ δώσῃν, ψυχὴν δ' αἰὶδι κλυτοπόλῳ.  
 ὦς φάτο σαρπηδῶν. ὃς δ' ὀνείχῃσι μίλινον ἔγχευ  
 τληπόλεμος· κῆ δ' ἐν μῦθῳ ὁμαρτῇ δοῦράτα μακρὰ  
 ἐκ χειρῶν ἤϊσαν, ὃ μῦθ' ἔαλαν αὐχίνα μίσση  
 σαρπηδῶν ἀχμή ἣ δ' ἀμφοτέρους ἦλθ' ἀλεγεινὴ.  
 ἐν δ' ἐκαστὸν ὀφθαλμῶν ἐρεβανὴν νύξ' ἐκάλυψε.  
 τληπόλεμος δ' ἄρα μῆρόν αἰετερὸν ἔγχευ μακρῷ  
 βιβλήκει· ἀχμή ἣ δ' ἐκαστὸν μαιμώωσα  
 ὄσσεω ἔγχευθ' ἔστα, πατὴρ δ' ἐτι λοιγὸν ἀμύων·  
 οἱ μὲν ἀντίθεον σαρπηδῶνα δῖοι ἰταῖροι,  
 ἱξίφειρον πολέμοιο· βάρυν δ' ἐμὴ δόρυ μακρόν  
 ἑλκόμηνον. ἔμην, οὔτις ἐπιφράσσετο, ὅς δ' ἐνέησε  
 μῆρ' ἱξίφρυσσας δόρυ μίλινον, ὃφρ' ἐπιβλήῃ  
 πωδὺ δόνταρ. τοῖον γὰρ ἔχον πόνον ἀμφὶ ποντοῦ.  
 τληπόλεμον δ' ἐτέρωθεν ὑπὸ νύκτι ἀχαιοί  
 ἱξίφειρον πολέμοιο· νόησε ἣ δ' ἴος ὀδυωνίς,  
 τλήμονα θυμὸν ἔχων· μαίμῃσι δ' ἐοικὼς φίλῳ ἦτορ.  
 μῆρ' ἱξίφρ' ἔπειτα κατὰ φρένα, καὶ κατὰ θυμὸν  
 ἢ προτέρῳ δῖος ἦν ἐριγδούποιον δῖωκε,  
 ἢ ὅ γε τῶν πλεόνων λυκίων ἀπὸ θυμὸν ἔλατ.  
 ὅς δ' ἄρ' ὀδυωνίῃ μεγαλήτορι μῶρσιμον ἦεν.  
 ἴφθιμον δῖος ἦν ἀποκτάμεν ὅξ' ἔχ' ἀλκῶ.  
 τῶ δ' ἔα κατὰ πληθύν λυκίων φάπε θυμὸν ἀθήνη.  
 ἐνθ' ὅ γε κείρανον εἶλεν ἀλωσσορά τε, χρομίον τε,  
 ἀλκωνδρόν τε ἄλιον τε, νοήμονά τε, πρυτανήν τε,  
 καὶ νύκ' ἐτι πλείονας λυκίων κτάνε δῖος ὀδυωνίς,  
 ἢ μὴ ἄρ' ὅξ' ἐνόησε μέγας κερυθαίολος ἱκτωρ.  
 ὅς δ' ἐσχετο προμολχῶν κερυθμίνον αἰθόπι χαλκῷ  
 δῖμα φέρον δακρυόισι· χόρην δ' ἄρα οἱ προσίοντι  
 σαρπηδῶν δῖος ἦν, ὥς δ' ὀλοφρονέοντι ἔειπε.

# ΟΜΗΡΟΥ

οἴω πολλοί τε καὶ ἰδιῶτι ἐφίεσσαυν ἔρχε' ἔχοντες,  
 οἳ ἐμίγαν ἰόντα, καὶ Ἰφθιμον, καὶ ἄγαυον,  
 ὅσων ἀπὸ σφείων. ὃ δ' ἔχρατο μὲν πελεμύχην,  
 ὣς οἳ μὲν πόνον κατὰ κρατὲρ ἦν ὑσμίνῃ,  
 τληπόλιμον δ' ἤρακλειδῃ, ἦν τε, μίγαν τε,  
 ὅσων ἐπ' ἀντιθέω σαρπηδόφι μοῖρα κραταῆ.  
 οἳ δ' ὅτε δὴ χυδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,  
 ἦος θ' ἡνός τε δῖος νεφεληγερέταο,  
 εἰ καὶ τληπόλιμ' ἤϊος πρὸς πρὸς μῦθον ἔειπεν,  
 Σαρπηδόφιν λυκίῳ βυληφόρῃ, τίς περ ἀνδρῶν  
 πῶς ἐν ἐνθάδ' ἰόντι μολχῆς ἀδ' ἀήμονι φατί;  
 ἔδιδόμην δ' ἐσέφασσι δῖος γόνον ἄγιο χοῖο  
 εἶν'. ἐπεὶ πολλὸν κείνων ἐπιδόλαι ἀνδρῶν,  
 οἳ δῖος ἐξεγένοντο, ἐπὶ προτέρων ἀνθρώπων.  
 ἀλλ' οἷόν πινώ φασσι βίῃ ἤρακλειδῃ,  
 εἶν' ἑμὸν πατέρ' αἰσσι μίμνονα θυμολίοντα.  
 ὅς ποτε δειρ' ἔλθων ἔνεχ' ἵππων λαομέδοντα,  
 ἐξ οἷος σὺν νηυσὶ, καὶ ἀνδράσι παυροτέροισιν.  
 ἦλ' ἐξ ἄλλω πατρὶ πόλιν. χήρωσε δ' ἀγέλης.  
 ὅ δ' ἐκκὸς μὲν θυμὸς, ἀποφθινύθης δ' ἰλαοί,  
 εἴ δ' ἐτί σε τρώων ὀϊόμαυ ἀλκί' ἔσειδα  
 ἔλθοντ' ἐκ λυκίης εἴ δ' εἰ μολα κερτερός εἰσι,  
 ἀλλ' ὑπ' ἑμὺ δμωέοντα, πύλας ἀΐδω περήσθην.  
 Τόν δ' αὖ σαρπηδόφιν λυκίῳ ἄγος ἀντίον ἦν δα,  
 τληπόλιμ' ἔπει κἄν' ἀπώλυσεν ἴλιον ἱρήν,  
 αἶψα δ' ἀφραδίῃσιν ἄγαυ' ἀπομέδοντα,  
 ὅς ῥά μιν εἴ ἔρξαντα κακῶ ἠνίπαπε μῦθος,  
 εἴ δ' ἀπέδωχ' ἵππους, ὧν εἶνεκα τηλόθεν ἔλθῃ.  
 ὅ δ' ἐγὼ ἐνθάδ' ἐφίμ' ὄνον καὶ κῆρα μέλαινα  
 ἐξ ἑμίσθου τούδε δα, ἑμὲ δ' ὑπὸ δ' αὖρι δαμνέοντα,



ἄρῃσι δ' ἐν παλάμῃσι πελώριον ἔγχρ' ἐνὶ ὤμῳ.  
 φοῖτα δ' ἄλλοτε μὲν πρόω' ἔκβροτο, ἄλλοτ' ἐπίπῃσι.  
 Τὸν δ' ἐῖδ' ὦρ' ῥίγησιν βολῶν ἀγραθὸς διομήδης,  
 ὥς δ' ὅτ' οὐκ ἄπ' ἀλαμνος ἰῶν πολέος πεδίοιο.  
 σῆν' ἐπ' ὠκυρόῳ ποταμῷ, ἀλλὰ δὲ προρίοντι,  
 ἀφρῶ μὲρ μύροντα ἰδὼν, οὐκ ἔφραμ' ὀπίσσω.  
 ὥς τότε τυδείδης ἀνελχάμενος, εἰπέ τε λαῷ.  
 ὦ φίλοι οἶον δὴ θανυμένοισιν ἔκτορα δῖον  
 αἰχμητὴντ' ἔμμεναι, καὶ θαρσαλίον πολεμιστήν.  
 τοῦ δ' αὖτε πωραῖς γέγραπτον, εἰς λείπον ἀμύνει.  
 καὶ νῦν οἱ πάρα κτεῖνον ἄρης βροτῶν ἀνδρῶν ἰοικώς.  
 ἀλλὰ πρὸς βῶας τετραμμένοι οὐκ ὀπίσσω  
 ἔϊκετα. μὴ δ' ἐθιοῖς μινικανέμῃ ἱφί μάχῃ.  
 ὦς ἂρ' ἔφη. πρῶτον δ' ἡ μάλα χυτὸν ἔλυσεν αὐτῶν.  
 ἐνθ' ἔκτορ' εὖ φῶτε κατέκταν', εὖ δ' εἰδότες χερσὶν ἑ  
 εἰν ἐνὶ δῖφρῳ ἰόντι, μινέειω, ἀρχιλέοντι.  
 τῷ δὲ πεισόντ' ἱλίσσιν μέγας τιλαμώνιος αἴας.  
 σὴν δ' ἡ μάλα ἔγγυς ἰὼν, καὶ ἀκόντισε θυρὶ φαίδῳ,  
 καὶ βόλῃσιν ἀμφιον σιλάγῃς ἔχον. ὅς τ' ἐνὶ πωριστῷ  
 ναῖε πολυκτῆμων, πολυλήϊος, ἀλλὰ ἔμοῖρα  
 ἦν' ἐπικυρήσοντα μετὰ πριάμόν τε καὶ υἱας.  
 τὸν ῥ' ἀκῆτα ἰδὼν σῆρα βόλῃ τιλαμώνιος αἴας.  
 νεαίρῃ δ' ἐν γαστρὶ πάγῃ δολιχόσκιον ἔγχροτο.  
 δούπησεν δ' ἐπὶ σῶν, ὅδ' ἐπέφραμε φαίδιμος αἴας  
 τούχια συλήσων. πρῶτον δ' ἐπὶ δούρατ' ἔχονα  
 ὀξέα παμφανόωντα σάκας δ' ἀνελέξατο πολλὰ.  
 αὐτὰρ ὁ λάξ πρὸς σβάς ἐκ νεκρῷ χάλκεον ἔγχροτο  
 ἐπὶ πωριστῷ, οὐ δ' ἂρ' ἔτ' ἄλλα δῖω ἤσαστο τούχια πολλὰ.  
 ὦ μοῖρ' ἀφελείωσαι, ἱπείγῃς γὰρ βελίεσσι  
 εἰλίσσιν, δ' ὅτ' ἀμφίβασιν κρατὶν ἔχον ἀγέρωχα.

# Ο ΜΗΡΟΥ

τὰ φρονέων, ἵνα χερσὶν ὑπὲρ αἰνείας διαμείνῃ·  
 τὸν δ' ἴδων ἀντίλοχος μεγαθύμος ἴσχυρος ἦεν·  
 βῆ δ' εὖ προμάχῳ πείει γὰρ δὴ τοι μὲν λαῶν  
 μή τι πάθῃ, μέγα δ' ἐσφίνας ἀποσφύλλει πόνοισι·  
 τὼ μὲν δ' ἤ, χεῖρας τε, καὶ ἔγχεα δ' ἐξυδόντα,  
 ἀντίον ἀλλήλων ἐχέτω μιμαῶντι μάχεσθαι·  
 ἀντίλοχος δ' ὃ μάλ' ἄγχι περίσταντο τοι μὲν λαῶν·  
 αἰνείας δ' ὅ μιν θοός περ ἐὼν πολέμιος,  
 ὡς εἶδεν δ' ὅτε παρ' ἀλλήλοισι μένοντε·  
 οἷδ' ἐπὶ ἔν κερὺς ἔρυσαν μετὰ λαὸν Ἀχαιῶν,  
 τὼ μὲν ἄρα δ' ἐλὼ βάλετ' ἐν χερσὶν ἱταίρων·  
 αὐτὰρ δ' ἐσπεύθειτε, μετὰ πρῶτοισι μαχέσθω·  
 ἔνθα πυλαμένειά ἐχέτω ἀτάλαντον ἄρηι,  
 ἄρχον πεφλαγόνων μεγαθύμων ἀσπίδα·  
 ἦν μ' ἄρ' ἀφειδίης δ' ἔκλυες μινέλαος,  
 ἔσαοτ' ἔγχεϊ νύξιν κατὰ κληῖδα τυχέσας·  
 ἀντίλοχος δ' ὃ μύδονα βάλλ' ἠνίοχον θειρῶτοντα,  
 ἐδλὸν ἀτυμνιάδω δ' ὅδ' ὑπὲρ σφει μώνυχας ἵππους·  
 χρῆμα δ' ἄγ' κῶνα τυχῶν μέσον ἐκ δ' ἔρα χερῶν  
 ἠνία λούκ' ἐλίφοντο χαμαὶ πέσον ἐν κενήσιν·  
 ἀντίλοχος δ' ἄρ' ἐπαίξας ξίφει ἤλασε κόρσιν·  
 αὐτὰρ ὃ γ' ἀδμαίνων, δὴ γέρας ἔκπεσε δίφρου  
 κύμβαχος ἐν κενήσιν ἐπὶ βρεχμόντι καὶ ὤμῳ  
 εἰσὶν μάλ' εἰσέκηδ'· τύχε γὰρ φαρμάθῳ βαθείης,  
 ὅφρ' ἵππῳ πλήξωτε χαμαὶ βάλλον ἐν κενήσιν·  
 θεὸς δ' ἴμας ἀντίλοχος, μετὰ δ' ἔρα ἦλας Ἀχαιῶν·  
 θεὸς δ' ἔκταν ἐνόησε κατὰ σίχας, ὅρῳ δ' ἐπ' αὐτῷ  
 κεκληγώς· ἅμα δ' ἐπ' ὤμων εἴπων φελλοῖσιν  
 κρατράϊ· ἦρχε δ' ἄρα σφιν ἄρης, καὶ πότνι' ἱνώ,  
 ἢ μὲν ἔχασσε κυδοιμὸν ἀναιδέα δ' ἠνέτ' ἦρε,  
 ἔρας δ'

αἰνείω ἴταρον μεγαθύμῳ Διὶ Κόοντα  
 πηγάσι δ' ἴω, ὃν περὶς ὁμῶς πριάμοιο τέκεται  
 τῶν, ἵππ' ἐπὶ θοῶς ἔσκει μὲν ἀπὸ πρώτοισι μάχεσθαι.  
 τὸν ῥα κατ' ἀσπίδα δ' ἐπὶ βάλε κριῶν ἀγαμέμνων.  
 ἦ δ' οὐκ ἔγχετο ἔρυσ'. στήθε' ἐπὶ δ' εἴσατο καὶ τ'.  
 νηαίρῃ δ' ἐν γαστρὶ στήθε' ἰωσῆρ' ἔλασεν.  
 δούπησεν δ' ἐπισπῶν, ἀράβησε δ' ἐπὶ τοῦ χ' ἐπ' αὐτῷ.  
 ἐνθ' αὖτ' αἰνείας δαναῶν ἔλεον ἀνδρας ἀρίστους  
 οὔτε Διοκλῆος κρήθωνά τε, ὄρσιλῶχόν τε.  
 τῶν ῥα πατήρ μ', ἐναυὶ ἐὺκλιμένη ἐνὶ φρεσὶ,  
 ἀφνηὸς βιότοιο· γένετ' δ' ἦν ἐκ ποταμοῖο  
 Ἀλφειοῦ· ὅστ' οὐρὺ ῥέει πυλίων στήθε' αἰῆς.  
 ὅς τέκετ' ὄρσιλῶχον πολέεσ' ἀνδρασιν ἀνακταῖ  
 ὄρσιλῶχος δ' ἄρ' ἔλκετ' Διοκλῆα μεγάθυμον.  
 ἐκ δ' ἐ Διοκλῆος διδυμάονε παίδε γένεσθαι  
 κρήθων, ὄρσιλῶχός τε μάχης εὖ ἐδότιε πάσης.  
 τῷ μὲν ἄρ' ἠδύσαντε, μελαινάων ἐπὶ νηῶν  
 ἴλιον εἰς ἔκπωλον ἄμ' ἀργείοισιν ἐπιδίω,  
 ἐμὴν ἀπρίδῃσ' ἀγαμέμνωνι, καὶ μενελάῳ  
 ἄρην μένω, τῷ δ' αὖθι τέλει θανάτοιο κάλυψαν  
 οἶα τῷ γὰρ λίοντι δ' ὕω ὄρετ' κερυφῆσιν  
 ἱτραφίετ' ὑπὸ μηρὶ βαθείης τάρφουσιν ὕλης,  
 τῷ μ', ἄρ' ἀρπάσσοντο βόας, καὶ ἴφια μῆλα  
 σταθμούς ἐνθρώπων κραίϊετον, ὄφρα καὶ αὐτῷ  
 ἀνδρῶν ἐν παλάμῃσι κατέκταθεν ὀξείῃ χαλκῷ,  
 τοῖα τῷ χεῖρας ὑπ' αἰνείας δαμέντε,  
 καπνίσσεται ἑλάτῃσιν ἰοικόδοις ὑψηλῇσιν  
 τῷ δ' ἐπισπῶν ἑλίσσει βοὴν ἀγαθὸς μενέλαος.  
 βῆ δ' ἔσχε προμάχων, κεκυρυσμένος αἰδοπι χαλκῷ,  
 σκίων ἐγχείω, τῷ δ' ὥπρωεν μιν ἄρης,

# ΟΜΗΡΟΥ

οὐρανὸν ἰς πολὺ χαλκὸν ἐπέπληρον πόδες ἱππῶν,  
 αἶψ' ἐπιμισρομένων, ὑπὸ δ' ἔσριφον ἕνιοχ' ἡδὺ.  
 οἱ δ' αὖ μιν ὁ χάρων ἰθὺς φέρον, ἀμφὶ δ' ἐνύκτα  
 ὄσρος ἄρ' ἐκάλυψε μάχῃ πρῶταιν ἀρήγων  
 πάντοσ' ἐποιομένοισι. τὸ δ' ἐκράϊνον ἐφ' ἑμᾶς  
 φοῖβος ἀπόλλωνος χυσαόρεα, ὅς μιν ἁώγῃ  
 βρῶσιν θυμὸν ἐγείρει, ἐπὶ ἴδ'ε πολλά δ' ἀθήνω  
 οἰχομένω. ἢ γὰρ ῥα πῆλιν δαυαοῖσιν ἀρηγῶν.  
 αὐτὸς δ' αἰνέειν μάλα πῖον ὅς ἐξ ἀδύτοιο  
 ἦκε, καὶ ἐν σέθιαι μένος βάλε ποιμένι λαῶν.  
 αἰνείας δ' ἱτάροισι μεθίστατο, τοί δ' ἐχάρησαν  
 ὡς ἔδον ἰδόντες, καὶ ἀρτεμία προσίοντα,  
 καὶ μένος ἰδλὸν ἔχοντα μετ' ἀλυσσάν γε μῆν' οὗτοι.  
 ἢ γὰρ ἔα πόντος ἄλλος, ὅν ἄρ' ἡρώτοξος ἔγχεον,  
 ἄρ' ἔτε βροτολαῖος, ἔρις τ' ἀμοτον μεμαυῖα.  
 τοὺς δ' αἶωτε δ' ὕω, καὶ ὀδυσαίνε, καὶ Διομήδεος,  
 ὥρῳ δαυαὺς πολεμίζε μῆν'. οἳ δ' ἐ καὶ αὐτοὶ  
 οὔτε βίης βῶων ὑπιδέειδ' ἴσαν. οὔτε ἰδκάς,  
 ἀλλ' ἐρῆμον κερύλλῃσιν ἐοικότοβ, ἅς τε κρονίῳ  
 νηνεμῆς ἔσῃσιν ἐπ' ἀκροπόλεισιν ὄρεσιν.  
 ἀρεῖας ὅφρ' εὐδῇσι μένος βορέαο, καὶ ἄλλων  
 ἰαχρῶν ἀνέμων, οἳ τε νέφεα σκιάωντα  
 πνοιῇσι λιγυρῇσι σφ' ἐσκιδ' ἄσιν ἀέντοβ,  
 ὡς δαυαοὶ πρῶας μένον ἐμπέδον οὐδ' ἐφίβον.  
 ἀρεῖδ' ἔκ δ' αὖ ὁμιλῶν ἐφοίτα, πολλὰ κελεύων.  
 Ω φίλοι, ἀνέρις ἔσ'ε, καὶ ἀλκιμον ἦτορ ἔλιδε,  
 ἀλλ' ἄλυσ' αὖ δ' ἰδ'ε κατὰ κρατερὰς ὕσμῖνας.  
 αὖ δ' οἰμῶν τ' ἀνδρῶν πλεονόβ' σοοί, ἧε πέφονται.  
 φευγόντων δ' οὔτ' ἄρ' κλέος ὄρνυται, οὔτ' ἐτις ἀλκή.  
 ἢ καὶ ἀκόντισι δ' ἐρὶ θεῶς βάλε δ' ἐπ' ὁμοῖον ἀνδρᾶ

οἷον σὺν γαμβροῖσι, κασιγνήτοισί τε σοῖσι.  
 τῶν νῦν, οὐτὶν ἰγὼ ἰδίῃσιν δύναμι' οὐδ' ἐνοῆσαι.  
 ἀλλὰ καταπῶπυσσι κύνας ὥς ἀμφὶ λείοντα.  
 ἡμεῖς δ' αὖ μαχόμεσθ', εἴ περ' ἐπικυροὶ ἔνθα μιν,  
 καὶ γὰρ ἰγὼν ἐπικυροῦ ἰδὼν, μάλα τηλέθω ἦκα.  
 τηλὺ γὰρ λυκίῃ ξάνθῳ ἐπὶ δῆν' ἔσθ'·  
 ἐνδ' αὖτοχόν τε φίλῳ ἔλιπον, καὶ νῆπιον ἦδ'·  
 καὶ δ' ἐκ τῶν ματῶν πολλὰ τάτ' ἔλθεται ὅς κ' ἐπιδωθεῖ.  
 ἀλλὰ καὶ ὥς, λυκίῃς δ' ὀφύων, καὶ μίμον' αὐτῶς  
 οὐδ' ἐν μαχίσασθαι. ἀτὰρ οὐτὶ μοι ἐνθάδ' ἐστὶν,  
 οἷόν κ' ἦε φέροιεν Ἀχαιοὶ ἦκα Ἀχαιοῖσιν,  
 τῦνη δ' ἔστι καὶ. ἀτὰρ οὐδ' ἄλλοισι κελύβας  
 λαοῖσι μὲν ἐμῇ, καὶ ἀμυνέμεναι ὤρεσι.  
 μὴ πως ὥς ἀΐσι λίνυ ἀλόντε πανάγρην  
 οὐδ' ἀσπίδι σὺς μὲν ἐσθ' ἔλθω, καὶ κύρμα γ' ἐνθάδ'·  
 οἱ δ' ἐκ τῶν, ἰκπέρσας' ἐν ναιομένῳ πόλιν ὕμην.  
 σοὶ δ' ἐκ τῶν πάντα μέλην νύκτας τε, καὶ ἡμέρας,  
 ἄρχους λισσομένῳ τηλεκλήτῳ γ' ἐπικούρων  
 νολεμέως ἐχέμεν, κρατερὴν δ' ἀποθέσθαι ἐνὶ πῆν.  
 ὣς φάτο Γερηνίδων, δῦκε δ' ἐφρένας ἔκτοσε μῦθος.  
 αὐτίκα δ' ἐξ ὅχλων σὺν Τούχαισιν ἄλτο χαμάϊζε·  
 πᾶσιν δ' ὅξια δ' ἔρε· κατὰ στρατὸν ὥχσο πάντῃ,  
 δ' ὀφύων μαχίσασθαι. ἐγερὶ δ' ἐφύλαπιν ἀνάν·  
 εἴ δ' ἐκ λιλίχθησαν, καὶ ἐναντίοι ἔσαν Ἀχαιῶν.  
 ἀργεῖοι δ' ὑπέμεινον ἀολλέες, οὐδ' ἐφόβησαν.  
 ὥς δ' ἀνιμῶν Ἀχαιῶν φορέει ἱέρως κατ' ἄλωας,  
 οὐδ' ὅρ' ἐκ λικμώντων, ὅτε τι ξανθὴ δῆμ' ἔσθ'·  
 κρῖν' ἐπεγομένων ἀνέμων καρπὸν τε, καὶ Ἀχαιῶν,  
 αἰδ' ὑποδουκάνοιται Ἀχαιῶν, ὥς πότ' Ἀχαιοὶ  
 λούχοι ὑπὲρ θάλασσαν γίνοντο κρηϊσάλλω, ὅρ' ἔκ' ἐκ αὐτῶν



ΟΜΗΡΟΥ

[illegible][illegible]

κυρίδιον πύθεσσα πόσιν, τὸν ἄριστον Ἀχαιῶν,  
 ἰφθίμῃ ἄλσχος Διομήδεος ἱπποδάμοιο.  
 ἦ ῥα καὶ ἀμφοτέρηριν ἀπ' ἰχῶρ χαρὸς ὁμόρην.  
 ἄλλ' ὅσο χεῖρ' ὀδύναι ἢ κατηπιοῶντο βαρεῖται  
 αἰδ' αὐτ' ἐθρόωσαι ἀθλααίητε, καὶ ἦρῃ,  
 κερτομίοις ἐπέσει Δία κρονίδῳ ἐρεθίζον·  
 τοῖσι ἢ μύθων ἦρχε θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη·

Σὺ πάλαι· ἦ ῥα τί μοι κεχολώσεται ὃ Τρῆκον εἶπω,  
 ἢ μάλα δῆτινα κύπρις Ἀχαιῶνδωρ ἀνιῖσσε,  
 πρὸς ἵν' αἶμα ἰσπίδαί, τὺς, νῦν ἔκπαυλ' ἐφίλησται  
 τῶν τινα κερῖν ἔχουσα Ἀχαιῶνδωρ ὑπὲρ πλῶν,  
 πρὸς χυρσὴ πόρῳν κατὰ μύξαλ' χεῖρα ἀραιήν,  
 Ως φάτο, μέδηςσεν ἢ πατὴρ ἀνδρῶν τε, θεῶν τε  
 καὶ ῥα καλίστῳ μῦθῳ προσέφη χυρσὴν ἀφροδίτῳ,  
 οὗ τι τέκνον ἱμὸν δίδεται πολεμήϊα ἔργα  
 ἀλλὰ σὺν ἱμῖρόωντα μετέρχει ἔργα γάμοιο,  
 ταῦτα δ' ἀρῇ θιῶ, καὶ ἀθήνη πάντα μελήσῃ.

Ως οἱ μῦθον τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον·  
 αὐτίκα δ' ἐπόρουσε βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης,  
 γηγνώσκων ὃ οἱ αὐτὸς ὑπείριχε χεῖρας ἀπόλων,  
 ἀλλ' ὅγ' ἄρ' εἴ ἢ θεὸς μέγαν ἄλγος ἴετο δ' αἰεὶ  
 αὐτίκῃ κτείναι, καὶ ἀπὸ κλυτὰ τεύχεα δῦσαι,  
 ῥίς μῦθ' ἔπειτ' ἐπόρουσε κατακτάμεναι μετ' αἰνῶν,  
 ῥίς ἢ οἱ ἰσφύλιξε φαεινὴν ἀσπίδ' ἀπόλων,  
 ἀλλ' ὅτε δὴ τ' ἑτάρτορ ἐπέστευε δαίμονι ἴος  
 Διὶν δ' ὁμοκλήσας, προσέφη ἑκάεργος ἀπόλων

Φρῶνισο τυδείδην, καὶ χάρισθαι, μὴ ἢ θεοῖσιν  
 „ ἴσ' ἐθέλει φρονέειν, ἐπὶ οὐ ποτε φῦλον ὁμοῖον  
 „ ἀθανάτων τε θεῶν χαμαὶ ἐρχομένων τ' ἀνθρώπων,  
 Ως φάτο, τυδείδης δ' ἀνιχάριζο τυτὸν ὀπίσσω

ἔξ' ἀνδρῶν, χαλκὸν ὅλγ' ἐπ' ἀλλήλοισι τιθέντες·  
 τλήν μιν ἄρης, ὅτε μιν ὦτος, κρατερός τ' ἐφιάλτης,  
 παῖδ' ἀλῶνός δ' ἦσσαι κρατερῶν ἐνὶ Δισμῶ.  
 χαλκὶ δ' ἐν κεράμῳ δέδοξο βροταίδικα μῆνας·  
 καὶ νύκων ἐνθ' ἀπόλοιθ' ἄρης ὅτος πολέμοιο.  
 εἰ μὴ μηβὴν περσάλλης ἠιρίβοια,  
 ἱρμία ἐξήγγηλον, ὃ δ' ἐξέκλιψεν ἄρῃα.  
 ἔδ' ἡ τέρómωρον, χαλκὸς δ' ἐν Δισμὸς ἰδάμενα.  
 τλήν δ' ἴρη· ὅτε μιν κρατερός παῖς ἀμφιπρῶν·  
 Δεξιτέρῳ κατὰ μάζον οἷσ' ἔριγ' ὤχινι  
 βελύκει, τότε κεν μὴν ἀνέκετον λαβὼν ἄλγος,  
 τλήν δ' αἰδῆς ἐν τοῖσι πηλώεος ὠκύν' οἷσ' ὄν  
 ἐντὶ μιν ὧπλός ἀνὴρ ἢ δὲ Διὸς εὐγίόχοιο  
 ἐν πύλῳ ἐν νικύεσσι βαλὼν δόδυν' ἴδωκεν,  
 αὐτὰρ ὃ, βῆ πρὸς δῶμα Διὸς, καὶ μακρόν ὄλυμπον,  
 κῆρ ἄχεων, δόδυν' ἡσι πιπαρμένῃ, αὐτὰρ οἷσ' ὄς  
 ὦμα' ὡς σβαρῶν ἠλὺλαθ'· κῆδε δ' ὅ θυμόν.  
 ἴδ' δ' ἐπὶ παιήων δόδυν' ἔφατα φάρμακα πασῶν,  
 ἥκεσθε· εἴ μιν γὰρ τι κατὰ θνητὸς γ' ἐπέτυκτο  
 ὀλίγλιος, δόδυν' ἔρως, ὅς οὐκ ὀθεῖτ' αἶσυλα ῥέζον.  
 ὅς τ' ὅξοισιν ἐκιδε θεὸς, οἳ ὄλυμπον ἔχουσιν,  
 ἴδ' δ' ἐπὶ τῷθ' ἀνῆκε θιά γλαυκῶπις Ἀθήνη,  
 νῆπιος· εἴ δ' οἷδε κατὰ φρένα τυδείος ἡός,  
 ὅτ' ἴ μολ' εἰδωλός, ὅς ἀθανάτοισι μάχοιτο.  
 οὐδέ τι μιν παῖδ' ὅς ποτὶ γούνασι παππάζουσιν  
 ἔλθοντ' ἐκ πολέμοιο, καὶ ἀνῆς δ' ἠϊοτῆτ'·  
 ἴδ' νῦν τυδείδης, εἰ καὶ μάλα κρατερός ἐσ,  
 φράζεσθαι, μή τις οἱ ἀμείνων σείοι μάχῃται,  
 μή δ' ἡν ὤγιστος περὶ φρον ἀδρυσίην  
 ἔξ' ὕπνῳ γούνασι φίλος οἰκῆας ἐγείρη.

ἄχθομένω δδύνῃσι· μελαίνῃσι δὲ χροάσασθον  
 εὔρω ἔπειτα μάχης ἐπ' αἰεσιρὰ θύρου ἄρῃα,  
 ὕμνον· ἦεν δ' ἔχος ἐκὶ κλισίῃ, καὶ ταχὶ ἵππῳ.  
 ἠ δ' ἐ, γυνὴ ἱεπῶσα κασιγνήθῳ φίλῳ,  
 πολλὰ λισσομένη, χρυσάμπυκας ὕψεν ἵππυς.  
 φίλῃ κασιγνῆτ' ἐκκόμισαι τί με· δὸς δ' ἐ μοι ἵππῳ,  
 ὅφρ' ἐς ὄλυμπον ἵκωμαι, ἵν' ἀθανάτων ἔδος ἐσὶ,  
 λίω ἄχθομαι ἔλκῃς, ὅ με βροτῆς οὐτασεν ἀνὴρ  
 τυδείδης ὅς νῦν γὰρ καὶ ἄρ' Διὶ πατρὶ μάχῳ.  
 ὅς φάβ'· τῇ δ' ἄρης δῶκε χρυσάμπυκας ἵππυς.  
 ὅδ' ἐς δῖφρον ἔβαινον ἀκηχιμένη φίλῃ ἥρ.  
 παρ δ' ἐ οἱ ἴεις ἔβαινε, καὶ ἠνία λάβ' ἄρ' ἑρσί.  
 μέσσην δ' ἱλάσῃ, τῷ δ' οὐκ ἄκοντε πετιδῆν.  
 αἶψα δ' ἔπειθ' ἵκοντο θιῶν ἔδος ὠπὺν ὄλυμπον  
 ἔθ' ἵππῃς ἔσῃσι ποδὶν μῦθ' ὥκεια ἴεις,  
 λῦσας ἑξ' ὀχέων· παρὰ δ' ἀμβρόσιον βάλεν ἱδάρ.  
 ὃ δ' ἐν γούνασι πίπτε Διώνης δ' ἴ' ἀφροδίτῃ  
 μητρός· ἔσ· ὅδ' ἀγκὰς ἐλάβ' ἄρ' θυγατέρα ἥν.  
 χερὶ τέμιν κατέρριξεν ἵππος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ἐνὸς μαζί.  
 τίς νύ σε πιάδ' ἔριξε φίλῃ τέκῃ οὐρανόων  
 μαφιδίος, ὃς ἴ' τι κακὸν ῥέψσας ἰνώπῃ;  
 Τὴν δ' ἠμείβειτ' ἔπειτα φιλομηδὲς ἀφροδίτη·  
 οὔτα με τυδείος υἱὸς ὑπέρθυμος Διομήδης,  
 οὐνεκ' ἐγὼ φίλῃν υἱὸν ὑπεξέφερον πολέμοιο  
 αἰνέου, ὃς ἐμοὶ πάντων πολὺ φίλτατός ἐστιν,  
 οὐ γάρ ἐτι βῶων, καὶ ἄχαιῶν φύλῃσι αἰή.  
 ἀλλ' ὅδ' ἡ δαυκαοίγῃ, καὶ ἀθανάτοισι μάχονται,  
 Τὴν δ' ἠμείβειτ' ἔπειτα Διώνη δ' ἴα θιῶν.  
 τί τλαθι τέκνον ἐμὸν καὶ ἀνάχαιο κηδόμενῃ περ.  
 πολλοὶ γάρ σ' ἡτλήμην ὀλύμπια δῶματ' ἔχοντες

# ΟΜΗΡΟΥ

Ἰξίλασε τρώων μιν ὑκνήμεδας ἀχαιούς·  
 δῶκε δ' ἐπὶ Διὶ Πύλῳ ἱτάρα φίλῳ, ὃν πῖε παύσῃ  
 τῶν ὀμιλικῆς, οἳ οἱ φρισίην ἄρτια ἤδη,  
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιρ ἱλαυνέμεν. αὐτὰρ ὃν ἔρρε  
 ὦρ ἵππων ἐπιβάς, ἔλαβ' ἡνία σιγαλόεντα·  
 αἶψα δ' ἐπὶ Τυδείδῳ μέθοιτι κρατερῶνυχας ἵππους  
 ἱμμιμαῶς, ὃ δ' ἐπὶ Κῦπρην ἰπώχθε νηλεῖ χαλκῷ·  
 γιγνώσκων ὅτ' ἀναλκίς ἔην θεός. οὐδ' ἐπὶ θανάῳ,  
 τῶν, αἶψ' αὖθ' ὦρ πόλεμον κατακείραίνεσιν·  
 οὗτ' ἄρ' ἀθλωαίμεν οὔτε πολλοὶ παρθοὶ ἐνὺ.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐκίχανε πολλὴν καθ' ὀμίλην ὀπάσαν,  
 ἐνθ' ἐποριξάμεντο μεγαθύμῳ Τυδείῳς ἡδὲ,  
 ὦρ' ὡς οὐτ' αὖτε χεῖρα μεταλμῶντο ὀξεί χαλκῷ  
 ἀδληχρὸν, εἴθε δ' ἐπὶ χροὸς ἀντιτόρησεν  
 ἄμβροσίῳ σφ' ἐπὶ πῖπλιν, ὃν οἱ χάετες κάμον αὐταί.  
 περὶ μὲν ὑπὲρ θέναντο, ῥίε δ' ἄμβροτον αἶμα θεοῖο  
 ἰχθῶρ, οἷος πέριτε ῥίε μακάρεσσι θεοῖσι,  
 οὐ γὰρ σῆμα ἔδυσ', ὃ πίνυσ' αἶθρα παοῖνον.  
 τ' οὐκ' ἀναίμενός ἐστι καὶ ἀθάνατοι καλεῖνται·  
 ἢ δ' ἐμὲ, μὲν ἰάχουσα, ἀπὸ τοῦ κάββαλον ἡόν.  
 καὶ ἂν μὲν μετὰ χερσὶν ἱρύσασθαι φοῖβος ἀπόλλων  
 κυανέη νιφίλη, μή τις δαυκῶν ταχυπώλων  
 χαλκὸν ἐνὶ σῆμασι βαλὼν, ἐκθυμὸν ἔλπει.  
 τῇ δ' ἐπὶ μακρὸν αἶψα βοήην ἀγαθὸς Διομήδης,  
 εἴη Διὸς θυγάτηρ πολέμα καὶ δεινὸς ἦτορ  
 ὃ οὐχ' ἄλλος ὅτι γυναικας ἀνάλκιδας ἠπυροπόβους·  
 αἰδ' ἐσὺ γ' ἐσπόλεμον παλῆσαι, ὃ τέ σ' οἶον  
 ῥιγῆσθαι πόλεμον γὰρ καὶ ἔχ' ἐπὶ ῥωθι πύθουαι.  
 Ω, ἔφαθ' ἡδ' ἀλύεσ' ἀπὸ βῆσας· τίρφο δ' αὖθις  
 τῇν, μὲν ἄρ' ἴεις ἑλῶσαι ποδὴν μὲν ἔξαρ' ὀμίλην,  
 ἀχθομένη



ἤεπε· ἔξ ὀχίων, ἀράβησε ὃ τούχῃ ἐπ' αὐτῷ  
 αἶολε, παμφουδόντα, παρήγαγον δ' οἱ ἵπποι  
 ἐκύνποδες· τῷ δ' ἔκυθη λύθη ψυχὴ τε, μένθε τε.  
 αἰνέας δ' ἐπόρουσε σὺν ἀσπίδι, δι' ὕρι τε μακρῷ,  
 φείσας μήπως οἱ ἐρυσαίῃατο νικητὸν ἄχαιοί,  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' αὐτῷ βαῖνε λείων ὥς ἀλκί' ἐπιποθῶς,  
 πρόσθε ὃ οἱ δόρυ τ' ἔσχε, καὶ ἀσπίδα πάντοτε ἴσω,  
 τὸν, κτάμεναι μιμῶς, ὅς τις τῷ γ' ἀντίος ἔλθοι·  
 σμυρδαλῆα ἰάχων, ὃ δ' εἰ, χερμάδιον λάβε χερὶ  
 τυδείδης μέγα ἔργον, ὃ εἰ δ' οὐ γ' ἀνδρὶ φέροιον,  
 οἷοι νῦν βροτοὶ εἶσ', ὃ δ' εἰ, μιν ῥῖα πάλιν καὶ οἷον·  
 τῷ δ' βάλεν αἰνέϊα κατ' ἰχθίον, ἐνθά τε μηρὸς  
 ἰχθίῳ ἐνσφρίφεται, κατύλλω δ' εἰ τέ μιν καλῆεσι,  
 θλάσσει ὃ οἱ κατύλλω, πρὸς δ' ἀμφω ῥῆξε τένοντι,  
 εἴσει δ' ἀπὸ ῥινόρ' ῥηχὺς λίθος· αὐτὰρ ὃ γ' ἦρας  
 ἔση γυνὴς ἐπειών, καὶ ἐρείσαιτο χερὶ παχείῃ  
 γαῖης, ἀμφὶ ὃ ὄσσε κελαινὴ νύξ· ἐκάλυψε·  
 καὶ νύκων ἐνθ' ἀπόλοιτο ἀναξ ἀνδρῶν αἰνέϊας,  
 εἰ μὴ ἄρ' ὄξυ νόησε Διὸς θυγάτηρ ἀφροδίτη  
 μήτηρ, ἣ μιν ὑπὲρ ἀγχιόσῃ τέκε βυκολέοντι,  
 ἀμφὶ δ' ἔον φίλον υἱὸν ἐχέουατο πύχιν λόδυνά·  
 πρόσθε ὃ οἱ πέπλοιο φασγὰ πῦγμ' ἐκάλυψαν  
 ἔρκας ἔμον βελίον, μήτις θάνατῶν ταχυπώλων  
 χαλκὸν ἐνὶ στήθεσσι βαλὼν, ἀπὸ θυμὸν ἔλατο  
 ἣ μιν, ἔον φίλον υἱὸν ὑπεξίφειρεν πολέμοιο,  
 εἰ δ' ἔον Καπαυνῆος ἐλήθετο σωθισιάων,  
 τῶν, ἃς ἐπέτελλε βοῆν ἀγαθὸς Διομήδης·  
 ἀλλ' ὄγε, τοὺς μὲν ἔσσε ἠρύκακε μώνυχας ἵππους  
 νόσφιν ἀπὸ φλοίσβου, ἐξ ἀντυγος ἡνία τῖναις,  
 αἰνέϊα δ' ἐπαΐξας, καλλιῖρχας ἵππους

ἔκ δ' ἑλάσσει βῶων μιν ἑυκνήμιδας ἀχαιῆς,  
 τῆς γάρ τοι γενῆς, ἧς βωῖπυρ δὴρύοπα Ζῆς  
 δῶχ' ὕϊος πωρὴν γαυμῆδος, οὐνικ' ἄρειοι  
 ἵππων ὅσοι ἔασιν ὑπὲρ ἠῶτ', ἠελιόντε,  
 τῆς γενῆς ἑκλήφου ἀναξὼν δῶν ἀγχιόση  
 λάβρη λαομέδοντος ὑποχῶν θύλιας ἵππους.  
 τῶν, οἳ ἔξ ἐγίνοντο ἐνὶ μεγάροισι γενέθλη,  
 τὺς μὲν τίσαρας αὐτὸς ἔχων, ἀτίταλλ' ἐπὶ φάτνῃ,  
 τῷ δ' οὐδ' ἀνρία δ' ὄκω μῆσσε φόβοιο,  
 εἰ τούτω κε λάβοιμιν, ἀροίμιθά κε κλῖος ἰδλὸν,  
 ὥς οἳ μὲν, τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀρόρουσιν,  
 τῷ δ' τάχ' ἐγγύθω ἤλθον ἑλάυνοντ' ὠκίας ἵππους,  
 τὸν, πρῶτερ' ὅς προσέειπε λυκαόν' ἀγλαὸς ἦρς,  
 Καρτιρόθυμι δαΐφρον ἀγαυὲ τυδῖε' ἦε,  
 ἢ μάλα σ' εἴ βέλεις ὠκὺ δαμώσασθαι, πικρὸς οἷσός.  
 νῦν αὐτ' ἐγχεῖν περὶ ὄμαι, αἶ κε τύχοιμι.  
 ἦ ῥά, καὶ ἀμπιπαλῶν, προΐει σδλιχόσκιον ἔγχος,  
 καὶ βάλλει τυδιδέο κατ' ἀσπίδα, τ' δ' ἐσσεπρὸ  
 αἰχμὴ χαλκίῃ πηαμένη, θώρηκε πηλάδῃ.  
 Τῷ δ' ἐπὶ μακρὸν αὖσε λυκαόν' ἀγλαὸς ἦρς,  
 βέβληται κενιῶνα διαμπεφείς, οὐδ' ἐσ' οἶα  
 δ' ἡρὸν ἐτ' ἀναχέσειε δαί, ἱμοὶ δ' ἐμὲ γ' ἔνχρος ἰδῶσαι,  
 Τὸν δ' εἰ ταρβύσας, προσέφη κρατερὸς Διομήδης,  
 ἤμβροτόβ. οὐ δ' ἐτυχς, ἀπὲρ οὐ μὲν σφῶϊγ' οἶα  
 πρὶν γ' ἀποπαύσειε δαί, πρὶν γ' ἢ ἑτιρόν γε πεισόντα  
 αἶμάς ῥ' ἔσσαι ἄρῃα τελαύεινον πολέμισιν,  
 Ὡς φάτο μιν, προέεικε, βέλεις δ' ἴθωσιν ἀθῆνη  
 ῥῖνα παρ' ὀφθαλμόν, λουκοὺς δ' ἐπέρησεν ἰδόντας,  
 τῷ δ' ἀπὸ μὲν γλῶσσαι πρυμνήν τάμει χαλκὸς ἀτρήν  
 αἰχμὴ δ' ἐξεχύθη παρὰ νείατον ἀνθριῶνα,  
 εἰπερ'

ἱκρίριόν πολεμίοιο, τὸν φθόγον ποθέοντα.  
 οἷο δ' ἐπαΐξας μεγαθύμου τυδείος υἱός,  
 αὐτὸν τε κτείνει, καὶ ἱλάσῃ μώνυχας ἵππους.  
 ἀλλὰ συγ' αὖτις ἔλουνε τί ἄρματα, καὶ τιῶ ἵππων.  
 τὸν δέ δ' ἰζῶν ἐπιόντα Διόξομαι ὄξυϊ δ' ἑρί.  
 Ως ἄρα φωνήσωντι· εἰς ἄρματα ποικίλα βάντοισι,  
 ἐμμεμαῶτ' ἐπὶ τυδείδῃ, ἔχον ὠκείας ἵππους,  
 τὸς δ' ἰδὲ δένεθρος καπαλήϊος ἀγλαός υἱός.  
 αἶψα δ' ἐκ τυδείδῃ ἔπια πηρόεντα προσήυδα.  
 Τυδείδῃ Διομήδεϊ ἐμῷ χεχαισμένῃ θυμῷ  
 ἀνδρ' ὁρώ κρατερῷ ἐπὶ σοὶ μεμαῶτε μάχεσθαι,  
 ἵν' ἀπέλιθον ἔχοντας, ὃ μῆν, τόξων εἴ ἐδ' ὡς  
 πάνδαρος υἱὸς δ' αὐτὶ λυκάονι<sup>α</sup> ἔνχεται<sup>α</sup> εἶν.  
 αὐείας δ' υἱὸς μεγαλύτορ<sup>α</sup> ἔνχεται<sup>α</sup> ἀγχιόσιο  
 εἴχεται ἱκλγάμῃ· μήτηρ δ' ἐοῖς ἄφροδίτη.  
 ἀλλ' ἄγε δὴ χαλῶμεθ' ἐφ' ἵππων· μή δέ μοι οὔτεω  
 θύνῃ σὺ προμάχων, μήπως φίλον ἦεν ὀλίωπης.  
 Τόν δ' ἄρ' ὑπόθρα ἰδὼν προσέφη κρατερὸς Διομήδης·  
 μήτι φόβον δ' ἀχόρευι, ἐπεὶ οὔσε πρὸς ἐμῷ ὄϊω.  
 οὐ γάρ μοι γοναῖον ἀλυσκάσειε μάχεσθαι,  
 οὐ δ' ἐκ καταπλήωσεν, ἔτι μοι μέν<sup>α</sup> ἔμπεδόν ἐστιν.  
 θκνέω δ' ἵππων ἐπιβανέμῃ· ἀλλὰ καὶ αὐτός,  
 ἀντίον εἴμ' αὐτῷ· φῆν' μ' οὐκ ἔα παλλὰς ἀθήνη.  
 τούτω δ' ἐοῖς πάλιν αὐτὶς ἀποίσσων ὠκείας ἵπποι,  
 ἄμφο' ἅφ' ἡμέων, εἰ γὰρ ἔτιρός γε φύγησιν.  
 ἄλλο δέ τοι ἔριω· σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλιο σῆσιν  
 αἴκω μοι πολυβυβλὸς ἀθήνη κῦδος ὀρέξῃ  
 ἄμφοτέρω κτεῖναι· σὺ δ' ἐκ τούτων μῆν ὠκείας ἵππους  
 αὐτῷ ἐρυσσάκειον ἐξ ἀντυχῆς ἡνία τέτινας.  
 αἰνῆας δ' ἐπαΐξας, μνηστῆρας<sup>α</sup> ἵππων.

# ΟΜΗΡΟΥ

δε λήπον' αὐτὰρ πεῖρος ἐς Ἴλιον ἐλθόνθ' αὖ  
 τόξοισιν πίσσωος· τὰ δ' ἔμ' οὐκ ἄρ' ἔμμελλον δινέσθαι·  
 ὅ δ' ἦ γὰρ διοίτισιν ἀρεῇσιν ἀφῆκα,  
 τυδὲ δ' ἦ τι, καὶ ἀπείδ' ἡ· ἐκ δ' ἄμφοτέροισιν  
 ἄρ' ἔκ' αἰμ' ἔστω βαλὼν· ἔγχερα δ' ἔμμελλον·  
 ἔσθ' ἔρα κακῇ αἰσῇ ἀπὸ πασάων ἀγκύλα τόξα  
 ἔμαυ τῷ ἰλὸ μιν, ὅτε Ἴλιον εἰς ἔρατ' ἐνὶ  
 ἀγέμῃν ᾤωσιν, φέρων χεῖρ' ἐκτοειδίῳ,  
 οἳ δ' ἐκ νεότησιν, καὶ ἐσέφομαι ὀφθαλμοῖσιν  
 παρὶ δ' ἔμην, ἀλοχόντε, καὶ ὑψηρεφὲς μίγα δῶμα  
 αὐτίκ' ἔπειτ' ἀπ' ἑμεῖο κώρητο μοι ὀμνέσθιος φῶς  
 εἰ μὴ ἐγὼ τῶ δὲ τόξα φανῶ ἐν πυρὶ θέην,  
 χερσὶ διακλασας· αἰεμώλια γάρ μοι ὀπηθεῖ,  
 Τῶν δ' αὐτ' αἰνείας ᾤωσιν ἀγὼς αὐτίοι ἥνδ' αὖ·  
 μὴ δ' οὕτως ἀγῶνι· πῶρος δ' οὐκ ἔσται ἄλλως,  
 πρὶν γ' ἐπὶ νώτῳ δ' αὐτῶν σὺν ἵπποισι, καὶ ὄχλοισιν  
 αὐτῶν ἰλθόντε σὺν ἔντισι περὶ θῆναι.  
 ἀλλ' ἄγ' ἑμῶν ὀχέων ἱπιβήστω, ὅφρα ἴδῃ καὶ  
 οἳ τῶν τοῖο ἵπποι ἐπιστάμενοι πεδίῳ,  
 κραπνὰ μάλ' ἔνθα καὶ ἔνθα διώκεμιν, ἥ δ' ἐφίβωται,  
 τῶ, καὶ νῶϊ πόλινδε σωσέσθων, εἴπερ ἄρ' αὐτε  
 Ζεὺς ἐπὶ τυδείδῃ Διομήδῃ κῦδος ὀρέξῃ.  
 ἀλλ' ἄγε νῦν μάστιγα, καὶ ἡνία σιγαλόοντα  
 δέξαι· ἐγὼ δ' ἵππων ἱπιβήσομαι, ὅφρα μολχώμαι·  
 ἢ σὺν τῶνδε δέδωξ' ἑμὲ λήσουσιν δ' ἑμοὶ ἵπποι·  
 Τῶν δ' αὐτε πρόσθε περὶ λυκαλόνθ' ἀγλαὸς ἦς·  
 αἰνείας, σὺν μὲν αὐτὸς ἔχ' ἡνία, καὶ τιδ' ἵππων·  
 μέλλων ὅφ' ἡνίοχος ἔωθότι καμπύλῳ ἄρμα  
 εἴσθων, εἴπερ ἄρ' αὐτε φεβόμεθα τυδείῳ ἡόν·  
 μὴ τῷ μὲν δέσσαντε, ματ' ἡσέσθων, οὐδ' ἐβλήθητον

ἐκφύριμα

ἀλλ' ἄγε τοῖσι δὴ ἔφης ἀνδρὶ βέλους, Διὶ χεῖρας ἀναχῶν  
 ῥε τις ὅδε κρατεῖ, καὶ δὴ κακὰ πολλὰ ἔοργε.  
 ῥῶας ἐπὶ πολλῶν τε, καὶ ἐσθλῶν γούνατ' ἐλυσσεν  
 ἢ μὴ τις θεὸς ἐστὶ κατεφωμμένος τρώεσσι,  
 ἵρῶν μηνίστας· χαλεπὴ δ' ἐθεῖς ἐπὶ μῆνισ·  
 Τόν δ' αὖτε προσέειπε λυκάων· ἄγλαός ἦός·  
 ἀντία ῥῶων βυληφόρε χαλκῷ χιτῶνων·  
 τυδείδῃ μιν ἔοργε δαΐφρονι πάντα ἔϊσσω,  
 ἀσπίδι γιγνώσκων, ἀνλώπιδίτε φυλακίῃ,  
 ἵππῃς τ' ἐθρόων· σάφα δ' οὐκ οἶδ' ἐθεὸς ἔσθιν,  
 εἰδ' ὅγ' ἀνὴρ, ὃν φημι δαΐφρονι τυδείῃ· ἦός,  
 οὐχ' ὅγ' ἀνδύθει θεῶν τάδε μαίνεται, ἀλλὰ τις ἄρχῃ  
 ἔστι· ἀθανάτων, νεφέλῃ ἐλυμένῃ ὥμους,  
 ὅς τ' ἔβ' βέλους ὠκὺ κιχήμενον ἔτραπεν ἄλλῃ·  
 ἢ δὴ γάρ οἱ ἔφηκα βέλους, καί μιν βάλεν ὥμον  
 διεξίον, ἀντικρὺν στήθε' ἑώρηκεν γυάλοιο.  
 καί μιν ἔοργ' ἐφάμην αἰδῶνι ἧτ' προϊάψαν,  
 ἔμπης δ' οὐκ ἰδέμεσθα· θεὸς νύ τις ἐστὶ κατ' ἧτος,  
 ἵπποι δ' οὐ παρέασι, καὶ ἄρματα, τῶν, κ' ἐπιβαίω,  
 ἀλλὰ πῃ ἐν μεγάλροισι λυκάων· ἔνδρα δὴ φροι  
 καλῇ, πρωτοπαγεῖς, νιοτὸν χεῖς, ἀμφὶ δ' ἐπέπλοι  
 πέπληνται· παρὰ δ' ἐσφιν ἑκάστω δί' ὕλης ἵπποι  
 ἔσθουσιν, κρὶ λοβυκὸν ἐρεπτόμενοι, καὶ ὀλύρας,  
 ἢ μὲν μοι μαλὰ πολλὰ γέρον ἀχμητὰ λυκάων  
 ἐρχόμενῳ ἐπέτιλλε δόμοις ἐνὶ τειχεῖσιν,  
 ἵπποι σίρμ' ἐκέλευε, καὶ ἄρμασιν ἐμμιμαῖτα,  
 ἀρχόμενοι ῥώεσσι κατὰ κρατερὰς ὁσμῖνας.  
 ἀλλ' ἔγωγε πιστόμην, ἢ τ' ἄν πολὺ κέρδιον ἦεν,  
 ἵππων φασδέμεν· μὴ μοι Διυοῖα β' φορβῆς.  
 ἀνδρῶν ἑλόμενον ἑωθέτης ἑδμήμα ἀδίδω,



ἐνθ' ἔλεν ἀσύνουον, καὶ ὑπείνορα ποιμένα λαῶν,  
 τὸν μὲν, ὑπὲρ μάστοις βαλὼν χαλκήρεϊ δ' ἄρι,  
 τὸν δ' ἑτέρου ξίφει μάχῳ κληῖδ' ἀπαρ' ὤμον  
 πληξ'· ἀπὸ δ' αὖ χένος ὤμον ἱεργαθεν ἠδ' ἀπὸ νῶτον,  
 τὺς μὲν, ἑκαστ'· ὃ δ' ἄβαντα μετώχῳ, καὶ πολυπόδον,  
 ἦϊας δὺνδ' ἄμ' αὐτ'· ὃν ἄροπόλοιο γέροντος·  
 τοῖς, οὐκ ἐρχόμενοις, ὃ γέρον ἐκρίνατ' ὀνείρες,  
 ἀλλὰ σφικς κρατερός Διομήδης ἱξινάει·  
 βῆ δ' ἐμπαρ' ξάνθορον τε, Θῳάνα τε, φαίνοπος ὕϊ·  
 ἄμφω τηλυγίτω, ὃ δ' ἑτάρῳ γ' ἡραῖ λυγρῶ,  
 ἦόν δ' ὅτ' ἐκίτ' ἄλλον ἐπὶ κτεάτεσι λιπέδαι,  
 ἐνθ' ὄγ' ἑὺς, ἱνάει, φίλον δ' ἐξαίνυτο θυμόν  
 ἀμφοτέρωιν, πατίει δ' ἐχέον, καὶ κῆδ' ἀ λυγρὰ  
 λείπ', ἐπὶ οὐ λῶντι μάχης ἱκνέσθ' ὄντε,  
 δ' ἐξατο, χηρωσάι ὃ σῆ· κτῆσιν δ' ἀτίοντο·  
 ἐνθ' ἦες πριάμοιο δῶν λάβε δαρδανίδαο,  
 ἔρ' ἐν δὲ φρῶ ἱόντας, ἐχέμονά τε, χρομίον τε,  
 ὡς δ' ἐλίων ἐν βασιθ' ὁρῶν ἐξ αὐχίνα ἄξει  
 πόρτι· ὃν ἢ βοὸς ξύλοχον καταβοσσεύωντων,  
 ὡς τὺς ἀμφοτέρους ἐξ ἵππων τυδ'· ὃν ἦος  
 βῆσ' κακῶς ἀίοντας, ἐπ' ἔτα δ' ἐτεύχε' ἱσὺ λαλ·  
 ἵππυς δ' οἷς ἐτάρωισι δίδ' ἐμπαρ' νῆας ἱλάνειν·  
 τὸν δ' ἴδ' ἐν αὐνίας ἀλαπάλλοντα σίχας ἀνδρῶν,  
 βῆ δ' ἴμ' ἄντε μάχῳ, καὶ ἀνὰ κλόνον ἐγχεάει·  
 πωλιδάρεον ἀντίθεον διζήμων· ἑῖπε ἐφ' ὄντοι,  
 εἴρε λυκάον· ἦ δ' ὄν, ἀμύμονά τε, κρατερόν τε·  
 σῆ δ' ἐπ' ὁρῶν αὐτοῖο ἑπὸς τέ μιν ἀντίον ἦν δα·  
 πωλιδάρε· πῶ τοι τόξον· ἴδ' ἐπ' ἑρόσωντες οἶσοι,  
 καὶ κλέος, ὃ οὐ τις τοι ἐρίβ' ἔται· ἐνθάδ' ἐγ' ἀνὴρ,  
 ὅ δ' ἐπ' ἑπὶ λυκίῃ· ὅς το γ' ἔχεται εἶν' ἀμείνων·

ἀλλ' ἄγε

ὦν τὸτ' ἔπατ' ἡρᾶτο βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης·  
 Κλυθὶ μοι αὐγιοχόιο Δὸς τέκος ἄβυτών,  
 εἴ ποτέ μοι καὶ πατρὶ φίλα φρονέουσιν παρ' ἑσθῆς  
 Μηῖν ἐν πολέμῳ· νῦν αὖτ' ἐμὶ φίλῃ ἀθήνῃ·  
 Δὸς δ' ἐπεὶ μετ' ἀνδρα ἱλίου, καὶ ἐς Ὀρμήν ἔχουσ' ἱλίου,  
 ὅς μ' ἔβαλε φθάμενθ', καὶ ἐπὶ χεῖται· οὐδ' ἐμὶ φρεσὶ  
 θηρόν ἐτ' ὄψεσθαι λαμπρόν φάος ἡιλιόιο.

Ὡς ἔφατ' οὐχόμενθ', τῷ δ' ἔκλυε παλλὰς ἀθήνη.  
 γυῖα δ' ἔθηκεν ἑλαφρά, πόδας, καὶ χεῖρας ὑπερβά-  
 ἀρχῷ δ' ἰσαμένη, ἔπεια πῆρόντα προσήνυδα·  
 θαρσύνων νῦν Διομήδου, ἐπὶ φώεσσι μάχεσθαι·  
 ἐν γὰρ τοῖς ἐθέεσσι μένος παρώϊον ἦεν  
 ἄρομον, οἷον ἔχισκε σακίσσας· ἰπποῖτα γυλύνε.  
 ἀχλὺν δ' αὖτε ἀπ' ὀφθαλμῶν ἔλυν, ἣ πρὶν ἐπῆσθαι,  
 ὄφρ' οὐ γινώσκεις ἢ μὲν θεὸν, ἢ δ' ἐκὼν ἀνδρα·  
 τοῦ, νῦν αἴ κε θεὸς παρώμενθ' ἐνθάδ' ἵκηται,  
 μὲν σύ γ' ἀθανάτοισι θεοῖς ἀνικρὺν μάχεσθαι  
 ποῖς ἄλλοις· ἀτὰρ εἴ κε Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη  
 ἔλθοι· ἐς πόλεμον, γένη· οὐτὰ μὲν ὀξέϊ χαλκῷ·  
 ἢ μὲν, ἄρ' ὥς ἐπῆσθ' ἀπείθετο γλαυκῶπις ἀθήνη·  
 τυδείδης δ' ἐξαυτίς ἰδὼν, προμάχοισιν ἐμίσχθη  
 καὶ πρὶν περ θυμῷ μεμαῶς φώεσσι μάχεσθαι·  
 δὴ τότε μιν τρὶς πόσον ἔλυν μένθ', ὅς τε λίσσεται  
 ἦν ῥὰ τε πσιμὴν ἀγρῷ ἐπ' ἑροπύκναις οἴεσσι,  
 χρᾶν σὴ μὲν τ' αὐλῆς ὑπεράλμενον, οὐδ' ἐδαμάσθαι,  
 τῷ μὲν τι δίνος ἔρσαν, ἐπείτα δ' ἐτ' οὐ προσεμύνεσθαι,  
 ἀλλὰ κρατὲρ σαθρὸς δύνεται, τὰ δ' ἔρημα φοβεῖται,  
 καὶ μὲν τ' ἀγχισηναὶ ἐπ' ἀλλήλοισι κίχωνται,  
 οὐτὰρ δ' ἐμμεμαῶς, βαθείης ἐξάλλεται αὐλῆς,  
 ὅς μεμαῶς, φώεσσι μίγῃ κρατερὸς Διομήδης.

ὡς οἱ μὲν, πονέοντο κατὰ κρατερὴν ὑσμίνῃ  
 τυδείδῃ δ' οὐκ ἄρ' ἔγχεϊς ποτίροισι μιν  
 ἢ μετὰ βῶσιν ὁμίλῃσι, ἢ μὲτ' ἀχαιοῖς·  
 οὐνε γὰρ ἀμπιδίον ποταμῷ πλήθοντι τοικῶς  
 χαμάρξω, ὅς τ' ὡς ῥέων ἐκίδασι γέφυρας·  
 τόνδ' οὐτ' ἄρ' τι γέφυραι ἐργαίμεναι ἰοχαιώσῃ,  
 οὐτ' ἄρα ἔρκα ἰοχαιωάων ἐειδηλίων.  
 ἔλθοντ' ἐξαπίνης, ὅτ' ἐπιβρίσῃ Διὸς ὄμβρο·  
 πολλὰ δ' ὑπ' αὐτῷ ἔργα κατ' ἔειπε καλὰ αἰήτων·  
 ὡς ὑπὸ τυδείδῃ πυκιναὶ κλονέοντο φάλαγγες  
 βῶων. οὐδ' ἄρα μιν μίμνοντο πολέες περὶ ἑόντο·  
 τὸν δ' ὡς οὖν ἐνόησε λυκάονθ' ἀγλαὸς ἦος  
 θύοντ' ἀμπιδίον, πρὸ ἴδου κλονέοντα φάλαγγας,  
 αἶψ' ἐπὶ τυδείδῃ ἱππιταίνετο χαμπύλα τόξα,  
 καὶ βάλ' ἐπαΐσσοντα, τυχῶν κατὰ δειξιὸν ὤμων  
 θώρηκος γυάλων. στήθε δ' ἱππας πικρὸς οἶσός·  
 ἀνελκνύ δ' ἐδίεχε παλάσσοιο αἵματι θώρηξ·  
 τοῦ δ' ἐπὶ μακρόν αὖσι λυκάονθ' ἀγλαὸς ἦος  
 ὄρνυδι βῶε μέγαθυμοι κέντρον ἱππων·  
 βέβληται γὰρ ἄετος ἀχαιῶν, οὐδ' ἐὶ φημί  
 δ' ἦθ' ἀναχέσσειναι κρατερὸν βίβος, ὃ ἱερόν με  
 ὤρσεν ἄναξ Διὸς ἦος ἀπορνύμενον λυκίηναν·  
 ὡς ἔφατ' εὐχόμενος· τόνδ' οὐ βίβος ὦκν' ἄμασσαν  
 ἀλλ' ἀναχωρήσας, πρὸ δ' ἱπποῖν καὶ ὄχλῳ φη,  
 ἔστη καὶ δινέων προσέφη καπαυήϊος ἦον·  
 ὄρσο πέποιον καπαυῖάδῃ, καταβύσσο διφρῆ,  
 ὅφρα μοι ἐξ ὤμοιο ἐρύσῃς πικρὸν οἶσόν·  
 ὡς ἄρ' ἔφη· δινέως δ' ἐκαστὸν ἱππῶν ἄλτο χαμαί·  
 πὰρ δ' ἐσᾶς, βίβος ὦκν' διαμπερές ἐξέρυσ' ὤμων·  
 αἶμα δ' ἀνθρόνυξέ στήθεσσι τοῖο χιτῶνθ'·

ὅ δ' ἐκὼς ἰκὼσ' ἔπειτα το πρὶν γ' ἰκέσασθαι,  
 ἀλλὰ μιν ἀφείδης δεικνύς μενέλαον  
 προΐων ἔθου φεύγοντα, μετὰ φρεσὶν οὐτάσιν εὐρύ  
 ὤμων μεταγυῖς, σὺ δ' ἐσθλὴν σφιν ἔλασσε.  
 ἔπειτα δ' ἐπὶ πρηνῆς, ἀράβησι δ' ἐτάβη ἐπ' αὐτῶ.  
 Μηειόνης δ' ἐφ' ἐρεχλόν ἐν ἥρατο τέκτονι ἦδ' ἰδὼν  
 ἄρμονίδην, ὅς χερσὶν ἐπίσταθ' ἀιδάλα πάντα  
 τούχην, ἔξχα γάρ μιν ἐφίλαθ' ἀλλὰς ἀθήνη.  
 ὅς κα' ἀλεξάνδρῳ τικτήνατο νῆας ἱίστας  
 ἄρ' ἐκὰς, αἱ πᾶσι κακὸν βῶσσι γέγοντο,  
 οἷ γ' αὐτῶ ἐπὶ οὗτι θιῶν ἐκθίσφατα ἦδ' ἰδὼν.  
 τὸν μὲν μηειόνης ὅτε δ' ἠκατέμαρπ' ἰδὼν κίων,  
 βεβλήκει γαυτόν κατὰ δειξιόν, ἠδ' ἐσχεπρὸ  
 ὀντίφ' κατὰ κύστην ὑπ' ὀσέον ἔλυθ' ἀκωκή,  
 γυῖς δ' ἔειπ' οἰμῶξας θάνατος δ' ἐμιν ἀμφεκάλυψεν.  
 πηδαιῶν δ' ἄρ' ἐπεφνε μέγης ὀντήνορ' ἦδ' ἰδὼν,  
 ὅς ῥα νόθος μὲν ἔω, πύκα δ' ἐπεφνε δ' ἴα θειανῶ  
 ἵστα φίλῳσι τέκεσσι χερσὶν ἰομένη πόσιν ὤ.  
 τὸν μὲν φυλείδης δεικνύς ἐγγύθω ἰλθὼν,  
 βεβλήκει κεφαλῆς κατὰ ἰνέον ὀξείῃ δ' ἰδὼν.  
 ὀντήνορ' ὦν ὀδόντας ὑπὸ γλῶσσαν τάμει χαλκός,  
 ἔπειτα δ' ἐν κενίῳ· ψυχὸν δ' ἔλε χαλκὸν ὀδόντι  
 Εὐρύπυλος δ' ἀναιμόνιδης ὑψήνορα δ' ἴδων.  
 ἦδ' ἰδὼν ὑπερθύμην Δολοπίον, ὅς ῥα καμάνδρῳ  
 ἀρητὴρ ἰτίτυκτο· θεός δ' ὥς τίς πο δ' ἦμω,  
 τὸν μὲν ἄρ' Εὐρύπυλος Εὐαίμον' ἀγλαὸς ἦος  
 προΐων ἔθου φεύγοντα μετὰ δ' ὀσμάδην ἔλασ' ὤμορ  
 φασγάνῳ αἰξας, ἀπὸ δ' ἔξεσε χιρὰ βαρύνου.  
 αἰματόεσσι δ' ἐπὶ χερσὶν πεδίῳ πίσει, τὸν δ' ἐκείν' ὄντι  
 ἔλαβε παρ' ὤμων θάνατον, καὶ μοῖρα κρεατὴν

# ΟΜΗΡΟΥ

οἱ δ' οἱ μὴ πάγχυ γέρον ἀσχεμένῳ ἴκῃ  
 ἵππῃς δ' ἐξιλῆσας μεταθύμῃ τυδείῃς ἴδῃ  
 θῶκιν ἱταίροισιν κατὰ γῆν κούλας ἐπὶ νῆας.  
 θῶες δ' ἐμεγάθυμοι ἐπὶ ἴδον ὅτε δάρετ' ὅ,  
 πῶν μῆν' ἀλυσσάμενον, πῶν δ' ἐκτάμενον παρ' ὄχλοφιν,  
 πᾶσιν ὀρίνθη θυμός. ἀτὰρ γλαυκῶπις Ἀθήνη  
 χερὸς ἔλυσ', ἐπέεσσιν προσεπύθεα θυρόν ἄρνα,  
 ἄρεϊ, ἄρεϊ βροτολαίῃ· μίαι φόνε, τῇ χεσσιπλήτῃ  
 οὐκ ἂν δ' ἡ θῶας ἰάσαιμην, καὶ ἀχαιῶς  
 μάρνασθ'· ὃς ποτέροισι πατήρ Ζεύς κῦδος ὀρέξῃ  
 νῶϊ δ' ἐχάσμευδα, Διός δ' ἀλιώμεθα μῆνιν·  
 οἱ ἐπύσσαι μάχης ἐξήγαγε θυρόν ἄρνα.  
 πῶν μῆν' ἔπειτα καθεῖσιν ἐπ' ἠϊόντι σκαμάνεσσιν.  
 θῶας δ' ἐκλινσαν δῶαοί· ἴλι δ' ἄνδρα ἔκαστος  
 πῆλ' ἔβαν· πρῶτος δ' ἄναξ Ἀθηναίων ἀγαμέμνων  
 ἀρχὸν ἀλιζώνων ὀδύον μέγαν ἐκείλει δῖφρον·  
 πρῶτ' ὅ γάρ σφι φέβεντι μεταφρένῃ ἐν δόρυ πῆξιν  
 ὦμον μισσηγύς· στήθε δ' ἐθήεσφιν ἔλασσε  
 θούπησιν ὃ πεσὼν, ἀράβησε δ' ἐτύχε' ἐπ' αὐτῷ.  
 ἴδομῆνός δ' ἄρα φάσεν ἐν ἥρατο μήνοος ἴδον  
 βῶρυξ· ὅς ἐκ τάρης ἐειβόλακ' ἐβλήθη.  
 πῶν μῆν' ἄρ' ἴδομῆνός δ' ἐκκλινῶν, ἐγχείμασθ' ὦ  
 νύξ' ἵππων ἐπιβησόμενον κατὰ δειξίον ὦμον,  
 ὅτε περ δ' ἐξ ὀχέων· συγερὸς δ' ἄρα μιν σκόρος εἴλε,  
 πῶν μῆν' ἄρ' ἴδομῆνός· ἐσὺ λινὸν θεράποντες.  
 ἴδον δ' ἐσφοφίοιο καμάνδριον αἰμίονα θήρης  
 ἀφείδης μινέλαος· ἴλ' ἐγχεί δ' ἐξυμέντι,  
 ἰδὼν θηρητῆρα δῖδαξεν γὰρ ἄρτι μιν αὐτῇ  
 βάλλειν ἄγρια πάντα· τῷ, τὲ πρέφει οὐρεσσιν ὕλην  
 ἰὼν· οὐδ' οἱ τότε γ' ἔχασσε· ἀρτι μιν ἰοχέουρα



49

ΙΔΙΟΔΟΣ. Ι. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Εἰ βάλλῃ Κυθήραν, ἄρῃα τι τυδὲ ⚔ ἦός.

Νῦν δὲ τυδείδῃ Διομήδῃ  
 παλλὰς ἀθήνη  
 δῶκε μὲν ⚔ καὶ θάρσῃ, ἵ  
 ἐκδήλῃ ⚔ μετὰ πᾶσιν  
 ἀργείοισι γίνοιτο, ἰδὲ κλῖος ἰδὼδὸν ἄροισ  
 διατῆ οἱ ἐκ κόρυθος τε, καὶ ἀσπίδος ἀκάμπτου πῦρ,  
 ἀσίρ ὀπωρινῷ ἱναλίζκιον, ὅς τε μάλισα  
 λαμπρὸν παμφαίνῃσι λελευμένῃ ὠκιστοῖς.  
 ὧτόν οἱ πῦρ διατῆ ἀπὸ κρατὶς τε, καὶ ὤμορ.  
 ἄρσει δὲ μὴ κατὰ μέσσην, ὅθι πλῖστοι κλονέοντο.  
 ἦν δὲ τις ἐνρώσσι Δάρης ἀφνηδὸς, ἀμύνειν,  
 ἱρὸς ἠφαίσιο, δύω δὲ οἱ ἦϊς ἔστην,  
 φυγὰς ἰδῶός τε, μάχῃς ἔν ἐσδύτε πάσης,  
 τῷ οἱ ἀποκρινθέντι, ἰναπτίω ὀρμηθήνην,  
 τῷ, μὲν, ἀφ' ἵπποιον. ὃ δ' ἀπὸ χθοῖος ὤριυτο πείζον.  
 οἱ δ' ὅτε δὴ χεῖδὸν ἦσαν ἐπ' ἀμύλοισιν ἰόντες  
 φυγὰς ῥα πρῶτερ ⚔ προΐει δολιχόσκιον ἔγχος.  
 τυδείδῃ δ' ὑπὲρ ὤμορ ἀεισιρὸν ἔλυσ' ἀκοκῆ  
 ἔγχῃ ⚔. οὐδ' ἔβαλ' αὐτόν. ὃ δ' ὕστερος ὤρυστο χαλκῷ  
 τυδείδῃς, τῷ δ' οὐχ ἄλιον βέλος ἐκφυγε χερσὸς,  
 ἀλλ' ἔβαλε σῆθος μεταμάζιον. ὥς δ' ἀφ' ἵππων.  
 ἰδῶος δ' ἀπόρυσσι λιπὼν περικαλλία δίφρων,  
 οὐ δ' ἔτλη περιβῆναι ἀλλήλων κταμένοιο.  
 οὐδὲ γὰρ οὐδὲ κιν αὐτὸς ὑπέκφυγε κῆρα μίλωνος.  
 ἀλλ' ἔφρασε ἔρυσσέναι δὲ νυκτὶ καλῆτα.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Ε. ΟΜΗ-  
ΡΟΥ ΡΑΨΩΔΙΑΣ.

Ιομήδης ἀθηνᾶς αὐτῷ ἀνελαμβανομένης, ἀεικέλιον  
 δὲ καὶ πολλὰς ἀνταρτίων πόλεμον, τιρώσκει δὲ  
 ἀφροδίτῃ κατὰ τῆς χειρὸς, καὶ ἄρια κατὰ τῆς  
 κινήων. ἀνείσκει δὲ ὑπὸ αὐτῷ πληγέντα λίθῳ, ἀπόμωρος  
 διασώζει. τληπόλεμον δὲ, ὑπὸ σαρπηδόνι ἀνταρτίται.  
 θεῶν δὲ ἄρσιν Ζεὺς ἐπιπλήττει, ἵσταται δὲ αὐτὸν παύειν ὃ  
 νῦν θινὸν ἰατρῶν.

ΙΔΙΑ

οἳ ἔμεινον περ ἰόντα, καὶ ἴφθιμον, καὶ ἄγαστον.  
 ὦσαν ἀπὸ σφείων, ὃ δ' ἔχασσά μιν, πειλεμίχθη.  
 ὣς τῶν ἐν κρηῖσι παρ' ἀλλήλοισι τετάδιω.  
 ὅτοι ὁ μῦθ' ἔβηκ' ὅ δ' ἐπεὶν χαλκὸν χιτῶνων.  
 ἤγεμονες, πολλοὶ δ' ἐπεικτέονες καὶ ἄλλοι.  
 ἐνθά μιν ἔκειτο ἔργον ἀνὴρ ὀνόσασα μιν ἔλθον.  
 ὃς τις ἔτ' ἀβλήρῃ καὶ ἀνούτῃς ὄξει χαλκῷ  
 δινύοι κατὰ μέσσην ἄγοι δ' ἐπαλλὰς ἀθήνη  
 χερὸς ἔλυσ', αὐτὰρ βελίων ἀπερύκει ἐρωήτ.  
 πολλοὶ γὰρ βῶν καὶ ἀχαιῶν ἔμαζ' ἐκείνῳ  
 πρῶτις ἐν κρηῖσι παρ' ἀλλήλοισι τίττατο.

Ο Μ Η Ρ Ο Υ

δούπησαν δ' ἐπισῶν, ἀράβησι δ' ἐτόλχε ἱπ' αὐτῶν.  
 χώρησαν δ' ὑπὸ τε προμάχοι, καὶ φαίδιμος Ἴκτωρ.  
 ἀργεῖοι δ' ἐμὶ γ' Ἴαχον, ἐρρύναντο δ' ἐκρούς.  
 ἴθυσαν δ' ἐπὶ πολὺ προτέρω. νιμίσθησε δ' ἀπόλλων  
 πόρρ' ἅμ' ἐκαστὶ δῶν. πρῶτασι δ' ἐκέχλειτ' αὔσας.  
 ὄρνυδ' ἱππόδαμοι πρῶτες, μὴ δ' εἴκετε χάρμης  
 ἀργείοις. ἐπὶ οὐ σφιλὲς χροῶς, ὅ δ' ἐσίδηρθε.  
 χαλκὸν ἀνασχέδαι ταμισίχρ' αἰετ' ἐβαλομένοισιν.  
 ὅ μ' ἐν οὐδ' ἀχιλὺς θέπιδος παῖς ἠυκόμοιο  
 μάρναται, ἀλλ' ἐπὶ νηυσὶ χόλ' ἐν θυμῷ γὰρ πίπῃ.  
 Ὡς φάτ' ἀπὸ πηλίου δεινὸς θεὸς. αὐτὰρ ἄχαιὸς  
 ὤρσε Διὸς θυγάτηρ κυδίστη πειτογένησα.  
 ἐρχομένη καθ' ὅμιλον, ὅθι μεθίετας ἴδοιτο.  
 ἐνθ' ἀμαρυγκέδω Διῶρεα μοῖρ' ἐπίδῃσι.  
 χρῆμα δ' ἴδω γὰρ βλήτο παρὰ σφυρὸν ὀκρυόεντι  
 κούμῳ διεστῆν. βάλε δ' ἐσθλῶν ἀγρὸς ἀνδρῶν.  
 πείρως ἰμβρασιδῆς, ὅς ἄρ' αἰνόθεν ἐλληλεῖθε.  
 ἀμφοτέρω δ' ἐτένοντε, καὶ ὅς ἑα λῆας ἀναιδέας  
 ἀχρὶς ἀπηλθίσαν. ὃ δ' ὑπὲρ ἵππων ἐν κενήσῃ  
 κάππεσεν, ἀμφω χεῖρ' ἐφίλ' ἐτάροισι πετάσας,  
 θυμὸν ἀποπνείων. ὃ δ' ἐπέσθραμνεν, ὅς ῥ' ἐβαλὲν πορρ'  
 πείρως. οὐτὰ δ' ἐδ' ἐπὶ παρ' ὀμφαλόν, ἐκ δ' ἄρα πᾶσαι  
 χεῖρ' ἅμ' αἰχμῆς. τὸν δ' ἐσθλὸς ὄσ' ἐκάλυψε.  
 ἐν δ' ἐσθλὸς αὐτὰλὸς ἐπὶ αὐτῷ μῆλον βάλε δ' ἐπὶ  
 εἰρηνὸν ὑπὲρ μάστοιο. πάγῃ δ' ἐν πνέοντι χαλκός.  
 ἀρχιμόλον δ' ἐοῖ ἦλθε θόας. ἐκ δ' ὄμβριμον ἔγχετο  
 ἐσθλῶς εἰρηνόιο. ἐρύσασθαι δ' ἐξίφος ὄξυ.  
 ἔσθ' ὅ γε γαστέρα τύψ' ἐμίστω, ἐκ δ' αἶνυτο θυμὸν.  
 τόλχεα δ' οὐκ ἀπίδυσεν. πρίσθησαν γὰρ ἱπταῖροι,  
 θρηῖκες ἀκρόκομοι, δολίχ' ἔγχεα χερσὶν ἔχοντες,  
 οἳ ἔμιν

ἦϊθιόν, θαλερόν, σιμοείσιον, ὅν ποτε μύθηρ  
 ἰδὴθεν κατέκτανε, παρ' ὅχθησιν σιμόωντο  
 γένεατ', ἐπὶ δ' αὖτε ἔκαστον ἄμ' ἑσπερὸν μῆλα ἰδέσθαι.  
 ἔνθα κ' αὖ μιν κάλειον σιμοείσιον, οὐ δ' ἔκαστον  
 ὄρεϊ π' αὖ φέροιτο ἀπὶ δ' ὤκει. μινυθιάδι δ' οὖν οἱ αὖτε  
 ἐπὶ λιβ' ὑπὸ αὐαντὸς μεταθύμυθον δ' ἄρ' ἰδ' αὖτε.  
 πρὸ δ' ἄρ' αὖ μιν ἰόντα βάλε κῆθος, παρὰ μαζόν  
 δ' ἔξιδ' ἀντιπρὸς δ' ἰδ' ἄρ' αὖτε χάλκῳ ἐγχευ  
 ἔλθον. ὅδ' ἔν' ἐν κενύσει χαμαὶ πίσει αὖτε ἄρ' αὖτε,  
 ὅδ' ἔν' ἐν ἐσπερῇ ἔλθον μετὰ λιβ' ἐπὶ φέροιτο  
 λιβ' αὖτε οἱ ὅσοι ἐπ' ἀκροτάτῃ πεφύασιν  
 τῆν μιν ἀρμασπῆος ἀντὶ αὖτε σιδ' ἄρ' αὖτε  
 ἔξιδ' αὖτε, ὅφρα ἴτω κάμψιν περικαλλὴ δ' ἄρ' αὖτε,  
 ἢ μιν τ' ἀρμασπῆος κίττα ποταμοῖο παρ' ὅχθησιν,  
 ὅδ' ἔν' ἀντιπρὸς σιμοείσιον ἔξιδ' αὖτε  
 αὖτε δ' ἰδ' αὖτε, τῶν δ' ἀντιπρὸς αὖτε ἄρ' αὖτε.  
 πρὸ δ' ἄρ' αὖ μιν ἰόντα ἀκόντισσον ὅξιν δ' ἄρ' αὖτε.  
 τῶν δ' αὖτε αὖτε. ὅδ' ἔν' αὖτε ὅδ' αὖτε ἔλθον ἔλθον  
 βιβλῆκα βιβλῆκα, νύκτωρ ἔλθον ἔλθον.  
 ὅδ' αὖτε αὖτε. νύκτωρ δ' οἱ ἔλθον χερσὶ.  
 τῶν δ' ὅδ' αὖτε μάλα θυμὸν ἀποκταμένοιο χολώθη.  
 αὖτε δ' ἔλθον προμάχων κινεσθῆναι αὖτε πρὸς χάλκῳ,  
 κῆ δ' αὖτε μάλ' ἔλθον ἰδ' αὖτε ἀκόντισσον δ' ἄρ' αὖτε,  
 αὖτε ἔλθον παπλήνας ὑπὸ δ' ἔλθον κικάδον  
 ἀντιπρὸς ἀκόντισσον. ὅδ' οὖν ἄλλῳ βίβον ἔλθον,  
 ἔλθον ἔλθον πρὸς νότον βάλε δ' ἄρ' αὖτε ὤκωντα,  
 ὅς οἱ αὖτε ἔλθον ἔλθον παρ' ἰππων ὤκωντα,  
 τόν δ' ὅδ' αὖτε ἔλθον χολώσασθαι αὖτε, βάλε δ' ἄρ' αὖτε  
 κορσῶν. ὅδ' ἔλθον ὅδ' αὖτε ἀκροτάτοιον πύρρον  
 αὖτε χάλκῳ χάλκῳ. τόν δ' αὖτε σκότος ἔλθον ἔλθον.



# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ὃ σφιν καὶ τότε νῆκας ὁμοῖον ἔμβαλε μίσθῳ,  
 ἱρκαμένη καὶ ὁμιλον, ὀφίλλουσα σόνον ἀνδρῶν.  
 οἷδ' ὅτε δ' ὅρ' ἐν χῶρον ἔνα ξωίνοντις ἴκοντο,  
 σὺν δ' ἔβαλον βῆε, σὺν δ' ἔγχεα, καὶ μινὲ ἀνδρῶν  
 χαλκιοθροήκων· ἄταρ, ἀσπίδος ὁμφαλόεσσαν  
 ἔπληντ' ἀλλήλοισι, πολλὰς δ' ὀρηματ' ὁδὸς ὀρώρῃ.  
 ἔνθα δ' αἶμ' οἴμαγ' ἦτε, καὶ εὐχολή πῖλον ἀνδρῶν.  
 ἑλκύνοντες τε, καὶ ὀλλυμένων· ῥίε δ' αἵματι γαῖαν.  
 ὣς δ' ὅτι χεῖμαρ' ῥοι ποταμοὶ κατ' ὄρισφι ῥέοντες  
 ἐν μισγὰ γκεῶν συμβάλλουσι ὄβριμον ὕδωρ  
 κρητὸν ἐκ μεγάλων κούλῃς ἐνθάδε χαράσσει,  
 τῶν δ' ἐπὶ τὴν ὁδὸν δ' ἔπουν ἐν οὐρίσιν ἐκλυε ποιεμένη  
 ὥς τῶν, μισγομένων, γίνετ' ἰαχὴ τε, φόβος τε.  
 προῖος δ' ἀντίλοχος βῶων ἔλεν ἀνδρα κερυσηῖν  
 ἰωλὸν ἐνὶ προμάχοισι θαλυσιάδῃω ἐχέπωλον,  
 τὸν δ' ἔβαλον προῖος κέρυθος φάλλον ἱπποδάμειον  
 ἐν δὲ μετώπῳ πῆξε· πῆρσε δ' ἄρ' ὁ δέον ἐῖσα  
 αἰχμὴ χαλκίῃ, τὸν δὲ σκοῖε· ὅα' ἐκάλυψεν.  
 ὕστερ δ' ὥς ὅτι πύργος ἐνὶ κρατερῇ ὕσμινῃ.  
 φρ, δὲ πεισόντα ποδῶν ἔλαβε κρείων ἱλιφόνωρ  
 χαλκιδοντιάδης, μεγαθύμων ἀρχὸς ἀδέντων.  
 ἔλκε δ' ὕπ' ἐκ βελίωρ λυλιμμένῳ, ὄφρα τὰ χεῖρα  
 τῷ χεῖρ σπλάσσει· μίνωθα δὲ οἱ γίνεθ' ὀρμή,  
 νικητὸν γὰρ δ' ἐρύοντα ἰδὼν μεγαθύμῳ ἀγῆνωρ,  
 πλωρὰ, τὰ, οἱ κύψαντι παρ' ἀσπίδος, ἐξέφραάνθω  
 οὕτως ἐξυπὶ χαλκήρεϊ· λῦσε δὲ γαῖαν.  
 ὥς φρ μὲν λίπε θυμός· ἱπ' αὐτῷ δ' ἔργον ἐτύχου  
 ἀργαλίῳ βῶων, καὶ ἀχαιῶν, οἱ δὲ, λύνει ὥς,  
 ἀλλήλοισι ἐπὶ ῥυσσά· αὐτὴ δ' ἀνδρ' ἰδνοπάλιον,  
 ὃς ἔβαλ' ἀντιμῖον· ἡδὲν τιλαμῶν· ὡς αἶε

ἔφηνοντι μάχιδαι ἑυκνήμιδας ἀχαιῶς.  
 τούτῳ μὲν γὰρ κῦδος ἄμ' ἔφεται, εἰκὼν ἀχαιοῖ·  
 βῶας δ' ἠώσασσιν, ἔλῳσί τε ἴλιον ἱρήν.  
 τούτῳ δ' ἂν μέγα πένθος ἀχαιῶν δ' ἠσθέεντων.  
 ἀλλ' ἄγε δὴ καὶ νῶϊ μεδόμεθα θοοῦ εἶδος ἀλκίης,  
 ἧ ῥά, καὶ ἐξ ὀχέων σύν τ' ὀύχεσιν ἄλβ' χαμάδι.  
 δεινόν δ' ἔβραχε χαλκὸς ἐπὶ σῆθεσιν ἄνακτος  
 ὄρνυμένῃ· ὑπόκιν' ταλασίφρονά περ δ' ἔ' ἔλῳν.  
 ὣς δ' ὅτ' ἐν αἰγιαλῷ πολυηχίῃ κύμα θαλάσσης  
 ὄρνυτ' ἱπασυτέρων ζιφύρῃ ὑποκινύσαντ'·  
 πόντῳ μὲν ταπρῶτα κερύσσεται, αὐτὰρ ἔπειτα  
 χέρσῳ ῥηγνύμενον μεγαλαβρίεσσι, ἀμφὶ δ' ἑ τ' ὄχρεα  
 κύρβον· ἰὸν, κερνυῖται· ἀποπλύνει δ' ἄλως ἀχλὺν.  
 ὣς τότε ἱπασυτέραὶ δ' ἀναῶν κίνωτο φάλαγγες,  
 νωλιν μέσσω πόλεμόν δ' ἐκίλευ· δὲ εἴσιν ἔκαστος  
 ἔργον· οἳ δ' ἄλλοι, ἀκλὴν ἴσαν· ὅδ' ἐκίφαινα  
 πύσσαν λαὸν ἔπιπαι, ἔχοντ' ἐν σῆθεσιν αὐδ' ἰόν,  
 σιγῇ δ' ἐσθιότες σσημάντορας· ἀμφὶ δ' ἐπ' αἶσι  
 τ' ὀύχεα πακίλ' ἔλαμπε, τὰ, ἑμῶμοι ἐσιχρόωντο·  
 πῶες δ' ὥς τ' ὅτ' ἔσιν πολυπύεμον· ὁ δ' ἄρ' ἐν αὐλῇ  
 μυρία ἐσθλάσιν ἀμειλόμενοι γάλα λυκόν,  
 ἀλγίχες μεμακῦσαι, ἀκρόσασσιν ὅπα ἀρνῶν,  
 ὥς πρῶων ἀλαλήτης ἀνὰ σραπὴν δὺρυν' ὀρώρε·  
 οὐ γὰρ πάντων ἦεν ὁμὸς θεός· οὐδ' ἴα γῆρυς,  
 ἀλλὰ γλῶσ' ἑμέμικτο, πολὺ κληθεὶ δ' ἴσαν ἄνδρες·  
 ὧρσε δ' ἐκ τῆς μῆν' ἄρης, τὸς δ' ἐκ, γλαυκῶπις ἀθήνη,  
 δειμόσ' ἦδ' ἐκ φόβος, καὶ ἔκ' ἀμολὸν μεμακῦα  
 ἄριος ἀνδροφρόνιοι κασιγνήτη, ἑτάρητι,  
 ἧ τ' ὀλίγη μὲν πρῶτα κερύσσεται, αὐτὰρ ἔπειτα  
 θύραϊ δ' ἐσθρίξει κάρη, καὶ ἐπὶ χθονὶ βαίνει,

О М Н Р О У

ὁπύγονι

Τηλεμάχιο φίλον πατέρα προμάχοισι μνῆντα  
 βῶον ἱποδάμοιο, σὺ δὲ ταῦτ' ἀνιμῶλια βάψῃς.  
 Τόν δ' ἐπιμειδῆσθε προσίφη κρείων ἀγαμέμνων,  
 ὡς γυνῶ χωομένοιο, πάλην δ' ὄγχε λαΐφρο μῦθον.  
 Διοσκυλὲς λαερτιάδῃ πολυμήχαν' ὀδυσαδῶ,  
 οὐτίσιν ἐν κείῳ πειρώσιον, οὐτὲ κελύδω,  
 εἴδω γάρ ὡς τοι θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι φίλοισιν  
 ἔπια δύνει οἶδε, τὰ, γὰρ φρονέεις ἅτ' ἐγώ περ.  
 ἀλλ' ἴθι ταῦτα δ' ὀπίθεον ἀριστόμεθ', ἵτι κακὸν νῦν  
 εἴρηται. τὰ δ' ἐπάντα θιοὶ μεταμῶλια θύειν  
 Ως ἐπὶ δὲ, τὺς, μὲν λίπεν αὐτῶ. βῆ δ' ἐμὲτ' ἄλλος  
 εὖρε δὲ τυδῆϊ Θῆλῳ ὑπὲρ θυμοιο διομήδεα,  
 ἱσχυότ' ἐνθ' ἵπποισι, καὶ ἄρμασι καλλητοῖσι.  
 παρ δ' εἰ οἶ, ἐξέκη δεινὸς καπανηῖος ἦος  
 καὶ μὲν ἔρνε κίεσθαι ἰδὼν κρείων ἀγαμέμνων.  
 καὶ μιν φωνήσας, ἔπειτα πειρώσωντα προσεΰεδα.  
 ὦ μοι τυδῆος ἡ δὲ δαΐφρονος ἱποδάμοιο  
 τί πῶσθε; τί δ' ὀπιπλόφει πολέμοιο γαυρούς;  
 ἔμην τυδῆϊ γ' ὥς φίλον πῶκαζέμεν ἦεν,  
 ἀλλὰ πολὺν πρὸ φίλων ἱτάρων δηίοισι μάχεσθαι  
 ὡς φάσκεσθ' οἱ μιν ἴδοντο πονοδύμῳ. οὐ γὰρ ἐγὼ γὰρ  
 ἦντησ', οὐδ' εἰ ἴδοντο. πείθει δ' ἄλλων φασὶ γένεσθαι.  
 ἦτοι μιν γὰρ ἄτερ πολέμου ἐσῆλθε μυκνύας  
 ξυῖνος, ἅμ' ἀντιθέω πολυνεΐκεϊ λαὸν ἀγείρων,  
 εἴρα τότ' ἐτρατόωνθ' ἱερά πρὸς τείχεα θύβης.  
 καί εἰ μάλα λίσσασθ' ὀδυρ καλὸς ἐπικεύρεται.  
 οἶδ' ἔθελον δόμῳ καὶ ἐπὶ νηὶ ὡς ἐκ κελύδου.  
 ἀλλὰ βῶν ἐρεψέ, παρκαΐσια σέματ' ἀφαιδνῶν.  
 οἶδ' ἐπὶ δ' ὡς ἔχοντο, ἴδ' ἐπὶ δ' ἔχοντο,  
 ἀτρωπόνδ' ἴδοντο διαθύχοισιν λεχέποιον,

# ΟΜΗΡΟΥ

αἰχμᾶς δ' αἰχμάσσουσι κώτιον, οἵ περ ἱμεῖο  
 ὀπλοῦντο γυγᾶσι, πεποίθασιν τε βίηφι  
 Ως ἱφάτ' ἀρείδης δ' ἐπαρώχθη γηθόσσωος κῆρ.  
 εὖρ ἤϊον πετιῶο μινεῖα πλήξει πορ  
 ἱσταότ', ἀμφὶ δ' ἀθλοῦσσι, μήσους αὐτῆς.  
 αὐτὰρ ὁ, πλησίον εἰσέκη πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 παρ' ἐκὶ καλλήνων ἀμφὶ εἰχλὸς οὐκ ἀλαπαδεύει  
 ἱστάσαν. ὃ γάρ πω σφιν ἀκνύσο λαὸς αὐτῆς,  
 ἀλλὰ νῆον σωσεινόμεναι κίνωσ' φάλαγγες  
 τῶν δ' ἱπποδάμων, καὶ ἀχαιῶν, οἳ δ' ἐμύνοντι,  
 ἱστασθαι, ὅππότε πύργος ἀχαιῶν ἄλλος ἐπιθώρ-  
 τῶν δ' ὀρμύσει, καὶ ἄρξιν πολέμοιο,  
 τοὺς δ' ἰδὼν νέκυσσιν ἀναξ' ἀνδρῶν ἀγαμίμων,  
 καὶ σφίνας φωνήσας, ἔπειτα πηρόντα προσκύνει.  
 ὃ ἤϊε πετιῶο διοτρίφεις βασιλῆες,  
 καὶ σὺ κακῶσι δόλοισι κτεσμένει κερδαλέοφρον.  
 τί πῃ καταπλώσαντες, ἀφίστατε, μίμντε δ' ἄλλως  
 σφῶν μὲν τ' ἐπίσκει μετὰ πρώτοισιν ἰόντας.  
 ἱστάμεν, ἢ δ' ἐμάχης κτεσέμεν ἀντιβολήσας,  
 πρώτῳ γάρ καὶ δαίφει, ἀκνυάϊεον ἱμεῖο,  
 ὅππότε δαῖτα γίγασιν ἐφοπλίσομεν ἀχαιοί,  
 ἔνθα φίλ' ὀπῆα λεία κρία ἱδμεσθαι, ἢ δ' ἐκύνελλας  
 οἷον πινέμεσθαι μελινδῆες, ὅφρ' ἐθέλωμεν,  
 νῦν δ' ἐφίλωσ' ἔδρόσσε, καὶ εἰ δέκα πύργοι ἀχαιῶν  
 ἐμῶν προπάροιθε μαχόμεσθαι κλέϊ χαλκῷ.  
 Τόν δ' ἄρ' ὑπόσθ' ἰδὼν, προσέφη πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 ἀρείδην, ποῖόν σε ἔπος φύγην ἱρκὸς ὀδόντων;  
 πῶς δ' ἢ φῆς πολέμοιο μινεῖα, ὅππότε ἀχαιοὶ  
 τῶσιν ἐφ' ἱπποδάμοισιν ἐγείρομεν ὄξυν' ἄρνας;  
 ὅττι καὶ ἦν ἐθέλωμεν, καὶ αἰκίετοί τε, μινεῖα,



οὐς ἔταρξεν σέλλοντα, καὶ ὀτρύνοντα μάχεσθαι.  
 ἀμφὶ μέγαυ πελάσσοντα, ἀλάστορά τε, χρομίοντι,  
 αἶμονά τε κρείοντα, βίαν τὰ τε ποιεμένα λαῶν,  
 ἱππῆας μὲν πρῶτα σὺν ἵπποισιν, καὶ ὄχισφι  
 παῖδους δ' ἐξόπιθον σῆσεν παλίας τε, καὶ ἐωλοῦς,  
 ἔρκους ἑμῶν παλαιοιο. κακῶς δ' ἔς μέγαρον ἔλασσαν,  
 ὄρρεα καὶ οὐκ ἐθέλων τις, ἀναγκασίη παλεμίστη.  
 ἱπποῦσιν μὲν πρῶτ' ἐπιτέλλετο. τοὺς γὰρ ἀνὼ γῆ  
 σφύς ἱππυς ἐχέμεν. μὴ δ' ἐκλονέειν οὐ μίληρ,  
 μὴ δ' ἐπὶ ἱπποσύνη τε, καὶ ὑπορήφῃ πεπεισῶς,  
 οἷος πρὸς ἀλλῶν μιμάτω πρῶτα μάχεσθαι,  
 μὴ δ' ἀναχωρεῖτω. ἀλαπαδινότῃσι γὰρ ἔσθ' ἐστι.  
 οὐδ' ἐκ' ἀνὴρ ἀπὸ ὧν ὄχλων ἔταρ' ἅμαθ' ἵκηται,  
 ἔρχεσθ' ὀρεξάμενος, ἐπεὶ πολὺ φέρτερον οὕτως.  
 αὐτὸς καὶ οἱ πρότεροι πόλιν, καὶ τείχε' ἐπόρθευ,  
 τὸνδε νόον, καὶ θυμὸν ἐνὶ στήθεσσιν ἔχοντες.  
 ὥς ὁ γέρον ὥρῃσι πάλαι παλῆμον ἦν ἐδῶς.  
 καὶ ἔν μιν γένησθαι δῶν κρείων ἀγαμέμνων.  
 καὶ μιν φωνήσας, ἔπεια πειρόμεντα προσέηυδα.  
 ὦ γέρον, εἴθ' ὥς θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι φίλοισιν,  
 ὥς τοι γένησθ' ἔποιτο, βίη δ' ἐπὶ ἐμπεδος εἴη,  
 ἀλλά σ' ἡγήρας τέλει ὁμοίον. ὥς ὄφελ' ἐν τις  
 ἀνδρῶν ἄλλος ἔχει, σὺ δ' ἐκρυότεροισι μετεῖπας.  
 τὸν δ' ἠμείβετ' ἐπειτα γερῆνιος ἱππότης Νέστωρ.  
 ἀπείδῃ, μάλα μὲν κεν ἔγ' ὧν ἐθέλοιμι καὶ αὐτὸς  
 ὥς ἑμῶν, ὥς ὅτε δῖον ἐρύθαλίονα κατέκταν.  
 ἀλλ' οὐ πῶς ἅμα πάντα θεοὶ δόσαν ἀνδράποισιν,  
 εἰ ποτε κῆρος ἔα, νῦν αὐτὲ με γῆρας ἱκάνη.  
 ἀλλὰ καὶ ὥς, ἱπποῦσι μετέστομα, ἠδ' ἐκλυόσσο  
 βυλῇ, καὶ μῶθοισι, γὰρ γέρας ἐστὶ γερόντων.

Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ἀλλ' ὄρσδ' ὑ πόλιμόν δ', οἷος πάρος ἔγχεαι ἔηναι.  
 Τόνδ' αὖτ' ἰδομένοισι χρητῶν ἀγός, ὠπτίον ἦν δα,  
 ἀφείδην· μάλ' αὖ μιν κ' ἐγὼν ἐρίηρος ἔταρ.  
 ἴατομαι, ὥς το πρῶτον ὑπείσω, καὶ κατένδυσά.  
 ἀλλ' ἄλλος δ' ὤρωι καρηγεμέωντας ἀχαιούς,  
 ὄφρα τά χιισα μαχόμεθι· ἐπεὶ σύνη· ὄρκι' ἐχθροὶ  
 φῶς, τοῖσιν δ' αὖ θάνατος· καὶ κῆδ' ἐπ' ἵατο  
 ἔσθ' ἐπὶ πρότιροι ὑπὲρ ὄρκια δηλῆσαι.  
 ὣς ἔφατ', ἀφείδης δ' ἐπαρώχθεο γηθόσσωος κῆρ  
 ἦλθε δ' ἐπ' αἰάντασι κίων ἀνὰ οὐλαμόν ἀνδρῶν,  
 τῷ δ' ἐκρυαείδω, ἅμα δ' ἐνέφρος ἔπειθε πεισῶν.  
 ὣς δ' ὅτ' ἀπὸ σκαπῆς εἶδε νέφος αἰπόλος ἀνὴρ  
 ἐρχόμενον κατὰ πόντον ὑπὸ ζυφοροῖο ἰδῆς,  
 ἔω δ' ἐπ' ἀνδύθιν ἰόντι, μελάντερον ἥϊτε πίασα  
 φαίνεται ἶον κατὰ πόντον, ἅψ' δ' ἐπὶ λαίλαπα πολλήν.  
 ῥίγησέν τε ἰδὼν, ὑπὸ τε σῆος ἔλασε μῆλα,  
 ποῖα ἅμ' αἰάντασι ἀρηϊθόων αἰήων  
 δ' ὕϊον ἐς πόλιμόν πυκινὰ κίνυρ φούλαίης  
 κυάνασι, σάκισίν τε, καὶ ἐγχεαι πεφεικῦται.  
 καὶ τὸς, μῆν γ' ἔθυσεν ἰδὼν κρείων ἀγαμέμνων,  
 καὶ σφίεας φωνήσας, ἐπὶ κ' ἤϊερόντα προσήυδα  
 Δῖον τ' ἀργείων ἐγ' ἔπειθε χαλκῶ χιτώνων,  
 σφῶϊ μῆν, ὅτ' ἔδοικ' ὄρωι μῆν ὅττι κελύβω,  
 αὐτῷ γάρ μ' ἔλα λαὸν ἀνὴρ τοῖον ἴφι μάχεσθαι.  
 αἶ γάρ Ζεὺς τί πάτερ, καὶ ἀθλαίη, καὶ ἀπολλων,  
 τοῖος πᾶσιν θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι γένοιτο,  
 ἔω κε τάχ' ἡμῶσδε πόλις πριάμοιο ἀνακτ'·  
 χρυσὸν ἔφ' ἡμῶσδε πρὸς ἀλγος ἄτε, πρὸς ἀνέμνῃ.  
 ὣς ἔπων, τὸς, μῆν λίπεν ὀνύχ· βῆ δ' ἐμ' ἄλλος,  
 ὅς οἱ Νέστορ ἔτι μέλιγγ' ὑπὸ πύλιν ἀγορήεν,

ἀργεῖοι, μή πω μιν ἰσχυροὺς θεοὺς εἶδος ἀλκῆς  
 οὐ γὰρ ἐπὶ φθόδιαι πατὴρ Ζεὺς ἔστι ἀραχθῆναι  
 ἀλλ' οἵ περ πρῶτοι υἱὲς ὄρκια δαλύνουσιν.  
 τῶν, ἥτοι αὐτῶν τέρινα χροῖα γυῖες ἴδονται,  
 ἡμῖν δ' αὐτ' ἀλόχους τε φίλας, καὶ νήπια τέκνα  
 ἄξομεν ἐν νηυσὶν, ἐπὶ νηολίμῳ ἰλωμῶ.  
 οὐς τινες ἔν μιν ἰδόντας ἴδοι συγχεῖν πολέμοιο,  
 τὺς, μάλα νεικέεσσι χολατοῖσιν ἐπίεσιν.

Ἀργεῖοι ἰόμαροι, ἐλεγχέετε, οὐν σὺν ἰσχυροῖς  
 τί φθ' οὕτως ἔσθε τιθηπότες, ἥ τε νειροί;  
 αἶ τ' ἐπὶ δῶν ἔκαμον πολέος πεδίοιο θύσσας  
 ἔσασ', ὅ δ' ἄρα τίς σφιν μιτὰ φρεσὶ γίνεταί ἀλκῆς  
 ὥς ὑμῖν ἔσθε τιθηπότες, οὐ δὲ μάχιδι  
 ἢ μέντε βῶας ἀχιδὸν ἐλθέμεν, ἐνθατε νῆα  
 εἶρύατ' ἐν πρυμνοῖς πολέης ἐπὶ θινὶ θαλάσῃ  
 ὄφρα ἴδῃτ' αἰὲς ὑμῖν ὑπὲρ ἡ χιτρά κρονίῳν;

Ὅς ἔσθ' ὅ γε κτεράνῳρ, ἐπεπαλῆς εἰχας ἀνδρῶν  
 ἦλθε δ' ἐπὶ κρήναισι κιδὸν ἀπὸ οὐλαμὸν ἀνδρῶν.  
 οἶδ' ἀμφ' ἰδομῆναι διὰ φρονα θορήσονται.  
 ἰδομῆναι δ' αὖ, ἐνὶ προμάχοις σὺν ἱκέτας ἀλκῆς,  
 μνησθῆναι δ' ἄρα οἱ πυμάτας ὥρῳι φάλαγγας,  
 τοὺς δὲ ἰδὼν, γήθησιν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγκυμῆναι,  
 αὐτίκα δ' ἰδομῆναι προσένδρα μελιχίοισιν.

Ἰδομῆναι πῆρ μιν σιτίῳ δαυαῶν ταχυπώλων  
 ἢ μὲν ἐνὶ νηολίμῳ, ἢ δ' ἀλλοίῳ ἐπὶ ἔργῳ,  
 ἢ δ' ἐν δαίδ', ὅτε πῆρτι γαρούσιον αἰθοπα οἶον  
 ἀργεῖον οἱ ἄριστοι ἐνὶ κρητῆρσι κίρονται.  
 ἥ περ γὰρ τ' ἄλλοι γε κερνημόωντες ἀχνοὶ  
 διαφθὸν πίωσιν, σὸν δὲ πλεόν δέπας αὐτῷ  
 ἔσθ' ὅ περ ἡμῶν, πῆρτι ὅτε θυμὸς ἀνώγει.

# ΟΜΗΡΟΥ

Ορσ' ἀσκληπιάδῃ, καλὴν κρείων ἀγαμίμενον,  
 ὄρφα ἰδὼς μινίλαον ἀρτίον ἀρίστος υἱόν,  
 ὃν τις οἴστυσας ἔβαλεν τόξον ἔν εἰδῶς,  
 ρῶων, ἢ λυκίων, ἔω, μῦν, κλέος, ἄμμι δ' ἐπίνθος,  
 Ως φάτο, ἔω δ' ἄρα θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι δεινὸν  
 βῆν ο' ἵνα καθ' ὁμιλῶν ἀνὰ σφαῖρην δῦρ' ἄχαιῶν,  
 ἀλλ' ὅτι δ' ἔρ' ἵκανον ὀθιξαυθὸς μινίλαο  
 βλήμεν ἢ περὶ δ' αὐτῶν ἀγχιγὰρ ὅσσοι ἄεσσαν  
 κυκλῶσ', ὃ δ' ἐν μέσσοισι παρίστατο ἰσόθεος ρῶς  
 αὐτὶ γὰρ δ' ἐκ Ἰωσῆρος ἀρρηρότης ἔλκερ δῖόν,  
 τῷ δ' ἐξελκεμένοιο, πάλιν ἄγχι ὄξιος ὄγκος  
 λῦσε δ' ἐοί (Ἰωσῆρα παυαίοιο, ἠδ' ὑπένεθε  
 ἰωμῶτι, καὶ μίτῳ τῆρ, χαλκῆς κάμορ ὠσφισ  
 αὐτὰρ ἐπὶ ἰδὼν ἴλως ὅθ' ἐμπιστε πικρὸς οἰσός,  
 αἶμι, ἔκμυσῆσας, ἐπ' ἄρ' ἦτια φάρμακα ἐδῶς,  
 πάσας, τοῖ, οἱ πῶτε παρὶ φίλα φρονέων πόρῃ χεῖρ' ἔχον  
 ὄφρα τοί, ἀμφιπέποντο βεβῆν ἀγαθὸν μινίλαον,  
 τόφρα δ' ἐπὶ ρῶων εἴχες ἤλυθον ἀσπιστῶν,  
 οἱ δ' αὐτῇ κατὰ δόρυ χεῖρ' ἔδω, μνήσαντο δ' ἐχάρμης  
 ἐνθ' οὐκ ἄν βρίζοντα ἰδοῖς ἀγαμίμενον αἰδῶν  
 εὐ δ' ἐκαταπῆγῶσιν, ὅθ' οὐκ ἐθέλοντα μολχιώσας  
 ἀλλὰ μάλα πονύδοντα μάχῃς ἐς κυδῖαν ἔσαν,  
 ἵππες μὲν γὰρ ἔασσε καὶ ἄρματα ποικίλα χαλκῷ  
 καὶ τῆς, μὲν θιράπῳρ ἀπάνδρ' ἔχε φυσιοῶντας  
 δῦρ' ἐμείδων, ἢ δὲ πῶλε μαῖν' ἐπαιδῶν  
 ἔω, μῶτα πόλλ' ἐπέτελλε παεισχέμεν, ὃ ππότε κινῶν  
 γῆν λάβῃ κάματος πελίας διακείρανέοντα,  
 αὐτὰρ ὃ πῆξος ἰὼν ἐπεπωλεῖτο εἴχας ἀνδρῶν  
 καί ῥ' οὕς μὲν σπύδοντας ἰδοῖς δῖον αἶν' ταχυπόλων  
 τῶς μάλα θαρσύνεσκε παεισάμεν ἢ ἐπὶ αἶσιν

ἀρχιτομ

ἀρχήν ἐλίνω. σέο δ' ὅσα πύσφ' ἄρχαί,  
κείμενα ἐν βοίῃ, ἀτελοῦ τῆς ἐπὶ ἔργῳ,  
καὶ τίς ὦν ἔρις φῶν ὑπορρηγορούντων,  
τύμβῳ ἐπιθρόσκων μετελθεῖς κυδ' ἀλίμοιο,  
αἷθ' οὕτως ἐπὶ πᾶσι χόλον τελείῃς ἀγαμέμνων,  
ὡς καὶ νῦν ἄλιον σραπὴν ἔλαχον ἐνθάδ' ἀχαιῶν,  
καὶ δ' ἔβη οἰκόνδε φίλῳ ἐς παρὶδ' αἰγῶν.  
σὺν κηΐσι νηυσὶ, λιπῶν ἀγαθὸν μενέλαον,  
ὃς ποτὶ τίς ἔρις, τῷ τε μοι χάνοι δόφρα χθών.

Τόν δ' ἐπιθαρσύνων, προσέφη ξοῦθός μιν ἔλαθ.

θάρασι, μὲν δ' ἐτι παρ' ἑσθ' ὁπλίσαντες λαὸν ἀχαιῶν.  
οὐκ ἔν κεν καρίῳ δ' ὅξ' ἅπλη βίβλος, ἀλλὰ πάροιθεν  
εἰρύσασα ἴασιρ τε παναίοιοις, ἥ δ' ὑπ' ἐνθ' ἔειπεν  
ἰωμά τε, καὶ μίση, τῆν, χαλκήϊες κάμον ἀνδρες·

Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κρείων Ἀγαμέμνων,

αἱ γὰρ δὴ οὕτως ἐῖν φίλος ὧ μιν ἔστι  
 ἕλκος δ' ἰητὴρ ἐπιμάσσειται, ἡ δ' ἐπιθήσεται  
 φάρμακ' ἄκιν πάσῃσι μελαιάνων ὀδυνῶν,  
 ἢ καὶ ταλθύδιον θεῖον κέρκει πρὸς σήνδα,  
 ταλθύδι, ὅτι τὰ χιτῶν μαχάονα δούρο καλεῖται  
 φῶτ', ἀσκληπιδεὺς υἱὸν ἀμύμονος ἰητὴρ  
 ὄφρα ἴδῃ μενέλαον ἄρῃτον, ἀρχὸν ἄχαων,  
 ὃν τις οἶσδούσας ἔβλεν πόξων ἐν εἰδῶς,  
 φῶν δὲ λυκίδων τοῦ μὲν κλέος. ἄμμι δ' ἐπένθη

Ως ἔφατ' οὗ δ' ἄρα οἱ κῆρυξ ἀπὸ θένειν ἀκούσας·  
βῆ δ' ἵκεναι κατὰ λαὸν ἀχαιῶν χάλκῃ χιτῶνων,  
παπῆαίνων ἥρωα μαχάονα, τὸν δ' ἐνόησεν  
ἔσθ' ὅτ' ἀμφὶ δ' ἐμιν κραιναὶ σίχες ἀσπίδων  
λαῶν νοῖοι ἐπὶ τοῖς βίχης ἐξ ἱπποδόχοιο.

ἀρχὴ δ' ἰσχυρὸν, ἵνα πῶντα προσέσῃ.



ἔπειτα φορέω, βασιλῆϊ δὲ κίτται ἀγαλμα  
 ἐμφοτέρω, κόσμῳ δ' ἵππῳ, ἑλατῆρί τε κύνεσσιν,  
 τοιοῖ τοι μανέλαι μινάων κίματι μῆροι  
 δρυφύεις, κνήμαί τε, ἥ δ' ἐσφυρὰ καλὰ ὑπὲρ νῆθε.  
 ῥίγησεν δ' ἄρ' ἔπατα ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμίμωρος,  
 ὥς ἴδων μέλαινα αἶμα καταρρέειν ἐξ ὠθαλῆς,  
 ῥίγησεν δὲ καὶ αὐτὸς ἀρηίφιλος Μενέλαος.  
 ὥς δ' ἔβλεπον νδυρόν τε, καὶ ὄγκως ἐκτὸς ἰόντας,  
 ἄφορρόν οἱ θυμὸς ἐνὶ στήθεσιν ἀγέρεθαι,  
 τοῖς δ' ἐ βαρυσινάχωρον μετέφην κρείων ἀγαμίμωρος  
 χαρὸς ἔχωρ Μενέλαον· ἐπεσινάχοντο δ' ἰταῖροι,  
 φίλῃ κασίγνητι, θάνατον νύ τοι ὄρκει ἔταμνον,  
 οἷον προσύστας πρὸ ἀχαιῶν πρῶσί μάχιδαι,  
 εἰς σ' ἔβαλον ῥῶϊς, κατὰ δ' ὄρκεια πῖσά παλῆσσαν  
 ὃ μὲν πρὸς ἄλιον πέλει ὄρκειον, αἶμα δ' ἀνδρῶν,  
 ποιοῖ δ' αἶ τ' ἀκρητοὶ, καὶ δειξιάϊ, ἧς ἐπὶ πῖθμιν,  
 εἵπῃρ γάρ τε καὶ αὐτίκ' ὀλύμπι' οὐκ ἐτέλεισσαν,  
 ἔκ τε καὶ ὄφει τελεῖν, σὺν τε μεγάλῃ ἀπέτισσας  
 σὺν σφῆσιν κεφαλῆσι, γυναιξί τε, καὶ τέκνῃσιν,  
 ἔν γὰρ ἐγὼ τόδ' ἐοῖδα κατὰ φρένα, καὶ κατὰ θυμόν·  
 ἔσσεται ἡμᾶρ, ὅταν ποτ' ὀλώλῃ Ἴλι' ἱρή,  
 καὶ πριάμῳ, καὶ λαὸς ἱυμυαλίῳ πριάμοιο,  
 Ζεὺς δ' ἐσφιν κρονίδης, ὑψί' ἵστυσιν, αὐθιγαίῳ,  
 αὐτὸς ἐπιδείησιν ἐριμνήν, ἀγρίδα πᾶσι,  
 τῆς δ' ἀπατῆς κατ' ἰδὼν, τὰ μὲν, ἔσσεται οὐκ ἀτίλιστα,  
 ὡνά μοι αὐτὸν ἄχος σέθεν ἔσσεται ὦ μανέλαι,  
 αἶ κε θούνης, καὶ μοῖραν ἀναπλήσῃς βιοτοῖο.  
 καὶ κανὴ λῆχιστος πολυδί' ἱον ἄρχος ἰχθίμω.  
 αὐτίκα γὰρ μνήσθεται ἄχαιοὶ παρίδ' οὐδ' αἶψα,  
 καὶ δ' ἴκων δόχολον πριάμῳ, καὶ πρῶσί λῖποι μῆρ

μη' πρὶν ἀναΐξην ἄρ' ὅτ' οἱ ὕινος ἀχαῶν,  
 πρὶν βληῖσθαι Μωλίλαον ἄρ' ὅτ' οἱ, ἄρχον ἀχαῶν.  
 αὐτὰρ ὁ, σὺλα πῶμα φάρεβ'· ἐκ δ' ἔλιν' ἰὸν  
 ἄβλητα, πηρόεντα, μελαινάων ἱερμ' ὀδωάων·  
 αἶψά δ' ἐπὶ νινρῇ κατ' ἐκὸς μὲ πηρόν οἶσόν,  
 εὐχόμεν' ἀπόλλωνι λυκηγενεῖ, καυτοτόξῳ  
 ἄρ' ὡν πηρόωνων ῥέξην κλέτῃν ἱερατόμειον,  
 οἷα δὲ νοστήσας ἱρῆς εἰς ἄστυ ἱελύφει  
 ἔλκε δ' ὁ μὲν γλυφίδας τε λαβὼν καὶ νόδ' ῥα βόσπαι-  
 νοδὺρην μῆν' μαζῶν πέλασσαν, τόξω δ' ἐσίδηρ'·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ δ' ἡ κυκλοτερὺς μέγα τόξον ἔστην,  
 λίγξιν βίος· νόδ' ῥα δ' ἐμὴν ἱαχοναῖαν δ' οἶσόν  
 ὄξυβελὴς, καθ' ὅμιλον ἐπιπείσσει μνηστῆρων·  
 οὐδ' ἐσέθεν μινέλας θεοὶ μολχαρὶς λιλάθοντο  
 ἀθάνατοι, πρώτη δ' ἐΔιὸς θυγάτηρ Ἀγλήνη,  
 ἥτοι πρόδ' οἶν σάοι· βέλους ἐχέουσι καὶ ἄμυνται.  
 ἡ δ' ἐπὶ τῷ μῶν ἔργον ἀπὸ χροῶς, ὥς ὅτε μύθηται  
 παῖδ' ὅς ἐργα μῦθον, ὃ δ' ἡδ' ἰὶ λίξας ὕπνω,  
 αὐτὴ δ' αὐτὸ ἴθων οἷοι ἴσασθαι ὁ χῆρ'·  
 χυῖσθαι σὺν ἵππῳ, καὶ διπλόος ἔντα θάωρη·  
 ἔν δ' ἐπεὶ σῶσθαι ἀρηρότι πικρὸς οἶσός,  
 σῶσθαι μῶν ἄρ' ἴσασθαι ἔλ' ἡλ' αὖ δ' ἐκ δ' αἰετοῖο,  
 καὶ σῶσθαι θάωρη καὶ πολυδαίδαλου ἡρῆρα,  
 μίτῃς θ' ἦν ἐφόρη ἔρυμα χροῶς, ἔρως ἀκόντων,  
 ἢ οἱ πλείον ἔρυμα σῶσθαι πρὸ δ' ἐῖσαι καὶ τῆς,  
 ἀκρότατον δ' ἄρ' οἶσός ἐπὶ γράφει χροῶ φωτός,  
 αὐτίκα δ' ἔρρειν αἶμα μελαινὸς ἐξ ὠσθῆος,  
 ὥς δ' ὅτε τίς τ' ἐλὶ φαντα γυνή φοῖνικι μύθηται  
 βελόνῃς, ἢ καὶ φάρμακον, παρήϊον ἔμμενα ἵππων,  
 καὶ τὰ δ' ἐν θαλάμῳ, πολὺν τε μὴ ἡρόσασθαι

ἵως ὅς τ' ἀνθρώπων ταμίης πολέμοιο τίτυκται  
 ὡς ἄρα τις ἱππικὸν ἀχαιῶν τιβῶντι.  
 ἦ δ' ἀνδρὶ ἱκέλη πρῶν κατεδύσασθ' ὁμιλῶν  
 λαοδόκῳ ἀντιωρίδῃ, κρατερῷ ἀχαιῆϊ.  
 πάνδεσσι δ' ἀντίθιον διζήμεν' ἵππῳ ἱφύροιο.  
 εὖρε λυκάον' ἦδ' ἄμύμονα τε, κρατερόν τε,  
 ἱσαότ' ἀμφὶ δέ μιν κρατερὰί εἰχ' ἀσπίδας  
 λαῶν· οἳ οἱ ἵππου ἀπ' αὐσέποιο ῥόων.  
 ἀγχοῦ δ' ἱσαμένη ἵππῳ πηρόωντα προσήυδα·  
 ἦ ῥά νύ μοί τι πύθοιο λυκάον' ἦν δαΐφρον,  
 τλαίης κεν μωνιάῳ ἐπιπρόϊμῳ ταχύνειν  
 πᾶσι δέ κεν βῶσι χάριν, καὶ κῦδος ἄροιο.  
 ἐκ πάντων δέ μάλιστ' ἀλιζάνδρῳ βασιλῆϊ.  
 τῆς κεν δ' ἡ πᾶμπρωτα πᾶρ ἀγλαὰ δῶρα φέροισι.  
 κί κεν ἴδῃ μωνίαον ἀρήϊον ἄριος ἦδ' ἄν  
 σῶ βελίῳ δ' ἐμθέεντα, πυρῆς ἐπιβάντ' ὀλεθρῆς.  
 ἀλλὰ γ' οἷσι μωνιάα κ' ἀδελφίμοιο.  
 εὐχίο δ' ἀπόμωνι λυκηγυνέϊ, κλυτοτόξῳ,  
 ἀρνῶν πρῶτόνων ῥέξεν κλετὴν ἐκατόμβην,  
 οἷα δι' ἐνοσήσας ἱρήσας ἄστυ βελείης.  
 ὣς φάτ' ἀθηναίη· ἔσθ' ὃ φρένας ἄφροσι· πῦθον  
 αὐτίκ' ἐσύλα τόξον εὐξόον ἰξάλας αἰγὸς  
 ἀγρίης, ὃν ῥά ποτ' αὐτὸς ὑπὸ σέρνοιο τυχεύσας  
 πίπτης ἐκβαίνοντα διδρυμένῳ ἐν προδοκίῃσι,  
 βελήκῃ πρὸς σῆδος· ὃ δ' ὑπὸς ἔμπεσι πίπῃ  
 τῷ κέρα ἐκ κεφαλῆς ἐκκουδὶ καλὸ δῶρα πεφύκα·  
 καὶ τὰ μῦθ' ἀσκήσας κίραοξόος ἥραρε τέκτων.  
 πᾶν δ' εὖ λείπνας, χρυσέῳ, ἐπίθηκε κερῶνιν.  
 καὶ μῦθ' ἐπὶ κατέθηκε ταυναγάμῳ, ὅτι γαίῃ  
 ἀγκυλίνας· πρόσθεν δ' ἐσάκισα χεῖρ' ἐδωδ' ἐπαῖροι,

τῶν, οὗτοι γὰρ πρὸ δ' ἴσταμα, ὃ δὲ μεγαίρη.  
 ἔπειθ' ἄρ' φθονέω τε, καὶ ἔκ' ἐδ' διαπίρσασα,  
 ἔκ' ἀνύδ' φθονέωσ', ἐπεὶ πολὺ φέρτερός ἐσσι.  
 ἀλλὰ χρὴ καὶ ἐμὸν θέμεναι πόνον ἔκ' ἀτέλειον.  
 καὶ γὰρ ἰγὼ θεὸς ἐμὶ, γένε' δὲ μορ' ἔνθ' οὐρανὸν σοί.  
 καὶ με πρὶς βυτάτῳ τέκφο κρόνον ἄγκυλ' ἀμύτης  
 ἀμφοτέρω, γένε' τε, καὶ οὐνεα σὴ παρὰ κείτῃ  
 κίχλημαι· σὺ δ' ἐπᾶσι μετ' ἀθανάτοισιν ὠνάσῃς,  
 ἀλλ' ἔθι μὲν ταῦτ' ὑποείξομαι ἀλλήλοισι,  
 ὅ μιν ἰγὼ σὺ δ' ἐμοί. ἐπὶ δ' ἔφονται θεοὶ ἄλλοι  
 ἀθάνατοι· σὺ δ' ἐθέσθον ἀθιμὰ ἱερίῃσι,  
 ἰλθεῖν ἐς τῶν, καὶ ἀχαιῶν φύλ' ἐπὶ αἰνῆρ,  
 περ ἄνθ' ὅς κ' οὐ φῶς ὑπὲρ κύδωντας ἀχαιῶς  
 ἄρξωσι πρότεροι ὑπερόρκια δηλήσασθαι.  
 ὅς ἐφατ', ὅδ' ἀπίθῃσι πατήρ ἀνδρῶν τε, θεῶν τε,  
 οὐτὶς ἀθιμὰ ἱερά πῆρ' ὄντα προσθύσει  
 ἑταμά μάλ' ἐς στρατὸν ἰλθεῖ μετὰ τῶν, καὶ ἀχαιῶς,  
 περ ἄνθ' ὅς κ' οὐ φῶς ὑπὲρ κύδωντας ἀχαιῶς  
 ἄρξωσι πρότεροι ὑπερόρκια δηλήσασθαι.  
 ὣς ἐπὶ δ' ὄρωι πάρος με μαυῖαν ἀθήνην,  
 βῆ δ' ἐκ' ἐλὺμποιο κερήν' ἄϊξασα.  
 οἶον δ' ἀείρα ἦκε κρόνον πᾶς ἀγκυλ' ἀμύτης,  
 ὃ νάυτῃσι τέρας, ἦε στρατῷ δούρι λαῶν  
 λαμπρὸν, τῷ δ' ἐτε πολλοὶ ἀπὸ πονοῦντος ἴσαντες,  
 ὅδ' ἐκ' οὐκ ἦξον ἐπὶ χθόνα παλλὰς ἀθήνης,  
 καὶ δ' ἐθ' ἔε μέσσοι θάμβος δ' ἔχον ἑσπερόντας  
 τῶν δ' ἱπποδάμους, καὶ δύνῃμιδας ἀχαιῶς.  
 ὃ δ' ἐτίς ἔπι σκῶν ἰδὼν ἐς πλησίον ἄλλον.  
 ὅρ' αὐτὶς πόλεμος τε κακὸς καὶ φύλ' ἐπὶ αἰνῆ  
 ἴσταντες, φιλότητι μετ' ἀμφοτέρωσι τίθησθαι

# ΟΜΗΡΟΥ

ἦρ' ἔκ' ἰχθυόεντος χόλον, ἀλλὰ προσήνδ' αὖ  
 αὐνότετι κρονίδῃ, ποτὶορ τὸν μῦθον ἔσπεε  
 πῶς ἰθίλεις ἄλιον θινῆαι πόνορ, ἦδ' ἀτίλειον  
 ἰφθίμῳ, ὃν ἰφθίμῳ μόνῳ, καμίνω δ' ἐμοὶ ἵπποι  
 λαὸν ἀγαθούσῃ; πριάμῳ κακὰ, τοῖότι κασιγῆρ  
 ἴρδ'· ἀπὲρ οὗτοι πάντες ἱπποπόνοισιν αὖλοι.  
 Τίνδ' ἐμὶ γ' ὀχθήσας, προσίφηνι φιληγέρετα Ζεύς,  
 δαμονίην, πνύσε πριάμῳ, πριάμοιο τι παῖδες  
 τόσσα κακὰ ῥέψουσιν· ὅτ' ἀσπρῆς μεταίεινε  
 ἰλίε' ἱελαπαῖξαι ὑκτῆμνον πηολίεθρον.  
 εἰ δ' ἐσὺ γ' ἐσιλῶσαι πύλας, καὶ τέχνα μακρὰ,  
 ὁμῶν βερβόοις πριάμον, πριάμοιο τι παῖδες,  
 ἄλλας τε πρῶας, τότε κιν χόλον ἱεκέσαιο.  
 ἔρξον ὅπως ἰθίλεις, μὴ τῷ τόλῃ νείκερ ὀπίσσω  
 σοὶ, καὶ ἐμοὶ μὲν· ἔεισμα μὲν ἀμφοτέροισι γένηται.  
 ἄλλο δ' ἐτοὶ ἱρίω· σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλιο σῆσιν,  
 ὅπποτε καὶ καὶ ἐγὼ μεμαῶς πόλιν ἱελαπαῖξαι,  
 τὴν ἰθίλω, ὅθι τοὶ φίλοι ἄνδρες ἐκχευάσιν,  
 μήτι διατρίβον ἢ ἐμὸν χόλον, ἀλλὰ μ' ἱᾶσαι,  
 καὶ γὰρ ἐγώ σοι δῶκα ἱκῶν ἀέκοντ' ἄλκῃ θυμῷ,  
 αἱ γὰρ ὑπ' ἡλίοφ τε, καὶ ἕρηνδ' ἀερόωντι  
 νοστήσανσι πόλιν ἐπιχθονίων ἀνθρώπων,  
 τάων μοι πρὶ κῆρ πείσκειο ἴλιθ' ἴρῃ  
 καὶ πριάμῳ, καὶ λαὸς ὑμμελίφ πριάμοιο,  
 ὃ γὰρ μοι ποτὶ βαμὸς ἰδούσο δαΰε ἱίσθη  
 λοιβῆς τε, κνίσῃς τε, πρὶ λαχρῶν γέρας ἐμῆς.  
 Τόνδ' ἡμείβετ' ἔπειτα βοῶπις πότνια ἑρῆ.  
 ὅτοι ἐμοῖσι μὲν πολὺν φίλτατ' ἐσσι πόλιν,  
 ἄργος τε, σπάρτη τε, καὶ δῖον ἄλκ' ἀμυκλήν.  
 πᾶς, διὰ πείρσας, ὅταν τοὶ ἀπὶ χθονὶ πρὶ κῆρ.



38

ΙΛΙΑΔΟΣ Δ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΔΣ.

Δίλτα θιῶν ἄγορῃ, ὅρκων χύσις, ἄρι' ἄρχῃ.

Ἰ δὲ θεοὶ παρ' Ἰλῶι καθήμε

νοι ἠγορόωντο,

χρυσέῳ ἱρὸν ἀπιδίφ, μετὰ δὲ σφι

σι πότνια Ἥρη

νίκταρ ἰδὼν χάσει τοὶ δὲ χρυσίοις λιπάσασι

διδόμεχατ' ἀλλήλους, πῶδ' ἄπολιν ἐσορόωντο,

αὐτίκ' ἐπὶ φρεσὶ κρονίδης ἐριθίϊ μιν ἔειπε.

κίρθ' ἰμίοις ἐπείεσσι παραβλήδην ἄγορῶν.

δοῖαί μιν μηριλάφ' ἀρηγόντο ἐσὶ θανάων,

ἦρ' ὅτ' ἀργεῖν, καὶ ἀλαλκόμεν' ἰσθύνῃ.

ἀλλ' ἦτοί ται, νόσφι καθήμεσθα ἐσθ' ὥσσεα,

τέρπειδον ἴδ' ὅτ' αὐτὴ φιλυμμένης ἀφροδίτῃ

οὐκ ἐπαρμένεβλωκε, καὶ αὐτῇ κῆρας ἀμύνει,

καὶ νῦν ἐξίστασθαι οἷό μιν οὐ θανέειναι,

ἀλλ' ἦτοί νίκη μιν ἀρηΐφίλῃ Μενελάῳ.

ἡμῖν δὲ φραζώμεθ' ὅπως ἔσσι τάδε ἔργα.

ἦρ'. αὐτίς πόλεμόν τε κακόν, καὶ φύξ' ἐπὶ ῥ' αὐτῇ

ἔρσομιν, ἢ φιλοτῆτα μετ' ἀμφοτέρωσι βάλλωμεν,

ἐδ' αὐτὸς τόδε πᾶσι φίλον, καὶ ἡδὺ γένοιτο,

ἦτοί μιν οἰκίοις πόλιν προῖομοιο ἀνακτῶ,

αὐτίς δ' ἀργεῖν ἰλίνῃ μιν ἔλατ' ἄγοιτο.

ὣς ἔφαθ' αἰδ' ἐπὶ μύθεσσιν ἀθλααῖν τε, καὶ ἦρ'.

πλησίαι αἶγ' ἦδ' ἔπειτα, καὶ δὲ πῶσαι μεδ' ἔειπε.

ἦτοί ἀθλααῖν ἀκείων ἦν. οὐδ' ὅτ' ἐπὶ

σκυλομένη διὰ παρ' ἑλόντες δὲ μιν ἄρ' ἔειπε.

# ΟΜΗΡΟΥ

## ΙΛΙΑΔΟΣ Δ. ΟΜΗΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Ἔ Δοξε θεοῖς θεοῖς τευ Ἴλιον ἀλῶσαι, δῖο Ἀθηναῖ μ', Μενέ-  
 λαον ὄξυνθῆναι ὑπὸ παυδάρεσσι παρτοκινύασι. κῆ οὐ-  
 το συγχροθέντων τῶν ὄρκων, μαχάων μῆνιάται μανί-  
 λαον ἀγαμῖνων δ' ἑ ἀπιδῶν, τὴν στρατιάν παρορ-  
 μῆ ἔς τὸν πόλεμον· συμβυλῆς δ' ἑ γνωμῆνις, πολλοὶ  
 ἱεκτίροθεν ἀναιρῶνται.

νῆσθ' δ' ἐν χρυσῇ ἐμίχην φιλότῃτι, καὶ δύνῃ,  
 ὧς σέο νῦν ἔραμαι καὶ με γλυκὺς ἴμερ· αἶρεϊ,  
 ἦ δ' ἄ, καὶ ἄρχε λίσσασθ' ἐκὼν, ἅμα δ' εἴπειτ' ἀκροῖτο,  
 τῷ, μῦθ' ἄρ' ἐν ῥητοῖσι κατ' ἐνναδὼν λιχέεσσιν,  
 ἀπείδης δ' αὖτ' ἐμίχην φρίττα θηρὶ τοικῶς,  
 εἴπῃς ἰσοθρήσθου ἀλέξωνθρον θιοφδέα·  
 ἀλλ' οὔτις δύνατο πρῶτον, κλέτῳντ' ἐπιχούρῳ  
 εὐξαι ἀλέξωνθρον τὸτ' ἀρηϊφίλῳ μονελάῳ,  
 εἰ μὲν γὰρ φιλότῃτ' ἐκύνθον, εἴ τις ἴδοιτο·  
 ἴσον γὰρ σφιν πᾶσιν ἀπὸ χεῖτο κηρὶ μελαίνῃ.  
 Τοῖσι δ' ἐκὼν μετέπειρ' ἀναξὺν ἄνδρῶν ἀγαμίμωρον·  
 ἔκ' ἐκλυτέ μιν πρῶτος, καὶ δαΐφρανοι, ἦ δ' ἐπὶ κνροί·  
 οἴκη μὲν δ' ἠφαίνετ' ἀρηϊφίλῳ μονελάῳ,  
 ὅμιτος δ' ἀργείην ἰλίην, καὶ κτήμαθ' ἅμ' αὐτῇ  
 ἰκδοσι, καὶ τιμὴν ἀποτινέμῃ, ὅντιν' ἴσταν,  
 ὅτε καὶ ἐσομένοισι μετ' ἀνθρώποισι πύληται,  
 ὃ ἔφατ' ἀπείδης, ἐπὶ δ' ἥνιον ἄλλοι ἀχαιοί·

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

τῷ δ' εἰς ἀπὸ χθονὸς, ὡς νῦν ἔκπαρλ' ἐφίλησσε  
 μίσηρ δ' ἀμφοτέρων μητίσσομαι ἔχθρα πυρρὰ  
 τῶων, καὶ δ' ἀναδῶν, σὺ δ' ἐκεῖ κακὸν οἶτον ὄληαι.  
**Ως** ἔφατ', ἔδ' εἰσι δ' ἱλὴν Διὸς ἐκ γαυῖα,  
 βῆ δ' ἐκταρομένη ἰσάων ἀργῇ φασγάνῳ  
 σιγῇ, πᾶσι δ' ἐφάει λάθον· ἔρχε δ' ἐκ δαίμον,  
 αἶψ' ὅτ' ἀλεξάνδροιο δόμον περικαλλέ' ἵκνεται,  
 ἀμφίπολοι μὲν ἔπειτα θεῶς ἐπὶ ἔργα πρᾶποντο,  
 οὗ δ' εἰς ὑπόροφον θάλαμον κίε δ' ἰαγῶσαι κῆρ,  
 τῇ δ' ἄρα δῖφρον ἔλυσσε φιλομεδίης ἀφροδίτη,  
 ὅντ' ἀλεξάνδροιο θεὰ κατέθηκε φέροντα,  
 ἔνθα κάθει' ἱλὴν παύρη Διὸς ἀγχιόχοιο,  
 ἔσσε πάλιν κλίνασσε, πόσιν δ' ἠνίπαπε μύθος,  
 ἔλυθες ἐκ πολέμου, ὡς ὄφελος αὐτῷ δλίδαι,  
 οὐδ' οὐδ' ἀμείβεσθαι, ὅς ἐμὸς πρότερος πόσις ἦεν.  
 οὐ μὲν δ' ἡ πρὶν γ' εὐχὴ ἀρηϊφίλῃ μενέλαον  
 σὺν τε βίῃ, καὶ χερσὶ, καὶ ἔγχεϊ, φέρτερος εἶναι,  
 ἀλλ' ἴθι νῦν προκαλίτω ἀρηϊφίλῃ μενέλαον  
 ἑξαυτίς μαχίσσασθαι ἰνοστίον, ἀλλὰ σ' ἐγὼ γὰρ  
 παύσασθαι κέλωμαι, μὴ δ' ἐξασθῇ μενέλαος  
 ἀντίβιον πόλεμον πολυμήχαν, ἠδ' ἐμὰ χεῖρας  
 ἀφραδίῳ, μὴ πως τάχ' ὑπ' αὐτῷ δ' ἐνὶ δαμνίῃ.  
**Τότε** πᾶσι μύθοισιν ἀμειβόμενος προσέειπε,  
 μή με γύναι χαλκοῖσιν ἐνέδιδαι θυμὸν ἐνὶ πῆτι,  
 νῦν μὲν γὰρ μενέλαος ἐνίκησε σὺν ἀθήνῃ.  
 κείνον δ' αὐτίς ἐγὼ, πᾶρα γὰρ θεοὶ εἰσι καὶ ἐμῖν,  
 ἀλλ' ἄγε δ' ἡ φιλότῃ παρθέτῃ δυνήθιντι,  
 οὗ γὰρ πώποτε μ' ὥδε ἔρως φρένας ἀμφεκάλυπται,  
 οὐ δ' ὅτι σε πρότερον λακιδάϊμον ἐξ ἱρατεινῆς  
 ἔπληον ἀργύρας ἐν ποντοπόροισι νείων

Ζητή δ' ἐν νικταρίν' ἰαυῶν ἱπνάξι λαβοῦσαι.  
 Ζητή δ' ἐμὴν ἐκκυῖα παλαγκνίῃ προσέειπεν  
 ἑροκόμω, ἢ οἱ λακιδαίμονι ναυταῶσθ,  
 ὅσκηρ' ἵεαι καλὰ, μάλιστα δ' ἐμὴν φιλείσκει.  
 τῇ, μὴν ἱστομένην, προσεφώνει δ' ἴ' ἀφροδίτη·  
 δούρ' ἴδ' ἀλῆξαν θρὸς σιν καλῇ οἰκόνδε ἱένδαι,  
 κύνος δ' ἄρ' ἐν θαλάμῳ, καὶ δ' ἰνωθῶσι λίχαςι,  
 κάλλιπτε σὺ δόρ, καὶ ἡμασίην· ὅ δ' ἐκε φαίης  
 αὐθιγὶ μαχιστάμωρον τὸν γ' ἰλθιῖν, ἀλλὰ χοροὶ δὲ  
 ἔρχεσθ, ἢ ἐ χοροῖο νόον λύγοντα καθίῃθην.

Ως φάτο· τῇ δ' ἄρα θυμὸν ἐνὶ στήθεσιν ὀνειν.  
 καὶ ῥ' ὥς θυρ' ἐνόησε θεῶς πειραλλία δ' ἐρῆν,  
 εὐθιὰ θ' ἱμνιόοντα, καὶ ὄμματα μαρμαίροντα,  
 θάμβησ' ἐν τ' ἄρ' ἔπειτα, ἔπος τ' ἄφατ', ἐκ τ' ὀνόμαζεν.

Δαμνοῖν ἢ τί με ταῦτα λιλαίεται ἠπυροπόδων  
 ἢ πῇ με προτέρῳ πολέων ἐὺ ναιομυῖαν  
 αἴθετος· ἢ φρυγίης, ἢ μεθονίης ἐρατεινῆς,  
 αἶ τις ἔτι καὶ κύνιδι φίλος μερόπων ἀνθρώπων.  
 αὐτίκα δ' ἔν νῦν δ' ἴον ἀλῆξαν θρὸν μενέλαον  
 νικῶσας ἐθέλει συγχεῖν ἡμὲ οἶκας· ἔρχεσθ,  
 γ' οὐκ ἔστι δ' ἔν νῦν δ' οὐρο δολαφρονέουσαι παρίστη,  
 ἄσσο παρ' αὐτῇ ἵστα· θεῶν δ' ἀπόφπτε κελδύθους·  
 μὴ δ' ἐπὶ σοῖσι πόδεσσι νηποσρέψας ὄλυμπον,  
 ἀλλ' αὐτὴ πόρ' ἐκκύνον οἶζυι, καί ἐφύλασσε,  
 ἑσόκει· ἢ ἄλλοχον ποιήσινται, ἢ ὄχι δοῦλῳ.  
 κῦσι δ' ἰγῶν ἐκ ἑμὶν νημίστην δ' ἐκε κενεῖν,  
 κήνυ πορσωνέουσι λίχος, βῶαι δ' ἐμ' ὀπίσσω  
 πᾶσαι μαμῆσονται, ἔχω δ' ἄχ' ἄκριτα θυμῷ,  
 τὴν δὲ χολωσαμένην προσεφώνει δ' ἴ' ἀφροδίτη,  
 μὴ μ' ἔρθε χιτλήν, μὴ χροσαμένην σιμυθῆαι.



# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ἦ ῥά κ' αὖ ἀμπιπαλῶν, προΐη δολιχόσκιον ἔγχυτο,  
 καὶ βάλε πριαμίδεο κατ' ἀσπίδα πάνθ' ἐΐσω.  
 οἷόν μιν ἀσπίδος ἦλθε φαινής ὀμβειμορ' ἔγχυτο,  
 καὶ οἷόν θ' ὤρηνετο πολυδαίδαλον ἠρήρηστο.  
 αὐπικρὺ δ' ἐπαραι λαπάρῳ δίαμνος χιτῶνα  
 ἔγχυτο, ὃς ἐκλίνθη, καὶ ἀλόβια κῆρα μέλαιναν.  
 ἀφρίδης δ' ἐρυσάμηντο ξίφος ἄρ' ἡρώλην,  
 πληξεν δ' αἰσάχονα κόρυθος φάλαρ' ἀμφὶ δ' ἄρ' αὐτῷ  
 χιτῶνά τε, καὶ τετραχθὰ διατρυφὴν ἐκίπτε χερσὶ.  
 ἀφρίδης δ' ὤμοξεν ἰδῶν ὡς θρανὸν δῖον.  
 Ζεὺς πᾶσι, οὐκ οἷσιν οἷον θεῶν δολώταις.  
 ἦ τ' ἐφάμην τίθεται ἀλίξαν φρονεόχρητον.  
 οὐδ' ἐμοὶ ἐν χερσὶν ἰάγῃ ξίφος. ἐκ δ' ἐμοὶ ἔγχυτο  
 ἦ ἔχθη παλάμῃσιν ἰτῶσιον, ὃ δ' ἐβόλον μιν.  
 ἦ καὶ ἐπαίξας, κόρυθος λάβω ἰπποδάμοιο.  
 ἔλκε δ' ἐπιστρέψας μετ' οὐκνήμιδας ἀχαιούς.  
 ἔγχυτο δ' ἐμιν πολυκτεσὶς ἰμάς ἀπαλήν ὑπὸ δ' ἐπὶ ἥρῃ.  
 ὅς οἱ ὑπ' ἀνθριπῶνος δ' ἄλλος τίτατο φυφάλης.  
 καὶ νύκω ἐρυσάεντι, καὶ ἀσπίδι ἥραβ' αὖ κῦδος  
 εἰ μὴ ἄρ' ὀξὺ νόησι Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη,  
 ἦ οἱ ῥῆξεν ἰμάντα βοδὸς ἵφι κταμένοιο.  
 κεινὴ δ' ἐφυφάλα αἶμα ἴσαστο χερσὶ παχείῃ.  
 τῆρ, μὴν ἐπὶ ἥρας μετ' οὐκνήμιδας ἀχαιούς.  
 οἷον ἐπιδιπύσας, κόμισσιν δ' ἐρίησι ἰταῖροι.  
 αὐτὰρ ὃ, ἄψ' ἐπόρυσσε κατακτάμεναι μιν αἰνῶν  
 ἔγχυτο χαλκίῳ. τὸν δ' ἐξήραξ' Ἀφροδίτη  
 ῥῆτα μάλ' ὥς τε θεὸς ἐκάλυψε δ' ἄρ' ἦρι πολλῷ.  
 καὶ δ' ἐΐσω ἐν θαλάμῳ δῖῳ δῖν' κηλόντι.  
 αὐτῇ δ' αὖθ' ἰλινῶ καλῆντο ἴν, τὴν δ' ἐκίχοντο  
 πύργῳ ἐφ' οὐκνήμῳ περὶ δ' ἐφ' αἶμα ἄλλος ἔσσαν.

ἔκ' ὁρώων· πάει' δ' ἐθεῶς ἐκ κληῖρ' ὄρυσσιν.  
 οἱ μὲν, ἔπειθ' ἵκοντο κατὰ σίχας, ἔχι' ἱκάσθω  
 ἵπποι ἀερσίποδες, καὶ ποικίλα τέχ' ἐκαστο-  
 ῦν τὰρ ὄν' ἀμφ' ὤμοισιν ἰδύσασθ' ἐν τέχῃ καλῇ  
 εἶδος ἀλέξανδρος ἑλένης πόσις ἠὲ κόμοιο-  
 κνημίδας μὲν πρῶτα περὶ κνήμησιν ἔθηκε,  
 καλὰς, ἀργυρέοισιν ἐπισφυρίοις ἀραρυίας·  
 δεύτερον δὲ θώρηκα περὶ στήθεσιν ἔδωκε  
 οἷο κασιγνήταιο λυκαόν'· ἤρμοσε δ' αὖτε  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' ὤμοισιν βάλετο ξίφος ἀργυρόλητον,  
 χάλκιον· αὐτὰρ ἔπειτα σάκος μέγα τε, σβαρόν τε·  
 κρατὶ δ' ἐπ' ἰφθίμῳ κωΐῳ ἐτύκτορ' ἔθηκεν,  
 ἵππῃσιν, δεινὸν δ' ἐλὼφος καθύπερθεον ἔννεον·  
 ἦλθε δ' ἄλκιμον ἐγχεσθ', οἱ παλάμῃσιν ἀρήρ-  
 ῃς δ' αὐτὸς μονίλα' ἀρήϊ' ἔντ' ἔδωκεν·  
 οἷ δ' ἐπὶ ὄσῳ ἱκάσθῃσιν ὁμίλῃσιν θάρχεσθ' ἔδωκεν,  
 ἱε μέγατον βῶων, καὶ ἀχαιῶν ἐσχεῶντο,  
 δεινὸν διεκόμενοι· θαμβὸς δ' ἔχον ἐθρόοντας,  
 βῶας δ' ἵπποδάμους, καὶ δυνάμειδας ἀχαιοὺς·  
 καὶ ῥ' ἐγγὺς στήλῃ σφραμμένην ἐνὶ χώρῳ·  
 σείοντ' ἐγχεύας, ἀλλήλοισι κατέοντε·  
 πρόω δ' ἀλέξανδρος προΐει δουλιχόσκιον ἐγχεσθ',  
 καὶ βάλεν ἀφείδ' αὖ κατ' ἀσπίδα πᾶντοσιν ἴσῳ·  
 οἱ δ' ἐρρήξαν χάλκον, ἀνιγνώμην δ' οἱ αἰχμὴ  
 ἀσπίδι ἐνὶ κρατερῇ, ὃ δ' ἐλὼν τ' ὤρυστο χάλκῳ  
 ἀφείδ' αὖ μονίλα' ἐπευξάμεν'· Διὶ παρὶ·  
 ἦν ἄνα, δὸς τίσιδάμ' ὃ με πρότερον πακ' ἔοργε·  
 εἶτορ ἀλέξανδρον, καὶ ἐμῆς ὑπὸ χερσὶ δάμασσο  
 ὄφρα τις ἐρρήγῃσιν καὶ ἐφίλῃσιν ἀνθρώπων,  
 ἔκτοσθεν καὶ ῥίξαι, ὅκον φιλότῃ παρὰ χεῖρ·

οἶνορ δ' ἐκ κρητῆρ' ἀφυσσόμενοι διπάλωσιν  
 ἔχιορ, ἢ δ' εὐχοντο θεοῖς ἀσχενέτησιν,  
 ὦ δὲ δὲ τις εἴπισκεν ἀχαιῶν τι βῶντι.  
 ζεῦ κύδιε, μέγιστε, καὶ ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι  
 ὀπότεροι πρότεροι ὑπὲρ ὄρκια πημίεσσαν,  
 ὦ δ' εἰσὶν ἐγκέφαλ' ἡμαμάδης ῥίοιο, ὥς οἶδ' οἶν  
 αὐτῶν, καὶ τυκίων· ἀλχοῖδ' ἄλλοισι μελίτῃ  
 ὥς ἔφασκεν· ὦ δ' ἄρα τώ σφιν ἱπεκράϊνε κρονίων.  
 Τοῖσι δὲ διαδανίδης πρῶτα μῦθον ἔειπε·  
 κί κλυτὸν μὲν βῶϊε, καὶ οὐκ ἐνὶ μῦθε ἀχαιοί.  
 ὅτοι ἐγὼν εἴμι προτὶ Ἴλιον ἠνιμοσασσά  
 ἄψ', ἐπὶ οὐκ ἔτι τλύνθ' ἐν ὀφθαλμοῖσιν ὄρα δὲ  
 μαρναμένορ φίλον υἱὸν ἀρνήφιλ' ἀμεινιάδ'.  
 ζῆς μὲν περὶ τὸ γὰρ οἶδ' ἐκ, καὶ ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι,  
 ὀπότερ' ὀφθαλμοῖσι τέλει πεπρωμένον ἐσίν.  
 ἢ ῥά, καὶ ἐγὼ διφρὸν ἄρνας θέτο ἰσόθε' ὥς.  
 ὦ δ' ἄρ' εἶσαν αὐτὸς, κατὰ δ' ἐνία τεῖνεσσι δόπι' αὖ.  
 παρ δὲ οἱ αὐτῶν περὶ πειραλλείᾳ βύσαστο διφρὸν.  
 τὼ μὲν ἄρ' ἀφορῶναι προτὶ Ἴλιον ἀπονέστο.  
 ἔκτωρ δὲ πριάμοιο πάϊς, καὶ δῖος ὀδυσσεύς,  
 χθόρον μὲν πρῶτον δινίμετον· αὐτὰρ ἔπειτα  
 κλήρην ἐν κύνῃ χαλκήρεϊ πάλμον ἑλόντες,  
 ὀπότερ' ὀφθαλμοῖσι προέειν χάλκιον ἐγχεσ-  
 λαοὶ δ' ἠρέσαντο, θεοῖσι δὲ χεῖρας ἀνίσχον-  
 ὦ δὲ δὲ τις εἴπισκεν ἀχαιῶν τι βῶντι  
 ζεῦ πάτορ ἰδὴ θάω μεδίων, κύδιε, μέγιστε,  
 ὀπότερ' ὀφθαλμοῖσι τέλει πεπρωμένον ἐσίν·  
 τὸν δ' ὅς ἀποφθίμενον δύναι δόμον αἰδὸς εἶσω.  
 ὦ μῖρ δ' αὖ φιλότιτα, καὶ ὄρκια πιστὰ γνέσθαι.  
 ὣς ἄρ' ἔφασκεν· πάλμον δὲ μέγας κερυβαίῳ ἔπειτα.



# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

οὐδ' ἐκὼν εἴη γνῶνίην, καὶ τοῦνομα μνησθεαίμεν.  
 Διοῖός δ' ἔ' δύναιμαι ἰδέσθην κροσμήτορι λαῶν,  
 Καλοῖρά θ' ἵπποδάμον, καὶ πύξ' ἀγαθὸν πολυδυνάμειον.  
 αὐτοκασίγνητῳ, τῷ μοι μίᾳ γένεσθ' μῆτηρ,  
 ἢ ἢκ' ἐπιδίω λακιδαίμον' ὅ' ἔξ' ἱερατῆος,  
 ὅ' δ' οὐρο μὲν ἔποντο νείεσ' ἐνὶ ποντοπόροισι,  
 νῦν αὖτ' οὐκ' ἐθέλουσι μάχην καταδύμεναι ἀνδρῶν.  
 αἰσχυρὰ δ' ἐθιότις, καὶ οὐκ' ἰδὲ πόλλ', ἃ μοι εἰσὶν εἰς  
 Ως φάτο, τοῦσδ' ἔ' δ' ἡ κατέχεν φρεσὶς ὅ' αἶα.  
 ἐν λακιδαίμονι ἄνωθι, φίλῃ ἐνὶ παρίδι γαίῃ.  
 κήρυκός δ' ἀνὰ ἄστρ' ἔβη φέρον ὄρκια πισταῖ,  
 ἄρνε δ' ὕω, καὶ οἶνον ἐύφρονα, κερπὸν ἄρουρῃς.  
 ἄσκη' ἐν ἀγρίῳ, φέρε δ' ἐκρητῆρα φαινόε.  
 κήρυξ ἰδ' αἶος, ἠδ' ἐκ χρύσεα κύπελλα,  
 ὧβων ὃ γέροντα παρὶσάμεν' ὅ' ἐπείσκει.  
 ὄρκοιο λαομεδοντίαν δ' ἡ καλίσσιν ἄεισε  
 βῶν θ' ἵπποδάμον, καὶ ἄχαιῶν χαλκὸν χιτῶνας.  
 εἰς πεδίον καταβῆναι, ἵν' ὄρκια πιστὰ τεύμεται,  
 αὐτὰρ ἀλὶξάνδρος, καὶ ἀρήφην' ὅ' μνίλα' ὅ.  
 μετ' ἧς ἐγχεῖσιν μαχόμεν' ἀμφὶ γυναικί,  
 τοῖ δ' ἐκενικέσσαντι, γυνή, καὶ κτήμαθ' ἔποντο.  
 οἶδ' ἄλλοι, φιλότῃτα, καὶ ὄρκια πιστὰ ταμόντο.  
 νηϊοῖ μιν βροίω ξεινώλασσε, καὶ δ' ἐνέοντα  
 ἄργ' ὅ' εἰς ἵπποδάμον, καὶ ἄχαιῶν καλὸν ἔναιον.  
 Ως φάτο, βίβησεν δ' ὁ γέρον, ἐκάλυψε δ' ἐταίρους.  
 ἵππους δ' οὐ γυνέμεναι, καὶ δ' ὄραλ' ἔπειθοντο.  
 ἀνδ' ἄρ' ἔβη πρὶ ἄμ' ὅ', κατὰ δ' ἠΐα τεινεν ὅπ' αἰσθε.  
 πὰρ δ' ἐοί, ἀντήνδ' ἐπεισάμει βόσασθ' ὄφρον.  
 τῷ δ' ἐκ σφ' ἔσκαυον πεδίον δ' ἔχον ὥκεις ἵππους.  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἔρ' ἵκοντο μετὰ βῶας, καὶ ἄχαιους,  
εἰς ἵππων.



ὃ δ' ἡ γὰρ καὶ διεῖρόποτ' ἔλκυε δῖος ὀδυσσεύς,  
 οὗ ἔνικ' ἀγγελίης, σὺν ἀρηϊφίλῳ Μανιλάῳ.  
 τοὺς δ' ἐγὼ ἐξείνισα, καὶ ἐν μεγάροισι φίλῃσσι.  
 ἀμφοτέρων δ' ἐφύηρ' ἰδέσθω, καὶ μύδια πυκνά·  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠρώεσιν ἀγαρομένοισιν ἔμιχθον,  
 πάντων μῦθον, Μανίλα· ὑπέρειχον δὲ ρέας ὤμους·  
 ἄμφω δ' ἐφομένα, γεραιώτερος ἦεν ὀδυσσεύς,  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠ μύθος, καὶ μύδια πᾶσιν ὕφανον,  
 ἔτοι μῦθον Μανίλα· ἐπιπροχάδῃσιν ἀλῆρνε,  
 παῦρα μὲν ἀλλὰ μάλα λιγύως, ἐπὶ τ' πολύμυθον.  
 ὃ δ' ἀφαμαρτοπύς, εἰ καὶ γένεσθ' ὕστερος ἦεν,  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠ πολύμυτις ἀναΐξασιν ὀδυσσεύς,  
 εἴσκειν, ὑπαὶ δ' ἐῖδοσκε πατὴρ χθονὸς ὀμμάσσα πύξας,  
 σκῆπτρον δ' οὗ τ' ὀπίσσω, οὔτε προπρῶτως ἐνώμα,  
 ἀλλ' ἀσεμψὺς ἐχίσκειν αἰθερᾷ φωτὶ τοικῶς,  
 φαίης κοῦζάχετόν τινά ἔμμεναι, ἄφρονά θ' αὐτῶς,  
 ἀλλ' ὅτε δ' ἠ ὅς θ' ὅππετε μετ' ἄλλω ἐκ εὐθείῃ· ἴσθι,  
 καὶ ἔπειτα νιφάδεσιν τοικῶτα χαμῖρ' ἴσθιν,  
 εἴ κ' ἄρ' ἔπατ' ὀδυσσῆϊ γ' ἐρίσσει, βροτὸς ἄλλος.  
 ὦ πότ' ἦ γ' ὦ δ' ὀδυσσῆος ἀγαυάμειβ' εἶδος ἰδόντες,  
 τὸ τρίτον αὐτ' αἶσαντα ἰδῶν ἐρίαν δ' ἡραυτός,  
 τίς τ' ἄρ' ὅ δ' ἄλλος ἀχαιὸς ἀνὴρ ἠὺς τε, μέγας τε,  
 ἔξοχος ἀργαῖον κεφαλὴν, ἠδ' αὐρίας ὤμους,  
 Τόν δ' ἐλὼν παυρὺν πηλος ἀμείβετο δῖα γυναικῶν.  
 οὗτ' ὅ δ' αἶας ἐσὶ πηλώει· ἔρκους ἀχαιῶν.  
 ἰδομένοισι δ' ἐτίρωθον ἐνὶ Κρήτεισι θεὸς ὤς,  
 ἔσθ' ἄμφω δ' ἐμιν Κρητῶν ἀγοὶ ἢ γαρίθοντα.  
 πολλὰ κ' ἐμιν ἐξείνισαν ἀρηϊφίλ' ὀμνίλα·  
 οἴκῳ ἐν ὑμῖν ἐρῶ, ὅπότ' ἐ Κρήτην ἴκησθαι.  
 νῦν δ' ἄλλος μῦθον πάντας ὄρω· ἐλίκας περ ἀχαιῶν.

πᾶσι δ' αὖτε τελευτῆς ἔτιω, καὶ δ' ἡλικίῳ ἱερᾷ δ' ἄνδρῳ  
 ἀλλὰ τὰ γ' οὐκ ἐγένοντο· καὶ κλέψουσά τέτηκ' αἰ  
 τῷτο δ' ἐτοίριον, ὃ μ' ἀνείρεα, ἡδ' ἐ μεταλλᾶς.  
 οὗτος γ' ἀπείδης δὲρυκρείων ἀγαμέμνων,  
 ἀμφοτέρων βασιλῆς τ' ἀγαθός, κρατερὸς τ' ἀρχηγόν  
 δ' αὖτ' αὖτ' ἐμὸς ἴσκι, κυνώπιός τε, εἴ ποτ' ἐλῶγα.

Ως φαστο· τὸν δ' ὁ γέρον ἡγάσαστο, φώνησέν τε·  
 ὦ μάκαρ ἀπείδης μοιρηγάνης, ὀλβιόδαιμον·  
 ἦ ῥα νύ τοι πολλοὶ δειδυμάστο κῆροι ἀχαιῶν·  
 ἦ δ' ἔτι φρυγίῳ εἰσέλυθον ἀμπελοίασαν,  
 ἔνθα ἴδον πλείεσσ φρυγᾶς ἀνέρας αἰολοπώλῃς,  
 λαὸς ὅπῃ τε, καὶ Μυζόν τε ἀντιθέοιο,  
 οἳ ῥα πῶτ' ἱσρατόωντο παρ' ὄχθας σαίφαρίοιο·  
 καὶ γὰρ ἐγὼν ἐπὶ κερῶν, μετὰ τοῖσιν ἐλὶ χθρῶ  
 ἔματι τῷ, ὅτ' ἦλθον ἀμαΐονες ἀντιάνθρωποι·  
 ἀλλ' οὐδ' οἴτοαοι ἦσαν, ὅθι ἐλίκωπες ἀχαιοί·  
 δυνάτερον αὖτ' ὀδυσσεύς ἰδῶν, ἐρίδ' ὁ γεραίος,  
 εἴπ' ἄγε μοι καὶ τόνδε φίλον τέκος, ὅστις ὁ δ' ἐστὶ  
 μέγας μὲν κεφαλῇ ἀγαμέμνονος ἀπείδης,  
 δυνάτερος δ' ὥμοισιν, ἡδ' ἐ σόρτοισιν ἰδέσθαι·  
 τόλχεα μὲν οἱ κῆται ἐπὶ χθονὶ πελυβοτέρῃ,  
 αὐτὸς δ' ἐκπύλῃ ὥς, ἐπὶ πωλῆται σίχας ἀνδρῶν·  
 ἀρετῇ μιν ἐγὼν ἐῖσκω πηλοσιμάλλῃ,  
 ὅς τ' οἱ ἄνδρες μέγα πῶν δύνειται ἀργωννῶν.  
 Τὸν δ' ἡμείβετ' ἐπεὶ ἐλὶν Ἰδὸς ἐγγυαυῖα·  
 ἔτ' ὁ δ' αὖ λαορτιάδης πολέμης ὀδυαγός,  
 ὅς πρῶτον ἐν δ' ἡμῶν ἰθάκης κροναῖς περὶ ζούσης,  
 εἰδὼς ποσά τοι εἰς δόλῃς, καὶ μύδια πυκνὰ.  
 Τὴν δ' αὖτ' ἀντήνδρ πεπνυμέν' ἀντήνδρ ἦν δ' αἰ  
 ὦ γύναι· ἡ μάλα τῷτο ἔπος νημορτὶς ἔειπες.

ἦ δ' ἔτι γὰρ

εἴθε δ' ἐπὶ θ' ἴσανον ὅθι σκαυαὶ πύλαι ἵσαν.  
 Οἷ δ' ἀμφὶ πρίαμον, καὶ πάνθοον, ἡ δ' εὐμοίτη,  
 Λάμπρον τε κλυτίον θ', ἐκτάονάτ' ἔζον ἄρηθ'.  
 Οὐαλίγων τε, καὶ ἀντήϊωρ πεπνυμένω ἄμφω,  
 εἴθε δ' δημογέροντες ἐπὶ σκαυῇσι πύλησι,  
 γῆραί δ' ἢ πολέμοιο πεπνυμένοι, ἀλλ' ἀχρεῖα καὶ  
 ἰδιώται, τιτρίγαν οἰκίστες, οἵ τε καὶ ὄλην  
 δ' ἐνδρῶ ἐφείδομενοι, ὅπα λείνοισαν ἰέστοι  
 τοῖσι ἄρα πρῶων ἐγήτορες ἢ τ' ἐπὶ πύργῳ  
 οἷ δ' ὡς ἔρ' εἶδον ἑλένης ἐπὶ πύργῳ ἵσαν.  
 εἴα πρὸς ἀλλήλους ἔπα πηρόωντ' ἀχρεῖον.  
 εἰ νῆμισις πρῶας· καὶ δύνῃμιδά· ἀχαιῶς  
 τοιῇ δ' ἀμφὶ γυναικὶ πολλὴν χρεὶν ἀλγέα πάσχει.  
 αὖν ὧς ἀθωάτῃσι θεῆς ὡς ὅπα ἔοικον.  
 ἀλλὰ καὶ ὡς τοίηπρ' ἔνσ' ἐρ' ἱηυσὶν ἰδέσθαι,  
 μέδ' ἢ μὲν, τῷ κ' ἐστὶ τ' ὀπίσσω πῆμα λίποιτό.  
 ὣς ἄρ' ἔφην, πρίαμ' οὐ δ' ἑλένην ἐκαλίσσατο φωνῇ.  
 Λυγρὸ πάροιθ' ἐλθὺσα φίλον τέκος, ἴξεν ἱμοῖο,  
 ὄφρα ἰδῆς πρότερόν τε πόσιν, πηγεύς τε, φίλῃς τε,  
 οὔ τι μοι εἰσὶν ἐσθλὸν νόμοι ἀτιμῆ ἔσιν,  
 οἷ μοι ἐφόρμησάν πόλεμον πολυδάκρυον ἀχαιῶν,  
 ὅς μοι καὶ τόνδ' ἀνδρᾶ πειλώειον ἐξονομήνης.  
 ὅς τις ὅδ' ἔσιν ἀχαιῶς ἀνὴρ ἡὺς τε, μέγας τε,  
 ἔτοι μὲν κεφαλῇ καὶ μείζονος ἄλλοι ἔασιν  
 πηλὸν δ' οὐτῶ ἐγὼν οὐ πῶ ἴδον ὀφθαλμοῖσιν,  
 εἰ δ' οὕτω γε ραρόν· βασιλῆϊ γὰρ ἀνδρὶ ἔοικον.  
 Τόν δ' ἑλένη μύθοισιν ἀμείβετο δῖα γυναικῶν,  
 αἰδοῖός τέ μοι ἐστίφιλε ἱκυρεῖ, δῖος τέ.  
 ὡς ὄφελον, θάνατός μοι ἄδ' εἶναι κακός, ὅπποτ' εὐνῶ  
 ἦεν· ὅτ' ἂν ἴδω, θάλαμον, γυναικὸς τε λιπῶσα.

Ο Μ Η Ρ Ο Υ

πλεσίον ἀλλήλων· ὀλίγη δ' ἦν ἀμφὶς ἄρυστα  
 ἔκτωρ δ' ἐπὶ πρὸτ' ἄστυ δ' ὤω κήρυκας ἐπιμπαν  
 καρπαλίμως ἄρυσσεν φέρειν, πριάμ' οἱ τι καλίστα,  
 αὐτὰρ ὁ, Τηλεθύσιον προΐει κρείων ἀγαμέμνων,  
 νῆας ἐπὶ χλαφύρας ἵεναι, ἡ δ' ἄρ' ἐκίλευσεν  
 οἰσέμεναι· ὁ δ' ἄρ' οὐκ ἀπίθ' ἄγαμέμνονι δίδω·  
 ἴεις δ' αὖθ' ἑλὲν ἡ λιυκωλένῳ ἀγγελοῖς ἔλθων,  
 εὐδομένη γαλόῳ ἀντηνορίδαο δὲ μάρτι,  
 τῇ, ἀντηνορίδης ἵχ' κρείων ἐλικάων·  
 Λαοδίκην πριάμοιο θυγατρὸν ἴδδ' ἀρίσην,  
 τήνδ' εὖρ' ἐν μεγάροισιν, ἡ δ' ἐ, μέγαν ἴσον ὕφαινε,  
 δίπλακα μαρμαρέην, πολέας δ' ἐνέπασσεν αἰθλας  
 πρῶαν θ' ἵπποδάμων, πᾶ ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνων·  
 οὗς ἔθεν εἰνέκ' ἐπασχου ὑπ' ἄρ' ἥος παλαμάων,  
 ἀρχὴν δ' ἰσταμένη προσέφη πόδας ὠκίε ἴεις,  
 δεῦρ' ἴθι σύμφα φίλη, ἵνα θέσκιλα ἔργα ἴδῃσας  
 πρῶαν θ' ἵπποδάμων, καὶ ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνων·  
 οἳ πρὶν ἐπ' ἀλλήλοισι φέρον πολυδάκρυτον ἄρ' ἥα  
 ἐν πιδίῳ, ὄλοτο λιλαϊόμενοι πολέμοιο,  
 οἳ δ' ἡ νῦν ἵαται σιγῇ, πόλιμ' οὐ δ' ἐπέπαυται,  
 ἀσπίσι κεκλιμένοι παρὰ δ' ἔλ' ἥα μακρὰ πέπνηται·  
 αὐτὰρ ἀλέξανδρος καὶ ἀρήφιλ' οὐ μινέλας,  
 μακρῆς ἐλ' ἥασι μαχέσονται περὶ σείτο·  
 τῷ δ' ἐκε νικήσαντι, φίλῃ κικλήσῃ ἀκροίτις,  
 ὣς ἀπῆσσε θιά, γλυκύν ἵμερον ἔμβαλε θυμῷ·  
 ἀνδρὸς τε προτέρου, καὶ ἄσπετος, ἡ δ' ἐ τοκήων·  
 αὐτίκα δ' ἀργεννῇσι καλυφάμενι δαδόνησιν,  
 ὦρματ' ἐκ θαλάμοιο, τέρεν καταδάκρυ χέουσα,  
 οὐκ οἷ' ἅμα τῇ καὶ ἀμφίπολοι δ' ὕπνοντο,  
 αἶψα πυτθῇ θ' ὀτρύνει, ἑλκυσμένη τι βοῶπις·

στυμμένους· ἵκτορ δ' ἐ μετ' ἀμφοτέροισιν ἔειπε·  
 ἐκλυτέ μεν βῶες, καὶ εὐκνήμης ἀχαιοὶ  
 εὐθὺρ ἀλιξάνδροιο, τοῦ, εἴνεκεν νῆκος ὄρωρε·  
 λυγρὸν μὲν κίλνται τρωῶες, καὶ πάντας ἀχαιούς,  
 εὐχεα καλ' ἀπαθείσθαι ἐπὶ χθονὶ πελυβοτείρῃ.  
 ὅτ' ἐν δ' ἐν μίσῳ, καὶ ἀρηίφιλον Μενέλαον,  
 ἔσθ' ἀμφ' ἐλύνῃ, καὶ κτῆμασι πάσι μάχεσθαι.  
 ππότερος δ' ἐκ νικῆσθ', κρείσσων τε γένηται,  
 τῆμαθ' ἔλδων ἐν πάντα, γυναῖκά τε, οἷμα δ' ἀγρίδιον.  
 ἰδ' ἄλλοις φιλότῃ καὶ ὄρκια πιατὰ τά μιν ἔειπε.  
 ὡς ἔφαθ'· οἷδ' ἄρα πάντες ἀκὴν ἐγένοντο σιωπῇ.  
 οἷσι δ' ἐκ μετίεπε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος·  
 ἐκλυτέ νῦν καὶ ἐμεῖο· μάστιγα γάρ ἄλγος ἱκάνει  
 ὑμὸν ἐμὸν· φρονέω δ' ἐδῖα κρῖν θύμηναι ὅδ' ἢ  
 ρυγίνας καὶ βῶας ἐπεὶ πικρὰ πολλὰ πέποδ' ἐ  
 ἴνικ' ἐμῆς ἔειδ' οὐ καὶ ἀλιξάνδρ' ἐν νικ' ἀρχῆς  
 μέων δ' ὁπποτέρῳ θάνατος καὶ μοῖρα τίτυκται,  
 ἐθναίῃ· ἄλλοι δ' ἐδῖα κρῖν θύμηναι τάχιστα·  
 ἴσεται δ' ἄρ' ἐτδον λευκὸν ἐτέρην δ' ἐμίλαινα·  
 ἦ τε, καὶ ἡλίῳ· Διὶ δ' ὅ μιν οἷσσομιν ἄλλον·  
 ἔξετε δ' ἐπριάμοιο βίην, ὅφρ' ὄρκια τὰ μιν  
 ἐπεί, ἐπεὶ οἱ παῖδες ὑπερφίαλοι καὶ ἄπιστοι  
 μή τις ὑπερβασίῃ· Διὸς ὄρκια δ' ἠλθῆσθαι.  
 οὐδ' ὁπποτέρων ἀνδρῶν φρένας ἠερέθονται·  
 οἷς δ' ὁ γέρον μετέησιν ἅμα πρόσω καὶ ὑπίσω  
 ἰσάσθαι, ὅπως ὅχ' ἀείψα μετ' ἀμφοτέροισι γένηται·  
 ἔφαθ'· οἷδ' ἐχάρησαν ἀχαιοὶ τε, βῶες τε  
 ἀπόμυθοι παῦσαι δαὶ δῖου ποδῶν ὀλέμοιο.  
 αἶψ' ἴππους μὲν ἔρυσαν ἐπὶ σίχας, ἐκ δ' ἔβαν αὐτοῖς  
 ἰνυχία τ' ἐξεδύοντο, τὰ μιν κατέεινεν ἐπὶ γαίῃ·



# ΟΜΗΡΟΥ

ὅτι κόμη τό, τε ἰδὼς, ὅτ' ἐν καρτίῃσι μελίησι  
 ἀλλὰ μάλα φῶς δὴ δῆμονος. ἥ τέ κεν ἦ δὴ  
 λαῖνον ἔσσο χιτῶνα πακῶν ἐνικ', ὅσασ' ἔοργας.  
 Τόν δ' αὖτε προσέειπεν ἀλιξάνδρος θιοπεθής,  
 ἔκτορ· ἐπεί μιν χατ' αἶσαν ἐνέκισσας, οὐδ' ὑπεραἶσαν,  
 αἰεὶ τοι κραδίη πέλεκυς ὅς ἐστιν ἀτερής,  
 ὅς τ' ἔστιν ὄχ' ὁυρὸς ὑπ' ἀνέρος, ὅς ῥά τε τέχνη  
 νῆϊόν κτάμνησιν, ὀφέλλει δ' ἀνδρὸς ἱρώην  
 ὅς τοι ἐνὶ στήθεσιν ἀτάρβητος νόος ἐστίν.

- 23 μὴ μοι δῶρ' ἔρατὰ πρόφερι χρυσῆς ἀφροδίτης.  
 24 οὗτοι ἀπόβλητ' ἐσὶ θεῶν εἰκυδ' ἔα δῶρα,  
 ὅσα κε αὐτοὶ δῶσιν. ἐκὼν δ' οὐκ ἄν τις εἴλοιο.  
 νῦν δ' αὖτ' εἴμι θέλεις πολυμίξιν, ἥ δ' ἐμάχιδαι  
 ἄλλους μὲν κάθισον πρῶτας, καὶ πάντας ἀχαιούς.  
 αὐτὰρ ἐμὲ ἐν μέσσοις καὶ ἀρήφιλον Μενέλαον  
 συμβάλλειτ' ἀμφ' ἑλένην, καὶ κτήμασι πᾶσι μάχιδαι.  
 ὁπότερος δ' ἐκενικήσῃ, κρείσσων τε γένηται,  
 κτήμαθ' ἑλὼν ἐν πάντα, γυναικὰ τε, οἶκα δ' ἀγίδα.  
 οἱ δ' ἄλλοι, φιλότῃτας καὶ ὄρκια πῖσά ταμόντες,  
 ναίοιτε ροῖν ἐμβόλας. τοὶ δ' ἐκ νεῖδων  
 ἄργος ἐς ἰππόβοτον, καὶ ἀχαιῖδ' ἀκαλλιγύναια.  
 ὧς ἔφαθ' ἔκτορ δ' αὖτ' ἔχρη μίγα μῦθον ἀκούσας.  
 καί ῥ' ἐς μέσσον ἰδὼν, πρῶτον ἀνείργε φάλαγγας  
 μίσση δ' ουρὸς ἑλὼν. τοὶ δ' ἰδρύνθησαν ἅπαντες  
 τῷ δ' ἐπετοξάζοντο κερκασμόωντες ἀχαιοί.  
 ἰοῖσιν τε τιτυσκόμοιοι, λάισι τ' ἱβαλλον.  
 αὐτὰρ ὁ μακρὸν αὖσεν ἀναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων.  
 ἴσχυ' ἄργείοις μὴ βάλλετε κούροι ἀχαιῶν.  
 σῦνται γὰρ τί ἔπος ἔριον κερυθαίοις ἔκτορ.  
 ὧς ἔφαθ'· οἱ δ' ἴσχοντο μάχης ἀντά τ' ἔχοντο

παῖδάων· μάλα γάρ τε κατωδίει, εἴ περ ἂν αὐτῷ  
 στυδόνται ταχέως τε κύνες, θαληροί τ' αἰῆοι,  
 ὡς ἔχρη μόνελα· ἀλῆξαν θρονιοθεδία  
 ὀφθαλμοῖσιν ἰδῶν· φάτο γὰρ τίσιν αὖτε ἔλεω.  
 αὖτις δ' ἐξ ὀχέων σὺν τινύχσιν ἔλτο χαμᾶϊ·  
 τὸν δ' ὡς εἶω ἐνοήσω ἀλῆξαν θρονιοθεδίας  
 ἐν προμάχοισι φάινετα, κατεπλήγη φίλον ἦτορ·  
 ἅτ' δ' ἐτέρων ἐς ἔθνος ἔχρητο κῆρ ἀλείνων·  
 ὡς δ' ἐτί τις τε φράσσεται ἰδῶν παλαιοφροσ ἀπίστα  
 εὐρεῖ· ἐν βήσσει, ὑπὸ τῆς φρόμος ἔλλαβε γῆρα,  
 ἅτ' τ' ἀνέχρησεν, ὅχρος τί μιν εἴλε παρῆα,  
 ὡς ἀνθις παρ' ὀμίλῳ ἐδὺ τρώων ἀγέρωχον,  
 εἰσέτας ἀπίος ἡδὺν ἀλῆξαν θρονιοθεδίας·  
 τὸν δ' ἐκ τῶν νείκεσσι ἰδῶν αὐσχροῖς ἐπέεσσιν·  
 Δύσπαρι, εἴδους ἀεὶς, γυναιμαῖς, ἡπεροπλοῦτα·  
 αἰθ' ὀφθαλμοῖς τ' ἄγονός τ' ἔμμεναι, ἀγαμῶ τ' ἀπολίεσσιν  
 καὶ κε π, βυλσίμην, καί κεν πολυκέρδιον ἦεν,  
 ἢ οὐτὰ λώβην τ' ἔμμεναι, καὶ ἐπὶ τῶν ὀλῶν  
 ἦεν καρχαλέοισι καὶ ἐκ μόνοντες ἀχαιοὶ  
 φάντες ἀεισῆά πρόμον ἔμμεναι, οὐν καὶ καλὸν  
 εἴδους ἐπ'· ἀλλ' ἔκ ἐσ βίη φρεσίν, ἢ δ' ἐτις ὀλῶν  
 ἦ τοῖοσδε ἔων, ἐν ποντοπόροισιν νείεσι  
 πόντον ἐπιπλώσας, ἐτέρως ἐρίκρας ἀγέρας,  
 μυχθεῖς ἀλλοδαποῖσι, γυναικ' ἐν ἑσθ' ἀνῆρας  
 ἐξ ἀπίης γαίης νύον ἀνέβην, ἀχμητῶν,  
 παπρίτε σφ' μέγα πῆμα πόληϊ τε παυήτε δ' ἡμῶν·  
 22 δὺς μόνεσσιν μὲν χάσμα, κατηφείλω δ' ἐσοὶ αὐτῶν  
 ἔκ ἂν δ' ἡ μείνεις ἀρῆφιλον μόνελλον·  
 γυοῖς χ' οἷς φάσιν ἔχας θαλερὴν παράκτισιν  
 23 ἔκ ἂν τοὶ χραίσμῃ κίθκις, τὰ τε δ' ὦρ' ἀφροδίτης,

ΙΛΙΑΔΟΣ. Γ. ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Τάμμεδ' ἄρ' ἀμφ' ἱλίνης, οἷοις μόθος ἐστὶν ἀκρίτατος·

ὤ  
Υτάρ ἐπὶ κόσμῳ θαν ἄμ' ἤγχι  
μόνισιν ἔσσοι,  
πρὸς μὲν κλαγγῇ τ' ἰνοπῇ τ'  
ἴσαν ὄρηθις ὥς·

οὔτε πόρ κλαγγὴ γυράων πίλῃ θραυέθι προ  
πί τ' ἐπὶ δὲ χιμῶνα φύγον, καὶ ἀθίσφατον ὄμβρον,  
κλαγγῇ ταίγε πίτονται ἐπ' ὠκισσοῖο ῥοάων,  
ὡν θράσι πυγμαίοισι φόνον, καὶ κῆρα φέρουσαι·  
ἔπειτα δ' ἄρα ταίγε πεκνὺν εἶδ' ἀπροφίρονται,  
οἳ δ' ἄρ' ἴσαν σιγῇ μέλαια πνέοντες ἀχαιοί·  
ἐν θυμῷ μεμαῶτες ἀλεξιμῆν ἀλλήλοισιν·  
ὣτ' ὄρεσ' ἐκρυφῆσι νότος κατέχων ὀμίχλην,  
ἐπιμήσιν οὔτε φίλην, κλίπῃ δ' ἐτενικὸς ἀμείνω,  
τόσσον τίς τ' ἐπιπύσσει, ὅθ' ὅτ' ἐπὶ λαῶν ἴησιν,  
ὥς ἄρα τῶν, ὑπὸ πρὸς ἀνέκοντα γαλῶς ὄρνυτ' ἀλλήε  
ἐρχομένων μάλα δ' ὥκα δὲ πρηστων πεδίοιο·  
οἳ δ' ὅτι δὴ χεῖδ' ὄν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,  
πρῶσιν μὲν προμάχισον ἀλέξασθαι θεοειδῆς,  
παρδάλιν ὥμοισιν ἔχων, καὶ κομπύλα τόξα,  
καὶ ξίφος· αὐτὰρ ὁ, δ' ὄρεσ' ὄν κενυρθεμένα χαλκῷ  
παλλων, ἀργαίων προκλιῖσθαι πάντας ἀρίστους  
ὀνήδιον μαχίσσασθαι ἐν ἀνῇ δ' ἡϊοτῇ τι·  
τόν δ' ὥς δυν ἰνόησιν ἀρηίφιλος μονίλαος·  
ἐρχόμενον προπάρειθαι ὀμίχλῃ μακρὰ βιβῶντα,  
ὥς τε λείων ἐχάρη μεγάλῃ ἐπὶ σώματι κύρσας·  
ὥρ' ὃν ἢ ἑλαφον κερὰν, ἢ ὄρ' ὅριον ὦγα

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Γ. ΟΜΗ.

ΡΟΥ ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Λέξανθρον προπαισμένον Μανίλαον εἰς μο-  
 εἰς τομαχίδαν ἐπὶ τῇ τῶν ὅλων σχελύνει, ὅρκοι γί-  
 νονται, ἰφῶ δὲ νικύσωντα τῇ ἐλίνω λαβίῃ,  
 καὶ τὰ χρύματα αὐτῆς· ἔτληθ' ἵνα δ' Ἀλέξανδρον, ἄφρα-  
 σιτὴ ἄρπαιξ· καὶ εἰς τὴν ἴδιον θαλάμον ἐπαύσσει, με-  
 τακαλεῖται ἀπὸ τοῦ τείχεος τὴν ἐλίνω· οἱ δὲ, σωσομένης αὐ-  
 τῆς, εἰς ὕπνον τρέπονται.

D

αὐτὰρ πυραΐχης ἄγε παΐονας ἀγκυλοτόξῃ,  
 τηλόθεν ἐξ ἀμυνδῶν ὄ, ἀπ' ἀξίῃ δὴρὺν ῥέοντ',  
 ῥέειν, ὅ καλλιπάρῃ ὕδαρ' ἐπικίδναται ὁδῶν.  
 παφλαγδῶν δ' ἤγ' ἔτο πυλαμίνῃ ὀλισσίου κῆρ,  
 ἐξ ἐντῶν, ὅθω ὑμίωνων γένῃ ἀγροτεράων.  
 οἳ δ' αὖ κῦτῶρον ἔχον, καὶ σήσαμον ἀμφώμοντο,  
 ἀμφὶ τι παρθέλιον ποταμὸν κλυτὰ δώματ' ἔβαιον,  
 κρῶμνάντ', ἀγριαλόντε, καὶ ὑψηλοὺς ἱερυθίνε.  
 αὐτὰρ ὀλιζίνων δ' Διὸς, καὶ ἐπίστροφ' ἔρχον,  
 τηλόθεν ἐξ ἀλῶν, ὅθεν ἀργύρεα ἱερὰ ἐθέλη-  
 μισθῶν δ' ἑ Χρόμιε ἔρχε, καὶ ἔνομ' οἰωνισῆς,  
 ἄλλ' ἔκ οἰωνοῖσιν ἐρύσαστο κῆρα μέλαιναν.  
 ἄλλ' ἰδῶμι ὑπὸ χερσὶ ποδῶκ' αἰακίδαο  
 ἐν ποταμῷ, ὅθι περ ῥῶας κираίῃ καὶ ἄλλης  
 Φόρκυς αὖ φρυγας ἤγε, καὶ ἀσκαλνῖθ' ἑοσιδῆς  
 τῆλ' ἐξ ἀσκαλίνης μέμασσαν δ' ὕσμινι μάχεσθαι  
 μῆοσιν αὖ Μελίτλης τε, καὶ ἀντιφ' ἤγησάδην.  
 ἦε πυλαμίνῃ, τῷ, γυγαίῃ τέκε λίμνη,  
 ὅ καὶ μῆονας ἦγον ὑπὸ τμῶλῳ γλαῦτῃ.  
 Νάσσης αὖ παρῶν ἤγ' ἔτατο βαρβαρῶν ὄντων  
 οἳ μίλητον ἔχον, φθιρῶντ' ὄρ' ἀκριτόφυλλον.  
 μαίανδρον τε ῥῶας, μυκαλῆς τ' ἀπαινὰ κάρηναι,  
 τῶν, πρὶν ἄρ' ἀμφίμαχος, καὶ Νάσσης ἤγησάδην.  
 Νάσσης, ἀμφίμαχος τι Νομίον' ἀγλαὰ τέκνα  
 ἔς καὶ θυσὸν ἔχον, πόλιμόν δ' ἴω ἦν τε καὶ ῥη  
 ἐνπι'. εἰδέναι οἳ πόλ' ἐπύρκασι λυγρὸν ὄλιθον.  
 ἀλλ' ἰδῶμι ὑπὸ χερσὶ ποδῶκ' αἰακίδαο  
 ἐν ποταμῷ. χρυσὸν δ' ἀχιλῶς ἐκόμισε δαΐφρων.  
 Παρπηδῶν δ' ἔρχων λυκίῳ, καὶ γλαῦκος ἀμύμων,  
 τηλόθεν ἐκ λυκίης ξάνθου ἀπὸ δινύχῃ.



λαὸν θορήσονται μεμάρτες ἰγχεῖσι·  
 δαρδανίῳ αὖτ' ἔρχαν ἕως πᾶς ἀρχίσκο  
 αἰετίας· τότ' δ' ὑπ' ἀρχίσῃ τέκε δ' ἴ' ἀφροδίτη  
 ἦδ' ἦς ἐν κνημοῖσι θιά βροτῶ δύνηθεῖσα·  
 ἔκ οἶος, ἅμα ἰδὼ γὰρ δύω ἀντήνορ' ὅτ' ἔειπε,  
 ἀρχίλαχος τ' ἀκαμάς τε, μάχῃς ἔω ἐβότε πάσης·  
 οἳ δ' ἐξ ἱλίου ἔναον· ὑπαὶ πόδα νείατορ' ἴδης,  
 ἀφρητοί, πίνοντες ὕδαρ· μέλαινα αὐσὴ ποιο  
 πῶες, τῶρ, αὖτ' ἔρχε· λυκαλόν' ἀγλαὸς ἦος  
 πάνδ' ἄρ' ὅτ' ἐκ' ἐξορ' ἀπόλλων αὐτὰς ἔδωκεν·  
 οἳ δ' ἀφρίσσω τ' ἔχον, καὶ δ' ἦμον ἀπαυθῦ,  
 καὶ πιτύσω ἔχον, καὶ τηρέης ὄρος αὐπύ·  
 τῶρ, ἔρχ' ἀφρησός τε, καὶ ἀμφι' ἑλινθώρῃς·  
 ἔπειτα δύω μέροπος πόρκωσί'· ὅς περ πάντων  
 ἔπειτα μαντοσύνας, ὅς δ' οὐς πᾶσιν ἔασκε  
 εἴχαρ' ἐς πόλεμον φθισένορα· τῶ δ' ἐπὶ ὑπὶ  
 παθιδίῳ· κῆρες γὰρ ἔχον μέλαινα θανάτοιο·  
 οἳ δ' ἄρα πρὸ κώτῳ, καὶ πρὸ κτῆνος ἀμφανέμοντες,  
 καὶ σπεῖον, καὶ ἄβυσθον ἔχον, καὶ δῖον ἀρίστω,  
 τῶρ, αὖτ' ὑρτακίδης ἔρχ' αἰσι' ὄρχαμ' ὅτ' ἔειπε·  
 αἰσι' ὑρτακίδης, ὅτ' ἀρίστω φέρων ἵπποι  
 εὐθῶτες, μεγάλοι, ποταμῶ ἀπὸ σιλλύωντ'·  
 ἵπποθρο' δ' ἄγε φύλα πηλασγῶν ἰγχεῖσι μῶρον·  
 τῶρ, οἳ λάεσσαν ἐιδώλακα ναετᾶσκαρ,  
 τῶρ, ἔρχ' ἵπποθροός τε, πυλαός τ' ὄλος ἄρ' ἔειπε·  
 ἔπειτα δύω Λιθόιο πηλασγῶν ταυαμίδιο·  
 εὐπάρθευκα, ἔπειτα ἀκαμάς, καὶ πείρο' ἔειπε,  
 ὅσους ἑλλήσονται ἀγάρρ' ὅτ' ἔειπε ἱέρων·  
 ἔπειτα ἄρχος κικόνων ἦν αἰχμητῶν,  
 ἔπειτα τοῖς ἑσπέρων δῖος ἑρμῆς καὶ δῖος

οἳ δ' ἀγορὰς ἀχόρευον ἐπὶ πριάμοιο θυρῶσι  
 πάντες ὀμηγερέες, ἢ μὲν νέοι, ἢ δὲ γέροντες·  
 ἀρχὴ δ' ἰσαμένη προσέφη πόδας ὠκίαι ἴεις·  
 ἴσατο δὲ φθογῆν υἱὶ πριάμοιο πολίτη,  
 ὅς τ' ὥρῃ σκαπὸς ἴβη ποδῶν κείῃσι πιπιθῶς,  
 τῷ μὲν ἐπ' ἀκροατῶ αἰσυνήταο γέροντ'·  
 δὲ γὰρ μὲν ὁ πότε ναῦφιρ ἀφορμηθεῖται ἀχαιῶν,  
 τῷ μιν ἰσαμένη μετέφη πόδας ὠκίαι ἴεις,

ὦ γέρον, αἰεὶ τοι μῦθοι φίλοι ἀνέργοι εἰσιν,  
 ὅς ποτ' ἐπ' ἐρήνης πόλεμ' ὁ δ' ἀλίαςος ὄρωρ'·  
 ἢ μὲν δὴ μάλα πολλὰ μάχας ἐσθλυνθοῖεν ἀνδρῶν,  
 ἀλλ' οὐκ οὐ τοῖόνδε, τοσόνδε τε λαὸν ὀπωπάει·  
 λίην γὰρ φύλλοισιν ἰοικότες, ἢ φάμαθοισιν,  
 ἔρχονται πεδίοιο μάχης ὀμῆμοι περὶ ἄστυ·  
 ἔκτορ, θὶ δὲ μάλισ' ἐπιτέλλομαι, ὥδ' ἐξέειπας  
 πολλοὶ γὰρ κατὰ ἄστυ μέγα πρῶτον ἐπὶ κερτοὶ  
 ἄλλῃ δ' ἄλλῃ γλῶσσαι πολυπτερίων ἀνδρῶν  
 τοῖσιν ἕκαστος ἀνὴρ σημαίνει τῷ, οἷσιν δὲ ἄρχῃ·  
 τῶν δ' ἐξηείδω νοσησάμεν' ὁ πολίτης,  
 ὣς ἔφαθ', ἔκτορ δ' οὔ τι θεῶς ἔπος ἠγνοίησιν,  
 αἰεὶ δ' ἔλυσ' ἀγορῆν, ἐπὶ τεύχεα δ' ἐσθύνοντο·  
 πᾶσαι δ' ὠίγγωντο πύλαι· ἐκ δ' ἔαυτο λαὸς,  
 κίβοιθ', ἰππῆές τε· πολὺς δ' ὄρυμα γ' ὅς ὄρωρε·  
 ἴσα δὲ τις προπύροισι πόλιν ἀπὶ τῆς καλῶν,  
 ἴν πεδίοιο ἀπάνευθε, περὶ φρομ' ἐῖθα καὶ ἐῖθα·  
 τῆρ, ὅτοι ἀνδρῶν βαττίδων κικλήσκουσιν,  
 ἀθλῶν αὖτοί δ' ἐπὶ σῆμα πολυσκάρθοιο μυρίνης,  
 ἐῖθα τότε τῶνδε τι δὲ κερτοῖν, ἢ δ' ἐπὶ κερτοί·  
 πρῶτον μὲν ἠγμῶντι μέγας κερταίολ' ἔκτορ  
 πρὶαμίδης, ἅμα τῶνδε πολλὴ πλεῖστοι, καὶ αἰεὶ

παῖσιν, τῶν, μὲν πρόθεος θεὸς ἤγεμόνι.  
 τῷ δ' ἅμα τισὶ κρῖνοντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 οὗτοι ἄρ' ἤγεμόνις δ' ἀναῶν, καὶ χεῖρασι οἰῶσιν.  
 τίς τ' ἄρ' τῶν, ὃ χ' αἶσος ἔην, σὺ μοι ἔηκε μούσῃ.  
 αὐτῶν, ἡ δ' ἵππων, οἱ ἅμ' ἀτρεΐδῃσιν ἔποντο.  
 ἵπποι μὲν μέγ' αἶσαι ἔσαν φηρτιάδαο.  
 τὰς, ἔμμηλος ἔλαυνε ποδῶκεας ὄρνιθας ὡς  
 ὄρνιθας οἷε τις σαφύλη ἐπὶ νῶτον εἴσας.  
 τὰς, ἐν περὶ ἡ βρέψ' ἀργυρότοξος ἀπέλλων,  
 ἀμφω θηλείας φόβον ἄρμος φοριούσας.  
 ἀνδρῶν δ' ἅν' μέγ' αἶσος ἔην, τιλαμώνιος αἶας,  
 ὃ φρ' ἀχλὺς μῆνιον, ὃ γὰρ πολὺ φέρτατος ἦν.  
 ἵπποισι δ' οἱ φορέσκον ἀμύμονα πηλείωνα.  
 ὡλλ' ὃ μὲν, ἐν νῆαςι κερωνίσι ποντοπόροιον  
 κίτ' ἀπομηνίσας ἀγαμέμνονι ποιμένι λαῶν  
 ἀρεΐδῃ, λαοὶ δ' ἐπαρὰ ῥηγμῖνι θαλάσσης  
 δίσκοισιν ἔρωποντο, καὶ αἰγανέησιν ἵντες,  
 τόξοισι β', ἵπποι δ' ἐπαρ' ἄρμασιν οἷσιν ἔκαστος  
 λατὸν ἐρηπτόμενοι, ἐλκόμενοι πῆλόν τε σέλιον.  
 ἔκαστος ἄρματα δ' ἐν περὶ πικρὸν κίτ' ἀνάκτωρ  
 ἐν κλισίῃς, οἷ δ' ἄρχον ἀρήφιλον ποθέοντις  
 φοίτων ἔνθα καὶ ἔνθα πατὰ στρατὸν οὐδ' ἐμάχοντο.  
 οἷ δ' ἄρ' ἴσαν, ὡς σίτε πυρὶ χθὼν πᾶσαν ἐμποιο.  
 γαῖα δ' ὑπεσονά χιζε Διὶ ὡς τριπικεραίνῳ  
 χρομένῳ, ὅτι τ' ἀμφὶ τυφάει γαῖαν ἐμάχοντο.  
 ἢ ἀρίμοις, ὅθι φασὶ τυφάει ἐμμεναι ὑνᾶς.  
 ὡς ἄρα τῶν, ὑπὸ ποντὶ μέγα σοναχίζον γαῖα  
 ἐρχομένων, μάλα δ' ὤκα δέειπνον πείσοιο.  
 πρὸς δ' ἄγγελος ἔλθε ποδῶν, ὡς κεία ἴρις  
 πᾶρ Διὸς αἰγὸ χροιο σὺν ἀγγελίῃ ἀλιγανῇ.

τὸν, ῥ' ἔτικον ῥήνη ὑπ' οἴλῳι πῶλι πόρθο.  
 οἶδ' ἔχον ῥίκκηρ, καὶ ἰθώμην κλωμακοῖσας.  
 οἶτ' ἔχον οἱ χαλίην πόλιν εὐρύτη οἷ χαλίῃς,  
 τῶν, ἄνθ' ἡγιάδην ἀσκληπιοῦ δ' υἱοῦ παῖδε  
 ἔκτῃρ ἀγαθῶ, ποδ' αὐλίοιοι, ἡδ' ἐμὰ χάρων.  
 τοῖσδε βρύχοντα γλαφυραὶ νέες ἐσι χόωντο.  
 οἶτ' ἔχον ὀρμένιοι, οἱ τε κρήνην ὑπὲρ ῥῆαν,  
 οἶτ' ἔχον ἀσίεον, τιτάνοι τε λευκὰ κάρηναι.  
 τῶν ἔρχ' εὐρύπυλτος εὐαίμονος ἀγλαὸς υἱός.  
 τῷ δ' ἄμα τισαφάκοντα μέλαινα νῆες ἔποντο  
 οἶδ' ἀργισαὶ ἔχον, καὶ χύρτων ἐνέμοντο.  
 ἔρην, ἡλῶνεν τὴ πόλιν τ' ὄλοσάνονα λευκῇν,  
 τῶν, ἄνθ' ἡγμόνι, μιν ἐπὶ ὀλέμος πολυποῖτῃς  
 ἕως πέρθεοιο, ἐνθάδε ἀνάτοιο τέκτο Ζεύς.  
 τόν, ῥ' ὑπὸ πειθεῖω τέκτο κλυτὰς ὑποδ' ἄμφα  
 ἔματι τῷ, ὅτε φῆρας ἐτίσας λαχύνοντας.  
 τοῦσδ' ἐκ πηλίου ὄσε, καὶ αἰθίκεσι πέλασσι.  
 οὐκ οἶος, ἄμα τῷ γέ λειοντί, ὅς τις ἄρμος  
 ἕως ὑπερθύμιο Κορώνου κρινίδαο.  
 τοῖσδ' ἄμα τισαφάκοντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 βουνός δ' ἐκ κύφου ἤγ' ἐνὶ δ' καὶ ἐνὶ νῆας.  
 τῷ δ' ἐνὶ νῆας ἔποντο, οἱ μιν ἐπὶ ὀλέμοι τε πειραιβοί.  
 οἱ περὶ δ' ὠδ' ὠνεν δυσχεῖ μιν οἶκ' ἐθεντο.  
 οἶτ' ἄμφ' ἱμῖρ ἔνταρ ὅσον ἔργ' ἐνέμοντο.  
 ὅς ῥ' ἐς πηνέον προῖδ' ἀλλ' ἰρῶον ὕδαρ.  
 οὐδ' ὅ γε πηνέω συμμίσγεται ἀργυροδίνῃ.  
 ἀλλὰ τί μιν παυέπιδον ἐπὶ ῥ' ἐφ' ἡνὶτ' ἔλαιον.  
 ὄρεν γὰρ Ἀδνοῦ συγὸς ὕδατος ἐσιν ἀπορῥῆξ.  
 μακρὺ τανδ' ἔρχον πρόθοος τερῶν, ἡδ' ὄνος υἱός.  
 οἱ περὶ πηνέον, καὶ πύλιν ἐνὶ σίφυλλον

ὦρ, ἄν πρωτισίλαθ' ἀρήϊος ἔχμονεν  
 ὦος ἰώρ, τότε δ' ἔδη ἔχαστε γαῖα μέλαινα.  
 ἔδ' ἔχ, καὶ ἀμφιφύφης ἄλσος φυλακὴ ἰλίηπτος,  
 αὐτὸ δ' οὐδ' ἡμιτλήος· τὸν δ' ἔκτανε Δαίρδιανος ἄνθρωπος  
 ἀποθνήσκοντα πολὺν πρώτισον ἀχαιῶν.  
 ἔδ' ἔχ μὲν ἔσ' οἱ ἀναρχοὶ ἔσαν, πόθεν ὅν γε μὴν ἀρχοῖ.  
 ἀλλὰ σφίος κόσμους πεδῆρκης ὄζος ἄρης.  
 φρίκας ἦδ' πολυμήλες φυλακίδας,  
 ὡτοιασίγητ' ἔχ μεγαθύμους πρωτισίλων,  
 πλοῖτερ ἔχ γενεῇ δ' ἄρα πρότερ' ἔχ, καὶ ἀρείων,  
 ἔχως πρωτισίλαθ' ἀρήϊος, ἔδ' ἔτι λαοὶ  
 εὐόνθ' ἔχ μόνον, πόθεν δ' ἔμιν ἐδλὸν ἰόντα,  
 ἔδ' ἔχ ἅμα τεσσεράκοντα μέλαινα νῆες ὅποντο.  
 ἔδ' ἔχ φεράς ἐνέμοντο παρὰ βοιθῆϊδ' ἀλίμνην,  
 οἰβίω, καὶ γλαφυράς, καὶ εὐκτιμένω ἰαωλκόν.  
 ὦρ, ἔρχ' ἀδ' μύθοιο φίλως πᾶσις ἐνδία νηῶν  
 ὑμνήθ', ἔρ' ὑπ' ἀδ' μύθῳ τέκε δ' ἴα γυναικῶν  
 ληκίης, πηλίοιο θυγατρῶν ἔδ' ὅς ἀρίση,  
 ἔδ' ἔχ ἄρα μεθῶν, καὶ θαυμακίῳ ἐνέμοντο,  
 καὶ μελίβοϊον ἔχον, καὶ ὀλιβῶνα πηχεῖον,  
 ὦρ δ' ἐφίλοκτῆτος ἔρχ' ἔχ τῶν ἐν ἔδ' ὅς,  
 πᾶσι νηῶν, ἔρεται δ' ἐν ἰκαλῇ πεντήκοντα  
 μεδῆσσαν, τῶν ἐν ἔδ' ὅς ἴφι μάχῃ.  
 ἀλλ' ὁ μὲν, ἐν νήσῳ κείτ' ἔχ κρατὶ ἔχ ἄλγος πᾶσ' ἔχ.  
 ἔχ μὲν ἐν ἡρώεσσιν, ὅθι μιν λίπον ἔχτες ἀχαιῶν  
 ἀκεί μοχθίοντα κακῶ ὀλέθρον ἔχ ἔχ.  
 ὅθ' ἔχ κείτ' ἔχ ἔχ, τᾶχα δ' ἐν νήσῳ ἐμειλλοῖ  
 ἔχ ἔχτοι παρὰ νηυσὶ φιλοκτῆταο ἄνακτ' ἔχ.  
 ἔχ μὲν ἔχ δ' οἱ ἀναρχοὶ ἔσαν, πόθεν ὅν γε μὴν ἀρχοῖ.  
 ἔχ μὲν ἔχ δ' οἱ ἀναρχοὶ ἔσαν, πόθεν ὅν γε μὴν ἀρχοῖ.



# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

τριχθὰ δ' ἐΰκνηθον κατὰ φυλαδὸν, ἦ δ' ἐφίλιθον  
 ἐκ Διὸς, ὅς τε θεοῖσι, καὶ ἀνθρώποισιν ἀνάσσει.  
 καὶ σφίσι θεῶσιον πλεῦστον κατέχουσιν κροῖον.  
 Νιρῆος δ' ἔω, σύμβουον ἄγων τρεῖς νῆας ἴστας  
 Νιρῆος, ἀγλαῖης θ' ἡδὲ, χαρῆποιότ' ἀνακτ'.  
 Νηρῆος, ὃς καλλιπὴς ἀνὴρ ὑπὸ ἱλίῳ ἦλθε  
 τῶν ἄλλων δαναῶν, μὲν τ' ἀμύμονα πηλείωνα  
 ἀλλ' ἀλασπιδὸς ἔην παῦρ. οἱ δ' οἱ εἴψο λαόν.  
 οἱ δ' ἄρα νίσυρόν τ' ἔχον, κρωπαθὸν τε, κάθοντες  
 καὶ κῶν' εὐρυπύλοιο πόλιν, νήσους τε καλύδνας,  
 τῶν δ' ἄν φείδιππός τε, καὶ ἀντιφ. ἡγεσάμεν.  
 Θεσσαλῶν δ' οὐκ ἦρα κλείδαι ἀνακτ'.  
 τῶν δὲ τριήκοντα γλαφυραὶ νῆες ἐσχοδόντο.  
 νῦν δ' αὐτὸς, ὅσσοι τὸ πηλασγικὸν ἄρ. ἐναιον.  
 οἱ τ' ἄλῳ, οἱ τ' ἀλόπῳ οἱ τε τριχῆν ἐνέμοντο,  
 οἱ τ' ἔχον φθίῳ, ἦ δ' ἑλωδὰ καλλιγύναικα,  
 κυρμίδους δ' ἐκαδύν, καὶ ἑλλῶες, καὶ ἀχαιοί.  
 τῶν, ἄν παυτήκοντα νεῶν ἦν ἄρχος ἀχιλλεύς.  
 ἀλλ' οἱ γ' εἰς πολέμοιο δυνήχ. ἐμνώνοντο.  
 εἰ γάρ ἔην ὅς τις σφῖν ἐπὶ σίχας ἡγήσατο.  
 κεῖτο γάρ ἐν ἡμίῳ ποδάρκης δῖος ἀχιλλεύς  
 καύρης χωόμενος βελσνίδος ἠὲ κόμοιο.  
 τῆρ, ἐκ λυρνησῶν ἐξείλθο πολλὰ μογήσας,  
 λυρνησὸν σχεπορθήσας, καὶ τείχεα θήβης.  
 καὶ δὲ Μίνυα ἔβαλον, καὶ ἐπίστροφον ἔγχεσι μῶρην,  
 ἡγίας εὐνηοῦ σελιπιάδαι ἀνακτ'.  
 τῆς, ὅγε κείτ' ἀχέων, τάλχα δ' ἀνθήσειδαι ἑμιμν-  
 οἱ δ' ἔχον φυλακῶν, καὶ πύρραθρ ὠθημόοντα  
 Δῆμητ. τὴν μῶρ, ἰτῶνάτε μητέρα μήλων,  
 ἀρχικλόντ' ἀντὶ ὧνα, ἰδ' ἐπὶ πηλὸν λεχεποῖον,  
 τῶν.

τῶν. ἔω

αὐτὰλῶν δ' ἔρχιτο Θόας ἀνδραίμονος υἱός,  
 οἱ πλοῦτον ἐνέμοντο, καὶ ὤλεον, ἠδὲ πολύνην.  
 χαλκίδα τ' ἀρχαῖον, καλυδῶνά τε πεπρωσάν.  
 ὦ γὰρ ἔτ' Οἰνῆος μεγατόνος ἦϊκε δῖος.  
 ὦ δ' ἄρ' ἔτ' αὖτις ἑρ-θάει δὲ ξοῦδος Μυλίαςθ'·  
 τοῖ δ' ἐπὶ πάντ' ἱστάλλο ἀκασίμῳ αὐαλοῖσι.  
 τοῖ δ' ἅμα τισάρεά κεντα μέλαινα νῆες ἔπαιον.  
 Κρητῶν δ' ἰδομένοσιν δυνεικλυτὸς ἐγχεμόνων,  
 οἱ κνωσὸν τ' ἔχον, γόρτυνά τε τέχνοισαν.  
 λυκτον, μίλητόν τε, καὶ ἀργινόοντα λυκισον,  
 φαισόν τε, ρυτιόν τε, πόλεις ἰὺναιετώσας,  
 ἄλλοι θ', οἱ Κρότιος ἑκατόμπολιν ἀμφονέοντο,  
 τῶν, μὲν ἄρ' ἰδομένοσιν δυνεικλυτὸς ἐγχεμόνων,  
 Μηριόνης τ' ἀτάλας τ' ἐνναλίφ' ἀνδραφόντης.  
 τοῖσι δ' ἅμ' ὀδῶνεντα μέλαινα νῆες ἔπαιον,  
 τληπόλιμος δ' ἐρακλειδῆς ἦύς τε, μέγας τε,  
 ἔκ ρόδου ἐννία νῆας ἄρ' αὖ ροδίωρ ἀγρώχων.  
 οἱ ρόδον ἀμφονέοντο διάτριχα κοσμηθέντες·  
 λίπδον, ἰπλυσὸν τε, καὶ ἀργινόοντα κωμόρων.  
 τῶν, μὲν τληπόλιμος δυνεικλυτὸς ἐγχεμόνων,  
 ὅν τι καὶ ἀσούχων, βίη ἐρακλειδῆς,  
 τῆν, ἄρ' ἐξ ἐφύρης ποταμῷ ἀπὸ σιλλῶντος,  
 πέρσας ἄσπερ πολλὰ διοτρίφωρ αἰήων.  
 τληπόλιμος δ' ἐπὶ δυν τρωφ' ἐπὶ μέγαρ' ὑπὲκτο,  
 οὐκ ἔπει πατρὸς ἐοῖο φίλον μῆτρον κατέκτα,  
 ἔδῃ γηρασκοντα Λικύμμιον ὄζον ἄρ' ἔθ'·  
 αἶψα δὲ νῆας ἔπαιε· πολλὸν δ' ἔχ' λαὸν ἀγίρας,  
 βῆ φούρων ἐπὶ πόντον· ἀπείλησεν γὰρ οἱ ἄλλοι  
 ἦϊκε, ἦνοι τε βίης ἐρακλειδῆς.  
 οὐτάρ' ὅτ' ἐκ ρόδου ἔξω ἀλώμενος, ἄλγος πάσχει

σύμφηλόν τ' ἔχον, καὶ παρ' ῥασίην ἐνέμοντο,  
 τῶν, ἦρχ' ἀγκάσιο πᾶσις κρείων ἀγαπήνων,  
 ἔξήκοντα νέων· πολέοι δ' ἐν νηὶ ἑκάσῃ  
 ἄρκάδες ἀνδρὸς ἑβανον· ἐπιστάμενοι πολέμοιο·  
 αὐτὰρ γὰρ σφιν δῶκεν ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων  
 νῆας ἑυαίλμας πόδας ἐπὶ οἶνοπα πόντον  
 ἄρείδης· ἐπεὶ οὐ σφί θαλάσσια ἔργα μεμύλη·  
 οἳ δ' ἄρα βυπράσιοι τε, καὶ ἥλιδα δῖον Ἴναον,  
 ὅσσοι ἐφ' ὑρμίνῃ, καὶ μύρσην ἔχον ἀπὸ σσαί,  
 πέτρῃ τ' ὠλενίῃ, καὶ ἀλείσιοι νῆες ἔεργον·  
 τῶν ἄν γε σαρδὸς ἀρχοῖ ἔσαν, δέκα δ' ἀνδρὶ ἑκάσῳ  
 νῆες ἔποντο θαοαί· πολέοι δ' ἑβανον ἐπῃοί·  
 τῶν, μὲν ἄρ' ἀμφίμαχος, καὶ Θάλπιος ἠγασάμενος,  
 ὕψης, δ' μὲν, Κτεάτης, ὃ δ' Εὐρύτης ἀκτορίωνος,  
 τῶν δ' ἀμαρυγκέδισος, ἦρχε κρατερὸς Διῶρης·  
 τῶν δ' ἐτεάρτων, ἦρχε Πολύξενος θεοφειδῆς,  
 ἢ δὲ ἀγαθὸν ἐπ' αὐγυιῶν ἀνὰ κτῆος·  
 οἳ δ' ἐκ δολιχίου, ἐχινάων θ' ἱεράων  
 νήσαν αἰναίησι πέτρῃν ἀλὸς ἥλιδοι ἄντα,  
 τῶν, ἄνθ' ἡγεμόνιν Μέρης ἀτάλας τ' ἀρηϊ  
 φυλείδης, ὃν ἵκτε Διὶ φίλῳ ἱππότη φυλεύς·  
 ὅς ποτε δολίχιον δ' ἀπενάστατο παρὶ χολοθῆος·  
 τοῖ δ' ἅμα τιταράχοντα μέλαναι νῆες ἔποντο·  
 αὐτὰρ ὁ δ' υἱὸς ἦγε κεφαλῆνας μετ' αὐτῶν·  
 οἳ ῥ' ἰθάκην ἔχον, καὶ νήεσσιν ἐνοσίφυλλον,  
 καὶ κροκύλῃ ἐνέμοντο, καὶ αἰγίλιπα βηχέας  
 οἳ τε Ἰάκυνθον ἔχον, ἠδ' οἳ σάμον ἀμφενέμοντο,  
 οἳ τ' ὑπέρρον ἔχον, ἠδ' αὐτὴν πέραν ἐνέμοντο,  
 τῶν, μὲν ὁ δ' υἱὸς ἦρχε Διὶ μῆλιν ἀτάλας τ'·  
 τοῖ δ' ἅμα νῆες ἔποντο δυνώδεις μίληρ πέδροι·

λαοὶ ἔποντ' ἐν δ' αὖτ' ἐδύατο νώροπα χαλκὸν  
 κυδίωρον, ὅτι πᾶσι μετέπριπον ἡρώεσσιν,  
 οὐνεκ' αἴεσθ' ἔην, πολὺ δ' ἐπλείυσεν ἄλλ' ἀλγος.  
 οἳ δ' ἔχον κούρην λακιδάμονα κητώεσσαν,  
 φάειν τε, σπάρτω τε, πολυτρήρωνα τέ μέγαν,  
 βρυσηίας τ' ἐνέμοντο, καὶ αὐγαστὶς ἱρατῆας,  
 οἳ τ' ἄρ' ἀμύκλας ἔχον, ἔλθ' τ' ἔφαλον πτόλιόν τε,  
 οἳ τε λώων ἔχον, ἦ δ' οἴτυλον ἀμφενέμοντο,  
 τῶν, οἳ ἀδελφεὸς ἦρχε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος  
 ἐξήκοντα νεῶν ἀπ' ἅτ' ὄρθι δὲ θωρήσαντο.  
 ἐν δ' αὖτ' ἐκίον ἔθισι προθυμίῃσι πεποιθῶς  
 ὀφύνων πολέμοιο δὲ μάλιστ' ἐϊΐφρο θυμῷ  
 τίσαο δαὶ ἑλένης ὀρμήματ' αἰ τε, σοναχὰς τε.  
 οἳ δ' ἐκ πύλων τ' ἐνέμοντο, καὶ ἀρήνῳ ἱρατῆην,  
 καὶ θρύον ἀλφειοῖο πόρον, καὶ εὐκτίτον ἄστυ,  
 καὶ κυπαρισσηντα, καὶ ἀμφιγένησάν τε ναον,  
 καὶ πῆλεδον, καὶ ἔλθ', καὶ δάριον, ἐνθάδε μῦσσαι  
 αὐτόμυμαι, Θάμμεν τὸν θρυῖκα παῦσαν αἰοιδῆν,  
 οἳ χαλκήθων ἰόντα παρ' Εὐρύτου οἳ χαλκήθ'·  
 σόλυτο γάρ σ' ἐλχόμεν' ἐν νικησέμεν, ἀπὸ δ' ἂν αὐταὶ  
 μῦσαι ἀείδουσιν κῆραι Διὸς αὐγιοχόισι,  
 αἰδ' ἐκ χολωσάμεναι, πηρὸν θέσσαν, αὐτὰρ αἰοιδῆν  
 θεσπεσίην ἀφίλονται, καὶ ἐκλήλαθον κιθαρεῖν.  
 τῶν, αὐτ' ἡγεμόνευε γερήνισθ' ἱππότης Νέστωρ,  
 ὃς δ' ἐν νηέσσιν ἔλαφ' αἶψα νέεσσι χόοντο.  
 οἳ δ' ἔχον ἀρκαδίην, ὑπὸ κυλλόνης ὄρεσσι σπύ,  
 αὐπύτιον παρὰ τύμβον, ἵν' ἄνεις ἀρχιμαχηταί,  
 οἳ φάεον τ' ἐνέμοντο, καὶ ὄρχομενδον πολύμηλον.  
 ῥίπῳ τε, σφατῆῳ τε, καὶ ἠνιμόεσσαν ἐνίσσων,  
 καὶ τεγίῳ ἔχον, καὶ μαντίνην ἱρατῆην,

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

θρέψε Διὸς θυγάτηρ, τέκε δ' ἐξ εἰδώροιο ἄρυστα  
 χαδ' ἐν ἄθῃ νησ' εἶσιν ἐὼν ἐνὶ πτόνι νηῶν.  
 ἐνθα καὶ μιν ταύροισι καὶ ἀρνεσὶς ἰλάονται  
 κοῦροι Ἀθηναίων περ τελλομένων ἐνιαυτῶν.  
 τῶν ἄνθ' ἡγεμόνι υἱὸς περὶ ποῖον Μενεδαεύς.  
 τῷ δ' οὐ πάσις ὁμοῖος ἐπιχθονίων γένετ' ἀνὴρ  
 κοσμήσαι ἵππους τε, καὶ ἀνέρας ἀσπίδιώτας.  
 Νέστωρ οἷος εἶβεν, ὃ γὰρ προγενέστερος ἦεν.  
 τῷ δ' ἅμα πεντήκοντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 αἴας δ' ἐκ σαλαμῖνος ἄγν' Ὀδυσσεύς τε νῆας  
 σῆσε δ' ἄγων ἴν' Ἀθηναίων ἴσαντο φάλαγγες.  
 οἳ δ' ἄρ' ὅς τ' εἶχον, τίρυνθ' ἄ τε τήχιόεσσαν,  
 ἱρμιόνην Ἀσίνην τε, βαθύνη κατὰ κ' ὅλῳ πονέουσας,  
 ῥοίσην, ἠϊόνασ τε, καὶ Ἀμπελόεντ' ἐπιδάυρορ,  
 οἳ τ' ἔχον αἰγίναρ, μάσιτά τε κοῦροι Ἀχαιῶν,  
 τῶν δ' ἄνθ' ἡγεμόνι νεοῖον Ἀγαθὸς Διομήδης.  
 καὶ Σθένηςλος Καπανῆος ἀρακλῆτοῦ φίλος υἱός.  
 τοῖσι δ' ἅμ' Εὐρύαλος τρίτατος κίεν ἰσόθεος φῶς.  
 Μηκισέως υἱὸς ταλαϊονίδ' ἄνακτος.  
 συμπάντων δ' ἡγεῖτο βοὴν Ἀγαθὸς Διομήδης.  
 τοῖσι δ' ἅμ' ὀδῶν κεντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 οἳ δ' ἐμυκῆνας εἶχον ἐὺκτιμένον πηλοέεσσαν  
 ἄφρονόν τε κόρινθον, ἐὺκτιμέναν τε κλειωνᾶς,  
 ὀρνέας τ' ἐνέμιοντο, ἀραιθυρήν τ' ἐρατεινήν,  
 καὶ σικυῶν ὅθ' ἄρ' Ἀδρηεὺς πρῶτ' ἐμβασίλινεν,  
 οἳ δ' ὑπερσείην τε, καὶ αἰπεινήν γονόεσσαν  
 πελλήνην τ' εἶχον, ἧ δ' αἰγίον ἀμφινέμοντο  
 αἰγυιῶν τ' ἄλλ' ἅπαντα, καὶ ἅμ' ἐλίκην εὐρεῖαν,  
 τῶν ἑσπέρων νηῶν ἤρχε χρεῖων Ἀγαμέμνων  
 ἑρμείδης ἅμα τῷ γε πολὺ πλείστοι, καὶ ἄριστοι



νῆϊσι φίτῃ μεταθύμῃ καυβολίδαο.  
 οἱ κυάριον ἔχον, πυθῶνά τε περ ἤισαν,  
 χρίσσει τε ζαθέην, καὶ δαυλίδ' αὖ, καὶ πανοπῆα,  
 οἳ τ' ἀνιμώρειν, καὶ ὑάμωλιν ἀμφιέμοντο.  
 οἳ τ' ἄρα παρ' ὠπταμόν κηφίσον δ' ἴον ἔναον,  
 οἳ τι λίλαυαν ἔχον πηγῆς ἐπὶ κηφισοῖο,  
 ποῖς δ' ἅμα τ' ἀσάρακοντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 οἱ μὲν, φωκῶν σίχας ἴσαν ἀμφιέποντες,  
 βοιωτῶν δ' ἐμπλην ἐπ' ἀριεὶς ἄθωρ ἄσποντο.  
 λοκρῶν δ' ἠγεμόνων οἴληος ταχὺς Αἴας  
 μίων, οὔτι τόσος γε, ὅσος τιλαμώνιος Αἴας,  
 ἀλλὰ πολὺ μίωρ, ὀλίγ' ὅ μιν λιποθήρηξ.  
 ἰγχιή δ' ἐκέκασο πατέλληνας, καὶ ἀχαιούς,  
 οἳ κύνόρ τ' ἐνέμοντ', ὀπόιντά τε, καλλίαρόρ τε,  
 βῆσάν τε, σκάρφιν τε, καὶ αὐγὰς ἱρατῆνας,  
 τάρφην τε, θρόνιόρ τε, βοαχρίν ἀμφὶ ῥέεθρα.  
 τῷ δ' ἅμα τ' ἀσάρακοντα μέλαινα νῆες ἔποντο  
 λοκρῶν οἱ ναίεσσι πέρην ἱερῆς εὐβοίης.  
 οἳ δ' εὐβοίαν ἔχον μέλεα πνείοντες ἀβάντες.  
 χαλκίδας τ' εἰρέβαν τε, πολυσάφυλόν θ' ἰσίουαῖ,  
 κήρινθόν τ' ἐφαλον, δῖόν τ' αἰπὺ πόλιόν θ' ἔσπον.  
 οἳ τε κάρυσον ἔχον, ἠδ' οἳ σύρκα ναιετάασκον,  
 τῶν δ' αὖθ' ἠγεμόνευ' ἐλεφύνωρ ὅς τοι ἄρ' ἔσπον.  
 χαλκωδοντιάδης μεταθύμων ἀρχὸς ἀβάντων.  
 τῷ δ' ἅμ' ἀβάντες ἔποντο θοοὶ ὀπιθεὶ καμύωντες,  
 αἰχμηταὶ μιμαῶτες ὀρεκτῆσι μελήεσι  
 θώρηκας ῥήεσσιν ἠϊὼν ἀμφὶ σῆθεισι.  
 τῷ δ' ἅμα τ' ἀσάρακοντα μέλαινα νῆες ἔποντο.  
 οἳ δ' ἄρ' ἀθήνας ἔχον εὐκτίμωρον πόλιν ἔσπον,  
 δῆμον ἱριχθῆος μεγάλυτος, ὃν ποτ' ἀθήνη

# ΟΜΗΡΟΥ

## ΚΑΤΑΛΟΓΟΣ ΝΕΩΝ ΗΤΟΙ ΒΟΙΩΤΙΑ.

ειωτῶν μὲν πηνέλιος, καὶ λυίτος  
ἦρχον,

ἄρκισίλαός τε, προβοήνωρ τε, Κλό-  
νις τε.

οἳ δ' ὕρίην ἐνέμοντο, καὶ αὐλίσια περήμεσαν,  
σχοῖνον τε, σκῶλόν τε, πολύκνημόν τ' ἐτεωνόν.  
θείσσαν, γραιῖν τε, καὶ ἑρῦχορον μυκαληαρόν.  
οἳ τ' ἀμφ' ἄρμ' ἐνέμοντο καὶ εἰλείσιον καὶ ἑρυθρᾶς,  
οἳ τ' ἱλιῶν εἶχον, ἡδ' ὕλην, καὶ πετεῶνα,  
ὦκαλιν. μεδιδῶνά τ' ἐυκτίμῃον πολίεθρον.  
κώπας. ὑβρησίην τε, πολυβήρωνά τε θίσβην,  
οἳ τε κερώνεαν. καὶ ποιήενθ' ἀλάρτορ.  
οἳ τε πλάταυν' εἶχον, ἡδ' οἳ γλίτταντ' ἐνέμοντο.  
οἳ δ' ὕπο θύβας εἶχον ἐυκτίμῃον πολίεθρον.  
ὅ γ' ἡσόνθ' ἱερὸν ποσειδῆϊον ἀγλαὸν ἄλσος  
οἳ τε πολυσάφυλον ἄρνην εἶχον οἳ τε μίλιδαν,  
λίτταν τε ζαθέην, ἀνθηδῶνα τ' ἐσχατώσαν,  
τῶν, μὲν πιντήκοντα νέες κίον, ἐν δ' ἑκάσῃ,  
κοῦροι βοιωτῶν ἑκάσῃ, καὶ εἴκοσι βαῖνον.  
οἳ δ' ἄσπληδῶνα ναῖον, ἰδ' ὄρχομῆδον μινύδον,  
τῶν, ἦρχ' ἄσκάλαφος, καὶ ἰάλμινος ὕψες ἄρμος,  
οὗς τέκεν ἀσινόχη δόμῳ ἄκτορος ἀζείδω  
παρθένος αἰδοῖν ὑπερώϊον εἰσάναβᾶσα  
ἄρῃ κρατερῷ, ὃ δ' οἳ παρελέξατο λάβει.  
τῶν, δ' ἐφίηκοντα γλαφυραὶ νέες ἐσιχόωντο.  
αὐτὰρ φακῶν Σχεδίος, καὶ ἐπίτροφος ἦρχον.

ῥῆϊα διακένωσιν ἐπεὶ κενόμῃ μῆϊωσιν,  
 ὥς τοὺς ἡγμόνες διεκόσμεον ἔνθα καὶ ἔνθα  
 ὑσμίνῃ δ' ἶναι. μετὰ δ' ἐκρίων ἄγαμέμνων  
 ὄμματα, καὶ κεφαλὴν ἱκέλος Διὶ περικεραυνῶ,  
 ἄρι δ' ἐΐων, σέρνον δ' ἐπὶ ποσσὶ δάωνι,  
 ἥϊ τε βούς ἀγέληφι μέγ' ἔξοχος ἑπλῶ πῶντων  
 ταῦρος ὁ γάρ τε βόεσσιν μεταπρέπει ἄγρομήνοισι,  
 τοῖον ἄρ' ἀφείδῳ θῆκε Ζεὺς ὕματι κείνῳ  
 ἐκπρέπει ἐν πολλοῖσι, καὶ ἔξοχον ἡρώεσιν.  
 ἴασι τε νῦν μοι μοῦσαι δλύμπια δώματ' ἐχέσαι,  
 ὑμῖς γὰρ θεαί εἰσι, πάρεστέ τε, ἴσι τε πῶντα,  
 ἡμῖς δ' ἐκλῆος οἶον ἀκούομεν, οὐδ' ἐτι ἴδμεν,  
 εἴ τί τις ἡγμόνες δαναῶν, καὶ κείρανοι ἦσαν.  
 πληθύν δ' οὐκ ἂν ἐγὼ μυθήσομαι, οὐδ' ὄνομόνω,  
 οὐδ' εἰ μοι δέκα μῦθον γλῶσσαι, δέκα δ' ἐσώματ' εἶω,  
 φωνή δ' ἄρρηκτος, χάλκεον δ' ἐμοῖ ἥτορ ἐνείη,  
 εἴ μὴ δλυμπιάδης μοῦσαι, Διὸς αἰγιόχοιο  
 θυγατέρις, μνηστιάθ' ὅσσοι ὑπὸ Ἴλιον ἦλθον.  
 ἄρχους ἄννην ἐρέω, νῆας τε προπύλας.

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

οἷ δ' ἄμφ' ἀτρείδωνα διοτρίφεις βασιλῆες  
 θύνορ κρίνοντες, μετὰ δ' ἑλαιοκῶπις ἀθήνη  
 αἰγίδα ἔχουσα ἱρίπιμον, ἀγήραον, ἀθανάτωτι,  
 τῆς, ἵστατορ θύσανοι παγχρυσόιοι ἠιρέθοντο  
 πάντες εὐπλεκέες, ἱερὸν μιν ἔκαστος.  
 σὺν τῇ, παυφάσσασα δίδασκε λαὸν ἀχαιῶν,  
 ὀτρύνουσα ἱέουσι δὲ δίδωκε ὥρσων ἑκάστη  
 3, καρδίῃ ἀλκίκοι πολυμήϊον, ἠδ' ἐμάχεσθαι.  
 3, τοῖσι δ' ἄφαρ πόλεμος γλυκίωρ γένετ', ἠενέειδαι  
 ἐν νηυσὶ γλαφυρῇσι φίλῳ ἐς πατρίδα γαῖαν.  
 ἥντε πῦρ αἰδῆλῶν ἐπιφλέγει ἀσπετον ὕλῳ  
 οὐρεῖτο ἐν κρυφῇ, ἵστατο δ' ἐτε φαίνεται αὐγὴ.  
 ὣς τῶν, ὀρχομένων ἄπο, χαλκῷ θεασίοιο  
 αἰγλή παμφανόωσα δ' αὐτὴρ ἔβραυδον ἦκε.  
 τῶν δ' ὡς τ' ὀρνίθων πετεινῶν ἔθνεα πολλὰ,  
 χλῶν, ἢ γλεῦκων, ἢ κύκνων δολιχοδείρων,  
 ἄσπερ ἐν λευκῷ, καὶ στίχῳ ἀμφὶ ῥέεθρα,  
 ἔνθα καὶ ἔνθα ποτῶνται ἀγαλλόμενα πτέρυγας,  
 κλαγγηδὸν προαυθίζόντων, σμαραγδ' ἐτε λευκῶν,  
 ὡς τῶν, ἔθνεα πολλὰ νεῶν ἄπο, καὶ κλισιάων  
 ἐς πεδίον προχέοντο σκαμάνθριον. αὐτὰρ ὑπὸ χθῶν  
 σμῆρ δακρύον κενάβει, ποδῶν αὐτῶν τε, καὶ ἱππῶν.  
 ἴσαν δ' ἐν λευκῷ σκαμάνθριον ἀνθεμόεντι  
 μυρίοι. ὅσαστε φύλλα καὶ ἄνθεα γίγνεται ἔρῃ.  
 ἥντε μυελὸν ἀδινάων ἔθνεα πολλὰ,  
 αἳ τε κατὰ σταθμὸν ποταμὸν ἠλὸς κέκασιν  
 ἔρῃ ἐν εἰαυνῇ, ὅτε τε γλῶσσοι ἀγγεα δέουσιν,  
 τόσσοι ἐπὶ πρῶσι κερκεμόωντες ἀχαιοὶ  
 ἐν πεδίῳ ἴσαντο διαρρῶσαι μεμαῶτες.  
 τοὺς δ' ὡς τ' αὐτόλεια πλατὺ αἰγῶν ἀπόλοι ἀνδρες  
ῥ. ια

αἰθαλόεν, πρήσαι δ' ἔκ πυρὸς δ' ἡίοιο θύρετρα.  
ἱκτόριον δ' ἔχιδνα περὶ σῆτασι δ' αἶψα,  
χαλκῷ· ῥωγαλίον· πολέες δ' ἄμφ' αὐτὴν ἱταῖροι,  
πρηνέες ἐν κενήσιν ὁδ' ἀξ' λαβοῖατο γαῖαν.

Ως ἔφατ', ὅ δ' ἄρα πῶ οἱ ἐπικραΐων κρονίων.  
ἀλλ' ὅ γε δ' ἔκτο μὲν ἱρὰ, πόνον δ' ἄμειγερν ὄφελαν.  
αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ἔϋξαν, καὶ ἔλθ' ἔχοντας προβάλασαν,  
ἀνέρυσαν μὲν πρῶτα, καὶ ἔσφαξαν, καὶ ἔδειραν.  
μηρούς τ' ἐξέταμον, κατὰ τε κνίαν ἱκάλυψαν  
δίπλυνχα ποιεῖσαντο δὲ. ἐπ' αὐτῶν δ' ὠμοθέτησαν.  
καὶ τὰ μὲν, ἄρ' ἰήσιν ἀφύλλοισι κατέκασαν.  
σπλάγχχνα δ' ἄρ' ἐμπερσυντο δὲ, ὑπέριχον ἠφάεσσι δ.  
αὐτὰρ ἐπεὶ κατὰ μῆρ' ἱκάν, καὶ σπλάγχχ' ἐπάσσον,  
εἰς μλόν τ' ἄρα τ' ἄλλα, καὶ ἄμφ' ὀβελοῖσιν ἐπείραν  
ὥπλησάν τε πειφραδ' ἑως, ἐρύσαν τε πάντα.  
αὐτὰρ ἐπεὶ πάυσαν πόνη, τί τε κεντό τε δ' αὐτά,  
δῶνυντ', ὅ δ' ἔκ θυμὸς ἐδόκει δαΐας εἴσας.  
αὐτὰρ ἐπεὶ πόσι θεὸς καὶ ἐδ' ἡνύθε' ἐξ' ἔρον ἔνρ.  
τοῖς, ἄρα μύθων ἦρχε γερήνι θεὸς ἰπτότα Νέστωρ.

Ἀρεΐδῃ κύνεισσι ἀναξ' αὐθρῶν ἀγχι μένων,

» μνηκὲν νῦν δ' ἡβ' αὖθι λεγώμεθα, μὴ δ' ἔκ δ' ἡρὸν

» ἀμβαλλώμεθα ἔργον ὃ δ' ἡ θεὸς ἐγγυαλίξει.

ἀλλ' ἄγε κήρυκός μιν ἀχαιῶν χαλκῷ χιτώνων  
λαὸν κηρύσσοντο δὲ, ἀγερόντων κατὰ νῆας.  
ἢ μὲς δ' ἀθροοὶ ὡς κατὰ στρατὸν δῖρην ἀχαιῶν  
ἰομῶν, ὄφρα κε θᾶσσον ἐγείρομιν ὄξυν ἄρῃα.

Ως ἔφατ'. ὅ δ' ἀπὶ θησεν ἀναξ' αὐθρῶν ἀγαμέμνων.

αὐτίκα κηρύκασι λιγυφθόγγοισι κέλευσε  
κηρύσσεν πόλεμόνδε κερήμεόντας ἀχαιῶς.  
οἱ μὲν, ἐκέρυσαν· ῥί δ' ἠγείροντ' ἄλλ' ὅκα.





δε καὶ πανημέριοι, συγχεῖν κρινώμεθ' ἄρηι.  
 ὃ γὰρ παυσωλήγῃ μετέσταιτο θ' δ' ἠβαιοῖτο,  
 ὃ μὴ νύξ' ἔλθ' ὅσα, σφραγίσαι μὲν ὅτ' ἂν θρῶν.  
 ἰδρώσδ' μὲν τοῦ τελαμῶν ἀμφὶ σῆθεσφιν  
 ἀσπίδ' ὅτ' ἀμφιβρότης, περὶ δ' ἐγχεῖ χεῖρα καμῖται.  
 ἰδρώσας δ' ἐ τοῦ ἵππου ἐϋξοον ἄρμα πταίνων.  
 ὅρ' δ' ἐκ' ἐγὼν ἀπάνευθε μάχης ἐβέλοντα νοήσω  
 μιμνάειν παρὰ νηυσὶ κερωνίσιν, οὗ οἱ ἔπειτα  
 ἄρκιον ἱστέται φυγέειν κύνας, ἠδ' οἰωνούσ.  
 Ως ἱφάτ' ἀργεῖοι δ' ἐμὲ γ' ἱαχον ὥς ὅτε κύμα  
 ἀκτῇ ἐφ' ὑψηλῇ, ὅτε κινήσει νότ' ὅτ' ἔλθ' ὅρ'  
 προβλῇ πικρὸν ἐλφ. τὸν δ' οὐ ποτε κύματα αἰετὶ  
 παυτοῖον ἀνέμωρ' ὅταν ἐνθ' ἢ ἐνθα γένωνται.  
 ὡς πάντοτε δ' ὀρίοντο, κεδναδίοντο κατὰ νῆας,  
 κάπνισάρ τε κατὰ κλισίας. καὶ δ' ἄπνορ' ἔλθ' ὅρ'.  
 ἀλλ' ὅτ' ἄλλ' ἐρεῖε θιῶν αἶε γενετῶν,  
 οὐχόμην ὅτ' θάνατόν γε φυγῇ, καὶ μῶλον ἄρῃ.  
 αὐτὰρ ὃ, βῦν ἱερὸν σέου ἀναξάνθρων ἀγαμέμνων  
 πίονα, πενταίτηρον ὑπερμένει χρόνιονι,  
 κίχλησκει δ' ἐγέροντας ἀριστῆας ποταχάων.  
 Νέσσορα μὲν πρῶϊστα, καὶ ἰδὼ μὲν ἡ ἀνακτα.  
 αὐτὰρ ἔπειτ' αἰοῶντε δ' ὕω, καὶ τυδ' ὅτ' ὕϊον.  
 ἔκτον δ' αὖτ' ὀδυσσῆα δ' ἡ μῆλιν ἀτάλαντον.  
 αὐτόματ' ὅτ' οἱ ἦλθε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος.  
 ὅδε γὰρ κατὰ θυμὸν ἀδελφεὸν ὥς ἐπονέον.  
 βῦν δ' ἐπὶ ῥιήσαντο, καὶ ἔλθ' ὅτ' ἀνέλθον.  
 Τοῖσι δ' ἐπὶ χόμην ὅτ', μετέφη κρείων ἀγαμέμνων,  
 Ζεῦ κύδιστε, μέγιστε, κελαινεφές, οὐδέ τι ναίων,  
 μὴ πρὶν ἐπ' ἥλιον δύναι, καὶ ἐπὶ κνέφας ἔλθ' ὅρ'.  
 πρὶν με κατὰ πρηνὲς βαλεῖεν πριάμοιο μίλαθρον  
 αἰθαλόεν.

τηρὶν τινα παρ' ἑσέων ἀλόχῳ κατακλιμῆναι,  
 ἥσασθαι δ' ἑλένης ὀρμήματά τε, σοναχάσ τε.  
 εἰ δέ τις ἐκπέγλων ἐθέλῃ οἶκόν δὲ νέειναι,  
 ἀπ' ἑσέω ἦς ἡνὸς εὐχέλοιοιο μελάνης  
 ὄφρα πρόδ' ἄλλων θάνατον, καὶ πότμον ἐπίσῃ.  
 ἀλλὰ ἀναξ, αὐτός τ' εὖ μήδεο πείθειό τ' ἄλλῳ.  
 οὗτοι ἀπόβλητον ἐπ' ὅτ' ἔσται οὗ, τ' ἵκεν ἄπα.  
 κρὶν' ἀνδρας κατὰ φύλα, κατὰ φρήτας ἀγάμενων,  
 ὡς φρήτην, φρήτην φιν ἀρήγῃ, φύλα δὲ φύλοισ.  
 εἰ δέ κεν ὡς ἔρξῃς, καί τοι πείθονται ἀχαιοί,  
 γνώσῃ ἐπεθ' ὅς θ' ἡγεμόνων κακὸς, ὅς τέ νυ λαῶν.  
 ἦ δ' ὅς κ' ἐδλὸς ἔησι. κατὰ σφ' ἔκς γὰρ μαχίσσονται.  
 γνώσεια δ' εἰ καὶ θιωσι, σὶν πόλιν οὐκ ἀλαπάξῃς,  
 ἢ ἀνδρῶν κακότης, καὶ ἀφραδίη πολέμοιο.

Τόν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.  
 ἦ μάρ ὦντ' ἀγορῇ νικᾷς γέρον ὄϊας ἀχαιῶν.  
 αἱ γὰρ Ζεὺς τί πάτερ, καὶ ἀθηναίη, καὶ ἄπολλον,  
 τοῖσσι τοῖσιν μοι συμφράδμονες εἶον ἀχαιῶν.  
 ἴδ', κε τὰχ' ἡμῶσσι πόλις πριάμοιο ἀνακτ' ὅ  
 χερσὶν ὑφ' ἡμετέρῃσιν αἰεσσά τε, πόρθομένητη.  
 ἀλλὰ μοι αἰγίοχ' ἡρόνιδης Ζεὺς ἀλγὶ ἐδῶκεν.  
 ὅς με μετ' ἀπρήκτους ἑλιδάς, καὶ νείκεα βάλε.  
 καὶ γὰρ ἐγὼν, ἀχιλλεύς τε μαχεσάμεθ' ἔηνικα κεύρη  
 ὀντιβίοις ἐπ' ἐσπιν. ἐγὼ δ' ἤσυχον χαλεπαίνων.  
 εἰ δέ ποτ' ἐς γέ μιν βυλὸς σομῆν, οὐκ ἔτ' ἔσται  
 τρωσὶν ἀνάβλησις κακὴ ἔσται εἰ δ' ἡβαιόρ.  
 νῦν δ' ἔρχεσθ' ἐπὶ δ' ἔπνον, ἵνα ξυλάγωμην ἄρκα.  
 εὖ μὲν τις δόρυ θηξάδιω, εὖ δ' ἀσπίδα θέδιω,  
 εὖ δέ τις ἵπποισιν δ' ἔπνον δότω ὠκυπόδεσιν,  
 εὖ δέ τις ἄρματ' ἀμφὶς ἰδῶν, πολέμοιο μεδέειω,

ὅτι μὲν οὐκ ἐπὶ τὴν ἑλπίδα κλέσσει οὗτος ὀλεῖται.  
 ὡς οὗτος κατὰ τέκν' ἔφαγε σπυθοῖτο καὶ αὐτὴν  
 ὀκτώδ' ἀτὰρ μήτηρ ἐνάτη ἦν ἢ τέκε τέκνα.  
 ὡς ἡμεῖς τοσ' αὐτ' ἔτια πῶλε μίξομεν αὖθι.  
 ὦδ' ἀκούω δ' ἐκ πόλιν αἰρήσομεν εὐρύαρχον.  
 κεῖνός θ' ὡς ἀγόρευε τάδ' ἡ νῦν πάντα τελεῖται.  
 ἀλλ' ἄγε μίμνετε πάντες ἱυκνήμιδες ἄχαιοι  
 αὐτοῦ βροτοῦ ἄστυ μέγα πριάμοιο ἱδμεν.  
 Ὡς ἔφατ'· ἀργεῖοι δ' ἐμὲ γ' ἴαχον· ἀμφὶ δ' ἐν νῆεσσι  
 σμερδαλίον κενάβησαν ἀνυσάντων ὑπ' ἀχαιῶν  
 μῦθον ἐπαυήσαντες ὀδυσαῖος θείοιο.  
 τοῖσι δ' καὶ μετέπειτα γέρηνιος ἱππότης Νέστωρ  
 δὴ πόππῃ δ' ἡ πασιρ' εἰκοτὲς ἀγοράαδε  
 νηπιάχοις οἷς οὐτιμέλει πολεμήϊα ἔργα.  
 τοῦ δ' ἡ σωθεῖσά τε καὶ ὄρκια βήσιντα ἡμῖν  
 ἐν πυρὶ δ' ἡ βυλαί τε γυνοῖατο μῆδ' αὖτ' ἀνδρῶν  
 πονοδ' αὖτ' ἀκρητοῖς καὶ διεξιάεις ἐπὶ πηδῶν.  
 αὐτὰρ γὰρ ῥ' ἐπεία' εἰδαίνομεν οὐδέ τι μῆχος  
 ἐν ῥέμῃσι δ' ὡς ἀμείβεσθαι πολὺν χρόνον ἐνθάδ' ἔόντες.  
 ἀφείδῃ, σὺ δ' ἐθ' ὡς πρὶν ἔχον ἀσιμφία βυλῆν.  
 ἄρχην ἀργείοις κατὰ κρατερὰς ὑσμῖνας  
 τοὺς δ' ἐκ φθινύθην ἵνα καὶ δ' ὅς τοι κεν ἀχαιῶν  
 νόσφιν βυλεύωσ'· ἀνυσίς δ' οὐκ ἔσεται αὐτῶν  
 πρὶν ἄρχος δ' ἵνα· πρὶν καὶ Διὸς αἰγιόχοιο  
 γνώμῃσι· εἴτε φειδύς ὑπόσχεσις ἦε καὶ οὐκί.  
 φημί γὰρ ὅω καταγεῦσαι ὑπερμενέα κρονίωνα  
 ἡματι ὦδ' ὅτε νηυσὶν ἐπ' ὠκυπόροισιν ἔβαινον  
 ἀργεῖοι βῶεσι φόνον καὶ κῆρα φέροντες  
 ἀσπράπῃδιν ἐπιδέξιν ἐναίσιμα σήματα φαινόν.  
 τῶ μὲν τις πρὶν ἐπιβέβω οἶκόν δ' ἐνέεικε

κριν' ἴνα παρ' τρώων ἀλόχῳ κατακρημθῆναι,  
 ἥσασθαι δ' ἑλένης ὀρμήματά τε, σοναχάσ τε.  
 εἰ δέ τις ἐκπάγλως ἐθέλει οἶκόν δὲ νέειναι,  
 ἀπ' ἰδὼ ἦς ἰηὸς εὐχέλιμοιο μιλόωνης  
 ὄφρα πρόδ' ἄλλων θάνακτον, καὶ πότμον ἐπίσπῃ.  
 ἀλλὰ ἀναξ, αὐτός τ' εὖ μήδεο πέθειό τ' ἄλλω.  
 οὗτοι ἀπόβλητον ἐπ' ἔσταιται ὅ, τ' ἴκεν ἄπω.  
 κριν' ἀνδρας κατὰ φύλα, κατὰ φρήτας ἀγάμεμνον,  
 ὡς φρήτην, φρήτην φιν ἀρήγῃ, φύλα δ' ἐφύλοισ.  
 εἰ δέ κεν ὡς ἔρξεις, καί τοι πείθονται ἀχαιοί,  
 γνώσῃ ἐπ' ἡδ' ὅς θ' ἡ γ' ἐμόνων κακὸς, ὅς τέ νυ λαῶν.  
 ἦ δ' ὅς κ' ἐδολὸς ἔησι. κατὰ σφ' ἔκς γὰρ μαχίσσονται.  
 γνώσῃαι δ' ἐ καὶ θάσπεσίῃ πόλιν οὐκ ἀλαπάξεις,  
 ἢ ἀνδρῶν κακότητι, καὶ ἀφραδίῃ πολέμοιο.  
 ν δ' ἀπαμειβόμεν' προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.  
 ἦ μάρ αὐτ' ἀγορῇ νικᾷς γέρον ἔτις ἀχαιῶν.  
 καὶ γὰρ Ζεὺς τε πάτερ, καὶ ἀθηναίη, καὶ ἀπόλλων,  
 τοῖσσι τοῖσιν μοι συμφράδιμονες εἶεν ἀχαιῶν.  
 εἰ δέ, κε τὰ χ' ἡμῶσιν πόλις πριάμοιο ἀνακτ' ὅ  
 ἑρσὶν ὑφ' ἡμετέρῃσιν ἀλῆσά τε, πόρθο μὲν ἦντι.  
 μά μοι αἰγίοχ' ἐκρονίδης Ζεὺς ἀλγ' ἐἴδωκαν.  
 ἴς με μὲτ' ἀπρήκτους ἑιδίς, καὶ νείκεα βάλλει.  
 οἱ γὰρ ἐγὼν, ἀχιλλεύς τε μαχεσάμεθ' εἴνικα κεύρη  
 ντιβίοις ἐπίεσπιν. ἐγὼ δ' ἤσυχον χαλεπαίνων.  
 δέ ποτ' ἐς γ' ἐμὸν βυλδύσομην, οὐκ ἔτ' ἐπιστα  
 δσὶν ἀνάβλησις παρ' ἔσταιται εἰ δ' ἡβαιοί.  
 ν δ' ἔρχεσθ' ἐπὶ δ' ἄπνον, ἵνα ξυλάω μιν ἄρκα.  
 μὲν τις δόρυ θηξάω, εἴ δ' ἀσπίδα θέω, ἢ  
 δέ τις ἱπποισιν δ' ἱππον δότω ὠκυπόδεσιν,  
 δέ τις ἄρματ' ἀμφὶς ἰδὼν, πολέμοιο μεδίω,

# ΟΜΗΡΟΥ

ὅτι μὲν οὐδ' ἔτι λίσσεται κλέσσει οὐδ' ὅσον  
 ὡς οὗτος κατὰ τέκν' ἔφαγε σπυθοῖτο καὶ αὐτὴν  
 ὀκτώϊα τὰρ μήτηρ ἐνάτη ἦν ἢ τέκε τέκνα·  
 ὡς ἑμείς τοσ' αὐτ' ἔτια πόλεμι ξομένη αὐθι.  
 Τῷ δὲ Κλυτῷ δὲ πόλιν αἰρήσομεν εὐρύαγγον.  
 κεινός θ' ὡς ἀγόρευε τάδε ἡ νῦν πάντα τελεῖται.  
 ἀλλ' ἄγε μίμνετε πάντες ἱὺ κνήμιδες ἄχαιοι  
 αὐτοῦ ἐσέοκα ἄστυ μέγα πριάμοιο ἔλωμεν.  
 Ὡς ἔφατ'· ἄρ' ἄγε τοῖ δ' ἐμὲν Ἰάχον· ἀμφὶ δ' ἐν ἡῆς  
 σμερδαλίον κενάβησαν αὐσάντων ὑπ' Ἀχαιῶν  
 μῦθον ἐπαυήσαντες ὀδυσαῖος θείοιο.  
 Τοῖσι δ' καὶ μετέφη γερήνιος ἱππότα Νέστωρ·  
 ὦ πόσις καὶ δὴ πατὴρ, οἰκότες ἀγοράαδε  
 νηπιάχοις, οἷς οὐτιμίεσσι πολεμήϊα ἔργα.  
 τοῦ δ' ἡ σωθεῖσάιτε καὶ ὄρκια βήσεται ἡμῖν  
 ἔν πυρὶ δ' ἡ βυλαίτε γυνοῖατος, μή δέ α' τ' ἀνδρῶν  
 πονοῖαί τ' ἀκρητοὶ καὶ διεξιάι, ἧς ἐπέπιθον.  
 αὐτὰρ γὰρ ῥ' ἐπεί αὖ' εἰδαίνομεν, οὐδέ τι μῆχος  
 ἑυρέμεναι δυνάμεθα, πολλὴν χρόνον ἐνθάδ' ἐόντες.  
 ἀφείδῃ, σὺ δ' ἐθ' ὡς πρὶν ἔχον ἀσμεφεία βελήν.  
 ἄρ' ἄγε ἄρ' ἄγε τοῖς κατὰ κρατερὰς ὕσμινας  
 τοὺς δ' ἐὰ φθινύθην ἴνα καὶ δυνάτοί κεν Ἀχαιῶν  
 νόσφιν βελεύωσ'· ἄνυσσι δ' οὐκ ἔσεται αὐτῶν  
 πρὶν ἄρ' ἄγε δ' ἴναι· πρὶν καὶ Διὸς αἰγιόχοιο  
 γνώμῃ, αἵ γ' ἔτι φειδῶς ὑπόσχεσις ἦε καὶ οὐκί.  
 φημί γάρ οἱ κατανεῦσαι ὑπερμένεα κρονίωνα  
 ἡματι, τῷ δ' ὅτε νηυσὶν ἐπ' ὠκυπόροισιν ἔβανον  
 ἄρ' ἄγε τοῖς βῶσι φόνον καὶ κῆρα φέροντες,  
 ἀσπράτῃ δ' ἐπιδέξιναι αἰσίμα σήματα φαιδών.  
 τῷ μὲν τις πρὶν ἐπαγείδω οἶκόν δ' ἐνέεικα

πρὶν



ἢ μῖν δ' ἵνα τὸς ἐσι περιβοίαν ἱναιπὺς  
 ἔνθα δ' ἐμινόντ' ἐσι, τῷ, οὐ νεμισί' ὁμ' ἀχαιῶν  
 ἀσχαλάων παρὰ νηυσὶ κερωνίσιν· ἀλλὰ καὶ ἔμπη  
 αἰσχροτόι δ' ἠρόν τε μένιν, κακὸν τε νέεσθαι.  
 23 ἔλ' ἵτε φίλοι καὶ μῖνατ' ἐπὶ χροτόν, ὅφρα δαῶμεν  
 ἢ ἵτε δ' ἑκάλ' ἄσας μαντεύεται, ἢ καὶ οὐκί.  
 ἂν γὰρ δ' ἄν τοι γ' ἴδμεν ἐνὶ φρεσίν· ἐσὶ δ' ἐπ' αὖτις  
 μαρτυροί, οὓς μὴ κῆρες ἔβαν θανάτοιο φέρουσαι  
 χθιζάτ', καὶ πρῶίξ' ὅτ' ἐς αὐλίδ' αἴητες ἀχαιῶν  
 ἦ γὰρ ἴθοντο, κακὰ Πριάμω, καὶ Τρῶσιν φέρονται.  
 ἡμεῖς δ' ἀμφὶ περὶ κρήνην, ἱερούς κατὰ βωμόν  
 ἔρδομεν ἀθανάτοισι τελέσας ἱκατόμβας  
 καλῇ ὑπὸ πλατανίσῳ, ὅθιν' ῥίεν ἀγλαὸν ὕδωρ.  
 ἔνθ' ἱφάνη μέγα σῆμα, δρόκων ἐπὶ νῶτα δαφνοῖος  
 σμερδαλῆος, τόν, ῥ' αὐτὸς Ὀλύμπιος ἦκε φάος δ' ἐκ  
 βωμοῦ ὑπαίξας, πρὸς ῥὰ πλατάνισον ὄρουσιν.  
 ἔνθα δ' ἔσαν στυθοῖο νωστοί, νῆπια τέκνα,  
 ὅσ' ὦ ἐπ' αἰφροτάτῳ, πεπτόλοιο ὑποπιπλήνωτες,  
 δακνύ· ἀτὰρ μήτηρ ἐνάτη ἦν, ἣ τέκε τέκνα.  
 ἔνθ' ὄγ' αὖτ' ἐλθὼν κατ' ἡδὲ τεφροῦσας  
 μήτηρ δ' ἀμφεποῖατο ὀδυρομένη φίλα τέκνα.  
 28 ἔνθ' ἱλιδέσμενος, πῆρ' ἔντος λάβειν ἀμφιχῶϊεν.  
 αὐτὰρ ἐπὶ κατὰ τέκν' ἔφαγε στυθοῖο, καὶ αὐτὴν,  
 πρὸ μὲν ἀρίηλον θῆκεν θεὸς, ὅς περ' ἔφηνεν.  
 λακκὴ γὰρ μιν ἔθηκεν ἑρὸν παῖς ἀγκυλομήτης.  
 ἡμεῖς δ' ἐσκότες, θαυμάσομεν οἷον ἐτύχθη.  
 ὥς δ' ἐν θανάτῳ αἰώρα δειὼν εἰσῆλθ' ἱκατόμβας.  
 ἑκάλ' ἄσας δ' αὐτίκ' ἔπειτα θεοπροπίων, ἀχόρην  
 τίη' ἀνὰ γένεσθαι κρηνημόωντες ἀχαιοί·  
 ἢ μῖν μὲν τόδ' ἔφηνε τίρας μέγα μητίετα Ζεὺς,

Ως ἄρ' ἔφη· σκήπτρῳ δὲ μετάφρενον, ἠδ' ἐκὼς  
 πληῆεν, ὃ δ' ἰδὼν ὠκυθαλὲρ δὲ οἱ ἔκπτεσσι δάκρυ-  
 σμῶδις δ' αἵματόεσσι μεταφρένῃ ἐξυπάνισεν,  
 σκήπτρῳ ὑπὸ χρυσέῃσιν· ὃ δ' ἄρ' ἔειπε τάρβησιν τε  
 ἀλγέσας δ' ἀχρεῖσιν ἰδὼν ἀπιμόρξατο δάκρυ·  
 οἳ δ' ἐκὼς ἀχρὺ μνηοίπερ, ἐπ' αὐτῷ ἠδὲ γέλασσαν·  
 ὧς δὲ δέ τις ἐπισκερὶ δῶν ἐς πλησίον ἄλλον,  
 ὧ πόποι, ἦ δ' ἦ μύρι' ὀδυσαίνεσσι ἰδὼν ἔοργε.  
 βυλὰς τ' ἐξάρχων ἀγαθὰς, πολλὸν μὲν τε κερύων  
 νῦν δ' ἐπ' ἡ μέγ' ἄριστον ἐν ἀργείοισιν ἔρρεν.  
 ὅς τ' ἐν λωβητῇρ' ἐπισβόλοι' ἔσχε' ἀγοράων·  
 οὐ θὴν μὲν πάλιν αὖθις ἀνήσει θυμὸς ἀγῆνωρ,  
 νηκίειν βασιλῆασι δὲ δόλοισι πέλειαν.

Ως φάσαν ἡ πληθύν, ἀνὰ δ' ὃ πολίπορθος ὀδυσαίνεσσι  
 ἔειπε σκήπτρον ἔχων, παρὰ δὲ γλαυκῶπις ἀθήνη  
 ἐδόμεν' κήρυκε, σιωπᾶν λαὸν ἀνῶγε,  
 ὥς ἅμα θ' οἱ πρῶτοί τε, καὶ ὕστατοι υἱὸς ἀχαιῶν  
 μῦθον ἀκούσσεσθαι καὶ ἐπιφρασάϊατο βυλῇν·  
 ὅσφιν ἐϋφρονέων ἀγορήσατο καὶ μετέφην·  
 Διὶ δ' ἠνὺν δ' ἡ σὲ ἀνάξ' ἐθέλουσιν ἀχαιοὶ  
 πᾶσιν ἐλέγχουσιν θέμεναι μισόπτεγι βροτοῖσιν·  
 οὐδέ τί τοι ἐκτελέουσιν ὑπόσχουσιν, ἦν περ ὑπέσαν,  
 ἐνθάδ' ἐτοίμηχοντες ἀπ' ἄργεος ἵπποβότοιο,  
 ἦλιον ἐκπέρσασθ' ὑπείχον ἀπονέεσθαι.  
 ὅς τις γάρ ἢ παῖδ' ἐκ παρὸς χῆραί τε γυναικῆς,  
 ἀλλήλοισιν ὀδύρονται οἰκόνδε νέεσθαι,  
 ἢ μὴρ καὶ πόνος ἐσὶν ἀνιθέοντα νέεσθαι,  
 καὶ γάρ τις θ' ἐνα μῆνα μένων ἀπὸ ἧς ἀλόχοιο,  
 ἀσχαλὰ παρὰ νηὶ πολυξύνῳ, ἦν περ ἄλλαι  
 χεῖρ' αἰετῶσιν, ὄρινομένην τε θάλασσαν.

δ' πέπτοντες, καὶ ἱλέερχε, ἀχαϊδῆες, οὐκ ἔτ' ἀχαιοί,  
 οἵ κ' ἀνέπερ σὺν νηυσὶ νέμεθα. τόνδε δ' ἰδὼ μιν  
 αὐτοῦ ἐνὶ βοίῃ γέρα πωσέμεν, ὄφρα ἴδῃται  
 ὃ ῥά τί δι' ἔμμεν προσεμύνομεν, ἦε καὶ οὐκί.  
 ὅς κ' αὖ σὺν ἀχιλλῆα, τοῖ μὲν ἀμύνονα φάτα,  
 ἠτίμῃσιν· ἑλὼν γὰρ ἔχθ' ἑρέας αὐτὸς ἀπύρας.  
 ἀλλὰ μάλ' οὐκ ἀχιλλῆϊ χόλος φρεσὶν, ἀλλὰ μεθύμαρ.  
 ἢ γὰρ ἄρ' ἀβρίδῃ, σὺν ὕστατα λαβήσασο.

Ως φάτο, νεκείων ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν  
 Θερσίτης· τῷ δ' ὤκτα παρίστατο δῖος Ὀδυσσεύς.  
 καί μιν ὑπόδρα ἰδὼν, χαλκῷ ἠνίπασι μύθη.  
 Θερσίτ' ἀκριτόμυθε, ληρύσσιρ ἰδὼν ἀγορητής,  
 ἴσχεο, μήδ' ἐθέλῃ οἷος εἰβέμεναι βασιλεῦσιν.  
 οὐ γὰρ ἐγὼ σέο φημί χειρότερον βροτῶν ἄλλοφ  
 ἔμμεναι. ὅσοι ἄμ' ἀβρίδῃς ὑπὸ Ἴλιον ἔλθον.  
 τῷ, οὐκ ἂν βασιλῆας ἀνὰ σόμ' ἔχωρ ἀγορεύοις.  
 καί σφιν ὀνειδίξαι τε προφύροις, νοσόντε φυλάσσοις.  
 οὐδ' ἐτι πω σάφα ἰδόμεν ὅπως ἔσαι τάδε ἔργα,  
 ἢ ἔν, ἦε κακῶς νοσήσομεν ὕπης ἀχαιῶν.  
 τῷ, σὺν ἀβρίδῃ ἀγαμέμνονι ποιμὴν λαῶν  
 ἔσσαι ὄνηδίῳ, ὅτι οἱ μάλα πολλὰ διδοῦσιν  
 ἕρως δαναοί· σὺ δ' ἐκερτομέων, ἀγορεύεις.  
 ἀλλ' ἔκτοι ἱρίω, καὶ δ' ἐκὼ τετιλεσμένον ἔσαι.  
 εἰ κί ποτ' ἀφραίνοντα κιχέσομαι ὥς νῦν περ ὦδῃ,  
 μηκέτ' ἔπειτ' Ὀδυσσῆϊ κάρη ὤμοισιν ἐπιήψῃ,  
 μήδ' ἐτι τηλεμάχοιο πατὴρ κυκλημένος εἴηρ,  
 εἰ μὴ ἐγώ σε λαβὼν, ἀπὸ μὲν φίλα ἕμματα δύσω,  
 χαλκὸν ἄντ' ἢ δὲ χιτῶνα, τά, τ' αἰδῶ ἀμφιπαλύψῃ,  
 αὐτὸν δ' ἐκλαίοντα θοὰς ἐπὶ νῆας ἀφύσω,  
 πεπληγὸς ἀγορήθην ἀσκήσει πληγῇσιν.

25 ὡς βασιλίδες, ὧς ἔδωκε Κρόνος παῖς ἀγκυλῶ μήτι  
 25 σκῆπτρόν τ' ἥδ' ἐθέμιστας, ἵνα σφισι βασιλεύῃ. Νόθ' ὅ  
 ὡς ὅ γε κλισιάων δίεπε σφαῖρα, οἳ δ' ἀγορήνδε  
 αὖτις ἐπεσθύνοντο νεῶν ἄπο, καὶ κλισιάων  
 ἦ χῆ, ὥς ὅτε κύμα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης  
 αἰγιαλῷ μεγάλῳ βρέμεται, σμαραγδ' ἐκείνῳ πόντῳ  
 ἄλλοι μὲν ῥ' ἐῖς ῥ' ἐρήτυθον δ' ἐκθέσσαν  
 Θερσίτης δ' ἐν μὲν ὅ ἀμετροεπὴς ἐκελώα,  
 ὅς ῥ' ἐπεσφρεσίη ἥσιν ἀκυσμάτε, πολλὰ τε ἦδ' ἡ  
 μάτ', ἀτὰρ ὅ κατὰ κόσμον εἰβέμεναι βασιλεύουσιν  
 ἄλλ' ὅ, πῶς οἳ ἄσφαυτο γλαίῳ ἀργείοισιν  
 ἔμειναι. αἰσχιστοὶ δ' ἐκείνῳ ἦλθον ἦλθον.  
 φορκὸς ἔην, χυλὸς δ' ἕτερον πόδα, τῷ δ' οἳ ὦμα  
 κυρτῷ ἐπὶ σῆθ' ὅ συνοχωκότι. αὐτὰρ ὑπόρθον,  
 φοξὸς ἔην κεφαλὴν. φειδνὴ δ' ἐπεσθύνθη λάχνη.  
 ἔχθιστος δ' ἀχιλῆϊ μάλιστα ἦν, ἥδ' ὀδυσῆϊ.  
 τῷ γὰρ νύ κείνοισι τὸτ' αὐτ' ἀγαμέμνονι διῶ.  
 ὄξεια κικληγὰς λέγ' ὀνείδεα. τοῖ δ' ἄρ' ἀχαιοὶ  
 ἐκπέγλως κατέοντο νεμεσσηθέντ' ἐνὶ θυμῷ.  
 αὐτὰρ ὁ, μακρὰ βοῶν, ἀγαμέμνονα νέκυσσε μύθῳ.  
 ἀτρεΐδῃ, γέοδ' αὐτ' ἐπιμέμφεαι, ἥδ' ἐχάτιστα  
 πλεῖστοι χαλκῷ κλισία, πολλὰ δ' ἐκ μιν αἰσ  
 εἶσιν ἐνὶ κλισίῃς ἐξαίρετοι, ἄς τοι ἀχαιοὶ  
 πρωτίστ' εἰδόμενοι, εἴτ' ἄν πολλὸν ἔσθον ἐλωμεν.  
 ἢ ἐτι καὶ χρυσὸν ἐπιδύειαι, ὅρ κέ τις οἶσσι  
 τρώωνι ποδῶν ἐξ ἰλίου ἤδ' ἀποινα.  
 ὄνκιν ἐγὼ δ' ἤσας ἀγάγω, ἢ ἄλλ' ὅ ἀχαιῶν  
 ἢ ἐκ μιν αἰσίνην, ἵνα μίσγειαι ἐν φιλότιν,  
 ἦν τ' αὐτὰρ ἀπο νόσφι κατήσχευ, ὅ μιν εἰσεν  
 ἀρχὸν ἐόντα, κακῶν ἐπιβασκέμεν ὕπαι ἀχαιῶν.  
 ὅ πέποις

φούξι δ' ἐν νύκτι πολυκλήϊσι πισοίτες,  
 παρδύκεν δὲ χωλήν πριάμεν, κὴ βωσὶ λίποιτα  
 ἄρ' ἔην ἑλένην· ὣς εἶπεα πολλοὶ ἄχαιῶν  
 ἐν βούῃ ἀπόλυντο φίλης ἀποπατρίδ' ὅλης·  
 ἀλλ' ἴθι νῦν μετὰ λαὸν ἄχαιῶν, μὴ δὲ τ' ἐρώε.  
 σοῖς δ' ἄρουοῖς ἐπέεσσιν ὀρήτ' υἱὸς Πάριος  
 μὴ δὲ ἱὰ νῆας ἄλαδ' ἐλκόμεν ἀμφικλίστας.

Ως φάθ', ὃ δὲ ξυώνκ' ἐθεῖς ὅπα φωνησάσσης.  
 βῆ δὲ θέων, ἀπὸ δὲ χλαῖναν βάλε· τήν δ' ἐκόμισα  
 κήρυξ Εὐρυδάτης ἰθακήσιον, ὅς οἱ ὀπήσα.  
 αὐτὸς δ' ἄρ' εἰδε ἀγαμέμνονα· ὦν ἦτο' ἰλθὼν,  
 δὲ ξαπό οἱ σκῆπτρον παρώϊον ἄφθιτον αἶψ'  
 σὺν βῶ, ἔβη κατὰ νῆας ἄχαιῶν χαλκὸν χιτῶνα·  
 ὄντινα μὲν βασιλῆα, καὶ ἔξοχον ἄνδρα κίχην,  
 τὸν δ' ἄρουοῖς ἐπέεσσιν ἐρητύσσειε παραστάς·  
 δαμόνι, οὗ σ' εἶοικε κακὸν ὧς δ' ἐδίωκε δαυ-  
 ἀλλ' αὐτὸς τε κάθητο, καὶ ἄλλος ἴδρυε λαούς·  
 ἔ γάρ πω σάφα οἶδ' οἷος νόος Ἀρείδωο.  
 νῦν μὲν παρῶται, τάχα δ' ἴψεται ὕψος ἄχαιῶν·  
 ἐν βυλῇ δ' ἔ πάντες ἀκρύσσει μιν οἷον ἔειπε.  
 μή τι χολώσάμεντο, ῥέξῃ κακὸν ὕψος ἄχαιῶν·  
 θυμὸς δὲ μέγας ἐστὶ διοτρεφέων βασιλῆων.  
 τιμὴ δ' ἐκ Δίος ἐστ· φίλῃ δὲ ἐμνήπτα Ζῆς.  
 εἴν δ' ἄν δ' ἔμμεν τ' ἄνδρα ἴσθι, βοόωντα τ' ἱφύροισι,  
 ἄν, σκῆπτρῳ ἑλάσσειεν, ὁμοκλήσσειε τι μύθο·  
 δαμόνι ἄρεμας ἦτο, καὶ ἄλλων μύθον ἄσκε,  
 εἴ σοι φέρτεροί εἰσι· σὺ δ' ἀπλόημιτο, καὶ ἀναλκίς,  
 οὐτ' ἐν ποτ' ἐν πολέμῳ ἱναρίθμιτο, οὐτ' ἐν βυλῇ·  
 ἔ μιν πᾶς πάντες βασιλῆες μὲν ἐνθάδ' ἄχαιοι·  
 ἔκ ἀγαθὸν πολυκροῖσιν· εἰς κείρουτο ἔσω,



πάντες ἱερῖοιο, τὰ μὲν τ' εὐρός τε, νοτί τε  
 ὄρορ' ἐπαΐξας πατρὸς Διὸς ἐκ νεφελῶν,  
 ὣς δ' ὅτε κινήσῃ Ζεφυρὸς βαθὺ λήϊον ἰθὺν  
 λάβρ' ὅ' ἱπαιγίον, ἐπὶ τ' ἡμῶν ἀσπερχύσιν,  
 ὣς τῶν πᾶσ' ἀγορὴ κινήθῃ. τίδ' ἀλαληθεὶς  
 νῆας ἱπασδύοντο. ποδῶν δ' ὑπ' ἐνερθε κενὴν  
 ἴστατ' ἀερομένη. τίδ' ἀλλήλοισι κέλευον,  
 ἀπ' ἡΐσαι νηῶν, ἥδ' ἰκτέμεν ὅς ἄλα δῖον,  
 οὐρούς τ' ἐξυιάσαρον. αὐτὴ δ' ἕβρανὸν ἱκῶ  
 οἴκαδ' ἱμένων, ὑπὸ δ' ἥρεον ἱρματὰ νηῶν.  
 ἰνθάκων ἀργείοισιν ὑπέρμορα νόσος ἐτύχθη,  
 μὴ ἀθηνάων ἦρ' ἔρη πρὸς μύθον ἔειπεν.  
 ὦ πόποι αὐγίόχοιο Διὸς τέκετ' ἀρυτώνη.  
 οὕτω δ' ἡ οἰκόνδε, φίλῃν ἐς πατρίδα γαῖαν  
 ἀργεῖοι φούξονται ἐπ' οὐρέα νῶτα θαλάσσης  
 κεδδέκων διχωλὴν Πειάμῃ καὶ τρωσὶ λίποιεν  
 ἀργεῖν ἰλέην, ὅς ἔννεα πολλοὶ ἀχαιῶν  
 ἐν ροίῃ ἀπόλυντο φίλης ἄπο πατρίδος αἶης.  
 ἀλλ' ἴθι νῦν μετὰ λαὸν ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶνων.  
 ὅτις δ' ἀγανοῖς ἐπέεσσιν ἱρήναι φῶτα ἴασον,  
 μὴ δ' ἐἴαν νῆας ἄλλαδ' ἰκτέμεν ἀμφικλίσας.  
 Ως ἔφατ', ἐδ' ἀπίθουσε θιά γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 αἷ δ' ἐκτ' ἑλὺμποιο κερήνων αἶξασα.  
 περπαλίμως δ' ἵκανε θεὰς ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν.  
 εὐρον ἔπειτ' ὀδυσῆα Διὶ μῆτιν ἀτάλοπρον  
 ἰσκότ'. ἐδ' ὄγμ' νηὸς εὐσέλμοιο μελαινῆς  
 ἔπλετο, ἐπεί μιν ἄχος κραδίην, καὶ θυμὸν ἵκανε.  
 ἀγχι δ' ἰσαμένη, προσέφη γλαυκῶπις Ἀθήνη.  
 διογενὲς λαὸν τίσθῃ πολυμήχαν' ὀδυσσεύ,  
 οὕτω δ' εἰκὼν δέ, φίλῃν ἐς πατρίδα γαῖαν

Δυσκλῖα ἄρχ' ὅτ' ἰκίεσθαι, ἐπὶ πολὺν ὥλιστα λαὸν.  
 οὐτὼ πῦ Διὶ μέλει ὑπὲρ μιν, ἵ φιλῶν εἶναι,  
 δ' ἵ πολλὰ ὥν πολίων κατέλυσεν κάρηνα,  
 ἡ δ' ἐπὶ καὶ λῦσεν. το, γὰρ κράτ' ἐσὶ μέγιστον,  
 αἰσχρὸν γὰρ τόδ' ἐσὶ καὶ ἐσσομένοισι πυθῆναι,  
 μάτ' οὐτὼ πτόνδ' ἐσσομένοισι τι λαὸν ἀχαιῶν,  
 ἀπρηκτον πόλεμον πολέμι' ἴδ' ἡδ' ἐμάχιδαι  
 ἀνδράσιν παυροτέροισι. τέλ' ὅτ' ἐπὶ πῶν πύφονται.  
 ἵππερ γὰρ ἔθελον μὲν ἀχαιοί τε, βῶϊς τε  
 ὄρλια πρὸς ταμύντις ἀειθμῇ ἡμεῖς ἀμφω,  
 πῶας μὲν λῆξαι εἰς ἵπποις, ἔσσοι ἔσσοι,  
 ἡ μὲν δ' ἐς δικάδας διακωσμηθῆμεν ἀχαιοί,  
 πρῶων δ' ἀνδρῶν ἔσσοι ἐλπίμεθα οἶνοχοοῖν,  
 πολλαῖον δικάδας δ' οὐοῖαν οἶνοχοοῖο.  
 τόσσον ἐγὼ φημι πλείας ἔμμεναι ὕας ἀχαιῶν  
 φῶων, οἱ καί εἰσι κατὰ πόλιν. ἀλλ' ἐπὶ κρυφοί  
 πολλῶν ἐκ πολλῶν ἐγχεσθῶσι ἀνδρες ἔσσοι.  
 οἶμαι μέγα πλάσσει, καὶ ἔκ ἐσ' ἐθελοντα  
 ἱλίον ἐκπίρσαι δύνασθῃ μὲν πόλιν ἰθῶν.  
 ἱνὴ αὖ δ' ἐβόασι Διὸς μέγαν ἐνὶ αὐρί.  
 καὶ δ' ἡ δ' ὄρα σέσηπεν νεῶν, καὶ σπάρτα λείπονται.  
 αἱ δ' ἐπὶ πῦ ἡμέτεράϊ τ' ἀλχοι, καὶ νῆπια τίνα,  
 ἵσταται ἐν μεγάροισι πολὺν ἐγχεσθῶν. ἀμμιδ' ἐγχοι  
 αὐτὸς ἀκράανον, ὅτ' ἔπειτα δ' οὐρ' ἰκόμεθα.  
 ἀλλ' ἀγὰρ ὡς ἂν ἐγὼ ἄπω, παθῶμεθα πάντες,  
 φούρω μὲν σὺν νηυσὶ φίλην ἐς πατρίδα γαῖαν,  
 ὅ γὰρ ἐν προίην αἰρήθω μὲν ὑνυάγην.  
 Ὡς φησὶ τοῖσι δ' ἐθυμὸν ἐνὶ στήθεσιν ὄρει  
 πᾶσι μετὰ πληθύν. ὅτ' ἔθ' ἐβλήσεν ἐπ' ἀκυσσάν.  
 καὶ ὅθ' ὅτ' ἀρεγῇ, ὡς κύματα μακρὰ θαλάσσης

οἷδ' ἐπ' ἀνέστησαν, πείθοντό τι ποιμένοι λαῶ  
 σκηπτοῦ χει βασιλῆες· ἐπιστεύοντο δ' ἅ λαοί·  
 ἦν τε ἔθνεα εἴσι μελισσάων ἀδινώων,  
 πέτρης ἐκ γλαφυρῆς αἰεὶ νέον ἐρχομινάων·  
 βορυσθὸν δ' ἐπίτονται ἐπ' ἀνθεσιν ἐάεινοῖσιν·  
 αἳ μὲν, τ' ἐνθα ἄλῃς πεποτήχεται, αἰδ' ἐ, τε ἐνθα  
 ὥς τῶν, ἔθνεα πολλὰ νῶν ἄπο, καὶ κλισιάων,  
 ἡϊόνος προπάροιθε βαθείης ἐσιχόωντο·  
 ἰλασθὸν ἐς ἀγορὴν· μετὰ δ' ἐσφισιν ὄσσε δειδύμε  
 θρύνεσθ' ἵνα Διὸς ἀπέλθῃ· οἷδ' ἀγέροντο·  
 τεβήχ' δ' ἀγορῇ, ὑπὸ δ' ἐσοναχίφθο γαῖα  
 λαῶν ἰόντων, ὄμαδος δ' ἦν, ἐννέα δὲ σφίεα  
 κήρυκες βοόωντες ἐρήτυον, εἴ ποτ' αὐτῆς  
 σχοιάτ', ἀκούσαν δὲ Διοτρεφίω βασιλῆων,  
 πωυδῆ δ' ἐξο λάος, ἐρήτυθων δ' ἐκαθέδρας  
 παυσάμενοι κλαγγῆς· ἀνά δ' ἐκρείων ἀγαμέμνων  
 ἔση σκῆπρον ἔχωρ· καὶ μὲν ἤφαιστος κάμε τινύχων,  
 ἤφαιστος μὲν δῶκε Διὶ χρονίωι ἀνακτι·  
 αὐτὰρ ἄρα Ζεὺς, δῶκε δ' ἰακτόρῳ ἀργυρόντη·  
 ἱρμείας δ' ἐἴναξ, δῶκε Πέλοπι πληξίππῳ·  
 αὐτὰρ ὁ αὐτὲ πέλῳ, δῶκε ἀρείῳ ποιμένι λαῶν,  
 ἄβρως δ' ἐθνήσκων, ἔλιπε πολυάργυρι Θυέστῃ·  
 αὐτὰρ ὁ αὐτὲ θυέστ', ἀγαμέμνονι λιῖπε φορῆναι,  
 πολλῇσιν ἡσίοισι καὶ ἀργυρί παντὶ ἀνάσσειν·  
 ἴδω, ὅτ' ἐρησάμενος, ἔπια πηρόεντα προσέηυδα·  
 ὅ φίλοι ἦσαν δαναοί, θεράποντες ἄριστοι,  
 Ζεὺς με μέγα χρονίδης ἄτη ἐνέδησε βαρύν·  
 σχίπτλιος, ὅς πρην μὲν μοι ὑπὲσχετο, καὶ κατέκυσσε  
 ἴλιον ἐκπέρσαντ' ὑπὲρ χεῖρα, ἀπονεύειναι·  
 νῦν δ' ἐκ κρήν' ἀπὸ πύλῳ βυλινύσσει, καί με κελινῶ

τοῖσ', ὅγ' συγκαλίσσας, πυκινὴν ἡρτῆντο βελόν.  
 κλυτὴ φίλοι, θύοσ' μοι ἐνὶ πνιον ἤλωσ' ἔσθ'.  
 ἀμβροσίην σὺν ἔκτα· μάλιστ' ὃ Νίσσεσι δίφ  
 ἰδὸς τε, μέγα θός τε, φύνειτ' ἄρχ' ἔτα ἰώκ'.  
 σὴ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆσ', καί με πρὸς μῦθον ἔειπε.  
 ἰδὸς ἀρίστος ἢ δαΐφρονος ἱπποδάμοιο·  
 οὐχ ἡ παννύχιον ἰδὸν βυλὴφόρον ἀνδρα,  
 ὡς ἄλλοι γ' ἐπιτιθέσθαι καὶ τόσων μίμηλε.  
 νῦν δ' ἐμίθων ξύνεισ' ὦκα. Δὸς δέ τοι ἀγγελός ἐμι-  
 ποῖ σὺν ἀνέσθων ἰών, μέγα κήδεσσι, ἢ δ' ἐλικάρι.  
 θαρῆξαι σε κίλευσιν κερκισμένοντας ἀχαιούς,  
 πανσυνδύη· νῦν γὰρ κεν ἔλθῃς πόλιν ὑβράχην  
 τρώων. οὐ γάρ ἐγ' ἀμφὶς Ὀλύμπια δώματ' ἔχοντες  
 ἀθάνατοι φράζονται· ἐπὶ γὰρ κούρην γὰρ ἅπαντας  
 ἔρη λισσομένη· τρώεσσι δὲ κήδ' ἐῖφι ἦται  
 ἐκ Δίος· ἀλλὰ σύ σῃσιν ἔχι φρεσίν· ὥς ὁ μῦθ' ἐπὶ ὦν,  
 ὕχ' ἀποπλάμμοις, ἐμὲ δ' ὅ γλυκὺς ὕπνος ἀνῆκεν.  
 ἀλλ' ἄγετ' αἰκίον πῶς θαρῆξομεν ὕπαι ἀχαιῶν.  
 πρῶτα δ' ἐγὼν ἐπίσιν περήσομαι, ἢ δ' ἐμὲ ἐσί-  
 καὶ φεύγῃ σὺν νηυσὶ πολυκλήϊσι κελύσω.  
 ὑμῖν δ' ἄλλοθεν ἄλλος ἐρητύειν ἐπίσιν.  
 ὅτοι ὅγ' ὥς ἐπὶ ὦν, κατ' ἄρ' ἔειπε· τοῖσι δ' ἀνίστα  
 Νίσσεσ', ὅς ῥα πύλοιο ἀναξὴρ ἦμαθόντ'.  
 ὅσφιν ἐν φρονέων, ἀγορήσατο, καὶ μετέειπε.  
 ὦ φίλοι, ἀργείων ἡγήτορις ἦδ' ἐμίδοντες.  
 οἱ μὲν τις τὸν ὄντορον ἀχαιῶν ἄλλος ὕπαι,  
 ψευδὸς κεν φαῖμεν, καὶ νοσφίσοιμεθα μάλλον.  
 νῦν δ' ἴδαν ὅς μιν ἄριστος ἐνὶ στρατῷ ὕχεται ἴναι·  
 ἀλλ' ἄγετ' αἰκίον πῶς θαρῆξομεν ὕπαι ἀχαιῶν.  
 ὦ ἄρα φρονέσας, βελῆς ἐξήρχε νέεσθαι.

ἢ λαοὶ τ' ἐπιτεράφαται, καὶ τόσσα μέμνηται.  
 νῦν δ' ἐμίθεον ξύνεσθ' ὦκα. Διὸς δ' ἐτοί' ἀγγέλους ἔμμι,  
 ὅς σε ὑπ' ἀνιυθῶν ἰώρ, μέγα κέδεται, ἥδ' ἐλειαίρῃ.  
 θωρήξαι σὺ κίλινσε κερηνομόωντας ἀχαιοὺς  
 πανσυνδίη. νῦν γάρ κεν ἔλθῃς πόλιν εὐρυάγυιαν  
 τρώων. ὃ γάρ ἐτ' ἀμφὶς ὀλύμπια δώματ' ἔχοντες  
 ἀθάνατοι φράζονται. ἐπὶ γναμψῶν γάρ ἅπαντας  
 ὤρη λιατομένην. τρώεσσι δ' ἐκὼς ἐφ' ἡπείῃ  
 ἐκ Διὸς. ἀλλὰ σὺ σῆσιν ἔχε φρεσὶ. μὴ δ' ἐσὶ λύθη  
 αἰρείτω. ἔντ' ἂν σὺ μελίφρων ὕπνοσ' ἀνῆη.

Ὡς ἄρα φανήσας, ἀπεβήσατο. τὸν δ' ἔλιπε αὐτοῦ  
 τὰ, φρονέοντ' ἀνὰ θυμὸν, ἃ ῥ' ὃν τελεῖσθαι ἔμελλε.  
 φῆ γάρ ὃ γ' αἰρήσῃν Πριάμην πόλιν ἤματι κίνηθ  
 νῆπιος. οὐδ' ἐν τὰ, δὴ, ἃ ῥὰ Ζεὺς μῆδετο ἔργα.  
 θῆσεν γάρ ἐτ' ἐμελλῶν ἐπ' ἀλγιάτε, σοναχάσσει,  
 τρωσὶ τε καὶ δαναοῖσι σῆξ' κρατερὸς ὕσμινας.  
 ἔργῳ δ' ἐξ ὕπνου. θιῖν δ' ἐμὶν ἀμφέχοντ' ὄμφη.  
 ἔλτετο δ' ὀρθωθείς. μαλακὸν δ' ἐξέδωκε χιτῶνα  
 καλὸν, νηγάτεόν. περὶ δ' αὖ μέγα βάλλετο φάρσιν.  
 ποσσὶ δ' ὑπαὶ λιπαροῖσιν ἰδέσθαι κελεύει δίλιν.  
 ἀμφὶ δ' ἄρ' ὕμοισιν βάλλετο ξίφος ἀργυρέην.  
 εἴλετο δ' ἐκ κῆπρον πατρώϊον ἀφθιτον αἰεὶ.  
 σὺν τῷ, ἔβη κατὰ ἡῶς ἀχαιῶν χαλκῷ χιτῶναι.  
 ὅς ποτ' ἐκ θιὰ προσεβήσατο μακρὸν ἡλυμπτον.  
 Ζηνὶ φέωσ' ἱρέεσσα καὶ ὅλοις ἀθανάτοισιν.  
 αὐτὰρ δ' ἐκρυκίωσι λιγυφθέγγοισι κίλινε  
 κηφύσῃν ἀγορήν δ' ἐκ κερηνομόωντας ἀχαιοὺς.  
 οἱ μὲν ἐκέρυσσον. τοῖς δ' ἡγήροντο μάλ' ὦκα.  
 βαλὴν γάρ πρῶτον μεγαθύμων ἱεὺς γερσίτορ  
 ἱεὺς ῥέβη παρὰ κῆπρον πυλινῶν βασιλῆος.



ΙΛΙΑΔΟΣ.Β.ΟΜΗΡΟΥ  
ΡΑΥΔΙΑΣ.

Βῆτα δ' ὀνδρον ἔχδ. ἀγορήν, καὶ νῆας ἀειθμῇ

λλοι μὲν ὅα θεοί τε, καὶ ἄνθρωποι ἰπποκυ-  
ρυσταί,

Α ἑὸν παννύχιον. Δία δ' οὐκ ἔχεν ὁ  
μὲν ἦτορ.

ἀλλ' ἔγωγε μερμήριζε κατὰ φρένα, ὥς ἀχιλλῆα  
τιμήσῃ, δόλῃσιν δ' ἐπολιῶσι πῖπτον ἄχαιῶν.  
ἦ δ' ἐπεὶ οἱ κατὰ θυμὸν ἄρις ἐφαίνετο βελύχῃ  
πέμψαι ἐπ' ἀβρίδῃ ἀγαμέμνονι δούλῳ ὄναρρον.  
καί μιν φωνήσας, ἔπειτα πηρόευντα προσέηυδα,

Βολὴν ἰθὺς ἐν φρεσὶ τοῦ ἀνθρώπου ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν,  
ἐλθὼν ἐς κλισίην ἀγαμέμνονος ἀφείδω,  
πάντα μάλ' ἀφεικώς ἀγορεύει μιν ὡς ἐπιτίλλω.  
Θωρῆξαι ἐκίλευε κερκηρόωντας ἀχαιούς  
πανσυνδίῃ· ἡνὲν γάρ κεν ἔλθοι πόλιν ἑνὶ ῥάγῃσιν  
ῥῶον· οὐ γὰρ ἔτ' ἀμφὶς δ' οὐ μὲν πια δώματ' ἔχοντες  
ἀθάνατοι φράζονται· ἐπὶ γὰρ ναυέεσσι πάντας  
ἔρη λιαγομένην· τῇ ὥσιν δὲ κ' ἐδὲ ἐφ' ἡπείῃ.

Ως φάτο· βῆ δ' ἄρ' ὄνεραι, ἐπὶ τὸν μῦθον ἄκουσι.  
καρπαλίμως δ' ἵκσει θοὰς ἐπὶ νῆα σ' ἀχαιῶν  
βῆ δ' ἄρ' ἐπ' ἀριδίῳ ἀγαμέμνονα· τὸν δ' ἐκίχαντο  
εὐδοντ' ἐν κλισίῃ· περὶ δ' ἀμβρόσιος κίχου ὕπνου  
ἦ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς νηληϊῆ· οὐδ' οἰκῶς  
Νέστωι, τὸν δ' αὖ μάλιστ' αἰχρύντορ τί' ἀγαμέμνονα.  
ὣδ' μιν ἰδσάμενος προσεφάνη θεῖος ὄνεραι·  
εὐδεις ἄριος ἐν δαΐφρονος ἱπποδάμοιοις  
οὐχ ἤ παννύχιον εὐδῆν βυλκφόρον ἀΐφει,

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ἀπαγγελᾶσθαι κατὰ λαχὸν δ' ἐὶ δ' ὑποκρίτης ἐποίησιν τῶν φ  
 τούματων, καὶ τῶν νηῶν.

## Α Λ Λ Ω Σ.

ὡς ἐμύμνητο Οἰπίδ' ὅτ' ἡς ἰκίσσας· τῶν ἄλλω,  
 [ θιῶντε, καὶ ἀνθρώπων ὕπνῳ χελαίνων, πρὸ  
 ὀφθαλμῶν ὑπιοῦμνος ἔρ' τῷ Γηλέως, ὄντορ ἀγα  
 μένονι πίμπει, κελούων αὐτὸν ἐκὼν βάλλειν πάντας τῶς  
 ἑλλώας εἰς τὴν μάχην· καὶ συμβυλόμενοι αὐτῷ δηλαδὴ  
 καὶ ἔρ' ἀχιλλείᾳ παρακαλίσσαι· ὁ δ' ἐ, ὅ σωμνίς ἔ' ὄναρ,  
 πῶς ἀρεῖσθαι αὐτῷ δειγνέται· καὶ μετὰ τῶν εἰς ἐκκλη  
 σίαν ἀθροίσας πάντας ἑλλώας· ὑπὸ πῶς πρὸς αὐτὸς δι  
 ακείμενος, διὰ ἔ' ἡγνέσθαι ἔρ' ἀχιλλείᾳ ἐπιβήμεμον αὐ  
 τῷ τῇ ἀφ' ἧ, προδικησέσθαι π' πᾶν πλῆθος πέρ' ἄλ' ὄν,  
 γην αὐτὸς εἰς τὰς πατρίδας κελύσει· οἱ δ' ἐ, ὅ σωμνίς,  
 ἐπὶ ἔ' κατέλκει τὰς ναῦς, καὶ εἰς τὰς πατρίδας ἀπαλλά  
 τήσθαι χωρεῖσιν· ὁ δ' ὕστερος δ' ἐὶ ὑποθεμένης αὐτῷ ἀθηνᾶς,  
 τῶς μὲν ἀφίστης, πείθει κατέχειν· τῶν δ' ἐ' στρατιωτῶν, πρὶ  
 κρῶς κατὰ πῆται· παύει δ' ἐ καὶ Θερσίλῳ ἀμυνέσθαι  
 πρὸς ἔν βασιλῆα ἐκσιάζοντα· καὶ τῶς ἑλλώας μῆναι, καὶ  
 τὴν ἴλιον ἐλθὲν προσηέπει· συμβυλόμεσαντο δ' ἐ καὶ  
 Νέστορ' ὅτ' αὐτὰ, ἀγαμέμνονι θύσας τοῖς Διὶ, τῶς γ' ἐ  
 φοίτας ἐσθ'· καὶ προσηφάμενος τῶς ἑλλώας, ἐπὶ π' ἄν  
 πόλεμον ἐξάγει ἄπαντας· ἐξῆς δ' ἐ' εἰσι δ' ἐ κατὰ λαχ' ὅ  
 τῶν νηῶν, ἐφ' ὧν ἦλθον οἱ πῶες, καὶ οἱ ἑλλώας, καὶ  
 τῶν ἐπικυρῶν, καὶ τῶν ἡγεμόνων αὐτῶν.

ἔνθα μὲ σῖνπις ἄνδρες ἀφαρ καμίσαντες ἦσαν.  
 Ως φάρ· μέδισσεν ὃ θεὰ λαοκώλεσθ' ἦρην.  
 μεθύσασα δ' ὃ, παιδὸς ἐδ' ἔξαυ χερὶ κύπυλλορ.  
 αὐτὰρ δ' οἷς ἄλλοισι θεοῖς ἐνδ' ἔξαυ πᾶσι  
 ὄνοχόε, γλυκὺν νέκταρ ἀπὸ κρητῆρ' ἀφύων.  
 ἄσβεστος δ' ἄρ' ἐνδ' ἄρ' ἔλως μακάρισι θεοῖσιν,  
 ὡς ἴδον ἤφαιστον σφ' ὁ δώματα ποικιλύοντα.  
 ὡς τότε μὲν πρόπων ἦμαρ ἐς ἥλιον καταδύντα  
 δαίνωτο, ὃ δ' ἐπ' οὐμὸς ἐδ' ὄψο δαυτὸς ἴσσης.  
 ὃ μὲν φέρμεγγ' ἐπεκαλλέσθ' ἦν ἔχ' ἀπόλλων,  
 μεσάων δ' ἄσθον ἀμειβεμένοισι ἐπὶ καλῇ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατέδυν λαμπρὸν φάσγ' ἡλίοιο  
 οἱ μὲν, κακκείοντες ἔβαν οἴκον δ' ἐλαστος.  
 ἔχ' ἱκάσθ' ὁ δ' ἔμα πεινυλὸς ἀμφιγυῖας  
 ἤφαιστος ποίησ' ἐδύησι πρᾶπίδασι.  
 Ζεὺς δ' ὃ πρὸς ὄν λ' ἐχ' ἢ ὀλύμπι' ἀετοπιτῆν.  
 ἔνθα πάρος κριμάθ, ὅτε μιν γλυκὺς ὕπν' ἰκάσιοι.  
 ἔνθα κάθευδ' ἀναβάς· παρὰ δ' ἐ, χυσε βροτοῖ' ἦρην.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Β. ΟΜΗΡΟΥ  
 ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

ὅτε ὕπνον ἐπιπέμψας ἀγαμέμνονι, παρακελεύεται  
 ὁ τὸς Ἕλληνας ἐξάγειν αὐτὸν ἐπὶ τὴν πόλιν. ὃ δ' ὃ,  
 πρῶτον μὲν τὸν ἀρίστον οἰωμένοισιν σφωτέρω.  
 ἔπειτα δ' ἐκκλησίαν ποιησάμενος, ἀποπερᾶται αὐτοῖς  
 τὸν παρακελεύσάμενος φεύγειν ὡς τὰς πατρίδας. καὶ  
 τὴν δ' αὐτὸς ὁδοναὺς ἀθηνᾶς προνοίῃ. καὶ Νέστορ δὲ  
 μνηροῦσας ἔτα προφῆν ἀνελόμενοι, ἐξωπλίζονται αὐτοῖς  
 τῇ, καὶ ἔγχεσιν· ὁμοίως δ' ἐκ τῶν οἱ πῶς ἐδ' αὐτοῖς

# Ο ΜΗΡΟΥ

ἦ δ' οὐτο τὸτ' εἰν, ἐμοὶ μέλλε φίλον ἔργον  
 ἀλλ' ἀκύνεσθαι κάθησθαι, ἐμῷ δ' ἐπιπέθειο μύθος.  
 μὴ νύρι' ἡ χάρις μοισιν ὅσοι θεοὶ ἐσ' ἐν δολύμπῳ  
 ἔσονται ἰόντες, ὅτε κίεντι ἀάπλως χάρης ἐφίη.

Ως ἔφατ'· ἰδὲ θείων ἧ βοῶπις πότνια ἦρ.

καὶ ῥ' ἀκύνεσθαι καθῆσθαι, ἐπιγνάμψασθαι φίλον κῆρ.  
 ὠχθησάω δ' ἀνὰ δῶμα Διὸς θεοὶ ἕρπαιοντες,  
 τοῖσιν δ' ἔφουςτο κλυτὰ τεύχεα ἦρχ' ἀγορεύειν,  
 μηρὶ φίλῃ ἐπὶ ἥρα φέρων λυκάλεον ἦρ.  
 ἦ δ' ἡ λείγρια ἔργα τάδ' ἔσεται, ἧ δ' ἔτ' ὀνείκτω.  
 ἦ δ' ἡ σφὼν ἐνικα θνητῶν λειθαίνων ὦδε,  
 ἐν ᾧ θεοῖσι κελωὸν ἐλαύνοντο, ἦ δ' ἔτι δαίμων  
 ἔδωλ' ἔσεται ἦ δ' ὅτ' ἐπεὶ τὰ χεῖρόνα νικά.  
 μηρὶ δ' ἐγὼ παράφημι καὶ αὐτῇ περ νοιούσῃ  
 πατρὶ φίλῃ ἐπὶ ἥρα φέρην Διὶ, ὅφρα μὴ αὐτὴ  
 νηκέησι πατέρ· σὺν δ' ἡμῖν δῶτα ταράξῃ.  
 εἰ περ γὰρ κ' ἐθέλῃσιν δολύμπι' ἀσπεροπότης  
 ἔξ' ἐδίων συμφιλίξαι ὁ γὰρ πολὺν φέρτατός ἐστιν.  
 ἀλλὰ σὺ τὸν γ' ἐπέεσσιν ἀθάπιδαι μαλακῶσι,  
 αὐτὴ κ' ἐπεθ' ἵλατο δολύμπι' ἔσεται ἡμῖν.

Ως ἄρ' ἔφη καὶ ἀναΐξας, δέπας ἀμφικύπελλον

μηρὶ φίλῃ ἐν χερσὶ τίθει, καὶ μιν προσέειπε.  
 τίτλαθι μήτις ἐμῇ, καὶ ἀνάχαιο κηδομένη περ,  
 μὴ σε φίλην περ ἔσσω, ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδῶμαι  
 θενομένην· τότε δ' οὐτὶ δωρήσμαι ἀχνυμένοσπι,  
 χαρσμεῖν ἀργαλί' ὅτ' ἔσται δολύμπι' ὀντίφ' ἐριδι.  
 ἔδωκε γὰρ με καὶ ἄλλοτ' ἀλεξιμῆραι μεμαῶτα,  
 ῥίψι πεδὸς τεταγῶν ἀπὸ βηλῶν θεωσιόιο.  
 πᾶν δ' ἡμᾶρ φερόμεν, ἅμα δ' ἡελίῳ καταδύνῃ,  
 κάππετον ἐν λήμνῳ· ὀλίγ' ὅτ' ἐπὶ θυμὸς ἐνέει.

ἰξιδέων σφῶ πατὴρ ὁ ἐναντίον· ὃ δ' εἰ τις ἔτλη  
μῆνα ἐπιρχειμωρον, ἀλλ' αὐτοὶ ἔσω ἄποιντες.  
ὦ, ὃ μῦθ', εἴ θα καθίεντ' ἐπὶ θρόνον, ὃ δ' ἐμὴν ἦρῃ  
ἠγνοίησαν· ἰδῶσ' ὅτε οἱ συμφράσασατο βυλὰς  
ἀργυροπίφα Οἴκῃ, θυγάτηρ ἀλίοιο γέροντος.  
αὐτίκα κερκμίοισι Δία χρονίωνα προσενύδα.  
Τὶς δ' αὖρι δολομήτα θιῶν συμφράσασα βυλὰς;  
οὐκ εἶ φίλον ἐστὶν ἐμὸν ἐπὶ νόσφιν ἵοντα,  
κρυπτάδια προνέοντα διακίμῳ. ὃ δ' ἔτι πῶ μοι  
πρόφρων τέτληκας ἐπείρ' ἐπὶ ὅ, τὴν κοῆσιν.

Τὴν δ' ἡμέβητ' ἔπειτα πατὴρ ἀνδρῶν τι,  
ἦρῃ, μὴ δ' ἡ πάντας ἐμὸς ἐπὶ ἔλπεο μύθους  
ἐδύσθη. χαλεπότεοι ἔσθ' ἄλογον περ ἰούσῃ,  
ἀλλ' ὃν μὲν κ' ἐπιηκὲς ἀκνέμεν, εὖ δ' ἔπειτα  
οὔτε θεῶν πρότερος τὸν γ' ἄσινται, οὔτ' ἀνθρώπων.  
ὃν δ' ἂν ἐγὼν ἀπ' αὐθι θεῶν ἐθελήμι νοῆσαι,  
μὴ δ' ἐσὺ ταῦτα ἕκαστα διείρη, μὴ δ' ἐμὲτάλλα.

Τὸν δ' ἡμέβητ' ἔπειτα βοῶπις πότν' ἀΐει.  
ἀντάσσει χρονίῳ, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες;  
καὶ λίμν' σιπάρῃ γ' οὔτ' ἔρομαι, οὔτε μεταλλῶ.  
ἀλλὰ μάλ' ἐϋκλήῃ, τὰ φράζεις, ἅ σ' ἐθελήσας.  
τὴν δ' αὐτῶς δέιδοντα κατὰ φρένα μὴ σε παρείπῃ  
ἀργυροπίφα Οἴκῃ, θυγάτηρ ἀλίοιο γέροντος.  
ἠεὶ ῥὴ γὰρ σοὶ γὰρ παρίσσομαι, καὶ λάβει γούνα.  
τῇ σ' εἶω καταδυῖσαι ἰτ' ἡτύμον, ὥς ἀχιλῆα  
ἐμήσης· ὀλέσης δ' ὀπλίας ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.

Τὴν δ' ἀπαμείβετο, προσέφη νεφελήκερτα Ζεὺς,  
δαμονίνῃ· αὐτὴ μὲν οἶσται. ὃ δ' ἐσε λήθω.  
πρῆξαι δ' ἔμπης οὔτε δωήσεις, ἀλλ' ἀπὸ θυμῷ  
μᾶλλον ἐμοὶ ἔσται, τὸ δ' ἐπεὶ καὶ ῥίγιον ἔσται.



*[Faint handwritten notes or bleed-through from the reverse side]*

**Τ**ὴν δὲ μέγ' ὀχθέσας, προσέφη νηφελιγχεῖτα Ζεὺς.  
 ἦ δ' ἡ λίσγ' ἵα ἔργ', ὅτ' ἐμ' ἰχθοδ' οἰῆσαι ἐφύσας  
 ἔρη, ὅταρ μ' ἐρέθουσιν ὀνείδιοις ἐπίεσιν.  
 ἦ δέ, καὶ αὐτῶς μ' αἰεὶ ἱρ' ἀθανάτοισι θεοῖσι  
 ναικί· καί τέ με φησὶ μάχη βῶεσιν ἀρήξιν.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν ἄνθις ἀπὸ σιχέ, μή σε νοήσῃ  
 ἔρη· ἐμοὶ δ' ἐκ ταῦτα μιλῆσεται ὄφρα τελείωθῃ.  
 εἴδ' ἄγε τοι κεφαλῇ κατακύνωμαι, ὄφρα πεποίηθῃς.  
 τοῦθ' γὰρ ἐξ ἐμὶ θάνα μετ' ἀθανάτοισι μέγιστον  
 τίκμων, οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάχθετον, οὐδ' ἄπακτλόν  
 οὐδ' ἀτελευτήτόν γ' ὅ, τι κω κεφαλῇ κατακύνωμαι.  
 ἦ, καὶ κυανέησιν ἐπ' ὄφρυσιν εὐσε κρονίῳ.  
 ἀμβρόσιοι δ' ἄρα χαῖται περὶ ῥώσωτο ἀνακτ' ὅ,  
 κρεῖς ἀπ' ἀθανάτοιο· μέγαρ δ' ἐλὲ λίσσῃ οὐλύμπου.  
 τῶ γ' ὥς βαλεῦσάωτε, δίετμα γλ'· ἡ μὲν, ἔπειτα  
 εἰς ἄλλα ἄλτο βαθεῖαν ἀπ' αἰγλήεντος οὐλύμπου.  
 Ζεὺς δ' εἰὸν περὶ δ' ὤμα· εἰοὶ δ' ἄμα πάντες αἰνέσαν

μίλῳντες ἐκείροιν· ὁ δ' ἔφρενα τίρπετ' ἀκούων.  
 ἦμος δ' ἠελίος κατ' ἴδεν, καὶ ἐπὶ κνέφας ἦλθε,  
 δὴ τότε καί μ' ἔσσυτο παρὰ πρυμνήσια νηός.  
 ἦμος δ' ἠελίος φάνη ῥόδον δ' ἀκτύλῃσ' ἰῶσ,  
 καὶ τότε ἔπειτ' αἰάγοντο μετὰ στρατὸν ἱεὺς ἄχαιῶν.  
 τοῖσιν δ' ἵκμωνον θυρὸν ἴη ἐκείροισ' ἀπ' ὀλλων.  
 οἷον ἰσὺν εἴσαντ', ἀνάθ' ἰσία λυγὰ πέτασσαν.  
 ἔνδ' ἀνιμὸς πρῆσσε μίσσον ἰεῖον· ἀμφὶ δ' ἑ κῦμα  
 εἰρήν' ὑπεφύρετο μεγάλη· ἴαχε νηὸς ἰούσῃσ'·  
 ἦ δ' ἔθειν κατὰ κῦμα, διαπρήσασα κέλευθα.  
 αὐτὰρ ἐπὶ ῥ' ἴκοντο κατὰ στρατὸν ἱεὺς ἄχαιῶν,  
 νῆα μὲν οἷον μέλαιναν ἐπ' ἠπείροιο ἱρυσατερῆ·  
 ὑψοῦ ἐπὶ φάμαθον· ὑπὸ δ' ἔρματα μακρὰ τάνυσσεν.  
 αὐτοὶ δ' ἰσκίδναντο κατὰ κλισίᾳσ' τε νῆας τε.  
 αὐτὰρ ὁ, μὲν ἐν νηυσὶ παρ' ἠμμοσ' ὠκυπόροισι,  
 διογενῆος, Πηλῆος ἠὲ πόδας ὠκὺς ἀχιλλεύς.  
 οὐτί ποτ' εἰς ἀγορὴν πλίσκῃσιν κυδῖαν ἴσαν,  
 οὐτί ποτ' ὡς πέλεμόν, γ' ἀλλὰ φθινύθ' ἐσκε φίλον κῆρ,  
 ἔνθι μίνων· ποθέεισκε δ' αὐτῇ τε, πτόλιμόν τε.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐκ τοῖο δουδικά τ' ἔχοντ' ἠῶσ,  
 καὶ τότε δὴ πρὸς ὄλυμπον ἴσαν θεοὶ αἰὲν ἰέντες,  
 πάντες ἅμα· ζεὺς δ' ἤρχε· θέτις δ' οὐ λήθει· ἱφιδμίων  
 παιδὲς ἰοῦ, ἀλλ' ἔχ' ἀνδρῶσ' αὖτ' κῦμα θαλάσσης.  
 ἦ ῥιν δ' ἀνέβη μέγαν οὐρανὸν, ὄλυμπόν τε.  
 εὖρον δ' εὐρύσπεα χροῖδ' ἦν, ὅτε ἤμενοι ἄλλωρ,  
 ἀκροτάτῃ κερυφῇ πελιδνῇ ῥάδ' οὐδ' ὀλύμποιο.  
 καὶ ῥ' ἀπ' αἰθέρος οὐτοῖο καθίψεν, καὶ λάβε χεῖρας  
 σκαίῃ· Διὸς γὰρ δ' ἄρ' ὑπ' ἀνθεριῶνος ἔλυσσε,  
 λιασμένην προσέειπε Δία χροῖδ' ὠνα ἄνακτα.  
 Ζεῦ πάτερ, ἴδωτε δ' ὅς μετ' ἀθανάτοισιν ὤνησε

ὦ μοι τέκνον ἰμὸν· τί νύ σ' ἔριφον αὐτὰ τέτυθ' ἔστι,  
 αἷδ' ὄφελος παρὰ νηυσὶν ἀδάκρυτος, καὶ ἀπὴμαρ  
 ἔστι· ἐπεὶ νύ τοι αἴσα μίσηθά περ, οὐ τι μάλ' αἰὲν.  
 νῦν δ' ἄμα τ' ὠκύμορος, καὶ οἱ ἱυρὸς πέει πάντων  
 ἔπλεο· ὅθ' ὅ, σι κακῇ αἴσῃ τέκρον ἐν μεγάροισιν.  
 τοῦτο δ' εἰ τοι ἔρευσαι ἔπος· Διὶ τερπικεράνῳ  
 ἔμ' αὐτὴ πρὸς ὀλυμπῶν ἀγάννιφον, αἴ κε πίθηται.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν νηυσὶ παρήμῳτος ὠκυόροισιν,  
 μὲν δ' ἀχαιοῖσιν· πολέμῳ δ' ἀποπαύεις πάμπαν·  
 Ζεὺς γάρ ἐπ' ὠκυανὸν μετ' ἀμύμονας αἰθ' ὁπῆας.  
 χαλῖος ἔβη μετὰ δαῖτα· θεοὶ δ' ἄμα πάντες ἔποντο  
 δαδ' ἰάτη δ' εἰ τοι αὐθις ἱλεύσεται σὺ λυμπόν Λ.  
 καὶ τότε ἔφθάτο ἔμ' Διὸς ποτὶ χαλκῳβᾶτες δῶ  
 καὶ μιν γοῶσσομαι· καὶ μιν πείσειδαι οἷω.  
 Ως ἄρα φωνήσας, ἀπεβήσατο· τὸν δ' ἔλιπε αὐτοῦ,  
 χαρόμενον κατὰ θυμὸν ἐϋ βόνοιο γωσσεῖος·  
 τήνδ' ἔα βίη ἀέκχεντος ἀπὸ νῆρων· αὐτὰρ ὀδυσσεύς,  
 εἰς χρύσειον ἔκασον ἄγαν ἱερὴν ἱκατόμβην.  
 οἷδ' ὅτε δὴ λιμένος περιβουθίος ἐντὸς ἵκοντο,  
 ἰσία μὲν σέλαπτο, θέσαν δ' ἐν νηὶ μελαίνῃ.  
 ἰσὸν δ' ἰσοδόκη πέλασαν προτόνοισιν ὕφιντες,  
 κερπαλίμως· τήνδ' ἔς ὄρμον προέρυσαν ἱετμοῖς·  
 ἔκ δ' ὠνὰς ἐβαλον· κατὰ δ' ἐπρυμνήσι ἔδυσαν·  
 ἔκ δ' καὶ αὐτοὶ βαῖτον ἐπὶ ῥημῖνι θαλάσσης·  
 ἔκ δ' ἱκατόμβην βῆσαν ἱκνέοις ἀπόλλωνι.  
 ἔκ δ' χρυσῆς νηὸς βῆσαντο πόροιο·  
 τὴν μὲν, ἔπειτ' ἐπὶ βωμὸν ἄγαν πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 παρὶ φίλῳ ἐν χερσὶ τίθη· καὶ μιν προσέειπεν,  
 Ω χρύση, πρό μ' ἐπιμύθων ἀναξ' ἀνδρῶν ἀγαμίμων,  
 καὶ δατὶ σοὶ ἀγέμεν, φοῖβ' ὅθ' ἱερὴν ἱκατόμβην

# Ο ΜΗΡΟΥ

πάντῃ δὲ φασὶν δὴν ἄχαιων· ἄμμι δὲ μάντις  
 ἐν ἐδῶς ἀνέροισι θεοπροπίαν ἐκάριο.  
 οὐδέ τί γ' ὦ πρῶτ' κελόμην θεὸν ἰλάσκειναι.  
 ἀφ' ἵωνα δ' ἔπειτα χόλῳ λάβον· οὐ γὰρ δ' ὀνασάς,  
 ὅτε ἔλυσον μῦθον, ὃ δ' ἡ τιτυλισμένῳ ἐσί.  
 τὴν μὲν γὰρ σὺ νῆϊ θοῇ ἐλίκεπες ἄχαιοι  
 ἔς χρῦσθην πέμπουσιν, ἄγασσι δὲ δῶρα ἄνακτι.  
 τὴν δ' ὅ, νέον κλισίῳθω ἔβαν κήρυκας ἄρουντες  
 πούρω Βεισῇ, τὴν μοι δόσω ὕψις ἄχαιων.  
 ἀλλὰ σὺ ἐ δύνασαί γε, περίσχεο παιδὸς ἐμῷ  
 ἱλθοῦσ' οὐλυμπόν δέ, Δία λίσσαι, ἅποτε δ' ἦν  
 ἢ ἔπει ὠνήσας κραδίῳ Διὸς, ἦν καὶ ἐργῶ.  
 πολυάκι γὰρ σέο παρὸς ἐνὶ μεγάροισιν ἄκυσσε  
 δούχμενις· ὅτ' ἔφηθα κίλαιν' ἀφ' ἑκρονίωνι  
 οἷον ἐν ἀδανάτοισιν ἀεκέα λαιγρὸν ἄμυναι,  
 ὅπποτε μιν ξυυδῆσαι ὀλύμπιοι ἤθελον ἄλλοι,  
 ἦρ' ἔτι, ἦ δέ Προφιδάων, καὶ παλλὰς Ἀθήνη.  
 ἀλλὰ σὺ τόν γ' ἔλθῃσαι θιά, ὑπελύσας δισμῶν,  
 ὅχ' ἔκαστ' ὀχέρον καλίσσας ἔς μακρὸν ὀλυμπον,  
 ὃν Βειάρων καλίσσαςι θεοί· ἄνδρες δέ τε πάντες  
 Αἰγαίῳ· ὃ γὰρ αὐτὲ βίη ἔσσι πατρὸς ἀμείνων.  
 ὅς γ' ἀπαρὰ κρονίωνι καθίξω κύδι' Ἀγίων.  
 ἔν, καὶ ὑπὲρ δέ τοι μάκαρος θεοί, ἔσσι τ' ἔδῃσιν.  
 τῶν νῦν μιν μύησασα, παρέξω, καὶ λάβω γούνων,  
 αἰκίον πῶς ἔβλησιν ἐπὶ τρώεσσι ἀρῆξαι.  
 τὸς δ' ὅ, κατὰ πρῆμνας τε, καὶ ἄμφ' ἅλα ἔλσαι ἄχαιος.  
 κτάνομένους· ἵνα πάντες ἐπαύρανται βασιλῆϊ,  
 γυνῶ δέ καὶ ἀτρεΐδης δούρυκείων ἀγαμέμνων  
 ἢ ἄτην· ὃ τ' ἄεισον ἄχαιων ἐδ' ἐν ἔλσῳ,  
 τὸν δ' ἡμέλει ἔπειτα θείης κατὰ δακρυχέουσα,

Ζεύς ὤφρι μίτῃς· τὸν δ' ὁ δέ με τυτθὸν ἔχουσιν·  
 ἵ γάρ μ' ἀπρίδης δῖον κρείων ἀγαμέμνων  
 ἠτίμησεν· ἰλὸν γάρ ἔχει γέρας, αὐτὸς ἀποῦρας·  
 ὧς φάτο δακρυχέων· τὸ δ' ἔκλυε πότνια μήτηρ  
 ἡμίην ἐν βένθεσσιν ἀλὸς παρὰ πατρὶ γέροντι·  
 καρπαλίμως δ' ἀνίδου πολίης ἀλὸς, ἡὐτ' ὁμίχλη·  
 καὶ ῥα πᾶροις αὐτοῖο καθύζο δακρυχέοισι·  
 χαρὶ τέμιν κατέρεξε, ἔπος τ' ἔφατ', ἔκτ' ὀνόμαζε·  
 ὦ τέκνον, τί κλαίεις, τί δέ σε φρένας ἴκῃσιν ἔθου;  
 ὦ ξεῖν' ἄνθρωπε, μὴ κύνθεο φόβον, ἵνα ἴδωμι ἄμφο·  
 τὴν δὲ βαρυσθενάχων προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·  
 εἶδ' αὖ τήν ποίταυτ' ἐδύμ' πάντ' ἀγορεύων·  
 ὦ χόμιβ' ἐς θύβην ἱέρην πόλιν ἠέτιων·  
 τήν δ' εἰς πηγάθομ' ἐντε, καὶ ὄχλοισιν ἐνθάδ' ἅπαντα·  
 καὶ τὰ μῦθον, ἐν δόσσαντο μιν τὰ σφίσις υἱὸς Ἀχαιῶν·  
 ἔκ δ' ἔλεον ἀφείδῃ χρυσήϊδ' ἀκαλιπύροισι·  
 Χρήσῃ δ' αὐθ' ἱερὸς ἐκαστοῖς ἀπόλλων·  
 ἔλθ' ἑοῦς ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν χαλκὸν χιτῶν' ὄν·  
 λυσόμενος τε θύγατρα, φέροντ' ἀπὲρ σί' ἄποικα·  
 εἰς μετὰ ἔχον ἐν χερσὶν ἐκαστοῖς ἀπόλλων·  
 χρυσέον ἀνὰ σκόπῃρ' ὄν, καὶ ἐλίσσῃσιν ἅπαντας Ἀχαιούς·  
 ἀφείδ' αὖ μάλιστα δ' ὤν κ' ἐσθλὸν ἔσθλ' ὄν·  
 ἐνθ' ἄλλοι μῦθον πάντες ἐπιδρῆμ' ὄν Ἀχαιοί,  
 ὡς δ' ἔδ' αὖθ' ἱερῇ, καὶ ἀγλαὰ δ' ἔχουσι ἄποικα·  
 ἀλλ' οὐκ ἀφείδ' ἀγαμέμνονι ὕνδασι θυμῷ,  
 ἀλλὰ κακῶς ἀφίει, κρατερὸν δ' ἐπὶ μῦθον ἔτι με·  
 χλωίμην δ' ὁ γέρον, πάλιν ὤχῃσιν· πῶ δ' ἀπόλλων  
 εὐξάμινος ὕκυσεν, ἐπεὶ μάλα οἱ φίλος ἦεν·  
 ἔκ δ' ἐπ' ἀργείοισι πακὸν βέλον· οἱ δ' ἐν λαοί,  
 οἷσιν καὶ ἱπασυτέραι· τὰ δ' ἐπὶ ὤχῃσιν κῆλα θεοῖς



ἔδ' ἐκὶ μὴ δώσωσιν, ἰγὼ δ' ἐκὼν αὐτὰς ἔλσμεν  
 ἔλθων σὺν πλεόνεσσιν, καὶ οἱ καὶ ῥίγιον ἔσται.

Ω: ἔπ' ὅν προΐει κρατερόν δ' ὤ μῦθον ἔτελλε.  
 τῷ δ' αἰκνύντι βῆτω παρὰ θῖν' ἀλὸς ἄρυγέ τοιο-  
 μυρμιδόνων δ' ἐπὶ τε κλισίας καὶ νῆας ἰκέσθω.  
 τὸν δ' εὖρον παρὰ τε κλισίῃ καὶ νηὶ μελαίνῃ  
 ὕμῃον, οὐδ' ἄρα τῷ γε ἰδὼν γέθυσαν Ἀχιλλεύς.  
 τῷ μὲν ταρβήσαντι, καὶ αἰδομένῳ βασιλῆα,  
 σήτω, οὐδέ τι μιν προσσιφώνιον, οὐδ' ἱρίον.  
 αὐτὰρ ὁ ἰγὼν ἦσιν ἐνὶ φρεσὶ φωνήσεν τε.

Χαίρετε κήρυκες Διὸς ἄγγελοι, ἦδ' ἐκὼν ἀνδρῶν.  
 ἄσπονδοι, οὐπ' μοι ὕμῃος ἱπαί τοι, ἀλλ' ἀγαμέμνων.  
 οἷς σφωῖ προΐει βασιλῆδ' ὅτι νικᾷ κούρης.  
 ἀλλ' ἄγε διογνῆες Πατρόκλης ἔξαγε κούρην,  
 καὶ σφωῖν δὲ ἀγέη, τῷ δ' αὐτῷ μάρτυροί ἐσσαν  
 πρὸς τε θεῶν μακάρων πρὸς τε θνητῶν ἀνθρώπων.  
 καὶ πρὸς τῷ βασιλῆος ἀπώλειος, εἴ ποτε δ' αὐτὸ  
 χρὴδ' ἐμὸ γένηται ἀφ' ἑκάστου ἀμύμονα  
 οἷς ἄλλοις, ἢ κ' ὅτ' ὀλοῇσι φρεσὶ θυί,  
 οὐδέ τι πῶς νοῆσαι ἅμα πρόσσω καὶ ὀπίσσω,  
 ὅπως οἱ παρὰ νηυσὶ σόοι μαχέσιντο ἀχαιοί.

Ω: φάσ. Πάριος κλος δ' ἐφίλω ἐπιπείθεθ' ἱταίρας.  
 ἐκ δ' ἄρα γε κλισίης βασιλῆδ' ἀκαλλιπάρηορ,  
 δῶκε δ' ἄγ' ἐν τῷ δ' αὐτῷ ἱτῶ παρὰ νῆας ἀχαιῶν.  
 ὅτ' αἰκνύσ' ἅμα θεῖσι γυνή κίον. αὐτὰρ Ἀχιλλεύς  
 διαφύσας ἱτάρων, ἄφαρ ἔλθονόσφι λιανῆς,  
 θῖν' ἐφ' ἀλὸς πολίης ὀρόων ὧ οἶνοπα πόντον,  
 πολλὰ δ' ἐμὴ φίλῃ ἠρύσας χάρας ὀρεγνύς.  
 μήτηρ, ἐπέμ' ἔτικας γε μινωθάδιον πρ' ἐόντα.

Ὡ: ἐμὸν πῆρ μοι ὀφύλλων ὀλύμπι' ἰγνυαλίξαι

14  
Ι Λ Ι Α Δ Ο Σ . Β . Ο Μ Η Ρ Ο Υ  
Ρ Α Υ Ω Δ Ι Α Σ .

Βῆτα δ' ὄνερρον ἔχθ' ἀγορήν, καὶ νῆας ἀειθμεῖ

ἄλλοι μὲν ῥα θεοί τε, καὶ ἀνέρες ἱπποῖ τε,  
ῥυσταί,

Α ἑὺδον παννύχιοι. Δία δ' οὐκ ἔχον ἔκω  
μος ὕπνῳ.

ἀλλ' ὅ γε μερμήριζε κατὰ φρένα, ὥς Ἀχιλλῆα  
τιμῆσιν, ὀλέσῃ δὲ πολέας ἐπὶ νηυσὶν Ἀχαιῶν.  
ἦ δὲ οἱ κατὰ θυμὸν ἀρίστη φαίνετο βουλὴ  
πέμψαι ἐπ' Ἀφρίδῃ Ἀγαμέμνονι θυλῶν ὄνερρον.  
καὶ μιν φωνήσας, ἔπεια πῆρόεντα προσέηυδα,

Βῶσκέ μοι θυλὲ ὄνερρον θοὰς ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν,  
ἐλθῶντες κλισίην Ἀγαμέμνονος Ἀφρίδαο,  
πάντα μάλ' ἀρεκίως ἀγορεύεμεν ὥς ἐπιτίλλω.  
θωρήξαι ἐκέλευε κερκῆσμονώοντας Ἀχαιεὺς  
πανσυνδίνῃ. νῆν γὰρ κεν ἔλθοι πόλιν ἐνρυάχυσσιν  
ῥώον· οὐ γάρ τι ἄμφος ὀλύμπια δώματ' ἔχοντες  
ἀθάνατοι φράζονται· ἐπεὶ γναμψέ γάρ ἄπαντας  
ἔρην λισσομένην· τρώεσσι δὲ κῆρ δὲ ἐφῆπται.

Ως φάτο· βῆ δ' ἄρ' ὄνερρος, ἐπὶ τὸν μῦθον ἄκων.  
καρπαλίμως δ' ἵκσται θοὰς ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν  
ἔκθ' ἄρ' ἐπ' Ἀφρίδῃ Ἀγαμέμνονα· τὸν δ' ἐκίχοντο  
ἑὺδοντ' ἐν κλισίῃ· περὶ δ' Ἀμβρόσιος κέχυθ' ὕπνῳ.  
εἷ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς νηληϊῶν ὕπνῳ οἰκῶς  
Νέεσσι, τὸν ῥα μάλιστα γερνέωντί' Ἀγαμέμνονι.  
ἔθ' μιν ἰδὲ σάμῃος προσφώνει θεῖος ὄνερρος.  
ἑὺδῆς ἄριστος ἦν δαΐφρωνος ἱπποδάμοιοις  
Οὐχ ἔχῃ παννύχιον ἑὺδῆν· βυλὴφόρον αἰετῶν.

# Ο ΜΗΡΟΥ

Ἀπαγγελᾶσθης· κατὰ λαχὸν δ' ὁ ποιεῖν τῶν  
τρυμμάτων, καὶ τῶν νηῶν.

## Δ Λ Λ Ω Σ.

ὡς ἐμίμνητο Οἰπὸς τῆς ἐκείνης· τῶν ἄλλω,  
θιῶντι, καὶ ἀνθρώπων ὕπνω· χαλαρῶντων, πρὸ  
ὀφθαλμῶν ποιοῦμηνος πρὸ τῆς Γηλέως, ὄντορ ἀγα  
μῖνοντι πίμπει, κελεύων αὐτὸν ἐκὼν βάλλειν πάντας τῶς  
ἑλλωας εἰς τὴν μάχην· καὶ συμβελλούων αὐτῷ δηλαδὴ  
καὶ πρὸ ἀχιλλείας παρακαλῆσαι· ὁ δ' εἰς, ὃ σωκίς εἰς ὕναρ,  
πῶς ἀειδύων αὐτῷ διηγᾶται· καὶ μετὰ τῶς εἰς ἐκκλη  
σίαν ἀβροίσας πάντας ἑλλωας· ὑπὸ πῶς πρὸς αὐτὸς δι  
ακείμηνος, διὰ εἰς ἡγῶναι πρὸ ἀχιλλείας ἐπιβέμηνος αὐ  
τῷ τῇ ἀρχῇ, προδικηθῶναι πρὸ πᾶν πλῆθος πῆρᾶς, φε  
ρην αὐτὸς εἰς τὰς πατρίδας κελεύει· οἱ δ' εἰς, ὃ σωκίς, εἰ  
εἰς εἰς κατέλκειν τὰς ναῦς, καὶ εἰς τὰς πατρίδας ἀπαλλά  
τῶναι χωρῶσιν· ὁ δ' αὖτε εἰς ὃ ποθεμένης αὐτῷ ἀθηνᾶς,  
τῶς μὲν ἀφίστας, πέθει κατέχεν· τῶν δ' εἰς στρατωτῶν, πι  
κρῶς καθάπνεται· παύει δ' εἰς καὶ Οὐρανίῳ ἀμύσας  
πρὸς εἰς βασιλεία ἐκαστάζοντα· καὶ τῶς ἑλλωας μῖνοντι, καὶ  
τὴν ἴλιον ἑλθὲν προτρέπει· συμβελλούσαντες δ' εἰς καὶ  
Νέστορ· τὰ αὐτὰ, ἀγαμῖνοντι θύσας τῶν Διὸς, τῶς γέ  
ροντας ἐσθλῶ· καὶ προτρέπει· τῶς ἑλλωας, ἐπὶ πρὸ  
πόλεμον ἐξάγει ἀπαντας· ἐξῆς δ' εἰς εἰς ὁ κατὰ λαχόν  
τῶν νεῶν, ἐφ' ὧν ἦλθον οἱ πῶτες, καὶ οἱ ἑλλωας, καὶ  
τῶν ἐπικυρῶν, καὶ τῶν ἡγεμόνων αὐτῶν.

ἔνθα με σίνπυς ἀνδρες ἀφάρ κωμίσαντ' ἥσαντά.  
 Ως φάρ· μείδῃσεν ὃ διὰ λοδωκώλων ἦρ.  
 μείδῃσαι ὃ, παυδὸς ἐδέξατ' χαρὶ κύπυλλορ.  
 αὐτὰρ ὃ πῖς ἀλλοιοισι θιοῖς ἐδέξατ' πᾶσι  
 ὄνοχόει, γλυκύνέκταρ ἀπὸ κρητῆρ' ἀφύσαν.  
 ἀσβεστος δ' ἄρ' ἐν ὧρ' γέλωτος μακάρισι θιοῖσιν,  
 ὡς ἴδον ἦφαιτον δῖα δώματα ποτιπύοντα.  
 οὐς τότε μὲν πρόπαν ἡμάρ' ἐς ἥλιον καταδύντα  
 δαίνωτ', ὃ δ' ἐπὶ θυμὸς ἐδούρο δαυτὸς εἶσθε.  
 ὃ μὲν φέρμην' περκαλί' ἦν ἔχ' ἀπόλων,  
 μυσσάρ' θ', ἃ ἐσθον ἀμειβομένοισι ὅπ' ἑσθῇ.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατέδυν λαμπρόν φάτ' ἡλίοιο  
 οἱ μὲν, πακκείοντες ἔβαν ἐξ ὀρέων δὲ ἔατος.  
 ἔχ' ἰκάσθ', δῶμα πινυλινδὸς ἀμφιγυῖας  
 ἦφαιτος ποίησ' ἐδύμῃσι πρᾶπίδασι.  
 Ζεὺς δ' ὃ πρὸς ὄν λείχ' ἠὶ ὀλύμπι' ἀετοροπητῇ,  
 ἔνθα πάρ' κωμίσσ' ὅτε μιν γλυκὺς ὕπν' ἰκάοι.  
 ἔνθα κάθουδ' ἀναβάς· παρὰ δέ, χυσεῖθρον ἦρ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΤΗΣ Β. ΟΜΗΡΟΥ  
 ΡΑΥΩΔΙΑΣ.

Οὗς ὄνερων ἐπιπέμψας ἀγαμέμνωνι, παρακλιθύεται  
 ὃ τὸς Ἕλληνας ἐξάρσεν αὐτὸν ἐπὶ τὴν πόλιν· ὃ δ' ὃ,  
 πρῶτον μὲν τῶν ἀρίστων σωείδιον σωήσας.  
 ἔπειτα δὲ ἐκκλησίᾳ τῶν πολεμῶν, ἀποπειρᾶται αὐ-  
 τῶν, παρακλιθυσάμην' φεύγειν ὡς τὰς πατρίδας. κα-  
 τίχῃ δὲ αὐτὸς ὁδοναῖος ἀθῆνας προνοίᾳ. καὶ Νέστορ δὲ  
 μνηστήρας· ἔπειτα προφῆν ἀνελόμενοι, ἐξελκίσσονται αὐτοῖ-  
 σι, καὶ ἑγμῶντες· ὁμοίως δὲ καὶ οἱ πῶς ἐπὶ αὐτοῖς

# Ο ΜΗΡΟΥ

ἔῃ δ' οὐτὸ τῦτ' ἐσίν, ἱμοὶ μέλλε φίλον εἶναι  
 ἀλλ' οὐκ εἶσαι καθήθ', ἱμῶ δ' ἐπιπέθιο μύθῳ.  
 μὴ νύριθ' χραίσμοσιν ὅσοι θεοὶ ἐσ' ἐν δλύμπῳ  
 ἔσων ἰοίθ'. ὅτι κίεφ' ἀάπῃς χῆρας ἐφείω.

Ως ἔφατ'· ἔδ' ἔσων ὃ βοῶπις πότνια ἦρμ.

καὶ ῥ' οὐκ εἶσαι καθήσ', ἐπιγνάμψασα φίλον κῆρ.  
 ὥχθησσω δ' ἀνὰ δῶμα Διὸς θεοὶ ὕραυῶντες,  
 τοῖσιν δ' ἔφασκε κλυτὰ χηρῆς ἦρ' ἄγροῦρ' ἔνν,  
 μηρὶ φίλῃ ἐπὶ ἥρα φέρων λδύκωλ' ἐν ῥῃ.  
 ἦ δ' ἡ λείγ' ἔργα τάδ' ἔσεται, ὅ δ' ἐτ' ἀνέκτα.  
 ἔῃ δ' ἡ σφῶ ἐν κρηθνήτων ἐιδομένην ὦλε,  
 ἐν ὃ θεοῖσι κελῶν ἐλάυνεν, ὅ δ' ἐπ' ἴστω.  
 ἔδ' ἡ δ' ἔσεται ἦ δ' ὅ, ἐπὶ τὰ χερσὶν ἀνέκτα.  
 μηρὶ δ' ἔγ' ἀπαράφρημι καὶ αὐτῇ περ νοούσῃ.  
 πατρὶ φίλῳ ἐπὶ ἥρα φέρων Διὶ, ὅφρα μὴ ἔντε  
 νηκείῃσι πατήρ. σὺν δ' ἡμῖν δῶτα τὰράξῃ.  
 ἐῖπερ γὰρ κ' ἐθέλῃσιν δλύμπι' ἀσπεροπότης  
 ἔξ' ἐδ' ὡν συφελίξαι ὃ γὰρ πολλὸν φέρτατός ἐστιν.  
 ἀλλὰ σὺ τόν γ' ἐπέειπε καθάπῃ δῶτα μαλαχῶσι.  
 ὦν τῇ κ' ἐπ' ἔθ' ἴλα' δλύμπι' ἔσεται ἡμῖν.

Ως ἄρ' ἔφη καὶ ἀνὰ ἴξας, δ' ἔπας ἀμφικύπελλον

μηρὶ φίλῃ ἐν χερσὶ τίθη, καὶ μιν προσέειπε.  
 τέτλαθι μήτιρ ἱμῇ, καὶ ἀνὰ χεῖρα κηδομένη περ,  
 μὴ σε φίλῃ περ ἔσσω, ἐν ὅφρα λμοῖσιν ἰδῶμαι  
 θενομένην. τότε δ' οὐ π' ἴστωμαι ἀχνύμηνόσπερ,  
 χραίσμῳ ἀργαλί' ὅ γὰρ δλύμπι' ἀντίφειδω.  
 ἔδ' ἡ γὰρ με καὶ ἄλλοτ' ἀλεξίμηναι μεμαῶτα,  
 ῥίψ' ἐπεδ' ὅς τε ταρῶν ἀπὸ βηλῶν θεσπισίοιο.  
 πᾶν δ' ἡμᾶρ φερόμεν, ἅμα δ' ἡελίῳ ἵσταδύνῃ,  
 κάππεθ' ἐν λήμνῳ. ὁλίγ' ὅ δ' ἐπ' ὕμνος ἐπ' ἔνν.



ἔξ' ἰδίων σφ' παπὸς ἐνὸν πόρον· ὃ δ' ἴ τις ἔτλη  
 μέναι ἐπὶ ῥομφαίῳ, ἀλλ' αὐτοὶ ἔσαν ἄποιντες.  
 ὦ δ' ὅ μιν, ἴθα καθεύδ' ἐπὶ θρόνῳ, ὃ δέ μιν ἔρη  
 ἔγνοιησαν· ἰδὺς δ' αὖ οἱ συμφράσαστο βυλᾶς  
 ἀργυροπίφα Οἴκις· θυγάτηρ Ἀλίοιο γέροντος.  
 αὐτίκα κερκείοισι Δία χρόνιον προσήδα.  
 Τίς δ' αὖρ ὀδωμήτα θένων συμφράσασκε βυλᾶς;  
 αἰεὶ βί φίλον ἐστὶν ἐμὸν ἅπὸ νόσφιν ἵοντα,  
 χρυπλάδια φρονέοντα δικάζω μιν· ὃ δ' ἴδ' ἔγωγε  
 πρόσφρων τίτληται· ἐπείν' ἐπὶ δ' ὅτ' ἐσθ' ἰσχύει.

Τὸν δ' ἠμείβεται· ἔπειτα πατὴρ αὐδωῶντι, θένωντι.  
 ἔρη, μή δ' ἡ πάντας ἐμὸς ἐπὶ ἑλπίῳ μύθος  
 ὠδῆσθην· χαλεπότεοι ἔσονται ἄλογα περ ἰούσῃ,  
 ἀλλ' ὃν μὲν κ' ἐπιηκὲς ἀκνέμεν, ἔγχε' ἔπειτα  
 οὔτε θένων πρότερον τὸν γ' ἄσινται, οὔτ' ἀνθρώπων.  
 ὃν δ' ἂν ἐγὼν ἄπ' αὐθιγῶν ἐθελῶμι νοήσαι,  
 μή μ' αὖ σὺ ταῦτα ἕκαστα διείρητο, μή δ' ἐμετάλλα.

Τὸν δ' ἠμείβεται· ἔπειτα βοῶπις πότν' ἀΐρη.  
 αὐτόαυτε χρόνιόν, ὡοῖον τὸν μῦθον ἔειπας;  
 καὶ λίω σιπᾶρ' οὐ γὰρ ἔρομαι, οὔτε μεταλλῶ.  
 ἀλλὰ μάλ' ἐκκλήσθ' τὰ φράσαι, ἅ σ' ἐθελήσας.  
 νῦν δ' αὐτὸς δειδόμενα κατὰ φρένας μὴ σε παρείπῃ  
 ἀργυροπίφα Οἴκις, θυγάτηρ Ἀλίοιο γέροντος.  
 περὶ γὰρ σοί γε παρίσσομαι, καὶ λάβω γούναν.  
 τῇ σ' οἶω καταδύσαι ἐτήτυμον, ὥς ἀχιλλῆα  
 ἐμήσης· ὀλίγη δ' ὅσπλιος ἐπὶ νηυσὶν ἀχαιῶν.

Τὸν δ' ἀπαμείβετο· προσέφη νεφελήχερτα Ζεῦς.  
 δαμονίην· αὐτὸ μὲν οἶμαι· ὃ δ' ἐσε λήθω.  
 πρὸς ἧς δ' ἔμπης οὔτε δωήσῃς, ἀλλ' ἀπὸ θυμῷ  
 μέλλον ἐμοὶ ἔσται· τὸ δ' ἐπεὶ καὶ ῥίγιον ἔσται.

# ΟΜΗΡΟΥ

ἢ ἔπει, ἢ ἐργῶ, τόδ' ἐμοὶ κρήνην ἰέλωρ.  
 τίμησέν μοι ἦδ' ὅς, ὅς ὠκυμορώτατος ἄλλων  
 ἔπλετ'. ἀτὰρ μιν νῦν γὰρ ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμίμενον  
 ἠτήμησον· ἰλὼν γάρ ἑχθ' ἰγέραις αὐτὸς ἀπιδύρας.  
 ἀλλὰ σὺ πέρ μιν τίσον δλύμπι μῆτι' ἰτα Ζεῦ.  
 τόφραδ' ἐπὶ βῶεσι τίθει κράτος, ὅφρ' ἂν ἀχαιοί,  
 ἦδ' ἰόν τίσωσιν, ὀφείλωσιν τε ἰτιμῇ.  
 Ως φάτο· τὴν δ' οὐτι προσέφη νεφιληχερέτα Ζεὺς.  
 ἀλλ' ἀκίων δ' ἦν ἥσο. Θέτις δ' ὡς ἔφατο γυνὼν,  
 ὡς ἔχετ' ἐμπυρῦα· καὶ ἤρξο δαυτερον ἄνθις.  
 νημερτὺς μὲν δ' ἡ μοι ὑπόσχεο, καὶ κατάνευσον,  
 ἢ ἀπόσπ', ἐπεὶ οὐτοὶ ἐπιδέος, ὅφρ' ἐν εἶδῶ,  
 ὅσων ἰγὼ μετὰ πᾶσιν ἀτιμοτάτη θεὸς εἰμι.  
 Τὴν δ' ἐμὴν ὀχθήσας, προσέφη νεφιληχερέτα Ζεὺς.  
 ἦδ' ἡ λείγρια ἔργ', ὅτ' ἐμ' ἐχθοδ' οἰπῆσαι ἐφήσεις  
 ἔρῃ, ὅταν μ' ἐρέθῃσιν ὀνείδιοις ἐπείεσιν.  
 ἦδ' ἐ, καὶ αὐτῶς μ' αἰνέειν ἀθανάτοισι θεοῖσι  
 νακί· καὶ τέ με φησὶ μάχη βῶεσιν ἀρήξην.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν ἄνθις ἀπὸ σιχέ, μή σε νοήσῃ  
 ἦρῃ· ἐμοὶ δ' ἐκεῖνα μιλῆσινται ὄφρα τιλίσω.  
 εἴδ' ἄγε τοὶ κεφαλῇ κατανύθωμαι, ὄφρα πεπυθῇς.  
 τοῦτο γάρ ἐξ ἐμὶ θωγέ μετ' ἀθανάτοισι μέγιστον  
 3, τίκωρ, οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάχρετον, οὐδ' ὑπατηλὸν  
 3, οὐδ' ἀτιμύτητόν γ' ὅ, τι κω κεφαλῇ κατανύθω.  
 3, ἦ, καὶ κυανέῃσιν ἐπ' ὄφρ' ἴνι νῦν σε κρονίῳ.  
 ἀμβρόσια δ' ἄρα χαῖται ἐπερρώσωτο ὄνακτ' ὅ,  
 κρᾶς ἀπ' ἀθανάτοιο· μέγαρ δ' ἐλὶ λῖξεν ὄλυμπον.  
 τῶν ὡς βαλεῖσσαν, δ' ἰέτα γλῶ· ἢ μὲν, ἔπειτα  
 εἰς ἄλλα ἄλτο βαθεῖαν ἀπ' αἰγλήεντος ὄλυμπου.  
 Ζεὺς δ' ἐὼν πρὸς δ' ὤμα· εἰοὶ δ' ἄμα πάντες ἀνέστησαν

μίλωντες ἰκάεργον· ὁ δ' ἔφρενα τίρπετ' ἀκνύων.  
 ἦμος δ' ἠέλιος κατέδυ, καὶ ὑπὶ κνίφας ἦλθε,  
 δὴ τότε καὶ μῆσαντο παρὰ πρυμνήσια νηὸς.  
 ἦμος δ' ἠελίγεια φάνη ῥοδοδάκτυλος ἠώς,  
 καὶ τότε ἔπατ' αἰάγοντο μετὰ στρατὸν ἱεὺς ἄχαῶν.  
 τοῖσιν δ' ἴκμωνον θυρον ἴη ἰκάεργος ἀπὸ μῶν.  
 οἷδ' ἰδὼν εἶσαντ', ἀνάθ' ἰσία λευκά πέτασσαν.  
 ἔνδ' ἀνέμοσ πεῆσσε μίσην ἰσίον· ἀμφὶ δ' ἔκῃμα  
 εὐρή πορφύρεον μετὰ ἰαχε νηὸς ἰούσης.  
 οἷδ' ἔθιεν κατὰ κῆμα, διαπρήσσουσα κέλευθα·  
 αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ἴδεντο κατὰ στρατὸν ἱεὺς ἄχαῶν,  
 νῆα μὲν οἷον μίλωναν ὑπὲρ ἠπείροιο ἔρυσσαν·  
 ὑψοῦ ὑπὶ φάμαθον· ὑπὸ δ' ἔρματα μακρὰ τάνυσαν.  
 αὐτοὶ δ' ἰσκίδναντο κατὰ κλισίᾳσ τε νείασ τε.  
 αὐτὰρ ὁ, μὲν νηυσὶ παρέμμενος ὠκυπόροισι,  
 Διογενῆος, Πηλῆος ἠδὲσ πόδας ὠκύνεσ ἀχιλλεύς.  
 οὐτί ποτ' ἐς ἀγορὴν πλίσσῃσ κυδιδάνεφραν,  
 οὐτί ποτ' ὡς πέλεμόν, γ' ἀλλὰ φθινύθεσκε φίλων κῆρ,  
 θυσι μίνων· ποθέσκε δ' αὐτὴν τε, πῆολιμόν τε.  
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐκ τοῖο δυοδικάτη γένετ' ἠώς,  
 καὶ τότε δὴ πρὸς ὄλυμπων ἴσαν θεοὶ αἰνέεντες,  
 πάντες ἅμα· Ζεὺς δ' ἤρχε· τίτις δ' οὐ λήθειτ' ἐφειμένω  
 πωδῆος ἰοῦ, ἀλλ' ἔγ' ἀνιδύσατο κῆμα θαλάσσης.  
 ἠέρην δ' ἀνέβη μέγαν οὐρανὸν, οὐλυμπόν τε.  
 εὖφρον δ' εὐρύσπα χρονίδην, ἄτερ ἤμενον ἄλλαν,  
 ἀκροτάτῃ κερυφῇ πολυδεργῆδος οὐλύμποιο.  
 καὶ ῥα πᾶροιθ' αὐτοῖο καθίψον, καὶ λάβει χεύον  
 σκαυῇ· Διέπειρ δ' ἄρ' ὑπὲρ ἀνθιρεῶνος ἰαυῖσα,  
 λατομένη προσέειπε Δία χρονίωνα ἔνακτα·  
 Ζεῦ πάτερ, ἴδωτι δέ σ' μετ' ἀθανάτοισιν ὦκησα

# ΟΜΗΡΟΥ

βέβηκε ὑπὲρ δαναῶν, ὅρῳ ἱλασάμεθ' ἀνάκτα,  
 ὅς νῦν ἀρχαίοισι πολύστονα κῆδ' ἱρῆκεν.  
 Ὡς ἐπὶ ὤν· ἐν χερσὶ τίθη. ὅδ' ἰδέξατο χεῖρα,  
 παῖδ' αὖ φίλην· τοῖδ' ὦκα θεῶ κλέττην ἐκατόμβην,  
 ἱεῖν ἐξήσαν ὑδμήτορ περὶ βωμόν.  
 χερνίψαντο δ' ἔπειτα, καὶ ὕλα χύτας ἀνέλυντο.  
 τοῖσιν ὃ χρῦσης· μεγάλη ὕψος χεῖρας ἀνασχῶν.  
 Ἰλὺθ' ἰμὺ ἀργυρότοξ, ὅς χρῦσῃν ἀμφίβηκε·  
 κίλλαντι θάβειν, τὸν δ' οἶοι τὶ ἴρι ἀνάσσει.  
 ὕδ' ἡ μὲν ποτ' ἱμῶ πάρος ἔκλυε ὑξάμενοις.  
 τίμησας μὲν ἐμὲ· μέγα δ' ἴφ' αὖ λαὸν ἀχαιῶν.  
 ἦ δ' ἐπὶ καὶ νῦν μοι τὸ δ' ἐπικρύπτου ἐκλῶρ.  
 ὕδ' ἡ νῦν δαναοῖσιν ἀφ' ἑκεία λαιγὸν ἀμωμον.  
 Ὡς ἔφατ' ἐυχόμενος· τοῦ δ' ἔκλυε φοῖβος ἀπ' ἄλλων.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ ἱρ' εὔξαντο, καὶ οὐλα χύτας προβάλλοντο,  
 ἄν' ἐρυσαν μὲν πρῶτα, καὶ ἑσφραξαν, καὶ ἑσφραξαν,  
 μνηροῦς τ' ἱξίταμον, κατὰ τε κνίσῃ ἐκάλυψαν,  
 διπλῆν χα ποιεήσαντες, ἐπ' αὐτῶν δ' ὠμοθέτησαν,  
 κατὰ δ' ἐπὶ σχίσσῃ δ' ἑρῶν ἐπὶ δ' αἶδοιπα οἶνον  
 λαιβὴ· νῆοι δ' παρ' αὐτὸν ἔχοι πεμπύβωλα χερσίν.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατὰ μῆρ' ἑκάη, καὶ σπλάγχ' ἐπάσαντο·  
 μίσυλλον τ' ἄρατ' ἄλλα, καὶ ἀμφ' ὀβελοῖσιν ἔπασσαν.  
 ὥπλησάν τε περὶ φραδ' ὦκα, ἱεῖν ὥσαντο τε πάντα.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ παύσωντο πόνον, τιτύχοντο τὶ δαῖτα  
 δαίνωντ' οὐδ' ἐπὶ θυμὸς ἰδῶτο δαυτὸς ἱέσης.  
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιος, καὶ ἰδῆντος ἱξ' ἔρορ' ἔντο  
 κούροι μὲν, κρητῆρας ἐπισέψαντο ποτοῖο.  
 νῶμῃσιν δ' ἄρα πᾶσιν, ἐπαρξάμενοι δὲ πᾶσι·  
 οἱ δ' ὃ, πανημέριοι μολπῇ θεῶν ἱλάσωντο  
 καλὸν αἰείδοντες· παίονα κούροι ἀχαιῶν.

ὦ, μοι τέκνον ἰμόν· τί νύ σ' ἔριφον ἀνὰ τελευσσε,  
 αἶθ' ὄφελος παρὰ νηυσὶν ἀδάκρυτος, καὶ ἀπήμεν  
 ἔειπα· ἐπὶ νύ τοι αἴσα μίσθ' ἄπειρ, οὔ τι μάλα δ' ἦν.  
 νῦν δ' ἅμα τ' ὠκύμορος, καὶ οἵς ῥος πίει πάντων  
 ἔπλεο. ἔωδ', σὺ κακῇ αἰσῇ τέκνον ἐν μεγάροισιν.  
 τοῦτο δ' εἰ τοι ἔρευσσά ἔσσι· Διὶ τερπικεράνῳ  
 ἔμ' αὐτῇ πρὸς ὀλυμπῶν ἀγάννιφον, αἶκε πίθηται.  
 ἀλλ' σὺ μὲν νῦν νηυσὶ παρήμηνος ὠκυπόροισιν,  
 μὲνι ἀχαιοῖσιν· πολλέ μιν δ' ἄσπερ πανίο πάμπαν.  
 Ζεὺς γάρ ἐπ' ὠκεανὸν μετ' ἀμύμονας αἰθίοπης.  
 χαλῖος ἔβη μετὰ δαῖτα· θεοὶ δ' ἅμα πάντες ἔσονται  
 δωδεκάτη δ' εἰ τοι αὐθις ἐλευσεται εὐλυμπόν Δι.  
 καὶ τότε ἑπεί γ' αὖ τοι Διὸς ποτὶ χαλκῶδατις Διὶ  
 καὶ μιν γωσάσομαι· καὶ μιν πείσειδαι οἶω.  
 Ως ἄρα φωνήσας, ἀπεβήσαστο· τὸν δ' ἔλιπε αὐτοῦ,  
 χαρόμηνον κατὰ θυμόν· ἐὺ γ' οἶοιο γωσάκος.  
 τήν, ῥα βίη' αἰκνυτός ἀπηνύρων· αὐτὰρ ὀδυσσεύς,  
 εἰς χρυσίῳ ἴκανον ἄγαν ἱερὴν ἱκατόμβην.  
 οἶδ' ὅτε δ' ἠλμίνος πολιβωθείος ἐντὸς ἵκντο,  
 εἰς αὖ μιν εἰλάντο, θέσαν δ' ἐν νηὶ μελαίνῃ.  
 ἰσὸν δ' ἰσοδόκη πέλασαν προτότοισιν ὑφίντες,  
 καρπαλίμως· τήν δ' εἰς ὄρμον προίρουσαν ἱερτομοῖς.  
 ἐκ δ' ὠνάς ἐβαλον· κατὰ δ' εἰς πρυμνήσι' ἔδυσσαν.  
 ἐκ δ' καὶ αὐτοὶ βαῖνον ἐπὶ ῥηγμῖνι θαλάσσης.  
 ἐκ δ' ἱκατόμβην βῆσαν ἱκηβολῶ ἀπόλλωνι.  
 ἐκ δ' χρυσήϊς νηὸς βῆσαντο πόροιο.  
 τὴν μὲν, ἑπεί τ' ἐπὶ βωμόν ἄγαν πολύμητις ὀδυσσεύς,  
 παρὶ φίλῳ ἐν χερσὶ τίθει· καί μιν προσέφησεν,  
 Ω χρυσή, πρό μ' ἐπιέτω ἄναξ ἀνδρῶν ἀγαμέμνων,  
 παῖδά τί σοι ἀγέμεν, φοῖβ' ὅθ' ἱερὴν ἱκατόμβην



# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

πάντῃ δὲ ἀνὰ θρόνον δέξιν ἀχαιῶν. ἄμμι δ' ἐμάνη  
 ἐν ἐδῶς ἀγρόνι θεοπροπίας ἱκάριο.  
 αὐτὴν ἰγὼ πρῶτ' ἐκελόμεν θινὸν ἱλάσκειναι.  
 ἄρ' ἴωνα δ' ἔπειτα χόλῳ λάβειν. αὐτὰ δ' ἀνασῆς,  
 ἠπείλησεν μῦθον, ὃ δ' ἠτιτυλισμένῳ ἐσί.  
 τὴν μὲν γὰρ σὺν νηὶ θεῶν ἑλίκαπις ἀχαιοὶ  
 εἰς χρύσῃν πέμπουσιν, ἄχυσι δ' ἐδῶρα ἀνακτῶ.  
 τὴν δ' ἑὸν κλισίῃθεν ἔβαν κήρυκας ἄχοντες  
 καὶ ῥῶν Βεισῆ, τὴν μοι δόσων ὕψις ἀχαιῶν.  
 ἀλλὰ σὺ ἐδύνασαι γέ, περισχεο παιδὸς ἐπ' ἔ  
 ἔλθοῦς, οὐλύμπον δέ, Δία λίσσαι, ἄποτε δ' ἡγε  
 ἢ ἔπει ὠνήσεις κραδίῳ Διὸς, ἢ καὶ ἐργῶ.  
 Πολλάκι γὰρ σέο πατὴρ ἐνὶ μεγάροισιν ἄκυσσε  
 δούχμενις, ὅτ' ἐρηθὰ κελαινεφεί κρονίωνι  
 οἷον ἐν ἀδωάτοισιν ἀηκία λαιγρὸν ἀμύνου,  
 ὅππότε μιν ξυυδῆσαι ὀλύμπιοι ἤθελον ἄλλοι,  
 ἦρ' ἔ, ἦ δ' ἐ Ποσειδάων, καὶ παλλὰς Ἀθήνη.  
 ἀλλὰ σὺ τὸν γ' ἐλθῶσαι θιά, ὑπὲρ ὅσας δεισμῶν,  
 ὥχ' ἑκαστὸν χάρων καλίσσας, εἰς μακρὸν ὀλυμπον,  
 ὃν Βειάρων καλέεσσι θεοί. ἄνδρες δέ τε πάντες  
 Αἰγαίῳ. ὃ γὰρ αὐτὴ βίη ὅ πατὴρ ἀμείνων.  
 ὅς ῥα παρὰ κρονίωνι καθέζετο κύδι' ἑταίων.  
 ἦν, καὶ ὑπὲρ δόσαν μάκρης θεοί, ὃ δ' ἐ τ' ἐδῆσαν.  
 τῶν νῦν μιν μνήσασθαι, παρέξεο, καὶ λάβει γούνων,  
 αἰκίνπως ἐθέλῃσιν ἐπὶ τρώεσσι ἀρῆξαι.  
 τὺς δ', κατὰ πρῆμνας τε, καὶ ἀμφ' ἄλλα ἔλσαι ἀχαιῶς.  
 κτίζομένους, ἵνα πάντες ἐπαύρῃνται βασιλῆ, ὅς  
 γνῶ δ' ἐ καὶ ἀπείδης δέξιν κρείων ἀγαμέμνων  
 ἢ ἄτην. ὃ τ' ἄριστον ἀχαιῶν ὅδ' ἐν ἔλσειν,  
 Τὸν δ' ἠμέλει ἔπειτα θεῶς κατὰ δαίμονα χεῖρα,

Ζηνὺς ὑψιβρυμέτης· ἴνυ δ' ἔδιδε με τυτθὸν ἔχουσιν·  
 ἔγερ μ' ἀπείδης δῖον κρείων ἀγαμέμνων  
 ἠγίμνησιν· ἰλῶν γὰρ ἔχῃ γέρας, αὐτὸς ἀποῦρας·  
 Ως φάτο δακρυχέων· τῷ δ' ἔκλυε πότνια μήτηρ  
 ἑμίνην ἐβένθεσιν ἀλὸς παρὰ πατρὶ γέροντι·  
 καρπαλίμως δ' ἀνέδω πολίης ἀλὸς, ἥϊτ' ὁμίχλη·  
 καὶ ῥα πάροιθ' αὐτοῖο καθύψο δακρυχέοιτο·  
 χεῖρι τέμιν κατέρεξε, ἔπος τ' ἔφατ', ἐκτ' ὀνόμαζε·  
 „ Τέκνον, τί κλαίεις, τί δέ σε φρένας ἴκθρ' πένθη;  
 „ ἔξάμδα, μὴ κῶθε νόφ, ἵνα ἔδομῃ ἀμφο·  
 Τὴν δὲ βαρυστάχων προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·  
 οἶδα· τίη τοι ταῦτ' ἐδύμ' πάντ' ἀγορεύεις;  
 ὥχόμεθ' εἰς θῆβη ἱέρην πόλιν ἠετῶντο·  
 τήν γ' ἐπὶ κηρ' ἄθομίντε, καὶ ὄχομῃ ἐνθάδε πάντα·  
 καὶ τὰ μῆν, ἐν δάσαντο μετὰ σφίσιν οἷος ἀχαιῶν·  
 ἔκ δ' ἔλεον ἀπείδῃ χρυσήϊδ' ἐκαμπέροισιν·  
 Χρήσκει δ' αὖθ' ἱερὸς ἐκαμπέροισιν ἀπόλλων·  
 ἔλθ' ἐνθάδε ἐπὶ νῆας ἀχαιῶν χαλκὸν χιτῶνων,  
 λυσόμεός τε θυγάτρα, φέροντ' ἀπερείσι' ἀποινα·  
 εἰμὲν γὰρ ἔχοντες χρυσὸν ἐκκρόλιν ἀπόλλων·  
 χρυσέῳ δ' ἀνὰ σκήπτρῳ, καὶ ἰλίῳ πάντας ἀχαιούς·  
 ἀπείδ' ἃ γ' ἀμείνισα δούω καὶ σμήτορε λαῶν·  
 ἐνθ' ἄλλοι μὲν πάντες ἐπὶ δόφ' ἤμισσαν ἀχαιοί,  
 αὐτὰρ ἔδαιθ' ἱέρηα, καὶ ἀγλαὰ δέχθαι ἀποινα·  
 ἔλ' οὐκ ἀπείδῃ ἀγαμέμνονι ἦνδ' ἔνε θυμῷ,  
 ἀλλὰ κακῶς ἀφίει, κρατερὸν δ' ἐπὶ μῦθον ἔτελλε·  
 χωόμεντο δ' ὁ γέρων, πάλιν ὥχθρ'· τοῖο δ' ἀπόλλων  
 εὖξάμινε ἔκυσσεν, ἐπεὶ μάλα οἱ φίλ' ἦεν·  
 ἔκ δ' ἐπ' ἀργείοισι κακὸν βέλ'· οἱ δ' ἐνυ λαοί,  
 θυῖσ' αὖ ἐπαπύτεροι· τὰ δ' ἐπὶ ἔχθρ' κῆλα θεοῖο

ἔδ'· καὶ μὴ δώσωσιν, ἐγὼ δ' ἐκὼν αὐτὰς ἔλασμα  
ἐλθὼν σὺν πλειόνισι, καὶ οἱ καὶ ῥίγιον ἔσσι.

Ως ἔπειδ' ἄν προΐδ' κρατερόνδ' ὧς μῦθον ἔτελλε.

τῷδ' αἰκνόντι βέλτω παρὰ θῖν' ἀλὸς ἀρυγίποιο·  
μυρμιδόνων δ' ἐπὶ τε κλισίᾳς καὶ νῆας ἰκίδω.  
τόνδ' εὖρον παρὰ τε κλισίῃ καὶ νηὶ μελαίνῃ  
ἔμυρον, οὐδ' ἄρα τῶ γε ἰδὼν γέθησεν ἀχιλλεύς.  
τῷ μὲν ταρβήσαντι, καὶ αἰδομένῳ βασιλῆα,  
εἴητω, οὐδέ τι μιν προσεφώνον, οὐδ' ἔριον.  
οὐτάρ ὁ ἔγνω ἔσσι νὶ φρεσὶ φωνήσεν τε.

Χαίρετε κήρυκες Διὸς ἄγγελοι, ἦ δ' ἐκὼν ἀνδρῶν.  
ἄσπον ἴτ', οὐπ' μοι ὕμνοδ' ἐπαίτιοι, ἀλλ' ἀγαμέμνον.  
ὅς σφωὶ προΐει βεσιηίδ' ὅτ' ἔπειτα κούρης.  
ἀλλ' ἄγε διογανὲς Πατρόκλ' ἐξάγε κούρην,  
καὶ σφωὶν δὸς ἄγ' ἔν, τῷδ' αὐτῷ μάρτυροί ἐσσι  
πρὸς τε θεῶν μακάρων σφὸς τε θνητῶν ἀνθρώπων,  
καὶ πρὸς τῷ βασιλῆος ἀπλώεος, εἴ ποτε δ' αὐτὸ  
χρὶς ἐμὸν γένηται ἀφ' ἑκάστου γένος ἀμύναι  
ὅτις ἄλλοις, ἦ δ' ὅτ' ὀλοῇσι φρεσὶ θυεῖ,  
οὐδέ τι οἷδ' ἐνοῆσαι ἅμα πρόσω καὶ ὀπίσσω,  
ὅπως οἱ παρὰ νηυσὶ σόοι μαχέοιντο ἀχαιοί.

Ως φάτο· Πάριος δ' ἐφίλη ἐπεπείθετο ταίρῳ.  
ἐκ δ' ἀγάγε κλισίης βεσιηίδα καλλιπάρηον,  
δῶκε δ' ἄγ' ἔν, τῷδ' αὐτὸς ἴτω παρὰ νῆας ἀχαιῶν.  
ἔδ' αἰκνόντ' ἅμα βίσι γυνὴ κίον· αὐτὰρ ἀχιλλεύς  
δακρύσας ἰτάρων, ἄφαρ ἔβρο νόσφι λιανῆς,  
θῖν' ἐφ' ἀλὸς πολιῆς ὁρώων ὧς οἶνοπα πόντον,  
πολλὰ δ' ἐκ μὲν φίλῃ ἠρήσας χεῖρας ὀρεγνύς·  
μῆτρ', ἐπέμ' ἔτεκίς γε μινωθάδιον πρὶ ὄντα.

ἔμην πέρ μοι ὄφρα λεν ἐλνύμπι' ἔγχεα

# ΙΛΙΑΔΟΣ. Α.

ὃ δ' ἔπειτα πάντας ἔργον ὑπέειξομαι ὅτ' ἵκων ἴσων.  
 ἄλλοισιν δ' ἡ ταῦτ' ἐπιτίλλω, μή γάρ μοι γέ  
 σήμαιν'. ὃ γὰρ ἔγωγ' ἐτι θεί περ σέβω οἶο.  
 ἄλλο δ' εἰ τοι ἱριόσυνός ἐν φρεσὶ βάλω σῆσι.  
 χυρσὶ μ' οὐ π' ἔγωγε μαχέσθωμι ἐνικα κούρης  
 οὔτε θεῶν οὔτε θεῶν ἄλλω, ἐπεὶ μ' ἀφ' ἑλινείης γέ δ' ὀντόν.  
 τῶν δ' ἄλλων ἄ μοι ἐστὶ θοή· παρὰ νηὶ μελαίνῃ,  
 τῶν οὐκ ἂν π' φέροις ἀνελὼν ἀέκοντος ἐμδο.  
 εἶδ' ἄγε μὲν πέρησαι ἵνα γινώσκω καὶ οἶδ' ἔτι.  
 αἰψὰ ρι αἶμα κελαινὸν ἱραὸς περὶ δ' ἑρὶ.  
 ὣς τῷ γ' ἀντιβίοισι μαχεσάμεντο ἐπ' ἑσπερ.  
 ἀνστήτω, λῦσαν δ' ἀγορεύει παρὰ νηυσὶν ἀχαιῶν.  
 πηλείδης μὲν ὣς κλισίας καὶ νῆας εἴσας  
 ἦϊ· σὺν τε μύθοις πᾶσιν, καὶ οἷς ἐτάροισιν.  
 ἀφ' ἑλινείης δ' ἄρα νῆα θοῶν ἄλαδι προέειπεν.  
 ἐς δ' ἱέρετας ἔκρινεν ἐθέουσιν, ἐς δ' ἱερατόμβην  
 ἔβησιν θεῶν, ἀνὰ δ' ὅ γ' χρυσήϊδα καλλιπαῖον  
 εἶσεν ἄγων, ἐν δ' ἄρχος ἔβη πολέμοιο δόρυ σάκος.  
 οἱ μ' ἐπείτ' ἀναβάντες ἐπὶ πλεονέκτ' ἐκίλευθα.  
 λαοὺς δ' ἀφ' ἑλινείης ἀπολυμαίνεσθαι ἀναγχε.  
 οἶδ' ἀπελυμαίνον καὶ εἰς ἄλλα λύματα ἔβαντο.  
 ἔρπον δ' ἀπόλλωνι τελέεσθαι ἱερατόμβας  
 ταύρων ἦ δ' αἰγῶν παρὰ θῖν' αἰὼς ἀφ' ἑλινείης.  
 κνίαν δ' ἔβαντο ἵκων ἑλισσομένη περὶ κρητὴν.  
 οἱ δ' ἐμὴν τὰ πύοντα κατὰ σπᾶν ἔβαν ἀγαμέμνονα  
 λῆγ' ἐειδὼς τὴν πρῶτον ἐπιπείλησ' ἀχιλλῆϊ.  
 ἄλλ' ὅ γε Ταλθύβειον τε καὶ Εὐρυβάτην προσέειπε.  
 τῷ δ' εἶπεν κήρυκε καὶ ὄφρηθ' ἐθέλοντε.  
 ἔρχεσθον κλισίῳ πηληϊάδεω ἀχιλλῆϊ.  
 χυρσὶς ἰλόντ' ἀγέμεν βεσπείδα καλλιπαῖον.

# Ε' Ο Μ Η Ρ Ο Υ

Κανίαντ' ἐξάδιόν τε καὶ ἀντίθιον Πολύφημον,  
 Θησέαντ' αἰγείδω ἐπιέκλειον ἀθανάτοισι.  
 κάρπσοι δ' ἡ κῆνοι ἐπιχθονίων φάσιν ἀνδρῶν.  
 κάρπσοι μὲν ἔσαν καὶ καρτίοις ἰμάχοντο.  
 θηρσὶν ὀρεσκώοισι, καὶ ἐκπάγλως ἀπόλιαντο.  
 καὶ μὲν οἷσιν ἐγὼ μεθομίλειον ἐκ πύλων ἰλῶν  
 τηλόθεν ἐξ ἀπῆς γαίης, καλὴν γὰρ αὖτις.  
 καὶ μαχομένω κατ' ἱμαντὸν ἐγὼ κένοισι δ' ἂν οὐτίς  
 τῶν οἱ νῦν βροτοὶ εἰσὶν ἐπιχθόνιοι μαχέοιτο.  
 καὶ μὲν μιν βυλίων ξύνιον πείθοντο τι μύθος.  
 ἀλλὰ πίθεαι καὶ ὕμνοθ' ἐπὶ πείθειν ἀμεινον.  
 μήτε σὺ τὸν δ' ἀρχαῖος πρὶ ὧν ἀποαίρειο κούρω,  
 ἀλλ' ἔα ὥς οἱ πρῶτα δόξαν γέρας ὕδω ἀχαιῶν  
 μῶτε σὺν πηλείδῃ ἦτορ ἐλβεῖ μῆραι βασιλῆϊ  
 ἀντιβίω, ἐπὶ οὐτοσθ' ὁμοίης ἔμμορε πμῆς  
 σκηπτοῦχος βασιλεὺς ὧς τι ζυῖς κῦδος ἰδωκεν.  
 εἰ δ' σὺν καρτερός ἐσσι, θιά δ' ἐσσι γένατο μήτηρ,  
 ἀλλ' ὅ γε φέρτερός ἐσσι ἐπὶ πλεόνασιν ἀνδράσιν.  
 ἀρεῖδ' ἡ σὺ δ' παῦε τιδὸν μένος, αὐτὰρ ἐγὼ γε,  
 λίισομ' ἀχιλλῆϊ μεθέμην χόλον, ὅς μ' ἐγὰ πάντη  
 ἔρως ἀχαιοῖσι πέλειται πολέμοιο κακῆτο.  
 Τόν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κρείων ἀγαμέμνων.  
 ναὶ δὴ ταῦτά γε πάντα γέρον κατὰ μοῖραν ἔειπες.  
 ἀλλ' ὅδ' ἀνὴρ ἰθὺς περὶ πάντων ἔμμεραι ἄλλων.  
 πάντων μὲν κρατέειν ἰθέλει, πάντας δ' ἀνάσσειν,  
 πᾶσι δ' σημαίνειν, ἅπλιν ἐπείσσειν οἶον.  
 εἰ δ' ἐμιν αἰχμητῶν ἔθεν θεοὶ αἶν' ἰόντες,  
 ζῆνικὰ οἱ προθέουσιν ὀνείδεα μυθήσασθαι.  
 Τόν δ' ἄρ' ὕποβλήδην ἡμείβετο δῖος ἀχιλλεύς.  
 ἦ γάρ κεν δολόος τε καὶ ὑπόβανός κελεύει μιν,



καὶ μὰ τὸ δῖ σκῆπτρον τὸ μ' οὐ ποτε φύλλα καὶ ὄφρα  
 φύσῃ, ἐπεὶ δ' ἤ πρωτα το μῦν ἐν ὄρεσι λίλειπεν,  
 ἔδ' ἀναβλήσῃ, περὶ γὰρ ῥά τ' ἑ χαλκὸς ἐλίσσει  
 φύλλα τε καὶ φλοιὸν, ἦν ἂν τί μιν ὕδωρ ἀχαιῶν  
 ἐν παλάμῃς φορέουσι δικαστόλοι, οἳ τι θέμιστας  
 πρὸς Διὸς ἐρύκται, ὃ δ' ἐπὶ μέγας ἔσσεται ἔρκεθ'.  
 ἢ ποτ' ἀχιλλῆος ποθὴ ἵξετο ὕιας ἀχαιῶν  
 ξύμπαντας, βίῃ δ' οὐ πεινώσεται ἀχνύμῃος περ,  
 χρασμῆν, ἔστ' ἂν πολλοὶ ὑφ' ἑκέρκεθ' ἀνδροφόνοισι  
 θνήσκοντο πίπῃσι, σὺ δ' ἐνδοθι θυμὸν ἀμύξας  
 χαοίμῃος δὲ ἄεισον ἀχαιῶν οὐδ' ἐπὶ πῶς.  
 Ως φάτο πηλείδης, ποτὶ δ' σκῆπτρον βάλε χαίη  
 χρυσέοις ἔλαιοι πεπαρμένον, ἔϊφο δ' αὐτός·  
 ἀρείδης δ' ἐτέρωθεν ἐμήνι, βίῃσι δ' ἐνίσωρ  
 ἔδυνε πῆς ἀνδρῶν σε λιγύς πυλίων ἀγορητής·  
 τῇ καὶ ἀπὸ γλώσσης μέλπεε γλυκίων ῥίαν αὐδῆ.  
 ἔπει δ' ἦδ' ἡδ' ὕμνῳ μῦθον γυναι μερόπων ἀνθρώπων  
 ἐφθιάθ' οἳ οἱ προΐδαν ἅμα τράφον ἦδ' ἐγένοντο  
 ἐν πύλῳ ἠγάθει μετὰ δ' ἐβριάρισιν ἀνασσαν·  
 ὃ σφιν ἐὺφρονέων ἀγορήσαστο καὶ μετέπειρ·  
 ὦ πόπρι, ἢ μέγα πένθος ἀχαιΐδα γαῖαν ἰκάσθαι  
 ἢ κεν γηθήσας πρίαμος πριάμοιο τε παῖδός τε  
 ἄλλοι τε βῆδ' ἐμὶ γὰρ κεν κεχαροῖατο θυμῷ·  
 εἰ σφῶν τὰ δὲ πᾶντα πυθοῖατο μαρταμίνοισι,  
 οἳ πῆρι μῦθον βυλῇ δαίμων πῆρι δ' ἐστὶ μάχεσθαι.  
 ἀλλὰ πίθῃσ' ἄμφω δ' ἐν νωτέρω ἐσὸν ἔμειο·  
 ἦδ' ἡ γὰρ ποτ' ἐγὼ καὶ ἀρείοισι ἠεὶ περ ὕμιν  
 ἀνδρῶσιν ἐμίλησα καὶ οὐ ποτὶ μὲ οἷον ἀθείειν.  
 οὐ γάρ περ βίους ἴδον ἀνέρας οὐδ' ἐῖδωμαι,  
 ὅιν Γερίθοόν τε Δρύοντά τε ποιμένα λαῶν.

# Ο ΜΗΡΟΥ

ἀλλ' ἐκπύριον, πρὶν δέ, καὶ τετελεσμένον οἷον  
 ὅς ἐπὶ προπλήσει τάχ' ἂν ποτὶ θυμὸν ὀλέσῃ.  
 Τὸν δ' αὖτε προσέειπε θεὰ γλαυκῶπις Ἀθήνη·  
 ἦλθον ἰγὼ πάνσοφά τε δὸν μῖνος, αἴ κε πίθηαι,  
 οὐρανοῦ θαν, πρὸ δέ μ' ἦ κε θεὰ λευκώλενος ἦρσ·  
 ἔμφο δ' ὁμῶς θυμῷ φίλευσά τε, κυδομένη τε. κηδ.  
 ἀλλ' ἄγε λῶγ' εἰδοσέμεν δ' ἐξίφος ἔλκειο χερσίν·  
 ἀλλ' ἦ καὶ ἔπεισιν μῆν' ὀνείδι' ὅτι ὥς ἐστι παρὶ πρ.  
 ὦ δὲ γὰρ ἐξυρίω, τὸ δ' ἔστι τετελεσμένον ἔσται·  
 καὶ ποτὶ περὶς τόσσα παρίστανται ἀγλαὰ δῶρα,  
 ὕβριος ἔννεα τῆς δέ. σὺ δ' ἴαχεο πέδιλον δ' ἡμῖν.  
 Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·  
 χρὴ μὲν σφώϊτόν γε θεὰ ἔπος ἐρύσαιδάαι  
 καὶ μολαίει θυμῷ κεχλωμένον, ὥς γὰρ ἄμφοτε  
 ὅς κε θεοῖς ἐπιπείθεται, μολατ' ἐκλινον αὐτῷ,  
 ἦ, καὶ ἐπ' ἀργυρῇ κώπῃ χεῖθε χεῖρα βαρύνει·  
 ἄλ' δ' ἐς κελευδὸν ὥστε μέγα ξίφος, οὐδ' ἀπίθου  
 μύθῳ ἀθωαῖς. ἦ δ' οὐ λυμυτρὸν δέ βεβήκει,  
 δώματ' ἐς αἰγίχοιο δῖος μετὰ δαίμονας ἄλλους,  
 πηλείδης δ' ἐξαυτῆς ἀταρτηροῖς ἐπίεσιν  
 ἀρτίδ' ἰω προσέειπε, καὶ οὐπω λῆγε χόλοιο·  
 εἰνοβαρὺς, κωδὸς ὀμματ' ἔχων κραδίῳ δ' ἐλάφοιο,  
 οὐτὶ ποτ' ἐς πόλεμον ἄμα λαῶ βαρὴν χθῆναι  
 οὔτε λόχον δ' εἶναι σὺν ἀεισήσιν ἀχαιῶν  
 τίτληκας θυμῷ, πρὶν δέ περ κῆρ εἴδεται εἶναι  
 ἦ πολὺ λῶϊον ἔσσι κατὰ στρατὸν Διὶ φίλῳ ἀχαιῶν  
 δῶρ' ἀποαιρῆσαι δὲ περ σέθεν ἀντίον εἶπῃ.  
 Λημοκόρος Βασιλεὺς ἐπεὶ οὐκ ἔδανοισι ἀνέσθης.  
 ἦ γὰρ ἄ· ἀρτίδ' ἡνὺν ὕστατα λωβήσαιο.  
 ἀλλ' ἔκτοι ἱρίω, καὶ ἐπὶ μέγα, ὅρκεν ὁμῶς

λίαν ὁμοῦ ἐνέκ' ἐμῷ μένεν, παρ' ἐμοί γε καὶ ἄλλοι,  
 οἳ κέ με ὑμῆσθεσι, μάλιστα δ' ἠπείτα λυγρῶς.  
 ἔχθιστος δ' ἐμοὶ ἐστὶ διοτρεφίδων βασιλῆων,  
 αἰὶν γὰρ τοι εἷς τε φίλη, πόλις μοί τε μάχεται.  
 εἰ μάλλα καρτέρῃς ἔσσι, θεός περ θιτόν' ἐδάκνυ.  
 οἷα δ' ἰδὼν σὺν νηυσὶ γε σῆς, καὶ θῆς ἑτάροισι,  
 μυρμιδόνεσσιν ἄνασσε, σέθεν δ' ἐγὼ σὺν ἀλιγίῳ  
 εἴθ' ὁδομα κατέοντο, ἀπελήσσω δ' ἐπὶ τοῖσδε,  
 ὥς ἐμ' ἀφαιρᾷται χρυσήϊδ' ἀφ' ὅπως ἀπόλλων.  
 πῶ μιν ἐγὼ σὺν νηὶ γ' ἐμῇ, καὶ ἐμοῖς ἑτάροισι  
 πίεμεν. ἐγὼ δ' ἐκ' ἄνω βελσινίδ' ἀκαλιπάρηον  
 αὐτὰρ ἰδὼν κλισίῳ δ' ἐσθὼν γέρας ὄφρ' εὖ εἰδῆς  
 ὅσσον φέρτερός ἐμι σέθεν συγγῆ δ' ἐκ καὶ ἄλλ' ὅτ'  
 ἵδ' ἐμοὶ φάδιαι, καὶ ὁμοιοθήμηναι ἄντ' ἔω.  
 ὡς φάτο, πληθύνει δ' ἄχος γένετ', ἐν δ' ἐοικῆτορ  
 ἐθέθεσσιν λαοίοισι, διὰ νδ' ἰχθὰ μὲν ἔειπεν.  
 ἢ ὅ γε φάστανον ὄξυ ἱρυστάμηνος παρὰ μηρῶν  
 λυγρῶς μιν ἀνὰ σῆσφι, ὅδ' ἀπείδ' ἔπειτα ἱναρίξοι,  
 καὶ χόλον παύσσειν, ἐρητύσσει τε θυμόν,  
 ὥς ὅτ' αὐτὸν ἔρμαιος κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,  
 ἔλκετο δ' ἐκ καλοῖτο μέγα ξίφος, ἦλθε δ' ἀθήνη  
 ἔβρανόθεν, πρὸ γὰρ ἦκε θεὰ λυκώλων ὅτ' ἔρη,  
 ἄμφω ὁμῶς θυμῷ φιλέεσθαι τε κηδομένη τε.  
 σῆ δ' ὅπιθεν, ξυνθήσῃ δ' ἀκρόν τε πηλείδων  
 οἷον φάνομένη, τῶν δ' ἄλλων οὐ πρὸς ὄρατο.  
 θάμβησεν δ' ἀχιλλεύς, μετὰ δ' ἑβραπέτ' αὐτίκα δ' ἔγνω  
 παλλάδ' ἀθλαίῳ, δεινὸν δ' ἐοῖσιν ὅσας φάσανθ' ἔρη  
 καί μιν φωνήσας ἔπειτα πηρόντα προσήειλε.  
 τί π' αὐτ' αἰγίοχοιο διὸς τέκος ἐλήλθαες.  
 ἢ τίς ἔβρεν ἱδὲ ἀγαμέμνον' ἀπείδ' ὅς

О М Н Р О У

Ἡ Δίας, Ἡ ἰσομεινός, Ἡ δῖος ὀδυσσεύς.

ἢ ἐσὺ πλησίον πάντων ἐκπλαγότες ἀνδρῶν

ὁ δὲ ἄρ' ὑπόφραϊδ' ὦν προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·

ὅπως τις τοι πρόσφρων ἔπισιν πείθεται ἀχαιῶν

ὅτι γὰρ ἐν ᾧ πῶς ἐνεκ' ἤλυθον αἰχμητῶν

ὅ γὰρ πῶς οὐτ' ἐμὰς βῆς ἔλασεν, οὐδ' ἔμῳ ἵππῳ.

καρπὸν ἰδηλῆσαντ', ἐπεὶ μάλα πολλὰ μεταξὺ

ἀλλὰ τοῦ μὲν ἀναιδέος ἄμ' ἰσχυροῦς, ὅφρα σὺ χεῖρ' ἔχῃ

παρὸς ὧν, τῶν οὕτω μεταβέβη, ἐπὶ ἀλλαγίῃς.

ὡς ἐπὶ πόλιν ἐμὸν ἔσται, δόσαν δ' ἐμοὶ ὕψος ἀχαιῶν

ἔκπλεον ὁμιλίας.

[illegible]

οὐδὲν γὰρ ἐπὶ τῇ ἀποστολῇ τοῦτο ἔστιν ὅτι οὐκ ἔστιν ὁμοίωμα  
τοῦ τοῦτον καὶ τοῦτον ἀλλ' ὅτι οὐκ ἔστιν ὁμοίωμα

ἔπειτα ἔτι καὶ τὴν κακὰ μὲν πολλὰ μίαν.

Εἰμι θεῖον· ἐπεὶ πολλὴν φέρεται εἶναι

[illegible]

2. 'மேலும்' என்ற சொல்லைப் பயன்படுத்தி, கீழ்க்கண்ட விடயங்களைப் பற்றி உரையாற்றி.

ἡ δὲ ἐκείνη ἡμέρα ἔσται ἡμέρα ἰσχυρῆς, ἡμεῖς οὐκ ἐσμεν ἰσχυροὶ, ἀλλὰ ὁ Θεὸς ἡμῶν ὁ ἰσχυρὸς.

ὁμοῖα μὲν δ' εἴποιμι καὶ ἐπὶ στυγαίῳ ἡδὲ σ<sup>31</sup>

φρονεῖ καὶ ἐν τοῖς ὕλοις κεραιῖται, ὁ δὲ σὺ δὲ

κενεδ' ἴης ἀλόχευ, ἐπεὶ ὕβρις ἐστὶ χιρέων  
 ὕβρις, ὕβρις φιλῶν οὐτ' ἄρ' φρίκας, οὐτ' ἐπὶ ἔργα.  
 ἀλλὰ καὶ ὡς ἐβίλω δόμῳ παλιν, ἐτόγ' ἄμεινον  
 βούλῃ ἐγὼ λαὸν σόον ἔμμεναι, ἢ ἀπολέσθαι.  
 αὐτὰρ ἐμοὶ γέρας αὐτίχ' ἐποιέσασθαι, ὅφρα μὴ οἷον  
 ἀργείων ἀγέραςος ἴω, ἐπεὶ ὕβρις ἔοικε.  
 λυγαντὶ γὰρ τό γε πάντες, ὃ μοι γέρας ἔρχεται ἄλλο.  
 Τὸν δ' ἠμείβεται ἔπειτα ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς.  
 ἀφείδῃ κῦδιε φιλοκτιδυνώτατι πάντων,  
 πῶς γὰρ τι δώσῃσι γέρας μεγάθυμοι Ἀχαιοί;  
 ὅ δ' ἐπὶ πω ἱδμῶν ξυνήϊα κέμῃσι πολλά.  
 ἀλλὰ τὰ μὲν πολίων ἐξηπάθομεν, τὰ δ' ἐδίχαμε.  
 λαοὺς δ' ὕκ' ἐπέοικε παλίμοχα ταῦτ' ἐπαγέρεν.  
 ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν τὴν Διὶ θεῷ πρόβη, αὐτὰρ Ἀχαιοί.  
 Τριπλὴ τετραπλὴ τ' ἀποτίθῃμι, αἰκίῃ ποθι Ζηνὸς  
 δῶσι πόλλιν βοίῃσι δὴ τέλειον ἐξαλαπάξαι.  
 Τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη κρείων Ἀγαμέμνων,  
 μὴ δ' οὕτως ἀγαθὸς πρὶ ἔδω θεοῖσι κελ' Ἀχιλλεῦ.  
 καλὴ γένοιτο νόσος, ἐπεὶ ὕβρις παραλύσῃσι, ὕβρις μὲν πείσῃσι.  
 ἢ εἴ τις ὅφρ' αὐτὸς ἔχῃ γέρας, αὐτὰρ ἐμ' αὐτῶς  
 ἔδωκε δινόμενον, κέλευσθαι δ' ἐμὴν τὴν δ' ἀποδέναι  
 ἀλλ' ἐμὲ δώσῃσι γέρας μεγάθυμοι Ἀχαιοί.  
 ἄρσαντες κατὰ θυμὸν ὅπως οὐτάξιον ἔσται.  
 εἰ δέ κε μὴ δώσωσιν, ἐγὼ δ' ἐκεῖ οὐκ ἔλωμαι  
 ἢ τέον, ἢ Διάντος ἰὼν γέρας, ἢ ὀδυσσῆος  
 ἄξω ἑλὼν, ὃ δ' ἐκεῖ κεκολώσεται, ὃν κεν ἴκωμαι  
 ἀλλ' ὕπῳ μὲν ταῦτα μεταφρασσόμεναι καὶ αὐτῇ,  
 νῦν δ' ἄγε νῆα μέλαιναν ἱρύσσομεν εἰς ἄλλα δῖαν.  
 εἰς δ' ἐρίτας ἐπιπνείας ἀγέρομεν, εἰς δ' ἐκατόμβην  
 θέομεν, αἰεὶ αὐτῶν χρυσὴ δὴ καλλιπάρηρος



# Ο ΜΗΡΟΥ

Τὸν δ' ἀπάμεβόμην· προσέφη πόδες ὡκὺς ἀχιλλεύς·  
 θαρσύνεις μάλα ἐπὶ θεοπρόπιον ὃ, π' οἶδ' αἶ·  
 εἰ μὰ γὰρ ἀπόλλωνά Δι' φίλον, ὃ τε σὺ Κόλλχαρ  
 δὺ χόμῳ δ' ἀναοῖσι θεοπροπίας ἀναφαίνεις,  
 οὐπὶς ἐμὲν ἴωνες καὶ Ἰχθονὶ διερχομένοιο,  
 θεὶ κείλῃς παρὰ νηυσὶ βαρείας χῆρας ἰωοῖσθαι·  
 συμπαύσαντα δ' ἀνδρῶν, εἴδ' ἀγαμέμνονα εἴπης  
 ὅς νῦν πολλὸν ἄριστος ἐνὶ στρατῷ ἔχεται εἶναι·  
 καὶ τότε δ' ἠθάρεσσιν, καὶ ὕδα μάντις ἀμύμον·  
 οὐτ' ἄρ' ὅγ' δὺ χολῆς ἐπιμίμμεται, οὐδ' ἱεστόμμε·  
 ἄλλ' ἐνὲκ' ἀρητῆρος ὃν ἠτίμησ' ἀγαμέμνων·  
 εἴδ' ἀπέλυσε θυγάτρα, καὶ ἐκ' ἀπεδέξατ' ἀποινα·  
 οὐνεκ' ἄρ' ἄλγ' ἐδ' ὁκῶν ἐκὼς ἡδ' ἐπὶ δώσθαι,  
 εἴδ' ὅγ' πρὶν λαιμοῖο βαρείας χῆρας ἀφίξει,  
 πρὶν θ' ἀπὸ πατρὶ φίλῳ δόμῳ ἐλκώπιδα κούρῳ,  
 ἀπριάτῳ, ὠνὸν ποῖνοι, ἀγχιθ' ἱερῶν ἱεστόμμε·  
 εἰς χυάλῳ, τό τε κέν μιν ἱλασάμενοι πιπύθοιμεν,  
 οὐκ ὅγ' ὡς ἐπὶ κατ' ἄρ' ἔξο, θύοισι δ' ὀνείσθαι  
 ὕρως ἀρείδης δὺρνηκείων ἀγαμέμνων  
 ἀχνύμενος· μένεος δ' ἴμεγα φρένός ἀμφημίλανεαι  
 πίμπλωτ' ὅσπερ δ' οἱ πυρὶ λαμπιτόωντι ἱέκτω·  
 κάλχαντα πρῶτισσε κακ' ἀσπόμεν· προσέειπε·  
 Μάλῃ κακῶν εἰ πῶ ποτ' ἐμοὶ τ' κρήγυον εἴπῃς·  
 αἰεί ρι τὰ κακ' ἐσὶ φίλα φρεσὶ μωυτεύεσθαι·  
 ἰδὼλόν δ' εἴδ' ἐτι πῶ εἴπης ἵπος, εἴδ' ἐτίλειπας·  
 καὶ νῦν ἐν δειναοῖσι θεοπροπίων ἀγορεύεις,  
 ὡς δ' ἠ' τῷ δ' ἐνὲκ' ὀφιν ἐκὼς ἡδ' ἄλγ' αἰνύχθαι,  
 οὐνεκ' ἐγὼ κούρης χυσοῖς ἄλγ' ἄλγ' ἀποῖνα  
 ἐκ' ἔδωκα δ' ἐξάσθαι, ἐπὶ τῷ βούλομαι αὐτῷ  
 εἴ κ' ἐχθρὸν, καὶ γὰρ ἔα κλυταμνήστῃς προβέβηκα

αἰεί ρι τὰ κακ' ἐσὶ φίλα φρεσὶ μωυτεύεσθαι

καὶ νῦν ἐν δειναοῖσι θεοπροπίων ἀγορεύεις

τῇ δ' ἐκάτῃ δ' ἀγορήνδε καλέσασατο λαὸν Ἀχιλλεύς.

ὦ γὰρ Σφριεσὶ θῆκε θεὰ λευκώλενος Ἥρη.

κῆδ' ἔσθ' οὐδ' ἀθανάτων, ὅτι ῥ' ἀθνήσκοντες ὄρατο.

οἷδ' ἐπεὶ ἦν ἤγερθεν, ὁμηγρέεθ' ἔγινοντο,

βῆσι δ' ἀνισάμεθ' ἐμὴν πόσιν ὥκυν Ἀχιλλεύς.

ἄρεϊδ' ἔνν' ἄμμε παλιμπλαγχθέντας δῖω

ἄψ' ἀπονοσήσειν, ἵκεν θάνατόν γε φύριμδ'.

ὦ δ' ἢ ὅμ' ἀπὸ λυγρὸς τε δαμά, καὶ λυγρὸς ἀχαιούς.

ἀλλ' ἄγε δ' ἔτι πινά μάνην ἱερόμην, ἢ ἱερῶν,

ἢ καὶ ὀνηροπόλον, καὶ γὰρ τ' ὄναρ ἐκ Διὸς ἐστίν,

ὅς κ' εἴπωσι ὅτι τόσσον ἰχώσατο φοῖβος ἀπόλλων.

εἴτ' ἄρ' ὅγ' οὐχολῆς ἐπιμήμφεται, εἴθ' ἱκατόμβης.

αἰκὴν πως ἄρ' ὦν κνίσσης αἰγῶν τε τελέων

βούλεται ἀνπάσας, ἡμῖν ἀπὸ λυγρὸν ἀμύναι.

ἦρι δ' ὅγ' ὥς ἐπὶ δὴν, κατ' ἄρ' εἴσο, βῆσι δ' ἀνίστη

Κάλχας θεοορίδης οἰωνοπόλων ὃς ἄεισος,

ὅς ἢ δ' ἡ τὰτ' εἰόντα, τὰτ' ἐσόμενα, πρὶτ' εἰόντα,

καὶ νῆας ἡγήσεται ἀχαιῶν ἴλιον εἴσω.

ἦν δ' ἔξ' αὖ μωρὸν σὺν λω, τὴν διπόρε φοῖβος ἀπόλλων

ὅσφιν εὐφρονέων ἀγορήσασα καὶ μετέειπε.

Ω Ἀχιλλεῦ, κέλιαι με δ' ἢ φίλ' ἐμυθήσασθαι

μῆνιν ἀπόλλωνος ἐσπῆ βελιτάο ἀνακτ'.

βῆ γὰρ ἐγὼν ἐρίω, σὺ δ' ὅ σὺν θεοὶ μοι ὄμοσας,

ἢ μὲν μοι πρόσφρων ἐπιστῆναι, καὶ χερσὶν ἀρήξειν.

ἢ γὰρ ὅτ' οἶμαι ἄνδρα χολασέμεν, ὅς μιν γὰρ πάντων

ἀργείων κρατεῖ, καὶ οἱ πείθονται ἀχαιοί.

•• Κρέστων γὰρ βασιλῆος ὅτι χῶσνται ἀνδρὶ χερσὶ

•• εἴπερ γὰρ τε χόλῳ γε καὶ αὐτῇμαρ καταιπνίη,

•• ἀλλὰ γε καὶ μετόπισθεν ἔχ' ἐκτότον ὄφρα τελείω

•• ἢ ἐθέλων ἰοῖσθαι, σὺ δ' ἐφράσσαι εἴ με σάωσας.

# Ο Μ Η Ρ Ο Υ

ἀλλ' οὐκ ἀρείδῃ ἀγαμέμνονι ἦδ' ἀντιθυμῶ,  
 ἀλλὰ κακῶς ἀφίει, κρατερόν δ' ὤ μῦθον ἔτελλε.  
 μή σε γέρον καίλασιν ἐγὼ παρὰ νηυσὶ κιχάω  
 ἢ νῦν δ' αὖθιγοντ' ἢ ὕστερον αὖτις ἴοντα,  
 μή νῦντοι οὐ χαρίσμη σικηπῆρον, καὶ σέμμα θιοῖο.  
 τὸν δ' ἐγὼ ὕλυσω πρὶν μιν καὶ γῆρας ἔπεισιν  
 ἡμντέρῳ ἐνὶ οἴκῳ ἐν ἄρχῃ τηλοθὶ πάρος  
 ἰσὺν ἐποχομένην, καὶ ἑμὸν λείχος ἀνπώσασθαι.  
 ἀλλ' ἴθι· μή μ' ἐρίθιζι σαώτῃρ ὥς κε νῆσαι.  
 Ως ἔφατ', ἔδ' ἔδ' σιν δ' ὁ γέρον· καὶ ἐπείθετο μῦθον.  
 ἔηδ' ἀκέων παρὰ θῖνα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης.  
 πολλὰ δ' ἔπειτ' ἀπάνευθε κιῶν ἡρᾶθ' ὁ γεραίρα  
 ἀπόλλωνι ἀνακτι, ἔν ἧν καμὸς τέκε λητώ.  
 κλυθὶ μιν ἀργυρόπρξ' ὅς χρύσῃν ἀμφιβέβηκας,  
 κίλλω τε ἴαθίω, τινέειο δ' ἰφρι ἀνάσσεις.  
 σμινθιῦ, εἴ ποθέρι χαρίοντ' ὣς νηὸν ἔριψα.  
 ἢ εἰδὴ ποτὶ τοι κατὰ πῖονα μηρὶ ἔκκα  
 ταύρων, ἡδ' αἰγῶν, τόδε μοι κρήνην ἐλδωρ  
 τίσσαν δαναοὶ ἐμὰ δολχευα θῖσι βελισσιν.  
 Ως ἔφατ' οὐχόμηνος· τὸ δ' ἔκλυε φοῖβος ἀπόλλων  
 βῆ δὲ κατ' ὑλύμτωιο κρήνην χαρόμηνος κῆρ.  
 τόξ' ὥμοισιν ἔχων, ἀμφηρεφεία τε φασίην.  
 ἔκλαγξεν δ' ἄρ' οἴσοι ἐπ' ὤμων χαομῖνοιο.  
 αὐτὸ κινηθέντος, ὃ δ' ἦεν νυκτὶ νοικῶς.  
 ἔβητ' ἔπειτ' ἀπάνευθε νηῶν, μετὰ δ' ἰὸν ἔηκε.  
 δηνὴρ δ' ἀλλαγὴν γένετ' ἀργυρέοιο θιοῖο.  
 οὐρῆας μὲ πρῶτον ἐπώχθο, καὶ κύνας ἀργούς.  
 αὐτὰρ ἔπειτ' αὐτῶσι βίβας ἐχιπυκὲς ἱφιείς,  
 βάλλ' αἰὶ δ' πυραὶ νεκύων καίοντο θαμειαί.  
 ἐνὶ ἡμῶν μῶν δ' ἀνὰ στρατὸν ὄχθος κῆλα θιοῖο.

## 3

次刊

3

34

80

22

1877  
MAY 11  
NEW YORK





TROIA

DEIPHOBUS

ALEXANDER

ΕΛΕΥΘΕΡΙΑ

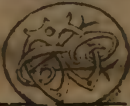
HOMERVS

ΟΜΗΡΟΥ  
ΙΛΙΑΣ.

Η ΤΗΣ ΑΥΤΗΣ  
ΠΟΛΥΠΛΟΚΗΣ ΔΙΑΓΕΓΕΝΗΣ.

BIBLIOTHECA  
ROMANA  
VICTORIA EMANUEL

M. D. XXXIII.



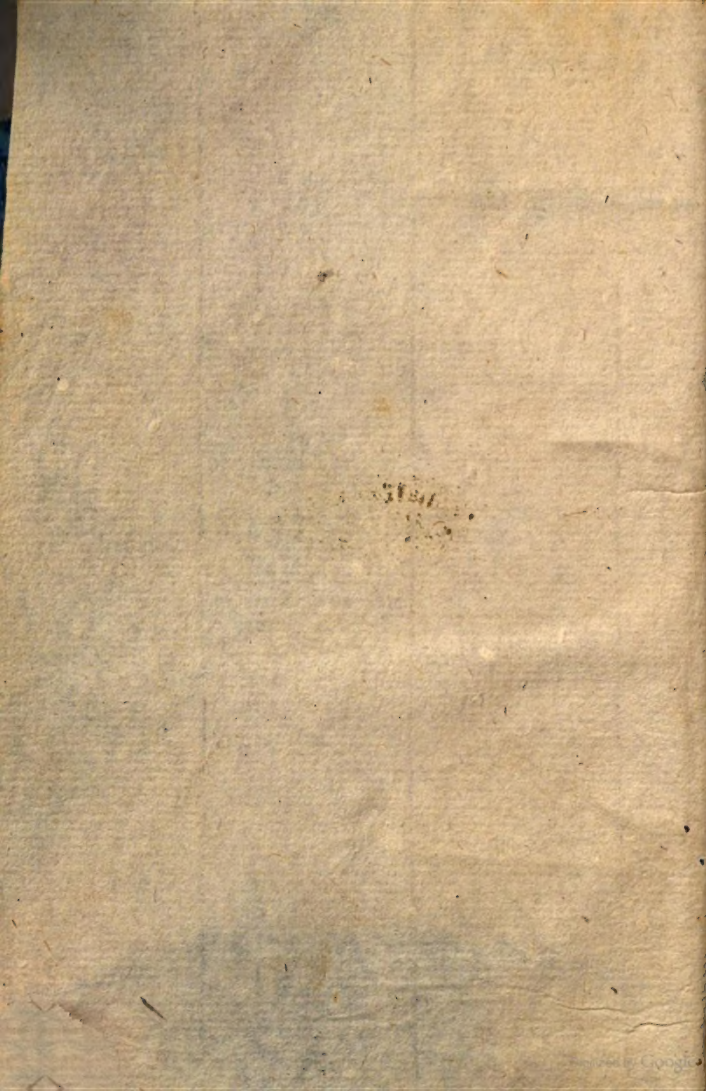
CALLOPE

ACHILLES

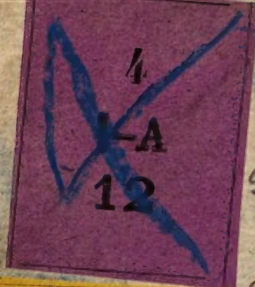
HECTOR

HECTOR

ACHILLES







233 f 30



C. 2

S. G

O. 5

N. 5-6

~~4-1.A.12~~



